हकीकत किताबेवी प्रकाशन नo : 12

# इस्लाम

# और

# ईसाईयत

हुसैन हिल्मी इशिक

सत्ररहवाँ एडिशन

हकीकत किताबेवी

दारूश्शफेका जद 53/ए पी.के : 35 34083

फोन: 90.212.523 4556 - 532 5843 फैक्स: 90.212.523 3693

http://www.hakikatkitabevi.com
e-mail: info@hakikatkitabevi.com

# फ़ेहरिस्त

## भागः एक

## इस्लाम और ईसाईय्यत


प्रस्तावना .......................................................................... 05

1. अल्लाह के वजूद में यकीन ..................................................... 07

2. नवी, मज़ाहिव और कितावें .................................................. 13

a. यहूदी मज़हब .................................................................. 18

b. ईसाई मज़हब .................................................................. 19

c. इस्लाम ........................................................................... 34

3. सच्चा मुसलमान होने के लिए शर्ते ........................................... 66


## भागः 2


कुरआन-अल-करीम और आज की तोरह और वाइवल की कापियाँ

तआरूफ ......................................................................... 98

1. तोरह और वाइवल की कापियाँ .............................................. 103

2. मुकद्दस वाइवल में कुछ गलतियाँ ........................................... 117

3. कुरआन-अल-करीम ......................................................... 148

4. मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) के मोअजिज़ात ..................................... 172

5. हज़रत मुहम्मद के जौहर........................................................ 194

6. हज़रत मुहम्मद की खूबसूरत अखलाकी खुसूसियात और आदा ........... 208

## भागः 3

# इस्लाम और दूसरे मज़ाहिब

तआरूफ .................................................................................. 221

1. इस्लाम बर्बरता का मज़हब नहीं .................................................. 229

2. मुस्लिम लाइल्म/अज्ञानी नहीं हैं ...................................................... 268

3. मज़हब, धर्मशास्त्र और मज़हब और फलसफ़ें के बीच का फर्क .............. 276

a. ब्राहम्णों का मज़हब ................................................................... 277

b. बुद्ध मज़हब .............................................................................. 280

c. यहूदी मज़हब और यहूदी ............................................................ 283

d. ईसाइय्यत का मज़हब ................................................................ 302

e. इस्लाम ..................................................................................... 316

f. क्या इस्लाम में फलसफ़ा करने की इजाज़त है? ................................ 324

g. वहाईस ...................................................................................... 328

h. क़ादिआनी ................................................................................ 328

4. तसव्वुफ़ के लायक आदमी ...................................................... 329

आखिरी लफ़्ज़ ........................................................................ 347

शब्दावली ............................................................................ 358

Typeset And Printed In Turkey by Ihlas Gazetecilik A.S. Merkez mah-29
ekim cad. Ihlas, plaza no:11 A/41 34197 yenibosna-istanbul
Tel: 90.212.4543000

# भागः एक

# इस्लाम और ईसाईय्यत

## प्रस्तावना

हम **इस्लाम और ईसाईय्यत** किताब बिस्मिल्लाह से शुरू करते हैं। सारी तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं, और सबसे ज़्यादा बेहतरीन दुआएँ उसके रसूल, मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) पर, और आपकी अहल अल बैअत, और आपके सारे सहाबियों पर हों!

अल्लाह तआला ने कुछ भी नहीं से, सारी चीज़ें तखलीक कीं, जानदार भी और बेजान भी। वो अकेला तखलीक करने वाला है। क्योंकि वो इंसानियत पर बहुत रहम करता है। उसने बनाया और भेजा वो सब कुछ जो इस दुनिया में और आखिरत में आरामदायक, सुकून और खुशगवार मौजूदगी के लिए ज़रूरी हैं। उसकी लामहदूद रहमतों में सबसे ज़्यादा किमती और फौकियत के तौर पर। उसने हमारे लिए सच्चाई के रास्ते की तरफ भेदभाव किया और बातिल की तरफ बढ़ाया, जिसमें तकलीफ और ग़म पैदा हुआ। उसने हमें हमेशा हुकूम दिया भलाई और मेहनत और दूसरों को मददगार साबित होने के लिए। उसने ऐलान किया के वो सारे लोगों को मरने के बाद हिसाब के लिए उठाएगा, वो जिन्होने अच्छे अमाल किए होगे वो जन्नत में लामहदूद खुशियाँ हासिल करेगें, और वो जो उसके पैग़म्बर (अलैहिम स-सलाम) की तालीमात में यकीन नहीं रखेंगे वो दोज़ख में कभी न खत्म होने वाले अज़ाब और दर्द में रहेंगे। इसलिए, हमने ये काम लिखना शुरू किया उसके नाम की तारीफ़ करते हुए और अपने आपको उसकी रहनुमाई में रखते हुए। हम इसे एक सम्माननीय फर्ज़ मानते हुए अपना शुक्रिया और प्यार ज़ाहिर करते हैं उन आला लोगों पर जिन्हें पैग़म्बर कहते हैं, उनमें से खासतौर से आखिरी रसूल मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) पर, जिन्हें उसने मुनतखिब किया रसूल और मध्यस्थ के तौर पर इंसानों की फलाह व बहबूद के रास्ते को ज़ाहिर करने के लिए।

ये किताब हमारे उन मुसलमान भाईयों के लिए एक "कुंजी" के रूप में लिखी गई है जिन्हें इस्लामी मज़हब के परवान होने के बारे में सिर्फ थोड़ी जानकारी है, और ये उन ग़ैर

मुसलमानों के लिए भी लिखी गई है जो इस्लाम की बुनियादी बातों को जानना चाहते हैं। इस्लाम, जोकि दुनिया के मौजूदा मज़ाहिब में सबसे ज़्यादा जदएद/तरक्की याफ़ता और बेदाग है, और बहुत ही इंसानी और बहुत मंतकी उसूलों पर मुबनी है। बग़ैर तफ़सील में गए हुए, इस किताब ने इस्लाम की बुनियादी बातों को छुआ और दूसरे मज़ाहिब के साथ इस्लाम का मवाज़ना किया। ये इस्लाम के मुख़ालफ़ीन की तरफ़ से उठाई गई तंकीद का जवाब देती है और एक अच्छे मुसलमान होने के लिए ज़रूरी काबिलियत बयान करती है।

उनके लिए जो इस किताब के हकाईक को सीखने के बाद इस्लामी आलिमों (रहिमाहुल्लाहु तआला) के ज़रिए लिखी गई कीमती किताबों को पढ़ना चाहते हैं, हम सलाह देते हैं कि वो हकीकत किताबेवी (बुक स्टोर) के ज़रिए इस्तांबुल में मुख़तलिफ़ ज़बानों में छापी गई किताबों को पढ़ें। इन किताबों के नामों को हमारी किताबों से जोड़ा गया है।

इस किताब को धीरे और अक्कासी के साथ पढ़ें! दूसरों को भी इसे पढ़ने के लिए उकसाएँ! एक लाइल्म आदमी कभी भी एक अच्छा मुसलमान नहीं हो सकता। बल्कि, एक शख़्स के लिए ये नामुमकिन है कि वो इसकी बुनियादी बातों को जानने के बाद अपना दिल इस्लाम के साथ न जोड़े। इस किताब को पढ़ने के बाद, तुम भी ये महसूस करोगे कि इस्लाम कितना बुलंद, पाक, मंतकी और मुकम्मल मज़हब है, और तुम इस दुनिया में और आखिरत में निजाद और आराम हासिल करने के लिए अपना दिल और रूह इसमें लगा दोगे।

| मिलादी | हिजरी शमसी | हिजरी कमरी |
|---|---|---|
| **2001** | **1380** | **1422** |

**<u>पब्लिशर नोटः</u>**

अगर कोई इस किताब को इसकी असली शक्ल में छपवाना चाहे या किसी और ज़बान में तर्जुमा करके छपवाना चाहे तो उसको हमारी तरफ से पहले से इसकी इजाज़त है। जो लोग इस किताब को तर्जुमा या छपवाके आगे देंगे हम अल्लाह तआला से उनके लिए

दुआ करेंगे और उनके शुक्रगुज़ार हैं। हमारी ये इलतीजा है कि अगर कोई इस किताब को छपवाए वो इसके काग़ज़ की क्वालीटी अच्छी रखे, बिल्कुल सही तरीके से और बिना गलती के छपवाएँ।

चेतावनीः ईसाई मिशनरी अपनी बातों को फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, यहूदी लोग अपनी बातों को फैलाने की कोशिश में लगे हुए हैं। हकीकत किताबेवी (बुकस्टोर) इस्तानबुल में इस्लाम को फैलाने की जद्दोजहद में लगे हैं। जबकि बहुत मासूनी इस्लाम को नुकसान पहुँचाने में लगे हुए हैं। जो इंसान अकल रखता है जानकारी रखता है और दिल से सही रास्ते की तलब करता है तो वो यकीनन सीधी राह को पा लेगा। जितनी भी राह उसे मिले वह उनमें से वो राह चुनेगा जो इंसानियत की निजात के लिए होगी! और कोई भी राह इंसानियत की निजात से बढ़कर नहीं हो सकती। कुछ भी नहीं, न ही किसी दूसरे तरीके से, बेहतर या ज़्यादा कीमती हो सकता है, जिसमे इंसान का मकसद इंसानियत की खिदमत करना है।

## अल्लाह के वजूद में यकीन

एक जवान इंसान, जैसे के वो एक बच्चा है, सोचना शुरू करता है कि जो उसके आस पास चीज़ें हैं वो कहाँ से और कैसे वजूद में आई। जैसे वो बड़ा होता है, वो बेहतर समझता है और इस तरह हैरान होता है कि जहाँ वो रहता है वो ज़मीन कितनी ज़बरदस्त शाहकार है। जब वो एक आला तालीमयाफ़ता बालिग़ हो जाता है, तो उसकी हैरानगी तारीफ़ में बदल जाती है क्योंकि वो चीज़ों और मखलूकात के बारे में सीखना शुरू कर देता है जो हमारे चारो और रोज़ दिखाई देते हैं। क्या ये एक अहम घटना है कि आदमी सिर्फ एक ग्रिह पर ग्रियाती कुव्वत के ज़रिए ही रह सकते हैं और सिर्फ़ गोलाकार, या बल्कि एक ओव्वेट, ग्रह पर रहते हैं जो अंदरूनी तौर पर पिघले हुए धात से भरा है और जो खला में खुद से घूमता है। और कितनी बढ़ी वो ताकत है, जिसके पैदा करने से पहाड़, चट्टाने, समुंद्र, बेशुमार तरह की जानदार चीज़ें और पौधे वजूद में आए, बड़े, और कई किस्म की खसूसियात ज़ाहिर कीं। कुछ जानवर ज़मीन पर चलते हैं, जबकि दूसरे आसमान में उड़ते हैं या पानी में रहते हैं। सूरज, जो अपनी रोशनी हम तक भेजता है, हम सोच सकते हैं वो सबसे ज़्यादा ऊँची दर्जे की गर्मी पैदा करता है, पौधों की पैदावार पर असर डालता है और उनमें से कई पर किमयाई तबदीली लाता है आटा, चीनी और दूसरी चीज़ों के वजूद को लाने के लिए। लेकिन हम जानते हैं के इस कायनात में हमारी दुनिया एक छोटा चश्मा है। निज़ामे

शमसी, जिसमें ग्रह शामिल है जो सूरज के इर्द गिर्द चक्कर लगाते हैं, और जिसमें हमारी ज़मीन शामिल है वो उन बेशुमार निज़ामों में से एक है जो इस कायनात के अंदर है। कायनात में तवानाई और ताकत को समझने के लिए ये छोटी मिसाल एक छोटा सा हिस्सा है। इंसान के ज़रिए हासिल तवानाई का नया अहम ज़रिया एटमी तास्सुरात है जो की इक्साम के दौरान ऐटमी तवानाई से निकलता है। ताहम एक मवाज़ने से ज़ाहिर होता है कि बड़े ज़लज़लों में जारी तवानाई फिर भी हज़ारों एटमी बमों की तवानाई से बड़े है, जिसे इंसान फ़ख़र से "तवानाई का सबसे बड़ा ज़रिया" मानते हैं।

जब तुम अपनी काया को देखोगे तो शायद तुम ये बात नहीं जान पाओगे कि ये कितनी हैरानकुन कारखाना और प्रयोगशाला है। दरहकीकत, साँस लेना अपने आप में एक चकीत करने वाला रसायनिक काम है। हवा से साँस लेकर ऑक्सीजन लेना जिस्म की जलती हुई प्रकिया में इस्तेमाल होता है, और कार्बन डाइआक्साइड की तरह जिस्म से बाहर निकलता है।

पचाने के लिए, ये एक कारखाने की तरह काम करता है। खाना और मशरूब मुँह से लेने के बाद पेट और आंत्र में गल जाता है, जिससे जो जिस्म के लिए फायदेमंद है वो छोटी आंत में घूस जाते हैं और खून में मुंतकिल हो जाते हैं, जबकि कूड़ा आंतों के ज़रिए बाहर आ जाता है। ये गैरमामूली काम बहुत ही दुरूस्ती के साथ अपने आप हो जाता है, नतीजे के तौर पर जिस्म एक कारखाने की तरह काम करता है।

इंसानी जिस्म में मुखतलिफ़ तरीके से मादा पैदा करने वाली नहरों में न सिर्फ़ मुखतलिफ़ किस्म के मादा पैदा होते हैं बल्कि मुखतलिफ़ किमयाई रददेअमल को मुतासिर करते हैं, बिमारियों से निमटने, साफ़ करने, ज़हरों को तबाह करने के लिए, मुखतलिफ़ किस्म के माददों को फिलटर करते और तवानाई फराहम करते हैं इन सब पर तजज़िया कर रहे हैं, लेकिन ये एक ग़ैर महफ़ूज़ बिजली का नेटवर्क, एक नज़री सैट, बरकी फायदा उठाने के लिए एक अलार्म का निज़ाम, आवाज़ के लिए एक आला और माएकरोसाफट के खिलाफ़ लड़ने के लिए एक जबरदस्त निज़ाम का पम्प है। पूरानी, युरूपी कहावत थी के "इंसानी जिस्म बहुत से नामयाती थौड़ा कैलशियम, थौड़ा फॉसफोरस, और चंद अजनबी और माददे पर मुश्तमिल है। इसलिए इंसानी जिस्म एक जोड़े पाऊड के काबिल है। लेकिन आज

अमेरिका की यूनिवर्सिटियों में हिसाबात की बुनियाद पर ये बात वाज़ेह हो गई कि कीमती Hormones इनज़ाईम और नामयाती तैयारियों में लगातार इज़ाफ़ा हुआ है, जो लाखों के बराबर है। दरहकीकत, एक अमरिकी प्रोफ़ेसर ने कहा, "अगर हम एक ऐसा साज़ोसामान बनाने की कोशिश करें जो खुद बखुद और हुकूम के ऐन मुताबिक इतनी कीमती माददा पैदा करे तो दुनिया में मौजूद तमाम पैसा इसकी तकमील को फारोग नहीं दे सकेगा।" इस माददे को मुकम्मल करने के साथ, ये हकीकत रह जाती है। कि इंसान बहुत अच्छी गैर मामूली ताकत का मालिक है, जैसे के समझ, सोच, यादगार, याद रखना, तर्क करना और फैसला करने वाला। आदमियों के लिए इस ताकतों की कदर का हिसाब करना नामुमकिन है। इसके अलावा, आदमी जिस्म के साथ साथ एक रूह भी है। जिस्म मर जाता है लेकिन रूह नहीं मरती।

जानवरों की दुनिया में एक ध्यानपूर्वक नज़र आदमी पर ये ज़ाहिर करती है के खालिक की अदम इतमिनान किस तरह हैरत अंगैज़ है। कुछ ज़िन्दा मखलूक इतनी छोटी है कि वो सिर्फ खुरदवीन के तहत ही देख सकते हैं। कुछ दूसरों को देखने के लिए (मिसाल के तौर पर वाएरस का मुशाहदा करने के लिए) एक Electronic खुरदवीन, जिसमें एक लाख मरतबा इज़ाफ़ा होता है, कि ज़रूरत पड़ती है।

रेशम की पैदावार की कारकरदगी सबसे बड़े मसनूई धागा कारखाने की खुदकार मशीनों पर मुशतलिम है वो छोटे रेशम के कीड़े के नीचे है। अगर एक छोटा कैसाडा आज इस्तेमाल की जाने वाली आवाज़-पैदा करने वाली मशीन की तरह बड़ी हो जाए, तो जो आवाज़ उससे पैदा होगी वो खिड़कियों के शीशे और दीवारें तोड़ सकती है! इसी तरह अगर एक जुगनू सड़क की बत्ती जितना बड़ा हो जाए, तो वो एक शहर के चौथाई हिस्से को जगमगा सकता है इस हद तक कि यह दिन के दौरान उजागर हुआ है। क्या ये मुमिकन नहीं के इस तरह के नाकाबिले यकीन हद तक कामिल और बेहतरीन काम की तारीफ़ की जाए? क्या ये काफ़ी नहीं ये ज़ाहिर करने के लिए के खालिक कितना अज़ीम और ताकतवर है? इसके नतीजे में, ये काएनात, जिसका हम सिर्फ एक छोटा सा हिस्सा देखते हैं, इसका एक खालिक है बहुत ज़्यादा ताकत वाला, जो इसे कायम कर सकते हैं, और जिसे काबू करने के लिए हमारे दिमाग़ बहुत कमज़ोर हैं। ये खालिक अबदी और न बदलने वाला है। हम मुसलमान इस खालिक को अल्लाह तआला कहते हैं। इस्लाम की बुनियाद है अल्लाह तआला और उसकी सिफ़ात पर ईमान रखना।

जब हम अपने इरदर्गिद अकलमंदाना तौर पर नज़र डालते हैं और जब हम सबकी तारीख की किताबें पढ़ते हैं तो हम देखते हैं के कुछ वुजूद में आती हैं जबकि कुछ चीज़ें खत्म हो जाती है। हमारे बापदादा, कदीमी लोग यहाँ तक के उनकी इमरत और शहर भी वुजूद में लाने के लिए खत्म हो जाए। और हमारे बाद, दूसरे वुजूद में आएँगे। सांईसी इल्म के मुताबिक, इन सब तबदीलियों में ज़बरदस्त कुव्वतें असरअंदाज़ होती हैं। वो जो अल्लाह तआला से मुनकर हैं कहते हैं के "ये सब फितरत की तरफ़ से होता है। हर चीज़ फितरत की कुव्वतों की वजह से पैदा होती है।" अगर हम उनसे पूछें, "क्या ऑटोमोबाइल के हिस्सों को फितरत की शक्तियों के ज़रिए मिलाया गया है? क्या उन्हें मलबे के ढेर की तरह जमा किया गया है जिस तरह पानी का बहाओ लहरों की वजह से इसके ऊपर असरअंदाज़ होता है? क्या एक कार फितरत की कुव्वतों की वजह से चलती है?" क्या वो नहीं मुसकराते और कहते, "यकीनन, ये नामुमकिन है। कार एक आर्ट का काम है जिसे कई लोगों ने मिलकर अपनी अपनी ज़हनी सलाहयतों को इस्तेमाल करके मिलकर बनाया है। कार एक डराएवर के ज़रिए चलाई जाती है, जो अपने दिमाग का इस्तेमाल करते हुए और ट्रेफ़िक के कानून को मानते हुए, इसे सावधानी से चलाता है?" इसी तरह, फितरत में हर मखलूक एक हुनर का काम है। एक पत्ती हैरत अंगैज़ फैक्टरी है। रेत का एक दाना या एक ज़िंदा सैल फाइन आर्ट का नमूना है, जिसे आज साईंस ने छोटी हद तक तलाश किया है। आज जो हम सांईसी तलाश और कामयाबी के बारे में फखर करते हैं वो फितरत के फनून में से कुछ को नकल करने की सलाहयत का नतीजा है। यहाँ तक के डार्विन [1](डार्विन, **1299 (1882** ए.डी) में फौत हुआ।] बरतानवी साईंसदाँ जिसे इस्लाम के मुखालफीन अपने नेता के तौर पर पेश करते थे, ने भी इकरार कियाः "जब भी मैने आँख के साँचे के बारे में सोचा, मुझे ऐसा लगा जैसे में पागल हो जाऊँगा ।" क्या एक शख्स जो इस बात का इकरार नहीं करता के एक कार एक चाँस से, फितरत की ताकतों के ज़रिए बनाई गई है, वो यह कह सकता है के कायनात को फितरत ने तखलीक किया है, जोकि पूरे तौर पर एक फन का कमाल है? बेशक, वो बिल्कुल ऐसा नहीं कह सकता। क्या वो ये यकीन नहीं रखता कि ये एक खालिक के ज़रिए बनाई गई है जो हिसाब, हुनर, इल्म और लाहमहदूद ताकत रखता है? क्या यह कहना लाइल्मी और बेवकूफी नहीं होगी के "फितरत ने इसकी तखलीक की है," या "इसका वुजूद तुक्के से हो गया?"

इन लोगों के अलफ़ाज़ जो कहते है के ये बेशुमार मकलूकात जो अल्लाह तआला के ज़रिए पैदा की गई है वाज़ेह हुकूम और हमआहंगी के साथ तुक्के के साथ मौजूद हैं वो

नावाकिफ़ और मुसवत साईंस के बरअकस हैं। मिसाल के तौर परः आइए दस कंकड़ एक से दस तक एक बैग में डालें। आइए फिर एक एक करके हम अपने हाथ से इन्हें बैग में से बाहर निकाले, ये कोशिश करते हुए के नंबर दस अंत में। अगर कोई भी कंकड़ इस नंबरी क्रम में नहीं आता, तो अब तक निकाले गए सारे कंकड़ वापिस बैग में डालने होगें, और हमें फिर से कोशिश करनी होगी सबसे पहले नम्बर एक से। नंबरी क्रम में दस कंकड़ों को एक साथ निकालने के इमकान दस अरब में से एक में है। इसलिए, क्योंकि नंबरी क्रम में दस कंकड़ खींचने के इमकान बहुत कम हैं, ये वाज़ेह तौर पर नामुमकिन है के काएनात में बेशुमार किस्म के अहकाम चाँस के तौर पर वुजूद में आते हैं।

अगर एक शख्स को टाइपराइटर की keys पर टाइप करना नहीं आता, तो हम कह सकते हैं, के बेतरतीब पाँच बार दबाओ, तो ये मुमकिन है के नतीजे के तौर पर पाँच हुरूफ़ लफ्ज अंग्रेज़ी या दूसरी ज़ुबान में कुछ मआनी ज़ाहिर करें? अगर वो लापरवाही से keys को दबाते हुए एक जुमला लिखे, तो क्या वो बामआनी जुमला लिख सकता है? अब, अगर एक सफ़ह या एक किताब keys को बेध्यानी से दबाते हुए कायम की जाए, तो क्या वो शख्स अकलमंद कहा जाएगा अगर वो किताब में या सफ़हे में एक खास मज़मून को चाँस के ज़रिए उम्मीद करे?

चीज़ें हर वक्त खत्म होती हैं, जबकि दूसरी चीज़ें उनमें से निकलती हैं। ताहम, ताज़ा तरीन इल्म के मुताबिक कैमिस्टरी में एक सौ पाँच अनासर वुजूद में नहीं आते, तबदीलियाँ सिर्फ उनके बरकी ढाँचे में होती हैं। रेडियो-एकटीव वाक्यात ने भी ये दिखाया है के ये अनासिर और उनके ज़ाहिर होने के लिए खत्म होते हैं और इसका मामला तवानाई में बदल जाता है। दरहकीकत, जर्मन भौतिक साईंसदाँ आइंस्टीन ने भी इस रियाज़ाती फॉर्मूले की फार्म की।

हकीकत ये है के चीज़ें और माददा बदल रहे हैं और एक दूसरे से जारी रहते हैं, इसका मतलब ये नही के वुजूद अपने आपको माज़ी के अबद से आती है। दूसरे लफ़ज़ों में एक शख्स ये नहीं कह सकता, "लिहाज़ा ये हो गया है, और इसलिए ये होगा।" इन तबदीलियों में एक आग़ाज़ है इसका मतलब है के माददे वुजूद में आते हैं जबकि कुछ भी नहीं बनाया गया। अगर माददा सबसे पहले किसी चीज़ से बाहर नहीं बनाए गए थे और अगर एक दूसरे से जारी होने वाली इनकी अबदी दूर तक पहुँच गई, तो ये काएनात लाज़मी तौर पर अब नहीं बनेगी। अबदी माज़ी में काएनात का वुजूद दूसरी मखलूकात से पहले लाने

के लिए और उनकी मखलूक की ज़रूरत होती है इसके नतीजे में दूसरो को पहले से मौजूद होने की ज़रूरत है ताकि वो हो सके। आने वाले का वुजूद साबिक के वुजूद पर मुनहसिर होता है। अगर साबिक मौजूद नहीं है तो बाद वाला नहीं होगा। या ये कहना के इबतिदाई वसाईल में तबतिदा के वग़ैर कुछ अवदी वसाईल में वुजूद में आया था के सबसे पहले शुरू नहीं हुआ था। अगर सबसे पहले वुजूद नहीं आया तो बाद में मखलूक मौजूद नहीं थे और इसके नतीजे में कुछ भी नहीं मौजूद। दूसरे लफ़्ज़ों में, मखलूकात का एक सिलसिला नहीं हो सकता था जो दूसरो के वुजूद क सामने मौजूद था। लिहाज़ा इन सबको ज़रूरी है गैर मौजूद होना।

लिहाजा, ये समझा गया के काएनात के मौजूदा वुजूद से पता चलता है के ये पहले से अवदी वुजूद में मौजूद नहीं और इसका पहला वुजूद मौजूद था, जो कुछ भी नहीं था। दूसरे लफ़्ज़ों में, हमें इस हकीकत को कुबूल करना होगा के मखलूकात को कुछ भी नहीं बनाया गया और आज की मखलूक इन सब मखलूकात से तअल्लुक रखने वाली मखलूकात का नतीजा हैं।

वो जिन्होने अल्लाह तआला से इंकार किया और कहा के सब कुछ फितरत के ज़रिए है ये कहते हैं, "ये तमाम मज़हबी किताबों में लिखा गया के ये ज़मीन छः दिन में तखलीक की गई। लेकिन हाल ही की तहकीक, खासतौर से रेडियो आइसोटोप के ज़रिए की गई पेचीदा हिसाबात से दिखाया गया के ज़मीन अरबो साल पहले पैदा हुई। ये अल्फाज़ ज़मीन के अरबों साल पहले पैदा होने में कोई फर्क नहीं रखते। मुकद्दस किताबों में लिखे गए छः दिनों का आज के **24** घंटे के दिन से क्या लेना? **24** घंटे का दिन आदमियों की तरफ से इस्तेमाल किए जाने वाला एक यूनीट है। हम नहीं जानते के मुकददस किताबों में दिन कितना लम्बा ज़िकर किया गया है। ये हो सकता है के इन छः दिनों में हर एक geological ... कई सदियों तक पहुँच गया हो इन यूनीट के मुताबिक जो हम आज इस्तेमाल करते हैं। कुरआन अल करीम की सूरत सजदा की पाँचवी आयत का पाक मआनी हैः "**वो आदामान से लेकर ज़मीन तक हर अमर की तदबीर करता है, फिर हर अमर उसके हज़ूर में पहुँच जाएगा, एक ऐसे दिन में जिसकी मिकदार तुम्हारी शुमार के मुवाफ़िक एक हज़ार बरस की होगी।**" **(32-5)** और बाएबल में "लेकिन, महवूब , इस बात से लाइल्म न हों, के खुदावंद के साथ एक साल एक हज़ार साल के तरह, और एक हज़ार साल एक दिन की तरह।" ...

हम नहीं जान सकते के कब पहले इंसान और नबी आदम (अलैहिस-सलाम) पैदा हुए। हम दावा नहीं कर सकते के ज़मीन की तखलीक से पहले से आदमी मौजूद है। जो हम जानते हैं वो ये के आदमी अल्लाह तआला के हुकूम और तखलीक के साथ आते हैं। डार्विन के उसूल के मुताबिक निएंडरथल आदमी को पहला आदमी मान लेना इर्तिगा के मुताबिक नामुमकिन है के वो आहिस्ता आहिस्ता आज के आदमी में तबदील हुआ। असल में, ये गैर मंतकी है इस बात पर ज़ोर देना के, जैसा के कुछ लोग करते हैं के असल में आदमी चौपाया था और कई सदियों बाद वो खड़े होने में कामयाब हो पाया। ये एक ऐसी कदीम मखलूक के लिए नामुमकिन है के मौजूदा कमाल तक पहुँच पाना। इसलिए, हमें ये मानना पड़ेगा के वो चौपाए इंसानी मखलूक नहीं थे, और ये के वो कुछ दूसरी किस्म की मखलूक थीं, जो बहुत सी दूसरी कदीम मखलूक के साथ मौजूद थीं। सारी मज़हबी किताबों ने बताया के पहला आदमी “homostions”, था, यानी, वो दो पाँव पर चल सकता था और सोच सकता था। और बेशक, जैसा के हमने ऊपर बताया के यहाँ तक के डार्विन भी ये बात साबित नहीं कर पाया के चौपाया या जानवर में क्या फर्क है के वो जानवर आज के आदमी में तबदील हुआ।

सारी मज़हबी किताबों ने ये इंकेशाफ़ किया हज़रत आदम (अलैहिससलाम) पहले आदमी थे। कहा जाता है के “बैल जोता, बीज बोया, अपना घर तामीर किया, और दस सफ़हों की की वही (मकाशफ़ा) मौसूल की।” ये यकीन करना चाहिए के वो सबसे पहले आदमी थे जो मवेशी चराने के काबिल थे, खुद एक ग़ार में रहने वाले चौपाए के साथ उनका कोई तआल्लुक नहीं था।

एक मुसलान पहले अपने दिल से इकरार करे के अल्लाह तआला मौजूद है, वो हमेशा है, वो वाहिद है, वो पैदा नहीं किया गया और न किसी को जन्म देता है, और ये के वो अबदी है और कभी न बदलने वाला। ये ईमान इस्लाम का सबसे पहला उसूल है।

## नबी मज़ाहिब और किताबें

जब अल्लाह तआला ने आदमी की तखलीक की, उसने उसे **अक्ल** (समझ) और दिमाग और सोच की ताकत दी। इस्लामी अलिमों (रहिमाहुम अल्लाह तआला) [1] (रहिमह अल्लाह तआलाः अल्लाह उन पर रहम करे।) ने आदमी को “हैवान-ए-नातिक ”[2]

(हैवान-ए-नातिकः तखलीक जो बोलने के काबिल हो।) और कार्टेशियन फलसफ़े में इज़हार कहा, "मैं सोचता हूँ, इसलिए में इस हकीकत को साफ़ ज़ाहिर कर सकता हूँ।

सबसे बड़ा फर्क आदमी को दूसरी मखलूक से अलग करता है वो हैः उसके पास जिस्म के साथ रूह है; वो सोच सकता है, सब वाक्यात को अपने दिमाग़ से जाँच सकता है; वो अपने दिमाग से फैसला करके और अपने फैसलों को आगे बढ़ा सकता है; वो बुराई से अच्छाई का फर्क कर सकता है; और वो अपनी गलतियों को समझता है और उनकी तलाफ़ी कर सकता है, उसके आगे भी। लेकिन सवाल ये हैः क्या आदमी इस दिए गए ताकतवर औज़ार का इस्तेमाल बग़ैर किसी रहनुमा के कर सकता है, या वो सही रास्ता ढूँढ सकता है और अल्लाह तआला को खुद के ज़रिए समझ सकता है?

तारीख/माज़ी का एक जाएज़ा हमें ये दिखाता है के जब आदमी अल्लाह तआला की तरफ से बग़ैर किसी रहनुमाई के अकेला रह गया तो वो हमेशा तखरीब के रास्ते में पड़ गया। अपना दिमाग इस्तेमाल करते हुए वो उस खालिक के बारे में सोच सकता है, जिसने उसे तखलीक किया, लेकिन वो रास्ता नहीं ढूँढ सकता जो अल्लाह तआला की तरफ जाता है। जो लोग अल्लाह तआला की तरफ से भेजे गए नबियों के बारे में नहीं सुनते थे पहले वो खुद अपने चारो तरफ खालिक को देखते थे। सूरज, आदमियों के लिए सबसे ज़्यादा फाएदेमंद चीज़ है, कुछ लोगों को ये सोचने के लिए उकसाया के ये तखलीकी ताकत है, इसलिए उन्होने उसकी इबादत शुरू करदी। बाद में जैसा के उसने देखा फितरत की अज़ीम ताकतों को, जैसे के एक आँधी, एक आग, उफ़ानी समुंद्र, एक ज्वालामुखी और इसी तरह और भी, तो उन्होने सोचा ये सब खालिक के सहायक थे। उसने उनमें से हर एक की अलामत करने की कोशिश की। इसके नतीजे में बुत्तों को जन्म दिया। वो उनके गुस्से से डरने लगे और उनके लिए जानवरों की कुरबानी की। बदकिस्मती, उसने आदमी को भी उन पर कुरबान किया। हर नया वाक्या एक नए बुत को जन्म देता था, उन वाक्यात को मुतासिर करते हुए बुतों की तादाद बढ़ती गई। जब ज़मीन पर पहली बार इस्लाम आया तो काबे में तीन सौ साठ बुत थे। मुख्तसर ये के, आदमी खुद, कभी अल्लाह तआला को नहीं समझ पाया, जो दुनिया का असली खालिक, वाहिद, और अबदी है। यहाँ तक के आज भी, कुछ लोग हैं जो सूरज और आग की इबादत करते हैं। ये कोई इतनी हैरानी वाली बात नहीं, क्योंकि बग़ैर किसी एक रहनुमा, एक रोशनी के कोई अंधेरे में सीधा रास्ता नहीं तलाश कर सकता। कुरआन अल करीम की सूरत अल-इसरा की 15वीं आयत से बयान हैः **"ना हम**

**अपने गुस्से के साथ जाते हैं** [बुतों की इबादत करने वाले] **जब तक के हम एक पैग़म्बर** (अलैहिस-सलाम) **नहीं भेजते**।"

अल्लाह तआला ने पैग़म्बरें (अलैहिमु स-सलाम) को अपने इंसानी गुलामों को ये सिखाने के लिए भेजा के किस तरह दिमाग़ और सोच की ताकतों को इस्तेमाल किया जाए, उसकी वहदानियत और बुराई में से अच्छाई के फर्क को सिखाने के लिए भेजा। पैग़म्बर (अलैहिमुस-सलाम) हमारी तरह इंसान थे। वो खाते थे, पीते थे, सोते थे और थकान भी महसूस करते थे। उन्हें हमसे क्या चीज़ अलग करती थी वो थी उनकी हमसे ज़्यादा बड़ी दानिश्वाराना और जाँचने की सलाहइयतें। इसके अलावा, वो पाक अखलाकी खुसूसियात के हामिल थे, और, इस वजह से, अल्लाह तआला के हुक्काम को हम तक पहुँचाने की सलाहइयत रखते थे। पैग़म्बर (अलैहिमुस्सलाम) सबसे आला रहनुमा थे। सबसे ऊँचे और आखिरी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम), जिन्होने इस्लामी मज़हब के बारे में आगाह किया, वो हज़रत मुहाम्मद और आपकी पाक किताब **कुरआन अल-करीम** है। (बाद में इस्लाम पर गुफ़तगू इस मौज़ू के बारे में मज़ीद मालूमात देती है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रहनुमा बयानात **अल-हदीस अस शरीफ** कहलाए जाते हैं। उन्हें कई कीमती किताबों में इकट्ठा किया गया। कुरआन अल करीम और हदीस अस शरीफ़ के अलावा वहाँ बहुत सारे मज़हबी आलिम भी है जो हमें रहनुमाई फराहम करते हैं। लेकिन वहाँ वो लोग हैं जो इन मज़हबी आलिमों को मामूली और नाजाईज़ समझते हैं, कहते हैं, "ऐसे आलिमों की क्या ज़रूरत है? क्या एक शख्स इस्लाम की किताब, कुरआन अल-करीम को पढ़कर और हदीस अस-शरीफ़ को पढ़कर सही रास्ता ढूँढकर और एक अच्छा मुसलमान नहीं बन सकता?" ऐसे आलिमों की क्या ज़रूरत है? क्या एक शख्स इस्लाम की किताब, कुरआन अल-करीम को पढ़कर और हदीस अस-शरीफ़ को पढ़कर सही रास्ता ढूँढकर और अच्छा मुसलमान नहीं बन सकता? "ये इमकानात गलत हैं। एक शख्स को जिसे मज़हब की बुनियादों का कोई इल्म नहीं है वो कुरआन अल-करीम के गहरे मआनी को सही तरह से नहीं समझा पाएगा। यहाँ तक के एक कामिल खिलाड़ी भी एक ट्रेनर की तरफ़ देखता है जब वो एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने की तैयारी करता है। एक बड़ी फैक्टरी मास्टर कामगार और फोरमैन, साथ ही साथ इंजीनियरों को रोज़गर देती है। एक मुलाज़िम जो ऐसी फैक्टरी में काम करना शुरू करता है अपने काम के बुनियादी पहलू पहले इस मास्टर कारिगर और फिर अपने फोरमैन से सीखता है। अगर वो इनको सीखने से पहले चीफ़ इंजीनियर को देखता है, तो वो इंजीनियर के लफ़्ज़ों और हिसाब किताब से कुछ भी नहीं समझ पाएगा। यहाँ तक के

बंदूक का बेहतरीन माहिर भी एक नई बंदूक को सही तरीके इस्तेमाल करना नहीं सीख सकता जब तक के उसे पहले इसे इस्तेमाल करना न सिखाया जाए। इसी वजह से मज़हब और अकीदे के मामलात में, कुरआन अल-करीम और हदीस अश शरीफ के अलावा, हमें उन आला मज़हबी आलिमों के काम को भी इस्तेमाल करना चाहिए जिन्हें हम "मुर्शीद-ए कामिल" (सही गाइड) बुलाते हैं। इस्लाम में मुर्शीद-ए-कामिल में से सबसे आला चार मसलकों के इमाम (लीडर) हैं। वो हैं अल इमाम अल-आज़म अबू हनीफ़ा, अल-इमाम अश-शाफ़ी-ई, इमाम मालिक (मालिक बिन एनास **179** (**795** ए.डी.) मदीना में रहलत फरमा गए।) और इमाम अहमद बिन हंबल (रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन)। ये चार इमाम इस्लाम के चार सतून हैं। हमें इन चारों में से एक की किताबों को कुरआन अल-करीम और हदीस अस शरीफ़ के मआनी को समझने के लिए पढ़ना होगा। हज़ारों आलिमों ने इन चारों में से हर एक की किताबों को वाज़ेह किया है। वो जो इन वज़ाहतों को अच्छे से समझ लेगा वो इस्लाम मज़हब को सही तौर पर अच्छे से समझ लेगा। इन सब किताबों में ज़ाहिर किए गए अकिदें एक जैसे हैं। इस सही अकिदे को "**अहल-अस-सुन्नह का अकिदा**" कहा जाता है। वो अकिदे जो बाद में बनाए गए और अहल-अस-सुन्नत के अकिदों के साथ तनाज़ा हुआ उन्हें "**बिदत**" या "**दलालअ**" (हटना/इनहेराफ़) कहते हैं। सब मज़ाहिब में आदम (अलैहिस सलाम) के बाद से सारे पैग़म्बर आम उसूल लेकर आए वो अकीदे के उसूल हैं। अल्लाह तआला ने बुनियादी उसूलो में कोई फर्क नहीं रखा। कुरआन अल-करीम की सूरत अल-इनाम की **159**वीं आयत में, उसने अपने प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व-सलाम) से फरमायाः "**उन लोगों के लिए जिन्होनें अपने मज़हब को बाँटा और फिरकों में बंट गए, तुमने उनमें कोई हिस्सा नहीं लियाः उनका मामला अल्लाह तआला के साथ हैः वो अखिरत में उनको जो उन्होने किया उसकी सच्चाई बताएगा।**" (अल्लाह तआला उन्हें हिसाब के लिए बुलाएगा और वो जिसके लायक हैं उन्हें देगा)..." **(6-59)**

एक शख्स ज़ख्मी आँख के साथ किससे मदद मांगेगा? एक चौकीदार से, एक वकील से, एक हिसाब के टीचर से, या आँख के डॉक्टर से? बेशक, वो एक आँख के डॉक्टर के पास जाएगा और इसका इलाज ढूँढेगा। इसी तरह, वो जो अपने यकीन और ईमान को बचाने के लिए कोई उपाय देख रहा है वो एक मज़हब के माहिर का सहारा लेगा, न की एक वकील, एक हिसाबंदा, एक अखबार, या एक फिल्म का।

एक मज़हबी आलिम होने के लिए एक शख़्स को मआसिर उलूम की अच्छी जानकारी होनी चाहिए; साईस और खतूत दोनों का ग्रेजुएट बने, और दोनो में मास्टर और

डॉक्टर डिग्री ले; कुरआन अल-करीम और के मतालिब को जाने और उन्हे दिल से याद करे; हज़ारों हदीसों को जाने और उनके मतलब को दिल से याद करे; इस्लामी इल्म की बीस अहम शाखाओं में माहिर हो और उसकी अस्सी ज़ैली डीवीजनल शाखाओं को भी इसी तरह जानें; चारों मसलकों की बारीकियों के बारे में अच्छी तरह इल्म हासिल करे; उन इल्म की शाखाओं में इजतिहाद के ग्रेड तक पहुँचे और कामिल मंज़िल तक पहुँचे जिसे **विलायत-ए-खास्सा-ए-मुहम्मदिया** कहा जाता है, जो तसव्वुफ़ का सबसे ऊँचा मकाम है।

ये एक लाइल्म शख्स के लिए जो अपनी बीमारी और दिल में बीमारी के लिए दवाई से बेसुध के लिए हज़ारों हदीसों में से अपने लिए मुनासिब हदीसों को चुन पाना बिल्कुल ही नामुमकिन है। इस्लामी आलिम, दिल और रूह के माहिर होने की वजह से, इन हदीसों में से सही दवाई को बाहर निकाल कर रूह के लिए लिखेंगे और दिमाग़ में उस शख्स की फितरत के मुताबिक तजवीज़ करेंगे। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक चीफ डॉक्टर की तरह हैं आपने "दुनिया की फार्मेसी" के लिए लाखों दवाईयाँ तैयार कीं और औलिया और उलेमा मआवन डॉक्टरों की तरह हैं जिन्होने आपकी हिदायत में बीमारों की मुश्किलात के मुताबिक इन तैयार दवाईयों को बाँटा। क्योंकि हमें अपनी बीमारी और उसकी दवाई के बारे में नहीं पता, अगर हम इन लाखों हदीसों में से अपनी बीमारी की दवाई चुनने की कोशिश करेंगे, तो हो सकता हम पर इसका न सहनेवाला असर पड़े, और, इस तरह, हमें अनजान/लाइल्म होने की वजह से फायदा होने के बजाए नुकसान का हरजाना भरजाना पड़ जाए। दरहकीकत, एक हदीस से रिवायत हैः **"वो जो, अपने इल्म और वजह को इस्तेमाल करता है, कुरआन अल-करीम को अपनी समझ के मुताबिक तशरीह करता है,** [जो तशरीहात को तैयार करता है उससे ग़ैर मुतफ़िक है जो अहल-अस सुन्नत के आलिमों ने हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सहाबतल-किराम (रज़ी-अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) के मुताबिक लिखा, **वो एक काफिर बन जाता है।"** इन बारिकियों से अनजान होने की वजह से, ला मज़हबी (ग़ैर मसलकी) लोग हमें अहल-अस-सुन्नत के आलिमों (रहिमाहुमल्लाहु तआला) की किताबों को पढ़ने से मना करते हैं ये कहकर के, "हर कोई कुरआन अल-करीम और हदीस को खुद पढ़े और अपने ईमान को उनसे सीखें। उन्हें मसातिक की किताबों को सही पढ़ना चाहिए।" दरहकीकत, उनकी बेहुदगी इतनी आगे बड़ गई के उन्होने इन किताबों के इल्म को "शिर्क और कुफ़्" कहना शुरू कर दिया। ताहम, हकीकत ये है, के ऐसा करके वो लोगों को इस्लाम के जोहर को सीखने से परे रखते हैं और, इस तरह, बजाए मदद करने के बहुत ज़्यादा नुकसान पहुँचाते हैं।

अब दूसरे मज़ाहिब के बारे में बात करते हैं। आज यहाँ ज़मीन पर तीन बड़े मज़हब वाहिद खालिक के वुजूद का संदेश देते हैं।

1. **यहूदियतः** यहूदी मज़हब उन लोगों का मज़हब है जो हज़रत मूसा को मानते थे, और लोग जो आज तक इन मोमिनों से बच गए हैं। हज़रत इब्राहिम (अलैहि सलाम) हज़रत इस्हाक (अलैहि सलाम) के बाप थे, जो हज़रत याकूब (अलैहि सलाम) के बाप थे। हज़रत याकूब (अलैहि सलाम) का मुतावादिल नाम इस्राएल (इज़रायल) था। इस्राएल का मतलब अबदुल्लाह और अबदुल्लाह का मतलब है "अल्लाह का बंदा"। इस तरह, हज़रत याकूब (अलैहि सलाम) के बारह बेटों की नसलें **बनी इज़रायल** (इज़रायल के बेटे) कहलाई। हज़रत मूसा (अलैहि सलाम) एक अज़ीम नबी थे। उन्हें बनी इस्राईल को सौंपा गया। उनकी आबादी मिस्त्र में बड़ी। वो पूरी लगन से इबादत करते थे। लेकिन उन्हें ज़ुल्म और कम रूत्बे का निशाना बनाया गया। कुछ ज़राओं के मुताबिक, उनकी पैदाइश मिस्त्र में ईसा (अलैहि सलाम) से **1705** सालों पहले हुई थी। वो चालीस साल होने तक फिरौन के महल में रहे। अपने रिश्तेदारों के साथ जान पहचान होने के बाद, वो मदयन/मदीन के शहर चले गए। वहाँ उनकी शादी शुएब (अलैहि सलाम) की बेटी से हो गई। बाद में, वो मिस्त्र की तरफ रवाना हुए। अपने रास्ते में, उन्होने कोहे तूर (सिना) पर अल्लाह तआला से बात की उनका अंदाज़ा लगाया जाता है कि वे साल **1625** बी.सी के आस पास इंतेकाल कर गए थे। हज़रत मूसा (अलैहिस सलाम) बनी इसरायल को मिस्त्र से बाहर ले गए। उन्होने कोहे तूर पर दोबारा अल्लाह तआला से बात की। उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से "दस हुकूम" मिले। उन्होने बनी इसरायल को **अवामिर असरा** (दस हुकूम) पहुँचाया उन्होने उनके अंदर ये ईमान डालने की कोशिश की के वहाँ सिर्फ़ एक अल्लाह है। उन्होने अल्लाह तआला की तरफ से नाज़िल की गई **तोरात** (तोरह) को उन तक पहुँचाया। लेकिन जिन जगहो का उनसे वादा किया गया था वो उन्हें उन तक नहीं ले जा सके। बनी इस्त्राईल उनके इलाही चेतावनी को कभी नहीं समझ पाए। असिरिया (आसूरी) ने ईसा (अलैहि सलाम) के ज़हूर से पहले जेरूसलम पर दो बार हमला किया, और अदरयान, **135** ए.डी. में एक रोमन बादशाह ने जेरूसलम में ज़्यादातर यहूदियों का कत्ले आम किया। उन्होने उनकी तोरह की जिल्दों को जला दिया, जिसके नतीजे में, तोरह गुम गई। जैसे वक्त बीतता गया, यहूदी ज़्यादा बदकार हो गए। वो साथ फिरकों में बंट गए। उन्होने तोरह को तबदील करके आलूदा कर दिया। उन्होने मज़हब की एक किताब लिखी जिसका नाम **तल्मूड** रखा। जिसके दो हिस्से हैंः **मिशना** और **गमार**। **मीज़ान-उल मवाज़ीन** किताब से शक से परे ज़ाहिर होता है के, आज के

यहूदियों और ईसाईयों के हाथों में किताबें जिन्हें तोरह और बाइबिल ज़ाहिर किया गया वो अल्लाह तआला के लफ़्ज़ (कलाम) नहीं हैं। **मीज़ान उल-मवाज़ीन** किताब फारसी में है। इस किताब का **257**वा सफ़हा कहता हैः यहूदियों के यकीन के मुताबिक, अल्लाह तआला ने कोहे तूर (सिना) पर **तोरह** के साथ मूसा (अलैहि सलाम) को साईस के साथ हौसला अफ़ज़ाई की। हज़रत मूसा ने ये तालीमात हारूम, यूसु और अल यू अज़ार को दीं। इन लोगों ने ये तालीमात आगे आने वाले पैग़म्बरों कों दीं, और आखिर में संत यहूदा को दीं। इसाई युग की दूसरी सदी में इन तालीमात को पीर यहूदा ने चालीस साल के अरसे में एक किताब में लिखा। इस किताब को **मिशना** का नाम दिया गया। इसाई युग की तीसरी और छठी सदियों में मिशना के लिए दो तशरीहात लिखी गई, बिलतरतीब एक यरूशलेम में और एक बाबल (बेबीलोन) में। उन तबसरों को **गमार** का नाम दिया गया। **गमार** की दो किताबों में से हर एक को **मिशना** के साथ एक वाहिद किताब में रखा गया और **तल्मूड** का नाम दिया गया। **गमार** को रखी हुई किताब यरूशलेम में लिखी गई और **मिशना** को **यरूशलेम की तलमूड** कहा गया। बाबल में लिखी गई दूसरी किताब **गमार** और मिशना **बाबल की तलमूड** कहलाई गई। इसाई इन तीन किताबों की तरफ कड़वी दुश्मनी दिखाते हैं। उनकी दुश्मनी की एक वजह ये है के उनका मानना है के **मिशना** को जिन आदमियों ने तबसरा किया उनमें से एक शमून था, जो सलीब का रखने वाला था जिससे ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाया गया। **तल्मूड** किताब में कुछ चीज़े ऐसी हैं जिन्हें मुसलमानों के जरिए सही माना जाता है। इस वजह से इसाई इस्लाम से भी मुनकर हैं।" यहूदी लोग अपने मज़हबी आदमियों को "हाहम" कहते हैं। अल-य अज़ार शुऐब (अलैहि सलाम) के बेटे हैं। यहूदी तल्मूड को उतनी ही अहमियत देते हैं जितनी वो तोरह को देते हैं।

**2. ईसाइयतः** हज़रत ईसा (जिस्स [अलैहि सलाम]) हमारी ही तरह इंसान है जो एक कुंवारी औरत मेरी (मरयम) के यहाँ पैदा हुए थे। ये हकीकत कुरआन अल करीम में बयान की गई है जिसे रूह-उल-कुदस (पाक रूह) को सौंपा गया। लेकिन, इसाईयों की सोच के बरअकस, इसका मतलब ये नहीं के हज़रत ईसा (जिस्स) गॉड के बेटे हैं। रूह उल-कुदस की टर्म इस बात की अलामत है के अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा को "बुलंद निजात दहंदा की ताकत दी थी।" ईसा (अलैहि सलाम) यहूदियों को ये समझाने की कोशिश की के वो भटके हुए हैं और ये के सही रास्ता वो है जो उन्होने दिखाया था। लेकिन, यहूदी ये बात फर्ज़ करते रहे के जिस निजात दहंदा की वो उम्मीद लगाए हुए हैं वो बहुत कठोर, सख्त, भयंकर, और हठीला शख्स है। वो हज़रत ईसा में यकीन नहीं रखते थे। ये सोचते हुए कि वो

एक झूठे पैग़म्बर हैं, उन्होने रोमन को उनके खिलाफ़ भड़काया, और, जैसा के वो यकीन रखते थे, उन्हें सूली पर चढ़ाया।[इस्लामी मज़हब से रिवायत है के जो शख्स सूली चढ़ाया गया वो जिस्स नहीं थे, बल्कि वो अर्श्युत याहुदा (जुदास) था, जिसने बहुत थोड़ी रक्म के लिए जिस्स को रोमन को बेचा था।] इसाई आलिमों के हाल के मुतालेह के ज़रिए ये बात ज़ाहिर होती है के जिस्स को जब सलीब से उतारा गया तो वो ज़िन्दा थे।**1978** में, एक शख्स जिसका नाम जॉन रेबन था।उसने इस मामले पर एक किताब छापी जो सबसे ज़्यादा बिकने वाली किताबों में शामिल हुई।ये अभी तक नहीं पता लगा है के इस खोज का क्या असर पढ़ा है।लेकिन ये इस तर्क को पहले से ही खत्म कर चुका है के हज़रत ईसा (अलैहि सलाम) "सलीब पर मर चुके थे और बाप-खुदा अपने एकलौते बेटे को पापियों के तआसुब के लिए कुरबान कर चुके थे।" इसलिए, ईसाई तारीखदाँ चर्च के खिलाफ़ तबाह कुन वार करने के लिए अपने रास्ते पर हैं।यहूदी उम्मीद करते हैं के सच्चा मसीह (मसीहा) जल्द ही आएगा।लेकिन, जैसा के एक मश्हूर यहूदी तारीखदाँ आलिम के हवाले सेः "हम दो हज़ार सालों से इंतज़ार कर रहे हैं, लेकिन अभी तक कोई निजात दहंदा नहीं आया।ऐसा लगता है के हज़रत ईसा सच्चे मसीह थे।हमने उनकी तारीफ़ नहीं की, और जो हमारी निजात के तौर पर आया था, हमने उसे सलीब पर चढ़ाने का सबब बनाया।"

**इंजील** नाम की किताब हज़रत ईसा पर उतारी गई।लेकिन अस्सी सालों के अंदर यहूदियों ने इस किताब को खत्म कर दिय।**पाक बाएबल** जो बाद में ज़ाहिर हुई और जिसे अब अल्लाह तआला की तरफ से ईसाइयों की पाक किताब समझा जाता है दो हिस्सो पर मुश्तमिल है।पुराने वसीयत में उन पैग़म्बरों की मुंतकली है जो हज़रत ईसा से पहले ज़ाहिर हुए, खास तौर से मोज़ेक मुंतकली। "नए वसीयत" में उनके मानने वालों **मैथ्यू, मार्क, ल्यूक** और उनके मज़हब को फैलाने वाले जॉन के ज़रिए लिखी गई चार किताबें शामिल हैं, जिसमें ईसा की ज़िंदगी के बारे में, उनके कामों और चेतावनी के बारे में लिखा है।जो पाबंदी कुरआन करीम की रिकॉर्डिंग करने में की गई वो बाएबल की तैयारी करने में इस्तेमाल नहीं की गई।बहुत सारी गलत सोचें, दास्ताने, और बेकार कहानियाँ सच्चाई में शामिल करदीं गई ।प्रोफेसर हाजी अब्दुल्लाह अबदि बे मनसतिर के (डी. **1303/1885**) के ज़रिए लिखी गई अरबी किताबों **रिसाल-ए समसाय्या** मे बाएबल के बारे में तफ़सीली जानकारी है और तुर्की किताब **इज़ाह-उल-मेरम** में भी, दोनो ही छपाई के काम हैं।फिर भी, असली बाएबल के ज़्यादा नज़दीक आज इंजील मौजूद है।

इन सबमें सबसे ज़्यादा अहम **बरनाबास की इंजील** हैं। बरनावास एक यहूदी था जो साइप्रस में पैदा हुआ। उसका असली नाम जॉसेफ़ था। वो जिस्स के मानने वालो में से एक था और ईसाई मज़हब को मानने वालो में एक अहम पोस्ट रखता था। उसका निक नाम, बरनावास का मतलब था "एक शख्स जो सलाह देता है और अच्छे कामों को करने के लिए उकसाता है।" ईसाई दुनिया बरनावास को एक महान संत/पीर के रूप में जानती है जो संत पॉल के साथ मिलकर ईसाईयत को फैलाने की तरफ लगे। ईसाई **11** जून को संत पॉल के दिन के तौर पर मनाते हैं। बरनावास ने असल में जो हज़रत ईसा से जो सुना और सीखा बिल्कुल वही लिखा। बरनाबास की किताब और दूसरी बाइबल मश्हूर थी और ईसाईयत के पहले तीन सो सालों वही पढ़ी जाती थी। **325** साल में, जब पहली **नायसिन** (इज़निक) **काँसिल** ने हिब्रू ज़बान में लिखी सारी बाइबल को खत्म करने का फैसला किया, तो बरनाबास की बाइबल भी खत्म करदी गई। ये सरकारी तौर पर धमकी दी गई के किसी भी शख्स को मारा जा सकता है अगर उसने बाज़ाबता तौर पर पूरी की गई चार बाइबल के अलावा कोई और बाइबल रखी या पढ़ी। दूसरी बाइबल को लैटिन में तरजुमा किया गया; लेकिन बरनाबास की बाइबल अचानक गायब हो गई। पॉप दमासस को **383** में इत्तिफाक से बरनवास की बाइबल की एक कॉपी मिल गई और उसे कैथोलिक लाएब्रेरी में रख दिया। **993 (1585)** तक बरनावास की बाइबल उस लाएब्रेरी में रही। उस साल पॉप सिक्सटस के एक दोस्त फरा मरीनो ने वहाँ इस किताब को देखा और उसमें गहरी दिलचस्पी दिखाई। (फरा का इटालियन में मतलब है भाई और माँक/राहिब)। ये इस वजह से के फरा मरीनो जानता था के **160 (130-200)** के आस पास, ईसाईयत के मारूफ़ एकसपोनेंट में से एक, इरानिअस ने ये यकीन आगे रखा के "वहाँ सिर्फ एक ख़ुदा है, और जिस्स ख़ुदा के बेटे नहीं हैं।" इरानिअस ने ये भी कहाः "संत पॉल ईसाई यकीन में तसलीस के गलत आइडिया को डालना चाहते थे क्योंकि वो रोमन कस्टम के बहुत सारे ख़ुदाओं की इबादत करने के ज़रिए के असर में थे।" फरा मरीनो ये भी जानते थे के इरानिअस ने बरनवास की बाइबल को संत पॉल के खिलाफ़ अपनी तनकीद में सबूत के तौर पर हवाला दिया है। इस वजह से, फरा मरीनो ने बरनवास की बाइबल को पूरे ध्यान से पढ़ा और **1585-1590** के सालों के बीच में इसे इटालियन में तरजुमा किया। कई हाथों में तबदीली के बाद ये इटालियन दस्तखत क्रेमर, राजा पुशिया के सलाहकारों मे से एक की दस्तरस/मिलकियत में आया। क्रेमर ने **1120 (1713)** में ये कीमती मसूदाह/दस्तखत राजकुमार यूजीन डे सावोई **(1663-1736)** को सौंप दिया, जिसने तुर्को को जंता में हराकर और हंगरी और बेलग्रेड के किले को वापिस लेकर यूरोप में अपनी धाक जमा ली थी। राजकुमार यूजीन की मौत के बाद, बरनवास की

बाइबल, उसकी ज़ाती लाइब्रेरी के साथ हॉफबिब्लयो की रॉयल वियना में **1738** में मुंतकिल करदी गई।

दो बरतानवी, श्री और श्रीमती रैग जिन्हें सबसे पहले रॉयल लाइब्रेरी में बरनबास की बाइबल मिली, उसे अंग्रेज़ी में तरजुमा कराया और वो तरजुमा **1325** **(1907)** में ऑक्सफोर्ड में छापा गया। कहना अजीब है, के ये तरजुमा पुरअसरार तरीके से मार्केट से गायब हो गया। तरजुमे की सिर्फ़ एक कॉपी ब्रिटिश म्यूज़ियम में और दूसरी यू-एस कांग्रेस की लाइब्रेरी वाशिंगटन में है। बड़ी कोशिश के बाद पाकिस्तान की **कुरानिक मजलिस 1973** में अंग्रेज़ी तरजुमे को दोबारा पेश करने में कामयाब हुई। मंदरजाज़ेल निचोड़ उस किताब से लिए गए हैंः

**बरनबास की किताब के 17वें सबक से**ः "जिस्स ने जवाब दियाः और तुम; क्या कहते हो, कि मैं क्या हूँ? पीटर ने जवाब दियाः 'तू खुदा का बेटा, मसीह है।' तब मसीह को गुस्सा था, और गुस्से के साथ उसे डांटा, ये कहते हुएः मुझ से दूर और अलग हो जा, क्योंकि तू शैतान है और मुझ से गुनाह कराना चाहता है! 'और उन्होने ग्यारह को धमकी दी, ये कहते हुएः अगर तुम' इस पर ईमान लाए हो तो तुम पर अफसोस क्योंकि मैने खुदा से उन लोगों के खिलाफ़ लानत की है जो इस पर ईमान रखते हैं।"

**71वें बाब से बयान है**ः "तब मसीह ने कहाः 'जैसे के खुदा ज़िन्दा है, मैं गुनाह माफ करने के काबिल नहीं हूँ, और न ही कोई आदमी, लेकिन सिर्फ़ खुदा ही माफ़ कर सकता है।"

**72वें बाब से बयान है**ः "मेरे लिए, मैं अब दुनिया में आ गया हूँ खुदा के पैग़म्बरों के लिए रास्ता बनाने के लिए, जो दुनिया में निजात लाएंगे। लेकिन खबरदार रहना, कि तुम धोखा न खाओ, क्योंकि बहुत से झूठे नबी आएगे, जो मेरी बाते कहेंगे और मेरी खुशखबरी का खात्मा करेंगे। फिर एंड्रयू ने कहा, मास्टर हमें कुछ निशानियाँ बताएँ, के हम उसे जान जाएँ, मसीह ने जवाब दियाः 'वो तुम्हारे वक्त में नहीं आएगा, लेकिन तुम्हारे कुछ सालों बाद आएगा, जब मेरी इंजील खत्म हो जाएगी, ऐसा ही होगा कि तीस वफ़ादार होगें। उस वक्त खुदा दुनिया पर रहम करेगा, और इस तरह वो अपना असली पैग़म्बर भेजेगा, जिसके सिर पर सफ़ेद बादल होगा। वो बुरों के लिए अज़ीम ताकत के साथ आएगा, और ज़मीन पर बुतपरस्ती को खत्म करेगा, और बुतपरस्तों को सज़ा देगा। और इससे मुझे

खुशी है क्योंकि इसके ज़रिए हमारे खुदा को जाना जाएगा और उसकी तसबीह की जाएगी, और सच्चा जाना जाऊँगा; और वो उनके खिलाफ़ बदला देगा जो कहते हैं के मैं आदमी से ज़्यादा हूँ..."

**96वें बाब में ये लिखता है**ः "मसीह ने जवाब दियाः 'मैं मसीह नहीं हूँ, जिसे ज़मीन के सारे कबीले उम्मीद करते हैं, जैसे के खुदा ने हमारे बाप इब्राहिम से वादा किया था। लेकिन जब खुदा मुझे दुनिया से परे ले गया, तो शैतान ने दोबारा इस मज़मत को उठाया, बेईमान यकीन के साथ के मैं खुदा हूँ और खुदा का बेटा हूँ। जब मेरे लफ़्ज़ मेरे नज़रयात गंदे हो जाएंगे, इतने ज़्यादा के वहाँ पर मुश्किल से तीस वफ़ादार बचेंगे; इसपर खुदा दुनिया में अपनी रहमत करेगा, और अपना नबी भेजेगा जिसके लिए उसने सब कुछ बना दिया; जो जुनूब से ताकत के साथ आएगा, और जो बुतपरस्तों के साथ बुतों को भी खत्म कर देगा; जो शैतान से इकतेदार ले लेगा जो उसे मरदों पर हासिल होगी। वो अपने साथ खुदा की रहमत लेकर आएगा उनकी निजात के लिए जो उसमें यकीन रखते हैं, और जो उसके लफ़्ज़ों में यकीन रखते हैं उनपर दुआएँ लाएगा।"

**97वें बाब से**ः "फिर पादरी ने कहाः कैसे मसीहा को बुलाया जाएगा और किस निशानी से उसकी आमद का पता चलेगा? जिस्स ने जवाब दियाः "मसीहा का नाम काबिले तारीफ होगा, क्योंकि खुदा जब उनकी रूह बनाई थी तो खुद उनका ये नाम रखा था, और एक आसमानी शान में उनको रखा। खुदा ने कहाः मुहम्मद का इंतज़ार करोः क्योंकि तुम्हारे लिए जन्नत, दुनिया, और आदमियों की भीड़ बनाई जाएगी, जहाँ में आपको एक उपहार बना देता हूँ, इस हद तक के जो तुम्हे आर्शिवाद देगा वो भी बरकत पाएगा, और जो तुम्हें बद्दुआ देगा उसे भी लानत मिलेगी। जब मैं तुम्हें दुनिया में भेजूगाँ मैं तुम्हें निजात देने वाला अपना पैग़म्बर बनाकर भेजूगाँ और आपके लफ़्ज़ सच होंगे। इतने ज़्यादा के ज़मीन और आसमान गिर सकते हैं लेकिन इनके यकीन कभी नहीं डगमगाएगें। अहमद उनका मुबारक नाम होगा। फिर भीड़ आवाज़ उठाएगी ये कहते हुएः 'ए खुदा तूने ये पैग़म्बर हमें भेजा, ए अहमद ज़रा जल्दी आओ दुनिया की निजात के लिए!"

**एक सौ अट्ठाइसवें बाब से बयान है**ः "इसके मुताबिक, भाइयों, मैं, एक आदमी, धूल और मिट्टी, जो ज़मीन पर चलता है, आप से कहता है, तोबा करो और अपने गुनाहों को जान लो। भाईयों, मैं कहता हूँ, के शैतान ने, रोमन सैनिक दल के ज़रिए तुम्हें धोखा

दिया जब तुमने कहा के मैं खुदा था। इस वजह से, खबरदार रहो के तुम उनपर यकीन मत रखो, देखो वो खुदा की लानत में हैं।"

**136वें बाब में से**ः ये बाब, दोज़ख के बारे में जानकारी देने के बाद, ये बताता है के किस तरह हज़रत मुहम्मद (अलैहिस-सलाम) अपने मानने वालों को दोज़ख से बचाएँगे।

**163वें बाब में से**ः "शार्गिद जवाब देंगेः ए आका, वो कौन आदमी होगा जिसके बारे में तुम बता रहे हो, कौन दुनिया में आएगा? जिस्स दिल की खुशी से जवाब देंगे। वो अहमद हैं, खुदा के नबी, और जब वो दुनिया में आएँगे, यहाँ तक के जब बहुत अरसा बारिश नहीं होगी ये ऐसे होगा जैसे बारिश होने से ज़मीन पर फल उगेगा, यहाँ तक के वो आदमियों के बीच में अच्छे काम का मौका बनेगा, उस रहमत के ज़रिए जो वो अपने साथ लाएगा। क्योंकि वो एक सफेद बादल है जो खुदा की रहमत से भरा है, जब खुदा की रहमत वफादारों पर बारिश की तरह छिड़की जाएगी।"

बरनाबास की इंजील हज़रत ईसा (अलैहिस-सलाम) के आखिरी दिनों के बारे में मंदरजाज़ेल जानकारी देती है, **215-222** बाबः "जब रोमन सिपाही हज़रत ईसा को गिरफ्तार करने घर में घुसे, उन्हें करूबियून (चार अज़ीम फरिश्तेः जिब्राईल, मिकाईल, राफ़ेल और इज़्राईल) खिड़की के ज़रिए बाहर ले गए, और वो उन्हें आसमान में ले गए क्योंकि उन्हें ऐसा करने के लिए अल्लाह तआला ने हुकूम दिया था। रोमन सिपाहियों ने यहूदा (judas) को पकड़ा, जो उनकी रहनुमाई कर रहा था वो कह रहा था, "तुम ईसा हो।" उसके पूरे इंकार करने के वफ़ादारियों और विनती के बावजूद, उसे ज़बरदस्ती सलीब तक ले गए जिसे तैयार किया गया था, और उसे सूली पर चढ़ा दिया गया। फिर हज़रत ईसा अपनी माँ, मैरी (मरय्यम) और अपने मानने वालों (हवारियों) की नज़र में आए। उन्होने मैरी से कहाः माँ! तुम देख रही हो मुझे सलीब पर नहीं चढ़ाया गया। मेरे बजाए, धोखेबाज़ judas (यहूदा) सलीब पर चढ़ाया गया और मर गया। शैतान से परे रहो! वो इंसानियत को धोखा देने के लिए हर कोशिश कर सकता है। मैं तुम्हें सारी चीज़ों के लिए जो तुमने सुनी और देखी उनके लिए गवाहों की तरह बुला रहा हूँ। फिर, उन्होने अल्लाह तआला से वफ़ादारों की निजात के लिए और गुनाहगारों की तबदीली के लिए दुआ करी। वो अपने शार्गिदों की तरफ़ मुड़े और कहा "अल्लाह की रहमत और फ़ज़ल तुम पर हो। फिर उनकी नज़र के सामने चार फरिश्ते उन्हे उठाकर ऊपर आसमान में ले गए।" ये देखा जाता है के, बरनाबास की बाइबल हमें

छः सौ या हज़ार सालों पहले आखिरी नबी (अलैहिस-सलाम) की आमद की जानकारी देती है, और सिर्फ एक खुदा के बारे में ज़िकर है। ये तसलीस से इंकार करती है।

यूरोपीय थीसोरस बरनबास की बाइबल के बारे में मंदरजाज़ेल जानकारी देती हैः "एक दस्तावेज़, बरनबास की बाइबल के नाम से पेश की गई, लेकिन एक झूठी किताब एक इतालवी के ज़रिए लिखी गई जो पंद्रवीं सदी में इस्लाम में तबदील हो गया था।" ये वज़ाहत मंदरजाज़ेल जानकारी की रोशनी में बिल्कुल गलत हैः बरनबास की बाइबल को तीसरी सदी, यानी हज़रत मुहम्मद (अलैहिस-सलाम) की आमद से तीन सौ या सात सौ सालों पहले सत्यानाश और बहिष्कार किया गया था। इसका मतलब ये है कि उस ज़माने में भी दूसरे नबी की आमद पर खुतबात थे, जो तीन खुदाओं के नज़रिए की मुखालफ़त करती है और जो जुनूनी ईसाइयों के कट्टर पन से सूट नहीं करती। इसके अलावा ये एक ऐसे शख्स के ज़रिए लिखी गई हैं जो इस्लाम की शुरूआत से पहले इसे कुबूल कर चुका था ये सवाल से बाहर है। दूसरी तरफ़, इतालवी तर्जुमेकार फरा मरीनो एक कैथोलिक संत था, और हमारे हाथ में ऐसा कोई सुबूत नहीं है के वो इस्लाम में तबदील हो गया था। इसलिए उसके ल्एि कोई ऐसा मकसद नहीं पाया के वो बाइबल को इसकी असली शक्ल से अलग तर्जुमा करे। इस बात को भी नहीं भूलना चाहिए के बहुत समय पहले, यानी, **300** और **325** ईसाई सालों के बीच में, मज़हब के बहुत से अहम ईसाई आदमियों ने इस बात से इंकार किया था के हज़रत ईसा अल्लाह के बेटे थे और इस बात को साबित करने के लिए के ईसा हमारी तरह आदमी थे बरनबास की बाइबल का हवाला दिया। उनमें सबसे ज़्यादा मुमताज़ अन्ताकिया का बिशप लूचियन था। और लूचियन था शार्गिद, एरियस (**270-336**) ज़्यादा मश्हूर था। एरियस को अलेक्जेंडर (डी. **328**) के ज़रिए निकाला गया जो अलेक्जेंडरिया का बिशप था, और जो बाद में इस्तांबुल का आचार्य बना। इस पर, एरियस अपने दोस्त, ईसाबियोस के पास चला गया जो नायसिन (इज़निक) के बिशप थे। एरियस के चारो तरफ़ बहुत से सात देने वाले थे यहाँ तक के कॉन्स्टेटाइन, बिज़ेनरियम का सम्राट, और उसकी बहन ने भी एरियल फिरके में शमुलियन की। इसके अलावा, होनोरियस जो हज़रत मुहम्मद (अलैहिस-सलाम) के वक्त में पॉप था, उसने भी माना के हज़रत ईसा सिर्फ एक इंसान थे और तीन खुदाओं (तसलीस) में यकीन रखना गलत है। (पॉप होनोरियस, जो **630** में फौत हो गए थे, उन्हें उनकी मौत के वक्त **48** साल बाल **678** में इस्तांबुल में इकट्ठा हुई रूहानी मजलिस के ज़रिए बाज़ाबता तौर पर लानत (इंततियात) भेजी गई। **1547** में, एल.एफ.एम सोज़िनी, जो एक सिसिलियन पुजारी, कमिलो से मुतासिर था, उसने फ्रासीसी जीन केल्विन (**1509-1564**), जो ईसाई

मज़हब की सबसे ज़्यादा ऊँची हुकाम में से और कलविनिज़्म का बानी था उसे चुनौती दी, ये कहते हुएः "मैं तसलीस में यकीन नहीं रखता।" उसने ये भी कहा के वो एरियन के उसूल को तरजीह देता है और वो "असल गुनाह" के उसूल को मुसतरद करता है।(ये गुनाह हज़रत आदम का बड़ा गुनाह कहा जाता है, और इस वजह से हज़रत ईसा इस दुनिया में उस गुनाह के कफ़्फ़ारे के तौर पर भेजा गया।) ये ईसा मज़हब का एक उसूली उसूल है।उसके चचेरे भाई, एफ.पी.सोज़ीनी ने **1562** में एक किताब छापी, और उसमें उसने जिस्स की खुदा की सफ़ को खारिज कर दिया।**1577**, में सोज़ीनी क्लेसनबर्ग, ट्रांसिल्वेनिया के शहर में चले गए, क्योंकि उस मुल्क का सरबरह सिगीसमंद, तसलीस के उसूल के खिलाफ था।क्योंकि ये फिरका पॉलेंड के शहर रोकाब में कायम हुआ, इसके मानने वालों को **Racovians** कहते हैं।वो सब एरियस में यकीन रखते थे।

हमने इन तारीखी हकाईक को अपनी इस छोटी किताब में शामिल किया है इस मकसद से के इसके पढ़ने वालों को मौजूदा इंजील के बारे में बेदारी पैदा हो के बहुत सारे ईसाई पादरी की आँखों में ये अपनी कदर खो चुकी है, जिन्होने ये बात मानी के बरनबास की बाइबल ही सिर्फ सच्ची बाइबल है।ये बग़ावत पॉप को और उनके साथियों को बरनबास की बाइबल को खत्म करने के अमल में लगा गई।हालांकि, जालसाज़ी की तरफ़ तमाम कोशिशों के बावजूद, ईसाइयों के पास आज जो मुख्तलिफ़ बाइबलें हैं उन सब में लिखा है के जिस्स (ईसा [अलैहिस-सलाम]) के बाद एक दूसरे नबी आएंगे।मिसाल के तौर पर, जॉन की बाइबल के **16**वें बाब के **12**वीं और **13**वीं आयत में लिखा हैः "मुझे तुम से बहुत सारी चीज़ें अभी कहनी हैं, लेकिन तुम उन्हें सहार नहीं सकोगे।" "लेकिन जब वो, सच्चाई की रूह आएगी, वो सच्चाई में आपकी रहनुमाई करेगी..." (जॉनः **16-12,13**)।जॉन की इंजील में ये पैग़ाम थोड़े मुख्तलिफ़ तरीके से इसी तरह तुर्की के तर्जुमे के **885**वे सफहें में छपा है हिब्रू नज़ाद की **पाक बाइबल** में से इस्तांबुल में छापी गई, और अमेरिकी और अंग्रेज़ी कंपनियों के **1303 (1886)** में बुखारियन अगोप के छापे खाने में ये बाइबल छापी गई थी।इस सफ़्हे पर इस तरह मंदरज़ाज़ेल हैः "दुनिया से मेरी रवांगी तुम्हारे लिए ज़्यादा फाएदेमंद है, क्योंकि वह जो तुम्हें दिलासा देगा मेरे जाने से पहले नहीं आएगा।जब वो आएगा तो गुनाहों कि दुनिया को पाक करेगा और निजात और हुक्म कायम करेगा।मेरे पास अब भी बहुत सारी बातें हैं बताने के लिए।लेकिन अभी तुम उनको बरदाश्त नहीं कर सकते।ताहम, जब वो रूह उल कुदूस आएगी तो तुम्हारी हिदायत करेगी सच्चाई की तरफ़।वो अपने बोल नहीं बोलेंगे, बल्कि जो नाज़िल किया जाएगा वही बताया जाएगा,

और जो चीज़ें मुस्तकबिल में गुज़रेगीं वो उनके बारे में जानकारी देंगे। वो मेरे तरीके की तस्दीक करेगे और वही बताएंगे।" ऊपर Passage में आया लफ़्ज़ "वो" बाइबल के तरजुमों में "भूत" या "पाक भूत" के तौर पर वाज़ेह किया गया है, जबकि उसका लैटिन असल उसे "पैरासिलेट" की शक्ल में लिखता है जिसका लैटिन में मतलब "दिलासा" है। ये कहने का मतलब है के उनकी सारी कोशिशों के बावजूद, वो इस बात को बाइबल में से नहीं मिटा पाएंगे के "मेरे बाद एक दिलासा देने वाला शख्स आएगा।" इसके अलावा, कुरिंथियों के ईसाई प्रचारक पॉल के पहले खत के **13**वें बाब की **8** से **13** आयत तक ये कहा गया है, जोकि पॉल के ज़रिए लिखे गए खतों में से एक है और इसाईयों के ज़रिए उसे पाक बाइबल का हिस्सा माना गयाः "सदका कभी नाकाम नहीं होताः लेकिन क्या पैशनगोई होगी, वो नाकाम हो जाएंगे; चाहे वहाँ ज़बाने हों, वो खत्म हो जाएँगी [मिसाल के तौर पर लैटिन और पुरानी ग्रीक]; चाहे वहाँ इल्म हो, वो गायब हो जाएगा [निसफ़ सदी की तरह]।" "क्योंकि हम हिस्से में जानते हैं, और हम हिस्से में पैशनगोई करते हैं।" "लेकिन जब वो जो पूरा है आता है, तब वो जो हिस्से में है दूर किया जाएगा।" (1 cor: 13-8 से **10** तक) यह सही इकतिबास तुर्की किताब **किताब-ए- मुकदिदस** (पाक बाइबिल) के **944**वें सफहे पर मौजूद है। इसलिए, इसाईयों को ये मानना होगा के आज की बाइबिलों में एक आखिरी नबी के ज़हूर की खबरें हैं, जिसे वो सच्ची किताबें मानते हैं।

बरनबास की इंजील का अंग्रेज़ी तरजुमा मंदरजाज़ेल दस जगहों पर मौजूद है। वो जो इसे पढ़ना चाहते हैं इनमें से एक पते से मंगवा सकते हैंः

**1.** इस्लामिक बुक सेंटर, ड्रमोंड स्ट्रीट, लंदन NW **12** एच एल, इंगलैंड, टेलीफोनः **01-388 0710.**

**2.** मुस्लिम बुक सर्विस, फोसिस, **38**, मपसबरी रोड, लंदन NW24 जे डी, इंगलैंड, टेलीफोनः **01-452 4493.**

**3.** मुस्लिम इंफ़ोरमेशन सर्विस, **233** सेवन सिस्टरस रोड, लंदन N**42** डी ए, इंगलैंड, टेलीफोनः **01-272 5170ः 2633071.**

**4.** इस्लामिक बुक सेंटर, **19** ए, कैरिंगटन स्ट्रीट ग्लासगो जी **49** ए जे, स्कॉटलैंड, ग्रेट ब्रिटेन टेलीफोन ः **041-3331119.**

**5.** इस्लामिक कलचरल सेंटर बुक सर्विस, **146,** पार्क रोड, लंदन NW8 **7** आर जी, इंगलैंड, टेलीफोन ः **01-724 3363/7.**

**6.** अल-हुदा, पब्लिशर्स एंड डिस्टरीबूटरस, **76-78,** चेरिंग क्रोस रोड, लंदन WC2, इंगलैंड, टेलीफोन, **01-240 8381.**

**7.** ए.एच अवदुल्ला, पी.ओ.वोक्स, **81171,** मोमवासा (केन्या)।

**8.** इस्लामिक परोपेगेशन सेंटर **47-48** मदरस आर्केड डरवन-नटल (साऊथ अफ्रीका)।

**9.** यू.एस.ए और कनाडा के मुस्लिम छात्र संघ एच.क्यू **2501** डायरेक्टर रो.इंडियानापाोलिस इंडियाना **46241,** (यू.एस.ए)।

**10.** वेगम आएशा वावनी वक्फ़ **3**rd फलोर वैंक हाऊस न0 **1** हवीव स्कवार, एम.ए.जिन्ना रोड कराची, पाकिस्तान।

पहले वाइवल हिब्रू ज़वान में थी। निस्फ़ सदी में इसे लैटिन में तर्जुमा किया गया और "इटाला" का खिताव दिया गया। जब इसाईयत ने फैलना शुरू किया तो, वुतपरस्त और यहूदी इसके खिलाफ़ खड़े हो गए। इतने ज़्यादा के इसाइयों को अपने अकीदे को खुफ़िया रखना पड़ा। वो ऐसे मंदिरों में इवादत करते थे जो ज़मीन के नीचे, ग़ारों में, पहाडों में, और दूसरी खूफ़िया जगहों पर वनाए गए थे। यहूदी अपनी सारी चालवाज़ी और ज़ुल्म के वावजूद इसाईयत को फैलने से नहीं रोक पाए। शाऊल एक सवसे वहतरीन यहूदी और ईसाई मज़हव का सवसे वड़ों में से एक दुश्मन, ईसाई होने का नाटक करते हुए के हज़रत ईसा की तरफ़ से काम सौंपा गया के तमाम कौमों को, यहूदियों को छोड़कर सवको ईसाई वनने के लिए दावत देना। [वाइवल में "रसूलों के अमाल" के नवें वाव को देखिए।] उसने अपना नाम पॉल रख लिया। वो एक पाक ईसाई की तरह नाटक करने लगे ताकि वो ईसाई मज़हव को अंदर से खराव कर सके। "वहदानियत" का नज़रिया "तसलीस" से वदल गया। आइसिज़्म ("यीशुवाद") ईसाईयत वन गया। उसने वाइवल को गलत सावित कर दिया। उसने पढ़ाया के ईसा मसीह भगवान के वेटे हैं। उसने ईसाइयों के लिए ये ज़रूरी कर दिया के वो शराव पिएं और सूअर खाएँ। उसने उनके किवले की सिमत मश्रिक की तरफ़ डाल दी इस तरह उसका रूख उगते सूरज की तरफ़ हो गया। उसने और दूसरी वहुत सारी

गलत बातें इसमें शामिल कर दीं जो ईसा (अलैहि सलाम) ने पहले नहीं बताई थीं। आखिरकार उसके गलत खयालात ईसाइयों में फैलने लगे। नतीजे के तौर पर, वो कई फिरकों में बंट गए। वो ईसा (अलैहि सलाम) की तालीमात से हट गए, और उनकी जगह पर बेवकूफी कहानियों ने ले ली। उन्होने हज़रत ईसा (यशू) अलैहि सलाम की खयाली तसवीरें और बुत बनाने शुरू कर दिए। उन्होने सलीब को अपने मज़हबी अलामत (निशानी) को कुबूला और अपनाया। उन्होने इन बुतों और सलीब की इबादत शुरू करदी। दूसरे लफ़्ज़ों में वो मुर्ति पूजा में वापस हो गए। वो हज़रत ईसा (जिस्स [अलैहि सलाम]) को खुदा का बेटा मानने लगे जबकि, नबी ईसा ने उनसे ऐसा कभी नहीं कहाः उन्होने सिर्फ रूह अल-कुदस का ज़िकर किया था यानी अल्लाह तआला की तरफ से उन पर सुफ्र कुदरती ताकत अता हुई।ईसा की दिव्यता में, जिन्हें खुदा का बेटा यकीन किया जाता था, और रूह अल कुदस (पाक रूह) में यकीन रखते हुए साथ में खुदा में यकीन रखते हुए, उनकी वहदानियत में यकीन रखने से बाज़ रखा गया, जो न बदला जाने वाला खालिक है, जो के सारे मज़ाहिब की सच्चाई है, और तीन देवताओं की इबादत जिसे "तसलीस" कहते हैं ऐसी मज़हका खैज़ हालत से गुज़रना पड़ा।

ईसाई मज़हब के कई बड़ी रियास्तों के सरकारी मज़हब बनने पर, बस्ती सदी का अफरातफ़री का दौर शुरू हो गया। प्यार, हमदर्दी, और लगाओ के उसूल पूरे तौर पर भुला दिए गए। उनकी जगह पर ईसाइयों ने कट्टरता, नाराज़गी, नफ़रत, दुश्मनी, और बेदर्दी अपना ली। उन्होने ईसाईयत के नाम पर न सोची जाने वाली बेदर्दी को करना शुरू कर दिया। उन्होने कदीमी ग्रीक और रोमन तहज़ीबों के कामों को खत्म करना शुरू कर दिया। वो साईंस और इल्म के दुश्मन हो गए। वो ऐसे साईंसदानों को **गैलीलियो** ([1] गैलीलियो, **1051** (**1642** ए.डी) में वफ़ात पा गया था।) का इल्ज़ाम लगाते थे, जिसने इस्लामी आलिमों की किताबों को पढ़ने के बाद ये समझा के ज़मीन अपने महवर पर घूमती है, उसे वो गैर मज़हबी मानते थे और धमकी देते थे के अगर उसने अपने दावे को वापस नहीं लिया तो वो उसे कत्ल कर देंगे। उन्होने **जीन डी आर्क** (जॉन ऑफ आर्क), जो अपने मुल्क की अज़ादी के लिए कोशिश कर रही थी, उस पर इल्ज़ाम लगाया के वो एक जादूगरनी हैः और नतीजे के तौर पर उसे ज़िंदा जला दिया। **कामुस-अल-अलाम** और **Larousse** में लिखा है के केलविन जो के प्रोटेस्टैंमत के बानियों में से एक था उसकी हिमायत पर, उन्होने **1553** में माकैल सर्व को, जोकि एक स्पैनिश डॉक्टर और Theolosiot था और जिसने एक किताब लिखी थी तसलीस और हज़रत ईसा (जिस्स मसीह [अलैहि सलाम]) की देवता होने को

नकारते हुए उन्होने उसे भी ज़िंदा जला दिया। जाँच के नाम से ट्रिव्यूनल बढ़ाने वाले वालों को कायम करके जिसे कहते हैं **न्यायिक जाँच**, उन्होने ज़दकोव के मुख्तलीफ तरीको के ज़रिए हज़ारों लोगों को बेइनसाफी से कत्ल कर दिया ये दावा करते हुए के ये लोग "गैर मज़हबी" थे उनकी दौलत को भी हाहिल कर लिया। उन्होने पादरी को "Redemption" की ताकत सौंप दी, जो सिर्फ अल्लाह तआला से मंसूब है। इसके नतीजे में, पादरी लोगों को पैसे के बदले में उन्हें उनके गुनाहों से छुड़ाया करते थे। मज़ीद ये के वो जन्नत के पार्सल बेचते थे। पॉप के लिए, जो सबसे ऊँचा मज़हबी औहदा रखते थे, वो लगभग पूरी दुनिया पर हावी थे। मुखतलिफ़ बहानों के ज़रिए वो बादशाहों को भी समाज से निकाल दिया करते थे, वो बादशाहों को जबरन अपने पास माफ़ी मांगने के लिए बुलाते थे। **1077** ए.डी में जर्मन राज **हेनरी** [हेनरी **1106** (**1694** ए.डी) में मर गया था।] IV, जो पॉप ग्रेगरी के पास केनोससा में माफ़ी मांगने आया था, जिसे उसने समाज से निकाल दिया था, वो जैसा के उस वक्त मौसम था, दिन ब दिन सर्दी में पॉप के महल के बाहर नंगे पैर खड़ा रहा। सबसे ज़्यादा शातिर मुजरिम पॉप के बीच में ही थे। उनमें से एक, **बोरगिया** था, जिसने अपने मुखालिफ़ों को ज़हर दे दिया और उनके मानने वालों को मुखतलिफ़ ज़हर दे दिया और उनकी मिलकियत हथियाली। उसने सभी तरह के घृणा के काम किए। वो अपनी बहन के साथ शौहर और बीवी की तरह रहता था। लेकिन उसे फिर भी पाक और मासूम पॉप समझा गया। बेहूदा कानून ईसाई मज़हब में डाले गए, जैसे के पादरियों के लिए कोई शादी नहीं, शादी शुदा जोड़ों के लिए कोई तलाक, इकरार, और छुट नहीं। दर असल, ज़मीन पर रहना एक गुनाह के समान था।

इस्लाम का मज़हब, जो सातवीं सदी में ज़हूर पज़ीर हुआ, वो अंधेरे में एक रोशनी के बल्ब की तरह चमकना शुरू हुआ। जैसे के हम मंदरजाज़ेल इस्लाम के ऊपर बातचीत में देखेंगे, ये आला मज़हब, जो मुकम्मल तौर पर सबसे आम, सबसे ज़्यादा मंतकी, और ज़्यादा इंसानी उसूलों पर मुबनी है, असानी से और फोरी तौर पर Reprobated ईसाई यत के खिलाफ़ पहचान हासिल की। इसे अकलमंद ने जोश के साथ खुशआमदीद किया। मुसलमान अल्लाह तआला के हुक्काम और पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मानने की वजह से वो गहराई और इज़्ज़त के साथ जानकारी और साईंस में दिलचस्पी रखते थे और वो बहुत मेहनत से पढ़ाई करते थे। उन्होने साईंस की हर शाख में नई खोज की और हर फील्ड में कई जिनयात को तालिम दी। आज, कैमिस्ट्री और अलजेबरा (किमया और जबर) अलफाज़ असल में अरबी हैं। और ये अपने आप दूसरी मिसालों के साथ साफ़ इशारा

करती है के किस तरह अरबी मुसलमानों ने साईंसी इल्म की खिदमत की। बहुत कम अरसे में, मुसलमानों ने आला इल्मी मरकज़ और मदरसे (स्कूल) खोले। वो इल्म, साईंस, बजह, सफ़ाई और तहज़ीब पूरी दुनिया में लेकर आए। उन्होने कदीमी ग्रीक फलसफ़ियों की किताबों को ढूँढा और उन्हें अरबी में तरजुमा किया। उन्होने साबित कर दिया के उनके नज़रयात खराब थे। Hisschfeld, दुनिया में मश्हूर एक मुफ़किर ने कहा, "कोई दूसरी कौम इतनी तेज़ी से ऐसी मोहज़्ज़ब नहीं बनी जैसे अरबी कौम इस्लाम को कुबूल करने के ज़रिए बनी।" जबके ईसाई दुनिया ने गहरे अंधेरी कालकोठरी की नुमाएंदगी की और बस्ती सदी के दौरान लोगों के लिए ज़िंदगी को अज़ाब बना दिया, इस्लाम ने इंसानी नसल को आराम, खुशी और अमन में रहने की सहूलतें प्रदान कराई। नतीजे के तौर पर, मुसलमान मुल्कों में पैसे और जाएदाद को दबाने के ज़रिए दौलत हासिल करने के  लिए, ईसाईयों ने मुसलमानों पर हमला किया और यरूशलेन को वापिस लेने के बहाने से क्रूसेड अभियान नाफ़िज़ किए, जिसे वो पाक मानते थे (1096-1270)।

उन सलीबी मुहिमों में, उन्होने मुसलमानों का ज़्यादा खुन बेइंसाफ़ी से बहाया। जब उन्होने यरूशलेम पर कब्ज़ा किया, जैसा के उन्होने खुद कुबूला के, जिन मुसलमानों को उन्होने मस्जिदों में कत्ल किया था, उनके खून का झरना, उनके घोड़ों के पेरो तक पहुँच गया। (सलाहउददीन अय्यूबी ने 585 (1091 ए.डी) में वफ़ात पाई।) दूसरी तरफ़ सलाहउददीन अय्यूबी ने जब उनसे यरूशलेम को दोबारा हासिल कर लिया तो ईसाईयों की तरफ़ दरियादिली दिखाई। दरियादिली इतनी बड़ी थी के इंगलैंड के राजा रिचर्ड शेर दिल वाले को (**रिचर्ड, Coeur de lion**), जिसे उन्होने बंदी बनाया था उसे आज़ाद कर दिया। इसी तरह उस्मानिया सलतनत के खिलाफ़ चलाई गई मुहिमों को भी कुछ गुस्सेल जुनूनी ईसाईयों के ज़रिए सलीबी जंग समझा गया। एक फ्रेंच तारीखदाँ इतना ज़्यादा ढीठ था जिसने बाल्कन जंग 1912-1913 को एक "बहुत बड़ी सलीबी मूहीम बताया।" जब आंदालुसिया मुस्लिम रियास्त (एंदूलस रियास्त) को 897 (1492) में स्पेनिश के ज़रिए कब्ज़ा किया गया तो, स्पेनिश ने या तो मुसलमानों को कत्ल कर दिया या उन्हें ताकत के ज़रिए ईसाई मज़हब में तबदील कर दिया। यही ज़ुल्म उन्होने इंकस, अमेरिका के आदिवासी पर भी लागू किया। स्पेनिश ने पूरी तरह उस बदकिस्मत कौम को तबाह कर दिया।

वो भयानक इल्ज़ाम और झूठ जो ईसाई इस्लाम मज़हब और उसके आला पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ़ बढ़ाते आए थे वो आज भी अपनी पूरी नीचता के

साथ जारी हैं। हिंदुस्तानी रहमतुल्लाहि एफ़ंदी (रहिमा-हुल्लाह तआला) ने ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट को **1270 (1854)** में और दोबारा इस्तांबुल में हुई मुख्तलीफ बहसों में चुप करा दिया था। उन्होने इस अज़ीम फतह पर मुश्तमिल एक किताब लिखी, जो उन्होने पादरियों के खिलाफ़ जीती, और इस्तांबुल में उनके जवाबों के लिए। ये **1280 (1864)** में दो अरबी जिल्दों में **इज़हार-उल-हक** के नाम से छापी गई। इसे हाल ही में मिस्र में दोबारा छापा गया। इस्तांबुल में इसी नाम के साथ इसकी पहली जिल्द को तुर्की में तर्जुमा करके छापा गया, और इसकी दूसरी जिल्द का तुर्की तर्जुमा, **इबराज़-उल-हक** के नाम से **1293 (1877)** में बोसना में छापा गया। अंग्रेज़ी, फ्रैंच, गुजराती, उर्दू और फारसी में भी इसके तर्जुमे छापे गए। ([1] बराएमेहरबानी हमारी अंग्रेज़ी इशाअत **जवाब नहीं दिया** और **वो मुसलमान क्यों हो बन गए** को देखिए।) अरबी किताब **तोहफतु-उल-अरीब** अब्दुल्लाह-ए-तरजुमान के ज़रिए, फारसी किताब **मीज़ान-उल-मवाज़ीन 1288 (1871)** में इस्तांबुल में नजफ अली के ज़रिए लिखी गई, इमाम-ए ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि अलैह) के ज़रिए लिखी गई किताब **अर-रद्द-उल जमील**, और इब्राहिम फसीह हैदरी ([2] इब्राहिम हैदरी ने **1299 (1881** ए.डी) में रहलत फरमाई।) के ज़रिए लिखी गई किताब **अस सिरात-उल-मुस्तकीम** सब किमती इस्लामी किताबें हैं जिन्होने नाम निहाद **तोरह** और **बाएबल** में लगाए गए इल्ज़ामों और झूठों को सबूतों के साथ झूठा करार दिया। ये किताबें इस्तांबुल, तुर्की में ऑफसेट अमल से छापी गई हैं।

ये हकीकत है, जैसे के सूरज वाज़ेह है, के हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपनी नब्बुवत से पहले और बाद में भी कभी झूठ नहीं बोलते थे और इसलिए अपने दुश्मनों के बीच में भी आप **मुहम्मद-उल-अमीन** (मुहम्मद भरोसेमंद) से जाने जाते थे। आपके दुश्मनों ने जो आपके खिलाफ़ दुश्मनी महसूस की उसने उन्हें अंधा कर दिया और उनके दिलों को सख्त कर दिया के उन्होने इंसानियत से इस वाज़ेह हकीकत को छुपाने के लिए खुद को कम कर दिया। क्योंकि वो इस्लाम मज़हब में या इस्लाम के आला पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में कोई नुक्स या खराबी निकालने में नाकाम रहे, अपनी नौजवान नसल को इस्लाम की तरफ़ बरतरी के साथ आमादा करने की कोशिश में, उन्होने झूठे और गंदे बयानों के इस्लाम की तसदीक की। य नीच  तोहमतें, जो दुश्मनों ने इस्लाम के पाक नबी पर लगाई, जिन्होने खुबसूरत आदतों की तरक्की कराई, बुरी आदतों की मनाही की, लोगों की किसी भी तरह से अज़ाब देना और नुकसान कराने को मना किया, यहाँ तक के मुरदा और जानवरों को भी, और जिन्होने सख्ती इंसानी हुकूक की अहमियत पर ज़ोर

दिया, वो सब इंसानियत पर और आज़ाद दुनिया की कौमों के ऊपर एक भयंकर कलंक हैं। आखिरकार, ईसाई ज़ुल्मों ने ईसाईयों के बीच में ही बग़ावत को पैदा कर दिया। **923 (1517)** में एक पादरी जिसका नाम लुथर था उसने पॉप के खिलाफ़ बग़ावत कर दी। उसने बाएबल को जर्मन में तर्जुमा किया और ईसाई मज़हब को ऐसी ग़फ़लत से साफ़ किया जैसेः "पादरियों के लिए कोई शादी नहीं," "एक शख्स की शादी होने के बाद कोई तलाक नहीं होगी।" "छुटकारा," और "सलीब की इबादत" ये सब बाएबल में मौजूद नहीं थीं। इस तरह उसने एक नया ईसाई फिरका कायम किया जिसका नाम **"प्रोटेस्टेंट"** था। बदकिस्मती, बहरहाल, वो पूरे तौर पर तसलीस के नज़रिए को कुबूल करता था, जिसका मतलब था बाप, बेटा और पाक रूह की एकता। **1534** में भी, हैनरी VIII इंगलैंड के राज ने पॉप के ख़िलाफ़ बगावत कर दी और एंग्लिकन चर्च (एंग्लो अमेरिकन) के कयाम की हौसला अफ़ज़ाई की और मज़बूत किया। मशहूर फ्रैंच लैखक वाल्टेयर **(1694-1778)** ने अपनी किताब **कैंडीड** में **1127 (1759)** में पादरियों पर, गलत उसूलों और साईंस की तरफ उनकी डाली गई दुश्मनी पर तंकीद की। इस तरह उसने उन्हें हंसी का सामान बना दिया उनके पाक धोको पर तंज़ करते हुए। इन लेखकों उन दिनों में ऐसा काम लिखा जिसके नतीजे में उन्होने फ्रेंच क्रांति/फरांसिसी इंकलाब में अहम किरदार निभाया जो **1203 (1789)** में उठा था। इस इंकलाब के बाद पादरियों का रूतबा तबाह हो गया, और ये एक शर्म की बात है के वहाबी डाकूओं की मौजूदगी की वजह से इस्लाम की इस तरह से खराब नुमाएंदगी की गई के ईसाई इस्लाम मज़हब में बढ़ने के बजाए बेइतमिनानी में फंस गए। **1917** में रूसी इंकलाब में भी सारे मज़हबों को परेशान करने की कोशिश की। लेकिन जैसे के इंकलाब का असर खत्म हुआ, उसी दौरान में, लोग एक बड़ी ताकत को ढूँढने लगे इबादत करने के लिए। मशहूर रूसी लेखक Solzhenitsyn ने जिसने अदब के लिए नोबल पीस प्राइज़ जीता था, अपने काम फरस्ट सर्कल में कहाः "दूसरी जंगें अज़ीम में स्टालिन ने भी खुदा में यकीन किया, सजदा किया, और उससे मदद माँगी।"

आज ईसाई मज़हब एक हद तक साफ़ हो चुका है, और पादरियों की ताकतें लगभग नाम बराबर हैं, अगरचे ये अभी पूरे तौर पर ग़फ़लत से खाली नहीं हुई है। अब, सिर्फ थोड़े ही ईसाई बचे हैं जो तसलीस में यकीन रखते हैं।

मग़रीबी ज़बान में लिखे एक एनसाइकिलोपिडिया जिसका नाम मशहूर जर्मन **Brockhaus** है उसमें बयान हैः "मोअज़ज़ीज़ ईसा (अलैहि सलाम) ने कई बार कहा था,

"मैं एक इंसान हूँ।" ये यकीनन ये ज़ाहिर करता है के पढ़े लिखे ईसाई ईसा को अब बिल्कुल खुदा का बेटा नहीं मानते। ऐसे लोगों में, वो लोग जिन्हें इस्लामी मज़हब को पढ़ने का खुशकिस्मत मौका मिला उन्होने अपने आपको तबाही से बचा लिया, अल्लाह तआला का सच्चा मज़हब हासिल किया और इस तरह उसकी उदार रहमतें हासिल कीं। वो लोग जो खुशकिस्मत नहीं रहे के इस्लाम को पढ़ते, दूसरी तरफ़, वो सख्त गैरमज़हबियत में घिर जाते हैं, और इलहारी या बिदअती बन गए। हकीकत ये है के आज का मुस्लिम समाज अज़ीम उलमा को अब फरोग़ नहीं देता जो इस परेशानी की सूरते हाल को बढ़ाता है। इस वक्त तालीमयाफता मज़हब के लोग बिदअती कफ़्फ़ारी के ज़रिए गुमराह गुमराही की सरगरमियों में नाकाम रहते हैं, जो बदले में उनके अपने खुबसूरत मज़हब में तरक्की करने और इस्लाम को पूरी महारत से जानने के लिए बाज़ रखते हैं। बेशक ये हकीकत है के इस्लाम अकेला मज़हब है जो आदमी को ऐसे रास्ते पर ले जाता है जिससे वो अल्लाह तआला से कुरबत, एक आरामदह और सुकून भरी ज़िंदगी दुनिया में और आखिरत में उसकी माफ़ी हासिल करता है।

**3. इस्लामः** इस्लाम एक मज़हब है जो अंधविशवासी और पगली कहानियों से आज़ाद है; ये भयानक चमत्कारों को खारिज कर देता है; ये आदमी एक गुनहगार की तरह नहीं मानता बल्कि अल्लाह तआला का तखलीकी बंदा मानता है; ये उन्हें मेहनती और खुशहाल ज़िंदगी अदा करता है; और ये जिस्मानी और रूहानी पाकिज़गी का हुकूम देता है। इस्लाम की ज़ात है के एक अल्लाह में और उसके पंग़म्बर, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में यकीन रखना जो, हमारी तरह, एक इंसान हैं और अल्लाह तआला के बंदे हैं। इस्लाम में, एक नबी एक आदमी होता है, लेकिन मासूम और मुकम्मिल। अल्लाह तआला उन्हें अपने नबियों की तरह मुंतखिब करता है इंसानियत को उसके एहकाम बताने के लिए। इस्लाम सारे पैग़म्बरें (अलैहि-मुस-सलाम) को पहचानता है, उन सबको प्यार करता है, और उन सबके नाम आदर से ज़िकर करते हैं। बुनियादी तौर पर, सबसे पिछले नबी के ज़हूर के बारे में पूरानी मज़हबी किताबों साथ ही साथ तोरह और बाएबल में भी लिखा हुआ है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सबसे नए (आखिरी) नबी हैं, और आपके बाद कोई और नबी नहीं है।

ये मानना के हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआला के नबी हैं इसका मतलब है इस बात को मानना के सारे हुकूम और ममनुआत जो कुरआन अल-

करीम में लिखी हैं जिन्हें आपने आगे पहुँचाया उन सब पर यकीन रखना के वो सब अल्लाह तआला के एहकाम और ममनुआत हैं। अगर एक शख्स जो ऐसा मानता है वो इन एहकाम में कुछ को नहीं मानता, तो वो अपना ईमान (यकीन) नहीं खो देता; यानी वो एक ग़ैर मुस्लिम नहीं बन जाता। अगरचे, वो इनमें से किसी एक को भी न मानने का अफसोस नहीं महसूस करता, बल्कि अपनी इस हालत पर फ़खर करता है, तो वो नबी पर यकीन नहीं रखता; वो अपना ईमान खो देगा और एक काफ़िर (नास्तिक) बन जाएगा। अगर अल्लाह तआला के एहकाम के खिलाफ़ उसे अपनी गलत हरकत पर सर शर्म से झुक जाए और उसका दिल तकलीफ़ महसूस करे तो, ये साफ़ हो जाता है के उसका ईमान (यकीन) मज़बूत है।

मंदरजाज़ेल इस्लाम के बुनियादी उसूलों का हिसाब देता हैः इस्लाम में मुखतलिफ़ रसूम, इसलाहात और कई त्यौहारों की कोई जगह नहीं है, और मुकददस दिन कम हैं। इस्लाम लोगों के लिए ये ज़रूरी समझता है के वो ईमानदार और पाक ज़िंदगी जिएँ, लेकिन एक ही वक्त में ज़िंदगी का मज़ा भी लें। इसने इबादत के लिए बहुत थोड़ा वक्त मुर्करर किया है। अपने दिल को पूरे तौर पर इबादत के वक्त अल्लाह की तरफ़ लगाना ज़रूरी है। इबादत कस्टम के तौर पर नहीं अदा करते, बल्कि अल्लाह तआला की हाज़िरी में मौजूद होने के लिए, उसका शुक्रिया अदा करने और उसे अपने पूरे दिल और जाँ से बुलाने के लिए करते हैं। अल्लाह तआला उस इबादत को कुबूल नहीं करता जो डींग मारने के लिए अदा की जाए। सूरह माऊन, कुरआन अल-करीम में बयान हैः "**ए मेरे नबी! क्या तुमने किसी को देखा जो इंसाफ़ से मुंकिर हैं, यतीमों को सख्ती से अलग रखते हैं, ज़रूरतमंदों को खाना खिलाने को बढ़ावा नहीं देते? वहाँ इबादत करने वालों के लिए एक सख्त आज़ाब है जो अपनी नमाज़ों से बेखबर हैं, जो इबादत में दिखाई देना पसंद करते हैं, और जो गरीब का हक नहीं देते।** (ज़कात)"

इस्लाम की पाक किताब कुरआन अल करीम है। कुरआन अल करीम अल्लाह तआला के ज़रिए हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतारी गई और आपके ज़रिए सहाबत अल किराम तक पहुँचाई गई। जबकि कुरआन अल करीम को नाज़िल किया गया, इसे बहुत हिफ़ाज़त के साथ दर्ज किया गया, और आज भी ज़िंदा है इसका एक भी हरूफ़ खराब नहीं हुआ। कोई और मज़हबी किताब इतनी बलीग़ नहीं है जितनी के कुरआन अल-करीम। आज भी इसकी वही वज़ाहत और बहाओ है जो चौदह सौ सदियों पहले था।

गोएथे **(1749-1832)** दुनिया के मश्हूर अरबी आदमियों में से एक ने अपनी किताब **West-East Divan** ([1] इसकी असल का जर्मन नाम है **West-Dstlicher Divan)** में कुरआन अल-करीम के बारे में लिखाः "कुरआन में बहुत सारी तकरीर हैं, और हमें महसूस होता है जैसे के ये तकरीर हमें बोर कर रही हैं, लेकिन जब हम ये पढ़ते हैं आहिस्ता आहिस्ता किताब हमें अपनी तरफ़ खिंचती है। फिर ये हमें तारीफ़ की तरफ़ और आखिर में इज़्ज़त की तरफ़ ले जाती है।"

गोएथे के अलावा, बहुत सारे दूसरे मश्हूर मुफ़किर है जिन्होने कुरआन अल करीम के लिए तारीफ़ महसूस की। आइए उनमें से कुछ हवाले लें।

प्रोफेसर एडौर्ड मोंटे ने कहाः "कुरआन अल करीम ऐसी किताब है जो अल्लाह की वहदानियत को सबसे ज़्यादा साफ़, सबसे शानदार सबसे पाक और सबसे ज़्यादा कायल ज़बान में बताती है, जिसे किसी भी दूसरी मज़हबी किताब से पार नहीं किया जा सकता।"

डॉ मौरिस, जिन्होने कुरआन अल करीम को फ्रेंच में तर्जुमा किया था उन्होने कहाः "कुरआन अल करीम मज़हबी किताबों में सबसे ज़्यादा खुबसूरत है जिसे इंसानियत को अता किया गया।"

गैस्टन कर ने कहाः "कुरआन अल करीम जो इस्लाम का ज़रिया है, उसमें जदएद तहज़ीब के सारे उसूल हैं। ये इतनी साफ हकीकत है के, आज, हमें ये यकीन है के हमारी तहज़ीब कुरआन के बुनियादी उसूलों पर कायम हुई है।"

इस्लाम जिस्मानी और रूहानी सफाई की बुनियाद पर कायम किया गया। ये अपने आप में सारे साबका मज़ाहिब के गहरी और अहम सलाहयतों को जमा करता है।

यहाँ पाँच उसूल, मज़हबी मंज़ूरी हैं, वो उन्हें जो इस्लाम को अपनाते हैं, यानी सारे मुसलमानों को करना हैः सबसे पहला अल्लाह तआला की वहदानियत और ये के हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसके रसूल है तखलीकी बंदे हैं इस पर ईमान रखना; दूसरा जिस तरह इस्लाम के ज़रिए बताई गई है, उस तरह सलात (नमाज़) पढ़ना; तीसरा है रोज़ा रखना, चौथा है हज (ज़ियारत) पर जाना; आखिरी वाला है ज़कात देना, एक खास किस्म की सालाना खैरात जो अमीर गरीब मुसलमानों को देते हैं।

**नमाज़ अदा करना** (सलात) एक मज़हबी अमल में जो एक दिन में मुर्करर वक्त पर पाँच बार अदा किया जाता है। नमाज़ शुरू करने से पहले ये ज़रूरी है के वुज़ू किया जाए, जिस में बुनियादी तौर हाथों, चेहरे, बाज़ू, और पैरों को धोना शामिल है। कई नमाज़ें एक वुज़ू के साथ अदा की जा सकती हैं, वुज़ू इन वुज़ूहात में से किसी एक की वजह से टूट सकता है (इन्हें, भी, इस्लाम के ज़रिए ही बताया गया है)। दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करने से रोज़ाना के मामूल पर कोई रूकावट नहीं होती। दरहकीकत, नमाज़ को थोड़ा वक्त चाहिए होता है, इसे कहीं भी अदा किया जा सकता है यहाँ तक के एक मस्जिद में भी। एक तरीका "**मसह**" (पोछना) चमड़ी (चमड़े के मोंज़े) भी है जिससे एक शख्स अपने आपको पैर धोने के फर्ज़ से बचा सकता जबकि के एक नया वुज़ू कर रहा हो। उन लोगों के लिए जो ऐसी जगहों पर हैं जो बग़ैर पानी के हों या जो बीमार; ये उनके लिए मुमकिन है के वो मिट्टी के साथ वुज़ू कर लें, ये एक तरीका है जिसे "**तयमूमुम**" कहते हैं। बहुत सख़्त ज़रूरत की हालतों में, जैसे के जब सफ़र पर चोरों का खतरा हो या कत्ल हो जाने का खतरा हो, तो ऐसे में नमाज़ें छोड़ी जा सकती है कज़ा के लिए; यानी, वो नमाज़ें एक के बाद एक किसी और वक्त में पढ़ी जा सकती हैं।

**रोज़े** का मतलब है अपने आपको किसी भी चीज़ से बाज़ रखना जिसे वो दिन के दौरान तोड़ सकता है साल में एक महीने के लिए, यानी, रमज़ान के महीने में। इसमें एक दुनियावी इकदार ये है के ये लोगों को भूख और प्यास के मआनी समझाता है। एक भरा पेट शख्स कभी भी भूख को नहीं जान पाएगा या भूखे के साथ रहमदिली करेगा। रोज़ा एक पेट भरे शख्स एक भूखे शख्स की तकलीफ़ों को सीखाता है। उसी वक्त में ये हम में खुद नज़्मो ज़बत की मश्क कराता है। क्योंकि रोज़े की तारीखें अरबी महीनों के मुताबिक होती हैं, तो हर साल रोज़े पीछले साल के दस दिन पहले शुरू होते हैं। इसलिए ये गरमी के महीनों और साथ के साथ सरदियों के महीनों के मुवाफिक होते हैं। लोग जो गरमियों के रोज़े बरदाश्त करने के काबिल नहीं होते वो उनकी कज़ा (बाद में अदा कर सकते हैं) सरदियों में कर सकते हैं, और वो जो बहुत बूढ़े होते हैं रोज़े रखने के लिए वो अपना कर्ज़ा दे सकते हैं एक खास खैरात के ज़रिए रोज़े के बदले जिसे "**फिदया**" कहा जाता है।

इस्लाम में कोई ताकत या अज़ाब की जगह नहीं है। अल्लाह तआला कभी नहीं चाहता के कोई अपनी सेहत पर बनाकर इबादत करे, यानी इतनी ज़्यादा इबादत करे के एक शख़्स बीमार पड़ जाए। अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा सखी, माफ़ करने वाला और रहमदिल

है। दूसरे लफ़्ज़ों में, वो इतना ज़्यादा रहमदिल है, के वो उनको माफ़ कर देता है जो तोबा करते हैं।

**ज़कात** का मतलब है के वो मुसलमान जो मालदार हैं और जो ज़कात की मिलकियत रखते हैं रहने के लिए ज़रूरी मिकदार से ज़्यादा, यानी, कीमत के ऊपर जिसे "**निसाब**" कहते हैं मतलब दो और निस्फ़ फ़ीसद या एक-चालीसवां हिस्सा अपनी सारी मिलकियत में से साल में एक बार गरीब मुसलमानों को दे देना चाहिए। लोग जो सिर्फ़ अपनी बुनियादी ज़रूरत के मुताबिक कमाते हैं उन्हें ज़कात नहीं देनी होती। दूसरे लफ़्ज़ों में ये फर्ज़ (नियम) सिर्फ़ अमीर मुसलमानों के लिए जाएज़ है।

**हज** के लिए, ये फिर से है के ये अमीर मुसलमानों के लिए है जिनपर कोई कर्ज़ न और जो इस लायक हों के वो अपने सफर के दौरान अपने पीछे परिवार के लिए गुज़ारे लायक माल छोड़ जाएँ। **हज** का मतलब है ज़िंदगी में एक बार मक्का जाना, काबे की ज़ियारत करना और अराफ़ात के मैदान में अल्लाह तआला से दुआ करना। ये फर्ज़ (ज़िम्मेदारी) भी सिर्फ़ उन मुसलमानों के लिए है जो ऊपर बताई गई शर्तों को पूरा करते हैं। अगर मक्का जाने में या आने में मरने का या बीमारी का खतरा हो, या तुम्हारी गुंजाइश से बाहर परेशानी हो तो तुम्हें हज पर नहीं जाना चाहिए। इसके बजाए। तुम किसी ऐसे को भेज दो जो इसके लायक हो।

इन इबादात, इनकी शर्तों और इन्हें किस तरह सही तरीके से अदा किया जाए इसकी तफसील सीखने के लिए, चारो मसालिक में से हर एक की अपनी मखसूस किताब है जिसे, "**इल्म-ए हाल**" ([1] **सआदत-ए-अबदिया** के पाँचवे हिस्से में सारी किस्म की इबादत की तफसीली जानकारी है।) कहते हैं। ये एक मुसलमान के लिए ज़रूरी है अपनी मसलक की किताबों में से पढ़े और इबादत के बारे में सीखे, जिस मसलक को वो मानता है क्योंकि उसकी तकलीद करना उसके लिए आसान होगी।

इस्लाम की इबादत अल्लाह तआला और उसके बंदे के बीच रहती है। अल्लाह तआला अकेला उन लोगों को माफ़ करता है या सज़ा देता है जो लापरवाह हों या खताकार हों। वो जिन्हें सज़ा दी जाएगी उन्हें अज़ाब की आग में जलाया जाएगा, जिसे हम "**दोज़ख़**" कहते हैं।

कौन दोज़ख में हमेशा के लिए रहेंगे? क्या वो जो नमाज़ें अदा नहीं करते? क्या वो जो गुनाह करते हैं? नहीं! वो जो दोज़ख में हमेशा के लिए जलाए जाएँगे वो होंगे जो अल्लाह तआला के दुश्मन हैं। गुनहगार अल्लाह तआला के दुश्मन नहीं हैं। वो शरारती, मुजरिम बच्चों की तरह हैं। क्या माँ बाप अपने नाफरमाबरदार बच्चे के मुखालिफ़ हो जाते हैं? बेशक, बिल्कुल नहीं। वो सिर्फ़ उसे फटकारते हैं, लेकिन वो उसे प्यार करते रहते हैं।

मुसलमान बुनियादी तौर छः चीज़ों में यकीन रखते हैंः अल्लाह तआला में, उसके पैग़म्बरों (अलैहिमुसलावातो वतसलीमात) में, उसकी पाक किताबों में, उसके फरिश्तों में, इस हकीकत में के अच्छा और बुरा सब अल्लाह की तरफ़ से आता है, और मरने के बाद उठाए जाने पर। दरअसल जिन सारे मज़ाहिब की बात हमने कही वो सब इन बुनियादों पर मुबनी हैं।

ऊपर हमने कहा के इबादत अल्लाह तआला और आदमी के बीच रहती है। लेकिन वो जो दूसरों को धोका देते हैं, वो जो दूसरों के लिए हुकूक मारते हैं, झूठे, धोकेबाज़, ज़ालिम, वो जो नाईसाफ़ी और बेईमानी करते हैं, वो जो अपने माँ बाप या अफसरान की नाफरमानी करते हैं, वो जो हुककाम और अपनी हुकूमत के खिलाफ़ बग़ावत करते हैं, मुखतसिर में, वो जो अल्लाह तआला के अहकामात से मुंकिर होते हैं और वो जो दूसरे के हुकूक मारते हैं या दूसरों को धोका देते हैं अपने मफ़ाद के लिए उन्हें कभी भी माफ़ नहीं किया जाएगा जब तक के वो उन हुकूक के मालिकों के ज़रिए माफ़ न किया जाए। मुखतसिर ये के, अल्लाह तआला उनको कभी माफ़ नहीं करेगा जो बेईसाफ़ी से दूसरे लोगों या जानवरों के हुकूक को माकूल बनाएँ, और वो दोज़ख़ में जाएँगे, और अपनी सज़ा पाएँगे, चाहे वो कितने ही इबादतगुज़ार क्यों न हों।

इंसानी हुकूक में से एक है के फौरन उस औरत को "महर अदा किया जाए" जिसे किसी ने तलाक दिया हो। अगर ये अदा नहीं किया जाता, तो इस दुनिया में उसे सज़ा के तौर पर बदला देना होगा और अगली दुनिया सख्त अज़ाब झेलना होगा।

इंसानी हुकूक में सबसे अहम, हक, जिसका अज़ाब भी सबसे ज़्यादा शदीद है वो है "अमर-उ-मारूफ़" न करना अपने रिश्तेदारों के साथ और जो लोग उसकी हाकमियत में हैं उनके साथ। इसका मतलब है इस्लाम मज़हब की तालीमात को बन कर देना।

यह समझा जाता है के एक आदमी जो उन्हें या किसी भी एक मुसलमान को अपने मज़हब को सीखने और इबादत करने से रोकता है ज़दकौब के ज़रिए या धोके से तो वो इस्लाम का दुश्मन है, एक काफ़िर (बेदीन) है। एक मुसलमान जो चारो मसालिक में से किसी एक की भी तकलीद नहीं करता वो एक "**काफ़िर**" माना जाता है। मुसलमान इन काफ़िरों की अहल अस सुन्नत के उसूल को बदलने और इस्लाम और ईमान को खराब करने की कोशिशों की शक्ल में बड़े जोखिम में हैं।

जबकि दुनिया में, ऐसे लोगों को जितनी जल्दी हो सके तोबा कर लेनी चाहिए, फिर मज़लूम के हक को वापस कर देना चाहिए, अपने आपको माफ़ करवा लेना चाहिए और अल्लाह तआला के रहम पर सुपुर्द कर देना चाहिए दोबारा ऐसे बुरे कामों से अपने आपको बचाते हुए। उन्हें अपने गुनाहों को माफ़ कराने के लिए बहुत सारे अच्छे काम भी करने चाहिए। तब, अल्लाह तआला उन्हें उनके गुनाहों के लिए माफ़ कर सकते हैं।

ऐसा माना जाता है के वो जो अपने पीछे अहम जानकारी और कोशिशें छोड़ जाते हैं इंसानियत की खिदमत करने के लिए, चाहे वो किसी और मज़हब में समझे जाएँ, हो सकता है अपनी ज़िंदगी के आखिर में उन्हें अल्लाह तआला की रहनुमाई हासिल हो जाए। पुराने, मुसलमानों ने ऐसे लोगों को "खुफिया पाक" कहा। अगर ये यकीनी तौर पर मालूम नहीं के इस तरह अच्छे अमाल करने वाले ग़ैर मुस्लिम अकाईद रखते थे, हम नहीं जानते, या फिर, वो जब मरे तो किस ईमान में थे। अगर उन्होने दिमाग़ का औज़ार सही इस्तेमाल किया होगा, जैसा के अल्लाह तआला ने उनपर डाला होगा; अगर उन्होने सारे इंसानों की खिदमत करने के इरादे से काम किया होगा बग़ैर किसी को भी नुकसान पहुँचाए; अगर उन्होने सारे मज़ाहिब की बुनियादी चीजों को पढ़ा होगा, ऐसा माना जा सकता है के उन्हें अल्लाह तआला की रहनुमाई मिली होगी और जिसके नतीजे में वो मुसलमान हो सकते थे। मिसाल के तौर पर, बर्नार्ड शॉ (**1856-1950**), एक मश्हूर मआसिर अदबी शख्स ने, अपने मज़ामिन में से एक में कहाः "इस्लाम वाहिद ऐसा मज़हब है जो हर सदी में अपनाया गया। मैं पैशनगोई कर रहा हूँ के इस्लाम वो मज़हब होगा जो कल के यूरोप के ज़रिए अपनाया जाएगा।" ये ज़ाहिर करता है के उन्होने अपने दिल में इस्लाम कुबूल कर लिया था।

जर्मन मुफ़क्किर और लेखक एमिल लुडविग (**1881-1948**) ने अपने कामों में से एक में लिखा थाः "मैं मिस्त्र गया था। एक शाम जब मैं लाल समुंद्र के किनारे टहल रहा था,

खामोशी के बीच, मैने अचानक अज़ान की अवाज़ सुनी, और मेरा पूरा जिस्म ख़ालिक के डर से काँप उठा। अचानक मेरे अंदर एक इच्छा जागी के मैं अपने आपको पानी में फैंक दूँ, वुज़ू करने के लिए, जिस तरह मुसलमान करते हैं उस तरह अल्लाह के सामने झुककर गिड़गिड़ाऊँ।" क्या ये साबित नहीं करता के चाहे आरज़ी तौर पर ही सही, इस मश्हूर लेखक के दिल में "हिदाया" की रोशनी जगमगाई?

लॉड हेडली, ने भी वही "हिदाया" की रोशनी अपने दिल में महसूस की, उन्होने कहा, "इस्लाम की सादा लेकिन चमकदार महानता देखने के बाद, जो एक हेलो की तरह चमकता है, तुम्हें ऐसा लगेगा जैसे तुम किसी अंधेरे गलियारे से निकल कर सूरज की रोशनी में आ गए हो।" बाद में उन्होने इस्लाम अपनाया ([1] बराएमेहरबानी हमारी इशाअत **वो क्यों मुसलमान बन गए** को देखिए।) अगर ऐसे लोग ईमान (यकीन) के बग़ैर मर जाएँ, और अल्लाह तआला के ज़रिए आखिरत में सज़ा दिए जाएँ, तो वो बेशक सिर्फ़ इस बिना पर के जो खिदमतें उन्होने इंसानियत के लिए की हैं उनकी सज़ाएँ खत्म कर सकता है। कुरआन अल करीम की सूरत ज़िलज़ाल की सातवीं और आठवीं आयात से वाज़ेह हैः **"वो जिसने छोटे सा अच्छा काम किया वो इसका सामना करेगा, और वो जिसने छोटा सा भी बुरा काम किया, वो भी उसका सामना करेगा।"** एक मुसलमान अपने अच्छे अमाल का इनाम यहाँ भी और आखिरत में भी दोनो जगह हासिल करेगा। मगर, एक काफ़िर अपना इनाम सिर्फ़ इसी दुनिया में हासिल करेगा। लिहाज़ा काफ़िर होने की वजह से सबसे बदतरीन मुमकिन चीज़ है। यही वजह है के एक शख्स जो पाक नियत के साथ इंसानियत की खिदमत करता है और इसके नतिजे के तौर पर तरक्की लेकर आता है जो इंसानियत के लिए फाएदेमंद हैं, जबकि वो इन सब चीज़ों को अपनी सेहत और ज़िंदगी को खतरे में रखकर करता है, लेकिन जो इस्लाम में शामिल नहीं हुआ और "बेदीन" (कुफ़्र) की हालत में मर गया उसे भी अपने अच्छे काम करने के बावजूद अपने कुफ़्र की सज़ा से छूट नहीं मिलेगी बहरहाल, अल्लाह तआला की नज़र में, कपटियों के लिए जो हर किस्म की बुराई और धोके करते हैं और जो इबादत करने का ढोंग करते हैं उनकी सज़ा सख्त है। उनका मुसलमान होने का दिखावा उन्हें उस अज़ाब से नहीं बचा पाएगा जिसके वो अपने दिलों में कुफ़्र रखने की वजह से मुसतहिक हैं।

उसमानिया तारीख बहुत सारे कमांडरों का रिकार्ड देती है, बहुत सारे इल्म और साईंस के आदमी जो पहले ईसाई थे और जो आखिरकार इस्लाम में शामिल हो गए और बाद में मज़हब के लिए बहुत सारी खिदमात अदा कीं।

इस्माइल हक्की एफ़ंदी (रहिमा-हुल्लाहु तआला) **1137 [1725]** साल में बरसा में रहलत फरमा गए। उनकी कुरआन अल करीम की वज़ाहत, जिसका नाम **रूह अल बयान** है, जो दस जिल्दों पर मुश्तमिल है, वो सारी दुनिया में इस्लामी उल्मा (रहिमा-हुमल्लाहु तआला) के ज़रिए सबसे ज़्यादा कदर बख़्शा जाता है। उन्होने छठे जुज़ ([1] कुरआन अल करीम बीस सफ़्हों का हर गुप "एक जुज़" कहा जाता है।) की अपनी तफ़सीर को पूरा करने के बाद कहा; मेरा शैख [मास्टर, उस्ताद] अपने वक्त का अल्लामा [सबसे गहरा आलिम] था। जब उन्हें बताया गया के कुछ यहूदी और ईसाई ईमानदारी और सच्चाई से बरताव कर रहे हैं और सबकी हिमायत में हैं, उन्होने जवाब दिया, "ऐसा होना इस बात की अलामत है जो उनकी खासियत है जिन्हें अब्दी फेलिसिटी मिली हो। ऐसी उम्मीद की जाती है के जिनमें ये सब खासियतें हों वो ईमान (यकीन) और तौहीद को हासिल करलें और उनका खात्मा निजाअत हो।" ये हवाला बज़ाहत की किताब से हमारे ऊपर बताए गए लफ़्ज़ों का सुबूत हैं।

अब उनकी तरफ़ वापस आते हैं जो इस्लाम की तंकीद करते हैं और इस्लाम में नुक्स ढूँढने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोग मंदरजाज़ेल पहलुओं में बसते हैंः

**1.** कुछ लोग कहते हैं, "इस्लाम एक आदमी को चार औरतों से शादी करने का हक देता है, जो मआसिर खानदान के तसुव्वुरात, खानदान के बाण्डज़ और समाजी आडर के साथ मुतावकत नहीं रखते।"

जवाब जो इसे दिया जाएगा वो हैः इस्लाम के ज़हूर को चौदह सौ साल गुज़र चुके हैं। अरब में, जो इस मज़हब का पैदाईशी मकाम है, उस ज़माने में औरतों को कोई हुकूक हासिल नहीं थे। हर कोई जितनी औरतों के साथ चाहता था रहता था, और वो उनकी तरफ़ कोई ज़िम्मेदारी नहीं रखते थे। ये हकीकत के औरतें कोई हैसियत नहीं रखती थीं ये इस हकीकत से देखी जा सकती है के बच्ची लड़कियों को उनके माँ बाप ज़िंदा दफ़ना दिया करते थे। इस्लाम, जो ऐसे समाज में पैदा हुआ, औरतों की तादाद जो एक आदमी रखता था उसको कम कर दिया उस वक्त के मुताबिक मुमकिन सबसे कम पर कर दिया। इसने औरतों के हुकूक को पहचाना और तलाकशुदा की हिफाज़त की बेकसी के खिलाफ़, तलाक की हालत में कुछ रकम अदा करने के लिए जिसे महर कहते हैं वो शादी से पहले फीकस कराई। तनकीदकारो के दावे के बरअकस के "उसने औरतों को उभारा है," इसने औरतों को समाज में ऊँचा औहदा दिलाया। ये हकाईक, जो हम दे रहे हैं उन्हें तफसीली तौर पर **दिया-**

**उल-कुल्ब** किताब में सफह **324** से आगे तक वाज़ेह किया गया है, जिसे तुर्की में इस्हाक एफ़ंदी (इस्हाक एफ़ंदी, ने **1309** (**1893** ए.डी) में रहलत फरमाई।) हारवूत वाले ने इस्लाम के खिलाफ़ एहतेजाजी मिशनरियों के लगाए गए इल्ज़ामों और झूठो की तशहीर को गलत सावित करने के लिए लिखी थी।ये किताव हकीकत किताववी के ज़रिए पहले से ही "**Cevab Veremedi**" (**जवाब नहीं दे सका**) के नाम से छाप चुका था।

आज हर कोई जानता है के इस्लाम एक मुसलमान को चार औरतों से शादी करने का हुकूम नहीं देता।दूसरे लफ़्ज़ों में, एक से ज़्यादा औरतों से शादी करना न तो फर्ज़ (ज़रूरी) है ना ही सुन्नत, बल्कि सिर्फ़ मुवह (जायज़) है।महमत (मेहमेट) ज़िहनी एफ़ंदी (रहिमाहुल्लाहु तआला) अपनी किताब **नएमत-ए-इस्लाम** के शादी वाले हिस्से के शुरू में कहते हैंः "इस्लाम में न तो एक औरत को तलाक देना या चार औरतों से शादी करना वाजिव (एक सख्त फर्ज़) नहीं है।ये किसी भी तरह से मंदूव (पाक अमल) नहीं है।ये ज़रूरत की हालत में जायज़ है।आदमी चार औरतों से शादी करने के लिए ज़िम्मेदार नहीं है, और औरतों के लिए भी इसे कुवूल करने की ज़िम्मेदारी नहीं है।" अगर सरकार एक मुवह चीज़ को मना करती है, तो ये हराम (ममनुअ) हो जाती है और किसी भी तरह मुवह नहीं रहती।ये इसलिए क्योंकि मुसलमान कानून की नाफरमानी नहीं करते।एक मुसलमान एक शख्स है जो अपने लिए या दूसरों के लिए भी नुकसानदायक नहीं है।इसके अलावा, अगर एक आदमी दूसरी बीवी से शादी करना चाहता है तो इस्लाम ने मआशी और समाजी शर्ते कायम की हैं पहली बीवी के हुकूक और आज़ादी को महफूज़ रखने के लिए।दूसरी औरतें जिन से वो वाद में शादी करना चाहता है सबके अपने खास हुकूक हैं, और इस्लाम ने एक से ज़्यादा औरत से शादी को ममनुअ करार दिया है ऐसे आदमियों के लिए जो इन शर्तो को पूरा नहीं करते और जो औरतों को उनके हुकूक देने की गारंटी नहीं पूरी करते।दूसरी तरफ़, ये एक तरह से सवाव (आखिरत में रहमत हासिल करने का ज़रिया) है के पहली बीवी की रज़ा के लिए दूसरी शादी का ख़्याल छोड़ देना।मज़ीद ये, एक मुसलमान, यानी अपनी पहली बीवी को दुख देना हराम (ममनुअ) है।बीसवीं सदी में, ज़्यादातर मुल्कों में मआशी हालतों की वजह से, ज़्यादातर आदमी इन शर्तो को पूरा नहीं करते थे।ज़ाहिर सी बात है, इसलिए, ऐसे आदमियों के लिए दूसरी औरत से शादी की इजाज़त नहीं थी।इस्लाम ऐसे उसूलों को मान लेता है जो इस्तेमाल होते हों और मरज़ी के मुताविक हो वक्त के साथ चलने वाले हों, और, इसलिए, आज ज़्यादातर मुसलमान आदमी के पास सिर्फ़ एक वीवी है।

कसरत असवाज के मुतअल्लिक, आइए अब दूसरे मुल्कों और मज़ाहिब को देखते हैं। एक से ज़्यादा औरतों से शादी की इजाज़त Genesis के **30**वें बाब में, Deuteronomy के **21**वें बाब में, और तोरह (पुराने नियम) जो यहूदियों और ईसाइयों की पाक किताब मानी जाती है उसके दूसरे समूएय के दूसरे बाब में दी गई है। नबी दाऊद और सुलेमान की बहुत सारी बीवियाँ और औरतें बांदियाँ थी; मशरिकी रोमन बादशाहों की बहुत सारी बीवियाँ थी, और पुराने जर्मन बादशाह, मिसाल के तौर पर, फ्रेडरिक बरबारोसा (**1152-1190**) की तीन से चार तक बीवियाँ थीं। एक एस्किमों भी दूसरी और से शादी कर सकता है अगर उसकी पहली बीवी उसे इजाज़त दे दे तो। मॉर्मन ईसाई फिरका **1830** में अमेरिका में कायम किया गया भी एक आदमी को एक से ज़्यादा औरत से शादी करने की इजाज़त देता था। (लेकिन अब, अमेरिका का कानून ऐसी शादियों को मना करता है।) आज के जापान में भी, एक आदमी कई औरतों से शादी कर सकता है।

मंदरजा बाला हकाईक की रोशनी में, ये गंभीर तरीके से नामुनासिब होगा इस्लाम पर इल्ज़ाम लगाना क्योंकि "ये एक आदमी को बहुत सारी औरतों से शादी करने की इजाज़त देता है।" कसरत असवाज कई मुल्कों और मज़ाहिब के ज़रिए अपनाया हुआ है। मश्हूर लेखक जॉन मिल्टन (**1608-1674**) ने कहा, "क्यों कोई चीज़ जो न तो पुराने अहदनामे में और ना ही नए अहदनामें में ममनुअ नहीं तो फिर क्यों उसे शर्मनाक या नापाक समझा जाए? कदीमी नबी (अलैहिमु सलाम) हमेशा बहुत सारी बीवियाँ रखते थे। इसलिए, कसरत असवाज ज़िना नहीं है। ये कानून और आम एहसास के साथ मुताबकत रखता है।"

मश्हूर मुफक्किर और लेखक मॉंटेस्कयू (**1659-1735**) ने कहा, "अगर हम इस हकीकत को मद्दे नज़र रखें के गरम मुल्कों में औरतें जल्दी बड़ी होती हैं और उमर भी तेज़ी से बढ़ती है, तो जो ऐसे मुल्कों में रहते हैं उनके लिए ये कुदरती बात है कई औरतों से शादी करना।" बहरहाल, जैसा के ऊपर बताया गया, मआशी हालात की वजह से, आज की मुस्लिम मुल्कों में कसरत असवाज बिल्कुल भी नहीं है।

**2.** कुछ लोग कहते हैंः इस्लाम मुसलमानों को मुल्कों पर चढ़ाई करने, कत्ल करने, आग लगाने, तबाह करने का हुकम देता है, और लोगों को अपने मज़हब के लिए तलवार की नौक पर रखते हैं, जिसे "जिहाद" (पाक जंग) का नाम देते हैं।

ये इस्लाम बिल्कुल गलत है। जिहाद का मतलब है जो इस्लाम के ज़रिए बताया गया वो मुल्कों को तबाह करना या लोगों को कत्ल करना नहीं है, बल्कि मज़हब को फैलाना है, और साथ ही मज़हब की हिफाज़त करनी है, जो के कभी भी तबाही, आगज़नी या जुल्म के ज़रिए नहीं की गई। इस्लाम सिर्फ़ बग़ावत के खिलाफ़ बचाव और जददोजहद का हुकूम देता है। दूसरी तरफ़, ईसाई जैसा के हमने तफ़सील से ऊपर बयान किया, कभी भी मज़हब के नाम पर भयानक कत्ल करते हुए कभी नहीं झिझके, और, हज़रत ईसा (जिसस) की रहम और इंसाफ की तालीमात और सलाह के बावजूद, उन्होने हर तरह की बुराई और वहशीपन को बढ़ावा दिया। तारीख उनके जुल्मों की मिसालों से भरी पड़ी है। इसके बरअक्स, इस्लाम के मुताबिक, एक मुसलमान कभी भी किसी भी किस्म का जुल्म लागू नहीं करता। अगर एक मुसलमान, या उसके मज़हब पर हमला किया जाएगा तो पहले वो नरमाई से उस ज़ालिम को रोकने की कोशिश करेगा। उसकी कोशिशों की नाकामी की सूरत में, वो उस पर दावा ठोक सकता है। और अदालत इंसाफ़ के साथ उस पर ज़रूरी सज़ा लागू कर सकता है। अगर वो अदालत के ज़रिए भी अपना हक हासिल न कर पाए तो, वो चाहे तो उसके घर, या उसके कारोबार की जगह पर पनाह ले सकता है। वो अपने आपको उसकी बग़ावत से परे रख सकता है। अगर उसके घर, या कारोबार की जगह पर हमला हो तो, उसे बाहर हो जाना चाहिए; यानी, उसे वो शहर छोड़ देना चाहिए। अगर उसे कोई शहर न मिले बसने के लिए तो, उसे उस मुल्क को छोड़ देना चाहिए। अगर उसे कोई मुस्लिम मुल्क न मिले बसने के लिए तो उसे किसी भी ग़ैर-मुस्लिम मुल्क में चले जाना चाहिए जहाँ इंसानी हुकूक की इज़्ज़त होती हो। एक मुसलमान कभी भी किसी पर अपने हाथों या ज़ुबान से हमला करता है ना ही वो किसी की मिलकियत, माल, पाकी या इज़्ज़त को बिगाड़ते हैं। जिहाद का मतलब है, अल्लाह तआला का सच्चा मज़हब उसके तखलीकी बंदों को पहुँचाना ये जुल्म और इस्तेहसाल करने वाले तानाशाहों को तलवार के ज़रिए खत्म करके इस्तेमाल किया जा सकता है, जो अल्लाह तआला का मज़हब उसके बंदों तक पहुँचने के रास्ते में रूकावट बनें। पहले ये मश्वरे और अखलाकी तबलीग़ के ज़रिए शुरू किया जाए, और फिर नाफ़रमानी या मुख़ालफत की हालत में, इन रूकावटों को दूसरे ज़रियों से खत्म किया जाए। ताकत के साथ जिहाद अफराद के ज़रिए नहीं, बल्कि इस्लामी रियास्त के ज़रिए होगा।

कुरआन अल करीम की सूरह अल-बकरह की **256**वीं आयत से हवाला हैः **"मज़हब में कोई मजबूरी नहीं है..."** ईसाईयों के मामूल के तरीकों के बरअकस, मुसलमान किसी भी शख्स को किसी भी ज़रिए के सहारे से इस्लाम में शामिल नहीं करते, यानी, ताकत

के ज़रिए या मादी फायदे के वादे के ज़रिए। वो जो मुसलमान बनना चाहता है वो अपनी मरज़ी से मुसलमान बन सकता है। मुसलमान ग़ैर मुस्लिम को इस्लाम अपनाने का सबब बनते हैं अपने मीठे, मंतकी और मुनासिब अलफ़ाज़ों से और अपने अखलाकी बरताव और मिसाली अतवार से। वो जो मुसलमान नहीं बनना चाहते वो इस्लामी रियासत में ग़ैर मुस्लिम मुल्की आदमियों की तरह उनकी हिफ़ासत में आज़ादी के साथ रह सकते हैं वो आज़ादी के साथ अपने मज़हबी रसूम कर सकते हैं। ये सब **दिया-उल-कुल्ब** किताब के **293** सफहे से आगे तक वाज़ेह है।

ये **मनाकिब-ए-चहार यार-ए गुज़ीन** किताब की **70**वीं कहानी में बताई गई हैः "ताजिरों का एक काफ़ला फौरी तौर पर मदीने के बाहर एक रात रूक गया। क्योंकि वो बहुत थक चुके थे, वो सब जल्दी ही सो गए। खलीफ़ा, उमर (रज़ी-अल्लाहु तआला अन्ह), जो अपने मामूल के मुताबिक शहर का गश्त लगा रहे थे, उन्होने उन्हें देखा। वो अबद-उर-रहमान इबन औफ़ (रज़ी अल्लाहु तआला अनह) के घर गए और उनसे कहाः 'आज रात यहाँ एक कारवान है। वो सब काफ़िर हैं। लेकिन उन्होने अपने आपको हमारी हिफ़ाज़त में नामज़द किया है। उनके पास बहुत सारा कीमती सामान है। मुझे डर है के कहीं उन्हें अजनबी या घूमने वाले न लूट लें। मेरे साथ आओ, उनकी हिफ़ाज़त करें।' वो सुबह तक उनकी पहरेदारी करते रहे, और फिर सुबह की नमाज़ के लिए मस्जिद चले गए। काफ़िले के बीच एक जवान नहीं सोया था। वो उनके पीछे गया। उनके बारे में पूछताछ करने पर, उसे पता चला के जो शख्स उनकी पहरेदारी कर रहा था वो खलीफ़ा उमर (रज़ी-अल्लाहु अन्ह) थे। वो वापस चला गया और अपने साथियों को इसके बारे में बताया। आला खलीफ़ा की रहमदिली और माफ़ी देखकर, जिसने रोमन और इरानी फौजों को रौंद दिया था, जिसने बेशुमार शहरों पर फतह हासिल की थी, और जो अपने इंसाफ़ के लिए बहुत ज़्यादा जाने जाते थे, वो इस नतीजे पर पहुँचे के इस्लाम ही सच्चा मज़हब है, और अपनी इच्छा से एक साथ मुसलमान हो गए।

जैसा के ये एक ही किताब **मुनाकिब** में लिखा हैः "हज़रत उमर (रज़ी अल्लाहु अन्ह) की खिलाफ़त के दौरान, साद इबन अबू वक्कास (रज़ी अल्लाहु अन्ह), मशरिकी मोर्चे के कमांडर, कूफ़ा शहर में एक विला बनवाना चाहते थे। वो एक मैग्यिन का घर खरीदना चाहते थे जो उनके पार्सल के बग़ल में था। मैग्यिन अपना घर नहीं बेचना चाहता था। मैग्यिन अपने घर गया और अपनी बीवी से बातचीत की जिसने कहाः "उनके पास मदीना में

'अमीर-उल-मोमिनीन हैं। उनके पास जाओ और उनके पास शिकायत दर्ज कराओ। वो मदीना चला गया और खलीफ़ा के महल के बारे में पूछा। जिन लोगों से उसने पूछा उन्होने जवाब दिया के खलीफ़ा के पास न तो कोई महल है न विला और ये के वो शहर से बाहर गए हैं। इसलिए वो भी उनको देखने के लिए शहर छोड़कर चला गया। वहाँ आस पास कोई सिपाही या गार्ड नहीं थे। उसने देखा के कोई ज़मीन पर सो रहा है। उसने आदमी से पूछा के क्या उसने खलीफ़ा उमर को देखा है। दरहकीकत, जिस आदमी से उसने पूछा था वो खुद खलीफ़ा उमर (रज़ी अल्लाहु अन्ह) थे। उन्होने आदमी से पूछा के तुम क्यों खलीफ़ा उमर को ढूँढ रहे हो। आदमी ने जवाब दियाः उसके कमांडर मुझे उनको अपना घर बेचने के लिए मजबूर कर रहे हैं। मैं यहाँ उनके खिलाफ़ शिकायत लिखवाने आया हूँ। हज़रत उमर (रज़ी अल्लाहु अन्ह) अपने घर गए, साथ में मैग्यिन को भी ले गए। उन्होने कुछ काग़ज़ मांगे, लेकिन उन्हें घर में कोई काग़ज़ नहीं मिला। उन्होने एक कंधे की हडडी देखी और उसे मांगा। उन्होने हडडी पर मंदरजाज़ेल लिखाः 'बिस्मिल्लाहइरामानिररहीम ([1] अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम वाला है।) ए, साद इस मैग्यिन के दिल को दुख न पहुँचाओ! नहीं तो, फौरन मेरे पास आ जाओ।' मैग्यिन हडडी को अपने साथ ले गया और घर वापस चला गया। उसने कहाः मैं बेकार में इतनी ज़्यादा परेशानी में पड़ा। अगर मैं ये हडडी का टुकड़ा कमांडर को दूँ तो वो सोचेगा मैं उसका मज़ाक उड़ा रहा हूँ और बहुत गुस्सा हो जाएगा। लेकिन जब उसकी बीवी ने ज़ोर दिया तो वो साद के पास चला गया। साद बैठे हुए थे और अपने सिपाहियों के साथ खुशी से बात चीत कर रहे थे। जैसे ही उनकी नज़र मैग्यिन के हाथ में उस हडडी पर लिखी तहरीर पर पड़ी, जो उनसे थोड़े ही फासले पर खड़ा था, वो एकदम ज़रद पड़ गए, क्योंकि उन्होने अमीर-उल-मोमिनीन उमर (रज़ी अल्लाहु अन्ह) की लिखावट पहचान ली थी। ये अचानक तबदीली सबको हैरान कर गई। साद (रज़ी अल्लाहु अन्ह) मैग्यिन के पास गए और कहाः 'मैं वो सब करूँगा जो तुम मुझ से चाह रहे हो। लेकिन, मेहरबानी करके ऐसा कुछ न करना जो मुझे उमर (रज़ी अल्लाहु अन्हा) की मौजूदगी में मुजरिम साबित करे, क्योंकि उनके ज़रिए दी गई सज़ा को मैं सह नहीं पाऊँगा। कमांडर को इलतिजा करते हुए देखकर मैग्यिन पागलो की हद तक हैरान हो गया। जब वो वापस अपने होश में आया, तो फौरन मुसलमान हो गया। जब दूसरों ने उससे पूछा के वो कैसे मुसलमान बन गया, तो उसका जवाब थाः "मैने इनके अमीर (हाकिम) को देखा पेबंद लगे हुए कोट के साथ ज़मीन पर सोते हुए। मैने देखा कैसे उनका कमांडर उनके डर से काँप गया। मैं, इसलिए इस नतीजे पर पहुँचा के वो सही मज़हब में हैं। ऐसा इंसाफ़ मेरे जैसे आग परस्त के लिए वो सिर्फ़ सही मज़हब के ईमान वालो के ज़रिए ही हो सकता है।"

तारीख के प्रोफ़ेसर, **नदवत-उल-उलमा** की इंडिया की इजतिमाई असेमवली के सरवराह शिब्ली नोमानी **अल-इंतिकाद** मश्हूर किताब के लेखक जो 1332 [1914] में रहलत फरमा गए। उनकी उर्दू में लिखी किताब **अल-फ़ारूक** जिसे फारसी में सरदार असदउल्लाह खान की माँ ने तर्जुमा किया, जो अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह नादिर शाह की वहन थी। तर्जुमा लाहौर में 1352 (1933) नादिर शाह के हुकूम पर छापा गया। ये 180वें सफहें पर कहता हैः "अवू उवेदत इवन जर्राह (रज़ी अल्लहु अन्ह) ने अपने आदमियों से हर शहर को उन्होने फतह उसमें खलीफ़ा उमर (रज़ी अल्लाहु अन्ह) के हुकूम का ऐलान करने को कहा। जव उन्होने हमस शहर को फतह किया, उन्होने कहा, 'ए वीजान्टिन/कुस्तुंतुनिया अल्लाह तआला के मदद और हमारे खलीफ़ा, उमर (रज़ी अल्लाहु अन्ह) के हुकूम से, हमने इस शहर को भी जीत लिया। तुम सव अपनी तिजारत, कारोवार, और इवादत में आज़ाद हो। कोई भी तुम्हारी मिलकियत, ज़िंदगी या पाकी को नहीं छुएगा। इस्लाम का इंसाफ़ तुम पर लागू होगा, और तुम्हारे हुकूक उसी तरीके से ध्यान में रखे जाएँगे। वग़ैर आए हमलों के खिलाफ़, हम तुम्हारी वैसे ही हिफ़ाज़त करेंगे जैसे के हम मुसलमानों की हिफ़ाज़त करते हैं। जैसे के हम इस खिदमत के वदले मुसलमानों से जानवरों की ज़कात के साथ टैक्स और अश्र लेते हैं, उसी तरह हम साल में एक वार तुम से हमें जज़िया अदा करने को कहेंगे। अल्लाह तआला ने हमें तुम्हारी ख़िदमत करने के लिए और तुम पर जज़िया का टैक्स लगाने का हुकूम दिया है। ([1] जज़िया की रकम गरीवों से 40 ग्राम चाँदी, मिडल कलास से 80 ग्राम, और अमीरों से 160 ग्राम है। दूसरी चीज़ें, जैसे के उसके वरावर कीमत के मकई, चाँदी के वजाए दे सकते हैं। औरते, वच्चे, वीमार, गरीव, वूढ़े और मज़हव के आदमियों पर जज़िया का टैक्स नहीं होगा।)

"हमस के वीजान्टिन अपना जज़िया खुशी से अदा करते थे, और वएतुमाल के सरवराह, हवीव इंवन मुस्लिम को देत थे। जव खुफ़िया एजैंसी ने खवर दी के Heraclius अपने मुल्क में सिपाहियों की भरती कर रहा है और अन्ताकिया की तरफ़ से हमला करने की तैयारी कर रहा है, तो ये फैसला लिया गया के हमस के सिपाही यरमक पर फौजों में शामिल होंगे। अवू उवैदा (रज़ी अल्लाहु अन्ह) ने अपने हुक्काम से शहर में ऐलान करायाः "ए ईसाई यों! मैने तुम्हारी ख़िदमत करने, तुम्हारी हिफ़ाज़त करने का वादा किया था, जिसके वदले में मैने तुम से जज़िया लिया था। लेकिन अव, जैसा के मुझे खलीफ़ा (रज़ी अल्लाहु अन्ह) ने हुकूम दिया है। मैं यहाँ से जा रहा हूँ अपने भाईयों की मदद करने जो हरकल/Heraclius के खिलाफ़ पाक जंग लड़ेंगे। मैं अपना वादा तुम से रख नहीं पाऊँगा। इसलिए, तुम सव

बीजान्टिन आना और अपना जज़िया वापस ले जाना! तुम्हारे नाम और हिस्सा हमारे रजिस्ट्री में लिखे हैं। बिल्कुल ऐसा ही बहुत सारी सीरियाई शहरों में भी किया गया। मुसलमानों का, ये इंसाफ़, ये रहम देखकर, ईसाई बहुत ज़्यादा ख़ुश हुए ये जानकर के वो बीजान्टिन बादशाह के ज़ुल्म और अज़ाब से आज़ाद हो गए जो वो कई सालों से उन पर करते आ रहे थे। उन्होने ख़ुशी के आँसू बहाए। उनमें से ज़्यादातर अपनी ख़ुशी से मुसलमान बन गए। उनके अपने रिकार्ड में, वो बीजान्टिन फौजों पर मुसलमान फौजों के लिए जासूसी करती थीं। इस तरह, अबू उबेदा को हरकल/Heraclius की फौज की सारी हरकत की रोज़ाना ख़बर मिल जाती थी। इन बीजान्टिन जासूसों ने यरमुक की बड़ी जीत में एक अहम किरदार अदा किया। इस्लामी रियासतों का फैलाओ और कयाम ज़ुल्म या कत्ल पर मुबनी नहीं है। बड़ी और खास ताकत जो इन रियासतों को उठाने में और उन्हें ज़िंदा रखने में हैं वो है उनका ईमान (यकीन), इंसाफ़ की ताकत, अच्छाई, ईमानदारी, और ख़ुद कुरबानी जिसका इस्लाम बहुत पसन्द करता है।"

ये कोई तहज़ीब नहीं है के मग़रीबी फैश्न, ग़ैर अख़लाकियात, और झूठे अकाईद की नकल करना। ये मुसलमान लोगों के आईन को तबाह करता है। और ये तबाही सिर्फ इस्लाम के दुश्मनों के ज़रिए बढ़ाई जाती है। इस्लाम कभी भी ये बरदाश्त नहीं करेगा के एक मुसलमान लापरवाह या आलसी बने। ये मुसलमानों को साईस की हर शाख में काम करने और बेहतर होने का ग़ैर-मुस्लिमों से उनकी नई साईसी खोज को सीखने, और उसकी तकलीद करने का हुकूम देता है। वो उन्हें काश्तकारी, कॉमर्स, अदबियात, कैमिस्ट्री और जंग की सनत में सबसे आगे होने का हुकूम देता है। मुसलमानों को सारे साईसी ज़रियों को खोजना चाहिए जो दूसरी कौमों के पास हैं, और उनको बनाना चाहिए लेकिन उन्हें उनके बेईमान मज़ाहिब, घीनौनी और गंदी आदतें, रसूम या रिवाज अपनाने या तकलीद नहीं करने चाहिए।

इगनतियफ़, जो लम्बे अरसे के लिए उसमानिया सलतनत का रूसी सफ़ीर था, वो अपनी यादगार में एक खत जिसे कुलपति ग्रेगोरियस ने, जो **1237** **(1821)** के ग्रीक बग़ावत का अहम साज़िश करने वाले था, सुल्तान महमूद खान II (रहिमा हुल्लाहु तआला) के ज़माने में, रूस के ज़ार/Czar अलेक्ज़ेंड्रे को लिखा था, उसे फाश करता है। ये खत एक सबक हैः

"असल में तुर्कों को कुचलना या तबाह करना नामुमकिन है। तुर्की, मुसलमान होने की वजह से, बहुत ज़्यादा सबर और बरदाश्त करने वाले लोग हैं। वो बहुत वकार वाले और

ज़बरदस्त ईमान वाले हैं। ये अखलाकी खुसूसियात उनके अकीदे पर अमल करने से, किस्मत के साथ मुतमाईन, उनके रिवाजों की ताकत, और अपने बादशाहों [रियास्त के हुकूमरान, कमांडरों, सरदारो] के लिए फरमाबरदारी का अहसास पैदा होता है।

तुर्की अकलमंद और मेहनती हैं जब तक के उनके सरबराह उनकी रहनुमाई कर रहे हैं और उन्हें मुसब्बत तरीके से चलाएँ। वो बहुत मुतमईन हैं। उनकी सारी अच्छाईयाँ उनकी साहस और बहादुरी के अहसासात के साथ, वो सब उनके रिवायात की तरफ़ अकीदत और उनके अख़लाकियात की मज़बूती की तरफ़ से आती हैं। सबसे पहली ज़रूरत है तुर्को की फरमाबरदारी के एहसासात को तोड़ना, उनके रूहानी रिश्ते को उखाड़ना, और उनके मज़हबी एतराफ़ को कमज़ोर करना। और इस खात्मे का सबसे छोटा रासता है उन्हें ग़ैर मुल्की नज़रियात और तरज़े अमल करने के लिए जो उनके कौमी रिवायात और अकलाकियात के खिलाफ़ हों उन्हें उकसाया जाए।

जिस दिन उनकी मज़हबी अखलाकियात टूट जाएँगी, तुर्को की असली ताकत, जो उन्हें इतनी बड़ी फौजों के आगे जो उनसे ताकत और शुमार में ज़्यादा होती हैं, और ज़ाहिर में भी बड़ी होती हैं उनपर जीत दिलाती हैं, उनकी ताकत ढूलमूल हो जाएगी, और, इस तरह उन्हें मादी बरतरी से कुचलना मुमकिन हो पाएगा। बजह से, उसमानिया सलतनत को खत्म करने के लिए सिर्फ़ जंग में जीतना काफ़ी नहीं है। दरहकीकत, सिर्फ इसी तरीके को अपना कर तुर्को के वकार और अज़मत के अहसास को और मज़बूत करना है, जिससे उनको अपने जोहर को पहचानने का और सबब बनता है।

जो चीज़ करने की है वो तुर्को के इल्म में लाए बग़ैर उनके आईन में तेज़ी से ज़ुल्म को बढ़ावा देना है।"

ये खत स्कूल की किताबों में हिफ़ज़ाने/सहत/याद करने के लिए लिखना काफ़ी ज़रूरी है। इस खत में कोई पैग़ाम हैं; फिर भी, मंदरजाज़ेल दो बुनियादी अहमियत रखते हैंः

**1.** तुर्को को ग़ैर मुल्की नज़रयात और तरज़े अमल पर करना उनके ईमान और मज़हब को खत्म करने के लिए।

**2.** तुर्को के आईन में उनके इल्म में लाए बग़ैर तबाही को मुकम्मल करना।

और ये मकासिद तब हासिल हो सकते हैं जब वो ईमान और फैशन में मग़रिबी ग़ैर अखलाकियात की तकलीद करें।

कुदरती तौर पर, तकनीकी कामयाबियों के लिए और साईंस की हर शाख के लिए मग़रिबी इल्म हासिल करना ज़रूरी है। दरहकीकत इस्लाम इसका हुकूम देता है।

लार्ड डेवनपोर्ट, एक ब्रिटिश आलिम, जिसने सारे मज़ाहिब को बहुत अच्छी तरह पढ़ा, उसने अपनी अंग्रेज़ी की किताब, **हज़रत मुहम्मद और कुरआन** में कहा, जिसे उसने बीसवीं सदी के शुरू में लंदन में छपवायाः

ये उनकी अखलाकियात पर सख्ती थी जिसने इस्लाम को इतने कम अरसे में फैला दिया। मुसलमान हमेशा दूसरे मज़ाहिब के लोगों की तरफ़ माफ़ दिखाते है जो लड़ाई में तलवार के आगे हार जाते हैं। जयूरिओ कहता है के मुसलमानों का बरताव ईसाईयों के साथ कभी भी पादरियों और राजाओं के बरताव के मुकाबिल नहीं होता था जैसे के वो मुसलमानों के साथ रखते थे। मिसाल के तौर पर, **980** ए.एच [**1572** ए.डी], **24** अगस्त, यानी सेंट बार्थोलोम्यू के दिन पर, **60** हज़ार प्रोटेस्टेंट को पेरिस और उसके बाहरी इलाकों में चार्लस IX और महारानी कैथरीना के हुकूम पर कत्ल कर दिया गया। सेंट बार्थोलोम्यू को, जो बारह प्रेरितों में से एक थे, उनको शहीद कर दिया गया, क्योंकि वो अगस्त **71** ए.डी में एर्जुरम में ईसाईयत की तामील दे रहे थे। इन और दूसरी परेशानियों में मुसलमानों के ज़रिए बहाया गया खून उस खून से ज़्यादा था जो ईसाईयों का खून मुसलमानों के ज़रिए जंगों में बहाया जाता है। इस वजह से ये बहुत ज़रूरी था के बहुत सारे गुमराह लोगों की इस गलतफहमी को दूर करना के इस्लाम एक जाबिर मज़हब है। ऐसे गलत बयानात के कोई सबूत नहीं हैं। पोपसी के ज़ुल्मों का मवाज़ना किया जाए, उन्होने वहशत और बरबरियत पैदा की, तो मुसलमानों का बरताव ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ इतना ज़्यादा हल्का था जैसे दूध पीते बच्चे के साथ।

Chatfeld कहता है, “अगर अरबी, तुर्क और दूसरे मुसलमान ईसाईयों के वही वहशी बरताव करते जैसे के मग़रिबियों ने, यानी ईसाईयों ने मुसलमानों के साथ किया, तो आज मश्रिक में एक भी ईसाई नहीं बचता।”

दूसरे मज़ाहिब की वहम परस्ती और शकूक की दलदल के बीच में, इस्लाम खालिस एक बनफशी रंग के तौर पर बड़ा हुआ और दिमाग़ी और दानिशवाराना अहदाफ़ की अलामत बन गया।

मिल्टन ने कहा, "जब कॉन्स्टेंटिन ने कौमी दौलत को चर्च के खजाने को सौंपा, तो इसने पादरियों के बीच में दौलत और मरतबे के लिए अच्छी जगह दी। इसके नतीजे में, ईसाईयत मुख्तलिफ़ फ़िरकों में बंट गई।"

इस्लाम ने इंसानियत को बुतों के लिए इंसानी खून के बहाव की खराबी और तबाही से बचाया। इबादत और खैरात को उसकी जगह पर पहुँचाया, इसने आदमियों को अच्छाई दी। इसने समाजी इंसाफ़ की बुनियाद कायम की। इस तरह ये असानी से बग़ैर किसी खूनी औज़ारों के सहारे से पूरी दुनिया में फैल गया। [ये इस्लाम में जिहाद होता है।]

ये कहा जाता है के मुसलमानों की तरह कोई और दूसरी कौम नहीं है जो इल्म की वजह के लिए वफ़ादार और इज़्ज़त वाली हो। नबी (अलैहि सलाम) की बहुत सारी हदीसें संजीदगी के साथ इल्म को हासिल करने और इल्म के लिए इज़्ज़त के साथ जुड़ने को बढ़ावा देती हैं। इस्लाम इल्म को माल के ऊपर फौकियत देता है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी पूरी ताकत से इस बात पर ज़ोर दिया, और आपके सहाबा अपनी पूरी काबिलियत के साथ इस तरीके पर काम करते रहे।

आज की साईंस और तहज़ीब के बानी, और अदब के पुराने और नए काम के मुहाफ़िज़ उम्मैयद, अब्बासी, ग़ज़नवी और उस्मानिया के वक्तों के मुसलमान थे। डेवेनपोर्ट की बात यहाँ खत्म होती है।

मिशनरियों ने डेवनपोर्ट की अंग्रेज़ी किताब को खत्म करने की कोशिश की, जिसमें से हमने कुछ हिस्सों को कलमबंद किया। इस्लाम में जिहाद को **इज़्हारूलहक** किताब के दूसरे हिस्से में तफसीली तौर पर वाज़ेह किया गया है इसे रहमतुल्लाहि एफ़ंदी ([1] रहमतुल्लाहि एफ़ंदी ने **1306** (**1889** ए.डी) में मक्का में रहलत फरमाई।) इंडिया से ने लिखा है।

**3.** "इस्लाम में कुरआन अल करीम कानून की तामील करता है। इस वजह से, कुरआन में कुछ बहुत ज़्यादा ज़ालमाना कानून हैं जिन्हें आज ज़ुल्म की शक्ल के तौर पर देखा जाता है। एक मिसाल इसकी है, कुछ लोग कहते हैं, के "एक चोर के हाथ को कटवाना।"

ये इल्ज़ाम झूठा है। ये बात सही है के कुरआन अल करीम में ये कानून है के जो चोरी करे उसके हाथों को काट दें। लेकिन, मज़मून में चोरों से मुराद किया है वो है जो वहशी तरीके से मासूम लोगों के घरों को जलाएँ, तबाह करें और हड़प लें। कुरआन अल करीम हुकूम देता है के जब उन्हें पकड़ लिया जाए तो उनके हाथों को काट दिया जाए। लेकिन इसकी अमलदरआमद हालात पर मुबनी है। हज़रत अली (रज़ी-अल्लाहु अन्ह) ने खासतौर से हुकूम दिया के जो कहत के दौरान चोरी करें उनके हाथों को न काटा जाए। अगर ये कानून कुछ मुल्कों में इस्लाम के नाम पर गलत इस्तेमाल किया जा रहा है, तो गलती उनकी मानी जाएगी जो इसे गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन इस्लाम की नहीं। ये असली इस्लामी मुल्कों में जो इस्लामी मज़हब के उसूलों को सही तौर पर अपनाते हैं उनके अमल में नहीं है। ये इस वजह से क्योंकि "हाथ काटने" की हालत की अमलदरआमद मौजूद नहीं है। कुरआन अल करीम में ज़ाहिर जुरमाने की वजह से कोई इस तरह के जुर्म करने की हिम्मत नहीं करता। इस्लामी मुल्कों में कोई नहीं, बल्कि जज़ भी इस जुर्म को जिसे **हद** कहते हैं माफ़ करने का हक नहीं रखते। ये जुर्म उन पर लगाया जाता है जो एक गुनाह/जुर्म करते हैं जिसमें एक "हद" चाहिए होती है लोगों के सामने सज़ा और उस पर अमल करना। इस सज़ा के मुसतहिक होने के डर से, कोई भी जुर्म या, बल्कि, कोई भी इस किस्म के जराईम नहीं करता।

अब आइए एक नज़र **पाक बाएबल** पर डालते हैं जो आज के ईसाईयों के पास है।

मैथ्यू की इंजील (बाब **18/8**) में इस तरह मंदरजाज़ेल लिखा हैः "इसलिए अगर तेरा हाथ या तेरा पैर तुझे ज़िल्लत दे, तो उन्हें काटकर निकाल दोः तुम्हारे लिए बेहतर है के ज़िंदगी में दाखिल हो जाओ या बेकार हो जाओ, इसके बजाए के दो हाथों या दो पैरों के साथ हमेशा के लिए आग में डाल दिए जाओ।"

**एक्सोदेस** के **31**वें बाब के **14**वीं आयत में तोरह में बयान हैः "तुम सब्त को बनाए रखो इसलिए; क्योंकि यह तुम्हारे लिए पाक हैः हर कोई जो इसे नापाक करेगा उसे बेशक मार डाला जाएगा..." (Ex: **31-14**)।

ये इस बात को साबित करता है के पाक बाएबल में भी है के ये सही है जो बड़े गुनाह करे उसके हाथ या पैर को काट दिया जाए।

डॉक्टर के ज़रिए दी गई दवाई एक ग़ैर सेहतमंद शख्स के लिए कढ़वी ही होगी। वो ये सोच सकता है के वो किसी काम की नहीं और हो सकता है ये भी यकीन करे के उसको इस्तेमाल करने से उसको नुकसान हो सकता है। लेकिन जब वो अपने डॉक्टर की समझ पर यकीन करता है और दवाई को इस्तेमाल करता है, तो वो ठीक हो जाता है। अल्लाह तआला सबसे ज़्यादा ताकतवर, दिल की, रूह की और जिस्म की सब बीमारियों के माहिर होने की वजह से, चोरी की बीमारी का इलाज करने के लिए हाथ काटने का हुकूम देता है। जब सारे मुसलमान इस एहकाम को जान लेते हैं, और जब ये सुनाई दिया जाता है के कुछ चोरों पर हाथ काटने की सज़ा आईद हुई है, तो उस सज़ा के खौफ से वहाँ पर कोई चोरी की आदत में नहीं पड़ता। चोरी की बीमारी खत्म हो जाती है। इस तरह, लोगों को कोई अपनी मिलकियत चोरी होने का कोई अफ़सोस नहीं होता, और कोई हाथ काट दिए जाने की तकलीफ़ से नहीं गुज़रता।

**4.** "इस्लाम आदमी से उसकी 'अपनी ताकत' ले लेता है, किस्मत से सब कुछ मंसूब कर देता है और आदमियों को आलसी, लापरवाह और नाकारा बना देता है," वो कहते हैं।

ये इस्लाम भी पूरे तौर पर ग़लत है। इसके बरअक्स, इस्लाम लोगों को लगातार काम करने, अपने दिमाग़ों को अच्छे से इस्तेमाल करने, हर नई चीज़ को सीखने, कामयाबी के लिए हर किस्म के कानून का सहारा लें, और कभी भी न थकने या न ऊबने का हुकूम देता है। अल्लाह तआला अपने बंदों से चाहता है के वो अपनी अच्छी काबिलियत के मुताबिक फैसला करें और अपने अमाल को अदा करें।

"किस्मत" लफ़्ज़ का मतलब पूरे तौर पर मुख्तलिफ है। सिर्फ उस हालत में के एक मुसलमान अपने दिमाग़ को इस्तेमाल करने के बाद, सारे ज़रियों का सहारा लेकर और

अपनी पूरी कुव्वत के साथ कुछ काम को करे, उसे उस वक्त अफ़सोस नहीं करना चाहिए बल्कि उसे अपनी किस्मत पर सबर करना चाहिए, ये कुबूल करना चाहिए के नतीजा हो सकता है अल्लाह तआला ने उसकी बेहतरी के लिए रखा हो। दूसरी सूरत में, अपनी किस्मत पर बैठ जाना सख्त गुनाह है अपनी आसानी लेते हुए और बग़ैर काम किए, सीखे या कोशिश किए हुए अपना मुँह खोलना या बातें बनाना। अल्लाह तआला ने नजम बाब की **39**वीं आयत में ऐलान कियाः "आदमी कुछ नहीं पा सकता [आखिरत में], लेकिन वो क्या कोशिश करता है [अल्लाह तआला के नाम से]। इस्लाम में उलूम और साईंस पर मंदरजाज़ेल गुफ़तगू में हम देखेंगे के किस तरह मुसलमान इंतिहाई अज़मत और तदरीस सीखने के काम करते हैं।"

कभी कभी आदमी जो चाहता है बिल्कुल वैसा उसे नहीं मिल पाता कितना न ही उसने मेहनत से काम किया हो और हर ज़रिए का सहारा लिया हो। ये वो वक्त होता है उनके मानने के लिए के उनसे ऊपर भी कोई ताकत है जो उनके काम में अहम किरदार निभा रही है, आदमी की ज़िंदगी और कामयाबी पर असर डालती है, और उनकी रहनुमाई करती है। ये है जिसे हम "किस्मत" बुलाते हैं। किस्मत एक ही वक्त में तसल्ली का एक बड़ा ज़रिया है। एक मुसलमान जो कहता है, "मैंने अपना फर्ज़ पूरा कर दिया, लेकिन ये मेरी किस्मत है, जिसे मैं बदल नहीं सकता," वो अपनी उम्मीद नहीं छोड़ देता चाहे वो कुछ काम में नाकाम ही क्यों न हो जाए, बल्कि अपना काम पूरे दिल के साथ करता है पूरे तौर पर परेशानी से अज़ाद होकर। कुरआन अल करीम के अलइशराह बाब की एक आयत का मतलब हैः "**फिर भी मेहनत आसानी लाएगी। बेशक, मेहनत को आसानी से लाया जाना चाहिए! लिहाज़ जब भी तुम मुकम्मल करलो, तुम फिर भी मेहनत करते हो। अपने रब की तरफ़ अपनी तड़प रखे!**" इसका मतलब है के ये ज़रूरी है के अपनी नाकामी के ऊपर मायूसी होने के बावजूद तुम अपना काम जारी रखो। दूसरी तरफ, एक ग़ैर-मुस्लिम जिसकी दिलचस्पी सिर्फ़ कुछ चीज़ों की मादी पहलुओं में है या बसनी में है जो किसी मज़हब में यकीन नहीं रखता, जब वो नाकामी का मुँह देखता है, तो अपनी उम्मीद, हिम्मत और अज़म सब खो देता है, इतना ज़्यादा के वो किसी काम को नहीं करता। दूसरी जंगे अज़ीम के बाद लोगों ने "किस्मत" पर भरोसा करना शुरू कर दिया। बहुत सारी यूरोपियन और अमेरिकी इशाअतों में ये हवाला दिया गया केः "जो मुसलमान कहते हैं "किस्मत" बेशक वो सही है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता के हम कितना काम करते हैं, वाक्यात को बदलना नामुमकिन है।" एक शख्स जो एक बदकिस्मती में शामिल है, जैसे के गमी या माल के खोने

में वो सिर्फ़ अपने किस्मत पर यकीन रखने में तसल्ली हासिल कर सकता है और अल्लाह तआला (**तवक्कुल**) में अपना यकीन रखने से, और फिर अपना रोज़ाना की ज़िंदगी शुरू कर सकता है। हालांकि, तवक्कुल करने से पहले दिमाग़ में ये बात बिठा लेनी चाहिए के हर मुश्किल के लिए एक तरकीब नज़र में होनी चाहिए अपने दिमाग़ और ज़रियों के हर सहारे का इस्तेमाल करते हुए।

**5.** उन्होने कहाः "सूद को ममनुअ करार देते हुए, इस्लामी मज़हब दुनिया के आज के मआशी निज़ाम के खिलाफ़ खड़ा हो गया।"

ये इल्ज़ाम भी पूरे तौर पर झूठा है। इस्लाम ने कमाना या लेना ममनुअ नहीं किया है बल्कि सूदखोरी और उधार लेने वालो का इस्तेहसाल करना मना किया है। कमाना जो ईमानदारी और सिर्फ़ तिजारती मकसद से की जाए उसकी मनाही नहीं है, बल्कि, इसके बरअकस, इसे खासतौर से इस्लाम के ज़रिए सहारा जाता है और बढ़ावा दिया जाता है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, "**अल्लाह तआला ताजिर को प्यार करता है, ताजिर उसका प्यारा है,**" और आप खुद, भी तिजारत करते थे। इस्लाम के तिजारती कानून में इसकी अहम जगह है एक शख्स के लिए जो अपने आप तिजारत नहीं कर सकता वो अपना पैसा अपने दोस्त के माल में या एक कारोबारी कम्पनी में लगा सकता है और जो उसका दोस्त मुनाफ़ा कमाए उसमें से अपना हिस्सा ले सकता है। एक शख्स जो अपना हिस्सा बैंक से लेता है तिजारती कारोबार के ज़रिए पैसा कमा कर, बग़ैर सूद के वो पूरे तौर पर हलाल (इस्लाम में जायज़) है। एक बैंक, से कमाई गई किमत बग़ैर सूद के और उसके फायदे हमारी (इल्म-उल-हाल) किताब **सआदत-ए-अबदिया** (इंडलैस बलीस) में तफ़सील से लिखी हुई हैं। कुरआन अल करीम के बाब माएदा में हमें सूद के बारे में जानकारी मिलती है, जो इस्लाम में मना है वो (तोरह) तवरात में भी हराम (नाजाइज़ ममनुअ) करार दिया गया है। मिसाल के तौर पर, Deuteronomy के **23**वें बाब के **19**वीं आयत के हवाले सेः "तू अपने भाई को सूद के ऊपर कर्ज़ा न दे; पैसे पर सूद, खूराक पर सूद, सूद पर कोई भी चीज़ जो सूद पर कर्ज़ दी जाएः एक अजनबी के लिए आप सूद पर उधार दे सकते हैं।"

**6.** एक वक्त में वहाँ ऐसे भी लोग थे जिन्होने इल्ज़ाम लगाया था की इस्लामी मज़हब "इल्म और साईंस का दुश्मन है।"

ये इस्लाम के लिए कैसे मुमकिन है के इल्म के खिलाफ़ खड़ा हो जाए। इस्लाम अपने आप में एक इल्म है। कुरआन अल-करीम के बहुत सारे बाब मज़हबी आदमियों की तारीफ़ और इल्म हासिल करने की इजाज़त देते हैं। मिसाल के तौर पर, ज़ूमर बाब की नवीं आयत का मतलब हैः **"क्या वो जानते हैं उन्हें उनके मुकाबिल समझा जाता है जो नहीं जानते? सही मायने में, समझने वाले आदमी ज़्यादा ध्यान देंगे।"**

हमारे पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की इल्म के लिए तारीफ़ और बढ़ावे के बारे में बयानात इतने ज़्यादा और इतने मशहूर हैं के ग़ैर मुस्लिम भी उनके बारे में जानते हैं। मिसाल के तौर पर, इल्म की अच्छाईयों के बारे में बताते हुए **इहया अल उलूम** और **मवदूआत अल-उलूम** किताबों में ये हदीस अस शरीफ़ से हवाला दिया गया हैः **"जाओ और इल्म हासिल करो चाहे वो चीन में ही क्यों न हो,"** जिसका मतलब हैः जाओ और सीखो चाहे इल्म दूर दराज़ इलाके में ही क्यों न हों और चाहे वो ग़ैर मुस्लिम के पास ही क्यों न हो; एक दूसरी हदीस अस-शरीफ़ से वाज़ेह हैः **"पालने से लेकर कबर तक काम करते रहो और सीखते रहो!"** यानी, एक अस्सी साल का बूढ़ा जिसका एक पैर कबर में हो उसको भी काम करना चाहिए। उनकी तालीम एक इबादत का काम है। एक दूसरी हदीस अस शरीफ़ से वाज़ेह हैः **"आखिरत के लिए इस तरह काम करो के जैसे तुम कल मरने वाले हो, और इस दुनिया के लिए ऐसे काम करो जैसे तुम कभी नहीं मरने वाले।"** और एक और हदीस अस शरीफ़ः **"थोड़ी इबादत जो समय के साथ की गई हो वो उस ज़्यादा इबादत से बेहतर है जो लाइल्मी के साथ की गई।"** और एक दूसरी हदीस अस शरीफ़ से रिवायत हैः **"शैतान हज़ारों नपढ़ इबादत गुज़ारों से एक आलिम से ज़्यादा डरता है।"** इस्लाम में एक औरत अपने शौहर की इज़ाज़त के बग़ैर एक नफ़्ली हज (ज़ियारत) नहीं कर सकती। ना ही वो सफ़र या दूसरों से मिलने जा सकती। लेकिन अगर उसका शौहर उसे इस्लाम नहीं सिखाता या उसे इस्लाम पढ़ने की इजाज़त नहीं देता तो वो उसकी इजाज़त के बग़ैर जाकर पढ़ सकती है। जैसा के देखा गया के, जबकि उसके लिए बग़ैर उसकी इजाज़त के हज पर जाना एक गुनाह है हलांकि ये इबादत का बहुत आला काम है अल्लाह तआला के ज़रिए चाहा जाना, ये उसके लिए गुनाह नहीं है उसकी इजाज़त के बग़ैर बाहर जाकर तालीम हासिल करना।

यहाँ पर एक और हदीस अस शरीफ़ है जिसमे हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमें सीखने का हुकूम दिया हैः **"इस्लाम वहाँ है जहाँ इल्म मौजूद है; कुफ्र वहाँ है**

**जहाँ इल्म ग़ैर हाज़िर है।**" पहले, हर मुसलमान को अपने मज़हब को सीखना चाहिए और फिर दुनियावी साईंस/इल्म को।

ना ही ये ज़ोर दिया जा सकता है के इस्लाम इल्म का दुश्मन है। साईंस का मतलब है, "तखलीक और वाक्यात पर ग़ौर करना, उनको समझने के लिए पढ़ना, और इसी तरह बनाने के लिए तर्जुबे करना।" ये तीनों कुरआन अल करीम के ज़रिए हुकूम दिए गए हैं। ये मुसलमानों के लिए फर्ज़-ए-किफ़ाया ([1] कुरआन अल करीम कोई चीज़ साफ़ तौर पर हुकूम की गई उसे फर्ज़, जमा, फराईज़ कहते हैं। जब हुकूम हर मुसलमान फर्ज़ के ज़रिए किया जाएगा तो उसे फर्ज़ ऐन कहेंगे। जब मुसलमानों की कौम में से एक शख्स के ज़रिए ये किया जाएगा तो इसे फर्ज़ किफ़ाया कहेंगे। दूसरे लफ़ज़ों में, जब एक मुसलमान एक असेमबली में, एक कौम में या मुसलमानों के एक शहर में फर्ज़ किफ़ाया को अनजाम देगा तो, बाकी सारे उस ख़ास फर्ज़ को करने से आज़ाद होंगे।) है के साईंस, आर्ट को पढ़े, और जदीद औज़ार बनाने की कोशिश करे। हमारे मज़हब में हमे हमारे दुश्मनों से ज़्यादा मेहनत करने का हुकूम दिया है। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सबसे ज़्यादा साईंस के वशद इज़हार में से एक का हवाला **सआदत-ए-अबदिया** के पहले गुच्छे के **11**वें बाब में हवाला दिया गया है। लिहाज़ा इस्लाम एक मुतहर्रिक मज़हब है जो साईंस, तर्जुबात, और मुसबत पैश रफ़्त का हुकूम देता है।

यूरोप के लोगों ने बहुत सारी अपनी साईंसी समझ की बुनियादे मुस्लिम दुनिया से ली हुई हैं। मिसाल के तौर पर, यूरोप वाले सोचते थे के ज़मीन एक ट्रे की तरह फ्लैट थी और चारों तरफ़ इसके दीवार है, जबकि मुसलमानों ने इस हकीकत को पहचाना के ये घूमती दुनिया थी। ये **शरह-उल मवाकिफ़** और **मारिफ़तनामा** किताब में तफ़सीली लिखा हुआ है। उन्होने सिंजर के सहरा पर Mericlian की लंबाई मापी, जो मोसूल के पास है, और उनकी माप आज की नपाई के साथ मिलती है। नूर-उद-दीन बतरूजी, **581 (1185)** में वफ़ात कर गए थे, वो अंडलुसिया की इस्लामी यूनीवरसीटी में खगोल के प्रोफेसर थे। उनकी किताब **अल हयात** आज के सितारों की मालूमात को ज़ाहिर करती है। जब गैलीलियो कोपरनिकस और न्यूटन ने मुसलमानों की किताबों का मुतालआ किया और कहा के ज़मीन घूम रही थी तो उनके बयान को ग़ैर मज़हबी माना गया। गैलीलियो, जैसा के हम ऊपर बता चुके हैं, एक मुकदमे के तेहत ईसाई पादरियों के ज़रिए उसे कैद की सज़ा दे दी गई। कुदरती

साईंस भी इस्लामी मदरसों के वक्त में पढ़ाई जाती थी। अंडलुसिया के मदरसे इस मामले में पूरी दुनिया की रहनुमाई करते थे।

सबसे पहले जिसने खोज की के जरासिम से बीमारियाँ फैलती हैं वो थे इबनी सिना, ([2] इबनी सिना (अविसिना) हुसैन, हमादान में **428** (**1037** ए.डी) में रहलत फरमा गए।) जो मुस्लिम माहौल में पढ़े थे। **900** साल पहले जब उन्होने कहा था, "ये एक बहुत छोटा कीड़ा है जो सारी बीमारी बनाता है। ये बड़े अफसोस की बात है के इन्हें देखने के लिए हमारे पास कोई औज़ार नहीं है।"

बड़े इस्लामी डॉक्टरों में से एक, अबू बक्र रज़ी (रहीमा हुल्लाहु तआला) (**854-952**), सबसे पहले थे जिन्होने लाल बूख़ार, खसरा और चेचक के बीच में फर्क बताया, उस वक्त में इनको एक ही बीमारी समझा जाता था। ऐसे इस्लामी आलिमों की किताबों को निस्फ़ सदी में दुनिया की तमाम यूनिवर्सिटियों में पढ़ाया जाता था। दिमाग़ी तौर पर माज़ूरों को मग़रिबी दुनिया में ज़िन्दा जला दिया जाता था क्योंकि ऐसा माना जाता था के "उन पर शैतान का कबज़ा" है जबकि मशरिकी दुनिया में ऐसे लोगों का मेडिकल इलाज करने के लिए अस्पताल बनवाए गए।

आज, हर कोई एक मकसदी दिमाग़ के साथ ऊपर लिखी गई हकाईक को मानता है, यानी, ये हकीकत के मसब्बत इल्म और साईंस को पहले मुसलमानों के ज़रिए कायम किया गया। ये, भी कई मग़रिबी आलिमों के ज़रिए तसदीक किया गया। हालांकि, कुछ इस्लाम के दुश्मन, जो मुस्लिम मुल्कों में घुसपैठ कर गए हैं, मुसलमान होने का बहाना बना कर किसी तरह से मुसलमान दर्शको को खींचा और मुसलमानों पर अपने मतभेद को थोपना शुरू किया। वो अनपढ़ लोगों को अपनी नई साईंसी खोजो के बारे में और रिआयत के बारे में बताते हैं, और जो नए औज़ार उन्होने बनाए उनके बारे में। फिर वो लाइल्मों को धोखा देते हैं ये कहकर के, "ये ग़ैर मुसलमानों की खोजें हैं, जो इनका इस्तेमाल करेगा वो ग़ैर मुस्लिम बन जाएगा।" वो मुसलमानों को अल्लाह तआला का हुकूम भुला देने का सबब बनते हैंः "हर चीज़ सीखो।" इन लोगों की कोशिशे मश्रिक का ज़वाल होने के लिए अहम असबाब में से एक है। मग़रीबी दुनिया अपनी नई तकनीक और औज़ारों के साथ बरतर हो गई। एक तरफ़ ये धोकेबाज़ इस्लाम मज़हब के दुश्मन इस तरह से मुसलमानों को धोके दे रहे थे, और, दूसरी तरफ़, वो कह रहे थे के, "मुसलमान साईंस को पसंद नहीं करते; वो तामीराती इल्म नहीं चाहते; इस्लाम कट्टर है और इसका मतलब है पीछे जाना।" वो मुस्लिम

नौजवानों को इस्लामी विरासत से हटाना चाहते थे और इस्लाम का मुस्तकबिल तवाह करना चाहते थे।

वो जो सवाल का जवाव देने की कोशिश करते हैं, "छपाई मशीन को यूरोप से उसमानिया सलतनत के इक़दार में मौजूद मुल्कों तक पहुँचने में **200** साल क्यों लगे?" ये कहकर, "क्योंकि इस्लाम मज़हव ने प्रिटिंग किताबों को प्रिटिंग मशीनों के साथ मना कर दिया," ये बिल्कुल गलत है। लोग जिन्हें "मुसतनसिह" (Tramcribess) कहा जाता है, वो किताबें लिखकर ही गुज़ारा करते थे, इसकी देर करने का सबब बने, उनको डर था के किताबें छापने के लिए प्रिंटिग मशीनों का इस्तेमाल उन्हें बेकार कर देगा। वो प्रोपेगेंडा के मुखतलिफ तकनीकें इस्तेमाल करते थे तुर्की में प्रैस को न आने के लिए। मिसाल के तौर पर, उन्होने वाव-ए-अली तक एक मोर्चा निकाला कफ़न के साथ जिसमें उनके कलम के डिब्वे थे। इसके अलावा, उन्होने नसल परस्ती का इस्तेहाल किया-जिसे हम वाद में चर्चा करेंगे-, उन वेवकूफों को यहाँ और वहाँ फिर से शुरू करने के लिए के प्रैस "इस्लाम के खिलाफ़ तोहिने रिसालत करेगी।" इस मसले को हल करने के लिए उसमानिया सुल्तान अहमद III ([1] अहमद खान ने **1149** (**1736** ए.डी) में वफात पाई।) ने, जिसे ये पता चल गया था की ये दंगाई लोग इस्लाम को अपने खुद के मफ़ाद के लिए ज़रिया वना रहे हैं, उसने अपने वड़े वज़ीर दमत इव्राहिम पाशा से मदद ली, और एक फतवा ([1] मुसलमानों के सवालों के जवाव जिसे एक इस्लामी आलिम के ज़रिए दिया जाता है। ज़राए, हवाले सव फतवे में ज़म किए जाते हैं।) प्रैस के वारे में इस्लामी मज़हव के सबसे वड़े वकार वाले शैख उल इस्लाम, अवदुल्लाह एफंदी के ज़रिए दिया गया फतवा **वहजत-उल-फतावा** के **262**वें सफ़हे में मंदरजाज़ेल लिखा हुआ हैः

"ये इस फतवे के ज़रिए फैसला लिया गया के प्रैस को कायम करना अच्छा भी है और उसकी इजाज़त है, जिन से इल्म की साईस की और अखलाकियात की किताबें थोड़े अरसे में बहुत ज़्यादा तादाद में छापी जा सकेंगी; मुफीद किताबें सस्ती हासिल की जा सकेंगी और दूर दराज़ तक फैलाई जा सकेंगी।" ये फतवा इस इल्ज़ाम को गलत सावित करने के लिए काफ़ी था के प्रैस एक कुफ्र है। ऊपर इस्तेमाल किया गया लफ़्ज़ "Bigot" का मतलव है एक आदमी मज़हवी इल्म के नाम पर अपने गंदे, जाहिल और खराव नज़रयात और सियासी सुवूतों को थोंपने की कोशिश करे। उन्होने इस्लामी इल्म को हर किसी को गलत बताया ताकि वो उनके खराव नज़रयात और ग़ैर मज़हवी सुवूतों को कुवूल करलें। उनमें से

कुछ अपने खिताब जो उन्होने लिए हुए थे उनमें से ताकत लेते थे, कुछ उन कानून में से जिनके अंदर उन्होने पनाह ली हुई थी, लेकिन ज़्यादातर मुसलमानों के अकाईद का इस्तेहसाल करके करते थे।अपने साथ ज़्यादा लोगों को घसीटकर, वो मुज़ोहरे बग़ावत, सिविल वार और मुल्क को कई रियास्तों में टुटवाने का सबब बनते थे।इन में से सबसे ज़्यादा नुकसानदह और सबसे ज़्यादा खतरनाक मज़ाहिब वाला है, साईस की फूट (नकली साईसदाँ) और सियासी वाला जो कौम की यकीन को खराब करने की कोशिश करते हैं और अखलाकी खुसूसियात को मज़हबी तरमीहात के ज़रिए, ग़ैर मुल्की नज़रयात, और ग़ैर-सुन्नी मुसलमान, को माल, पैसा या औहदा हासिल करने के लिए।इसके नतीजे में वो कौम के ईमान को और अखलाकियात को खराब करते हैं ये कपटी लोग (नसल परस्त) तीन ग्रुप में दरजा बंदी की गई हैः

1. **जाहिल कट्टर** वो हैं जो अपने आपको अकलमंद और साईसी समसझते है, चाहे वो मज़हबी और दुनियावी इल्म दोनो में पीछे हों।वो खिलाफत का सबब बनते हैं और आसानी के साथ इस्लाम के दुश्मनों के ज़रिए धोका दिए जाते हैं यहाँ तक के गलत रास्ते की तरफ़ घसीट जाते हैं।उसमानिया तारीख में, पेट्रोना हलील, कबाबकी मुस्तफ़ा और किज़िबज़ सेलाली, जो कहता था वो महदी है, उनमें से कुछ हैं जिन्होने बहुत ज़्यादा खूनखराबा किया।

2. दूसरा ग्रुप "**मज़हबी कट्टर**" कहलाते हैं।ये मज़हब के आदमी हैं जो बदकार और बद किस्मत हैं।अगरचे उन्हें थोड़ी जानकारी है, वो वही करते हैं और कहते हैं जो वो नहीं जानते या उसके मुखालिफ़ करते हैं जो वो जानते हैं के सही हैं।यही वजह है के वो अपने कपटी और सनकी मकासिद को हासिल करना चाहते हैं।वो इस्लामी मज़हब से बाहर हैं।वो बुराई करने और मज़हब को तबाह करने में एक मिसाल और लाइल्मों के लिए उनके लीडर बन जाते हैं।अब्दुल्लाह इबन सबा, अबू मुस्लिम हौसानीः और हसन सबह, समबेन शहर के काज़ी (इस्लामी जज) का बेटा शैख बदरूददीनः और मज़हब के आदमी जिन्होने उसमानिया सुल्तानों को शहीद करने का फतवा दिया वो सब कट्टर मज़हबी थे मज़ीद ये के मुहम्मद, नजद के अबद अल वहाब का बेटा, जो खिलाफ़त की वजह बना, जिसे, वहाबी ज़ाहिर हुआ; जमाल अद-दीन अफग़ानी ([1] जमाल अद-दीन, 1314 [1897 ए.डी] में वफात पा गए।) जो मिस्त्र में मेसोनिक लॉज का सरबराह था; मुहम्मद अब्दोह, जो काहिरा के एक मुफती थे; उसके मानने वाले रास्एिद रिदा; हसन बनना और मिस्त्र के सयैद कुतुब;

डॉक्टर अब्दुल्लाह जावदत, इस्तांबुल के मुसलमानों के खिलाफ़ एक दुश्मन, अहमद कदियानी एक धोकेबाज़ जो अंग्रेज़ों के ज़रिए इंडिया के मुसलमानों को नुकसान पहुँचाने के लिए एक खिलौना बना; पाकिस्तान के अबू-ए-अला अल मोदूदी, और नया लेकिन ठीक इसी तरह ग़ैर मज़हबी इसलाकार और मश्हूर अंग्रेज़ जासूस लॉरेंस इस गुप में था जिसने इस्लाम को भयानक तरीके से ज़ख्मी किया। इस गुप ने इस्लाम को अंदरूनी तौर पर ज़ख्मी किया कुछ मखसूस ख्यालात और अकाईद का इस्तेहसाल करके।

आला इस्लामी आलिम इमाम अहमद रब्बानी (रहमतुल्लाहि अलैह) ने अपनी किताब के **47**वें खत में मंदरजाज़ेल तरीके से मज़हब के इन बुरे आदमियों के बारे में कड़वाहट से शिकायत करते हैंः "इन दुनियावी दिमाग़ के मज़हबी आदमियों की बातों को सुनना या [इनकी किताबों को पढ़ना], ये उतना ही नुकसानदायक है जैसे के ज़हर को खाना। उनकी खराबी छूत की तरह है। वो समाज को ऐसे कमज़ोर बनाते हैं जो टूकड़ों में टूट जाता है। ये वो दुनियावी दिमाग़ के मज़हबी लोग थे जो माज़ी की इस्लामी रियास्तों के ऊपर तबाहकुन असरात लाए। उन्होने रियास्त के आदमियों को गुमराह किया। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एलान कियाः '**मुसलमान 73 गुपों में बँट जाएँगे। इनमें से 72 दोज़ख में जाएँगे। सिर्फ़ एक गुप दोज़ख से बच जाएगा।**' इन भटके हुए **72** गुपों के लीडर मज़हब के बुरे आदमी हैं। ये शायद ही कभी देखा गया हो के एक औसत जाहिल शहरी का नुकसान कोई नतीजा रखता हो। लेकिन दरवेश लॉज के भटके हुए जाहिल शैख़ बहुत ज़्यादा नुकसानदायक देखे गए हैं। उनका नुकासान छूत की तरह भी है।" अपने **33**वें खत में, वो लिखते हैंः "हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमायाः "**कयामत के दिन, सबसे ज़्यादा अज़ाब जिसे दिया जाएगा वो आलिम होगा जिसने अपने इल्म का इस्तेमाल नहीं किया होगा।**" क्या ये इल्म जिसे अल्लाह तआला के ज़रिए सराहा जाता है और जिसे सबसे ज़्यादा अज़मत बख्शी गई वो सबसे ज़्यादा उनके लिए नुकसानदायक होगा जिन्होने इसका दुनियावी माल, औहदा और सियासी कामयाबी हासिल करने के लिए गलत इस्तेमाल किया हो? दुनियावी चीज़ों के लिए लगाव रखना वो ऐसी चीज़ है जो अल्लाह तआला को बिल्कुल पसंद नहीं। इसलिए, ये बड़े दुख का वाक्या है के इस इल्म को जिसकी तारीफ़ अल्लाह तआला ने की उसे उसके नापसंदीदा तरीके से इस्तेमाल करना। इसका मतलब है जो चीज़ वो पसंद नहीं करता उसे वकार देना, और जो वो पसंद करता है उसकी कदर घटाना। या, ज़्यादा वाज़ेह तौर पर, अल्लाह तआला के खिलाफ़ खड़े हो जाना। मज़हबी किताबों को पढ़ाना, सिखाना, लिखना और छपवाना इस शर्त के साथ रहमत होगी के वो सिर्फ अल्लाह

तआला की रज़ा के लिए की जाएँगी, और न की औहदा, माल, या नाम हासिल करने के लिए। इस पाक नियत को रखने की एक निशानी है के वो दुनियावी फवाईद से लगाव नहीं रखता होगा। जो ज़मीनी रहमतों के आदी होते हैं और जो अपने मज़हबी इल्म को इन सबको हासिल करने में लगाते हैं वो मज़हब के बुरे आदमी होते हैं। वो आलमियत के सबसे ज़्यादा बुरे रूकन होते हैं। वो मज़हब के चोर होते हैं। वो मुसलमानों के यक़ीन और ईमान को खराब और चुराते हैं। वो अपने आपको शैख या आलिम बताते हैं। वो ये यकीन रखते हैं के वो आलमियत में सबसे आला हैं। अल्लाह तआला क़ुरआन अल करीम की सूरत अल मुजादाला की 18वीं और 19वीं आयात में फरमाता हैः **"और वो सोचते हैं के वो मुसलमान हैं। शैतान ने उनको घेर लिया है और जिसकी वजह से उन्हें अल्लाह तआला की याद भुला दी है। वो शैतान की पार्टी हैं। देखो, क्या ये शैतान की जमाअत/पार्टी नहीं जो नुकसानदह है?"** एक इस्लामी फ़कीर ने शैतान को बैठे हुए और कुछ न करते हुए देखा। उन्होने पूछा के वो इंसानों को धोके देने में क्यों नहीं लगा हुआ। शैतान ने जवाब दिया, "आज के बदकिस्मत आलिम, मज़कूदा मज़हबी मर्द, इतने ज़्यादा इंसानों को गुमराह करने में मददगार हैं के मुझे नहीं लगता के इसके लिए मुझे अपने आपको मसरूफ़ रखने की ज़रूरत हो।" बेशक, इस्लाम के अहकामात का मुशाहदा करने और मज़हब से अदम इतमिनान के अज़्म में आज की आम लापरवाही इस तरह के लोगों के बदनाम अलफ़ाज़ और तहरीरों के नतीजे में हैं। [यहाँ पर मज़हबी आदमियों के तीन गुप हैंः वो जो अकलमंद हैं; वो जो इल्म वाले हैं; और वो जो पाक हैं। एक मज़हबी आलिम वो है जो इन तीनों खुसूसियात को रखता हो। उन लोगों के अल्फ़ाज़ जो इन तीनों में से किसी एक में भी कम हो भरोसे लायक नहीं हैं। इल्म का मालिक बनने के लिए ज़रूरी है के साईंस में जिसे अकल और नकल कहते हैं उसका माहिर हो।]।

सच्चे इस्लामी आलिम वो हें जो अपना मज़हबी इल्म दुनियावी ईनाम हासिल करने में लगाएँ। वो अल्लाह तआला के आदमी हैं। वो नबी (अलैहि मुस्सलाम) के वारिस और नुमाएदें हैं। वो आलमियत सबसे अच्छे और प्यारे हैं। कयामत वाले दिन, उनकी लिखाई की सियाही उन शहीदों के खून से ज़्यादा भारी होगी जो इस्लाम के लिए लड़ते हुए मरे, यानी, अल्लाह तआला के सबब के लिए। हदीस अस शरीफ़ः **'आलिमों की नींद इबादत है।'** उन इस्लामी आलिमों की तारीफ़ है। ये वो आदमी हैं जिन्हें असल में मालूम है के आखिरत अब्दी है, और ये के दुनिया आरज़ी है, वो आखिरत में अब्दी रहमतों की खुबसूरती को और दुनिया की बदसूरती और बुराई को समझते हैं। इसी वजह से वो अबद को मज़बूती से

पकड़ते हैं, उस खुबसूरती को जो बग़ैर तब्दीली के है, ना की आरज़ी, तबदील की जाने वाली इस्तेमाल करली जाने वाली चीज़ों को। इस बात को समझने के काबिल होना के आखिरत कितनी अहम है ये इस बात पर मुनहसिर है के ये देखने के काबिल होना के अल्लाह तआला कितना आला है। जिसने आखिरत की अहमियत को समझ लिया उसे दुनिया कभी भी कीमती नहीं लगेगी। इस बजह से आखिरत और दुनिया इस लिहाज़ से मुखालिफ़ हैं। अगर तुम एक को खुश करोगे, तो दूसरी नाराज़ हो जाएगी। वो जो दुनिया को कीमती जानेगा वो आखिरत को नाराज़ करेगा। दुनिया को नापसंद करने का मतलब है के आखिरत को कीमती करना। दोनो की एक साथ कदर करना या तोहीन करना एक ही वक्त में ये नामुमकिन है। मुखालिफ़ एक जगह पर मौजूद नहीं हो सकते [मिसाल के तौर पर पानी और आग]।

कुछ आला सूफी, अपने आपको और दुनिया को पूरी तरह भुलाने के बाद, ऐसा माना गया के कुछ वज़ूहात की बिना पर वो दुनिया के आदमी माने गए। वो दुनिया के प्यार और इच्छा में लगते हैं। दरहकीकत, उनके दिलों में कोई सेकूलर प्यार या इच्छा नहीं होती। ये कुरआन अल करीम की सूरत अन-नूर की 37वीं आयत से वाज़ेह होता हैः "**वो आदमी है जिन्हें ना ही कारोबार ना ही तिजारत अल्लाह तआला को याद करने से रोक सकती है**।" वो लगता है के दुनिया से प्यार करते हैं लेकिन असल में ऐसा है नहीं! हाजा बहाइददीन-ए-नकशिबंद बुखारी ([1] बहाइददीन ए बुखारी, 791 (1389 ए.डी) में रहलत फरमा गए।) (कुददिस सिरोह) ने कहा, "एक नौजवान ताजिर मक्का के मुबारक शहर मिना का बाज़ार में खरीदारी कर रहा था। अगरचे उसने जो खरीदारी को सौदा किया वो पचास हज़ार सोने के सिक्के के लगभग था लेकिन फिर भी उसका दिल एक लम्हे के लिए भी अल्लाह तआला से बेखबर नहीं हुआ।"

**3. साईन्स के कट्टर** तीसरा ग्रुप बदमाश लोगों का है जो एक यूनीवर्सिटी से डिपलोमा हासिल करते हैं और साईसदाँ के लिए पास करते हैं। इन कपट्टियों की तहरीरें साईस और अदनियात की आलिमी मिसालों की तरह मनंगढ़त लिखाई की तरह फैलाई जाती हैं जवानों को मज़हब और इस्लाम से दूर करने के लिए और उनके अकाईद को तबाह करने के लिए, वो कहते हैं के सच्ची मज़हबी किताबें गलत हैं क्योंकि वो साईसी जानकारी नहीं रखतीं और, मज़ीद ये के, वो कहते हैं के मज़हबी किताबों पर यकीन रखना और उसके

मतन के मुताबिक जीना वो रददेअमल है। साईंस के कट्टर साईंसी इल्म को तबदील करके इस्लाम पर हमला करते हैं, जिस तरह मज़हब के कट्टर मज़हबी इल्म में तबदीली करते हैं।

लोग जो यूनिवर्सिटी की तालीम और ठोस इस्लामी इल्म से लैस होते हैं वो फौरन इन कट्टर लफ़्ज़ों को समझ लेते हैं ये के इल्म या साईंस के मुनासबत से नहीं और ये के वो साईंस और मज़हब में जाहिल हैं। बहरहाल, जवान नसल और तालिबे इल्म उनके उन्वानात और औहदी के झूठों और धोकों में फँस जाते हैं, और इस वजह से वो इसके नतीजे में होने वाली आफ़तों के बहाओ में चले जाते हैं। उनके लफ़्ज़ और आमाल इस्लामी समाज के लिए तबाहकुन हैं। साईंस के कट्टरपन पर Endless Bliss (**सआदत-ए-अबदिया**) किताब में तफ़सीली वज़ाहत लिखी गई है।

ऊपर बताए गए तीन कट्टर गुपों, ने इस्लामी मुल्कों और इस्लाम के पाक मज़हब पर बड़ा नुकसान नाफ़िज़ किया है। ऐसे धोकेबाज़ और ज़िंदीक अभी भी मौजूद है, और इस्लाम को अंदरूनी तबाह करने की कोशिश में लगे हैं। सब तारीफ़ अल्लाह तआला के लिए; वो अब इतने ज़्यादा ताकतवर नहीं रहें जितने के वो रहते थे। आज, जैसे के अल्लाह तआला ने हुकूम दिया है, मुस्लिम दुनिया साईंस की सारी ठोस चीज़ों को सीखने में लगे हैं, और वो जानते हैं के सिर्फ़ ऐसा करके वो मग़रीब से आगे बढ़ सकते हैं। ये एक शर्म की बात है के मुसलमान, जो बस्ती सदी में सबसे आगे थे, हाल ही में इस सिलसिले में फँसे हुए हैं, जो उनके इस्लाम के खिलाफ़ धोखा देने वालों की चालबाज़ी और इस्लाम के अहकामात को नज़रअंदाज़ करने का नतीजा हैं।

ये सब इस हकीकत को जमा करते हैं के इस्लाम एक निहायत मुकम्मल मज़हब है जो **21**वीं सदी के चहार तरफ़ा शर्तो को पूरा करता है जिसमें अब हम दाखिल होने वाले हैं। ये हमें इल्म और साईंस की मशकत कराता है, आलस से मना करता है, ये इंसाफ है, और समाजी ऑडर का बानी और मुहाफ़िज़ है जो **19**वीं सदी में कायम हुआ था। ये किताब इस मज़मून के बारे में तफ़सीली जानकारी देने के लिए बहुत छोटी है। हमारे मुसलमान भाई और वो, दूसरे मज़ाहिब के तकलीदकार, जो इस्लाम के बारे में जानना चाहते हैं वो इस्लामी मज़हब का और समाजी ऑडर के बीच का राब्ता (**सआदत-ए-अबदिया**) से सीख सकते हैं। हम उन्हें इस किताब को पढ़ने की सलाह देते हैं।

# एक सच्चा मुसलमान होने की शर्तें

अरबी में "इस्लाम" लफ़्ज़ का मतलब है "खुद अकीदत, सबमिशन, निजाअत," साथ के साथ "अमन"। इमाम आज़म अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि अलैह) ने इस्लाम को ऐसे वाज़ेह किया "अल्लाह तआला के अहकामात की बिनती और फरमाबरदारी करना।"

अगर ऊपर बताए गए हकाईक को ग़ौर से पढ़ा जाए, तो ये खुदबखुद साफ़ हो जाएगा के एक मुसलमान को कैसा होना चाहिए। हम एक बार दोबारा नीचे इन्हें दोहराएँगे।

सबसे पहले, एक मुसलमान जिस्मानी और रूहानी साफ़ होता है। लेकिन हम पहले जिस्मानी सफाई से शुरू करते हैं।

कुरआन अल करीम में अल्लाह तआला ने मुख्तलिफ़ जगहों पर बयान कियाः "**मैं उन्हें पसन्द करता हूँ जो साफ़ हैं।**" मुसलमान मस्जिदों या घरों में जूते पहनकर नहीं दाखिल होते। उनके कालीन, उनकी फर्श बेदाग़ और साफ रहता है। हर मुसलमान के घर में गुसलखाना होता है। उनके जिस्म, अंडरवियर और खाने हमेशा साफ़ होते हैं। इस तरीके से वो माएकरोबस और बीमारियाँ नहीं फैलाते।

वर्सेलिस का महल, जिसे फ्रेंच बड़े घमंड से दुनिया को ऐलान करते हैं, उसमें बॉथरूम नहीं है।

बस्ती सदी में जब एक फ्रांसीसी पेरिस में रहता था, सुबह उठकर, वो पेशाब करने के बरतन में पेशाब करता था। क्योंकि उसके घर में कोई टॉयलेट नहीं होता था, वो उस बरतन को और एक बोतल जो पीने के पानी के लिए इस्तेमाल की जाती थी उसे Scine दरिया पर ले जाता था। पहले वो दरिया से पीने का पानी लेता था, और फिर पेशाब और पाखाने को दरिया में डाल देता था। ये सतरें सचमुच एक फ्रेंच किताब जिसका नाम "पीने का पानी" (L' Eau potable) था उसमें से तर्जुमा की गई हैं एक जर्मन पादरी जो कानूनसाज़ सुल्तान सुलैमान के ज़माने में इस्तांबुल आया था उसने मंदरजाज़ेल बात एक किताब में जो **967 (1560)** के आसपास लिखी गईः

"मुझे यहाँ की सफ़ाई बहुत पसंद आई। हर कोई यहाँ पर दिन में पाँच बार अपने को धोता है। सारी दुकाने साफ़ हैं। सड़कों पर कोई धूल नहीं है। बेचने वालों के कपड़ों पर कोई धब्बे नहीं हैं। वहाँ पर इमारतें भी हैं जिसमें गरम पानी रहता है जिसे "हम्माम" कहते हैं जहाँ लोग गुस्ल करते हैं। इसके बरअक्स, हमारे लोग गंदे हैं; वो अपने आपको साफ़ करना नहीं जानते।" कई सदियों बाद यूरोपियन ने सीखा के अपने आपको कैसे धोते हैं।

आज के लिए, ग़ैरमुल्कि जो नाम निहाद मुस्लिम मुल्कों में जाते हैं वो अपनी छपी हुई किताबों में लिखते हैंः "जब तुम किसी मशरीकी मुल्क में जाओ, तो सबसे पहले सड़ी हुई मछली और गंदगी की बू तुम्हारे नथनों पर हमला करेगी। सब तरफ़ गंदगी होती है। सड़के थूक और बलग़म से भरी होंगी। यहाँ वहाँ किसी को भी कूड़े का ढेर और जानवरों के पिंजर नज़र आ जाएंगे। तुम्हें मशरिकी मुल्कों में सफर करके बहुत बुरा लगेगा और ये पता चलेगा के मुसलमान जितना दावा करते हैं उतने साफ़ नहीं होते।" हम खाईफ़ हैं के ये सही है। बेशक, उन मुल्कों में जो आज इस्लाम का नाम रखी हुई हैं, ना सिर्फ़ वो ईमान का इल्म भूल गई हैं, बल्कि वो सफ़ाई की तरफ़ ध्यान भी नहीं देती हैं। लेकिन, गलती लोगों के ऊपर आती है जो ये भूल गए हैं के इस्लाम की असल सफ़ाई है। गरीबी गंदगी होने का कोई उज़र नहीं है। एक शख्स का फर्श पर थूकना या जगह को गंदा करना इसका पैसे से कोई लेना देना नहीं। ऐसे गंदे लोग जो अल्लाह तआला के सफ़ाई के बारे में अहकाम को भूल चुके हैं वो मनहूस हैं। अगर हर मुसलमान अपने मज़हब को मुकम्मल जानता है और इसकी पूरी लगन से इबादत करता है, तो ये नापाकी खुदबखुद चली जाएगी। फिर, ये ग़ैर मुल्कि जो मुस्लिम मुल्कों में जाते हैं वो उनकी सफ़ाई को पसंद करेंगे, जैसे के वो मैडिवल मुसलमानों को पसंद करते थे।

एक सच्चा मुसलमान साफ़ होता है अपनी सेहत की अच्छी देखभाल करता है। वो कभी भी नशीली चीज़ों को जो कि एक तरह से ज़हर उनको नहीं पिएगा। वो सूअर नहीं खाता, जोकि अपनी मुखतलिफ़ खतरों और नुकसान की वजह से हराम है। ऐसा खोजा गया है के छूत और मौज़ी बीमारी **ऐडस** के वाइरस, जोकि हमजिंस परस्तो पर असर डालता है वो सूअर में मौजूद है।

हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अदबियात की साईंस की तरीके से तारीफ़ की। आपके बयान की एक मिसाल हैः **"वहाँ पर दो किस्म के इल्म हैंः जिस्म का इल्म और मज़हब का इल्म।"** यानी, ये कहने से के ये दोनो सबसे अहम साईंस हैं, मज़हबी

इल्म जो रूह की हिफ़ाज़त करता है, और सेहत का इल्म, जो जिस्म की हिफ़ाज़त करता है, आप चाहते थे के हम सब अपने जिस्म और रूह को भरपूर रखें। सारे अच्छे काम सिर्फ़ एक सेहतमंद जिस्म के साथ अमल में लाए जा सकते हैं।

आज, सारी यूनिवर्सिटियाँ ये पढ़ा रही हैं के अदवियात का अभ्यास दो हिस्सों पर मुश्तमिल हैः पहला है हिफ़ज़ाने सेहत, जिस्म को सेहतमंद रखना, और दूसरा है इलाज, बीमारियों का इलाज दो में से पहले वाले को तरजीह दी गई है। ये दवाई का बुनियादी मरहला है के लोगों को बीमारियों के खिलाफ़ बचाएँ और उन्हें सेहतमंद रखें। चाहे अगर बीमार शख़्स का इलाज हो जाए, वो फिर भी गलत और ऐबदार रह सकता है। और अब नुकते परः हिफ़ज़ाने सेहत, अदवियात का पहला मरहला है के इस्लाम के ज़रिए ध्यान दिया जाए। किताब **मवाहिब उल लदुनिया** दूसरे हिस्से में ये साबित किया गया है के कुरआन अल करीम ने कुछ आयात में अदवियात की दोनो पहलुओं को बढ़ावा दिया है।

हमारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बीजान्टिन बादशाह Heraclius के साथ करीबी रिश्ता कायम किया। वो आपस में राब्ता रखते थे और एक दूसरे को सफ़ीर भेजते थे। एक मौके पर, Heraclius ने आपको बहुत सारे तौहफ़े भेजे। उन तौहफ़ों में एक मेडिकल डॉक्टर था। जब डॉक्टर आ गया वो हमारे नबी के पास आया और कहा "सर! महामहिम ने मुझे आपका नौकर बनाकर भेजा है। मैं जो बीमार हैं उनका फ़्री इलाज करूँगा।" हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसकी खिदमात मंज़ूर कर लीं। जैसे हुकूम हुआ, डॉक्टर को एक घर दिया गया। हर रोज़ वो उसके लिए ज़ाएकेदार खाना और मश्रूब लाते थे। दिनो और महीने बीत गए। कोई मुसलमान उससे मिलने नहीं आया। नतीजे के तौर पर, डॉक्टर को शर्म महसूस हुई, छोड़ कर जाने की इजाज़त तलब की, ये कहकरः "सर! मैं यहाँ आपकी खिदमत करने आया था। अब तक मेरे पास कोई बीमार शख़्स नहीं आया। मैं यहाँ बेकार बैठकर आराम से खाता पीता रहता हूँ। और अब मैं वापस घर जाना चाहता हूँ।" हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जवाब दियाः **"ये तुम्हारे ऊपर है। अगर तुम लंबा रूकना चाहते हो, तो ये मुसलमानों का बुनियादी फ़र्ज़ है के अपने मेहमानों की खिदमत करना और उनका एहेतराम करना। बहरहाल, अगर तुम अब जाना चाहते हो, तो तुम्हारा सफ़र अच्छा हो! लेकिन तुम ये बात ज़रूर जान लो के, चाहे अगर तुम यहाँ सालों भी रूक जाओ तो, कोई मुसलमान तुम्हें देखने नहीं आएगा। ये इस वजह से के मेरे साथी कभी बीमार नहीं पड़ते। इस्लामी मज़हब अच्छी सेहत के रास्ते बताता**

**है। मेरे साथी सफ़ाई की तरफ़ बहुत ज़्यादा ध्यान देते हैं। वो जब तक भूखे न हों कुछ भी नहीं खाते, और वो पेट भरने से पहले खाना छोड़ देते हैं।"**

ऊपर बताए गए लफ़्ज़ों से ये मतलब नहीं है के एक मुसलमान कभी बीमार नहीं पड़ता। ताहम, एक मुसलमान जो अपनी सेहत और सफाई का ध्यान रेखेगा वो लंबे अरसे तक सेहतमंद रहेगा। वो मुश्किल से ही बीमार पड़ेगा। मौत ज़िन्दगी की हकीकत है। इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। हर किसी को मरना है किसी बीमारी के नतीजे में। फिर भी, अपने जिस्म को मौत के वक्त तक सेहतमंद रखना ये सिर्फ ऐसे मुमकिन है इस्लाम के सफ़ाई पर एहकामात की तरफ़ ध्यान दिया जाए।

बस्ती सदी के दौरान, जब ईसाई मज़हब अपनी ऊँचाई पर था तो अदबियात के आला आलिम सिर्फ मुसलमानों के बीच पाए जाते थे। यूरोपी लोग आंदालुसिया आया करते थे अदबियात में तालिम हासिल करने के लिए वो जिन्होने चेचक से असतसना के इलाज का वैक्सीन बनाया वो मुसलमान तुर्क थे। जेनर/Janner जिसने तुर्कों से वैक्सीन सीखा, वो **1211 (1796)** में इसे यूरोप में ले गया और बेईसाफ से उसे खिताब दिया "चेचक के वैक्सीन की खोज करने वाला।" उन दिनों में यूरोप जुल्मों का बर्रे आज़म था, और बहुत सारी बीमारियों ने लोगों को तबाह किया हुआ था। फ्रांस का राज, लुइस XV **1774** में चेचक से मरा। प्लेग और हैज़ा काफ़ी समय से यूरोप में तबाही मचाए हुई थी। जब **1212 (1798)** में **नेपोलियन** ने अक्का का किला पर मुहासिरा किया तो उसकी फौज में प्लेग फैल गया, और उसके आगे लाचार होने के बाद की वजह से, उसे अपने दुश्मनों, मुसलमान तुर्कों से मदद माँगनी पड़ी। ये उस वक्त की फ्रेंच किताब में मंदरजाज़ेल तरीके से लिखा हुआ हैः "तुर्कों ने हमारी गुज़ारिश को मंज़ूर करते हुए अपने डॉक्टरों को भेज दिया। वो बहुत ज़्यादा साफ कपड़े पहने हुए थे और उनके चेहरे चमक रहे थे। पहले, उन्होने दुआ की और फिर बहुत ज़्यादा अपने हाथों को साबुन और पानी से धोया। उन्होने मरीज़ों के जिस्मों में उबले हुए ब्यूबस को चाकू से उभारा, जिसकी वजह से पस उनमें से बाहर निकल आया, और ज़ख्मों को सफाई से धोया। बाद, में मरीज़ों को अलग कमरों में लिटाया गया, उन्होने सेहतमंदों को उनसे परे रहने का आदेश दिया। उन्होने मरीज़ों के कपड़े जला दिए और उन्हें नए कपड़े पहनाए गए। आखिर में, उन्होने अपने हाथों को दोबारा धोया, जहाँ मरीज़ पहले थे वहाँ उन जगहों पर मुसब्बर लकड़ी जलाई गई, दुआ दोबारा माँगी, ओर हमें छोड़ कर चले गए, अदाएगी और तौहफ़ों के नाम पर हमारी सारी आफ़रस को उन्होने मना कर दिया।"

ये कहने का मतलब है के मग़रीबी लोगों ने, जो दो सदियों पहले तक बीमारियों के ख़िलाफ़ लाचार थे, आज की अदवियात सिर्फ पढ़कर, तर्जुबे करके और जिस तरह क़ुरआन अल करीम में लिखा हुआ है उसी तरह काम करके सीखा है।

रूहानी सफाई के लिए, बेशक एक मुसलमान को आला अखलाकियात और नरमाई रखनी होगी। इस्लाम अपने आप में अखलाकियात और महान है। अच्छाई, इंसाफ़ और दरयादिली जिसका इस्लाम हुकूम देता है अपने दुश्मनों के साथ दोस्तों के साथ वो हैरतअंगेज़ तौर पर आला डिगरी का है। पिछली तरह सदियों के वाक्यात इस हकीकत को इस्लाम के दुश्मनों को भी जाहिर करते हैं। बेशुमार सुबूतों में से, हम एक के मुतअलिक बताते हैं जो इससे बाहर है।

जैसा के बरसा के म्यूज़ियम में उसके मुहाफ़िज़ खाने में **200** साल पुराना कोर्ट रिकार्ड में लिखा है। मुसलमानों ने यहूदी कवाटर के नज़दीक अलतिपरमक में कुछ ज़मीन पर एक मस्जिद तामीर की। यहूदियों ने उस ज़मीन पर अपनी मिलकियत का दावा कर दिया और कहा के मुसलमान वहाँ मस्जिद नहीं बना सकते। झगड़ा कानून की अदालत का मामला बन गया। सुनवाई होने के बाद, कोर्ट ने फैसला किया के वो इलाका यहूदियों का है, मस्जिद जो है तबाह कर दी जाए, और ये ज़मीन वापस यहूदियों को दे दी जाए, फैसला अमल में आया। बेशक, आला इंसाफ़ !

हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमायाः **"मैं नीचे भेजा गया हूँ मुकम्मल फ़ज़ीलत और पूरी दुनिया में खुबसूरत अखलाक फैलाने के लिए।** दूसरी हदीस से रिवायत हैः **"तुम्हारे बीच में, वो जो मुकम्मल अखलाकियात के साथ हैं तो बुलंद ईमान वाले हैं।** इसलिए, ईमान भी अखलाकियात से नापा जा रहा है।

रूहानी पाकी मुसलमान के लिए ज़रूरी है। एक शख़्स जो झूठ बोले, जो धोखा दे, दूसरो के साथ चालबाज़ी करे, जो ज़ालिम हो, नाइंसाफी करे, जो अपने साथी मज़हबियों की मदद करने से बचे, जो फौकियत चाहे, जो अपने मफ़ाद के बारे में सोचे, वो एक सच्चा मुसलमान नहीं हो सकता, चाहे कितनी भी इबादतें करता हो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

(सूरह) बाब माऊन की पहली तीन आयात के आला मआनी हैंः **"ए! मेरे नबी! क्या तुमने किसी को देखा है जो इंसाफ़ से इंकार करता हो, यतीमों सख्ती से अलग रखता**

**हो उनके हुकूक उन्हें न देता हो, और दूसरों को ज़रूरतमंदो को खिलाने के लिए बढ़ावा न दें?"** ऐसे लोगों की इबादात कुबूल नहीं होगी। इस्लाम में, ममनुआत (हराम) से परे रहने, एहकामात (फराईज़) को करने में आगे रहने है। एक सच्चा मुसलमान, सबसे पहले, एक मुकम्मल और बुरदबार शख्स है। उसका मुसकराता हुआ चेहरा होता है। वो शहद जैसी ज़ुबान वाला आदमी है जो सच्च बताता है। वो कभी नहीं जानता के "गुस्सा करना" क्या है। रसूलअल्लाह (हज़रत मुहम्मद [सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम]) ने फरमायाः "**एक शख़्स जो नरमी बख्शता है वो इस दुनिया और आखिरत की अच्छाई अता किया जाता है।** एक मुसलमान बिल्कुल मामूली होता है। जो उससे सलाह करते हैं वो हर किसी की सुनता है और जितना हो सके उनकी मदद करता है।

एक मुसलमान वकार वाला और नरम होता है। वो अपनी फैमिली और अपने मुल्क से प्यार करता है। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमायाः "**तुम्हारा मुल्क के लिए प्यार तुम्हारे ईमान से निकलता है।**" यही वजह है जब सरकार बाग़ियों के खिलाफ़ लड़ती है तो, एक मुसलमान अपनी इच्छा से फौजी खिदमात अंजाम देता है। ये मंदरजाज़ेल तरीके से उस काम में जिसे एक जर्मन पादरी ने **1560** में लिखा था, जो ऊपर ज़िकर किया गया हैः "अब मुझे समझ आया के क्यों मुसलमान तुर्क हमारी सारी मुहिमों में हम से आगे हैं। जब भी यहाँ कोई पाक जंग होती है, तो मुसलमान फौरन अपने औज़ार ले लेते हैं और अपने मुल्क और मज़हब के लिए अपनी इच्छा से लड़ने और मरने के लिए तैयार हो जाते हैं। उनका यकीन है के जो एक पाक जंग में मरेगा वो जन्नत में जाएगा। इसके बरअक्स, हमारे मुल्क में, जब भी वहाँ जंग होने के इमकान होते हैं तो, हर कोई छुपने की जगह ढूँढता है के कहीं वो फौज में भरती न कर लिए जाएँ। और वो जिन्हें ज़बरदस्ती फौज में शामिल कर लिया जाता है वो बेदिली से लड़ते हैं।

अल्लाह तआला किस तरह अपने बंदों को पसंद करता है ये बहुत अच्छे तरीके से कुरआन अल करीम में वाज़ेह किया गया है। बाब फुरकान में **63-69** आयात के बड़े ऊँचे मआनी हैंः "[नेकीकार] **रहमान के बंदे** (अल्लाह तआला, जो अपने बंदों के लिए बहुत रहम रखता है) **ज़मीन पर मामूली तौर पर और वकार के साथ। जब जाहिल लोग उन्हें परेशान करने की कोशिश करते हैं, तो वो नरम अल्फ़ाज़ के साथ उनसे मुखातिब होते हैं, जैसे केः 'अमन और सलामती हो तुम पर! वो रातों को खड़े होकर और सज्दों** (नमाज़ अदा करने में) **में गुज़ारते हैं अपने आका के सामने।** [वो अपना शुक्रिया अदा करते हैं और

उसकी तारीफ़ करते हैं] **वो अल्लाह से दुआ करते हैं, 'ए मेरे अल्लाह, हम से दोज़ख का आज़ाब परे करले। बेशक, उसका आज़ाब अबदी और कड़वा है, और वो जगह कोई शक नहीं एक बुरी और भयानक रिहाईशगाह है। अपने खर्च में, न तो वो खर्चीला है और न ही कंजूस; वो इन दोनो इंतिहा पसंदी के बीच में एतदाल पसंदी रखता है, और वो किसी के हुकूक में कटोती नहीं करते। वो किसी को अल्लाह तआला का साथी मंसूब नहीं करते। वो किसी को कत्ल नहीं करते, जिसे अल्लाह के ज़रिए मना किया गया है।** [वो सिर्फ़ खताकारों को सज़ा देते हैं।] **वो ज़िना नहीं करते।**"

उसी बाब की **72-74** आयात मेंः "[वो नेक इंसानी बंदे जिन्हें अल्लाह तआला पसंद करता है] **वो झूठी गवाही नहीं रखते। वो बेकार और नुकसानदायक... चीज़ों से परे रहते हैं। अगर वो हादसाती तौर पर किसी बेकार चीज़ में शामिल हो जाएँ या जिसे बहुत मुश्किल से किया जाए, तो वो उसके पास से वकार वाले अंदाज़ से निकल जाएँगे। वो अपने आका के खुलासे को अनदेखा और अनसुना नहीं कर सकताा जब उसे उसकी याद दिलाई जाए। वो मिन्नत करेंगे, 'ए मेरे अल्लाह! हमें ऐसी बीवियाँ और बच्चे अता फरमा जो हमारी आँखों ठंडक का ज़रिया हों। हमें उन लोगों के लिए मिसालें बना जो तुझ से डरते हों।**"

इसके अलावा, सूरह (बाब) साफ़ की दूसरी और तीसरी आयात का मुकददस मआनी हैंः "**ईमान वालो! तुम क्यों ढोंग करते रहते हो जो तुम कभी नहीं कर सकते? अल्लाह तुम्हारे लिए सख्त नापसंददीदगी रखता है जब तुम ऐसा कुछ कहते हो जो तुमने अमल नहीं किया हो,**" इससे ज़ाहिर होता है के एक शख्स जो वो नहीं करता उसको करने का वादा करे या हाल्फ ले उसको अल्लाह तआला की नज़र में एक बुरा शख्स बनाता है।

एक सच्चा मुसलमान अपने माँ बाप, उस्तादों, कमांडरों, कानून, और अपने मुल्क के अहम हुक्काम के लिए इंतिहाई इज़्ज़त वाला होता है। वो ग़ैर मामूली चीज़ से तअल्लुक नहीं रखता। वो सिर्फ फायदेमंद चीज़ों के साथ ही मसरूफ़ रहता है। वो जुआ नहीं खेलता। वो वक्त बरबाद नहीं करता।

एक सच्चा मुसलमान अपनी इबादात पूरी महारत से करता है। वो अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करता है। इबादत बेदिली या लापरवही से नहीं करनी चाहिए। इबादत, पूरी इच्छा से और अल्लाह तआला की तरफ़ पूरे प्यार के साथ अदा करनी चाहिए। अल्लाह तआला का डर होने से मुराद है के उसे बहुत ज़्यादा प्यार करना। तुम नहीं

चाहोगे के जिस शख्स को तुम प्यार करते हो वो नामेहरबान हो और या तुम जिससे डरते कम हो तो तुम उसको परेशान करने का सबब बन सकते हो। इस तरह से, अल्लाह तआला के लिए इबादत इस तरह अदा की जाए के जैसे हम उसके लिए अपने प्यार का सुबूत दे रहे हों। रहमतें जो अल्लाह तआला हमें देगा वो इतनी ज़्यादा बड़ी होंगी के उसकी तरफ़ शुक्रगुज़ारी का कर्ज़ा हम सिर्फ उससे प्यार करके अदा कर सकते हैं और पूरी कामिल संजिदगी के साथ उसकी इबादत करके। मुख्तलिफ किस्म की इबादत हैं। कुछ इबादत की किस्म, जैसा के हमने ऊपर कहा, वो अल्लाह तआला और उसके बंदों के बीच में है। हो सकता है जो नाकाफी इबादत कर रहे हों अल्लाह तआला उन्हें माफ़ करदे। ये इबादत है, के किसी के हुकूक की इज़्ज़त भी की जाए। लेकिन वो उनको कभी माफ़ नहीं करता जो दूसरों को गाली दें और दूसरों के हुकूक अपने पास रखलें, जब तक के उन हुकूक का मालिक उन्हें माफ़ न करदे।

मंदरजाज़ेल रिवायात (हदीस अस शरीफ़) **अशीअत-उल लमाअत** किताब के चौथे हिस्से में पाई गई हैं, जो कि फारसी में है और जो मश्हूर किताब **मिश्कात उल मसाबिह** (मिशकात के मुंसनिफ़ वलीउददीन मुहम्मद हैं, जो **749** (**1348** ए.डी.) में वफात पा गए।) का तबसरा है।

**1. वो जो लोगों पर रहम नहीं करता वो अल्लाह तआला के ज़रिए रहम नहीं किया जाता।**

**2. तुम मज़लूम और ज़ालिम दोनो की मदद कर सकते हो जुल्म की रोकथाम करके।**

**3. एक कमीज़ को खरीदने में दी गई 9/10 रकम अगर हलाल है और 1/10 हराम है तो, अल्लाह तआला उस कमीज़ को पहनकर की गई इबादत को कुबूल नहीं करेगा।**

**4. एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। वो अपने भाई को अज़ाब नहीं दे सकता। वो उसकी मदद के लिए भागेगा। वो उससे नफरत नहीं कर सकता या उसको अपने से कमतर नहीं समझ सकता। ये उसके लिए हराम** (ममनुअ) **है उसके खून को माल को, पाकी को या इज़्ज़त को नुकसान पहुँचाना।**

5. मैं अल्लाह तआला की कस्म खाता हूँ के जब तक एक शख्स जो अपने लिए पसंद करता है वो अपने मुस्लिम भाई के लिए पसंद करेगा, तब तक उसका ईमान मुकम्मल नहीं होगा।

6. मैं अल्लाह तआला की कस्म खाता हूँ के एक शख्स जिस पर उसका पड़ोसी भरोसा न रखे वो ईमान (यकीन) नहीं रख सकता। [यानी, वो एक असली मुसलमान नहीं है।]

7. एक शख्स जिसके दिल में रहम नहीं  ईमान नहीं रख सकता।

8. अल्लाह तआला उन पर रहम करता है जो दूसरों पर रहम करते हैं।

9. वो जो हमारे जवानों पर रहम न रखे या हमारे बूढ़े से इज़्ज़त न करे वो हमारे में से नहीं है।

10. अगर एक शख्स बूढ़ों की इज़्ज़त और मदद करे। अल्लाह तआला उसके पास मददगार भेजेगा जब वो बूढ़ा हो जाएगा।

11. अल्लाह तआला को जो घर सबसे ज़्यादा अच्छा लगता है वो है जिसमें एक यतीम रहता हो और जिसमें एक यतीम को नरमाई से बरताव किया जाए।

12. इस दुनिया में और आखिरत में अल्लाह तआला उस शख्स की मदद करेगा जो एक चुगलखोर को ख़ामोश कराएगा। अगर वो उस चुगलख़ोर को ख़ामोश नहीं कराएगा जबकि उसके पास ऐसा करने की पूरी ताकत थी, तो अल्लाह तआला उसे इस दुनिया में और आखिरत में सज़ा देगा।

13. एक शख्स जो एक मुसलमान भाई की ख़ामी एक कमज़ोरी को देखेगा, लेकिन उसे ढाँप लेगा और छुपा लेगा, वो इस तरह का अमल होगा जैसे उसने एक लड़की की ज़िन्दगी बचाई ज़िन्दा दफ़न होने से, जैसे के इस्लाम से पहले अरब के ज़रिए ऐसा करना रिवाज था, उसे कब्र से बाहर निकाला हो।

14. दो दोस्तों में से वो शख्स अल्लाह तआला की नज़दिक है जिसने दूसरों के लिए ज़्यादा अच्छे काम किए हों।

15. चाहे एक शख्स अच्छा है या बुरा इसका मुशाहदा इससे किया जाएगा के किया उसके (मुस्लिम) पड़ोसी उसे पसंद करते हैं या नहीं।

16. एक शख्स की मंज़िल जिसने अपने बोल से अपने पड़ोसियों का दिल दुखाया दोज़ख है, चाहे वो कितना ही इबादत करे, रोज़े रखे, ज़्यादा खैरात दे। लेकिन, अगर उसने अपनी बात से अपने पड़ोसी को नुकसान नहीं पहुँचाया तो उसके लिए जन्नत है, चाहे उसने कम इबादत की हो, कम रोज़े रखे हो, और कम खैरात दी हो।

17. अल्लाह तआला कीमती चीज़ें अपने प्यारों और अपने दुश्मनों दोनो को देता है। लेकिन खूबसूरत अखलाकियात सिर्फ अपने प्यारे को देता है। [अब, ये समझ आ गया के लफ़्ज़, "ये उम्मीद की जाती है के काफ़िर जिन के पास उमदा अख़लाक हैं उनके जाने से पहले फौरन उनमें ईमान आ जाता है" ये सही है।]

18. उस आदमी का सवाब (एक पाक काम का ईनाम) जिसने दूसरे की पाकी या माल को बिगाड़ा उस मज़लूम आदमी को मिल जाएगा। अगर खिलाफ वरज़ी करने वाले की इबादत या पाक काम ज़्यादा नहीं होंगे, तब बाद वाले के गुनाह भी उसे मिल जाएगे।

19. अल्लाह तआला के नज़दिक सबसे ज़्यादा खतरनाक गुनाहों में से एक गुनाह है के एक शख्स का बदकिरदार होना।

20. अगर कोई ये देखकर खुश हो रहा है के जिस शख्स को वो नापसनद करता है वो मुसिबत में है, तो अल्लाह तआला उसी तरह की परेशानी उस पर भी भेज देगा।

21. दो लोग मस्जिद गए और नमाज़ अदा की। उनको कोई चीज़ फराहम की गई। उन्होने कहा हमारा रोज़ा है। कुछ लम्हे बात करने के बाद, जब वो निकालने वाले थे, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनसे फरमायाः "अपनी नमाज़ दोबारा पढ़ो, और अपना रोज़ा दोबारा रखो! क्योंकि तुम अपनी बातचीत में किसी की चुगली कर रहे

थे।[यानी तुम उसकी कोई बुराई बता रहे थे।] **चुगली इबादात के सवाब** (नएमतों) **को खत्म कर देती है।**"

**22. हसद मत रखो।जैसे आग लकड़ी को जला देती है, हसद महसूस करना भी एक शख्स की नएमतों को तबाह कर देती है।**"हसद रखने का मतलब है के एक शख्स से हसद करना, यानी ये चाहना के जो अल्लाह तआला के ज़रिए उसे नएमतें दी गई हैं वो उससे वापस ले ली जाएँ। अपने लिए वही नएमतें माँगना जो दूसरे के पास है बग़ैर ये कहे के उनसे वापस ले ली जाएँ ये हसद नहीं कही जाएगी।इसे "किपता" बोलेंगे जिसका मतलब है "आरज़ू", दूसरे लफ़्ज़ों में, "अच्छी इच्छा"।इस बात की इच्छा करना के किसी में से बुराई और नुकसानदायक चीज़ खत्म हो जाए वो "कैरत" कहलाती है जिसका मतलब है "ज़िद", या जिसे "ख़मियात" कहते हैं जिसका मतलब है "हसद"।

**23. कोई जो अच्छे मिज़ाज वाला है वो इस दुनिया में और आखिरत में दोनो में अच्छाई हासिल करेगा।**

**24. अल्लाह तआला अपने बंदे को जिसे उसने खूबसूरत चेहरे और अच्छे किरदार के साथ मंज़ूर किया हो उसे आखिरत में दोज़ख में नहीं भेजेगा।**

**25. अबू हुरेरा को बताया गयाः "अच्छे मिज़ाज के रहो।"** नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़रिए।उन्होने पूछाः "अच्छे मिज़ाज का होना क्या है?" नबी ने जवाब दियाः "**एक शख्स के पास जाओ जो तुमसे परे रहता हो और उसे सलाह दो; जो तुम्हें तकलीफ़ दे उसे माफ़ कर दो; अगर एक शख्स अपनी मिलकियत, इल्म या मदद देने में तुम्हारे साथ ढीला पड़े, तो उसे उनमें से बहुत ज़्यादा दे दो;**"

**26. जन्नत एक शख्स की मंज़िल है जो तकब्बुर, गददारी और कर्ज़ों से साफ मर जाता है।**

**27.** नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक ऐसे शख्स की जो कर्ज़दार होकर मरा उसकी जनाज़ें की नमाज़ (**जनाज़ा नमाज़**ः जब एक मुसलमान मर जाता है, तो दूसरे मुसलमान उसकी मैय्यत के सामने एक खास नमाज़ पढ़ते हैं जिसे सलात-उल जनाज़ा कहा जाता है।इस तरह, वो पढ़ते हैं ताकि उसके गुनाह माफ़ हो जाएँ, और उसे बहुत सारी

रहमतें वग़ैरह मिलें।) नहीं पढ़ना चाहते थे।एक सहाबी (नबी के साथी) जिनका नाम अबू कताद (रज़ी अल्लाहु अन्ह) था उन्होने उसका कर्ज़ो भेजी हुई रकम के ज़रिए अपने ऊपर ले लिया।इस तरह, नबी ने उसकी जनाज़े की नमाज़ अदा करनी मंज़ूर की।

**28. अपनी बीवियों को मत मारो! वो तुम्हारी गुलाम नहीं हैं।**

**29. अल्लाह तआला की करीब, तुम से सबसे अच्छा वो है जो अपनी बीवी की तरफ अच्छा हो।मैं तुम में सबसे अच्छा हूँ अपनी बीवी के साथ बरताव में।**

**30. तुम में से सबसे अच्छा ईमान** (अकीदे) **वाला वो शख्स है जिसका किरदार सबसे बढ़िया हो और वो शख्स जो अपनी बीवी की तरफ नरम हो।**

ऊपर लिखी हुई ज़्यादातर हदीस अस शरीफ़ इबन हजर (इबन हजर, **974** (**1566** ए.डी) में रहलत फरमा गए थे।) एक आला इस्लामी आलिम के ज़रिए लिखी किताब **ज़वाजीर** में मौजूद हैं एहतिकार नाम के हिस्से से फौरन पहले।वो इस्लामी अखलाकियात  का खुबसूरत ज़रिया हैं।इस्लामी आलिम इन हदी

स अस शरीफ़ से उसूल हासिल करते थे।उनमें से कुछ मंदरजाज़ेल हैं।

**1.** ये एक मुसलमान के लिए हराम (ममनुअ) है जो एक काफिरों के मुल्क में हो के वहाँ की मिलकियत, ज़िन्दगी, पाकी की खिलाफ़वरज़ी करे या चोरी करे।उसे उनके कानून की नाफरमानी नहीं करनी चाहिए और धोखा नहीं करना चाहिए या जब खरिदारी कर रहा हो या कुछ और तो नमकहरामी नहीं करनी चाहिए।

**2.** एक काफ़िर के माल को हड़पना या उसके दिल को दुख पहुँचाना एक मुसलमान के माल को हड़पने से ज़्यादा खराब है।जानवरों पर ज़ुल्म आदमियों पर ज़ुल्म से ज़्यादा खराब है, और काफ़िरों पर ज़ुल्म जानवरों पर ज़ुल्म से ज़्यादा खराब है।

**3.** किसी की इजाज़त के बग़ैर उसकी मिलकियत को लेना और इस्तेमाल करना हराम है चाहे अगर तुम उसे बग़ैर नुकसान के वापस कर दो।

**4.** अगर एक शख्स एक घंटे के लिए भी अपने कर्ज़े की अदाएगी करना मुलतवी करता है जबकि उसके पास ज़राए हैं, तो वो ज़ालिम और नाफरमाबरदार समझा जाएगा। वो लगातार लानत में रहेगा। कोई अपना कर्ज़ा उतार रहा ये एक लगातार गुनाह है यानी ये (एक शख्स की अमाल की किताब में) जब एक शख्स सो भी रहा है तब भी वो इसमें रिकार्ड हो रहा है। अगर एक शख्स कम कीमत की पैसा या बेकार माल के साथ अपना कर्ज़ा अदा करे, या लेनदार अगर बेदिली से इसे वापस ले तो ये भी एक शख्स को गुनहगार बनाएगा। कोई अपने आप को गुनहगार होने से नहीं बचा सकता जब तक के वो लेनदार को मेहरबान या मुतमईन न कर ले।

चौदह सौ सालों से, इस्लामी आलिम अपने लेकचरों और किताबों में इस्लाम के ज़रिए बताए गए खुबसूरत अखलाकियात के एहकामात पढ़ाते आए हैं। इस तरीके से वो जवानों के दिमाग़ों और दिलों में इस्लाम के ज़रिए बताए गए खुबसूरत अतवार को डालने की कोशिश करते हैं। नीचे बताई गई किताब उन बेशुमार किताबों का नमूना है जो इन खुबसूरत अखलाकियात को बढ़ावा देती हैं।

आला इस्लामी आलिम **इमाम-ए-रब्बानी अहमद फारूकी (रहमतुल्लाहि अलेह)** जो एक पहुँचे हुए वली भी थे और (इस्लाम की) दूसरी सदी के मुजददीद भी थे, उनकी किताब **मकतुबात** बहुत कीमती है। सैय्यद अब्दुल हकीम अरवासी (अब्दुल हकीम एफंदी, अंकारा में **1362** (**1943** ए.डी) में रहलत फरमा गए।) जो **मदरसात-उल-मुतहहसिसीन**, उसमानिया सल्तनत के दौरान सबसे ऊँचे मदारिस (स्कूलों) में से था उसमें नज़रिए के प्रोफेसर थे, वो अकसर कहते थे, "कोई और दूसरी किताब **मकतूबात** के अलावा इस्लाम के ऊपर नहीं लिखी गई," और, सबसे कीमती और आला किताब इमाम-ए-रब्बानी की किताब **मकतुबात** है, बेशक कुरआन अल करीम और हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीस शरीफ़ को छोड़कर।"इमाम-ए-रब्बानी इंडिया में **971** (**1563**) में सरहिंद के शहर में पैदा हुए, और **1034** (**1624**) में वहीं पर रहलत फरमाई। अबदुलहकीम एफंदी बान, तुर्की का एक मशरीकी शहर में **1281** (**1874**) में पैदा हुए, और अंकारा दारूलखिलाफ़ा के एक शहर में **1362** (**1943**) में रहलत फरमाई। **मकतूबात** के **76**वें खत में लिखा हैः सूरह हशर की **7**वीं आयत के पाक मआनी हैंः "**...जो कुछ भी पैग़म्बर तुम्हें दे, उसे कुबूल करो, और जिस से वो तुम्हें मना करे, उससे पीछे रहो...**" जैसे के देखा गया है, दुनिया में तबाही से और आखिरत में दोज़ख के अज़ाब से बचाने के लिए दो चीज़ें ज़रूरी हैंः एहकामात को मज़बूती

से पकड़ना, और ममनुआत से ग़ैर हाज़िर होना! इन दो में से सबसे बड़ी, एक जो ज़्यादा ज़रूरी है, दूसरी है, जिसे **वारा** और **तकवा** कहते हैं। रसूलअल्लाह की मौजूदगी में उन्होने एक शख्स का ज़िकर किया जो बहुत ज़्यादा इबादत और जददोजहद करता था। लेकिन जब वो कहते हैं के एक शख्स जो ममनुअ है उससे ग़ैर हासिर है, तो आपने फरमाया, "**वारा के साथ कुछ भी मवाज़ना नहीं हो सकता।**" यानी, आपने कहा के ममनुआत से ग़ैर हाज़िर होना वो ज़्यादा कीमती है। एक हदीस-ए-शरीफ़ में आपने फरमाया, "**वारा तुम्हारे मज़हब का सुतून है।**" आदमी फरिश्तों से आला बनते हैं सिर्फ इस वारा की वजह से, और उनकी तरक्की या ऊँचाई, दोबारा इसी वारा की वजह से है। फरिश्ते भी हुकूम बजा लाते हैं। लेकिन फरिश्ते तरक्की नहीं कर सकते। फिर वारा को तेज़ी से पकड़ना और तकवा रखना ये किसी भी चीज़ से ज़्यादा अहम हैं। इस्लाम में सबसे कीमती चीज़ तकवा है। मज़हब की बुनियाद तकवा है। वारा और तकवा का मतलब है हराम से परे रहना। पूरे तरीके से हराम से परे होने के लिए, ये ज़रूरी है के उस मुबाह से ज़्यादा ग़ैर हाज़िर होना जो ज़रूरी है। हमें मुबाह का इस्तेमाल सिर्फ उतना ही करना चाहिए जितना ज़रूरी है। अगर एक शख्स जिस तरह वो पसंद करता है मुबाह का इस्तेमाल करता है, यानी, उन चीज़ों का जिन की शरीअत ने इजाज़त दी है, या मुबाह को बहुत ज़्यादा इस्तेमाल कर लेना, तो वो जो शकूक वाला काम है वो शुरू कर देगा। और, शकूक वाला काम है वो शुरू कर देगा। और, शकूक उन चीज़ों के नज़दीक है जो हराम है। आदमी का नफ्स, एक जानवर की तरह है, वो लालची है। वो जो रसाताल के इरदगिरद चल रहा है वो उसमें गिर भी सकता है। वारा और तकवा को ठीक तरह से बनाए रखने के लिए, एक शख्स को मुबाह को सिर्फ़ उतना ही इस्तेमाल करना चाहिए जितना ज़रूरी हो, और ज़रूरी मिकदार से आगे नहीं बढ़ना चाहिए। जब इस मिकदार को इस्तेमाल करेंगे, तो एक शख्स उसे इस इरादे से इस्तेमाल करेगा के जैसे वो अपने फराईज़ अदा कर रहा है अल्लाह के पैदा करदा गुलाम के तौर पर। ये एक गुनाह भी है के उन्हें बग़ैर इरादा किए थोड़ा सा इस्तेमाल करना। ये नुकसानदायक है चाहे ये थोड़ा हो या ज़्यादा। ये नामुमकिन सी बात है के हमेशा पूरे तौर पर ज़रूरी मुबाह से ज़्यादा ग़ैर हाज़िर हो, खासतौर से इस वक्त में। कम अस कम, एक शख्स को हराम से ग़ैर हाज़िर होना चाहिए और अपना सबसे अच्छा करे के ज़रूरी मुबाह से ज़्यादा ग़ैर हाज़िर रहे। जब मुबाह जितनी ज़रूरत है उससे ज़्यादा कर लिया जाए तो, एक शख्स को तौबा करनी चाहिए और माफ़ी माँगनी चाहिए। एक शख्स को पता होना चाहिए के ये अमाल हराम को करने की शुरूआत हैं। एक शख़्स को अपने आपको अल्लाह तआला के सुपुर्द कर देना चाहिए और उससे माफ़ी माँगनी चाहिए। ये पछतावा, माफ़ी माँगना और गिड़गिड़ाना, हो

सकता है पूरे तौर पर ज़रूरी मुबाह से ज़्यादा अपने आपको ग़ैर हाज़िर रखना हुआ, इस तरह अपने आपको हराम के खिलाफ़ बचाए और ऐसे अमाल करने से बाज़ रखे। हमारे एक बड़े कहते हैं, "गुनहगार अपने सिरों को झुकाए मुझे ज़्यादा बहतर लगते हैं बनिस्बत इबादतगारों की सूजी हुई छातियों से।"

हराम से बचने के दो तरीके हैंः पहले, अपने आपको उन गुनाहों से बचाओ जो सिर्फ अल्लाह तआला के हुकूक को परेशान करे; दूसरा, ऐसे गुनाहों से बचना जिससे दूसरे लोगों के या मखलूक के हुकूक की खिलाफ़वरज़ी हो। दूसरी किस्म ज़्यादा अहम है। अल्लाह तआला को कोई चीज़ नहीं चाहिए, और वो बहुत रहम वाला है। दूसरी तरफ़ इंसान को न सिर्फ बहुत सारी चीज़ें चाहिए बल्कि वो बहुत कंजूस भी है। रसूलउल्लाह ने फरमाया, "**वो जिसपर इंसानों के हुकूक हैं, और जिसने मखलूक के माल और पाकी की खिलाफ़ वरज़ी की, उसे हुकूक वापस करने होंगे और मरने से पहले अपने आपको माफ कराना होगा! क्योंकि उस दिन के लिए सोने और चाँदी की कोई कीमत नहीं होगी। उस दिन, उसकी सारी नएमतें वापस ले ली जाएँगी जब तक हुकूक अदा न हो जाएँ, और अगर उसके पास कोई नएमतें नहीं होंगी, तो हुकूक के मालिक के गुनाह उसके ऊपर लाद दिए जाएँगे।**"

[इबनी आबिदीन (मुहम्मद इबनी आबिदीन दमिश्क में **1252** (**1836** ए.डी) में रहलत फरमा गए।) **दुर्र-उल मुख्तार** किताब की वज़ाहत करते हुए सलात की नीयत मज़मून में **295**वें सफ़हे पर कहते हैं, "इंसाफ़ वाले दिन, अगर हुकूक का मालिक अपने हक को नहीं छोड़ता तो, जमाअत में अदा की गई और कुबूल हुई नमाज़ में पढ़ी गई **700** दुआएँ ले ली जाएँगी और एक डंक के हक के बदले में हुकूक के मालिक को दे दी जाएँगी।" एक डंक **1/6** दिरहम होता है, आधे ग्राम चाँदी के बराबर, जो **25** कुरूश (कुरूश तुर्की की करेंसी)की कीमत के बराबर है।]

एक दिन, जब रसूलउल्लाह ने असहाब-ए-किराम से पूछा, "**क्या तुम जानते हो के दिवालिया किसे कहते हैं?**" उन्होने कहा, "एक शख्स बग़ैर किसी रकम या माल के।" आपने फरमाया, "**मेरी उम्मत में, एक दिवालिया शख्स वो है जिसके पास इंसाफ़ वाले दिन उसके अमाल की किताब में बहुत सारी सलात, रोज़े और ज़कात के सवाब हों। लेकिन उसने एक शख्स को कोसा हो, उस पर तौहमत लगाई हो और उसका माल ले लिया हो। उसके सवाब ऐसे हुकूक के मालिकों में बाँटकर और तकसीम कर दिए जाएंगे। अगर उसके सवाब**

**हुकूक अदा करने से पहले खत्म हो गए तो, हुकूक के मालिकों के गुनाह उसके ऊपर लाद दिए जाएँगे। फिर वो दोज़ख की तरफ़ धकेल दिया जाएगा।"**

ये मंदरजाज़ेल तरीके से **मकतूबात** के **98**वें खत में लिखा हैः

"रसूलउल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमायाः '**अल्लाह तआला रफ़ीक** (नरम) **है। उससे नरमाई पसंद है। वो नरम लोगों को वो सब देता है जो वो तुंदखू/कठोर या किसी को भी नहीं देता।** ये रिवायत (हदीस अस शरीफ़) रिवायत की किताब **सही** इमाम ए मुस्लिम के ज़रिए लिखी गई है।

दोबारा **मुस्लिम** में [नबी] ने हज़रत आएशा (रज़ी अल्लाहु अन्ह) अपनी मुबारक बीबी से फरमायाः '**नरमाई से बरताव करो, शिददत से और किसी बदबख्ती से बचो! नरमाई एक शख्स को सजाती है और बदसूरती को परे ले जाती है।**'

एक हदीस अस शरीफ़ [**मुस्लिम** किताब में] से हवाला हैः '**वो जो नरमाई से अमल नहीं करता वो कुछ अच्छा नहीं करता।**'

एक हदीस अस शरीफ़ [**बुखारी** किताब में] से बयान हैः '**मैं तुम में से सबसे ज़्यादा उसे पसंद करता हूँ जो खुबसूरत मिज़ाज का हो।**'

एक हदीस अस शरीफ़ [इमाम ए अहमद और तिर्मिज़ी के ज़रिए बताई गई (रहिमा हुमल्लाहु तआला)] ( मुहम्मद तिर्मिज़ी **279** (**892** ए.डी) में रहलत फरमा गए।) से बयान हैः '**एक शख्स जो नरमाई देगा उसे इस दुनिया में और आखिरत में अच्छाई दी जाएगी।**'

एक हदीस अस शरीफ़ [इमाम-ए अहमद, तिर्मिज़ी, हाकिम और बुखारी (रहिमा हुमल्लाहु तआला) के ज़रिए बताई गई] से एलान हैः '**हया** (शर्म) **ईमान से आती है। एक शख्स ईमान के साथ जन्नत में है। फहश** (एक नागवार काम) **बुराई है। बुराई करने वाले दोज़ख में हैं।"**

एक हदीस अस शरीफ़ [इमाम-ए अहमद और तिर्मिज़ी के ज़रिए बताई गई] से बयान हैः '**मैं तुम्हें उस शख्स के बारे में बताता हूँ जिसके लिए** (मना है) **दोज़ख में जाना**

**हराम है और जो दोज़ख में जलाए जाने के लिए हराम हैः ध्यान दो! ये शख्स लोगों की तरफ़ इतमिनान और नरमी ज़ाहिर करता है।'**

एक हदीस अस शरीफ़ [अहमद तिर्मिज़ी और अबू दाऊद के ज़रिए बताई गई] से बयान हैः '**वो जो नरम होते हैं और जो लोगों के लिए आराम फराहम करते हैं वो उस आदमी की तरह है जिसने अपने जानवर की लगाम पकड़ रखी हो।अगर वो अपने जानवर को रोकना चाहता है, तो वो उसकी फरमाबरदारी करेगा।अगर वो उसे चट्टानों पर सवारी करना चाहेगा, तो जानवर उसकी तरफ़ भागेगा।'**

एक हदीस अस शरीफ़ [**बुखारी** में हवाला दी गई] से ऐलान हैः '**अगर एक शख्स अपने गुस्से पर काबू पा ले जब उसे गुस्सा आए अगरचे उसके पास ताकत हो के जो वो चाहे कर सकता हो, इंसाफ वाले दिन अल्लाह उसे दूसरे लोगों के बीच से बुलाएगा और उससे कहेगाः "जाओ जन्नत में चले जाओ और जिस हूर को तुम चाहते हो चुन लो।"**

जैसा के एक हदीस अस शरीफ़ में बताया गया [सारी हदीस की किताबों में हवाला दी गई], जब एक शख्स ने रसूलउल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा के उसे कोई सलाह दें तो आपने कहा, '**गुस्सा या घबराओ मत!**' जब उस आदमी ने बार बार यही सवाल दोहराया आपने वही जवाब दिया, '**गुस्सा या घबराओ मत।**'

एक हदीस अस शरीफ़ [तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में हवाला दी गई] से बयान हैः '**सुनो, मैं उनके बारे में बता रहा हूँ जो जन्नत में जाएँगेः वो बग़ैर ताकत के, आजिज़ होंगे।जब वो किसी काम को करने का हलफ लेंगे, तो अल्लाह तआला बेशक उनकी हलफ पूरी करेगा।सुनो, मैं उनके बारे में बता रहा हूँ जो दोज़ख में जाएँगेः वो कठोर होंगे।वो जल्दी में फैसला करते होंगे** (बग़ैर सोचे हुए)।**वो घमंडी होंगे।**

एक हदीस अस शरीफ़ [तिर्मिज़ी और अबू दाऊद (रहिमा हुमल्लाहु तआला) के ज़रिए बताई गई] से बयान हैः '**अगर एक शख्स जब खड़ा हुआ है उसे गुस्सा आ जाए, तो उसे बैठ जाना चाहिए।अगर वो बैठकर भी इसपर काबू न पा सके, तो उसे लेट जाना चाहिए।'**

एक हदीस अस शरीफ़ [तबरानी, बएहकी और इबनी असाकिर (रहिमा हुमल्लाहु तआला) के ज़रिए बताई गई] से बयान हैः **'जैसे के मुसब्बर शहद को खराब करता है, गुस्सा भी उसी तरह ईमान को खराब कर देता है।'**

एक हदीस अस शरीफ [बएहकी और अबू नूयम के ज़रिए बताई गई] ([1] अहमद अबू नूयम ने **430 (1039** ए.डी) में वफ़ात पाई।) से बयान हैः **'अल्लाह उस शख़्स को बढ़ावा देता है जो अल्लाह तआला की रज़ा के लिए अपने आपको नरम करले।वो अपने आपको कमतर समझता है, लेकिन दूसरों की निगाह में वो बरतर होता है।अगर एक शख़्स अपने आपको दूसरों पर फौकियत दे, तो अल्लाह तआला उसे नीचे कर देगा, और वो हर एक के निगाह में कमतर हो जाएगा।वो सिर्फ अपने ही नज़रिए में आला होगा।दरहककित, वो कुत्तों और सुअर से भी कमतर दिखेगा।'**

एक हदीस अस शरीफ़ [बएहकी (रहिमा-हुलाहु तआला के ज़रिए बताई गई] से बयान हैः '**जब मूसा** (अलैहि सलाम) **ने पूछा, "ए मेरे अल्लाह! तेरे इंसानी बंदों में से सबसे कीमती कौन है?" अल्लाह तआला ने फरमाया, "वो जो ताकत होते हुए भी माफ़ कर दे** (सज़ा देने की)।"

एक हदीस अस शरीफ़ [अबू यला के ज़रिए बताई गई] से बयान हैः **"अगर एक शख्स अपनी जुबान पर काबू रख ले, तो अल्लाह तआला उसकी सारी कमियाँ ढाँप लेगा।अगर वो गुस्से पर काबू कर ले, तो अल्लाह तआला हशर के दिन अपने अज़ाब को उस पर से हटा ले।अगर एक शख़्स अल्लाह तआला से दुआ करे, तो वो उसकी दुआ कुबूल करेगा।"**

जैसे के तिर्मिज़ी में लिखा हुआ है, मुआविया (रज़ी अल्लाहु अन्ह) ने हज़रत उम-मुल-मोमिनीन आएशा (रज़ी अल्लाहु अन्ह) को खत लिखा और उनसे अपने लिए कुछ सलाह लिखने को कहा।उन्होने एक जवाब लिखा, ये कहते हुए; 'अल्लाह का सलाम (सलामती) तुम पर! मैने रसूलउल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सुना है।आप कहते हैंः **"अगर एक शख्स अल्लाह तआला की मंज़ूरी चाहता है अगरचे वो लोगों को गुस्सा दिला दे, अल्लाह तआला उसे उस** (नुकसान) **से बचा लेगा जो लोगों की तरफ से उस पर आएगा अगर एक शख्स लोगों की मंज़ूरी चाहेगा अगरचे वो अल्लाह तआला के गुस्से का सबब बनेगा तो, अल्लाह तआला उसका मामला लोगों पर छोड़ देगा।"**

अल्लाह तआला हमे और तुम्हें इज़्ज़त बख्शे इन हदीसों के मुताबिक अपने आपको ढालने के लिए जो आपके ज़रिए बताई गई, जो हमेशा सच्च बोलते थे! उनके मुताबिक अमल करने की कोशिश करें।

इस दुनिया में ज़िंदगी बहुत छोटी है। आखिरत में अज़ाब बहुत सख्त है और अबदी है, दूर की सोचने वाले अकलमंद आदमी पहले से ही तैयारी कर लेते हैं। हमें दुनिया की खुबसूरती और महक में नहीं फँसना चाहिए। अगर आदमी की इज़्ज़त और कीमत दुनियावी चीज़ों से लगाई जाती तो, जिनके पास दुनियावी दौलत ज़्यादा होती वो दूसरों से ज़्यादा कीमती और ऊँचे होते। ये बेवकूफीपन, हिमाकत है के दुनिया के ज़ाहिर में घिरना। इस छोटे से ठहरने को एक नेमत समझना, हमें वो करने की कोशिश करनी चाहिए जो अल्लाह तआला को पसंद है। हमें अल्लाह तआला के इंसानी बंदों के लिए रहम की हिमायत करनी चाहिए। बड़े तरीके हैं कयामत वाले दिन अज़ाब से बचने के लिए। पहला है, अल्लाह तआला के एहकामात को इज़्ज़त और एहतराम देना, दूसरा है अल्लाह तआला के इंसानी बंदों और मखलूक के साथ रहमदिली और अच्छाई करना। जो कुछ भी सच्चे नबी (अलैहि सलाम) ने कहा वो सब अपने आप में सच है। आपकी कोई भी हिदायात मज़ाहिया, मज़हका खैज़ या बेसुध नहीं है। खरगोश की तरह आँखे खोलकर सोना कब तक रह सकता है? इस नींद का खात्मा शर्म और बेईज़्ज़ती, खाली हाथ और अकेलेपन के अलावा कुछ नहीं। कुरआन अल करीम की सूरह मोमिनून की 115वीं आयत के ऊँचे मआनी हैंः '**तुम क्या सोचते हो के मैने तुम्हें बग़ैर किसी मकसद के तखलीक किया खिलौनों की तरह? तुम क्या कहते हो के वापस हमारे पास नहीं आओगे?**' मैं जानता हूँ तुम इन सब बातों को सुनने के मूँड में नहीं हो। तुम जवान हो। तुम पुरअमल और पुरजोश हो। तुम दुनियावी नएमतों की गोद में हो। तुम्हारे इरदगिरद जो भी है वो तुम्हारी इताअत करता है। तुम जो चाहते हो वो करते हो। ये सब इसलिए लिखा जा रहा है क्योंकि हमें तुम पर रहम आ रहा है और तुम्हारे लिए कुछ कीमती करना चाहते हैं। तुमने अभी तक कुछ नहीं खोया है। ये वक्त है अल्लाह तआला से माफ़ी माँगने का और मिन्नत करने का।" ये **98**वें खत के तर्जुमे का खात्मा है।

सैय्यद अबदुल हकीम अरवासी अपनी किताब जिसका नाम **Erriyad-ut tasawwufiyya** है में हवाला देते हैंः "तसव्वुफ़ का मतलब है इंसानी सिफ़ात को बंद करना और फरिश्तों जैसी सिफ़ात को और फरिश्तों के अखलाकियात और आदात से मंसूब करना।" और उन्होने अबू मुहम्मद जरीरी के बयान का भी हवाला दिया हैः "तसव्वुफ़ का

मतलब है सारी अच्छी आदात को मंज़ूर करना और सारी बुरी आदात को परे करना।" [अबू मुहम्मद जरीरी अहमद इबन मुहम्मद इबन हुसैन **311** (**923** ए.डी) में वफ़ात पा गए। वो जुनैद-ए-बग़दादी के आला शागिर्दों में से एक थे।]

**मुहम्मद मासूम** (रहिमा-हुल्लाहु तआला), इमाम-ए-अहमद फारूकी (रहमतुल्लाहि अलैह) के बेटे, एक बड़े इस्लामी आलिम और मुजददीद (इस्लामी) दूसरे हज़ार साल में अपनी किताब मकतूबात के **147**वें खत में मीर मुहम्मद हफ़ी, इंडिया के गर्वनरों में से एक को मंदरजाज़ेल मवाद लिखते हैः

हमारा शानदार खालिक अल्लाह, हमें हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सबसे ज़्यादा सारे जहानों के खालिक के ज़रिए प्यारा, सारे नबियों में सबसे ऊँचे के रास्ते से हटने से बचा। ए मेरे रहमदिल भाई। आदमी की ज़िन्दगी का वक्त बहुत छोटा है। आखिरत की अब्दी ज़िन्दगी में जो चीज़ें हम पर होने वाली हैं वो हमारी इस दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारने पर मुनहसिर होगी। एक दूर अंदेश शख्स, इस दुनिया में अपनी छोटी सी ज़िन्दगी में, हमेशा वो काम करता है जो उसकी दूसरी दुनिया में उसकी ज़िन्दगी को अच्छी और अरामदायक बनाने का सबब बने। वो वही चीज़ें तैयार करेगा जो दूसरी दुनिया में जाने के लिए एक मुसाफिर के लिए ज़रूरी हैं।

अल्लाह ने तुम्हें एक औहदा दिया है कई लोगों पर हुकूमत करने का, जो तुम्हें उनकी ज़रूरियात को पूरा करने का ज़रिया बनाता है। अल्लाह तआला को बहुत ज़्यादा शुक्र अदा करो के तुम्हें उसे ऐसी कीमती और फाएदेमंद ज़िम्मेदारी से नवाज़ा। अल्लाह तआला के बंदों की खिदमत करने की कोशिश करो। ये बात समझ लो के अल्लाह तआला के बंदों की खिदमत करके तुम इस दुनिया में और आने वाली में भी नएमतें हासिल कर सकते हो। ये जान लो के अल्लाह तआला के प्यार को पाने का रास्ता है अल्लाह तआला के बंदों के साथ नरमी रखना, उनके साथ अच्छा करना, मुसकुराते, खुशबाश चेहरे, नरम अल्फ़ाज़ और आराम के साथ उनकी मदद करना। इस पर शक न करना ये आखिरत में तुम्हें अज़ाब से निजाअत दिलाएगा और जन्नत की नएमतों में इज़ाफा। आला नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसको अपनी मंदरजाज़ेल हदीस में बहुत अच्छे से वाज़ेह किया हैः '**अल्लाह तआला ने चीज़ें तखलीक की और भेजी जो उसके बंदों को चाहिएँ। अल्लाह तआला का सबसे प्यारा बंदा वो शख्स है जो उसके बंदों तक उसकी नएमतें पहुँचाने के लिए खिदमत का ज़रिया बनें।**'

नीचे मैं कुछ हदीसें लिख रहा हूँ जो मुसलमानों की ज़रूरतों की कदर का इशारा करें, उनके साथ मेहरबानी करके, अच्छा मिज़ाज रखकर और तारीफ़ और वढ़ावा नरम होने के लिए, बुरदवार और सवर रखने के लिए। उन्हें अच्छे से समझो। अगर तुम उनमें से कुछ को न समझ पाओ तो उन लोगों से सीखों जो अपने मज़हव को जानते हैं और अपने इल्म के मुताविक ज़िन्दगी गुज़ार रहे हों। [हमारे नवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पाक लफ़्ज़ों को **हदीस** कहते हैं।] मंदरजाज़ेल हदीसों को ध्यान से पढ़ो। इन्हें अपने हर लफ़्ज़ और अमल में लाने की कोशिश करो!

**1. मुसलमान भाई हैं। वो एक दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचाते या एक दूसरे से बदतमीज़ी नहीं करते। अगर एक शख्स अपने मुस्लिम भाई की मदद करता है तो बदले में अल्लाह तआला, उसके काम में सहूलियत देगा। अगर एक शख्स एक मुसलमान को परेशानी से बचाएगा, और इस तरह उसे खुश करेगा, तो अल्लाह तआला उसे कयामत वाले दिन के सबसे ज़्यादा मुश्किल वक्त उसे परेशानी से बचाएगा। अगर एक शख्स एक मुसलमान के नुक्स या गलती को छुपाएगा तो हश्र के दिन अल्लाह तआला उसके नुक्स और गलतियों को छुपाएगा।** [बुखारी, मुस्लिम]

**2. जब तक एक शख्स अपने मुसलमान भाई की मदद करेगा, अल्लाह तआला उसकी मदद करेगा। [मुस्लिम]**

**3. अल्लाह तआला ने अपने कुछ बंदों की तखलीक की ताकि वो दूसरों की ज़रूरतों को पूरा कर सकें और उनकी मदद करें। वो जो ज़रूरतमंद हों वो उनका (बंदों) का सहारा लेते हैं। (बंदों) के लिए आखिरत में अज़ाब का कोई खौफ़ नहीं है। [तबरानी]**

**4.अल्लाह तआला ने अपने कुछ बंदों को बहुत सारी दुनियावी नएमतें दी हैं। उसने उनकी तखलीक की ताकी वो उसके (दूसरे) बंदों के लिए फाएदेमंद हों। अगर ये बंदे अल्लाह तआला के बंदों पर नएमतें बाँटे तो उसकी दौलत में कोई कमी नहीं होगी। अगर वो इन नएमतों को अल्लाह तआला के बंदों को नहीं पहुँचाते, तो अल्लाह तआला उनसे अपनी नएमतें वापस ले लेगा और उन्हें दूसरों को दे देगा।** [तवरानी, और इवन आविद-दुनिया] (इवन आविद दुनिया अवदुल्लाह **281** (**984** ए.डी) में वग़दाद में रहलत फरमा गए।)

**5. एक मुसलमान की ज़रूरत को पूरा करना वो दस साल के लिए एतिकाफ़** ([1] एतिकाफ़ का मतलब है रमज़ान के महीने के आखिरी दस दिनों में मस्जिद में रहकर दिन और रात इबादत करना।) **करने से ज़्यादा फाएदेमंद है।और अल्लाह तआला की रज़ा के लिए एक दिन एतिकाफ़ करने से एक आदमी दोज़ख की आग से लंबी दूरी पर चला जाता है।** [तबरानी और हाकिम]

**6. अगर एक शख्स अपने मुसलमान भाई के लिए कुछ काम करता है तो हज़ारों फरिश्तें उसके लिए दुआ करते है।उस काम को करने के उसके रास्ते पर उसके गुनाहों में से एक हर कदम पर माफ़ कर दिया जाता है, और इंसाफ वाले दिन उसे नएमतें दी जाएँगी।** [इबन माज़]

**7. अगर एक शख्स कारोबार के साथ एक मुसलमान की मदद करने जाता है, तो हर कदम के लिए उसे 70 सवाब मिलेंगे और उसके 70 गुनाह माफ़ कर दिए जाएँगे।ये इसी तरह चलता रहेगा जब तक उसका काम पूरा न हो जाए।जब काम पूरा हो जाएगा तो उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाएँगे।अगर वो काम के दौरान वफ़ात पा जाए तो वो बग़ैर सवालात के जन्नत में जाएगा।** [ इबन आबिद दुनिया]

**8. अगर एक शख्स रियास्ती हुक्काम के पास जाए और उनके साथ जददो जहद करे ताकि उसका मुस्लिम भाई परेशानी से आज़ाद हो सके और आराम हासिल कर सके तो, उठाए जाने वाले दिन जब और दूसरे पुल सिरात को पार करते हुए गिर रहे होंगे, तो अल्लाह तआला उस पर से जल्दी गुज़रने में उसकी मदद करेगा।** [तबरानी]

**9. वो काम जो अल्लाह तआला को ज़्यादा पसंद है वो है एक मुसलमान को कपड़े या खाना देकर खुश करना या और किसी दूसरी ज़रूरत को पूरा करना।** [तबरानी]

**10. अल्लाह तआला को अपने फराईज़ के जो काम सबसे प्यारा है वो है एक मुसलमान को खुश करना।** [तबरानी]

अल्लाह के एहकामात को **फर्ज़** कहा जाता है।लिहाज़ा, इस हदीस ए-शरीफ़ से, ये समझ आता है के वो जो उन इबादात को अदा करते हैं जो फर्ज़ हैं वो अल्लाह तआला को ज़्यादा प्यारे हैं।जो चीज़ें नुकसानदायक और बुरी हैं और अल्लाह तआला के ज़रिए

लोगों को करने के लिए मना की गई हैं वो **हराम** कहलाई जाती हैं। अल्लाह तआला उन लोगों को जो अपने आपको हराम से परे रखते हैं उन्हें उन से ज़्यादा प्यार करता है जो फराईज़ (जमा फर्ज़ की) करते हैं। अच्छा मिज़ाज रखना फर्ज़ है। और बुरा मिज़ाज रखना हराम है। बुरे काम को करने से परे रहना वो अच्छे काम को करने से ज़्यादा कीमती और ज़्यादा सवाब वाला है।

**11. जब एक शख्स एक मुसलमान के लिए कोई अच्छा काम करता है, तो अल्लाह तआला इस अच्छे काम से एक फरिश्ते की तखलीक करता है, ये फरिश्ता हर वक्त इबादत करेगा। इसकी इबादत का सवाब उस शख्स को दिया जाएगा। जब वो शख्स मर जाएगा और उसे उसकी कब्र में डाला जाएगा, तो फरिश्ता उसकी कब्र में आएगा, चमकदार और दोस्ती वाले चेहरे के साथ। फरिश्ते को देखने के बाद उसे राहत मिलेगी और वो खुश हो जाएगा। वो पूछेगा, 'तुम कौन हो?' जवाब ये होगा, 'मैं अच्छाई हूँ जो तुमने फलाँ फलाँ शख्स के साथ की थी और खुशी जो तुमने उसके दिल में डाली थी। अल्लाह तआला ने मुझे तुम्हें खुश करने के लिए भेजा है और उठाए जाने वाले दिन तुम्हारे लिए दुआ करने के लिए और तुम्हें तुम्हारी जगह जन्नत में ले जाने के लिए।'**

**12.** आला नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा गयाः 'क्या अहम चीज़ें हैं जो एक शख्स को जन्नत में ले जाने का सबब बनेंगी?' **'अल्लाह तआला का खौफ़ होना और अच्छा मिजाज़ रखना'** आपने जवाब दिया। और जब आपसे पूछा गया हमारे दोज़ख में जाने के बड़े असबाब, आपने कहा, **'जब तुम दुनियावी नएमतों को खो दो तो अफसोस करना, और जब तुम इन नएमतों को हासिल करलो तो खुश होना, और अपनी हद बड़ा देना।'** [तिर्मिज़ी, इबन हब्बान, और बएहकी ([1] अहमद बएहकी **458** (**1066** ए.डी) में निशापुर में वफ़ात पा गए।) [अल्लाह तआला से डरने की पहचान है के उसकी ममनुआत से परे रहा जाए।]

**13. तुम में सबसे ज़्यादा मज़बूत ईमान** (यकीन) **वाला आदमी वो है जो सबसे अच्छा अखलाकी किरदार रखता हो और जो अपनी बीवी के साथ नरम हो!** [तिर्मिज़ी, और हाकिम]

**14. आदमी के खुबसूरत अखलाकी किरदार की वजह से, वो जन्नत में आला मरतबा हासिल करेगा। [फाज़िल इबादत] इबादत उसको ये मरतर्ब हासिल नहीं करा**

**पाएँगी।एक बुरा मिज़ाज एक आदमी को दोज़ख के सबसे निचले हिस्से में डाल देगा।** [तरानी]

**15. सबसे आसान और हल्की इबादत है सिर्फ थोड़ा बोलना और अच्छा मिज़ाज रखना।इस लफ्ज़ पर ध्यान देना मैं कह रहा हूँ!** [इबन आबिद दुनिया]

**16.** एक शख्स ने हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछाः 'सबसे बेहतरीन काम क्या है?' '**अच्छा मिज़ाज रखना,**' हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जवाब दिया।आदमी खड़ा हुआ और चला गया।फिर, कुछ मिंटो बाद वो दोबारा आया और हमारे नबी के सीधे तरफ बढ़ा और वही सवाल पूछा।आपने दोबारा फरमाया, '**अच्छा मिज़ाज रखना।**' आदमी चला गया और जल्द ही वापस आ गया।वो हमारे नबी की उलटी तरफ़ से आया और पूछाः 'अल्लाह तआला को कौनसा अमल सबसे ज़्यादा प्यारा है? उसका जवाब वही था, '**अच्छा मिज़ाज रखना।**' फिर उस शख्स ने आपके पीछे से आते हुए पूछा, 'सबसे ज़्यादा अच्छा और बहुत कीमती काम क्या है?' नबी उसकी तरफ़ मुड़े और फरमाया, '**क्या तुम ये नहीं समझ पाए के अच्छा मिज़ाज रखने का क्या मतलब है? अपना सबसे अच्छा करो और किसी के साथ गुस्सा मत हो।**'

**17. मैं तुम से वादा करता हूँ के एक मुसलमान जो कभी किसी के साथ झगड़ा न हो और जिसने अपने अल्फ़ाज़ से किसी को नुकसान न पहुँचाया हो, चाहे वो सही ही क्यों न हो, तो वो जन्नत में जाएगा।मैं तुम से वादा करता हूँ के एक शख्स जिसने कभी झूठ न बोला हो चाहे मज़ाक करने के लिए या दूसरों को हँसाने के लिए, वो जन्नत में जाएगा।मैं तुम से वादा करता हूँ के वो जिसका मिज़ाज अच्छा हो वो जन्नत में ऊँचे दर्जे हासिल करेगा।** [अबू दाऊद, इबन माज और तिर्मिज़ी]

**18.** हदीस-ए कुदसी में, अल्लाह तआला ऐलान करता हैः '**मुझे इस्लामी मज़हब पसंद है जो मैने तुम्हें भेजा।**' [यानी, मैं उनको पसंद करता हूँ जिन्होने इस मज़हब को अपनाया और अपने आपको उसके अहकामात में ढाला।मैं उनसे प्यार करता हूँ।] **इस मज़हब में होना जब पूरा होता है जब तुम उदार हो और अच्छा मिज़ाज रखते हों।हर दिन ये जानो के तुम अपने मज़हब को इन दोनो के ज़रिए मुकम्मल कर सकते हो।**' [तबरानी]
([1] तबरानी सुलैमान ने दमिकश में **360 (971** ए.डी) में वफ़ात पाई।)

**19**. जैसे के गरम पानी बर्फ को पिघला देता है, वैसे ही अच्छा मिज़ाज एक शख्स के गुनाहों को खत्म कर देता है। जैसे सिरका शहद को खराबा कर देता और उसे खाने लायक नहीं रखता, इसी तरह एक बुरा मिज़ाज एक शख्स की इबादत को खराब कर देता है और खत्म कर देता है। [तवरानी]

**20**. अल्लाह तआला नरम मिज़ाज वालों को चाहता है और मदद करता है। वो तुरश लोगों और गरम दिमाग़ वालों की मदद नहीं करता। [तवरानी]

**21**. वो कौन शख्स है जिसके लिए दोज़ख में जाना हराम है और दोज़ख की आग के लिए जलाना मना है? मैं तुम्हें बताता हूँ। ग़ौर से सुनो! वो सब जो नरम हैं और जो गुस्सा नहीं करते! [तिर्मिज़ी। ये हदीस ए शरीफ़ ऊपर बताए गए **99**वें खत में भी लिखी हुई है।]

**22**. ये अल्लाह तआला की तरफ़ से अपने बंदो को दान है पुरसुकून और आहिस्ता से काम करना। बेसबरा होना और जल्दी करना शैतान का काम है। सबर रखना और संजिदा होना वो है जो अल्लाह तआला को प्यारा है। [अबू यला]

**23**. अपनी नरमाई और नरम अल्फ़ाज़ की वजह से एक शख्स उनके दर्जात हासिल कर सकता जो दिन में रोज़ा रखे और रात में नमाज़ (दुआ) अदा करें। [इबन हव्वान]

**24**. अल्लाह तआला उस शख्स को प्यार करता है जिसे, जब गुस्सा आए तो नरमाई से बरताव करे, अपने गुस्से पर काबू पाले। [इस्फहानी]

**25**. मेहरबानी करके, ध्यान दो! मैं तुम्हे बावर करा रहा हूँ! एक शख्स जो जन्नत में बुलंद दर्जात हासिल करना चाहता है तो उसे उस शख्स के साथ नरमाई से पैश आना होगा जो ग़ैर मुनासिब बरताव कर रहा हो! उसे शख्स को माफ़ कर देना चाहिए जो बेइंसाफ़ी से काम कर रहा हो! उसे कंजूस आदमी के साथ दरियादिल होना चाहिए! उसे अपने दोस्तों या रिश्तेदारों की देखभाल जो उसके पास कभी न आए हों या उसे एक नरमी का लफ़्ज़ कहा हो! [तवरानी]

**26. ये असली मज़बूती नहीं है के किसी के ऊपर हावी हो जाना मज़बूत होने के लिए या हिरो होने का मतलब अपने गुस्से पर काबू पाना।** [बुखारी]

**27. एक आदमी जो मुसकराते हुए चेहरे के साथ सलाम करे उसे नएमतें दी जाएँगी जो खैरात देने वालो को हासिल होती हैं।** [इबन आबिद दुनिया]

**28. अपने मुस्लिम भाई पर मुसकराना; उसे अच्छी बातें सीखाना; उसे बुरी चीज़ें करने से रोकना; रास्ता पूछने वाले अजनबियों की मदद करना; रास्तों पर से पत्थरों, काटों, हडिडयों और उसी तरह की चीज़ें हटाना, जो घिनौनी, गंदी और नुकसानदायक हों; और दूसरों को पीने का पानी देना ये सब खेरात की किस्में हैं।** [तिर्मज़ी]

**29. जन्नत में ऐसे विला है के एक शख्स जो उनमें से एक में हो वो जो जगह चाहे देख सकता है और किसी भी जगह में जो उसने चुनी हो ज़ाहिर हो सकता है।** जब अबू मालिक अल इशारी (रहमतुल्लहि अलैह) ने पूछा ऐसे विला किन्हें दिए जाएँगे, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, '**ये इन लोगों को दिए जाएँगे जो शीरिन जुबान हों, दरियादिल हों और जब दूसरे लोग सो रहे हों तो ये अल्लाह तआला की मौजूदगी और बढ़ाई पर ध्यान कर रहे हों और उससे दुआ माँग रहे हों।**'

ऊपर लिखी गई हदीसें मैने हदीस की किताब जिसका नाम **तरग़ीब व तरहीब** से हवाला की हैं।जो हदीस की कीमती किताबों में से एक है।अबदुल अज़ीम मज़ीरी (रहमतुल्लाहि अलैह) इस किताब को मुनसिफ़ हैं, वो हदीस के बड़े आलिमों में से एक हैं।वो **581 (1185)** में पैदा हुए और मिस्त्र में **656 (1258)** में वफ़ात कर गए।

अल्लाह तआला हमें ऊपर लिखी गई हदीसों की मुताबकत के साथ ज़िन्दगी अता फरमाए।अपना मुहासिबा करो! अगर तुम इनके मुताबिक हो तो अल्लाह का शुक्रिया अदा करो।अगर तुम उनमें से किसी की मुताबकत से नहीं हो तो अल्लाह तआला से दुआ करो के तुम्हें सही करे।अगर एक शख्स की हरकात और अमाल इनके मुताबिक नहीं हैं, तो ये अभी भी उसके लिए नेमत है के अपनी गलतियों को जानना और अल्लाह तआला से उन्हें सुधारने की दुआ करना।एक शख्स जो इनके मुताबिक नहीं है ना ही वो इन मुश्किलात के लिए अफसुरदा है तो उसका इस्लाम के साथ बहुत कमज़ोर राबता है।हमें अल्लाह तआला की पनाह लेनी चाहिए के हमें ऐसी गंदी हालत से बचाए! एक मिसराः

**मुबारक हो उन्हें जिन्होने हासिल किया,**
**शर्म हो उन गरीबों पर, जिन्होने खो दिया!**
**मकतूबात-ए-मासूमिया** से ये तर्जुमा यहाँ पर खत्म होता है।

ऊपर लिखी गई हदीसें मुसलमानों को एक दूसरे के साथ नरमाई, रहम का बरताव और भाई की तरह रहना का हुकूम देती हैं। एक ग़ैर-मुस्लिम को **काफ़िर** (लामज़हबी) कहते हैं। ये हकीकत के मुसलमानों को काफ़िरों के साथ नरम बरताव करना चाहिए और उन्हें नुकसान पहुँचाना भी नज़रअंदाज़ करना चाहिए ये सब सफ़ह **33** पर लिखा है। इस तरह उन्हें (काफ़िरों) को भी ये भी दिखाई दे जाए के इस्लाम अच्छा मिज़ाज, भाई की तरह रहना और मेहनत से काम करने के हुकूम देता है। और इस तरह मुखलिस लोग इच्छा से मुसलमान बन जाते हैं। जिहाद (पाक जंग) करना फर्ज़ है। रियासत जिहाद सिर्फ बंदूकों और तलवारों से नहीं कर सकती, बल्कि सर्द जंग की हिकमते अमली, तबलीग़ और इशाअत के ज़रिए भी कर सकती है। और हर मुसलमान फर्द जिहाद कर सकता है अच्छे अतवार दिखाकर और अच्छी आदात को अमल में लाकर। **जिहाद** करने का मतलब है लोगों को इस्लाम की दावत देना। जैसे के समझा गया के, ये भी जिहाद है के काफ़िरों के साथ नरम रहना और उनकी मुखालफ़त न करना। ये इसलिए, हर मुसलमान के लिए फर्ज़ है।"

हज़रत मुहम्मद मासूम ([1] मुहम्मद मासूम **1079** (**1668** ए.डी) में सरहिंद में वफ़ात पा गए।) फारूकी (रहमतुल्लाहि अलैह), ऊपर लंबे खत के मुंसनिफ़, वो इस्लाम के बड़े आलिमों से एक हैं और आला औलिया में से एक हैं। वो इंडिया के शहर सरहिंद में हिजरत के बाद **1007** में पैदा हुए, और **1079** (**1668**) में रहलत फरमा गए। वो एक बड़े मकबरे में है जो उनके मुबारक वालिद की कब्र से थोड़े फासले पर है। अपने बेशुमार खतों के ज़रिए, उन्होने हज़ारों मुसलमानों रियास्ती हुक्कामों, उस वक्त के बादशाह, सुल्तान आलमगीर (सुल्तान आलमगीर **1118** (**1707** ए.डी) में वफ़ात पाई।)औरंगज़ैब (रहिमाहुल्लाहु तआला) को सलाह दी, और उन्हें भाईचारे के जज़बात, अच्छा मिज़ाज/खुशमिज़ाजी, आपसी मदद, इस दुनियावी ज़िन्दगी के लिए आराम और सुकून और आखिरत में बेइंतिहा खुशी हासिल करने का सबब बने। एक सौ चालीस हज़ार से ज़्यादा लोगों ने उनकी मजालिसें और लेकचरों में शिरकत की। इस तरह वो तसव्वुफ़ के ऊँचे मरतबों पर पहुँचे और उनमें से हर एक एक वली बना। इन मुंतखिब शार्गिदों के अलावा, उनकी गिनती जिन्होने उनको सुनकर अपने ईमान और अखलाकियात को सही किया वो सैकड़ों हज़ारों से ज़्यादा है। चार सौ से

ज़्यादा औलिया जो उनके ज़रिए पढ़ाए और सीखाए गए इरशाद के दर्जे तक पहुँचे। उनमें से हर एक ने जिन शहरों में उन्हें भेजा गया वहाँ हज़ारों लोगों को अज़ाब, लाइल्मी और भटकने से बचाया। उनके पाँच बेटो में से हर एक बड़ा आलिम और वली था। और उनके सारे जानशीन भी ऐसे थे। वो बहुत सारी कीमती किताबें छोड़ गए हैं जो लोगों को रोशनी देती हैं।

एक सच्चा मुसलमान तौहमपरस्ती में यकीन नहीं रखता। वो सिर्फ इन चीज़ों पर हँसता है जैसे जादू, वहम, किस्मत का हाल, झाड़ फूंक और तावीज़ जिसमें कुरआन के अलावा कुछ और लिखा हो। वो नीले मोतियों, मोमबत्तियाँ तारें और मकबरों पर धागे बाधना, और किसी पर भी जो जादू करने का दावा करे वो उन पर हँसते हैं। दरहकीकत, इनमें से ज़्यादा चीज़ें हमें दूसरे मज़ाहिब ने पहुँचाई हैं। आला इस्लामी आलिम इमाम रब्बानी (रहमतुल्लाहि अलैह) ने उन लोगों को इस तरह जवाब दिया जो मज़हब के आदमियों से किसी "चमत्कार" की उम्मीद रखते हैंः उनमें से कुछ चमत्कार नहीं कर सकते, लेकिन फिर भी वो दूसरों से ज़्यादा अल्लाह तआला के करीब हैं।" सबसे बड़ा चमत्कार है के इस्लाम को सीखना और ज़िन्दगी को इस्लाम की मुनासबत से गुज़ारना।

हाल ही की खोज, जो स्टेनफार्ड यूनिवर्सिटी में की गई, अमेरिका में, उससे ये दिखाई दिया के कुछ लोगों के पास "छठी हिस" भी है, जो उन्हें ऐसे काम करने के लायक बनाते हैं जैसे बंद डिब्बे में कितनी चीज़ें हैं उन्हें गिनकर, बंद लिफ़ाफ़े में क्या लिखा उसे पढ़कर, जो शख्स दूर है उससे राब्ता करके, या एक शख्स की सोच पढ़कर। सारी नसलों और मज़ाहिब के लोगों ने इस तर्जुबे में शमूलियत की, सबने इसमें कामयाबी हासिल की, उनके मज़हब या नसल के बग़ैर। जैसा के कभी ऐसा देखा गया दूर मश्रिक में, चीन में और इंडिया में कुछ चीन के पेशिनगोई करने वाले और इंडिया के फ़कीर हमें अपनी नाकाबिले सोच और नाकाबिले यकीन महारतों के ज़रिए हैरान कर देते हैं। उनमें से कुछ ये तास्सुर देते हैं के वो उड़ रहे हैं, जबकि दूसरे हवा में उछाली गई रस्सियों पर चढ़ते हैं बग़ैर सहारे के। दूसरी तरफ़, बुद्ध मज़हब, अकीदे का निज़ाम जो चीनियों के ज़रिए माना जाता है, वो फ़लसफ़े के निज़ाम की तरह है। **बुद्धा (563-483** बी.सी), कन्फयूशियस (**531-479** बी.सी), और Loatse सब मश्हूर फ़िलास्फर हैं। जो उसूल उन्होने बताए वो आला अख़लाक के उसूल थे। बुद्धा ने लोगों को मुखतलिफ़ इच्छाओं को छोड़ने को कहा, अच्छे अमाल को करने के लिए तपस्वी तपस्या से गुज़रना, तहमुल रखना, एक दूसरे की मदद करना और बुराई के

खिलाफ़ लड़ाई करना। उन्होने कहा, "जैसा तुम्हारे साथ होना चाहिए वैसा ही करो।" लेकिन उसने अल्लाह तआला के नाम का ज़िकर नहीं किया। अगरचे बुद्धा ने कहा के वो सिर्फ एक आदमी है, लोगों ने उसके मरने के बाद उसे देवता बना दिया। उन्होने उसके लिए मंदिर बनाए, और इस तरह बुद्ध मत एक तरह के मज़हब में बदल गया। हिंदुस्तानियों का असली मज़हब, आग की पूजा या, एक तरह की बुतपरस्ती है। बुतों के अलावा वो कुछ जानवरों (मिसाल के तौर पर गाय) की पूजा करते हैं। न ही बुद्ध धर्म न ही आग की पूजा कोई मज़हब है। लेकिन, फिर भी ये हकीकत है के इनमें शामिल कुछ लोग ऐसी महारतें दिखाते हैं के वो एक चमत्कार की तरह लगती हैं। वो इन महारतों को खुद नज़मों ज़बत की सीख, जो परहेज़, खास जिस्मानी कसरतें और लंबे अरसे तक महनत करने के बाद हासिल करते हैं। इसी तरह चुंबक के ज़रिए, जो एक आदमी को बेहोशी की हद तक जमा देती है, और अमले तवज्जुह, जिसके ज़रिए एक आदमी को काबू में किया जा सकता है, और उसके अमाल पर काबू किया जा सकता है, वो सिर्फ खास किस्म की ताकतों से ज़्यादा कुछ नहीं जो कुछ लोगों के पास होती हैं।

बहरहाल, जो कुछ हम देख रहे हैं वो चमत्कार नहीं है। वो सिर्फ ज़ाएद हुनर है। आज, साईसदानों ने ये बात कायम करदी के सारे लोगों, कम या ज़्यादा, इस तरह का हुनर होता है; यानी कुछ लोग इसे ज़्यादा तरक्की की किस्म में रखते हैं; कुछ लोग अपनी काबिलियत को खास निज़ाम के ज़रिए निखारते हैंः और ये के हर कोई अपनी छठी हिस को नए और आसान तरीकों से जगाने के काबिल होते हैं ये वक्त के साथ खोज किया गया है। फिर अगर एक शख्स "छठी हिस" को तैयार शुदा शक्ल में सरमायाकारी के साथ इसे एक महारती हुनर की तरह नहीं दिखाता बल्कि चमत्कार के नाम पर दिखाता है, तो इसे एक धोखा ही समझना चाहिए।

इमाम-ए अहमद रब्बानी (रहमतुल्लाहि अलैह) ने अपने **293**वें खत में लिखाः "अजूबे और चमत्कार दो किस्म के हैं। पहला इल्म और मारिफ़त (रूहानी इल्म) जो अल्लाह तआला की इंफ़ेरादियत से तअल्लुक रखता है, उसकी सिफ़ात और उसके अमाल। ये इल्म सोचने या अकल के साथ हासिल नहीं किया जा सकता। अल्लाह तआला ये अपने चाहने वालों पर निछावर करता है। दूसरी किस्म का इल्म दुनियावी राज़ों के मुतअल्लिक है। ये चमत्कार काफ़िरों साथ के साथ उसके प्यारों पर भी बख्शा जा सकता है। पहली किस्म का चमत्कार कीमती है। वो उन्हें अता किया जाता है जो सही रास्ते पर हों और अल्लाह तआला

के ज़रिए चाहे जाते हों। लेकिन लाइल्म सोचते हैं के दूसरा वाला ज़्यादा कीमती है। जब वो ये लफ़्ज़ "चमत्कार" सुनते हैं वो सिर्फ दूसरे के बारे में सोचते हैं। कोई भी जो अपने नफ़स को लोगों से साफ़ रखता है और भूख से वो मख्लूक के राज़ों को खूब समझता है। लेकिन क्योंकि ज़्यादातर लोग दुनियावी चीज़ों को ज़्यादा फ़ौकियत देते हैं, वो दूसरी किस्म रखने वालों को औलिया समझते हैं। वो सच्चे लोगों की सराहना नहीं करते। वो कहते हैं के अगर वो असली औलिया हैं तो वो हमें हमारी हालत से आगाह करें। इस गलत तर्क को इस्तेमाल करके वो अल्लाह तआला के प्यारे बंदों से मुंकिर होते हैं।"

**260**वें खत में उन्होने लिखा, "वली होने का मतलब है अल्लाह तआला के नज़दकि होना। मख्लूक के साथ वाबस्ता चमत्कार हो सकता है इस दर्जे पर जो पहुँचे हो उन्हें बख्शा गया हो। ज़्यादा चमत्कारों से मुराद नहीं है के मालिक, वली, ऊँचे मरतबे वाला है। एक वली को ये जानने की ज़रूरत नहीं है के उसके अंदर से चमत्कार निकलते हैं। अल्लाह तआला एक ही लम्हें में एक वली की फिगर कई मुल्कों में ज़ाहिर कर सकता है। वो एक दूसरे से बहुत दूर जगहों पर अनोखी चीज़ों को करते हुए देखा जा सकता है। लेकिन वो इन सब चीज़ों से बेखबर होता है। कुछ वली हो सकते हैं जिन्हें अपनी इस हालत का पता हो, लेकिन वो अजनबियों को ये बात ज़ाहिर नहीं करते क्योंकि वो इन्हें इतनी अहमियत नहीं देते।"

इबन हजर मक्की (रज़ी अल्लाहु अन्ह), जो अहल अस सुन्नत के आलिमों के प्यारे हैं और जिनके अल्फ़ाज़ सुबूत के तौर पर लिए जाते हैं, अपनी किताब **ज़वाजिर** में "एहतिकार" सबक के फौरन पहले मंदरजाज़ेल हदीस बयान करते हैंः **"मैं अल्लाह तआला के ज़रिए कसम लेता हूँ के उनके ज़रिए की गई इबादत जिन्होने खाने का एक लुक्मा भी हराम का खाया हो वो 40 दिन तक कुबूल नहीं की जाएगी।"** और, **"हराम के पैसों से खरीदी गई कमीज़ को पहनकर सलात अदा की गई कुबूल नहीं की जाएगी।"** और **"खैरात जो हराम के पैसों से दी गई हो वो कुबूल नहीं की जाएगी। उसके गुनाह कम नहीं किए जाएँगे।"** सुफ़यान-ए सवरी कहते हैं के पाक अमाल करना और हराम पैसे से कायम की गई बुनियादें ऐसी ही हैं जैसे पैशाब के साथ गंदगी को धो लिया हो।

एक सच्चा मुसलमान अपनी इबादत के अमाल को दूसरों के सामने दिखाते नहीं हैं। इबादत खुफ़िया की जाती है या मस्जिद में जमाअत में। जब एक अच्छा मुसलमान कुछ भलाई का काम करना चाहता है या एक शख्स को खैरात देना चाहता है, तो वो इसे भी

खुफ़िया तरीके से करेगा, और वो एक शख्स के जज़बात को ठैस नहीं पहुँचाएगा या उसके वकार को नुकसान नहीं करेगा उसे याद दिलाकर। अल्लाह तआला ने इस बात पर ज़ोर दे कर बार बार इस तरीके से करने का कुरआन अल करीम में हुकूम दिया है।

अलमुख्तसर, एक सच्चा मुसलमान एक मुकम्मल इंसानी मखलूक है जो अच्छे किरदार की सारी खुबियाँ रखता है, वो पुरे तौर पर आला अखलाकियात वकार, इंतिहाई पाक, जिस्मानी और रूहानी तौर पर और हर मामले में भरोसेमंद है।

आला इस्लामी आलिम इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि अलैहि) **450 (1058)-505-(1111)** ने इंसानों को चार ग्रुपों में अपनी किताब **किमया-ई सआदत** में दरजाबंदी की है, जो तकरीबन नौ सौ साल पहले फारसी ज़बान में छापी गईः "पहला ग्रुप वो है जिसे खाने, पीने और दुनियावी आराम के मज़े लेने के अलावा और कुछ नहीं पता; दूसरे ग्रुप में वो लोग शामिल हैं जो ताकत इस्तेमाल करते हैं, लोगों को सताते हैं और ज़ालिम हैं; तीसरा ग्रुप उनपर मुश्तमिल है जो दुसरों को चालबाज़ी से धोखा देते हैं; और सिर्फ चौथा ग्रुप है जो सच्चे मुसलमानों पर मुश्तमिल है जिनमें ऊपर बताए गए आला अखलाक हैं।"

लेकिन एक चीज़ भूलनी नहीं चाहिए के हर शख्स के दिल से अल्लाह तआला की तरफ़ रास्ता जाता है। सवाल ये है के किस तरह इस्लाम की रौशनी लोगों तक पहुचाई जाए। वो शख्स जो अपने दिल में रोशनी महसूस करे; चाहे वो किसी भी ग्रुप का हो, अपने गलत कामों पर पछताए और सही रास्ता ढूँढ ले।

अगर सारे लोग इस्लाम को कुबूल कर ले तो, ना ही बुराई, ना ही धोखा, ना ही जंग, ना ही मज़लूम, ना ही ज़ुल्म, इस दुनिया में बाकी रहे। ये इसलिए, हम सबका फर्ज़ है के मुकम्मल और सच्चा मुसलमान बनने के लिए अपना सबसे अच्छा करें और दुनिया में इस्लाम को फैलाएँ, उसके जुज़ और उसकी तफ़सील बताकर। ऐसा करना भी जिहाद है।

हमेशा लोगों के साथ मीठा और समझ के साथ बोलो, चाहे वो किसी और मज़हब के क्यों न हो। अल्लाह तआला ने कुरआन अल करीम में इसका हुकूम दिया है। फिकह की किताबों में लिखा है के ग़ैर मुस्लिम के जज़बात को ठैस पहुँचाना या उनपर तंज़ करना क्योंकि वो काफ़िर हैं ये गुनाह है। एक मुसलमान जो ऐसा करता है वो सज़ा पाएगा। इसका मकसद हर एक को ये बताना है के इस्लाम कितना बुलंद है, और ये जिहाद मीठी ज़ुबान,

इल्म, सब्र, और ईमान के साथ किया जा सकता है। वो जो किसी को कायल करना चाहता है इस हकीकत के बारे में तो उसे पहले, खुद यकीन करना होगा। और एक मुसलमान अपना तहमुल कभी नहीं खोता या फिर उसे अपने यकीन को बताने में कई परेशानी नहीं होती। इस्लाम की तरह साफ़ और तर्क वाला कोई और मज़हब नहीं है एक शख्स जो इसके सार को समझ लेता है तो वो दूसरों को आसानी से बता सकता है के मज़हब ही सिर्फ सही मज़हब है। हमें दूसरे मज़हब के लोगों को बद मिज़ाज नहीं मानना चाहिए। यकीनन, कुफ्र (नापाकी), यानी, एक मुसलमान नहीं हो सकता, वो हमेशा बुराई है। क्योंकि बेयकीनी नुकसानदायक और ज़िन्दगी का गलत तरीका है जो एक शख्स को इस दुनिया में और आखिरत में तबाही पर ले जाती हैं, अल्लाह तआला ने इस्लाम मज़हब भेजा ताकि लोग भाई चारे के साथ इस दुनिया में सुकून और आराम से रहें और आखिरत में न खत्म होने वाले अज़ाब से बचें। काफ़िर (लामज़हबी), वो हैं, जो मुसलमान नहीं हैं, वो मनहूस लोग हैं जो इस खुशी के रास्ते से भटक गए हैं। हमें उनपर रहम करना चाहिए और उन्हें सताना नहीं चाहिए। उनकी चुग़ली करना भी ममनुअ (हराम) है। क्या एक शख़्स जन्नत के लिए बना है या दोज़ख के लिए ये सब उसकी आखिरी साँस पर मखसूस होगा। सारे आसमानी मज़ाहिब एक अल्लाह पर यकीन रखते हैं, सिर्फ, बेशक, उनके अलावा जो नापाक हैं। कुरआन अल करीम में सारे लोगों को सही रास्ते पर बुलाया है। उसने वादा किया है के वो उस शख्स के माज़ी के सारे गलत काम माफ़ कर देगा जो इस रास्ते को अपना लेगा। वो जो दूसरे मज़ाहिब में हैं वो गरीब लोग हैं शैतान के ज़रिए बहकाए गए या उनके ज़रिए जो इस्लाम के बारे में कुछ भी नहीं जानते। उनमें से ज़्यादातर लोग बदकिस्मत हैं जो, जबकि हमारी तरह एक अल्लाह में यकीन रखते हैं और उसके प्यार को हासिल करने की कोशिश करते हैं, वो गलत तरीकों में गुमराह कर दिए जाते हैं। तहमुल के साथ, शीरिन जुबान, वजह और तर्क के साथ, हम उनको सीधे रास्ते पर रहनुमाई कर सकते हैं।

सारे आसमानी मज़ाहिब, आलमियत के ज़रिए नापाक किए जाने से पहले, यकीन और एक अल्लाह तआला की मौजूदगी के बारे में पढ़ाते थे, वो सब अकीदे के उसूल के मामले में एक जैसे थे। तीन बड़े मज़हब हज़रत मूसा से हज़रत मुहम्मद (अलैहि सलाम) तक, यानी यहूदी मज़हब, ईसाई मज़हब और इस्लाम, सब एक अल्लाह में यकीन रखते थे और पढ़ाते थे के सारे नबी (अलैहिमुस्सलावातु वतसलीमात) हमारी तरह इंसान थे। लेकिन यहूदियों ने हज़रत ईसा और मुहम्मद (अलैहिमुससलाम) से इंकार किया, और ईसाइयों ने अपने आपको कभी बुत परस्ती से बचाया नहीं, उन्होने सोचा हज़रत ईसा (अलैहि सलाम) अल्लाह के बेटे हैं, हालांकि

हज़रत ईसा ने कहाः “मैं तुम्हारी तरह एक इंसान हूँ।” “मैं अल्लाह का बेटा नहीं हूँ।” वो अभी भी तीन मुख्तलिफ़ देवताओं की इबादत करते हैं बाप (अल्लाह तआला), बेटा (ईसा अलैहि सलाम), और पाक रूह के नाम के तहत। वहाँ Honorius जैसे पादरी भी हैं जिन्होने इस चीज़ को जाना के ये झूठ और गलत है, और इसे सही करने की कोशिश की। लेकिन इस गलत अकीदे की इसलाह सिर्फ इस्लाम के साथ मुमकिन थी, जिसे अल्लाह तआला ने अपने आखिरी नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़रिए ज़ाहिर किया। फिर कोई इस हकीकत से इंकार नहीं कर सकता था के इस्लाम, जो अपने अंदर इन तीनों मज़ाहिब के अहम उसूलों को समोए है और जो उन्हें तवहहुम परस्ती से पाक करेगा जो उनके अंदर बसी हुई है वही सिर्फ एक सच्चा मज़हब है।

फैलोवस, एक अंग्रेज़ आदमी जो इस्लाम में शामिल हो गया था, उसने कहाः “मार्टिन लूथर जबकि वो ईसाई मज़हब में बेशुमार गलत अकीदों को सही करने की कोशिश कर रहा था, वो इस हकीकत से बेखबर था के हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उससे 900 साल पहले इस्लाम मज़हब का ऐलान करके सारी गलतियों को सही कर चुके हैं। इसलिए ये ज़रूरी है के इस्लाम को ईसाईयत का मुकम्मल पाक रूह मानकर कुबूल करलो और ये यकीन करो के हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आखिरी नबी हैं।

# दूसरा हिस्सा

# कुरआन अल करीम और तोरह और बाएबल की आज की कापियाँ

## तआरूफ़

आज ज़मीन पर तीन बड़े मज़हब हैंः इस्लाम, यहूदियत और ईसाईयत। इनमें से हर एक मज़हब के पास एक मुकददस किताब है जो इसके मानने वालों का दावा है कि अल्लाह के अलफ़ाज़ हैं। यहूदियों की मुकददस किताब **तोरह** है। ईसाइयों की पाक किताब बाएबल है, इसके दो हिस्से हैंः **पुराना अहद नामा**, यानी तोरह और नया **अहद नामा**, यानी,

(चार) इंजील और तकमिले रसाईल। मुसलमानों की मुकददस किताब **कुरआन-अल करीम** है।

जबकि ईसाई ईसा (जिसस) की इबादत करते, हम उन्हें एक नबी के तौर पर जानते हैं। क्योंकि वो एक नबी थे। अल्लाह तआला, ने फितरी बात है एक मुकददस किताब उनपर नाज़िल की। इसलिए, असली इंजील, (यानी, असली पाक कॉपी बाएबल की) कोई शक नहीं है **अल्लाह के लफ्ज़** हैं। सिर्फ, वही असली इंजील आज दुनिया में मौजूद नहीं। आज के ईसाइयों के कब्ज़े में जो बाएबल की कापियाँ हैं उसमें बहुत कम इक्तबास असली इंजील से है। असली इंजील हिब्रू ज़ुबान में है। वो असली इंजील उस वक्त के यहूदियों के ज़रिए उसके खिलाफ़ ग़ैर मामूली मूहीम के नतीजे में ग़ायब हो गई। बाद, में बाएबल के नाम से बहुत सारी मुख्तलिफ़ किताबे अंधविश्वासों से भरी हुई ज़ाहिर हो गई वक्त के दौरान, वो नाकाबिल किताबें बहुत सारी ख़ामियों और गलतियों के साथ ग्रीक और लैटिन में तर्जुमा की गई, कई इकतिबास उसमें शामिल हुए, लगातार तबदिलियाँ होती रहीं, और नतिजे के तौर पर कई इंजील लिखी गई। उनमें से ज़्यादातर इंजील मुख्तलिफ़ वक्त में की गई मज़हबी कॉसिलों में रद कर दी गई, और आज सिर्फ चार इंजील मौजूद हैं।

यह हकाईक आगे के सफहों में साबित किए जाएँगे। कॉट छॉट, इस्लाह और वजाहतें अभी भी जारी हैं। दूसरी तरफ़, कुरआन अल करीम, जब से हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल हुआ तब से अपनी असली शक्ल में है आज तक बग़ैर किसी मज़र के तबदीली के।

जो हकाईक हमने अभी तक बताएँ वो सिर्फ मुसलमानों की राए नहीं हैं। दरहकीकत, मग़रीबी साईन्सदानों और माहिरीन ने बाएबल को दोबारा जाँचा और ये साबित किया के ये असली अल्लाह तआला के लफ्ज़ नहीं हैं। हमें ये नहीं भूलना चाहिए के आज, जबकि **21**वीं सदी दाखिल हो गई है और जब दुनिया की साईन्स और इल्म इतना ज़्यादा बहतर हो चुका है के सबसे कम खेती वाले मुल्क भी यूनिवर्सिटियाँ कायम कर रहे हैं, लोगों से ये उम्मीद नहीं लगाई जा सकती के वो आँखे बंद करलें और एक उसूली अकीदे को ऐसे ही ले लेंगी जो तुम उनपर थौपने की कोशिश कर रहे हो जैसे कोई चीज़ जो तुमने अपने बाप से या उस्ताद से सुनी और जो तुम अपने आपको को भी वाज़ेह नहीं कर सकते। आज के जवान लोग अंदरूनी फितरत के अंदर तल्लीन होते हैं और मामले के असली असबाब को ढूँढते हैं, और वो उन चीज़ों को रद कर देते हैं जो बेसमझ हो। मिसाल

के तौर पर, तुर्की में हर साल हज़ारों नौजवान यूनिवर्सिटि का दाखिला इम्तिहान देते हैं। इसमें कोई शक नहीं के ये नौजवान जो सबसे नए तरीकों से पढ़े हैं, वो मज़हबी नज़रयात और खयालात जो उन्हें बताए गए या पढ़ाए गए वजह और मंतिक के ज़रिए पास कर पाएँगे। ये सच बात है के, आज के मग़रिबी माहिरीन तोरह और बाएबल की कापियों में गलतियों को तकसीम कर रहे हैं जो उनके पास हैं। अपने मुसलमान भाईयों के दिमाग़ों को हम आज की तोरह, बाएबल और कुरआन अल करीम के बीच के फ़र्क को ताज़ा करेंगे, हम उन माहिरीन की इशाअत को इस्तेमाल करेंगे। एक दूसरा ज़रिया जिससे हम इस बाब को तैयार करने में फाएदा उठाएंगे वो है एक अमेरिकी मुंसनिफ़ हाउसर जो मज़हबी मज़मून पर लिखता है। इसके अलावा, Anselmo Turmedo एक जाना माना स्पेनिश पादरी था, उसने **823** [**1420** सी.ई] में इस्लामी मज़हब अपनाया और अपना नाम बदल कर अबदुल्लाह तर्जुमान रख लिया। हमने पढ़ा के आलिम की किताब **तौहफ़त-उल-एरीब** जो बाएबल में गलतियों को देख रही थी, **बाएबल के मोती**, पाकिस्तान के एस मेर्रन मुहिउददीन साहिब इकाबल के ज़रिए लिखी गई, तुर्की किताब **दिया-उल कुलूब** तोरह और बाएबल पर की गई खोज का काम र्हपुत के इस्हाक एफ़ंदी [डी. **1309** [**1891** सी.ई] एक आला मुंसनिफ़ और उसमानिया विज़ारते तालीम के एक रूकन के ज़रिए लिखी गई, और जो **1295** [**1878** सी.ई] में छापी गई। आखिरी किताब अंग्रेज़ी तर्जुमा की गई और हकीकत किताबेवी ने इस्तांबुल में **Could not answer** के नाम के साथ छापा। इसके अलावा एक किताब **शमस उल हकीक 290** सफ़हों के दोबारा लिखी गई खवाजा इसहाक के ज़रिए और **1278** [**1861** सी.ई] में छापी गई, जिसे इस्तांबुल में सुलैमानिया पब्लिक लाएब्रेरी के डुगुमलु बाबा सेकशन में नम्बर **204** पर दर्ज किया गया, जिसने साबित किया बसूकी दसतावेज़ के साथ के कुरआन अल करीम अल्लाह के लफ़्ज़ है और ये के ईसाईयों की मुकददस किताब, जिसे वो बाएबल कहते हैं, वो एक तारीख की किताब है जिसे बाद में लिखा गया। इसके अलावा, **इज़ाह उल मेराम** हादजी अबदुल्लाह बिन दस्तान मुस्तफ़ा एफ़ंदी बोसनिया के (डी. **1303** [**1885** सी.ई]) के ज़रिए तुर्की में लिखी गई और **1288** [**1871** सी.ई] में छापी गई छापेखाने में जिसके मालिक यहया एफ़ंदी थे, जो कानवेंट ऑफ मुस्तफ़ा पाशा के शैख थे जो एदिरनकपि के फौरन बाहर कायम थी, ये सुलेमानिया लाएब्रेरी की नाफ़िज़ पाशा सेक्शन में **771** नम्बर से दर्ज की गई। इसने मुखतलिफ़ दस्तावेज़ से साबित किया के ईसाईयत एक मज़हब है जो पूरी तरह पाखंड से उलझन में हो चुका है। दूसरी किताब जो हमने **वुज़हाल उल हक** रहमतुल्लाह एफ़ंदी इंडिया के ज़रिए लिखी गई है उनसे ली है। इस किताब ने ईसाईयत पर शदीद ज़रब लगाया है और इस हकीकत को बताया है के ये बेबुनियाद मज़हब था। ये मंदरजाज़ेल तरीके

से फारसी किताब **मकामात-ए-एहयार** के **396**वें सफ़हे पर लिखा हैः फंडर एक प्रोटेस्टेंट पादरी, ईसाईयों के बीच में बहुत मश्हूर था। प्रोटेस्टेंट मिश्नरी तंज़ीम ने पादरियों की एक कमीशन फंडर की सदारत में मुंतखिब की और इंडिया भेज दिया। उनका काम कोशिश करना और ईसाईयत को फैलाना था। **1270** [**1854** सी.ई] मे एक साईन्सी डिबेट इस कमिशन और दिल्ली के आला इस्लामी आलिम रहमतुल्लाह एफ़ंदी के बीच में मुंकिद हुई उन डिबेट/बहसों में सबसे गरम रबी उल अव्वल के महीने और रजब की ग्यारह तारीख को हुए। लम्बी बहस के बाद, जब अंग्रेज़ी फौजो ने इंडिया पर चढ़ाई की [जिसके बाद उन्होने मुसलमानों पर, और खासतौर से सुल्तान और मज़हबी आदमियों पर अफसोसनाक मुसिबतों को मुरतब किया], रहमतुल्लाह एफ़ंदी मक्का ए मुर्करम में हिजरत कर गए। **1295** में [**1878** सी.ई] वही मिश्नरियों की कमिशन इस्तांबुल आई और ईसाई मज़हब को फैलाने के लिए एक मुहीम चलाई। बड़े वज़ीर (सदर-ए-आज़म) खैर-उद दीन पाशा ने रहमतुल्लाह एफ़ंदी को इस्तांबुल बुलाया। रहमतुल्लाह एफ़ंदी को अपना मुखालिफ़ देखकर मिश्नरियों के लिए डर कर भागने के लिए काफी था। इस वक्त बहस एक छोटे से रसमी काम के अलावा कुछ न थी, और मिश्नरी, आलिम के सवालों का कोई जवाब नहीं दे पाए, अपने पैरो पर चले गए। पाशा ने आला आलिम को गरमजोशी के साथ मुबारकबाद दी और उनकी तरफ आला नरमाई दिखाई, उनसे एक किताबचह लिखने की इलतिजा की जिसमें किस तरह  ईसाईयों को उन्होने झूठा ठहराया और उनको नाकाम कर दिया। इस तरह उन्होने अपनी किताब **इज़हार उल हक़** अरबी में  लिखी रजब की **16** को और ज़िउल हज तक उन्होने उसे खत्म कर दिया, वो मक्का चले गए। खैर उद-दीन पाशा ने किताब को तुर्की में तर्जुमा कराया और फिर दोनो तजुमों को छपवा दिया। बाद में इसे यूरोपी ज़ुबानों में हर मुल्क में छपवाकर इशाअत कराई गई। अंग्रेज़ी अख़बारों ने लिखा किताब को फैलाना ईसाईयत को नाकाबिले यकीन नुकसान पहुँचाएगा मुसलमानों के खलीफ़ा, अबदु उल हमीद खान ii  रहमतुल्लाहि अलैह (डी. **1336** [**1918** सी.ई] ने एक बार दोबारा आला आलिम को **1304**, में रमज़ान के मुबारक महीने में बुलाया, और गहरे एहतराम और सख़ावत के साथ अपने महल में मेहमाननवाज़ी की रहमतुल्लाह एफ़ंदी मक्का-ए-मुर्करमा में रमज़ान के महीने में **1308** [**1890** सी.ई] में वफ़ात पा गए।

इन सब किताबों के साथ, हमने मग़रीबी ओरिएंटलिस्ट्रस के ज़रिए पिछली सदी में कुरआन अल करीम के बारे में लिखी गई किताबों को भी पढ़ा फिर हम इस नतीजे पर पहुँचे के इन दो मुकददस किताबों का ग़ैर मतवाज़िन मवाज़ना करके पढ़ा जाए तो ये ज़ाहिर होगा

के उनमें से कौन सी अल्लाह के लफ़्ज़ हैं ऐसी ग़ैर मुतनाज़ेअ सफ़ाई के साथ के ज़िद्दी शख़्स भी चाहे वो किसी भी मज़हबी पसमंज़र को वो भी इससे इंकार नहीं कर पाएगा। हमने इस बाव को छः डिविजन में तरतीव दे दिया है। पहली तीन डिवीजन कुरआन अल करीम और तोरह और बाएवल की मौजूदा कापियों से वावस्ता हैं, जैसे के हमने ऊपर वताया है।

आखिरी के तीन डिविज़न हमारे नवी मुहम्मद अलैहि सलाम; आपकी मोअजिज़ात, अच्छाइयाँ और खुवसूरत अखलाकी सिफ़ात को वक्फ़ कर दिए हैं। इन डिविजन में शामिल जानकारी एक तारीख की किताब तुर्की में जिसका नाम **मिरआत ए काएनात** है जिसे जाने माने इस्लामी आलिम Nisancizade मुहम्मद एफ़ंदी रहिमाहुल्लाहु तआला के ज़रिए लिखा गया है उसमें से ली गई है। वो **1031** [**1719** सी.ई] में वफ़ात पा गए थे। उनकी किताब **1269** [**1853** सी.ई] में इशाअत की गई।

हम उम्मीद करते हैं के हमारे प्यारे पढ़ने वाले हमारी इस किताब के वाव को गहरी दिलचस्पी से पढ़ेंगे और दी गई जानकारी से फायदा उठाएँगे। अल्लाह तआला हम सबको सच्ची रहनुमाई से नवाज़ें। वो हम सबको सच्चे रास्ते पर रखे। आमीन।

*दूसरों को परेशान मत कर, और दूसरे तुझे परेशान नहीं करेंगे ;*
*किसी को धोखा मत दे , और कोई तुझे धोखा नहीं देगा।*
*इस्लाम के दुश्मन से पानी तुम्हें कभी मुतमईन नहीं करेगा ;*
*न ही काफ़िर होगा, उसे आग लगे, तुम्हें थोड़ा जला दे,*

*सही रास्ते पर हो, अल्लाह कभी शर्मसार नहीं करेगा !*

*हर तरह का नुकसान तुझ से तेरे पास ही आएगा ;*
*तेरा ही बुरा ख्याल, अकेले, तुझे बदनाम करेगा।*
*रहने वाला वो है जो रिहाईश की अपनी इज़्ज़त रखता है।*
*इस्लाम ही सिर्फ़ ज़रिया है जो तेरी रहनुमाई करेगा।*

*सही रास्ते पर रहो, अल्लाह तुम्हें कभी शर्मसार नहीं करेगा।*

*सारी दुनियावी चीज़ें फ़ानी हैं, कुछ भी हमेशा नहीं रहेगा ,*
*दुनियावी चीज़ें सारी बेकीमत हैं, उनके लिए कभी अफसोस न करना।*

*सही रास्ते को मानो, फिर तुम हमेशा के लिए हिफ़ाज़त में ,*
*वफ़ादार रहो हक तआला के, और दुश्मन तुझे कभी नुकसान नहीं पहुँचाएगा।*
*सही रास्ते पर रहो, अल्लाह तुम्हें कभी शर्मसार नहीं करेगा।*

*किसी को नीचा करने के लिए, कभी जुल्म से सलाह न लें;*
*तेरे दोस्तों का, गलत बरताव तुझे महरूम कर देगा।*
*अपने आपको ज़िल्लत न दे, न ही ग़ैर हाज़िर की चुग़ली कर;*
*सच्चा रह, काम कर, अल्लाह तुझे इनाम देगा।*

*सही रास्ते पर चल, अल्लाह तुझे शर्मसार नहीं करेगा।*

*अल्लाह, जो अब्दी है, अगर वो चाहे, तेरी हिफ़ाज़त करे।*

*चाहे अगर दुश्मन ईमान वाले की पाकी पर लड़ाई करे।*

*जैसे के मुस्लिम कौम में कहा जाता है, इनाम जो लगता है वो*

*एक शख्स का पाक अमल है।सही रास्ते पर रहो, अल्लाह तुझे शर्मसार नहीं करेगा।*

*छोड़ दे इस गड़बड़ पाखंड को, और खालिस ईमानदारी कर, एक बढ़बोला मुँह मत बन, और कभी बग़ैर सोचे समझे न बोल।कितना ही तू अपने पाखंड को छुपाने में माहिर हो, हफ़ तआला से, कुल ले आलिम, कुछ भी छुपाकर नहीं कर पाएगा।*

*सही रास्ते पर रहो, अल्लाह तुझे शर्मसार नहीं करेगा।*

## तोरह और बाएबल की आज की कापियाँ

आज दुनिया में तीन बड़े मज़हब हैं जो अल्लाह तआला की मौजूदगी में यकीन रखते हैंः यहूदी मज़हब, ईसाई मज़हब और इस्लाम। **1979** में बैनुल अकवामी आंकड़ो के मुताबिक ज़मीन पर नौ सौ मिलियन (900,000,000) ईसाई, छह सौ मिलियन (600,000,000) मुसलमान, और पंद्रह मिलियन (15,000,000) यहूदी रहते हैं। बाकी आवादी [दो विलियन से ज़्यादा], बुद्धों, हिंदुओं, ब्राहमिनों और उसी तरह की जिनका मज़हबी अकीदा अल्लाह के

नज़रिए को नहीं पहचानता, बुत परस्त, आग को पूजने वाले, सूरज की पूजा करने वाले लोग और बेदीन शामिल हैं। हाल ही की अमेरिका की इशाअत के मुताबिक मुसलमानों की आबादी **900** मिलियन है न की छह सौ। दरहकीकत, **1980** में एक आंकड़े के मुतालआ के मुताबिक जो C E S T के ज़रिए किया गया [Centro Editoriale Studi Islamici] रोम में, ज़मीन पर **865.3** मिलियन मुस्लिम हैं, **592.3** मिलियन ऐशिया में, **245.5** मिलियन अफ्रीका में, **21** मिलियन यूरोप में, छह मिलियन अमेरिका और कनाडा में, और **0.5** मिलियन आस्ट्रेलिया में। एक किताब जिसका नाम **इस्लाम** है **1984** में इस्लामी मर्कज़ जिसे 'द मुस्लिम एजूकेशनल ट्रस्ट' कहते हैं उसने अंग्रेज़ी में इसकी इशाअत कराई, इसके मुताबिक आज दुनिया में एक बिलियन और सत्तावन मिलियन (1;057,000,000) मुसलमान ज़मीन पर रहते हैं। ये किताब **46** मुख़्तलिफ़ मुसलमान मुल्कों और साथ के साथ जो दुनिया के और दूसरे मुल्कों में मुसलमान रहते हैं उनकी तादाद भी बताती है। आंकड़े बताते हैं के ये नम्बर बढ़ रहे हैं। जिन मुल्कों में मुसलमानों की तादाद पचास फीसद से ज़्यादा है उनकी तादाद आज सत्तावन हो चुकी। ये बहुत दुख भरी हकीकत है के आज, जब हम **21**वीं सदी के शुरू में आ चुके हैं, तो अभी भी लोग हैं जो बुतपरस्त हैं। दूसरी तरफ़ तीन बड़े मज़ाहिब के हामी जो अल्लाह तआला के वुजूद में यकीन रखते थे उन्होने पूरे तौर पर अपना यकीन खो दिया। क्योंकि वहाँ अब कोई ऐसा सच्चा मुर्शिद (रहनुमा) नहीं था जो उनकी सरबराही कर सकता। ये उन लाइल्म मज़हब के आदमियों के लिए ना मुमकिन था जो ज़रूरी मज़हबी और साईन्सी इल्म में पीछे थे के उस जवान नसल में इस्लाम का प्यार जगा सकते जो साईन्सी तालीमात के पढ़े हुए थे। उनको निजाअत के रास्ते पर तकलीद करने के लिए एक खुले दिमाग़ का सरबराह चाहिए था जो पूरे तौर मज़हबी पस मंज़र की ताकत से लैस हों जो ताज़ा साईन्स इल्म के उसे और मज़बूत बना सकें। हमारा मकसद इस बाब में ये है के सच्चे अल्लाह के मज़हब के लिए मकसदी खोज कायम करना साईन्सी खोज को आगे बढ़ाना और ये तय करना के दोनों बड़ी मुकददस किताबों में से यानी, तोरह और बाएबल में से बनाम कुरआन अल करीम, कौन सी किताब, अल्लाह की सच्ची किताब है, और जो इस मामले में कमज़ोर पड़ गए हैं उन्हें सही रास्ता दिखाना।

हम अपने पढ़ने वालों को ये भरोसा दिलाना चाहते हैं के ये मुतालआ बिल्कुल ग़ैर जानिबदाराना तरीके से आगे बढ़ाया गया है। जो दो बड़ी मज़हबी किताबें जो हमने जाँची वो मुकददस बाएबल है, जिसमें जो तोरह के नाम से मौजूद है और आज की इंजील और कुरआन अल करीम इसमें शामिल हैं। तोरह जो पाक बाएबल के साथ ज़म हो गई पुराने

अहद नामे के नाम से, वो इस मुतालआ के दौरान बाएबल में ही शुमार की जाएगी। दूसरे लफ़्ज़ों में जो किताब हम जाँच रहे हैं वो है **मुक़ददस बाएबल** = इवाइंजिलियम, जिसे आज का ईसाई जगत असली इंजील मानता है।

मुक़ददस बाएबल सिर्फ एक किताब नहीं है। सबसे पहले, इसमें **आल्ड टेस्टामेंट** शामिल है। इसका दूसरा हिस्सा, **नयू टेस्टामेंट** जिसमें इंजील शामिल है मैथ्यू, मार्क, ल्यूक, और जॉन के ज़रिए लिखी गई, ल्यूक के ज़रिए लिखी रसूलों के अमाल, पॉल (जैम्स, पिटर, और जॉन, और रिवालेशन) के ज़रिए लिखी अलरिसाईल। पुराने अहदनामा तीन हिस्सों पर मुश्तमिल है। पहला हिस्सा, जिसे माना जाता है **तोरह** मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई थी इसमें पाँच किताबें हैंः Genesis, Exodus, Leviticus, Numbers, and Deuteronomy। दूसरा हिस्सा **नबीएम,** या पैग़म्बर कहलाता है और इसमें दो हिस्से हैं, यानी साबका पैग़म्बर, और बाद के पैग़म्बर। उनके नाम हैं यहोशू, जजूँ, **1** शमूएल, **2** शमूएल, **1** बादशाह, **2** बादशाह, यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, होशे, जोएल, अमोस, ओबधाह, जोना, मीका, नहम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गई, ज़कर्याह, और मलाची। तीसरा हिस्सा **कतूबीम** या किताबें हैं, तहरीरों पर मुश्तमिल ज़बूर है, जो दाऊद (डेविड) अलैहि सलाम सुलैमान की नीतियां, गानों का गाना, कलिसया, रूथ, एस्तेर, जॉब, यिर्मयाह, यिर्मयाह का मातम, दानीएल, एज़्रा, नहेम्याह, **1** का बयान, और **2** का बयान।

इन किताबों में जो सारे उसूल लिखे हुए हैं वो कौन रखते हैं? कट्टर यहूदी और ईसाई, जो हमेशा एक दूसरे के मुख़ालिफ़ होते हैं अगरचे वो एक ही मुक़ददस किताब को मानते हैं। वो दावा करते हैं के इन किताबों में बयानात अल्लाह के लफ़्ज़ हैं। अल्बत्ता, इन किताबों की ग़ोर से की गई जाँच एक शख़्स को ना भागने वाले नतीजे पर लाती है के इनमें बयानात मंदरजाज़ेल तीन ज़रियों से लिए गए हैंः

**1.** हो सकता है उनमें से कुछ अल्लाह तआला के लफ़्ज़ हों। क्योंकि इन इकतिबासात में अल्लाह तआला ने ख़ुद इंसानियत को मुख़ातिब किया है। मिसाल के तौर परः

"मैं उनके भाईयों में से एक नबी उठाऊँगा, तुम्हारी तरह, और अपने लफ़्ज़ उसके मुँह में डालूँगाः और वो उनसे वही बोलेगा जो मैं उसे हुकूम दूँगा।" (Deut: 18-18)

“मैं, मैं भी रब हूँ; और मेरे अलावा और कोई निजात दहंदा नहीं है।” (Is: 43-11)

“मुझे देखो, और तुम बचाओ, ज़मीन के सारे सिरों को, क्योंकि मैं खुदा हूँ, और वहाँ और कोई नहीं है।” (Is: 45-22)

हम ये मानते हैं के ये इक्तिबासात आसमानी किताबों में से लिए गए हैं जो उन नबियों पर नाज़िल हुए जो इस्त्राएलियों को भेजे गए।जैसे के ध्यान दिया जाएगा के, अल्लाह तआला ने इन इक्तिबासात में ऐलान किया के वो वाहिद है, (जिसका मतलब है दूसरे खुदा, जैसे बेटा, और पाक रूह, वो सब सवाल से बाहर हैं), वो ये के उसके नबियों को भेजा और वहाँ कोई खुदा नहीं हैं, सिवाए उसके।

अब पाक बाइबल/बाएबल के दूसरे मुमकिन ज़रिए पर आते हैंः

**2.** इस दूसरे ज़रिए में बयानात हो सकता है नबियों के ज़रिए दिया गया हो।मिसाल के तौर परः

“और नौवे घंटे के बारे में यीशु ने पुकारा तेज़ आवाज़ के साथ ये कहते हुए, एली, एली ला मा सा बाच था नी? यानी, मेरे खुदा, मेरे खुदा, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया है? (Matt: 27-46)

और यीशु ने जवाब दिया, सबसे पहले हुकूम है, सुनो, ए इस्राएल; आका हमारा खुदा एक रब हैः “(मार्कः **12-29**) [मेहरबानी करके इस नुक्ते पर ध्यान दिजिएः यहाँ पर अभी तक किसी बेटे या पाक रूह का कोई हवाला नहीं है।]

“और यीशु ने उनसे कहा, तुम मुझे अच्छा क्यों बुलाते हो? वहाँ कोई अच्छा नहीं है लेकिन एक के, वो है खुदा।” (मार्कः **10-18**)

ये बयानात, दावा किया जाता है के ईसा अलैहि सलाम (यीशु) के ज़रिए कहे गए हों, जो नबियों से संबध रखते हैं।इसका मतलब ये है के अल्लाह तआला के अलफ़ाज़ और नबियों अलैहि उस-सलवात-उ-व-तसलीमात के बयानात एक दूसरे के साथ ज़म हो गए हैं पाक बाएबल में।इसके बरअक्स, मुसलमानों ने अल्लाह तआला के लफ़्ज़ों को नबी के

ज़रिए किए गए बयानात से अलग कर दिया है और नबियों 'अलैहिमुस सलावातु वतसलीमात' के बयान को **हदीस ए शरीफ** के नाम से मुंतब किया अलग अदब में।

अब चलिए पाक बाएबल में तीसरे ग्रुप के बयानात पर आते हैं:

**3**. इस ग्रुप के कुछ बयानात ईसा अलैहि सलाम के हव्वारी वालों के ज़रिए किए गए हैं, और ये बताते हैं वाक्यात के बारे में जिसमें आला नबी शामिल थे, उनमें से कुछ कुछ लोगों ने बनाई, उनमें से कुछ रिवायात तारीख़दानों ने पहुँचाई, और कुछ वाक्यात बग़ैर बयान करने वाले के हैं। हम यहाँ एक मिसाल देते हैं: "और दूर एक अंज़ीर के पेड़ को देखते हुए दूर से दूर पत्तियाँ, वो आया, अगर ख़ुशी उसे वहाँ कुछ मिल जाए: और जब वो उसके पास आया, उसे कुछ नहीं मिला सिर्फ पत्तियाँ; क्योंकि अंजीर का वक्त अभी आया नहीं था।" (मार्क: **11-13)**

इस मिसरे में, एक शख़्स एक वाक्या बता रहा है जिसमें कोई और शामिल है। जो शख़्स इस वाक्ये को बयान कर रहा है वो जानने वाला नहीं है। फिर भी ये इशारा दिया गया के जो शख़्स अंजीर के पेड़ के पास गया वो ईसा अलैहि सलाम हैं। हालांकि, मार्क, जिसने ये सतरें लिखी, उसने कभी ईसा अलैहि सलाम को नहीं देखा। एक और अजीब बात है जो मंदरजाज़ेल मिसरे में है, यानी **14**वां मिसरा, ईसा अलैहि सलाम ने उस अंजीर के पेड़ को बददुआ दी ताकि वो कोई फल पैदा न कर पाए। ये समझ से बाहर ब्यान है। ये एक अंजीर के पेड़ के बस के बाहर की बात है के वक्त से पहले फल दे देना। ये इस वजह के इल्म के, साईन्स और एक नबी के मज़हबी उसूल के बरअक्स है के एक अंजीर के पेड़ को लानत देना, जोकि अल्लाह तआला का एक लाचार तख़लीक है, क्योंकि वो वक्त से पहले फल नहीं दे सकता।

मौजूदा मुकद्दस बाएबल की कापियों के ज़्यादातर हिस्सों में, वहाँ कुछ ऐसे बयानात हैं जो बग़ैर किसी ख़ास पहचान के हैं जिसने वो बनाई है, लेकिन पूरे ज़रूरी मवाद के साथ तजवीज़ की हकीकत ये है के वो आदमी के बनाए हुए हैं। इसलिए उन्हें अल्लाह के लफ़्ज़ कुबूल करना नामुमकिन है।

अब, हम अपने दिल पर हाथ रखते हैं और ग़ौर करें: क्या एक किताब जुज़वी तौर पर अल्लाह के अल्फ़ाज़, जुज़वी तौर पर एक नबी के बयानात और ज़्यादातर लोगों के

ज़रिए बताए गए बयानात पर मुश्तमिल को "अल्लाह के अल्फ़ाज़" के तौर पर कुबूल कर सकते हैं? दरहकीकत, उनके हिस्सों में मुखतलिफ़ ग़लतियाँ जो हमने आदमियों के ज़रिए बनाई गई बताया है, एक जैसे वाक्यात के लिए अलग हवाला, स्कोर और नम्बरें जो दिए गए है उन का बेतुकापन,- जिसे आगे के मतन में देखा जाएगा और गलतियों को बताया जाएगा – समझने वाले वाक्यात सादा हकीकत में जोड़े जाएँगे यानी आज की तोरह और बाएबल की कापियाँ इंसानी साख्त हैं।

मुसलमानों की मुकददस किताब कुरआन अल करीम ने ऐलान किया जैसे के तय शुदा है सूरह निसा की 82वीं आयत-ए-करीमा में, "**क्या वो अब भी नहीं सोच रहे के कुरआन अल करीम अल्लाह के लफ़्ज़ हैं और इसके मआनी पर ध्यान हें?** [कुरआन अल करीम अल्लाह के लफ़्ज़ हैं।] **अगर ऐसा नहीं होता तो, इसमें बेजोड़ता होती।**" ये कितना सच्चा है! मुकददस बाएबल में बेजोड़ता इस बात का इशारा करती है के ये इंसानी बयान है।इसके अलावा, जब हम आगे बढ़ेंगे, तो तोरह और बाएबल की कापियाँ जाँच की जाएँगी, इस्लाह होगी, छटाई होगी, सुधार होगा और मुख्तसर ये के इसे मुख्तलिफ़ काँअसिलों और पादरियों के ज़रिए एक शक्ल से दूसरी में ढाला जाएगा।क्या अल्लाह के लफ़्ज़ सही किए जा सकते हैं? कुरआन अल करीम जब से नाज़िल हुआ है और हमारे वक्त तक, इसमें एक हुरूफ़ भी तबदील नहीं हुआ।जैसा के हम उस डिविज़न में देखते हैं जो कुरआन अल करीम को दी गई, इस खात्मे को पूरा करने के लिए कोई कोशिश नहीं छोड़ी गई।यानी आज तक कुरआन अल करीम को तबदील नहीं किया जा सका ये एक हकीकत है जिसे कट्टर ईसाई पादरी भी मान चुके हैं चाहे सख्त हसद के साथ।अल्लाह का लफ़्ज ऐसा ही होगा! ये कभी नहीं तबदील होगा।अब देखते हैं के ईसाई माहिरीन और साइन्सदाँ क्या कहते हैं के क्या आज की इंजीलें अल्लाह के अल्फ़ाज़ हैं या आदमी के बनाए हुएः

डॉ ग्राहम स्करोगी, एक रूकन मूडी बाएबल इंस्टीटयूट के अपनी किताब 'क्या बाएबल खुदा का लफ़्ज़ है? के 17वें सफहे की मंदरजाज़ेल मुशाहदे में लिखा हैः

"हाँ, मुकददस बाएबल आदमी की बनाई हुई है।कुछ लोग इससे इंकार करते हैं वजह से मुझे नहीं पता।मुकददस बाएबल एक किताब है जो इंसानी दिमाग़ में तशकील हुई, जिसे इंसानी हाथ ने लिखा इंसानी ज़ुबान में, और जिसमें पूरे तरीके से इंसानी खुसूसियात हैं।

केनेथ क्रैग, एक ईसाई नज़रिए के माहिरीन जैसे के वो है, मंदरजाज़ेल हवाला दियाः

"द नयू टेस्टामेंट मुक़ददस बाएवल का हिस्सा अल्लाह तआला का लफ़्ज़ नहीं है। इसमें कहानियाँ हैं जो सीधे लोगों के ज़रिए बताई गई हैं और वाक्यात जो चश्मदीद गवाहों ने सुनाई हैं। ये हिस्से, जो निरे इंसानी जुबान हैं, ये लोगों पर ज़बरदरती थोपा गया है चर्च के ज़रिए अल्लाह तआला के लफ़्ज़ होने के नाम में।"

नज़रिए के प्रोफेसर गीसर ने कहा, "मुक़ददस बाएवल अल्लाह तआला के लफ़्ज़ नहीं है। फिर भी ये एक मुक़ददस किताव है।"

वहाँ पर ऐसे भी पादरी थे उन लोगों के बीच में जो बाएवल के कुछ उसूलों के मुख़ालिफ थे, यानी तसलीस। उनमें से एक, पादरी होनोरियस ने तसलीसी ख़ुदा को रद किया, जो उसके मरने के **48** साल बाद उसके लिए मलामत किया गया, एक कॉसिल के जरिए जो इस्तांवुल में **680** में हुई थी।

दूसरी तरफ, इंजील बरनबास के ज़रिए लिखी गई जो ईसा (जिस्स) अलैहि सलाम के मानने वालों में से था और जो पॉल के साथ उसके सफ़र में जाता था ईसाई मज़हब को फैलाने के लिए, फौरन उसके साथ बना दिया और जो हकीकत उसमें लिखी थी, "ईसा (जिसस) अलैहि सलाम ने कहा, दूसरे नवी, जिनका नाम मुहम्मद 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' है वो मेरे बाद आएँगे, और वो तुम्हें वहुत सारे हकाईक बताएँगे," ये कट्टर ईसाईयों के ज़रिए छुपा दिया गया।

ये कहने का मतलव है के जिस फैसले पर हम और मग़रीवी इल्म के आदमी पहुँचे मुक़ददस बाएवल के वारे में वो हैः मुक़ददस बाएवल अल्लाह के लफ़्ज़ नहीं हैं। असली तोरह और असली वाएवल जो अल्लाह के लफ़्ज़ थे, वो हर एक मिलकर मुखतलिफ़ किताव बन चुकी है। आज की वाएवल में वयानात के साथ जो अल्लाह का लफ़्ज़ माना जाता है, वहाँ और वयानात हैं, वजूहात, अंधविश्वासी और कहानियाँ जो दूसरे लोगों के ज़रिए जोड़ी गई। खासतौर से वो इक़तिवास जिसमें तसलीसी भगवान भ्रम हैं जो कई काउंटर चलाते हैं ज़रूरी यकीन के लिए **अल्लाह का ऐतहाद** और लोगों की कोमन सेन्स के लिए।

जैसे के तोरह और बाएबल ग्रीक और लैटिन में तर्जुमा की गई थीं, उस वक्त तक रोमन और ग्रीक बुतपरस्त, जो बहुत सारे बुतों की पूजा करते थे, वो एक ख़ुदा के साथ मुतमईन नहीं थे और अपने शिर्क के अमाल को याद करते रहे। कुछ आलिमों के मुताबिक, असली बाएबल के उसूल 'अल्लाह का ऐतहाद' 'तसलीस' में पैदा होने की वजह ग्रीक में उसे तर्जुमा करते वक्त ये थी के ग्रीक लोग प्लेटो की फ़िलोसफ़ी को पसंद करते थे। प्लेटो की फिलोसफ़ी हर चीज़ को तीन में तकसीम करती थी। मिसाल के तौर पर, अच्छी आदतें तीन हिस्याती ताकतों पर मुबनी हैंः अखलाक, सबब, और फितरत। और कुदरत, इसकी बारी में, तीन में तकसीम होती हैः पौधे, जानवर, और इंसान। बुनियादी तौर पर, प्लेटो की सोच थी के दुनिया का खालिक एक है, फिर भी वो खालिक के साथ दो नायब को मंसूब करता था। जिसने 'तसलीस' के उसूल को पैदा किया, जिसे कई तारीखदानों ने तसदीक किया। बहरहाल, जैसे के तुम आगे देखोगे, तोरह और बाएबल की कई मिसरों ने इस हकीकत को माना जो ये कहती हैं, मिसाल के तौर पर, यशायाह के **45**वें बाब के **22**वें मिसरे में है, "...क्योंकि मैं ख़ुदा हूँ, और कोई और नहीं।" यहाँ तक के आज की बाएबल की कापियाँ 'तीन ख़ुदाओं' के उसूल को रद करती हैं, जो उसमें ढूँ दी गई थीं। ये भी बहस है के तसलीस तर्जुमे की गलती है। ये देखकर के 'तसलीस' का उसूल अपनी काबिलियत खोता जा रहा है खासतौर से नौजवान नसल में तो, ईसाई चर्च ने दूसरे मआनों में झुकाव पैदा करना शुरू कर दिया 'बाप' और 'बेटा' लफ़्ज़ों में और इस तरह 'एक अल्लाह' पर यकीन में नरम लैंडिंग की कोशिश की। बाद में हम इस तर्जुमें के मामले को उठाएँगे।

आज के कायम शुदा हकीकत को कई ईसाईयों के मानने के बावजूद के आज की तोरह और बाएबल की कापियाँ अल्लाह का लफ़्ज़ नहीं है, कुछ कट्टर ईसाई अभी भी ज़ोर देते हैं के "बाएबल में हर लफ़्ज़ अल्लाह का लफ़्ज़ है।" हमारा जवाब इस कट्टर पने पर सूरह बकरह की **18**वीं आयत ए करीमा का हवाला देना है जिसका मतलब है,

"[वो हैं] **बहरे,** [ताकि वो सुन न सकें या सच्चाई कुबूल कर सकें], **गूंगे,** [ताकि वो सच्चाई न बता सकें], **और अंधे,** [ताकि वो सही रास्ता न देख सकें]। **वो सही रास्ते पर वापस नहीं जाएँगे।** मैथ्यू की इंजील के **13**वें बाब का **13**वां मिसरा इस तरह पढ़ा जाएगाः "इसलिए में उन से उनकी मिसाल बयान करता हूँ, क्योंकि वो देखकर देखते नहीं हैं; और सुनकर वो सुनते नहीं हैं, न ही वो समझते हैं।"

अब हम अपनी बाइबल की जाँच पर वापस आते हैंः

सबसे पहले, ये कहते हैं के आज के सारे ईसाईयों के पास बाइबल का एक जैसा तर्जुमा नहीं है। अगर तुम कैथोलिक से कहोगे के तुम उससे बाइबल पर बात करना चाहते हो, वो तुम से पूछेंगे, “बाइबल के कौन से तर्जुमें पर?” क्योंकि कई कैथोलिक प्रोटेस्टेंट और ऑथडोक्स ईसाई बाइबल के मुख़्तलिफ़ तर्जुमात को पढ़ते हैं। जब तुम उनसे पूछोगे, “किस तरह बाइबल के इतने ज़्यादा तर्जुमें हैं जो अल्लाह का लफ़्ज़ है,” वो जवाब के लिए गड़बड़ा जाएँगे और फिर छलकपट से कहेंगे, “असल हकीकत में, वहाँ सिर्फ एक बाइबल है। उनमें अगरचे मुख़्तलिफ़ तशरीहात हो सकती हैं। तारीख़ पर नज़र दौड़ाएँ तो ज़ाहिर होगा के पहला रोमन कैथोलिक टैक्स्ट बाइबल का, जेरोम के ज़रिए लैटिन में की गई बाइबल का तर्जुमा जिसे वुल्गेट कहते हैं, रैम्स में **990** [**1582** सी.ई] ([1] अंग्रेजी में कुछ ऐनसाइक्लोपिडिक लूग़ात के मुताबिक, ये लैटिन तर्जुमा **383** सी.ई में मुकम्मल हुआ।) ज़ाहिर हुआ, और हमने उसे दोबारा Douay में **1609** में छपवाया। ये आज रोमन कैथोलिक तर्जुमे के (RCV) नाम से मौजूद है। फिर भी जो बाइबल आज अंग्रेज़ों के कब्ज़ें में है वो पुराने वाले तर्जुमें से बहुत मुख़्तलिफ़ है। क्योंकि बाइबल **1600** से लेकर आज के हमारे वक्त तक बहुत काँट छाँट का सामना कर चुकी है और कुछ हिस्से, जिन्हें अपोक्रिफ़ा (अपोक्रिफ़ा के असली मआनी, जो ग्रीक में है इसका मतलब है ‘राज़, छुपा हुआ,’ ये **14**वीं किताब है वुल्गैट में शामिल, और सेप्टुआगिंट, जो बाइबल के ओल्ड टेस्टामेंट का ग्रीक तर्जु मा है जिसे ईसाईयत से पहले मुरतब किया गया।) कहते हैं, (तहरीरें या बयानात जिनकी सदाकत या मुसनिफ़ियत पर शक है), उन्हें बाइबल से काट दिया गया, जबकि कुछ दूसरे हिस्से जैसे, जूडिथ, टोबियास, (या काटना), बारूक, और एस्थर, इन्हें नाकाबिले यकीन की हद तक मंसूख़ कर दिया। आख़िर में, इसे सबसे ज़्यादा हालिया और सच्ची बाइबल बनाकर मजाज तर्जुमे के लेबल के साथ छपवा दिया गया। बहरहाल, क्योंकि इसकी ज़ुबान कई लोगों के ज़रिए बहुत ज़्यादा भद्दी पाई गई जो इल्म की कई शाखाओं में अपनी बात रखते थे, मश्हूर वज़ीरे आज़म चर्चिल (सर विंस्टन एल एस चर्चिल (**1874-1965**), ब्रिटिश बयानदाँ और मुंसनिफ़, इंगलैंड का वज़ीरे आज़म, **1940** से **1945** तक और **1951** से **1955** तक।) समेत, साबका बाइबल, यानी किंग जैम्स का मजाज़ तर्जुमा (KJV) जो **1611** में छापी गई थी, फिर से शुरू करदी गई। **1952** में बाइबल को एक बार फिर नज़र सानी किया गया और एक तर्जुमा नज़र सानी शुदा मेआरी तर्जुमे (RSV) तैयार कराया गया, जिसे बहुत जल्द रद कर दिया गया क्योंकि इसे नाकाफ़ी नज़र सानी शुदा पाया गया। थोड़े अरसे बाद, **1391** [**1971**] में ‘डबल रिवाईस्ड बाइबल’ इशाअत कर दी गई।

कैथोलिक बाइबल में भी कई तबदिलियाँ की गई। दरहकीकत, बाइबल को हिब्रू से ग्रीक में और ग्रीक से लैटिन में तर्जुमा किया गया, उसे दोबारा मुख्तलिफ़ काउंसिलों के ज़रिए जैसे निकिन काऊंसिल जो कॉन्स्टेंटिन दा ग्रेट के हुकूम के साथ मुनकिद की गई **325** में, काऊंसिल ऑफ़ लुडिसिया के ज़रिए **364** में, इस्तांबुल की काऊंसिल **381** में, **397** में कथेजीनियन की काऊंसिल के ज़रिए, **431** में इफिसुस काऊंसिल के जरिए, कदीकोए काऊँसिल के ज़रिए, और बहुत सारी दूसरी काऊँसिलों के ज़रिए, हर काऊँसिल में दोबारा मुरसब की गई, हर बार कुछ हिस्से तबदील कर दिए गए, कुछ किताबें ओल्ड टेस्टामेंट से छांटी गई, जबकि कुछ किताबें जो पिछली काऊँसिलों ने रद करदी थीं वो दोबारा शामिल करली गई। जब प्रोटेस्टेंट फिरका **930** **[1524** सी.ई] में उभरा, तो इन किताबों को दोबारा जाँचा गया और नई तबदीलियाँ उसमें करदीं गई।

इस लम्बे अरसे में बहुत सारे ईसाई नज़रिए के माहिर उन्होने इन तर्जुमों और तबदिलियों की मुखालफ़त की और बहस की के कुछ हिस्से मुकददस बाइबल में जोड़े गए हैं।

जैसे के हमने पहले बयान किया, जिन्होने बहस की के हिब्रू बाइबल की असल की ग़लत तर्जुमा किया गया वो सही हैं। क्योंकि हिब्रू में '**बाप**' लफ़्ज़ को सिर्फ़ जिनयाती एहसास में नहीं, बल्कि समाजी एहसास से भी इस्तेमाल किया गया, यानी, इसका मतलब है एक आला, इज़्ज़तदार शख्स। इस वजह से कुरआन अल करीम में इब्राहिम (अब्राहम) अलैहि सलाम के चाचा आज़र को "उनके बाप, जिन्हें आज़र कहा जाता था कहकर बुलाया गया।" उनके अपने बाप तारूह (तरह) मर चुके थे। उन्हें उनके चाचा के ज़रिए पाला गया। आज़ार, और इस तरह उसे उनका बाप बुलाया गया, क्योंकि उनके वक्त में ये रिवाज था। **Reshehat** किताब में लिखी गई बातचीत से ज़ाहिर होता है के तुर्की में इज़्ज़तदार और रहमदिल लोगों को 'बाप' बुलाया जाता है। तुर्की में ये कहना के, "क्या बाप की तरह आदमी है!" ये तारीफ़ का इज़हार है।

दूसरी तरफ़, हिब्रू में लफ़्ज़ 'बेटा' बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता है एक शख्स के बारे में बताने के लिए जो तुम्हारा जूनियर हो, मरतबे में या उमर में, और जो तुम्हारे साथ गहरे लगाव के साथ जुड़ा हुआ हो मैथ्यू की इंजील के पाँचवे बाब के नवें मिसरा मंदरजाज़ेल तरीके से पढ़ा जाएगाः "अमन करने वालों को मुबारकबादः क्योंकि उन्हें ख़ुदा के बच्चे बुलाया जाएगा।" इस मतन में इस्तेमाल किया गया 'बच्चे' लफ़्ज़ का मतलब है

अल्लाह तआला के पैदा हुए प्यारे बंदे। इसके मुताबिक, 'बाप' और 'बेटे' के अल्फ़ाज़ असली इंजील (बाइबल) में इसी मतलब के लिए इस्तेमाल हुए। बिलतरतीब, 'बरकत का वुजूद' और प्यारे पैदा हुए बंदें। दूसरे लफ़्ज़ों में, इन लकब का इस्तेमाल करने में तसलीसी खुदा से कोई कुरबत का इरादा नहीं है। आखिरी नतीजा जो मुख्तलिफ मज़ामीन से निकाला गया जिसमें लफ़्ज़ 'बाप' और 'बेटा' का इस्तेमाल किया गया है वो है के अल्लाह तआला, जो हाकिम है और सबका मालिक है उसने ईसा अलैहि सलाम को अपने नबी की तरह पूरी इंसानियत को भेजा। ज़्यादा से ज़्यादा ईसाईयों को तवील अरसे के लिए अपने हवासों में आ जाना चाहिए, क्योंकि वो कहते हैं, "हम सब अल्लाह तआला के पैदा किए हुए बंदे हैं, अल्लाह तआला मालिक है, हम सबका बाप। बाइबल के लफ़्ज़ 'बाप' और 'बेटा' इस तरह से तशकील होना चाहिए।"

बहुत सारे लफ़्ज़ असली बाइबल हिब्रू से गलत तर्जुमा किए गए हैं। ये हकीकत मंदरजाज़ेल तरीके से मिसाल दी गई हैः

**1.** जनाब-ए-हक के नाम अल्लाह से एक 'ल' हिब्रू की असली इंजील, ओल्ड टेस्टामेंट की पहली किताब से गायब है। बार बार बाइबल में तबदिली की वजह से 'अल्लाह' का लफ़्ज़ छांट दिया गया। ईसाई हो सकता है मुसलमानों के अल्लाह के करीब होने से खौफ़ज़दा हों।

**2.** हिब्रू की असली ओल्ड टेस्टामेंट में 'पाक' लफ़्ज़ नहीं है। ईसा (जिस्स) अलैहि सलाम की पैदाईश के सिलसिले में असली हिब्रू के ईसायाह/यशायाह के सातवे बाब की **14**वीं आयत में मंदरजाज़ेल बयान हैः "इसलिए रब ने तुझे एक अलामत दी; देखो, एक लड़की हामला होगी, और एक बेटा रखेगी, और उसका नाम इमामुल होगा।" उस मतन में 'अलमह' लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है जिसका हिब्रू में मआनी है 'लड़की'। हिब्रू में 'याक' के बराबर लफ़्ज़ '**BETHULAH**' है। 'पाक' का लफ़्ज़ ईसाईयों को बेहतर लग रहा था, इसलिए ईसाई कौम ने 'मुबारक पाक' के नज़रिए को जज़्ब कर लिया।

इस मामले में ईसाई कट्टर और भी आगे चले और बाइबल की आयत को खराब करके भयानक गलती के मुरतकब हुए। इसकी एक मिसाल जॉन के तीसरे बाब की **16**वीं आयत है जो इससे तबदील हो चुकी है, यहाँ से क्योंकि रब दुनिया को बहुत प्यार करता है, के उसने दे दिया [वहाँ भेजा] अपना एकलौता बेटा, [यानी, वो शख्स जो उसे सबसे ज़्यादा

प्यारा है,] यानी जो कोई भी उसमें यकीन रखता है उसका नाश नहीं होगा, बल्कि हमेशा के लिए [अब्दी] ज़िन्दगी पाएगा, इसमें "क्योंकि रब दुनिया को बहुत चाहता है, के उसने अपना एकलौता (पैदा किया हुआ) बेटा, के जो कोई भी उसमें यकीन रखेगा उसका नाश नहीं होगा, बल्कि हमेशा के लिए ज़िन्दगी ले लेगा" यहाँ उन्होने अंग्रेज़ी लफ़्ज़ 'Begotten', लिया जिसका अरबी मतलब है 'पैदा'। दूसरी तरफ़ , ये हकीकत के अल्लाह तआला वाहिद है और ईसा (जिस्स) अलैहि सलाम एक नबी की तरह भेजे गए थे बाइबल में कई जगहों पर ज़ोर दिया गया है। यहाँ कुछ मिसालें हैंः

"...सुनो, ए इस्राइलः रब हमारा खुदा एक रब हैः" (मार्कः **12-29**)

"इस दिन जान लो, और इसे अपने दिल में मानो, के रब वो जन्नत में खुदा है ऊपर, नीचे ज़मीन परः वहाँ और कोई नहीं है।" (Deut: 4-39)

"सुनो, ए इस्राइलः हमारा रब हमारा खुदा एक रब हैः" "और तू अपने रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल के साथ, और अपनी पूरी रूह के साथ, और अपनी पूरी ताकत के साथ प्यार करेगा।" (Deut: 6-4, 5)

"अब देखो के मैं, मैं भी, मैं हूँ वो, और वहाँ मेरे साथ कोई खुदा नहीं हैः..." (Deut: 32-39)

"किसके लिए तुम मुझे पसंद करोगे, या मैं बराबर रहूँगा? मुकददस ने कहा।" अपनी आँखों को ऊपर उठाओ, और देखो जिसने इन चीज़ों को पैदा किया... (Is: 40-25, 26)

"तुम मेरे गवाहो, मुकददस रब, और मेरा खादिम जिसे मैंने चुना; तुम जानते हो और मुझ पर यकीन करो, और समझो के मैं वो हूँः मुझ से पहले कोई खुदा नहीं बना था; और न ही मेरे बाद कोई होगा," मैं, मैं भी, मैं हूँ रब; और मेरे सिवा कोई निजात दहंदा नहीं।" "...मुकददस रब, यानी मैं हूँ खुदा।" (Is: 43-10, 11, 12)

"इस तरह मुकददस रब...' मैं पहला हूँ, और में आखिरी भी हूँ, मेरे अलावा कोई खुदा नहींः (Is: 44-6)

“मैं रब हूँ, और वहाँ कोई नहीं है, और मेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं हैंः...” (Is: 45-5)

“इसलिए रब वो है जिसने आसमानों को तखलीक किया; ख़ुदा ने अपने आप ज़मीन को तश्कील किया और इसे बनाया; उसने इसे कायम किया, उसने इसे बेकार में नहीं बनाया; उसने इसे आबाद करने के लिए बनायाः मैं रब हूँ; और वहाँ कोई और नहीं है।” (Is: 45-18)

“क्या मैं रब नहीं हूँ? और मेरे अलावा वहाँ और कोई ख़ुदा नहीं है; सिर्फ एक ख़ुदा और निजात दहंदाँ; मेरे अलावा वहाँ और कोई नहीं है,” “मुझे देखो, और तुम बचाओ, ज़मीन के सारे सिरों को क्योंकि मैं ख़ुदा हूँ, और वहाँ कोई और नहीं है।” (Ibid: 21, 22)

“क्योंकि मैं ख़ुदा हूँ, और वहाँ और कोई नहीं है; मैं ख़ुदा हूँ, और वहाँ कोई मेरी तरह नहीं है,” (Is: 46-9)

“दूसरी तरफ़, बाइबल के इक्तिबास जो बताते हैं के ईसा अलैहि सलाम एक पैग़म्बर है वो मंदरजाज़ेल तरीके से मिसाल दिया गयाः

“और जब वो यरूशलेम में आया, पूरा शहर उमड़ गया, ये कहकर, ये कौन है?” और भीड़ ने कहा, ये जीजस है गालील की नसारत के पैग़म्बर।” (Matt: 21-10, 11)

“मैं अपने ख़ुद के लिए कुछ नहीं करताः जैसे मैने सुनता, हूँ मैं इंसाफ़ करता हूँ; और मेरा इंसाफ़ इंसाफ़ है; क्योंकि मैं अपनी ख़ुद की इच्छा नहीं माँगता, बल्कि बाप की इच्छा जिसने मुझे भेजा।” (जॉनः 5-30)

“... एक पैग़म्बर बग़ैर इज़्ज़त के नहीं है, अपने ही मुल्क में महफ़ूज़, और अपने ही घर में।” (Matt: 13-57)

“...लेकिन जिसने मुझे भेजा वो सच्चा है; और मैं दुनिया को वही बताता हूँ जो चीज़ें मैने उससे सुनी हैं।” (जॉन: 8-26)

"... और जो लफ़्ज़ तुम सुनते हो वो मेरे नहीं हैं, बल्कि बाप के ([1] 'बाप' का मतलब है अल्लाह सबसे बड़ा।) हैं जिसने मुझे भेजा है।" (जॉन: **14-24**)

"और ज़िन्दगी अब्दी है, जो वो मानते हैं के आप सिर्फ़ एक ही सच्चे ख़ुदा हो, और जीसस क्राईस्ट। जिन्हें तुमने भेजा है।" (जॉन: 17-3)

"ए इस्राइल के आदमियों, ये लफ़्ज़ सुनो; नाज़रत के जीसस, एक आदमी जो तुम में से ख़ुदा की तरफ़ से मंज़ूर किया हुआ अलामत और मुअजजिज़ों और अजूबों के ज़रिए, जो ख़ुदा ने तुम्हारे बीच में किया था, जो तुम ख़ुद भी जानते होः" (अमाल: 2-22)

"तुम्हारे लिए पहले ख़ुदा, अपने बेटे जीसस ([1] ये बग़ैर ये कहे के 'बेटा' यहाँ पर 'मुबारक पैदा हुए बंदे' से है चला गया।) को उठाया, उसे तुम्हें बरकत देने भेजा, तुम में से हर को उसकी बदकारी से बदलने के लिए।" (Ibid: 3-26)

"...और वो अलामात और अजूबे हो सकता है तुम्हारे मुक़ददस बच्चे [पैदा हुआ बंदा] जीसस के ज़रिए हो रहे हों।" (Ibid: 4-29) ये आयात इस हक़ीक़त को साफ़ करती है के ईसा अलैहिसलाम एक पैग़म्बर थे जिन्होने अल्लाह तआला की वही पहुँचाई।

ये सारे आयात मुक़ददस बाइबल से बयान की गई हैं जो आज के ईसाईयों के पास हैं, और वो दिखाती है के सारी मदाख़लत के बावजूद आज की तोरह और बाइबल में अब भी इक़्तिबासात हैं जो असली बाइबल से बचे हुए हैं।

कहर की डिग्री जिसे कुछ अज़ाबी लोग अल्लाह तआला से नीचे लेकर आए है ईसा (जीसस) अलैहि सलाम को अल्लाह का बेटा बताकर, और बेअदबी से तोरह और बाइबल की आयात में तबदिलियाँ करके इस सिरे को हासिल किया, ये क़ुरआन अल करीम की सूरह मरियम की **88**वीं में **93**वीं आयात के ज़रिए ये ज़ाहिर हुआ जिसका मतलब हैः

**"वो [यहूदी और ईसाई] कहते हैः "(अल्लाह जो है) रहमान (रहमदिल) का एक बैटा पैदा हुआ!" बेशक तुमने एक चीज़ (एक झूठ) बहुत ज्यादा बदतरीन तुम आगे लाए!" "इस पर आसमान फटने को तैयार हैं, ज़मीन टुकड़ों में अलग होने के लिए, और पहाड़ शदीद तबाही में गिरने के लिए," क्योंकि उन्होने (अल्लाह तआला) सबसे ज़्यादा रहमदिल के लिए एक बेटे की दावत दी।" "ये (अल्लाह तआला) सबसे ज़्यादा रहमदिल की अज़मत के मुताबिक नहीं है के वो एक बेटा पैदा करे।" "आसमानों और ज़मीनों में से कोई एक भी**

**नहीं बल्कि एक गुलाम के तौर पर (अल्लाह तआला) सबसे ज़्यादा रहमदिल के पास आना चाहिए।"** (19-88 से 93 तक) अल्लाह तआला ने कुरआन अल करीम की सूरह इख़्लास की तीसरी आयत में मंदरजाज़ेल ऐलान फरमायाः **"...वो (अल्लाह) नहीं जना गया, न ही उसने किसी को जना।..."** (112-3) सूरह निसा की 171वीं आयत का मतलब है, **"...ए अहले किताब [यहूदी और ईसाई]! अपने मज़हब में ज़्यादतियाँ मत करोः और न ही अल्लाह तआला के लिए कुछ बोलो बल्कि सच।** [उस पर ये कहकर इल्ज़ाम मत लगाओ के ईसा अलैहि सलाम अल्लाह के बेटे हैं।] **ईसा (जीसस) मैरी का बेटा (इससे ज़्यादा नहीं) अल्लाह के एक रसूल से ज़्यादा नहीं और उसके लफ़ज़ (तखलीक), जो उसने मैरी पर निछावर किए, और एक रूह जो उससे निकल रही हैः** [ए ईसाई।] **तो अल्लाह तआला में और उसके नबियों में यकीन रखो। 'तसलीस' न कहो, न ही ये कहो के अल्लाह तआला तसलीस में तीसरा खुदा हैः बंद कर देना इसे तुम्हारे लिए ये बेहतर है; अल्लाह तआला एक माबूद है** (एक जो काबिल है इबादत किए जाने के)ः **जलाल हो उसपरः (वो बहुत आला है) एक बेटा होने से ऊपर..."** (4-171)

सूरह बकरह की 10वीं आयत में, अल्लाह तआला ने उन लोगों को जिन्होने बाइबल में मुदाखलत की उन्हें मंदरजाज़ेल तरीके से वाज़ेह कियाः **"उनके दिलों मे एक बीमारी हैः और अल्लाह तआला ने उनकी बीमारी बड़ा दीः और उन पर सख्त जुर्माना है (अज़ाब), क्योंकि वो (खुद से) झूठे हैं।"** (2-10)

सूरह बकरह की 79वीं आयत का मतलब है, **"उन पर अफसोस हो जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं, और फिर कहते हैंः ये खुदा की तरफ़ से है।इसके साथ एक बुरी कीमत के चलने के लिए! उन पर अफसोस हो इसलिए के उनके हाथ क्या लिख रहे है, और इस तरह वो क्या हासिल कर पाएँगे!"**

## पाक बाइबल (तोरह और इंजील) की कुछ गलतियाँ

पाक बाइबल को बतौर नज़र सानी के मामूल के अमल में बेनकाब करते हुए, और इस तरह बाइबल के नए एडीशन इशाअत और फरोख्त, तिजारत का एक हकीकी ज़रिया बन गया है।हर एक यूरोपी फैमिली अपने घर में बाइबल की एक कॉपी [दा ओल्ड और न्यू टेस्टामेंटस] रखती है, इससे कोई फर्क नहीं चाहे फैमिली के रूकन उसमें यकीन रखते हों या नहीं।दरहकीकत, ज़्यादातर यूरोपी गाँवों वाले पाक बाइबल के अलावा और कोई किताब नहीं पढ़ते।यही एक किताब है जिसे वो जानते हैं।यूरोपी लोगों का सखाफ़ती सतह इतनी ऊँची नहीं है जितनी के हम उसे सोचते हैं।वो जो गाँवों में रहते हैं वो लिखना और पढ़ना जानते हैं।लेकिन वो दुनिया में क्या हो रहा है उससे अनजान हैं।वो सिर्फ पाक

बाइबल को पढ़ते हैं। जिसके नतीजे में, हर नई (नज़र सानी शुदा) एडिशन पाक बाइबल की कई मिलियन कापियों में छपती हैं और सालाना इसके इशाअत करदा को मिलियन पाऊँड की कमाई कराती हैं। फिर, कोई और काम इतना मुनाफ़े वाला नहीं है जितना के सालाना पाक बाइबल की मुसलसल नज़रसानी और इशाअत का काम है।

इस दौरान में, मग़रीबी एजादात बार बार इंतबबात के सरर्गमी के लिए एक मुहरिक फराहम करते हैंः "पाक बाइबल में गलतियाँ हैं।" उनमें संजीदा मसूदे शामिल होते हैं जिन्हें जाने माने साईन्सदानों और नजरयाती माहिरीन ने लिखा है जिसे तुम एतराफ़ से साथ पढ़ोगे। इसकी एक मिसाल मंदरजाज़ेल हैः

अब तुम कहो, "किस तरह अल्लाह तआला का लफ़्ज़ ग़लत तर्जुमा हो सकता है? किस तरह अल्लाह तआला का लफ़्ज़ इंसानों के ज़रिए सही हो सकता है? किस तरह अल्लाह तआला की किताब की नज़रसानी हो सकती है? एक किताब जो इतनी सारी काँट छाँट और इसलाहात के साथ गुज़री हो वो कभी भी "अल्लाह तआला के लफ़्ज़" नहीं हो सकते। दरहकीकत, अगर तुम मंदरजाज़ेल तबसरे को **1971** के दूसरी बार के इंजीली बाइबल की नज़रसानी के तआरूफ़ में पढ़ोगे, तो तुम्हारा एतराफ़ चरम सीमा पर पहुँच जाएगा। कलर्किकल कमीशन जिसने आखिरी नज़रसानी की थी उसने मंदरजाज़ेल राय दीः "...असलूबी तौर पर, पाक बाइबल तर्जुमा जो किंग जैम्स की कमांड में तैयार किया गया वो मुकम्मल है। इसे अंग्रेज़ी अदब में ऊँचे दरजे का फन के काम के तौर पर मंज़ूर करना चाहिए। हमें ये कहते हुए अफ़सोस है, अगरचे, इस किताब में इतनी संजीदा गलतियाँ के उन्हें पक्के तौर पर सही होना चाहिए।"

सिर्फ सोचो! एक कलिसा ग्रुप एक कमीशन बनाता है, और एक किताब जिसे 'अल्लाह के लफ़्ज़' माना जाता है कई उसमें संजीदा गलतियाँ ढूँढता है इंगलैंड में **1020** [**1611** सी ई] से **1391** [**1971**] तक, और ये फैसला किया के इन गलतियों को हरहाल में सही करना है! कौन इस ज़मीन पर यकीन करेगा के वो किताब 'अल्लाह के लफ़्ज़' हैं? मंदरजाज़ेल एक मज़ाहिया हिकायत है एक शख्स के ज़रिए बताई गई जिसने ईसाई नज़रयाती माहिरीन और साईन्सदानों के साथ ईसाई अकीदे और बाइबल पर बहस की थी और जिसने ये साबित कर दिया था के वो बीच में घुसेड़ी गई हैं। वो शख्स मंदरजाज़ेल तरीके से बयान करता हैः

"एक मज़मून जो **8** सितंबर, **1957** को अमेरिका के मीयादी AWAKE के रिसाले में नमूदार हुआ था इस तरह पढ़ा जाएगाः इस तरह पाक बाइबल में पचास हज़ार से ज़्यादा गलतियाँ हैं! हाल ही में, एक जवान आदमी किंग जैम्स की पाक बाइबल की तर्जुमे की कॉपी

खरीद कर लाया। उसने ये कभी सोचा भी नहीं था के पाक बाइबल में इतनी ज़्यादा गलतियाँ होंगी जो वो सोचता था के लफ़्ज़ हैं। थोड़े अरसे के बाद उसने एक मज़मून देखा इस सुर्खी के साथ 'बाइबल के बारे में हकीकत' एक मीयादी लुक में, जिसे उसने खरीदा था। मज़मून ने कहा के जो कलर्किकल कमीशन **1133 [1720** सी.ई] में तर्करूर किया गया था उसने बाइबल में बीस हज़ार गलतियाँ निकाली हैं जिसे किंग जैम्स की कमांड में तैयार किया गया था। वो हैरान होने के साथ साथ उदास भी था। जब उसने अपने रूहानी साथियों से इस बारे में बात की तो, उन्होने कहा, उसे अज़ीम हैरानी हुई, के मौजूदा बाइबल में बीस हज़ार नहीं 'पचास हज़ार गलतियाँ हैं।' वो तकरीबन बेहोश हो गया। अब वो हमसे पूछता हैः खुदा के वास्ते, मुझे बताईए, क्या पाक बाइबल जिसे हम खुदा के लफ़्ज़ मानते हैं एक किताब है गलतियों से भरी हुई है?

"मैने रिसाले को बहुत ध्यान से पढ़ा और उसे रख लिया। छह महीने पहले, एक दिन मैं अपने घर में बैठा था, तभी दरवाज़े की घंटी बजी। मैने दरवाज़ा खोला और देखा एक जवान शाईस्ता आदमी मेरे सामने खड़ा है। इज़्ज़त के साथ मुसकराते हुए, उसने मुझे गरमजोशी से सलाम किया और अपना आई डी कार्ड मुझे दिखाया। उसके आई डी पर जेहोवा का गवाह लिखा था। ये पदवी एक मिश्नरी तंज़ीम के ज़रिए इस्तेमाल की जाती थी। मीठे लहजे में, जवान मिश्नरी ने कहा, 'सबसे पहले, हम आपको, और दूसरे पढ़े लिखे लोगों को दावत देने की कोशिश कर रहे हैं जो सही रास्ते से भटके हुए हैं, ईसाईयत की तरफ़, जोकि सही रास्ता है। मैं आपके लिए कुछ किताबे लाया हूँ जिसमें तोरह और बाइबल में से कुछ प्यारे इक्तिबासात इन किताबों में शामिल हैं। मैं आपको उन्हें पैश कर देता हूँ। उन्हें पढ़िए, उन पर सोचिए, और एक फैसला करिए। मैने उसको अंदर बुलाया और उसे कॉफी फराहम की। उसे यकीन हो गया के वो मुझे यकीन दिला चुका है कम से कम आधा तो कर ही लिया। कॉफी के बाद, मैने उससे पूछा, 'मेरे अज़ीज़ दोस्त, तुम तोरह और बाइबल को अल्लाह के लफ़्ज़ के तौर पर देखते हो, क्या तुम नहीं? 'यकीनन, उसका जवाब था।' फिर, तोरह और बाइबल में कोई गलतियाँ नहीं हैं?' 'नामुमकिन, उसने कहा। फिर मैने उसे रिसाला जाग दिखाया और कहा, "ये रिसाला अमेरिका से शाय हुआ है। इस रिसाले में लिखा है के बाइबल में पचास हज़ार गलतियाँ हैं। अगर वो शख्स जिसने इस रिसालें में ये मज़मून लिखा है, एक मुसलमान था, तो तुम उस पर यकीन करने या न करने के लिए आज़ाद हो। क्या तुम अपने हम मज़हबियों के ज़रिए जारी रिसाले में लिखे गए बयानात का एतराफ़ नहीं करोगे? गरीब आदमी को इतनी बुरी तरह से अनजाने में पकड़ा गया था इतना परेशान। 'क्या तुम मुझे वो रिसाला दे सकते हो? मैं उसे पढ़ना चाहता हूँ उसने इलतिजा की। उसने उसे पढ़ा, और फिर एक बार दोबारा, और फिर दोबारा पढ़ा। वो शर्म से नादिम हो गया। मैने इसे देख लिया था और अपनी मुसकुराहट छुपाने की कोशिश कर रहा था। उसने शायद भाँप लिया था, इसलिए वो और ज़्यादा शरमा गया। आखिरकार वो एक जवाब पर पहुँच गयाः 'देखो, उसने कहा, "ये रिसाला **1951** में छपा था। हम अब **1980** में हैं। **23**

साल का वक्त ये काफी लंबा अरसा है। गलतियाँ ढूँढ ली गई होंगी और अब तक सही लगा दी गई होंगी। मैने संजीदगी से दलील पर ज़ोर दिया, 'मान लो तुम सही हो। लेकिन तुम क्या समझते हो के पचास हज़ार गलतियों में से कितने हज़ार ठीक हो चुके होंगे? क्या गलतियाँ ठीक की गई? किस तरह उन्हें सही किया गया? क्या तुम मुझे इस बात पर रोशनी डाल सकते हो? उसका सिर झुक गया, और उसने एतराफ़ किया, बदकिस्मती से, नहीं, मैं नहीं। मैने इज़ाफ़ा किया, 'मेरे प्यारे मेहमान मैं किस तरह यकीन करलूँ के एक किताब जिसमें पचास हज़ार गलतियाँ शामिल हैं और जो कभी भी तबदील और सही की जाती है वो अल्लाह तआला की किताब है? कुरआन अल करीम से एक भी हरूफ़ न तो इज़ाफा किया गया था छाँटा गया जिसे हम मानते हैं के अल्लाह तआला की किताब है। इसमें एक भी गलती नहीं है। मैं तुम्हारी कोशिशों को सराहता हूँ के तुमने मुझे सही रास्ते पर रहनुमाई की, फिर भी तुम्हारी रहनुमा, दा ओल्ड और नयू टेस्टामेंटस गलत हैं, और जो रास्ता तुमने चुना है वो शक वाला हैं, तुम किस तरह इस इख़तिलाफ़ात हालत को वाज़ेह करोगे? बेचारा आदमी पूरे तौर पर मायूसी और उलझन में चला गया। उसने कहा, मैं जाता हूँ और अपने आला पादरियों से मश्वरा करता हूँ। मैं थोड़े दिनों में जवाब लेकर वापस आता हूँ, और चला गया। वो दोबारा दिखाई नहीं दिया। मैं तब से उसका इंतेज़ार कर रहा हूँ। अब तक नज़र में कोई नहीं है!"

अब हम तोरह और बाइबल में गलतियों, बेजोड़पन और मुतज़ाद बयानात की अफ़रात को बढ़ावा देंगेः

एक नुक्ता जिस पर हम शुरू में ज़ोर डालना चाहेंगे वो ये के लोग जिन्होने तोरह और बाइबल में गलतियों से भरे इक्तिबासात खोजे और ढूँढे वो ज़्यादातर गिरजाघर के लोग थे। ये लोग ऐसे रास्ते तलाश कर रहे थे जो मुख़ालिफ़ हालतों में जिसमें वो गिर चुके थे उन से बाहर आ सकें। फिलिप्स जिसने एक किताब जिसका नाम 'बाइबल का मोर्डन अंग्रेज़ी तर्जुमा' था **1970** लंदन में छपवाई, उसने मैथ्यू की इंजील पर मंदरजाज़ेल मुशाहिदा कियाः

"वहाँ ऐसे लोग हैं जो इस बात पर बहस करते हैं के इंजील जो मैथ्यू से वाबस्ता है वो असली में उसके ज़रिए नहीं लिखी गई। आज बहुत सारे चर्च से सबंधी लोग इस बात को पकड़ते हैं के नाम निहाद इंजील एक ऐसे शख्स के ज़रिए लिखी गई है जो इसरार में डूबा हुआ है। वो पुरइसरार शख्स मैथ्यू की इंजील को लेता है उसे जिस तरह वो चाहता है तबदील करता है, और दूसरे और बयानात उसमें जोड़ देता है। उसका स्टाइल बिल्कुल साफ़ और चिकना है। इसके बरअकस, असली मैथ्यू का स्टाइल ज़्यादा हैरतअंगेज़ और उसके बयानात में ज़्यादा तर्क शामिल हैं। मैथ्यू ने सारे बयानात जैसे देखे और अपने दिमाग़ की चलनी से जैसे सुने और सबब वो उसने वैसे ही आगे बढ़ा दिए, और उन्हें सिर्फ उस वक्त

लिखा जब उसे पूरे तौर पर यकीन हो गया के वो अल्लाह के लफ़्ज़ हैं। वो मतन जो अब हमारे पास है मैथ्यू के इंजील के नाम से वो एक ही एहतियात की अक्कासी नहीं करता।"

क्योंकि अल्लाह का लफ़्ज़ लगातार बदला नहीं जा सकता, ऊपर दिए गए बयानात का हवाला ये साबित करने के लिए काफ़ी है के आज की मैथ्यू की इंजील खो चुकी थी, और एक नई इंजील एक नामुकम्मल शख्स के ज़रिए लिखी गई। कोई नहीं जानता वो शख्स कौन था।

चार इंजील बाइबल के नयू टेस्टामेंट के हिस्से में शामिल, मैथ्यू बाहर रखा गया, जॉन के ज़रिए, लयूक के ज़रिए, और मार्क के ज़रिए लिखी गई थीं। इन लोगों में से सिर्फ़ जॉन, [ईसा अलैहि सलाम की मामी के बेटे] है, जिसने ईसा (जीसस) अलैहि सलाम को देखा था। ताहम उसने अपनी इंजील ईसा अलैहि सलाम के आसमान पर उठा लिए जाने के बाद समोस में लिखी। दूसरी तरफ़ लयूक और मार्क ने ईसा अलैहि सलाम को नहीं देखा था। मार्क पिटर का तर्जुमा करने वाला था। न सिर्फ मैथ्यू की इंजील बल्कि जॉन की इंजील भी किसी और के ज़रिए लिखी और तबदील की गई। ये थीसिस आगे सफ़हों पर साबित हैं। मुखतसिर ये के, वहाँ पर मुखतलिफ़ तबसरें हैं चारो इंजील के मुतअल्लिक एक हकीकत, अगरचे, सारी दुनिया इस पर मुतफ़िक है: के ये चारो इंजील आदमी की बनाई हुई कहानियों पर मुश्तमिल हैं जबकि मिज़र खाते एक जैसे वाक्यात (जैसे तुम आगे देखोगे) वो अल्लाह के लफ़्ज़ नहीं हैं। पाक बाइबल में गलतियों, यानी ओल्ड और नयू टेस्टामेंटस पर आगे गुफ़्तुगू से पहले, हम तोरह और बाइबल के दूसरे पहलू को छुएँगे। मंदरजाज़ेल कहानी एक शख्स के ज़रिए बताई गई जिसने ईसाईयों के साथ बहुत सारे बहसें की और जिसने उन्हें झूठा ठहरा दिया:

"एक दिन मैने अपने ईसाई पड़ोसियों से दरखुवास्त की: 'आजकल मैं अपने आपको मुकददस बाइबल के साथ वाबस्ता रखता हूँ। मैं उसमें से एक इक्तिबास तुम्हें पढ़कर सुनाना चाहता हूँ।' वो मेरे मुकददस बाइबल में दिलचस्पी लेने से बड़े खुश हुए, और इस उम्मीद से खुश हुए के मैं सही रास्ते को हासिल कर लूँगा। वो मेरे चारो तरफ़ घेरा बनाने के लिए भागे। मैने हर एक को मुकददस बाइबल की एक कॉपी दी और उनसे मैने उस सफ़हे को खोलने के लिए जहाँ **यशायाह** का **37**वाँ बाब शुरू होता है। मैने उनसे कहा, 'अब मैं इस पाक बाइबल का बाब तुम्हे पढूँगा। बराएमेहरबानी मुझे देखो के मैं सही पढ़ रहा हूँ के नहीं।' उन सबने मुझे ध्यान से सुनना शुरू कर दिया, अपने हाथों में मुकददस बाइबल के बाब से मेरे पढ़ने को जाँचते हुए। जो बाब पढ़ने के लिए मैने चुना मंदरजाज़ेल है:

‘और जब राज हेज़ ई किया ने ये सुना, तो ये मंज़ूर हुआ, के वो अपने कपड़े किराए पर दे दे, और अपने आपको टाट में लपेट ले, और रब के घर में घुस गया।’ (Is: 37-1)

‘और उन्होने इ-लिअ-किम को भेजा, जो घर पर था, और शेबना लिखने वाले को, और पादरियों के बंड़ों को जो टाट में लिपटे हुए थे, आमोस के बेटे नबी इस्याह के पास।’ (Ibid: 2)

‘उन्होने उससे कहा, इस तरह हेज़-ई-क्याह कहते हैं, ये दिन मुश्किल का, और फटकार का, और कुफ्र का दिन है; क्योंकि बच्चे पैदाईश के लिए आते हैं, और आगे लाने की ताकत नहीं है। (Ibid: 3) मैने थोड़ी देर के लिए पढ़ा।

“जैसे के मैं पढ़ रहा था, मैं वक्त-वक्त पर रूक गया, उनसे पूछने के लिए के क्या मेरा पढ़ना बिल्कुल सही है। वो जवाब देते थे, हाँ। हर लफ़ज़ जो तुम पढ़ रहे हो बिल्कुल सही है। फिर अचानक मैं रूक गया। और मैने उनसे कहा, ‘अब मैं तुम्हें कुछ सुनाऊँगाः जो इक्तिबास तुम मेरे साथ पढ़ रहे हो अपने हाथों में ली हुई किताबों में से वो ओल्ड टेस्टामेंट [तोरह] के इस्याह/यशायाह के **37**वें बाब का है। दूसरी तरफ़, जो इक्तिबास मैं इस किताब में पढ़ रहा हूँ वो ओल्ड टेस्टामेंट के ii किंगस का **19**वाँ बाब है। दूसरे लफ़्ज़ों में, दो मुख्तलिफ़ बाब दो मुख्तलिफ़ किताबों से बिल्कुल एक जैसे हैं, जिसके कहने का मतलब ये है के इनमें से एक ने दूसरे की नकल की है। मैं नहीं जानता के कौन सी किस की नकल है। ताहम, ये किताबें जिन्हें तुम मुकददस किताबों के तौर पर देख रहे हो वो एक दूसरे से चुराई गई हैं। ये इसका सुबूत है! मेरे लफ़्ज़ों ने हल्ला गुल्ला मचा दिया। ज़ोर से चीखती आवाज़ें उठ गईः ‘ये नामुमकिन है!’ उन्होने उस वक्त मेरे हाथ से पाक किताब ले ली, और ग़ौर से उसका मुआईना किया। जब उन्होने देखा ii किंगस का **19**वाँ बाब, जो मैं पढ़ रहा था, वो बिल्कुल इस्याह के **37**वें बाब की तरह है, वो मुंह खोले हुए हैरान रह गए। मैने उनसे कहा। बराए मेहरबानी, अब मैं जो आपको बताने जा रहा हूँ इससे रिआयत न करेंः क्या रब की एक किताब में चोरी मुमकिन है? मैं किस तरह ऐसी किताबों में यकीन करू? उनके सिर झुक गए। विली नीली, हांलाकि, उन्हें खामोशी से तसलीम करना पड़ा।

अब हम कुछ मुबहम इक्तिबासात तोरह और बाइबल से बयान करेंगेः “और जैसे जीस्स वहाँ से आगे बढ़े, उन्होने एक आदमी देखा, जिसका नाम मैथ्यू था, अपनी मरज़ी के मुताबिक वसूली पर बैठे हुएः और उन्होने उससे कहा, मेरे पीछे आओ। और वो खड़ा हुआ, और उनकी तकलीद की।” (मैथ्यूः **9-9**)

अब, हम अच्छा सोचते हैंः मान लो अगर वो शख्स जिसने ये बयानात लिखे वो खुद मैथ्यू था, तो उसने ये वाक्या किसी तमाशाई के मुंह से क्यों कहलवाया बजाए खुद के

लिए बोलते हुए? अगर जिस इंजील की बात हो रही है उसका मुसंनिफ़ मैथ्यू खुद था, तो वो इस तरह कहता, मिसाल के तौर पर, "जैसे के मैं अपनी मरज़ी की वसूली पर बैठा था, जीस्स वहाँ से गुज़रे। उन्होने मुझे देखा और मुझे अपनी तकलीद करने के लिए कहा। इसलिए मैने उनकी तकलीद की।" इससे ये ज़ाहिर होता है के मैथ्यू मैथ्यू की इंजील का मुंसनिफ़ नहीं है।

"इसके बावजूद बहुत से लोगों ने उन चीज़ों के ऐलान के लिए हाथ उठाया जो सबसे ज़्यादा हमारे दरमियान यकीन रखते हैं।" "यहाँ तक के उन्होने हमें इन में डाला, जो शुरू से गवाह थे, और अल्फ़ाज़ के वुज़रा थे;" "ये मुझे भी अच्छा लग रहा था, बहुत पहले से तमाम चीज़ों को कामिल तफ़हीम होना था, आपके लिए उनको लिखने के लिए, हम सबसे ज़्यादा बेहतरीन हैं।" (ल्यूकः **1-1, 2, 3**)

ये अल्फ़ाज़ ये बताता है केः
ल्यूक ने ये इंजील उस वक्त लिखी जब दूसरे बहुत सारे लोग इंजील लिख रहे थे।
ल्यूक बताता है कि रसूलों के खुद के ज़रिए लिखी गई कोई इंजील नहीं है। ये कहकर, "जैसा के उन्होने उनको हमारे पास भेजा, जो शुरू से चश्मदीद गवाह, और अलफ़ाज़ के वुज़रा थे;" ल्यूक ने इंजील लिखने वालों और चश्मदीद गवाहों यानी रसूलों के बीच में फ़र्क पर ग़ौर किया।

वो रसूलों में से किसी एक का शार्गिद होने का दावा नहीं करता। क्योंकि वो उम्मीद नहीं करता के इस तरह का एक दस्तावेज़ के एक रसूल का शार्गिद होने का दावा करने से, अपनी किताब में दूसरों का एतमाद जीत सकता है, खासतौर से उसके वक्त में जब मुल्क रचनाओं, तहरीरों और किताबचों से अटा पड़ा था हर एक रसूलों से मंसूब था। शायद वो ये कहना चाहता था के एक शख्स के रूप में असली ज़रिए से हकाईक को जाँचना चाहता है क्योंकि वो सोचता है के इस तरह के दस्ताविज़ात ज़्यादा तसदीकी हैं।

"और वो जिसने इसे बग़ैर रिकॉर्ड देखा, और इसका रिकॉर्ड सच्चा हैः और वो जानता है के वो सच कह रहा है, जो तुम यकीन करोगे।" (जॉनः **19-35**) अगर जॉन ने खुद अपने आप ये आयत लिखी होती, तो वो ये नहीं कहता, "...वो जिसने इसे बग़ैर रिकॉर्ड देखा, और इसका रिकॉर्ड सच्चा है।"

मुख्तसिर ये के, तुमने देखा के मैथ्यू, ल्यूक और जॉन ने अपने खुद के बारे में नहीं लिखा, बल्कि एक अजनबी, बग़ैर नाम के शख्स के बारे में लिखा। वो कौन शख्स है? क्या वो नबी है? लफ़्ज़ के वुज़रा कौन हैं? वो कौन शख्स है जो खड़ा हुआ, और उनकी

तकलीद की? 'चश्मदीद गवाह' कौन हैं? क्या ऐसी मज़हबी किताब है जो इतनी कमज़ोर गलतियों और इसरारों से भरी हुई है? न ही ये पता चला के चश्मदीद गवाह कौन हैं? और किस के लिए उसने गवाही दी!

**अब हम मुकददस बाइबल में बेजोड़पन और मुतज़ाद इक्तिबासात की मिसाल देंगेः**

"तो ग्रेड डेविड के पास आए, और उसे बताया, क्या तेरी ज़मीन पर सात साल कहत के आए? या क्या तू तीन महीने पहले अपने दुश्मनों से भाग गया, जबके वो तेरे आगे बढ़े?... (**2** सैमः **24-13**)

"तो ग्रेड दाऊद के पास आए, और उससे कहा, रब फरमाता है, चुनाँचे उसको चुनो," या तो तीन साल का कहत; या अपने दुश्मनों से तीन महीने पहले तबाही, जबकि तेरे दुश्मनों की तलवार तुझ पर ग़ालिब है; या फिर तीन दिन रब की तलवार, यहाँ तक की महामारी, ज़मीन पर, और रब का फरिश्ता इज़राइल के सभी किनारों को तबाह कर देता है..." (1 Chr: 21-11, 12)

तुमने दोनो इक्तिबासात के बीच में बड़े फर्क को देखा जो एक किताब में एक ही घटना के बारे में बताते हैं जिसे अल्लाह के लफ़ज़ होने का दावा किया जाता है।इनमें से किस पर यकीन किया जाए? क्या अल्लाह तआला ने दो मुतज़ाद बयानात दिए? मुख्तलिफ़ किताबों के बीच में इतनी ज़्यादा खामियाँ हैं के पाक बाइबल में उनका हिसाब इतना ज़्यादा है के वो एक बहुत बड़ी किताब बना सकते हैं।इस मसले में हम और कुछ दूसरी मिसालें देंगे ताकि हमारे पढ़ने वालों को इस मामले में एक आइडिया पैदा हो जाएः

"और सीरियन इज़राईल से पहले भाग लिए; और डेविड ने सीरियन के सात सौ रथों के आदमियों, और चालीस हज़ार घुड़सवारों को मार डाला, और अपने मेज़बान के कप्तान शो बाच को मार डाला, जो वहाँ मर गया।" (ii सैमः **10-18**)

"लेकिन सीरियन इज़राईल से पहले भाग लिए; और डेविड ने सीरियन के सात हज़ार आदमियों को जो रथों पर लड़ रहे थे, और चालीस हज़ार पैदल सवारों को मार डाला, और मेज़बान के कप्तान शो'फ़ाच को कत्ल कर दिया।" (I Chr: 19-18)

एक ही लड़ाई दो मुख्तलिफ़ तरीको से दो मुख्तलिफ जगहों पर लड़ी गई। रथों के नंबर जो पिछले वाले में सात सौ थे, वो दस से ज़बर हो गए और बाद वाले में सात हज़ार बन गए। उनमें से एक किताब के मुताबिक चालीस हज़ार घुड़सवार कत्ल किए गए वो दूसरी में वही नंबर पैदलसवार हो गए!

चूँकि पाक बाइबल में किताबें इतनी ज़्यादा बेजोड़ जानकारी दे रही हैं, तो कौन यकीन करेगा के वो अल्लाह के लफ़्ज़ हैं? क्या अल्लाह तआला, वो हमें ऐसा कहने से बचाए,- के वो पैदलसवार या घुड़सवार में फर्क करने के लायक नहीं, या सात सौ और सात हज़ार का फर्क नहीं दिखाई देगा, दस गुना फर्क है? ऐसे बयानात बनाना जो एक दूसरे के मुखालिफ़ हों और फिर उन्हें अल्लाह तआला के लफ़्ज़ बनाना; कितना गुस्ताख, बेनकाब तौहमत है अल्लाह तआला की तरफ़।

चलो कुछ और मिसाले हम देते हैंः
मंदरजाज़ेल इक्तिबासात में जो जगह बयान की गई है वो 'कुरबानियों का तालाब' है जिसे सुलैमान (सोलोमन) अलैहिस्सलाम के हुकूम से उनके महल में बनाया गया था।

"और यह एक हाथ चौड़ाई मोटी थी, और उसका कड़ा एक कप के क्रीम की तरह बनाया गया था, लिली के फूलों के साथ; और इसमें दो हज़ार गुस्ल शामिल हैं।" (I किंगसः **7-26**) (I गुस्ल = **37** लीटर)

"और इसकी मोटाई एक हाथ की चौड़ाई के बराबर है, और इसकी कड़ाही एक कप की कड़ाई के काम की तरह है, लिली के फूलों के साथ; और उसमें तीन हज़ार गुस्ल मोसूल और मुनअकिद किए जाते हैं।" (II Chr: 4-5)

तुम देख रहे हो, एक बार फिर इसमें बहुत ज़्यादा फ़र्क हैः एक हज़ार गुस्ल, यानी **37** हज़ार लीटर! ये ज़ाहिर है के इन किताबों के नाम निहाद लेखक एक दूसरे से बिल्कुल बेखबर हैं, जो कुछ उनके साथ हुआ उन्होने लिख दिया, उसे दोबारा चेक करने की ज़ेहमत नहीं की, इस तरह मुतनाज़अ ज़ावयों ने जन्म लिया, और फिर बेशर्मी से अपनी तहरीरों को अल्लाह के लफ़्ज़ कहा।

यहाँ एक और मिसाल हैः
"और सोलोमन के पास चार हज़ार स्टॉल थे घोड़ों और रथों के लिए, और बारह हज़ार घुड़सवार; जिन्हें उसने रथ शहरों में अता कर दिया, और राज के साथ जेरूसलम में।" (II Chr: 9-25)

"और सोलोमन के चालीस हज़ार स्टॉल थे..." (I किंगस: 4-26)
तुमने देखा स्टॉल के नंबर दसगुना ज़रब हो गए।

यहाँ ऐसे कहा जा सकता है, "फ़र्क ज़्यादातर नंबरों का है। क्या नंबरों का फर्क इतना अहम है?" चलो इसका जवाब हम अल्बर्ट्स शवेज़र के हवाले से देते हैं, जो बयान करता है, "यहाँ तक के बड़े अजूबे भी ये साबित नहीं कर सकते के दो ज़रब दो पाँच होता है, या दाएरे के फ्रेम पर ज़ाविए होते हैं। दोबारा, सबसे ज़्यादा बेवकूफ़ी वाले अजूबे, कोई बात नहीं कितने ही, एक खामी या गलती को एक ईसाई के बिदअती अकीदे में सही नहीं कर सकती।"
आखिर में, हम कुछ मुखतलिफ़ इक्तिबासात का हवाला देते हैंः
ये मैथ्यू की इंजील के **27**वें बाब के **44**वीं आयत में लिखा है के जो दो चोरों को ईसा अलैहिस्सलाम के साथ सूली पर चढ़ाया गया वो उन्हें यहूदियों की तरह गाली दे रहे थे। (मैथ्यूः **27-44**)

दूसरी तरफ़ ल्यूक की इंजील के **23**वें बाब की **39**वीं और बाद की आयात में लिखा है के "इन मुजरिमों में से एक ने जो लटकाए गए थे उनके ऊपर रेल हो गया," लेकिन दूसरे ने अपने साथी को "बका" ये कहते हुए "दोस्त अब खुदा का डर नहीं तुझे अपने साथ एक ही मज़मत में देखकर, "आज तुम मेरे साथ जन्नत में रहोगे।"

मुतनासिब इखतलाफ़ात वाज़ेह हैं।
मार्क के मुताबिक, जैसे के ईसा अलैहिस्सलाम मुरदे के बीच में रहे जब उन्हें सलीब से उतारा गया, उन्होंने अपने रसूलों से बात की और फिर वो आसमान पर उठा लिए गए। (मार्कः **16-9** से **19** तक) यही हवाला ल्यूक में भी दिया गया है। दूसरी तरफ, रसूलों के अमाल के पहले बाब की तीसरी आयत के मुताबिक, जिसे, दुबारा ल्यूक से जोड़ा गया, हज़रत ईसा मुरदों के बीच **40** दिन तक रहे और फिर आसमान पर ले जाए गए। (अमालः **1 -3, 9**)

और इस तरह मिसालें चलती रहेंगी। जैसा के हमने पहले बयान किया था, ये किताब उन सबको लिखने के लिए बहुत छोटी है। अबदुल्लाह-ए-तर्जुमान, जो टरमेदा नाम से पहले एक पादरी था, और जिसका हमने तआरूफ में ज़िक्र किया था, हर एक इंजील में उसकी आयत के बीच में मुतज़ाद कुछ मिसालें दींः

“...और उनका ( जॉन (याहया अलैहिस्सलाम) खाना टिडिडयाँ और जंगली शहद था।” (मैथ्यूः **3-4**)

“क्योंकि जॉन न तो खा रहा था न ही पी रहा था...” (Ibid: 11-18)

साबका पादरी ने एक दूसरे इक्तिबास का हवाला दियाः

“जीस्स, जब उसने दोबारा तेज़ आवाज़ से पुकारा, भूत पैदा हो गया।और, मंदिर का पर्दा पकड़ो ऊपर से लेकर नीचे तक ट्रवेन में दरार आ गई; और ज़मीन पर ज़लज़ला आया; और चट्टानों में दरारें पड़ी; और कब्रें खुल गई; और बहुत सारे फकीरों के जिस्म जो सो रहे थे उठ गए,” “और अपनी कब्र से उठाए जाने के बाद बाहर आ गए, और मुकददस शहर में चले गए, और कई पर दिखाई दिए।” (Ibid: 27-50, 51, 52, 53 ) इस हवाले के बाद, सबका पादरी अनसेलमो टरमेडो इसके बाद इस्लाम में शामिल हो गए, कहते हैः “ये इक्तिबास, जो सिर्फ एक वज़ाहत थी एक तबाहकुन घटना की, वो एक पुरानी किताब से चोरी की गई थी।ये वज़ाहत एक यहूदी तारीखदाँ के ज़रिए लिखा गया टाइटस के ज़रिए (रोमन बादशाहत **78** से **81** सी ई तक) जेरूसलेम पर कब्ज़ा और तबाही के बाद।अब हम ये इक्तिबास मैथ्यू में देखते हैं, जिसका मतलब है के इसे मैथ्यू में बाद में किसी बेनाम शख्स के ज़रिए इसमें डाला गया।” और ये, अपनी बारी में, एक बार फिर ये साबित करता है के ये बहस के “मैथ्यू की इंजील मैथ्यू के ज़रिए खुद लिखी गई इंजील नहीं है” ये सच्च है, और मैथ्यू की इंजील के गुमनाम लेखक की याद कराती है पूरे इतने सारे उतार चढ़ाओ के साथ।

चलिए एक और तारीखी ग़लती को छुएँः
“और हागार ने अब्राम को एक बेटा बनायाः और अब्राम ने अपने बेटे का नाम बुलाया, जिसे हागार ने, इश्मा-इल बुलाया।” (Gen: 16-15)

“और उसने कहा, अब अपने बेटे को ले लो, तुम्हारा एकलौता बेटा इसाक, जिसे तुम प्यार करते हो और इसे मारवाह की ज़मीन पर ले जाओ;...” (Ibid: 22-2) ज़ाहिर है, ऐसा लगता है के ये भुला दिया गया के इब्राहिम (अब्राहम) अलैहिस्सलाम के एक दूसरा बेटा, जिसका नाम इस्माईल अलैहिस्सलाम था वो भी थे।

चलो इन सब गलतियों को एक तरफ़ रख देते हैं, जिसके साथ पढ़ने वाले भी परेशानी महसूस करनी शुरू कर सकते हैं, और मुकददस बाइबल, यानी ओल्ड और नयू

टेस्टामेंटस में मौजूद किताबों की इबतिदा में डूब गया, जिसमे आज के ईसाई और यहूदी यकीन रखते हैंः

मुक़ददस बाइबल की पहली पाँच किताबें **1.** पैदाईश, **2.** खरूज, **3.** लेवीय, **4.** तादाद, **5.** Deutronomy हैं।इन पाँच किताबों या इंजील में मूसा की बनाई पाँच किताबें Pentatench को तोरह कहते हैं।उनका यकीन है के ये पाँच किताबे तोरह है जो मूसा (मोसिस) अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई।

हम पहले ही इस्याह पर किए गए कुछ तवसरों का हवाला दे चुके हैं।वो किताब कहा जाता है के किसी और के ज़रिए लिखी गई।

किताब जजिस ऐसा सोचा जा सकता है के इस्माईल के ज़रिए लिखी गई।
रूथः लेखकः गुमनाम
**1.** शमूएलः लेखकः गुमनाम
**2.** शमूएलः लेखकः गुमनाम
**1.** किंगसः लेखकः गुमनाम
**2.** किंगसः लेखकः गुमनाम

**1** तारीखः शायद ये किताब एक यहूदी रब्वी और थेअलोजियन जिसका नाम अज़रा (इज़रा) था ईसा अलैहिस्सलाम से **350** साल पहले लिखी थी।

**2** तारीखः ये किताब, भी, हो सकता है अज़रा ज़रिए लिखी गई।ये मुनजिद (एक इंसाइकलोपिडीक अरबी की लुग़त दो हिस्सों में बनी हुई) में लिखी हुई है अज़रा का मतलब अज़ेर है।ताहम इन किताबों का मुसंनिफ उज़ेर अलैहिस्सलाम (एक नबी) नहीं हैं, बल्कि अज़रा नाम की एक यहूदी है।

इज़राः इस किताब के मुसंनिफ के बाद इसका
नाम, इज़रा (अज़रा) रखा गया।
एस्थरः लेखकः गुमनाम।
जॉबः लेखकः गुमनाम।

Psalms: इसका मतलब है ज़बूर के बाब पाक किताब जो दाऊद (डेविड) अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई।अगरचे ये कहा जाता है के इसमे वो बाब है जो दाऊद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुए थे, इसमें कोराह, असाफ, एगन इज़राइट और सोलोमन (सुलैमान अलैहिस्सलाम) के बेटों के ज़ंबूर शामिल हैं।

जोनाहः लेखकः गुमनाम

हबक्कूकः एक किताब जो एक शख्स के ज़रिए लिखी गई जिसकी पहचान, असल, नस्ल या पेशा बिल्कुल भी मालूम नहीं है।

तो हमने तुमहें **ओल्ड टेस्टामेंट** की किताबों की इबतिदा के बारे में थोड़ी जानकारी दे दी है।

**नयू टेस्टामेंट** के लिएः चुँकि हमने पहले से ही उसके लेखकों और खामियों के बारे में तुम्हें जानकारी दे दी है, हम नहीं समझते के आगे और किसी तफ़सील की ज़रूरत है।

मुक़ददस बाइबल में और दूसरे बेतुके बयानात हैं। मिसाल के तौर पर, तौबा जो अल्लाह तआला सैलाब के लिए मेहसूस करता है। (जेनः **8-21**)

याक़ूब (जेकब) अलैहिस्सलाम सपना देखते हैं जिसमें अल्लाह तआला के साथ कुश्ती में जीत जाते हैं। (जेनः **32-24** से **27**), लूत (लोत) अलैहिस्सलाम अपनी बेटियों के साथ ज़िना के मरतकिब होते हैं (जेनः **19-31** से **36**); कितने ज़्यादा गंदे व झूठ हैं ये ईसाईयों को भी समझ आ गया, इसलिए उन्होने धीरे से ये इक्तिबासात मुक़ददस बाइबल से हटा लिए।

**अब हम मुक़ददस बाइबल की जाँच करते हैं मुतनासिब नुक़ते नज़र से, ये देखने के लिए ये इंसानियत में क्या असर डालने की कोशिश कर रहा हैः**

जो इक्तिबास हम हवाला दे रहे हैं वो पैदाईश से है, जो शुरूआती इंसान, शुरू के नबियों, आला नबियों जैसे के आदम, नूह, और इब्राहिम अलैहि-मुस्सलावातु-वतसलिमात के बारे में बताती है। ये इबतिदाई हिब्रू के खानदानों के बारे में बताती है और वो किस तरह कायम हुए। ये इस तरह मंदरजाज़ेल तरीके से **38**वें बाब की शुरू की आयात में लिखा है, जो यहूदा, यहूदियों के पेशवा के बारे में हैः "और उस वक्त ये हुआ, के यहूदा अपने भाईयों से नीचे चला गया, और एक खास अ-दुल लैम इट में बदल गया, जिसका नाम हिराह था।" और यहूदा ने एक खास कनानी की बेटी को देखा, जिसका नाम शुआह था; और उसने उसे लिया, और उसके पास गया।" " वो हामला हो गई, और एक बेटे को पैदा किया; और उसने उसे एर नाम से पुकारा।" (जेन **38-1, 2, 3**)

अब मेहरबानी करके अपने दिल पर हाथ रख लो, और मंदरजाज़ेल सवालों के जवाब दोः एक मज़हबी किताब क्या सिखाती है? एक मज़हबी किताब लोगों को सिखाती है के उन्हे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। ये उन्हे इस दुनिया और बाद के बारे में खयालात देती है। ये उन्हे बुरे बर्ताव के लिए डाँटती और अच्छे बर्ताव के लिए तारीफ करती है। ये अल्लाह तआला की तरफ उनके फराईज़ के बारे में सिखाती है और जो बर्ताव उन्हे एक दूसरे के साथ रखना चाहिए उसके बारे में सिखाती है। ये एक ज़िन्दगी भर की पॉलिसी बनाती है जो पुरअमन और खुशहाल दुनियावी ज़िंदगी हासिल करने के लिए अपनाई जाती है। मुख्तसर तौर पर, एक मज़हबी किताब अखलाकियत की एक किताब है।

जो इक्तिबास आपने अभी पढ़ा है उसमें कौन सी एक फज़ीलत है? ये ज़िना की एक फहश कहानी है। किसी भी जगह दुनिया में, ये इक्तिबास फहश मज़ामीन के लिहाज़ से बन कर दिया जाएगा। ये किताब, जिसे ईसाई और यहूदी मुकददस मानते हैं, इसमें दूसरे इसी तरह के कई गैर अखलाकी इक्तिबास हैं मिसाल के तौर पर, जैसे के हमने पहले हवाला दिया, के ओल्ड टेस्टामेंट के पैदाईश **19**वें बाब के **30**वें और बाद की आयात में लिखा है के लूत (लोत) अलैहिस्सलाम की अपनी खुद की बेटियों ने उन्हे शराब पिलाई और उनके साथ जनसी तअल्लूकात बनाए और बेटे पैदा किए। इसी तरह, ओल्ड टेस्टामेंट की ii शमूएल के **11**वें बाब में लिखा है के दाऊद (डेविड) अलैहिस्सलाम ने शबा को नहाते हुए देखा जो उनके कमांडरो में से एक ऊरिय्याह की बीवी थी, वो नंगी थी जैसे के वो नहा रही थी, उसकी तरफ कशिश महसूस की, और उसके साथ जनसी तअल्लुकात बना लिए, और उसके शौहर को "सबसे मश्हूर जंग में आगे भेज दिया," के कहीं वो वापस न आ जाए। (ii सैम **11-2** से **17**) आज के यूरोपी म्यूज़ियमों में तस्वीरें लगी हैं जिसमें डेविड नंगी नहाती हुई शबा को देख रहा था और ऊरिय्याह को मौत के लिए भेज रहा है। यूरोपी ज़ुबानों में, 'ऊरिय्याह के हरूफ' का मतलब है 'मौत की सज़ा' या बुरी खबर, और इस तरह यूरोपियों ने अपनी किताबों में जिसे वो 'मुकददस' कहते हैं इस तरह की कहानियाँ बना लीं, ये किताबें अपने पढ़ने वालों को क्या सिखाती है? आदमी जो अपने भाईयों की बीवियों को ज़िना के लिए लुभाते हैं, ससुर जो अपनी बहु को हामला कर देता है, बाप जो अपनी बेटियों के साथ मुबाशरत करते हैं, आदमी जो अपने से कमतर की बीवियों को लुभाते हैं और जो उन्हें मौत के लिए भेजते हैं। कितनी तौहीन आमिज़ है। ये फहश कहानियाँ कुछ ईसाईयों के ज़रिए भी रद्द की गई। **1977** का जारी करदा रिसाले सादा सच में शामिल एक लेख जो मंदरजाज़ेल तनबीह का दावा करती हैः "इज़ाफ़ी होशियार जबकि तुम अपने बच्चों को मुकददस बाइबल पढ़ा रहे हो। क्योंकि मुकददस बाइबल में ज़िना की बेहुदी कहानियाँ हैं। बच्चे जो ये कहानियाँ पढ़ेंगे वो परिवार के लोगों के बीच में रिश्तों में कुछ असामान्ताएँ पैदा हो जाएँगी। ये बेतुकी कहानियाँ, जोकि ज़्यादातर ओल्ड टेस्टामेंट में ज़ाहिर हैं, इन्हें पूरे तौर पर खत्म कर देना चाहिए और बच्चों को ऐसी मुकददस बाइबल देनी चाहिए जो इन

सब मिलावटों से पाक हों।" "रिसाले ने ये भी इज़ाफ़ा किया के 'मुकददस बाइबल को यकीनन एक तजज़िए के मुताबिक होना चाहिए।इस वक्त, ये जवान लोगों को गैर अख़लाकी ग़फ़लत की तरफ बढ़ावा दे रही है, इन्हे आला अख़लाकी खुसूसियात के साथ मुबाहसा करने के बजाए।" बनाई शॉ, अदब के एक मश्हूर आदमी, इस मज़मून में आगे तक चले गए।वो इस नज़रिए का था के "तौरह और बाइबल दुनिया की सबसे खतरनाक किताबों में से हैं।इनको एक मज़बूत तिजौरी में बंद कर देना चाहिए ताकि ये दोबारा ज़ाहिर न हों।"

डॉ स्ट्रागी, अपनी किताब में मुकददस किताब के बारे में डॉ पार्कर से बयान में लिखते हैंः "जब तुम मुकददस बाइबल पढ़ते हो तो तुम मुतनाज़ेअ कहानियों की पालिमान में अपने आप को खो देते हो।मुकददस बाइबल में बेशुमार अजीब नाम शामिल हैं।पैदाईश, खासतौर से निसबाती रजीस्ट्रेशन किताब है।कौन किससे, और कैसे पैदा हुआ? और इससे ज़्यादा नहीं।इन चीज़ों में मेरी दिलचस्पी क्यों है? उन्हें इबादत के साथ या अल्लाह तआला से प्यार करने के लिए क्या करना है? किस तरह एक शख्स एक अच्छा फर्द बन सकता है? इंसाफ़ का दिन क्या है? कौन हमें हिसाब के लिए बुलाएगा, और कैसे? एक पाक शख्स होने के लिए क्या करना होगा? इन सब चीज़ों के लिए वहाँ पर बहुत थोड़ा हवाला है।ज़्यादातर मुख्तलिफ़ इक्साम के अफ़साने हैं।दिन को बयान करने से पहले, रात को बयान किया जा रहा है।"

प्रोफेसर एफ़.सी.बुर्कीट का नज़रिया उसकी किताब '**नयू टेस्टामेंट का केनन**' मंदरजाज़ेल तरीके से बयान किया जा सकता हैः "वहाँ पर ईसा (जीस्स) अलैहिस्सलाम की चार तफ़सिलात हैं, चार इंजील में से हर एक में।वो एक दूसरे में बहुत मुखतलिफ़ हैं।जिन्होने उन्हें लिखा उन्होने चारों इंजील को एक साथ लाने की नीयत नहीं करी।इसलिए, उनमे से हर एक ने एक दूसरे के साथ कोई राब्ता बनाए बग़ैर मुखतलिफ़ जानकारी दी।कुछ तहरीरें नामुकम्मल कहानियों की तरह हैं, और दूसरी उन इक्तिबासात की तरह हैं जो एक मश्हूर किताब से लिए गए हों।"

जैसे के **मज़हब और अखलाकियात के Encyclopedia** के दूसरी जिल्द के **582**वें सफहे पर निशानदेही की गई है के, "ईसा (जीस्स) अलैहिस्सलाम ने अपने पीछे कोई तहरीरी काम नहीं छोड़ा, न ही उन्होने अपने किसी भी शार्गिद को अदब लिखने का हुकूम दिया।" जैसे के देखा गया है के, इस बड़े **Encyclopedia** ने इस हकीकत की तसदीक कर दी के चारों इंजील की कोई मज़हबी अहमियत नहीं है, और ये के उसमें मुतज़ाद कहानियाँ हैं गुमनाम मुसनिफ़ों के साथ।

जैसा के यूरोपी साईसंदानों और तारीखदानों और यहाँ तक के ईसाई थेअलोजिन ने भी ये ऐलान कर दिया के आज की तोरह और बाइबल खराब किताबें हैं, मज़हब की दुश्मन, जो रूहानी ताकतों को रद्द करती हैं और जो तकनीकी तबदीली की रफ़तार से हैरान हो गई और इसलिए रूहानी इल्म के वुजूद से बेहद बेख़बर हैं, तोरह और बाइबल में मूर्ख इक्तिबासात की वजह से मज़ाहिब पर हमला करती हैं। इस तरह वो उनके इंकार करने वाले मोअजिज़ों के लिए जवाब तलाश करने की कोशिश कर रहे हैं। बहरहाल, एक ईसाई, और एक जैसे मुलमान के लिए तकवीयत की सबसे पहली ज़रूरत मोअजिज़े में यकीन करना है। अगर एक शख्स अपने दिमाग को सिर्फ गेज की तरह इस्तेमाल करता है ईमान (अकीदे) के मामले को साबित करने के लिए, जो उसकी दिमाग की पहुँच से बाहर है, तो वो कुफ़्र में घिर सकता है। एक शख्स किसी चीज़ की तरफ जो वो नहीं जानता या जिसे वो समझ नहीं सकता उसके लिए वो अदावत महसूस कर सकता है। उन बदकिस्मत लोगों में से एक जो इंकार करने की तबाहकुन हालत में गिर गए हैं वो है अर्नेस्ट ओ.होसर, मज़हबी किताबों का एक अमेरिकी लेखक। अपने एक लेख में जो **1979** में शाअ की गई थी, वो पाक लोगों पर हमला करता है और यहाँ तक के मोअजिज़ात की तशरीह करने की भी कोशिश करता है। जवानों के दिमागो को लुभाने के लिए उनसे कुछ भी मज़ामीन बेदीनों के ज़रिए लिखे गए अपनी बहस को साबित करने के लिए सुबूत के तौर पर उसमें डाले, जो मंदरजाज़ेल तरीके से दूसरे लफ़्ज़ों में बयान कर दिए गएः "ये ऐसे लिखे गए हैं, जिस तरह मैथ्यू की इंजील में तकलीद किए गए हैंः 'और उसने भीड़ को घास पर बैठने का हुकूम दिया, और पाँच रोटियाँ लीं, और दो मछलियाँ, और ऊपर आसमान की तरफ़ देखा, उसे बरकत हुई, और तोड़ा, और अपने शार्गिदों को रोटियाँ दे दीं, और शार्गिदों ने भीड़ को दे दीं।' 'और उन्होने सबने खाया, सब के पेट भर गए थेः और उन्होने उन टुकड़ों को उठाया जो बारह टोकरी बनीं।" 'और वो जिन्होने खाया वो तकरीबन पाँच हज़ार मर्द, औरतों और बच्चे के सिवा थे। [मिथः **14-19, 20, 21**]

"ये ईसा अलैहिस्सलाम का सबसे ज़्यादा तकरारी मोअजिज़ा है जिसका मैथ्यू ने हवाला दिया।'

"एक मोअजिज़ा ग़ैरमामूली, निराला वाक्या होता है जो एक नबी अपनी सलाहियत और ताकत दिखाने के मकसद से अदा करता है। हम आज के ईसाइयों के लिए किस तरह इन मोअजिज़ों को एक उसूली अकीदे की तरह पेश कर सकते हैं, जिन्होने सबसे ज़्यादा तारीखी साईन्सी इस्लाहात को सीखा है और जो इल्मी माहौल में बड़े हुए है? दूसरी तरफ़, उन्हे इंजील से बाहर निकालना नामुमकिन है। फिर हमें एक बार दोबारा उनका जाएज़ा लेना होगा। हमारा बचपन एक तरतीब में गुज़रा था जहाँ हमने बार बार जीस्स (ईसा अलैहिस्सलाम) के मुख्तलिफ़ मुअजिज़ात के बारे में सुना था। उनमे से कुछ, जैसे एक शादी

की पार्टी में कैना में उन्होने पानी को शराब में बदल दिया; गलील के समुंद्र में एक भयानक तूफान को रोकना; उनका अंधे का इलाज करना; अपने शार्गिदों की किश्ती तक उनका समुद्र पर चलना; मौत से लुआज़र को ज़िंदा करना, ये सब हमारे दिमागों में खुद चुके हैं। बेशक, बाइबल मोअजिज़ों से भरी पड़ी है। चारों इंजीलों का सबसे प्यारा हिस्सा मोअजिज़ात पर मुशतमिल है। जब जीस्स (ईसा अलैहिस्सलाम) यहूदियों के पास गए तो उन्होने उन्हे मोअजिज़ात दिखाए ताकि वो अपनी नब्बूवत/पैगंम्बरी साबित कर सकें। क्योंकि यहूदियों ने उन्हें चुनौती दी थी के वो अपने आपको साबित करने के लिए उन्हें मोअजिज़ें दिखाएँ। दरहकिकत, ज़्यादा से ज़्यादा अकसर नहीं, उन्हें अपने खुद के कुछ शार्गिदों को मोअजिज़े दिखाने पड़ते थे क्योंकि वो उनकी पैगंम्बरी पर शक महसूस करते थे। मिसाल के तौर पर, जब वो और उनके शार्गिद एक किश्ती में समुंद्र में जा रहे थे, तो एक खतरनाक तूफ़ान आ गया, शार्गिदों ने जीस्स (ईसा अलैहिस्सलाम) को उठाया, कहा, 'ऐ रब, हमें बचा, नहीं तो हम सब फना हो जाएँगे! इस पर जीस्स (ईसा अलैहिस्सलाम) ने एक निशान बनाया और तूफ़ान थम गया। ये मोअजिज़ा शार्गिदों को बहुत मुतासिर कर गया इसलिए वो जीस्स के पैरों में गिर गए, और माफ़ी मांगी, और उनकी शहादत दी। फिर, जब ये कहानी उन्होने दूसरे यहूदियों को बताई, तो वो भी, उनकी तारीफ करने लगे, और नासरी बन गए। [मैथ्यूः **8**]

"जॉन की इंजील के दसवें बाब की **37**वीं और **38**वीं आयत से बयान है के जीस्स ने कहा, 'अगर मैं अपने बाप का काम नहीं करता हूँ, मुझ पर यकीन मत करों,' लेकिन अगर मैं करता हूँ, अगरचे तुम मुझे नहीं मानते, काम पर यकीन रखोः के तुम जानते हो और ईमान लाए, के बाप मुझमे है, और मैं उनमें हूँ। (जॉन **10-37, 38**) इन मोअजिज़ात ने इन लोगों पर इतना ज़्यादा असर डाला के जो बड़ा यहूदी थेआलोजियन निकोडेमस था, जो जीस्स से इंकार करता था, एक रात उनके पास गया और उनके मोअजिज़ात से इतना मुतासिर हुआ, के उसने तसदीक करदी। 'अब मैं इस हकीकत में यकीन रखता हूँ के तुम्हें अल्लाह के ज़रिए भेजा गया है। क्योंकि तुम ये मोअजिज़ात अल्लाह की मदद के बग़ैर नहीं कर सकते।' हम जानते हैं के जीस्स (ईसा अलैहिस्सलाम) को अफ़सोस होता था और शर्म महसूस होती थी के उन्हें ये मोअजिज़ात अदा करने पड़ते हैं। जब उन्होने एक आदमी को कुष्ठ बीमारी से तकलीफ़ में था अपने हाथ में लिम्स से उसका कोढ़ सही कर दिया तो उन्होने उस आदमी से कहा के दूसरों को मत बताना के मैने तुम्हे ठीक किया है ([1] ल्यूकः **5-14**) वो मोअजिज़ात सिर्फ एक निशान बनाकर या सिर्फ कुछ लफ़्ज़ बोल कर अदा करते थे। बाएबल के मुताबिक, जब उन्होने एक लड़की के अंदर से भूत भगाया, तो उसकी माँ से कहा, दूर चली जाओ, शैतान तेरी बेटी से बाहर चला गया। ([1] मार्कः **7-29**) और उन लोगों से जिनका वो ईलाज करते थे कहते थे, 'उठो, अपना बिस्तर उठाओ और चलो ([2] जॉनः **5-8**) दरअसल, एक निशान हाथ के साथ

बनाया गया या एक लिम्स मोअजिज़े को पूरा करने के लिए काफी है। ज़्यादातर ये मोअजिज़ात शफ़कत से निकलते थे जो (ईसा अलैहिस्सलाम) जीस्स लोगों के लिए महसूस करते थे। एक दिन उन्होने दो अंधों को सड़क के एक तरफ़ देखा। उन्होने उनसे उनकी मदद करने के लिए कहा। उन्हें उन पर रहम आया और उनकी आँखों को अपने हाथों से छुआ, जिस पर वो दोबारा देखने की नेएमत पा गए। दरहकीकत, ये मोअजिज़ा ल्यूक के ज़रिए बताया गया ये ज़ाहिर करता है के जीस्स कितने दयालू थे। उन्होने एक मुर्दे को ले जाते हुए देखा, जो अपनी माँ का एकलौता बेटा था; उन्हें उस पर दया आई; और उसके बेटे को ज़िंदा कर दिया। (ल्यूकः **7-12, 13, 14, 15**) आज, ये मोअजिज़ात कई ईसाईयों के ज़रिए इंकार किए जाते हैं। बहुत सारे साईसंदाँ जीस्स में यकीन रखते हैं लेकिन इस बात पर यकीन करने से मना करते हैं के वो ऐसे मोअजिज़ात अदा करते होंगे। ये **1162** [**1748** सी.ई] के शुरू में था जब मश्हूर स्कॉच तारीखदाँ डेविड हयूम ने लिखाः मोअजिज़ात का मतलब फितरत के कानून की मुअत्तली है फितरत के कानून दुरूस्त और मुकर्रर ज़रूरयात पर मुबनी है। उनको बदलना नामुमकिन है। इस तरह से मोअजिज़ात ग़ैर यकीनी हैं।

"इन एतरेज़ात में से सबसे अहम दलील रूडोल्फ़ बटमन से आई है, जो एक मुआसिर थेआलोजिन है, जो बहस करता है के 'आज एक शख्स के लिए ये किसी भी तरह मुमकिन नहीं जो अपने घर में बिजली इस्तेमाल कर रहा है, और जो रेडियो और टेलिविज़न का इस्तेमाल कर रहा है, जो फर्ज़ी मोअजिज़ात इंजील में लिखे हैं उनपर यकीन करना मुमकिन ही नहीं।"

"मोअजिज़ात के जौहर में घुसने के लिए बहुत से तर्जुबात किए गए और उनके लिए एक मंतकी वज़ाहत फराहम की गई। मिसाल के तौर पर, पाँच हज़ार से ज़्यादा लोगों की पेट भर खिलाने वाला वाक्या जो दो मछलियों के साथ था, हकीकी तौर पर, एक अलग तरीके से, जीस्स (ईसा अलैहिस्सलाम) और दूसरे नसारी एक पिक्नीक पर गए। जब खाने का वक्त हुआ तो सबने जो कुछ वो अपने साथ खाने के लिए लाये थे निकाला, और जीस्स ने भी, खाना निकाला, दो मछलियाँ और पाँच रोटियाँ, जो वो अपने साथ लाए थे। इस तरह वो बैठ गए और खा लिया। जीस्स के लिए, समुंद्र में चल कर उस जहाज़ तक जाना जिसमे उनके शार्गिद थे; वो सिर्फ एक नज़र का धोखा है। हम सब जानते हैं के धुँध/कोहरे के वक्त में लोग समुंद्र के किनारे चलते हैं और ऐसा ज़ाहिर होता है के वो समुंद्र पर चल रहे हों। तूफान को पार करने के लिए, ये समझा गया के जब जीस्स ने निशान बनाया तब तक वो पास कर चुका था, इस तरह वो बिल्कुल शांत हो गया, चाहे अगर उन्होने एक निशान न भी बनाया होता। दरअसल, ये सब वाक्यात उन लोगों के ज़रिए बताए गए हैं जिन्होने इन्हे देखा। एक शख्स जो इस किस्म की कोई चीज़ देखेगा तो वो जज़बाती झुकाव का शिकार हो सकता है, वाक्ये को पर्दा डाल सकता है, या हकीकत को बिगाड़ सकता है और इसे

मज़ामीन से वावसता कर सकता है। इस दौरान बीच में, एक नुकता नहीं भूलना चाहिएः आज मोअजिज़ात पर तकरार पूरे तौर पर अपना असर खो चुकी है, और बहुत कम लोग, अगर वहाँ कोई है, इंजील के मोअजिज़ात पर यकीन रखते हैं। हाल ही में, एक नामी आर्क बिशप ने कहा, एक शख्स इन मोअजिज़ात में यकीन रखे बग़ैर भी एक सच्चा ईसाई हो सकता है। ईसाइयत के जौहर के लिए खुदा में यकीन और लोगों के लिए रहम होना चाहिए। इसका मतलब ये है के बाइबल को हम एक कहानियों की किताब की तरह पढ़े या न पढ़ें, और जो मोअजिज़ात इसमें लिखे हैं जो जाली कहानियों के तौर पर, उसका तकवीयत से कुछ लेना देना नहीं हैं।

"ये काबिले ज़िक्र है के जीस्स एक तरफ अपने मोअजिज़ात के लिए पूरी दुनिया में जाने जाते है और दूसरी तरफ उनपर दुश्मनी की एक भीड़ उमड़ी हुई है जब यहूदी रबी को ये खबर मिली के जीस्स ने बेथानी में एक बीमार शख्स को ठीक कर दिया और लयूज़र को ज़िंदा कर दिया, तो उन्होने अपनी हिफाज़त करने की सोची 'उनके नुकसान' के खिलाफ, उन्हें कत्ल कर के क्योंकि उनके मोअजिज़ात लोगों को अपनी तरफ खींच रहे थे और वो आहिस्ता-आहिस्ता अपने आपको खुदा से शनाख्त करते जा रहे थे, और उन्होने रोम के लोगों को धोखा दिया। इस बीच, जीस्स अपना आखिरी मोअजिज़ा अदा कर रहे थे, ऊँचे पादरी के नौकर के कान को उसकी जगह पर रख कर जिसे पीटर के ज़रिए काट लिया गया था, इस तरह वो इंसानियत को दिखा रहे थे के एक शख्स को अपने दुश्मनों के साथ भी रहमदिल होना चाहिए।

[**यहूदियों की तारीख़** की किताब के मुताबिक, जो एक यहूदी तारीखदाँ एच.हिर्श गरेटज़ नामी के ज़रिए लिखी गई, यहूदियों ने एक **सत्तर की असेंबली** कायम की इस बात को पक्का करने के लिए उनका समाज पूरे तौर पर अपने आप को तोरह के एहकामात के मुताबिक ढाल ले। इस असेंबली का सदर **सरदार काहन** कहलाया। यहूदी रब्बी जो स्कूलों में जवान यहूदियों को यहूदियत के बारे में सिखाते थे और जो तोरह की वज़ाहत करते थे वो लिखने वाले कहलाए। कुछ वज़ाहतें और नशरयात जो इन लोगों ने तोरह में शामिल करीं वो बाद में तोरह की कॉपियों में ज़म की गई जो बाद में लिखी गई। इंजील में उन्हें 'मुंशी' बताया गया। दूसरा फर्ज़ जिसके लिए वो ज़िम्मेदार थे वो था यहूदियों को तोरह की तकलीद करना]

"वो जीस्स का आखिरी मोअजिज़ा था। जब रोमन ने उनको पकड़ा और हेरेड के पास ले गए, हेरेड ने उनसे एक मोअजिज़ा करने को कहा। जीस्स ने जवाब नहीं दिया। वो खामोशी से उसकी तरफ देखते रहे। (यहाँ फिर दोबारा चार इंजीलों ने मुतज़ाद हवाले दिए। बराए मेहरबानी देखिए मैथः **27-11, 12, 13, 14** ः मार्कः **15-2, 3, 4, 5** ः ल्यूकः

**23-3, 7, 8, 9**; और जॉनः **18-33, 34, 35** और वग़ैरह वग़ैरह।) क्योंकि जो मिशन खुदा ने उन्हें दिया था वो पूरा हो गया था। वो नबी, जो दूसरों को हर किस्म की मदद करता था। वो अब अपनी मदद न कर सका। क्योंकि वो इंसानियत के लिए निजात दहंदा के तौर पर भेजे गए थे, न की खुद की निजात के लिए! कितना ज़्यादा खुदा उनके इस र्बताव से राज़ी हुआ के उन्हें उसकी तरफ़ से आसमान पर उठा लिया गया।

"ये सवाल है, 'क्या तुम मोअजिज़ात में यकीन रखते हो? हमेशा दोहराया जाता है। दरहकीकत, आज की नस्ल के लिए मोअजिज़ात पर यकीन करना बहुत मुश्किल है। हमें ये नहीं भूलना चाहिए, बहरहाल, के यकीन कभी भी मन्तक की हदूद में नहीं सिखाए जा सकते। यकीन प्यार है और ये मन्तक की अच्छी शराईत में नहीं आता। आदमी को कुछ रूहानी हुकूक मिलने चाहिए। हम कितना मज़ा उन कहानियों से उठाते थे जब हम बचपने में उन्हें सुनते थे, और किस तरह मोहभंग हुए जब हम बड़े हुए और सीखा के बोलने वाले जानवर, जिन्नियाँ, जादूगर और बोने उन कहानियों में सब सच नहीं होते थे! हम ज़्यादा मोअजिज़ात में नहीं घुसते। मैं ये समझता हूँ के सबसे ज़्यादा मन्तकी शख़्स ज़मीन पर ईसाईयत के नज़दीक अपने मोअजिज़ा पंखों पर ग़ौर करेगा, अगरचे ये सिर्फ एक कहानी है।" होसर से हमारा हवाला यहाँ खत्म हुआ। ये मज़मून हमें सोचने पर लगाता है वक्त के साथ जितने ज़्यादा ईसाईयों ने मुकददस बाइबल में खामियाँ और गलतियाँ ढूँढी, उतनी ही ज़्यादा वो उसके बयानात की सच्चाई के बारे में उलझन में पड़ गए, इतने ज़्यादा के वो उसके मोअजिज़ात को भी रद्द करने लगे। ब्रिटिश पादरी फिलाँसफ़र जिनके नाम डेविड हयूम और रूडोल्फ़ बटवन थे, दो ईसाई जिन्हें ये एहसास हुआ के जो तोरह और बाइबल को पढ़ते हैं वो अल्लाह के लफ़्ज़ नहीं हैं, वो ईसाइयत और तोरह और बाइबल की कॉपियों के लिए जो उनके हाथों में थीं सही नफरत ज़ाहिर कर रहे थे। इस दोरान, इल्म और अदाब की सरहदों के सैलाब में, उनके पास ग़फलत थी के कुरआन-अल-करीम में बयान किए गए मोअजिज़ात पर अक्कासी करने के लिए वो तखनीकी फैसले करें, जो असल में अल्लाह का लफ़्ज़ है। उन बेर्शम लाईनों को पढ़ना, जो इल्म पर मुबनी नहीं हैं अगरचे वो इल्म के नाम पर लिखी हैं, नौजवान लोग हो सकता है उसी गलत राय में घिर जाएँ जो इन लाईनों के लिखने वालों ने भी अपनाई हुई हैं। इस खतरे से, मासूम नौजवान नस्ल को बचाने के लिए, लिहाज़ा उन लोगों के लिए एक अहम काम है जो रज़ाकराना तौर पर इंसानियत की खिदमत करते हैं। एक ही निशान के ज़रिए, और अपने आपको अल्लाह तआला की रज़ा के लिए उसकी नेमत हासिल करने के मकसद से उसके हुकूम को मानना दान के काम करना, हम इस खात्से पर मंदरजाज़ेल इकतिबास लागू करते हैं अपनी बहस को सहारा देने के लिए हम **मवाहिब-ए-ल दुनिया** किताब से हवाला देते हैं जिसे अहमद कस्तलानी रहमतुल्लाह अलैहि (डी. **923** [**515** सी ई]) एक बड़े इस्लामी आलिम ने लिखा।

**मोअजिज़ा** ([1] जब अलकहल वाक्या, चमत्कार एक पैग़ंबर के ज़रिए किया जाए उसे मोअजिज़ा कहते हैं। जब ये एक वली के ज़रिए किया जाए तो इसे **करामत** कहते हैं। वली का मतलब है एक पाक मुसलमान जिसे अल्लाह तआला बहुत चाहते हैं। (जमा औलिया) (चमत्कार) एक इलाही वाक्या है जो ये दिखाता है के पैग़म्बर अलैहिमुस-सलावातु बतसलीमात अल्लाह तआला के ज़रिए भेजे गए और ये के वो सच बताते थे। जब एक पैग़म्बर एक मोअजिज़ा दिखाता था, तो वो दूसरों को ये कहकर चुनौती देते थे के, "अगर तुम यकीन नहीं करते तो कोशिश करो और ऐसा ही करो! तुम नहीं कर सकते।" एक मोअजिज़ा (चमत्कार) एक आम वाक्ये के और फितरती कानून से परे है। इस वजह से, साईसदा मोअजिज़े नहीं कर सकते। अगर एक शख्स अनोखी घटना दिखाता है और पहले से किसी को कुछ नहीं बताता और ऐसा करने के लिए उन्हें चुनौती भी नहीं देता, तब वो शख्स एक पैग़म्बर नहीं हो सकता; वो एक वली है, और जो उसने किया वो एक **करामत** है। एक अनोखा वाक्या जो दूसरों के ज़रिए किया जाए वो **जादू** कहलाता है। जो अनोखी घटनाएँ जादूगरों के ज़रिए दिखाई जाएँ वो पैग़ंबरों अलैहिमुसलावातु, बतसलीमात के ज़रिए और औलिया रहिमा-हुल्लाहु तआला के ज़रिए भी दिखाए जा सकते हैं। इसकी एक मिसाल ये हैः जब फिरओन के जादूगरों ने धागे के टुकड़ों को साँप में तबदील किया, तो मूसा (मोसिस) अलैहिस्सलाम की लकड़ी एक बड़े साँप में बदल गई और उन सबको खा गई। जब उन्होने देखा के उनका जादू टूट गया है और ये के वो दोबारा वही चमत्कार नहीं कर सकते तो उन सबने मूसा अलैहिस्सलाम में यकीन कर लिया और फिरौन के खतरों और ज़ुल्मों के बावजूद उन्होने अपने अकीदे को मुसतरिद नहीं किया। अल्लाह तआला सारे मोअजिज़ात का खालिक है, चाहे वो नबियों अलैहिमुस्सलावातु रहमतुल्लाहे तआला के करामतें। जबकि वो आम, फितरी वाक्यात को तख़लीक करता है जो वजूहात की एक मखसूस सिलसिले के ज़रिए साईंस के कवानीन के साथ हम आहंग हैं। वो मोअजिज़े तख़लीक करने में ऐसी बुजूहात को खत्म कर देता है। **बुरहान** और **आयत** और दूसरी टर्मस हैं जो **मोअजिज़ा** की जगह मुतबदिल है। जादू वाक्ये को जिस्मानी तौर पर तबदील कर देता है। ये किसी चीज़ की बनावट को नहीं बदल सकता। मोअजिज़ा और करामत इन दोनो तरह की तबदिलियों को कर सकता है।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम का ज़हूर, आपकी काबिलियतें, की वो अरब जज़ीरे पर नज़र आएँगे, और आपके ज़हूर के वक्त जो अनोखे वाक्यात रेहनुमा होंगे वो सब तोरह और बाइबल में लिखे हैं। की वो मुकददस किताबों में बयान किए गए, वो न सिर्फ मूसा (मोसिस) और ईसा (जीस्स) अलैहिम अस सलाम बल्कि मुहम्मद अलैहिस्सालाम के लिए भी मोअजिज़ाती घटना थी। अल्लाह तआला ने हर नबी को उनके वक्त के साथ हम आहंगी मोअजिज़े (चमत्कार) बख़्शे और जो उनके वक्त के लोगों के ज़रिए बहुत कदर किए गए। मुहम्मद अलैहिस्सलाम के लिए, दूसरे नबियों को दिए गए तमाम मोअजिज़ों की मिसाल

के अलावा, आपको दूसरे मोअजिज़ात की बरकत से नवाज़ा गया। **मिरात-ए-काएनात** में ये लिखा है के आपने जो अपनी पूरी ज़िंदगी में मोअजिज़े ज़ाहिर किए उनकी तादाद तीन हज़ार से उपर है। इन मोअजिज़ों में से **86** इस बाब के चौथे हिस्से में लिखे हैं, **मुहम्मद अलैहिस्सलाम के मोअजिज़े** के उनवान के तहत।

कुछ गैर सुन्नी मुसलमानों का ग्रुप, और कुछ मज़हबी तौर पर लाइल्म लोग जो साईंसदानों को पास कर गए, वो आधे या पूरे तौर पर मोअजिज़ों को रद्द करते हैं। वो कहते है के मोअजिज़े "हमारे साईंसी इल्म से मुकाबले पर हैं।" सबसे पहली चीज़ जो ऐसे लोगों के साथ की जाए वो है ऐसे लोगों की मदद करना जो इस्लाम के मुनकिर हैं (क्योंकि वो इसके बारे में जानते नहीं है) उन्हें इस्लाम को जानना और उन्हें ईमान (इस्लाम में यकीन) की तरफ रहनुमाई करना। एक बार उनमें ईमान आ जाए, वो मोअजिज़ों में यकीन करेंगे। क्योंकि कुरआन-अल-करीम ने ऐलान किया के योमुल हश्र में ज़मीन, आसमान, तारे, जानदार बेजान मखलूक सब जिस्मानी और माद्दी तौर पर तबदील हो जाएँगी। एक शख्स जो इन सब तबदीलियों में यकीन करेगा, जो साईंस के कायम करदा इल्म से बाहर हैं, वो फितरती तौर पर मोअजिज़ों में यकीन करेंगे। हम नहीं कहते के "पैगंबर अलैहिमुसलवातु वतसलीमात 'मोजिज़े करते हैं और औलिया रहिमा हुमल्लाहु तआला करामतें करेंगे।" अगर हम ऐसा कहेंगे, तो काफ़िर हो सकते है हमसे तनाज़े का हक रखें। हम कहते हैं, अल्लाह तआला ने मोअजिज़े तखलीक किए अपने पैगंबरो अलैहिमुस्सलवातु वतसलीमात के ज़रिए, और करामात अपने औलिया रहिमाहुमल्लाहु तआला के ज़रिए।" ये कहने का मतलब है के एक अकलमंद और मुनासिब शख्स जो नई साईंसी इस्लाहात के बारे में जानता है और जो हयातयाती और सतूरअतयाती वाक्यात की संजीदगी को **फोरी** तौर पर अहसास करेगा के छोटे से ज़र्रे से पूरी कायनात, और एटम से सूरज तक, सारी जानदार और बेजान मखलूक कुछ हिसाब से तखलीक की गई हैं और एक दूसरे के साथ हम आहंगी से काम कर रही हैं एक सिंगल मशीन के मुख्तलिफ़ हिस्सों की तरह। वो फौरन इस हकीकत में यकीन करेगा के एक सब जानने वाला और कादिर मुतल्लक, जो सब कुछ देखता है, तखलीक करता है और जिस तरह वो चाहता है इन चीज़ों को सभांलता है। ये उसके लिए अब कुदरती है के ये आला खालिक मोअजिज़े और करामात भी तखलीक करा है साईंसदाँ होने के तौर पर हम ये कह सकते हैं के ये मोअजिज़े एक सच्ची हकीकत है और अल्लाह तआला, जो उसका अकेला खालिक है, अपने पैगंबरों अलैहिमुस-सलावातु-वतसलीमात इन मोअजिज़ों को खुद अपने आप या बग़ैर अल्लाह तआला की मर्ज़ी के उन्हें अदा नहीं करते। मोअजिज़े जैसे ईसा (जीस्स) अलैहिस्सलाम बीमारों का ईलाज कर रहे हैं और मुर्दा लोगों को ज़िंदा कर रहे हैं वो अल्लाह तआला के ज़रिए तखलीक किए गए मोअजिज़ें हैं। ये हकीकत कुरआन अल करीम में बयान है। दूसरी तरफ़, ईसाई जो पूरी तरह हार को सह रहे हैं सच्चाई के तौर पर अपने

हाथों में बाइबल को लिए हुए, धीरे धीरे इन किताबों में बताई गई सभी चीज़ों के मुकम्मल इंकार पर ग़ौर कर रहे, जिसका मतलब है आखिर में गैर मज़हबियत होना।

किस तरह बेचारे ईसाई आज की मुकददस बाइबलों पर यकीन करें? जैसे के तुम अब तक देख चुके हो,

**1**) मुकददस बाइबल में बहुत थोड़े इक्तिबासात शामिल हैं जिन्हें अल्लाह के लफ्ज़ मंज़ूर किया जा सकता है।

**2**) कुछ बयानात मुकददस बाइबल में अल्लाह का कलाम खुद ज़ाहिर नहीं होता, इसमें नबियों के नाम लिखे गए हैं जिन्होने इन्हें बनाया है।

**3**) मुकददस बाइबल. में बहुत सारे बयानात जोड़े गए हैं, और ये पता नहीं के किसने ये बयानात दिए।

**4**) ये ईसाई थेअलोजियन ने कुबूला है के बहुत सारी जाली कहानियाँ और अफसाने रसूलों के बारे में एपिसोड घुसेड़े गए हैं।

**5**) रसूलों के ज़रिए ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में बताई गई घटनाएँ एक दूसरे से मुख्तलिफ़ हैं।

**6**) बाइबल के कुछ हिस्से जिसमे बाइबल के सच्चे बयानात थे, यानी, **बनरबास की इंजील** वो ईसाइयों के ज़रिए हटा दी गई।

**7**) मुकददस बाइबल को अकलियती काऊँसिलों के ज़रिए कई बार तरमीम और छेड़छाड़ की गई।ये तरमीम अब तक जारी हैं।एक बयान के मुताबिक आज यकीनी तौर पर चार हज़ार मुख्तलिफ़ बाइबलें मौजूद हैं।हर काऊँसिल इलज़ाम लगाती है के उनसे पिछली वाली में बहुत सारी भयानक गलतियाँ हैं।

**8**) शहनशाहों और बादशाहों ने मुकददस बाइबल में काँट छाँट के हुकूम दिए और उनके हुकूम का पालन किया गया।

**9**) मुकद्दस बाइबल की गुफ़तगू बहुत सच्ची हकीकत की तरफ़ से मौजूद नहीं है जो अल्लाह के कलाम के बयान में मौजूद है।

**10**) यूरोपी ईसाई रिसालों में लिखा है के मुकददस बाइबल में पचास हज़ार गलतियाँ हैं।इस वक्त ईसाई अपनी सारी कोशिशें आगे डाल कर इन गलतियों में से सबसे बड़ी गलती यानी, तसलीस को खत्म करने में लगे हुए हैं।

**11**) ये ईसाई थेअलोजियन ने माना है के मुकददस बाइबल अल्लाह का कलाम नहीं है, बल्कि ये एक आदमी की बनाई किताब है।

हमारे प्यारे पढ़ने वालों! इस सारे वक्त में मुकददस बाइबल की जाँच में आप हमारे साथ हैं।जैसे के हम फ़राहम करेंगे, हम इस नाज़ुक मुतालआ में पूरे तौर पर ग़ैर

जानिवदार हो जाएँगे। हमने जो राय पैश की है वो इस्लामी उलमा से तअल्लुक नहीं रखती, बल्कि ईसाई थेअलोजियन से तअल्लुक रखती है। वक्त वक्त पर इन लोगों ने मुतज़ाद इक्तिबासात की मुकददस बाइबल के मुखतलिफ़ तर्जुमों में से कटाई की! कोई भी आज बेची जाने वाली मुकददस बाइबलों में से एक खरीद कर और पढ़ सकता है। हमने किताब लिख दी, हर इक्तिबासात का बाब और आयत हमने हवाला दी और बयान की है। और हम आगे तक जाएँगे, उसकी हकीकत के मुताबिक तफसीली जाँच करेंगे।

किस तरह कोई इस किस्म की किताब को कुरआन अल करीम की शानदार, बाहिमी बयानात और मोअजिज़ा शाहराह के साथ मिला सकता है, जिसने कभी मदाखलत का एक ज़रा सा भी रद्दोबदल नहीं हुआ इसके नाज़िल होने से पहले दिल से लेकर? हम सब मंदरजाज़ेल नतीजे पर पहुँचे हैंः

**अल्लाह का कलाम कभी भी नहीं बदलेगा। एक किताब जिसमें गलत, ख़ामियों से भरी इक्तिबासात हैं, जो वक्तन फवक्तन लोगों के ज़रिए बदली जाती है, और जिसे पादरियों ने भी कुबूला है के लोगों के लिए लिखी गई थी, कभी भी "अल्लाह का कलाम" नहीं हो सकती।**

आज के मुकददस बाइबल्स के कौन से इक्तिबासात सलाह, रहनुमाई, अच्छे और बुरे की तमीज़, इस दुनिया और आखिरत की तशरीह, तस्सली शामिल है, जो अल्लाह तआला की किताब में लाज़मी हैं?

**1395** [**1975** सी.ई] जुलाई के अंक में रिसाला जिसका नाम सादा सच था उसमें मंदरजाज़ेर इकबालिया बयान थाः "हम एतराफ़ करते हैं के हम पढ़े लिखे गैर ईसाइयों को एक इतनी ताकतवर किताब दिखाने में नाकाम रहे जो उनके दिमाग में घुस जाती। इसके बरअक्स, वो हमारी मुकददस बाइबल पर नुकता उठाते हैं और कहते हैंः "तुम देखो तुम लोग आपस में ही एक रज़ामंदी पर नहीं आते। तुम हमे किस के साथ रहनुमाई करोगे?"

मंदरजाज़ेल एक दूसरा हवाला है जो एक शख्स के ज़रिए दिया गया जिसका हमने पहले भी ज़िक्र किया था

"**1939** में से एक इदारें में काम करता था जो एडम्स मिशन में एक अकलियती स्कूल के इर्द गिर्द था। मैं बीस साल का था। वक्त और फिर तालिबे इल्म अकलियती स्कूल के जहाँ में काम करता था वो वहाँ आकर हमारी बेइज़्ज़ती करते थे और हम पर इलज़ाम लगाते थे मुहम्मद अलैहिस्सला और कुरआन-अल-करीम पर बहुत भद्दे सबसे ज़्यादा उकसाने वाले और नुकसानदायक कोसने कसते थे। उनके अकीदे के मुताबिक मुसलमान इस दुनिया के

सबसे घिनौनी मखलूक हैं, और इसलामी मज़हब पाखंड हैं। एक बहुत ज़्यादा हस्सास तबीयत का शख्स होने की वजह से, मैं बहुत ज्यादा उनके इल्ज़ामों से दुखी हुआ, इतना ज्यादा के मैं रातों में सो नहीं पाया। मैं उनको जवाब देने के लायक नही था। मेरे पास इतना ज़्यादा इल्म नहीं था, अकेले ईसाइयत के बारे में, इस्लाम के बारे में, मेरे अपने मज़हब के बारे में। नतीजे के तौर पर, मैने फैसला किया के मुकददस बाइबल और क़ुरआन अल करीम के एक काबिले ज़िक्र मुतालआ पर अमल करूँ, ईसाइयत और इस्लाम के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाने के लिए, और इस मज़मून के मुतअल्लीक किताबें पढ़ूँ। मैने अपने आपको चालीस सालो तक इन मुतालआ में मसरूफ़ रखा। मुझे इस सिलसिले में अरबी की किताब **इज़ हार-उल हक** से बड़ी मदद मिली, जिसे इस्तांबुल में इंडिया के रहमतुल्लाह एफ़दी 'रहीमा हुल्लाहु तआला' के ज़रिए लिखा गया। [ ये मशहूर किताब मिस्त्र में **1280** [**1864** सि.ई.] में छापी गई।] और बहुत सारी जुबानो, तुर्की को मिलाकर में लिखी गई। रहमतुल्लाह एफंदी मक्का-ए-मुकर्मा ( मक्का का मुबारक शहर) में **1306** (**1889** सी.ई.) में रहलत फरमा गए। जबकि वो **75** साल के थे।] कुछ वक्त बाद, सच्चाई सूरज कि तरह मेरी आँखो के आगे चमक गई। अब मुझे सब पता था,सारी तफसील भी शमिल थी। तब से पादरी कहलाए जाने वालो को अपना जवाब मिल रहा है जिसके वो मुसतहिक हैं, और वो मुंह खोले हुए रह जाते हैं, और नज़रें नीची के साथ। उनके तरीके से कोसेन इस्तेमाल करके जवाब देने के बजाए, मैं अल्लाह तआला के हुकूम को मानता हूँ और उनसे बहुत मीठी आवाज़ में बात करता हूँ। लिहाज़ा मैंने खूब गौर से मुकददस बाइबल का मुतालआ किया था, और इस तरह की नाकाबिले बरदाश्त गलतियाँ थीं जो मैने बहुत ध्यान से उठाई थीं, के उनके बेकार गड़बड़ जवाब देने से वो इसमें ग़र्क हो गए मेरे मुकददस बाइबल को उनसे बेहतर जानने की वजह से। आखिरकार उनहोने मेरी इज़्ज़त करनी शुरू करदी।

"इस दौरान, मैंने एक किताब देखी जिसे जिओ जी . हेरिस एक प्रोटेस्टेंट मिशनरी के ज़रिए तैयार किया गया था। इसका उनवान पढ़ा गया," **मुसलमानों को कैसे ईसाई बनाएँ।** किताब के पादरी लेखक ने मंदरजाज़ेल सलाह दी ः 'मुसलमानों को ईसाई बनाना बहुत मुश्किल है। क्योंकि मुसलमान बहुत मज़बूती से आपनी रिवायतों से जुड़े होते हैं और बहुत ज़्यादा ज़िद्दी होते हैं। उनको ईसाई बनाने के लिए, मंदरजाज़ेल तीन तरीकों का सहारा लेना ज़रूरी हैः

1) मुसलमानों को ये पढ़ाया गया है के आज की मुकददस बाइबल की कॉपियाँ यानी, तोरह और बाइबल , असली तोरह और बाइबल नहीं हैं, और जो सही बाइबल है वो नापाक और काटँ छाटँ करदी गई है। उनसे सीधे से मंदरजाज़ेल सवाल करोः

a- क्या तुम्हारे पास असली बाइबल और तोरह की कापियाँ हैं? अगर हैं, तो हम उसे देखना चाहेंगे।

b- आज की मुकददस बाइबल में और जो तुम दावा करते हो के सच्ची है बाइबल में क्या फ़र्क हैं? कितने हिस्सों में ये फ़र्क हैं, और ये कितने हैं?

c- क्या ये फ़र्क हैं जो तुम बता रहे हो वो जान बुझकर बनाए गए हैं, या वो सिर्फ़ मतनी फ़र्क हैं?

d- ये रही मुकददस बाइबल की कॉपी। मुझे वो इक्तिबास दिखाओ जो ज़बरदस्ती ठूँसे गए हैं।

e- ये एक इक्तिबास है। तुम इसे असली मतन में केसे पढ़ोगे ?

2) किसने ये मदाखलत की जिसका तुम दावा कर रहे हो, और कब?

3) मुसलमान ये मानते हैं के आज जो मुकददस बाइबल हमारे पास है वो या तो तोरह और बाइबल की असली कॉपियों

की मिसाले हैं या एक बिल्कुल मुख्तलिफ़ किताब जिसे लोगो के ज़रीए लिखा गया। मुसलमानों के मुताबिक मुकददस बाइबल जो आज हमारे पास है उसका उस मुकददस बाइबल से कुछ लेना देना नहीं है जो जीसस ( ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल की गई। बहरहाल,वो हैरान रह जाएँगे जब उनसे ऊपर कहे गए सवाल पूछे जाएँगे। क्योंकि ज़्यादातर मुसलमान जाहिल हैं। उनकी राए के मुकददस बाइबल असली नहीं है वो सिर्फ़ सुनवाई है। अकेले सिर्फ़ मुकददस बाइबल की किताबों के बारे में जानना, जैसे के **औल्ड टेस्टामेंट** और **न्यू टेस्टामेंट** , वो अपने ही मज़हब की ज़रूरी जानकारी में पीछे हैं। कुछ संगीन सवालात उन्हें पता नही होगा। के वो तुम्हें किस तरह जवाब दें। फिर, उनसे कहना के तुम उन्हें कुछ जानकारी दोगे, कुछ लुभाने वाले इक्तिबासात तुम चुन लो तुम समझते हो के उन्हें आसानी से समझ आ जाएँगे, और नर्म आवाज़ मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ और एक मीठी ज़ुबान के साथ उन्हें कुछ किताबचेह और पर्चे दो और उन्हें ईसाइयत की अच्छाइयाँ साफ़, समझमें आने वाली ज़ुबान में बताओ। उनको ईसाइयत को अपनाने के लिए कभी भी सख्ती का सहारा न लेना। हमेशा उन्हें समझने और फिर फैसला करने का वक्त देना। इस बात को यकीनी बनाएँ के तुम अगर इस तरीके पर अमल करोगे तो उन्हें ईसाई बना सकते हो। कम अस कम तुम उनके दिलों में शक शुरू करने का सबब बनोगे।

" मैं उम्मीद करता हूँ के मुसलमान जो इन किताबों को पढ़ेंगे जिन्हे मैने ईसाइयत के बारे में अंग्रेज़ी में लिखा और आज की बाइबलों को तो वो आसानी के साथ ऊपर लिखे गए जिओ जी.हेरिस के सवालों के जवाब दे पाएँगे। मुझे पूरे बीस साल लगे आज की तोरह और बाइबल की कापियों में इतनी ज़्यादा गलतियाँ निकालने के लिए और ये साबित करने के लिए के ये अल्लाह की किताबें नही हैं। ये सिर्फ़ मेरा ज़ाती नज़रिया नही है ; बहुत सारे ईसाई साईंसदा और थेअलोजियन भी इसी राय के हैं। फिर भी उनकी किताबो और मज़मून को पढ़ने के लिए ग़ैर मुल्की ज़ुबान को जानना ज़रूरी है और ज़्यादा तर मुसलमानों को ग़ैर

मुल्की जुवाने नही आतीं, और फिर वो कीमती किताबों की गुंजाईश भी नहीं रखते। इस वजह से, इन नुकसानों को रोकने के लिए , मैं पूरी दुनिया मैं, अपने इन किताबचों की इशाअत करा रहा हूँ , उन जुबानों में लिखकर जो मुसलमान इस्तेमाल करते हैं और उनमें से कुछ मुफ़्त में देकर।"

एक ईसाई मिशनरी ने मंदरजाज़ेल तरीके से बयान दियाः

" मुसलमानो को ईसाई बनाना एक अमल है जो कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनो के ज़रिए दुलारी जाती है। क्योंकि मुसलमानों को ईसाई बनाना बहुत ज़्यादा मुश्किल है। मुसलमान अपनी रिवायतों के बहुत वफ़ादार होते हैं और किसी चीज़ के मुकावले। अगरचे मंदरजाज़ेल तरीके अच्छा नतीजा पैदा कर सकते हैं।

**1-** मुसलमान ज़्यादातर ग़रीब लोग होते हैं। एक गरीब मुसलमान ईसाइयत की तरफ़ मुखतलिफ़ तकनीक के ज़रिए झूक सकता है, मिसाल के तौर पर, उसे बहुत ज़्यादा पैसा तौहफे और चीज़ देकर, या उसके लिए ईसाई प्रावधान के अंदर एक नौकरी ढूँढ देना।

**2-** ज़्यादातर मुसलमान मज़हबी और साईसी तरीके दोनो से लाइलम होते है। न ही मुकददस बाइवल की न ही कुरआन अल करीम की उनको जानकारी होती। वेपरवाह गुमनामी में, वो मखसूस रसमी अमाल करते हैं जो उन्हें इवादत के नाम में सीखाए जाते हैं, बगैंर ये जाने हुए के उसका मतलब किया है, और इवादात की अंदरूनी फितरत में घुसे बग़ैर। क्योंकि उन में से ज़्यादातर अरवी नहीं जानते और इस्लामी इल्म के वारे में भी उन्हें नहीं पता होता, वो कुरआन अल करीम के मवाद और जटिल जानकारी जो इस्लाम की आलिमों की किताबों में लिखी होती है उन सब से काफ़ी अनजान होते हैं। वो कुरआन की कुछ आयात को सिर्फ़ याद किरअत करते हैं बग़ैर थोड़ा बहुत भी ये सोचे बग़ैर के उनका मतलब किया हैं। वो खासतौर से मुकददस बाइवल से वेख़वर होते हैं। ज़्यादातर उनके उस्ताद,नाम निहाद इस्लामी थेअलोजियन, इस्लामी आलिम नहीं होते। वो सिर्फ़ मुसलमानों को ये सीखाते हैं के वो अपने इवादत के काम कैसे करें। वो उनकी रूहों को नहीं मुतासिर करते। ऐसे तालीमी निज़ाम में बढ़ने से, मुसलमान अपनी रसमी इवादतें जिस तरीके से उन्हें पढ़ाया गया उसी तरह अदा करते हैं, इस्लाम के बारे में गहरी जानकारी हासिल किए बग़ैर और मज़हब की ज़रूरयात को सीखे बग़ैर। उनकी इस्लाम के साथ वावस्तगी इस्लाम की ज़रूरयात को जानकर पैदा नहीं होती, वल्कि जो उन्होने अपने माँ वाप और उस्तादों से अकीदे में पक्का ईमान सीखा उससे पैदा होता है।

**3-** ज़्यादातर मुसलमान अपनी खुद के अलावा दूसरी जुवाने नही जानते। सिर्फ़ अकेले ईसाईयत के लिए या उसके खिलाफ़ लिखी गई किताबों को पढ़कर, वो ऐसी किताबों की मौजूदगी के वारे में जान भी नहीं सकते। उन्हें ऐसी किताबें दो उनकी अपनी जुवान में लिखी

हों और ईसाईयत की शदीद तारीफ़ हो, और उन्हें इन किताबों को पढ़ने दिया जाए।इस बात की तसल्ली कर लेना के जो किताबें तुम उन्हें दे रहे हो उसमें जो ज़बाने इस्तेमाल की गई हों वो इतनी ज़्यादा साफ़ और आसान हों के उन्हे समझ आ जाए। किताबें जिनमे पैचीदा बयानात और दिखावटी खयालात शामिल हों वो बिल्कुल भी फाएदेमदं नहीं।वो ऐसी किताबों को बिल्कुल नहीं समझेंगे, और उनसे ऊब जाएँगे, वो उन्हें एक तरफ़ रख देगा।सादे लफ्ज़, आसान बयानात,और तास्सुरात जो उबने वाले न हों वो जरूरी हैं। ये मत भूलो के जिन लोगों से तुम सलूक करने जा रहे हो वो बहुत ज़्यादा लाइल्म हैं, और उनके दिमाग़ सिर्फ़ आसान बयानात को समझेगा।

**4-** उन्हें हमेशा बताओः ‘ चुँकि ईसाई और मुसलमान अल्लाह तआला में यकीन रखते हैं, फिर उनका रब (अल्लाह) एक जैसा है।ताहम अल्लाह तआला ने ईसाईयत को सच्चा मज़हब माना है।ये एक वाज़ेह हकीकत है।ध्यान दो और देखो , ईसाई सबसे मालदार हैं, सबसे ज़्यादा तहज़ीब याफ़ता, और दुनिया के सबसे खुश लोग।क्योंकि अल्लाह तआला ने उनको मुसलमानों पर कौफियत दी, जो गलत रास्ते पर हैं।जबकि मुसलमान मुल्क मुसिबत वाली गरीबी में हैं ,अपने हम मसंब ईसाईयों मदद की भीख माँगना और साईंसी और तकनीक बाधा की तकलीफ़ो को झेलना, ईसाई मुल्क पहले ही से तहज़ीब की ऊँचाइयों पहुँच चुके हैं और अभी भी रोज़ाना तरक्की कर रहे हैं।मुसलमानों की भीड़ काम ढूँढने के लिए ईसाई मुल्कों में जाते हैं।ईसाई मुसलमानों पर सनअत में, इल्म में, साईंस मे, तिजारत में, और मुखतसिर ये के, हर चीज़ में उन पर बढ़ोतरी रखते हैं।तुम ये हकीकत खुद देखोगे।इससे ये मतलब आया के अल्लाह तआला ने इस्लामी मज़हब को एक सच्चा मज़हब नहीं माना।

इन हकाईक के ज़रिए वो तुम्हें ये बात बताना चाहता है के इस्लाम एक गलत मज़हब है।ऐसे लोगो को सज़ा देने के लिए जो सच्चे मज़हब, ईसाईयत से खुद को टुकड़े टुकड़े करलें, अल्लाह तआला उन्हें हमेशा बदइंतेज़ामी, कशीदगी और ग़फ़लत में छोड़ देता है।” ये कुछ छोटे झूठ हैं जो मिशनरियों के जंरिए मुसलमानों को ईसाई बनाने के लिए गुमराह करके कोशिश किए जाते हैं। वो मआशी ऐतबार से बहुत ताकतवर हैं, और वो ज़्यादातर अपना पैसा मुख्तलिफ़ इदारों को कायम करने में जैसे के, अस्पताल, सुप किचन ,स्कूल,जिमनेज़ियम,डीस्कोस,जुआ खाने, और वेश्यालयों में खर्च करते हैं मुसलमानों को बहकाने और खराब करने के लिए।

मआसिर ईसाई मिशनरी की तंज़ीम जिसे जेहोवाह के गवाहों कहते हैं वो कायम की गई थी इस मकदस के साथ के मुसलमान बच्चों को छलकर ईसाई बनाया जाए मीठाई के साथ, किताबें और पर्चे टेलिफोन डायरेक्टरी में ढूँढकर जो पते मिले उन पर भेजे।अच्छे ढंग से तैयार प्यार लड़कियाँ एक घर से दूसरे घर गई।इन किताबों और पर्चो को बाँटन के लिए।दूसरी तरफ़, **मतबा अत -अल- कटोलिकिया (the catholic print**

**house**) जिसे बैरूत में **1296** [**1879** सी.ई] में इफ़तिताह किया गया,उसने मुख्तलिफ जुबानों में मुकदसस बाइबलो की इशाअत कराई,और,**1908** में अरबी लेक्सिकॅान **अल-मुंजिद** के नाम से भी, जो तब से कई बार दोबारा तरमीम होकर और पैश हो चुकी है।ये इस तरह मंदरजाज़ लेक्सिकॅान में बयान हैः " एक बिदअती फिरका जिसे जेहोवाह के गवाहों कहा गया वो **1872** में अमेरिका में च.तेज़ रसेल के ज़रिए कायम किया गया।इस शख्स नें मुक़ददस बाइबल की ग़लत तशरीह करदी और **1334** [**1916** सी.ई.] में मर गया। जेहोवाह तोरह में एक नाम है जो अल्लाह तआला को दिया गया।" ये ईसाई किताब ज़ाहिर करती है के नाम निहाद फिरका बिदअती है और जेहोवाह का लफ्ज़ गलत इस्तेमाल हुआ।खुशकिस्मती से, मुसलमान उन झूठी सजी हुई और छल वाले झूठों पर यकीन नहीं रखती।इसके बरअक्स, वो झूठ ईसाईयत के लिए उनकी नफ़रत और बदगुमामी में इज़ाफा करती है। अल्लाह तआला पर हमद व- सना (शुकिया और तारीफ़) हो, मुसलमान इतने लाइल्म लोग नहीं हैं जितना के वो सोचते हैं।हाँ, अब से चालीस या पचास साल पहले मुसलमानों की तादाद इतनी बड़ी नहीं थी जो यूरोपी जुबान को जानते थे या जो युनिवर्सिटी से फाज़िल हुए हों।बहरहाल, वहाँ पर हर मुल्क में, हर शहर में मदरसे थे। साईंस, हिसाब और सितारों का इल्म इसके साथ साथ मज़हबी इल्म भी इन मदरसों में सीखाया जाता था।किताबें और निसाब जो उस वक्त से महफूज़ हैं वो हमारे बयानात को सच्चा साबित करते हैं।आला हिसाबी इल्म इतनी ऊँची मस्जिदों और स्कूलों को बनाने के लिए ज़रूरी है, इबादात की अदाएगी में अटल हिसाब किताब करने को बाँटना, जागीर की खरीद और फरोख्त, और कम्पनियों और पाक नीवों की हिसाब किताब के लिए आला रियाज़ी इल्म होना ज़रूरी है। माँ बाप एक दूसरे के साथ दौड़ लगाते थे अपने बच्चों को छोटी उम्र में इन स्कूलों में भेजने के लिए।शानदार और बड़ी तकरीबत रखी जाती थी और दावतें दी जाती थीं जब बच्चे स्कूल जाना शुरू करते थे।ऐसे मौकों की यादगारें, जैसे के मौतियों और सोने के पानी चढ़े हुए कपड़े स्कूल जाने वाले बच्चे को पहनाए जाते थे, ज़ेवर से बना थैला ले जाया जाता था, और मवलिद([1] मवलिद का मतलब है पैदाईश।यहाँ इसका मतलब है मुहम्मद अलैहि सलाम की शान में मिलाद कहना, खासतौर से खास मौकों पर जैसे के शादी की तकरीबात, पैदाईश की, खत्ना की तकरीबात, पाक रातें वग़ैरह।) के दौरान तसवीरें ली जाती थीं, जोकि फैमिली के ज़रिए रखी जाती थी और बच्चे को इज़्जत और फर्ख़ किया था उसकी पूरी ज़िदगी अहमियत और कदर की अलामत के तौर पर जो उसकी फैमिली इल्म और सीखने से रखती थी। जो मदरसों से सनद याफ्ता होते थे उन्हें फौजी खिदमात से बरी किया जाता था और ऊँचे औहदों पर तर्करूरी की जाती था, जो बदलने में जवान लोगों को स्कूल जाने के लिए हौसला अफ़जाई करती था। यहाँ तक के गाँव के चरवाहे भी हैरत अंगैज़ तौर पर मज़हबी और अखलाकी इल्म में माहिर होते थे।ये खुशाहाली **1255** [ **1839** सी.ई] तक कायम रही, जब रशीद पाशा एक फ्रीमैसन ने अग्रेंज़ो के साथ तआवुन करके इस्लाम को तबाह करने की साज़िश की, अपने वज़ीरे खारजा के दफ़्तर के दौरान। **इसने**

**इसलाहात का कानून** तैयार करके उसे मंज़ूर किया गया। आज भी मुसलमानों के पास इस्लामी मज़हब की ज़रूरयात पढ़ाने की बहुत सारी किताबें हैं। हम कितने खुशकिस्मत हैं के उनमें से कुछ हमने तैयार करके इज़्ज़त हासिल की है। हमारी किताब **जवाब नहीं दे सका** और ये किताब ,जिसे अभी आप पढ़ रहे हैं, इन्हें सादे स्टाईल में तैयार किया गया है, और 'मीठी ज़ुबान' का उसूल जो मग़रीबी लोग अपनी किताबों में होने पर फर्ख़ करते हैं, वो पूरे तौर पर इसमें इस्तेमाल किया गया है। हमारी सारी किताबों में मश्रीकी और मग़रीबी आला आलिमों के ज़रिए ईसाइयत और इस्लाम पर किए गए फैसले और तवसरे शामिल हैं। हमने इनमें से कुछ किताबें यूरोपी ज़ुबानों में तर्जुमा करके इशाआत करवाई हैं। हम इन किताबो को पूरी दुनिया के अंदर, घर और बाहर दोनों में साफ़ असरात पर फर्ख़ महसूस करते हैं। तारीफ़ों और शुक्रिए के खतूत जो हम दुनिया के सारे मुल्कों से वसूल करते हैं वो हमें हमारी सारी तकलीफ़ें भुला देते हैं जो हमने इन किताबों को तैयार करने में उठाई थीं। ज़्यादातर तादाद जो ख़तों की हम हासिल करते हैं उनमें ये तसदीक होती है जैसे के, " मेने आपके इन खतूत से सच्चा इस्लाम सीखा।"हम इससे बड़े इनाम की उम्मीद नहीं रखते। कोई भी मुसलमान जो इन किताबों को पढ़ता है वो असानी के साथ मज़हब के बारे में और इस मज़मून पर उसकी जानकारी के बारे में पूछे गए किसी भी सवाल का जवाब दे सकता है और उसके साथ बात करने वाले किसी की भी तारीफ़ पा सकता है।

वहाँ ऐसा कोई भी नहीं है जो इस्लामी मज़हब के सच्चे जौहर को एक बार पढ़ने के बाद उसकी दिलकशी से मोहित न हो जाए। एक मुसलमान जिसने हमारी ये किताबें पढ़ीं वो सिर्फ़ ऊपर बताई गई मिशनरियो की अफ़सोसनाक नशरो इशाअत से नफ़रत ही करेंगे।

उनके दावे के लिए के ईसाइयत भलाई, अमीरी, अफ़रात और खुशियाँ लाती है वो बग़ैर बुनियाद के है। निसफ़ सदी के वाक्यात, जब ईसाइयत यूरोपी रियास्तों पर काबिज़ थी, वो हकीकत के तारीख़ी सबूत हैं के एक मुल्क के समाजी, सख़ाफ़ती और मआशी बेहतरी को फरोग़ देने वाले एक आमिल से न सिर्फ़ ईसाइयत है, ये तरक्की के लिए एक वाहिद रूकावट है। कट्टर ईसाई तरक्की को रोकते हैं, हर नई साईंसी या तकनीकी खोज को बुराई करके उसे एक गुनाह बना देते थे, इस बात का दावा करते हुए के आदमी दुनिया में सिर्फ़ झेलने के लिए आया है, कदीमी ग्रीक और रोमन साईसंदानो के कामों को तबाह करते थे, पुरानी तहज़ीब से बची हुई फन के कामों को जलाते और खत्म करते थे, और इस तरह ज़मीन को अंधेरे ढेर के खडंहर में बदल दिया। बहरहाल, इस्लाम के दुनिया पर ज़हूर और फैलने के बाद, पुरानी तहज़ीब से वाबस्ता फन के कामों को मुसलमानों ने बरामद किया, जो कदीम साईंसी इल्म में फंस गया था, इसे नई खोजों से हौसला अफ़ज़ाई की,उन्हें इस्लामी युनिवर्सिटियों में पढ़ाना शुरू किया जो उन्होने कायम की थी, सनअत और तिजारत को बढ़ावा दिया, और इस तरह इंसानियत की अमन और भलाई की तरफ़ रहनुमाई की। क्योंकि

साईसं और दवा सिर्फ़ मुसलमानों के लिए मखसूस थी, पापें सिलवस्टर **2** ने अपनी तालीम अंडालूसी इस्लामी यूनिवर्सिटी से हासिल की, और सानचो, स्पेन के एक राज ने इलाज हासिल करने के लिए मुसलमान डॉक्टरो ये दरख्वास्त की। मुसलमान **रेनेसां** के सच्चे ऐलान करने वाले थे, जो नए ज़माने का आग़ाज़ था। ये हकीकत आज के बाज़मीर यूरोपी इल्म के आदमियों के ज़रिए मानी गई है।

ईसाइयत के ज़रिए इंसानियत के लिए अच्छी वज़ाहत जो लाई गई है वो जर्मन फिलोसफर नीत्शे की तरफ़ से आई हैः

" ईसाई मातहत जिसने एक गंदी और बुरी दुनिया को बढ़ावा दिया उसने दुनिया को असलियत में गंदा और बुरा कर दिया।"

मिशनरियों के दूसरे दावे के तौर पर, यानी आज के खुशहाल ईसाई बेनाम गरीब और बेसहारा लोगों के जो मुसलमान मुल्कों में रहते हैं ये सच है,फिर भी इसका मज़हब से कुछ लेना देना नहीं है। कोई भी शख्स अकले सलीम के साथ देखेगा के आज मुसलमान जो तकलीफ़ में हैं, वो मुसलमानों, इस्लाम के अज़ीम मज़हब को लागू नहीं कर सकते अगर वो लोग नहीं हैं, जो इस मज़हब की ज़रूरीयात को नहीं जानता, या उन पर अमल दरआमद करने वाला कॉसिल है, हांलाकि वो उन्हें जानते हैं। और वो ये भी देखेगा कि जिस साईंसी बेहतरी का ईसाई लोग मज़ा लेते हैं वो मुकददस बाइबल की वजह से नहीं है, जो इस तरह किताब है जो तुमने ऊपर देखी, लेकिन उनकी मेहनती कोशिशो, सालामियत और अज़म की वजह से हुआ है, जिसे उन्होने कुरआन- अल- करीम से सीखा है ([1] या थोड़े ईसाइयों से जिन्होने कुरआन-अल-करीम का या इस्लामी आलिमों के कामों का जाएज़ा लिया हो, जो ये कहे बग़ैर चलते हैं, जो तालीम हासिल करते हैं कुरआन-अल-करीम पर मुनहसिर और अपनी किताबें कुरआन-अल-करीम की रोशनी में लिखते हैं। )और जो अगरचे उसमें यकीन नहीं रखते फिर भी उसके उसूल की रोशनी को मज़बुती से पकड़ कर रखते हैं। हमारा मज़हब दोबारा काम करने, ईमानदार होने, अज़म रखने और सब कुछ सीखने के लिए हुकूम देता है; जो इससे मुनकिर होते हैं को इसमें कोई शक नहीं होगा कि उन्हें अल्लाह तआला के गुस्से का सामना करना होगा। दरहकीकत, मुसलमान इसलिए पीछे नहीं हैं कि क्योंकि वे ई साई नहीं हैं, बल्कि इसलिए पीछे हैं कि वे सच्चे मुसलमान नहीं है।

जैसा कि आप देखते हैं, जापानी लोग ईसाई नहीं हैं फिर भी वे जर्मन से ऑप्टिक्स में और अमेरिकियों से ऑटोमोबाइल टेक्नोलॉजी में जज़बाती ललक की वजह से काम करने अज़म, और कुरआन-अल-करीम में ईमानदारी की वजह से आगे बढ़ गए हैं। **1985** में पूरी दुनिया की हैरत के लिए साढ़े पाँच लाख कारें जापान में बनाई गई जापानी लोग फलाह में रहते हैं। जापान इलेक्ट्रानिक्स कारोबार में भी दुनिया से आगे है। हम में से हर एक के पास हमारे घरों में एक केलकुलेटर है। मुझे हैरत है के इस बारे में झूठे मिशनरी क्या कहेंगे? क्या सभी जापानी साइकिलें, जापानी माइक्रोस्कोप, जापानी टाइपराइटर, जापानी टेलीस्कोप और जापानी केमरों का जो पूरी दुनिया को कवर करते हैं, इसका ईसाईयत से कुछ लेना देना है?

हम इस मज़मून पर बाद में वापस आएंगे और दोबारा इस बात पर ग़ौर करेंगे के आज के सच्चे मुसलमान को जो फराईज़ पूरे करते हैं।

प्यारे पढ़ने वालो! आपने आज की बाइबल देखी है। हमने उस किताब का आपकी आँखो के सामने मुख्तसर स्केन किया है।अब बारी है कुरआन-अल-करीम की, हमारे मज़हब की पाक किताब की।हम इसको दोबारा एक साथ पढ़ेंगे।जब हमारा इसका मुतालअ खत्म हो जाएगा तो तुम भी दोबारा देखोगे के सफ़ाई से के कौन सी किताब अल्लाह का सच्चा कलाम है।

**पैग़म्बरो पर एक सौ चार वही नाज़ील हुई, जिनमें से चार किताबें थी,और सौ को सहीफ़े कहा जाता है। ज़बूर** पाक किताब दाऊद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई।पैग़म्बर मूसा अलैहिस्सलाम **पर तोरह नाज़िल हुईः उसके बाद** अव्वल फरिश्ते जिब्राईल अलैहिस्सलाम इजील असली बाइबल **को ईसा** पैगम्बर ईसा अलैहिस्लाम **के पास ले गए, वल्लाह** मैं अल्लाह के नाम की कसम लेता हूँ। **फिर वो हबीबअल्लाह** अल्लाह के महबूब यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम **के पास कुरआन ले कर आए, जब ज़रूरत हुई इसे तेईस साल में पूरा किया गया; तब नजूल पूरा हो गया।**

**मैं मानता हूँ के पैगम्बर मासूम और बेगुनाह हैं,पाक, भरोसेमंद; अल्लाह के अहकाम को ज़ाहिर करने में वफ़ादार हैं।**

**बग़ावत से, पाप करने, बेवकूफ़ी पन , झूठ बोलना, राज़ खोलना इन सब से पैग़म्बर परे हैं, ये ग़ैर. मामूली है।कुछ आलिमों ने कहा ः पैग़म्बरो के नाम जानना वाजिब** कुरआन अल करीम में खुले अहकामात को फर्ज़ कहते हैं।जब ये कुरआन-अल-करीम से समझ नहीं आता के क्या ये खास चीज़ फर्ज़ है या नहीं तो इसे **वाजिब** करार दे दिया जाता है।) है, **अल्लाह ने कुरआन में हमें उनके अठठाईस नाम दिए हैं।हज़रत आदम सारे पैगम्बरों में सबसे पहले हैः आखिरी मुहम्मद रसूलुल्लाह है, जो सारे पैग़म्बरों में ऊँचे हैं।**

**दोनो के बीच आने वाले पैग़म्बर बेशुमार है; कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह के इतने लम्बे अरसे में कितने लोग हैं, पैग़म्बरो के कैनन उनकी मौत के साथ खत्म नहीं होंगे; फरिश्तों की तुलना में, पैग़म्बर ऊँचे हैं।**

**हमारे पैगम्बर की मुतकली ह़मेशा के लिए जायज़ है; अपनी कैनन के साथ आखिरत में अल्लाह सबका इंसाफ़ करेगा।**

**जो कुछ भी हमें अल्लाह के प्यारे से बताया गया, मैं उसे कबूल करता हूँ ,अल्लाह के कलाम को पैश करने में।**

# कुरआन -अल- करीम

यह बाइबल में लिखा है कि एक आखिरी पैग़म्बर अलैहिस्सलातु- व -स- सलाम ईसा अलैहिस्सलाम के बाद आएंगे।जॉन की इंजील के चौदहवें बाब के सोलहवीं आयत में ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा हैः

" और मैं बाप से दुआ करूँगा, और वो तुम्हें एक और दिलासा देने वाला देगा, ताकि वह हमेशा तुम्हारे साथ रह सके;" ( यूहन्ना/जॉनः 14-16)। छब्बीसवीं आयत इस तरह पढ़ी जाएगीः "लेकिन दिलासा देने वाला, जो एक पाक रूह है, जिसे बाप ने मेरे नाम में भेजा, वो तुम्हें सारी चीज़े सिखाएगा, और तुम्हें सारी- सारी चीज़े याद कराएगा, जो कुछ भी मैं तुमसे कहता हूँ।"(ibid:26) और ये सोलहवें बाब की तेरहवीं आयत में लिखा है; " लेकिन जब वो, सच्चाई की रूह आएगी, वो तुम्हें सारी सच्चाई की तरफ़ रहनुमाई करेगाः क्योंकि वो अपने आप नहीं; बल्कि जो वो सुनेंगे,वह वही बोलगेंः और वह तुम्हें आने वाली चीज़े दिखाएंगे।"(ibid:16-13)। [ईसाई ज़ोर देकर दिलासा देने वाले लफ्ज़ को 'रूह' के तौर पर तशरीह करते हैं।]

इसके अलावा, ये पाक बाइबल के पुराने नियम में लिखा है कि अरब नस्ल से तआल्लुक रखने वाले एक पैग़म्बर आएंगे। इसतसना के अठारहवें बाब के पंद्रहवी आयत में मूसा अलैहिस्सलाम ने इस्राएलियों से कहाः "यहोदा तुम्हारा खुदा तुम्हारे बीच में से एक पैगम्बर,तुम्हारे भाईयों के समान मेरे ऊपर उठाएगा; उसके लिए तुम सुनोगे;"(dent:18-15)इस मतनमें इस्तेमाल किए गए इस्राएलियों के भाइयों का मतलब इस्माइलियों(इस्माइली) यानी अरब से है। आखिरी पैगम्बर जिसकी आमद बाइबल और तोरह में अच्छी खबर के रूप में दी जाती है वो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। जो मज़हब आप लाए वो **इस्लाम** है। जो लोग इस मज़हब में यकीन रखते हैं उन्हें **मुस्लिम** कहते हैं। मुसलमानो की पाक किताब **कुरआन- अल- करीम** है। कुरआन अल करीम अरबी जुबान में हमारे पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह तआला के ज़रिए नाज़िल किया गया। तब से चौदह सौ साल के बावजूद इसमें एक भी लफ्ज़ या एक भी हरूफ़ नहीं बदला गया। कोई भी जो इसे पढ़ता है, कोई फर्क नहीं पढ़ता कि वह किस मज़हब मे है, वो इसकी वैभव और शानदार स्टाईल की तारीफ़ करता है। जो लोग अरबी नहीं जानते वो भी जब इसके तर्जुमे को दूसरी ज़बानों में पढ़ते हैं तो इसके मतन की ताकत को कुबूल करते हैं।

निसानसीज़ मुहम्मद एफ़ंदी निसानसीज़ मुहम्मद 1031 [1622 सी.ई.] में ईदीरने में वफ़ात पा गए थे।) के ज़रिए लिखी गई **मिरात- ए- काएनात** किताबो में मंदरजाज़ेल जानकारी तीन आसमानी किताबो के बारे में शामिल हैं ः

"दस साल तक शुएब (जेथ्रो) अलैहिस्सलाम की मेडियन (मिडियन) में खिदमत करने के बाद, वह मूसा(मोसिस) अलैहिस्सलाम अपनी माँ और अपने भाई से मिलने मिस्त्र चले गए। मिस्त्र के रास्ते में, तूर पहाड़ (सिनाई) पर उन्हें वही दी गई कि वह पैग़म्बर थे। वह मिस्त्र चले गए, जहाँ उन्होने फिरौन और उसके कबिले को अपने मज़हब में शामिल होने की दावत दी। अपने वापसी के रास्ते पर वो फिर पहाड़ सिनाई पर गए और अल्लाह तआला से बातचीत की। दस अहकामात(अवामिर-ए-अशरत) और तोरह, जिसमें चालीस किताबें थीं उन पर नाज़ील की गई। हर एक में हज़ारों आयात शामिल थीं। एक किताब पढ़ने मे एक साल लग जाएगा। मूसा (मोसिस),हारून (आरून),यूशा, उज़ेर ,और ईसा (जिसस)

अलैहिम- उस- सलाम को छोड़कर, कोई भी तौरात (तोराह) को याद रखने के काबिल नहीं था। मूसा (मोसिस) अलैहिस्सलाम के बाद तोरह की बहुत सारी कॉपियाँ लिखी गई। अल्लाह तआला के हुकूम के साथ, मूसा अलैहिस्लाम ने सोने और चाँदी से एक चैस्ट बनवाया और जो तोरह उन पर नाज़िल हुई थी उसे उसमें रख दिया। वो एक सौ बीस साल के थे जब उनकी वफ़ात हुई जैरूस्सलेम के आसपास। **668**[**1269** सी.ई ] मे मिस्त्र के सुलतान बेबार्स की कब्र पर एक मकबरा था। यूशा अलैहिस्सलाम ने अमालिका से जेरूस्सलेम का कब्ज़ा कर लिया। इतने लम्बे अरसे में इस्रालियों को अखलाकी और मज़हबी बेइज़्ज़त किया गया। बुहन्नुनासर (अबुदादनेस्सर)बेबेल से आया और जैरूस्सलेम पर हमला कर मस्जिद- ए- अकसा को खत्म कर दिया जिसे सुलैमान (सोलोमन)अलैहिस्सलाम ने बनवाया था। उसने तोरह की सारी कॉपियों को जला दिया। उसने दो सौ हज़ार लोगो को मार डाला। उसने सत्तर हज़ार मज़हब के आदमियों को बंदी बनाया। उसने उन्हें बेबेल भेज दिया। जब बेहेमैन बादशाह बना तो उसने बंदियों को आज़ाद कर दिया। उज़ेर अलैहिस्सलाम ने तोरह की किरात की। जो उन्हें सुनते थे वो इसे लिखते जाते थे। उज़ेर अलैहिस्लाम के बाद यहूदी फिर से खराब हो गया। उन्होने एक हज़ार पैगम्बरो को शहीद किया। वो अलेक्ज़ेंडर के वक्त तक ईरान के ग़लबे में रहे। अलेक्ज़ेंडर बाद वो ग्रीक के ज़रिए मुकर्रर किए गए गर्वनर के अदंर रहे।

"बाइबल अपनी असली पाकी में नहीं बची। इस बात के लिए, कोई भी बाइबल को दिल से नहीं जानता था। एक भी रिकॅार्ड ये नहीं दिखाता कि इसाई मज़हब के रसूल बाइबल को दिल से जानते थे। हमारी किताब के शुरू के हिस्से में बाइबल की तफ़सीली जानकारी दी गई है। दूसरी तरफ़ क्योंकि कुरआन- अल- करीम आहिस्ता-आहिस्ता **23** सालों में नाज़िल हुआ था। इसलिए ईमान वालों ने जैसे ही ये ज़ाहिर हुआ उसे जल्दी से याद कर लिया। फिर भी, जब सत्तर हाफ़िज़ों को (मुसलमान जिन्होने पूरा कुरआन- अल- करीम याद कर लिया था।) उन्हें यमामा वहासी बिन हरब हबशी रज़ि अल्लाहु अन्हा पहले कुरैश के काफ़िरों के एक गुलाम थे। उन्हें हज़रत हमज़ा रज़ि अल्लाहु अल्लाह अन्हा, अल्लाह के नबी के मुबारक चाचा और ओहद की जंग ,ईमान वालों और काफ़िरों के बीच में दूसरी पाक जंग के पहले मुसलमानों में से एक को कत्ल करने के लिए रिश्वत दी। जब जंग खत्म हो गई तो अल्लाह के पैगम्बर ने, कुछ काफ़िरो पर लानत भेजी। वहासी का नाम उन बददुआ दिए गए लोगो में नहीं था, जबकि पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जानते थे कि उन्होने आपके चाचा का कत्ल किया है। जब

आपसे पूछा गया कि आपने वहासी को बददुआ क्यों नही दी तो मुबारक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म ने फरमायाः "**मिराज की रात** ( हज़रत मुहम्मद की आसमान पर जाना) **मैने हमज़ा को** ( नबी के मुबारक चाचा) **और वहासी को जन्नत में हाथ में हाथ डाले हुए घुसते हुए देखा था।**" मक्का की फतह के बाद वहासी/वहाशी और ताईफ़ से दूसरे लोगों ने मदीना की मस्जिद में नबी की ज़ियारत की और मुसलमान बन गए।" अल्लाह के रसूल

सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें माफ़ कर दिया और उन्हें यमामा के आस पास की इलाके में किसी जगह पर जाने का हुकूम दिया। उन्हें रसूलल्लाह के चाचा के साथ जो किया था उस पर बहुत नदामत थी कि उसकी वजह से अपनी बकाया ज़िंदगी वो सिर झुकाकर रहे। हिजरत के ग्यारहवें साल के दौरान मुसलमानों और बिदअतियों के बीच मुसेलमा- तुल- कज़ाब, जो नबी होने का दावा करता था उसके हुकूम पर खतरनाक जंग हुई। वहासी रज़ी अल्लाहु अन्हा ने जंग में शिरकत की और उसी तलवार से जिससे उन्होने हज़रत हमज़ा को शहीद किया था उससे उस झूठे नबी को कत्ल किया। ये उस वक्त महसूस किया गया कि ये कितना बड़ा चमत्कार(मोअजिज़ा) था के नबी ने उन्हें यमामा भेज दिया था। वहासी रज़ी अल्लाहु अन्हा ने और भी बहुत सारी पाक जंगो में शिरकत की और उसमान रज़ी अल्लाहु अन्ह की खिलाफ़त के दौरान वो रहलत फरमा गए। ) उमर रज़ी अल्लाहु अन्ह कुरआन- अल- करीम के जानने के वाले लोगों की तादाद में कमी होने की वजह से परेशान थे। ये वक्त के खलीफ़ा पर लागू होते थे अबू बकर रज़िअल्लाहु तआला अन्ह को सलाह दी और कुरआन- अल- करीम को जमा करके और लिखने को कहा। इस पर हज़रत अबू बकर ने ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्ह जो मुहम्मद अलैहिस्सलाम के सेक्रेटरी थे को हुकूम दिया के कुरआन- अल- करीम की सुरतों(बाब)को अलग कागज़ के टुकड़ों पर लिखें। कुरआन-अल-करीम कुरैशी बोली को मिलाकर सात मुख्तलिफ़ बोलियों में ज़ाहिर हुई दरहकीकत, कभी-कभी, जब लोग कुरआन- अल- करीम के एक खास लफ़्ज़ को सही तरह बोल नहीं पाते थे तो, उन्हें एक दूसरा लफ्ज़ इस्तेमाल उसी मआनी के साथ वाला इस्तेमाल करने की इजाज़त थी। मिसाल के तौर पर, वहाँ पर एक दिहाती था जो हमेशा ताम- उल- इसीम को गलत बोलता था और उसके बजाए तामुमल यतीम बोलता था। अबदुल्लाह इबनी मसूद रज़ी अल्लाहु तआला अन्हा ने उससे कहा, 'अगर तुम लफ़्ज़ को सही नहीं बोल सकते, तो कहो 'ताम उल फाजिर' जो इसके हमआहंग है। हालंकि,अलग -अलग बोलियों में कुरआन-अल- करीम को पढ़ने और हमआहंग लफ़्जों को इस्तेमाल करने के पसंद ने इस तरह की बोलियों की फ़ौकियत ने कई विवादों को पैदा किया। नतीजन, खलीफ़ा उस्मान रज़ि अल्लाहु तआला अन्ह ने सदर के औहदे के तहत एक तंज़ीम को फिर से ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा को बुलाया और उन्हें फिर से कुरआन- अल- करीम सिर्फ़ कुरैशी बोली में तरतीब देकर और लिखने के लिए कहा। कुरैशी बोली में लिखे गए सफ़हों में सूरह (बाब) चुने गए। कुरआन- अल- करीम की सात कापियाँ इसी तरीके से लिखी गईं और उन्हें मुख्तलिफ़ सूबों में भिजवा दिया। इस तरह कुरआन- अल- करीम जिसे अल्लाह के नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम और जिब्राईल अलैहिस्सलाम साल में दो बार किरअत करते थे नबी के चले जाने के इत्तेफ़ाक के साथ लिखा था। दूसरी बोलियों की कॉपियाँ तबाह हो गईं। पूरी दुनिया में मुस्लिम मुल्कों में मौजूद कुरआन-अल-करीम की कॉपियाँ मुसहाफ़- ए -उसमानी (हज़रत उस्मान के हुकूम पर लिखे गए कुरआन- अल-

करीम की कॉपियाँ) से तरतीब में और फ़क़ीहात में दोनों के साथ हमआहंगी हैं। उसके बाद से कभी भी एक भी हरूफ़ इसका बदला नहीं गया।

ये फारसी की **रियाज़ उन नासिहीन** नाम की किताब में लिखा हैः "जब उस्मान **रज़ि अल्लाहु** तआला अन्हा ख़लीफ़ा थे, उन्होने असहाब- ए- किराम रिज़वानउल्लाही तआला अलैहिम अजमईन को दावत दी। उन्होने एक मत से ये फैसला किया कि ये वही कुरआन- अल- करीम है जो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपने रहलत फरमाने वाले साल के दौरान सुनाया करते थे। ये (मुसलमानो) उम्मत के लिए वाजिब नहीं था के सात बोलियों में एक को चुनना; इसकी सिर्फ़ इजाज़त थी।"

इस्लामी मज़हब के चार ज़राए हैः कुरआन- अल-करीम, हदीस- ए- शरीफ़ ( अल्लाह के नबी के कलमात), इजमा- ए- उम्मत, और कियास- ए- फुकहा। इजमा का मतलब इत्तेफ़ाक राए, इत्तेहाद है। असहाब- ए- किराम का इत्तेहाद, साथ के साथ चार मसालिक के रहनुमाओं का इत्तेहाद, दस्तावेज़ी ज़रिया है मुसलमानों के लिए। क्योंकि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः **" मेरी उम्मत (मुसलमान) कभी गलत चीज़ पर सहमत नहीं होंगे। "** ये हदीस- ए- शरीफ़ भी इस बात की पैशनगोई करती है के इजमा के रास्ते से मुतासिर मज़हबी जानकारियाँ सही होंगी। इसलिए, कुरआन- अल- करीम ये कॉपी जिस पर असहाब- ए- किराम रज़ीअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन इत्तेफ़ाक राय से सहमत हुए सही है। ये हराम (ममनुअ) है किसी और बोली में एक कॉपी को पढ़ना। इसके अलावा, आज कुरैशी बोली के अलावा किसी और बोली में कोई कॉपी नहीं है। वक्त के साथ सारी सातों बोलियाँ जो बदल गईं थीं वो भुलाई जा चुकी हैं और गायब हो गई हैं। मुख्तल्फ़ि अरबी शब्दावली के इस्तेमाल के ज़रिए से आज ज़रूरत है तफ़सीर की किताबों को पढ़ने की (कुरआन- अल- करीम की वज़ाहत) और तरह के मआनी को सीखने के लिए जो कुरआन- अल- करीम के खुलासा के वक्त किए गए लफ़्ज़ो को इस्तेमाल किया गया।

मुख्तलिफ़ मग़रीबी आलिमों और लेखकों ने कुरआन- अल- करीम के लिए अपनी तारीफ़ बयान की। गोएथे (डी.**1248**[**1749** सी.ई.] एक मश्हूर लेखक ने, कुरआन- अल- करीम के एक गलत तर्जुमे की जर्मन जिल्द को पढ़ने के बाद, वो यह कहने मे मदद नहीं कर पाया, "मैं इसमें दोहराव के साथ अब गया हूँ। फिर भी मैं इसकी इबारात की अज़मत की तारीफ़ करता हूँ।" बियोवर्थ स्मिथ, एक अंग्रेज़ पुजारी ने अपनी किताब **मुहम्मद और मुहम्मद के तरफ़दार** सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में मंदरजाज़ेल बतायाः " कुरआन खालिस तरज़,इल्म, फिलोसफ़ी,और सच्चाई का चमत्कार है।"

और आर्बरी, जिसने कुरआन- अल- करीम का अंग्रेज़ी में तर्जुमा किया था उसने कहा, " मैं जब भी अज़ान ([1] इबादत के लिए पुकारना। बराएमेहरबानी, **सआदत ए अबदिया** किताब तीसरे हिस्से का ग्यारहवां बाब देखिए। ) की अवाज़ सुनता हूँ , ये मुझे बहुत गहराई से मुतासिर करती है। बहने वाली धुनों के नीचे जैसे मुझे महसूस होता है के ड्रम पीटा जा रहा हो। ये पीटना/धड़कना मेरी दिल की धड़कनों की तरह है।"

मार्मड्यूक पिस्तल का कुरआन- अल- करीम के बारे में ये नज़रिया हैः " सब से ज़्यादा काबिले इतमिनान, हम आहंगी और सब से ज़्यादा मुर्क़रर बयान है। एक ताकत जो इंसानी दिल में रोने के लिए झुकाव या लामहदूद प्यार और चाहत जगाती है!" इनमें से कुछ ही लोग हैं मग़रीबी फिलासफर, साईसदाँ और सियासतदाँ जिन्होने कुरआन- अल- करीम के लिए अज़ीम इज़्ज़त, तारीफ़ और सराहना ज़ाहिर की। हालांकि, ये लोग कुरआन- अल- करीम को अल्लाह की किताब नहीं मानते बल्कि मुहम्मद अलैहि सलाम के ज़रिए लिखा गया आर्ट का एक अज़ीम और कीमती काम मानते हैं। अगर ये मामला नहीं होता तो, ये सारे चाहने वाले यकीनन अब तक मुसलमान बन चुके होते

देखिए लैमर्टिन का क्या कहना हैः

"मुहम्मद एक झूठ बोलने वाले पैगबंर नहीं हैं। क्योंकि उनका मानना था कि उन्हें अल्लाह ने एक नया मज़हब फैलाने के लिए चुना था।" इससे पता चलता हैः मग़रीबी मज़हब के आदमी तर्क करते थे के "मुहम्मद अलैहिस्सलाम झूठे नहीं थें, लेकिन वो सोचते थे के कुरआन- अल- करीम जो असल में उनका दिमाग़ था।" उनके मुताबिक , मुहम्मद अलैहिस्सलाम झूठ नहीं बोल रहे थे। उन्होने असल में अपने आपको एक पैगबंर माना और ये माना के उनकी बातचीत अल्लाह से मुतासिर हैं।

कुरआन-अल-करीम एक बेमिसाल चमत्कार है। जैसे के हम नीचे मिसाल देंगे, इसमें इल्म के नायाब नमूने और इंसाफ़ की ज़रूरयात जो हर किस्म के सिविल कानून के लिए बुनियाद हैं जो अब तक कायम हो चुका है, पुरानी तारीख की अनजानी हकीकत, सबसे खुला अखलाकी उसूल जो इंसानियत को दिया गया, कीमती सलाह, इस दुनिया और अगली के बारे में सबसे ज़्यादा मतंकी खुलासा, और इसी तरह के बहुत सारे दुसरे हकाईक, जो कोई नहीं जानता, या कभी जान पाएगा, या फिर उसके ज़हूर के वक्त तक सोच पाएगा। और ये सब हकाईक इतने आला स्टाईल में बयान किए गए हैं जो कि किसी- किसी के काबिलियत में नहीं हो सकता।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम उम्मी थे यानी आपने किसी के साथ पढ़ा नहीं, किसी से सीखा नहीं, या कुछ भी लिखा नहीं। सूरह अंकबूत की अढ़तालिसवीं आयत का मतलब है, "[ऐ मुहम्मद अलैहिस्सलाम ! इससे पहले कुरआन- अल- करीम आप पर उतारा गया।] **(किताब आई) इससे पहले वो इस (लायक) नहीं था के किताब को पढ़ सके, न ही वो हुनर के (लायक) थे के अपने सीधे हाथ के साथ इसे नक्ल कर सकते, इस मामले में वाकई में घमडं (मुशरिकीन) की बातें करने वालो ने भी शक किया है** [और कहा कि आपने किसी और से कुरआन अल करीम सीखा है या इसे दुसरी आसमानी किताबों से नक्ल किया है। और यहूदियों ने भी शक किया, ये कहते हुए , ये तोरह में लिखा है कि नया पैगम्बर उम्मी होगा। जबकि यह शख्स अनपढ़ नहीं है।]" **(29-48)** मुहम्मद अलैहिसल्लाम **40** साल

के थे जब जिब्राइल (गब्रिइल) अलैहिस्सलाम आपके पास पहली वही का टुकड़ा (कुरआन -अल- करीम का नज़ूल) हिरा पहाड़ पर लेकर आए जहाँ उन्होने अपने आपको इबादत के लिए अलग कर लिया था। आप इतने ज़्यादा परेशान थे और खौफ़ज़दा थे के डर की वजह से घर की तरफ़ भाग गए, अपनी नेक बीवी खदीजा रज़िअल्लाहु अन्हा से फरमाया के आपको बिस्तर पर लिटा दें और किसी मोटी चीज़ से आपको ढाँप दे, आप लंबे समय तक आप ठीक नहीं हुए। क्या ये तरीका है कि एक शख़्स जिसने रूहानियत और आला कैफियत हासिल की और जो इंसानियत के लिए एक नई मज़हबी किताब तैयार करने की कामना की? सबसे पहले , क्या आपने इतने ज़्बरदस्त हुनर का काम लिखने के लिए, किताबों के जिल्दें पढीं और और लंबी इबतिदाई तालीम की जानकारी हासिल नहीं की होगी? दरहकीकत, मुहम्मद अलैहिस्सलाम जब बच्चे थे तो आपको दमिश्क मे दो अलग- अलग तिजारती सफ़र पर ले जाया गया था क्योंकि आप बच्चे थे इसलिए सिर्फ़ तिजारती समान की हिफ़ाज़त और बचाओ के लिए और इन मुहिमों में कारवां की हिफ़ाज़त/ इंतेज़ाम के लिए शुल्क लिया गया, और इन फराईज़ की वजह सिर्फ़ आपकी लचीली अखलाकी सिफ़ात और अकलमंदी और ग़ैर यकीनी तौर पर कबिलियत थीं। ये अचानक ग़ैर मुतवकअ नज़ूल, जिसके बारे में कभी आपने सोचा भी नहीं था, आपको खुश करने के बजाए खौफ़ज़दा कर गई। ताहम, जैसे के नज़ूल के वाक्यात दोबारा ज़ाहिर हुए, तो आपको अहिस्ता- अहिस्ता ये महसूस हुआ के अल्लाह तआला ने आपको एक खास और अहम काम सौंपा हैं, आपने अपने वुजूद को मानने के लिए अहकामात को मानने के लिए पाबंद किया और इस्लामी मज़हब को फैलाना शुरू किया, जिसे उसने आपको पहुँचाया था और जो अल्लाह की एकता पर मुबनी था। मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम फैलाया जिससे कोई दुनियावी फायदा नहीं मिला, बल्कि इसके बरअकस सारे मक्का वाले आपके दुश्मन बन गए। आप ये कहने के लिए जाने जाते है, **"मेरे जितना कोई और पैगम्ब्र मुसिबत में नहीं था, और न ही उनमें से कोई मेरे जैसा संकट महसूस करता था।"** ये हदीस- ए- शरीफ़ किताबों में दर्ज है। इन हकाईक से पता चलता है कि मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने एक नए मज़हब को फैलाने में कोई दुनियावी फायदा या कोई ज़ाती इच्छा की तलाश नहीं की। असल में, जैसा कि हमने पहले से ही बताया है आपका तालीमी पस मंज़र और समाजी माहौल जिसमें आप रहते थे वो शायद ही कभी आपको सपने देखने के लिए किसी भी कामयाबी का वादा करते थे।

फिर, यह मानने के लिए सवाल करना नामुमकिन है कि मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने खुद कुरआन- अल- करीम को तरतीब दिया होगा। फिर हम इस अंदाज़े पर तर्क करें कि कुरआन- अल- करीम अल्लाह तआला के जरिए ज़ाहिर की गई एक शानदार शाहकार हो सकता है।

जब एक नया पैगम्बर वारिद होता है, तो उसके आस पास के लोग उसके ज़रिए चमत्कार की उम्मीद करते हैं। मूसा (मोसिस) अलैहिस्सलाम और ईसा (जीसस) अलैहिस्सलाम दोनो को अपनी नब्बुव्वत साबित करने के लिए चमत्कार करने पड़े थे। असल में, ये चमत्कार

इस अल्लाह तआला की तख्लीक ,और इजाज़त और हुकूम पर ज़हूर जज़ीर होते हैं।तारीखदानों के ज़रिए, "मूसा और ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कारों" से दर्ज हैं।असलियत में, नबी अलैहिस्सलामुस्सलवात वतसलीमात, जो हमारी तरह इंसान हैं, वो खुद अपने आप चमत्कार नहीं कर सकते।चमत्कार सिर्फ़ अल्लाह तआला के ज़रिए तखलीक किए जाते हैं।और नबी सिर्फ़ अल्लाह तआला के ज़रिए तखलीक किए गए चमत्कारों को ज़ाहिर करते हैं।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सबसे बड़े चमत्कार के तौर पर, अल्लाह तआला ने कुरआन- अल- करीम पर आप पर ज़ाहिर किया।कुरआन- अल-करीम एक आला किताब है, और ये यकीनन एक चमत्कार है।इस हकीकत के बावजूद, अरब के लोगो ने मुहम्मद अलैहिस्सलाम से मुतालबा किया कि एक किताब आसमान से नीचे भेजी जाए या आप एक पहाड़ को सोने में तबदील करदें।कुरआन- अल- करीम ने इस मज़मून को एक शानदार अंदाज़ में वाज़ेह किया।सूरह अंकबूत की **50**वीं और **51**वीं आयात के मआनी हैं, " **फिर भी वो** (मुश्रिक) कहते हैः '**अलामात क्यों नहीं,**[ जिससे मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नब्वुव्वत को बताया जाए, जिस तरह से ईसा अलैहिस्सलाम का खाने की मेज़ और मूसा अलैहिस्सलाम का अज़ा/छड़ी,] **नीचे आपको भेजी जाती लार्ड** (अल्लाह तआला) **की तरफ से?'** [ ऐ मेरे नबी!] **इन्हें बता दो बेशक अलामतें अल्लाह तआला के पास हैं।** [ वो उसकी मर्ज़ी पर मुबनी हैं।वो उन्हें तखलीक करता है जब वो चाहता है और जिसे तरीके से वो उन्हें मुंतखिब करता है।ये चीज़े मेरी पहुँच में नहीं है।] **और मैं बेशक उसके अज़ाब का वाज़ेह करने वाला हूँ।" " और ये क्या उनके लिए काफ़ी नहीं है** [चमत्तकार के तौर पर]**कि हमने उन पर एक किताब भेजी जो उन्हें दुहराई जाती है? बेशक, इसमें रहमत है और उन लोगो के लिए याद दहानी है जो ईमान लाए।"**

(**29- 50,51**) फिर, कुरआन अल करीम मुहम्मद अलैहिस्सलाम का आला चमत्कार है।उन लोगो के लिए लिए जो ज़ोर देते हैं कि "ये अल्लाह की किताब नहीं है; ये मुहम्मद के ज़रिए लिखी गई थी;" अल्लाह तआला ने उन्हें सुरह अंकबूत की **48**वीं आयत में उनका जवाब दिया है, जिसे हमने ऊपर लिखा और वाज़ेह किया है।इस तरह पहले से ही उसने इस मामले में मुमकिना शकूक को खत्म कर दिया।अल्लह तआला ने ज़ोर दिया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इतनी ताकत नहीं थी कि आप इस मारके की किताब लिख पाते और ये कि उसने ही कुरआन- अल- करीम को आप पर नाज़िल किया।दरहकीकत, उसने जान बुझकर एक उम्मी शख्स, मुहम्मद अलैहिस्सलाम को नबी के तौर पर मुंतखिब किया, ताकि लोग देख सकें कि आपने लिखना और पढ़ना नहीं सीखा था, नाकाबिले यकीन तौर पर यह समझ जाएं कि कुरआन-अल-करीम सिर्फ़ अल्लाह तआला के ज़रिए नाज़िल किया गया।इस आयत- ए- करीम की तफ़सीर (वज़ाहत) इस मज़मून के बारे में तफ़सीली जानकारी रखती है।मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नब्वुव्वत की गवाही देने के लिए आपकी आल ज़ाती अलामते हैं, वो हैं आपकी गैर मामूली खसूसियात जैसे कि ईमानदारी,सालमियत,वफ़ादारी,बहादुरी

,तहमुल और काविलियत साथ ही साथ आपकी आला जानकारी। अल्लाह तआला ने ऐलान किया, जैसा कि सूरह निस की 82वी आयत से वाज़ेह है, **"क्या वो कुरआन अल करीम के मआनी को नहीं मानते( देखभाल के साथ)?अगर यह अल्लाह तआला के अलावा किसी और के ज़रिए होता, तो बेशक वो इसमें बहुत सारी गलतियाँ पाते।"** (4-82) यह कितना सच है! आज की पाक वाइवल, जिसे हम जान गए हैं कि अल्लाह तआला का कलाम नही है, इसमें वहुत सारी गलतियाँ, जो यह सावित करती हैं कि यह आदमी के ज़रिए वनाई गई है।

अव हम वेहद तहमुल और पूरी तरह से ग़ैर जानिवदार मुशाहदा करते हैं यह देखने के लिए कि क्या वाकई में कुरआन- अल- करीम एक आला चमत्कार है। एक किताव के अजूवा/चमत्कारी होने के लिए ज़रूरी है कि यह ख़ुशगवार ज़वान में लिखी हुई हो, ये ऐसे हकाईक और महाज़ों पर तकसीम हो जिन्हें अभी तक न किसी ने जाना हो या सुना हो, और यह इस तरह से तरतीव में हो कि कोई इंसान इसकी नक्ल न कर पाए।

हमने कुरआन अल करीम की फ़साहत की वहुत सारी मिसालें दी हैं। वेशक, इस हकीकत को पूरी दुनिया ने तसलीम किया है। अभी तक किसी ने कुरआन अल करीम की फ़साहत से इंकार नहीं किया है।

क्या कुरआन अल करीम ने ऐसे हकाईक पेश किए जो उस वक्त किसी को मालूम नहीं थे? आईए देखते हैं। साईसदानो के ज़रिए लिखी हुई आज की किताबें और वड़े एनसाइकलोपिडिया हमारी ज़मीन की तख़लीक के वारे में मंदरजाज़ेल मालूमात रखती हैंः

"अरवों साल पहले हमारी पूरी कायेनात एक टुकड़े पर मुश्तमिल थी। अचानक, उस टुकड़े के वीच में एक वहुत वड़ा धमाका हुआ। जिसके नतीजे में, वड़ा टुकड़ा कई छोटे टुकड़ों में टूट गया, और हर एक छोटा टुकड़ा एक मुख़्तल्फ़ि सीमत में घूमने लगा। आख़िर में कुछ टुकड़े एक दूसरे के साथ मिल गए ,और कई सय्यारें, कहकशाएँ[दूध का रास्ता], सूरज और मसनूई सय्यारे [चाद] की तश्कील की। क्योंकि खला में इवतिदाई वड़े धमाके के ख़िलाफ़ कोई मुख़ालफ़त नहीं वची थी तो सय्यारे, मसनूई सय्यारे,और कहकशाएँ जिन में वो थे वो खला में इसी तरह अपनी महवर पर गरदिश/घूमते रहे। दुनिया ऐसी कहकशाँ में है जिसमें सूरज भी शामिल है। काएनात में वेशुमार कहकशाएँ हैं। काएनात एक वढ़ती हुई निज़ाम है। दूसरी कहकशाएँ आहिस्ता- आहिस्ता दुनिया से दूर हो रहीं हैं, क्योंकि कायेनात लगातार वढ़ रहा है। अगर उनकी रफ़्तार रोशनी की रफ़्तार के वरावर हो जाती है, तो हम इन कहकशाओं को नहीं देख पाएगें। हमें और ज़्यादा ताकतवर टेलीस्कोप वनाना शुरू करना है। हम इस वात से डरते हैं कि हमारे लिए जल्द ही उन्हें देखना नामुमकिन होगा।"

हमने कुछ साईसदानो से वात की और पूछा वो कव इस नतीजे पर पहुँचे थे। उनका जवाव था, "हाल के पचास या साठ सालों के तमाम दुनिया के साईसदानो ने इस नज़रिए पर सहमती दी है।" पचास या साठ सालो का यह दौर दुनियावी के मामले में थोड़ा वक्फ़ा है।

अब हम फिलहाल अपना ध्यान कुरआन अल करीम की तरफ़ लगाते हैं और देखते हैं अल्लाह ने क्या ऐलान कियाः

सूरह अनबिया की **30**वीं आयत से वाज़ेह है, **क्या काफ़िर नहीं देखते कि आसमान और ज़मीन एक साथ मिल गए हैं (तखलीक की एक इकाई की तरह),हमारे उनको अलग करने/फैकने से पहले?... (21-30)** सूरह यासीन की अवीं और **38**वीं आयत के मआनी हैं, **"और उनके लिए एक अलामात (काफिरो के लिए,)रात हैः हमने उनसे दिन को ले लिया, और देखो वो अंधेरे में गिर गए हैं," "और सूरज अपना काम कर रहा है** [अपने महवर पर ]... **(36-37,38)** इसका मतलब है चौदह सौ साल पहले अल्लाह तआला ने हमें ज़मीन की तखलीक के बारे मे जानकारी दी थी, जिसे साईसदानो को हाल के पाचँ या छः अशरे में मालूम पड़ा। अब हम साईसदानो के पास वापस चलते हैं।

माहिरे हयातियात ज़मीन पर शुरूआती ज़िंदगी को मंदरजाज़ेल समझाते हैंः " पहले ज़मीनी माहौल में अमोनिया, ऑक्सीजन और कार्वनिक एसिड गैस शामिल थी। थंडरवॅाल्ट के असर की वजह से इन माददो में एमिनो एसिड आ रहे थे। अरबों साल पहले प्रोटोप्लाज़्म पानी में वुजूद में आया। ये माद्दे शुरूआती अमीवा में पैदा हुए, जिससे पानी में सबसे पहले शुरूआती ज़िंदगी शुरू हुई। बाद में जानदार जो पानी से ज़मीन पर आए पानी से अमीनो एसीड जज़ब करके ज़मीन पर आए, ऐसे जानदारों को जन्म देते हैं जिसमें उनकी तखलीक में प्रोटीन शामिल होता है। जैसा कि देखा गया है, पानी हर जानदार की असल है, और शुरूआती जानदार पानी में ही वुजूद में आए थे।"

सूरह अनबीया की **30** वीं आयत से वाज़ेह है, "(क्या वो नहीं जानते कि) **हमने हर जानदार को पानी से बनाया है?..."(21-30)** सूरह फुरकान की **54**वीं आयत से वाज़ेह है, "**यह वह है** (अल्लाह तआला) **जिसने आदमी को पानी से बनाया; तब उसने नसब और शादी के रिश्ते कायम किएः..." (25-54)** सूरह यसीन की **36**वीं आयत से वाज़ेह है, **"अल्लाह तआला सभी तरह की गलती और कमी से दूर हैः उसने सब चीज़ो को जोड़ो में तखलीक किया जो ज़मीन पैदा करती है, साथ ही साथ अपनी (इंसानी) किस्म और (दूसरी) चीज़े जिनकी उन्हें कोई जानकारी नहीं।" (36-36)** इस आयत-ए-करीमा में, ये इज़हार कि "**और दूसरी चीजें** जिनकी उन्हें जानकारी नहीं, उन दोनो की तरफ़ हवाला है माहिरे हयातियात और ज़ूलोजिस्ट और उन साईसदानो की तरफ़ जो नए ज़राए के लिए खोज कर रहे हैं, मिसाल के तौर पर, जौहरी तवानाई, जिसे इंसानियत वक्त के दौरान धीरे-धीरे खोजेगी। असल में, सूरह रूम की **22**वीं आयत से वाज़ेह है, **"और उसकी अलामात में ज़मीन और आसमानो की तखलीक है, और तुम्हारी ज़बानों और रगों में तबदिलियाँ है; यकीनन उनमें उन लोगों के लिए अलामात हैं जो जानते हैं।" (30-22)** इसका मतलब है कि ज़बानो और रंगो के बदलाव कुछ बहुत ही ज़्यादा इलाही वजूहात हैं जिन्हें हम अभी तक नहीं जान पाए। वो वक्त के अमल में तलाश करेंगे।

अब हम दुनिया के अम्त के बारे में अपने इल्म का मुतालअ करेंगे। साईसदाँ तर्क करते हैं कि "पक्के तौर पर दुनिया का खात्मा होगा। दरअसल, कभी कभी एक सय्यारा टुकड़ों में बटं जाता है और खला में गायब हो जाता है। हमारे मुशाहदे के मुताबिक एक ऐसा वक्त होगा, जिसे हम पहले से गिन नहीं पाएंगे, जब हमारी ज़मीन अपना तवाज़न खो देगी और टुकड़ों में बटं जाएगी।" दूसरी तरफ़ कुरआन- अल- करीम ने अब से चौदह सौ साल पहले इस बात का ऐलान कर दिया था। सूरह ज़िलज़ाल की पहली और दूसरी आयत के मआनी है, **"जब ज़मीन अपने पूरे (इंतिहाई) तौर पर हिला दी जाएगी,"** **"और ज़मीन अपना सारा बोझ** (खज़ाने और मुरदे) **(अपने अंदर से) निकाल बाहर फैकेंगी,"** (**99-1,2**) सूरह मोमिन की **13**वीं आयत- ए- करीमा से साफ़ है,**"वह वो है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ/अलामतें दिखाता है,** [जो उसकी वहदानियत और बुजूद को दिखाता है], **और आसमान से तुम्हारे लिए नीचे रिज़्क भेजता हैः लेकिन सिर्फ़ वो सलाह हासिल करते हैं जो अल्लाह की तरफ जाते हैं"** (**40-13**)

कुछ आलिमों का कहना है कि ये वज़ाहत, "जो तुम्हारे लिए नीचे आसमान से रिज़्क भेजता है," हो सकता है इस बात की तरफ़ हवाला हो जब मूसा अलैहिस्सलाम और उनके लोग जब भी रेगिस्तान में अपना रास्ता भूल जाते थे तो आसमान से मनसलवा उतरता था, और जो अभी भी बग़ैर पानी वाले इलाकों में ज़ाहिर होता है। तफ़सीर की किताब इस इज़हार को बताती है जिसका मआनी है, "जो आसमान से तुम्हारे लिए निचे रिज़्क पहुँचाए," जैसे "ये अल्लाह तआला है जो आसमान से तुम्हारे रिज़्क के असबाब भेजता है, जैसे के बारिश और दूसरी [बर्फ़,नमी] चीज़ें।" बेशक, अल्लाह तआला हमारा खाना आसमान से भेजता है। आईये इस हकीकत की वज़ाहत करें। आज के मशहूर साईसदानो ने मंदरजाज़ेल तरीके से अलबुमन और प्रोटीन की तखलीक की हैः "बारिश के दिनो में हवा में ऑकसीजन और नाइट्रोजन एक दूसरे के साथ थंडरबॉल्ट और लाइटनिंग्स की वजह से मिल जाते हैं, और एक गैस नाइट्रस मोनोक्साइड पैदा करते हैं, जो, अपनी बारी में ऑक्सीजन के साथ एक दूसरा कम्पाऊंड बनाता है, यानी नारंगी रंग का नाइट्रस डाएऑक्साइड। इस बीच में, दोबारा थंडरबॉल्ट और लाइटनिंग्स के असर की वजह से हवा में नमी और नाइट्रोजन अमोनिया बनाने के लिए मिलते हैं। हवा में नमी की वजह से नाइट्रस डाइऑक्साइड नाइट्रिक एसिड में बदल जाता है, जो अपनी बारी में अमोनिया और कार्बोनिक एसिड से हवा में मिल जाता है, इसलिए अमोनियम नाइट्रेट और अमोनियम कॉबॉनेट होता है। इस तरह जो नमक बनता है वो बारिश के साथ ज़मीन पर गिरता है। एक बार जो ये नमक ज़मीन पर पहुँचते हैं वो कैल्शियम नमक के साथ मिश्रित होकर कैल्शियम नाइट्रेट बनाते हैं। ये नमक पौधो के ज़रिए सींच लिया जाता है और उन्हें बढ़ाता है। ये माद्दे कई प्रोटिन में तबदील हो जाते हैं,[जैसे एल्बुमन] इंसानो और जानवरों अंदर जो इन पौधों को खाते हैं, और उन लोगों को खिलाते है जो इन जानवरों के गौश्त, दूध और अंडो को खाते हैं। " फिर, लोगो का खाना, जैसे के कुरआन अल करीम में बताया गया, आसमान से आता है।

ऊपर बताई गई जानकारी, एक ही वक्त में उन लोगों को जवाब है जो हमारे कुरआन अल करीम पर तोहमत लगाते हुए कहते हैं कि इसमें बताई गई चीज़े साईंसी जानकारी से सहमत नही है।" इसलामी आलिमों रहिमा हुमल्लाहु तआला, तफ़सीर के इल्म के माहिर(कुरआन अल करीम की वज़ाहत) अपने वक्त की साईंसी जानकारी के अंदर आयत ए करीमा की वज़ाहत की।अब हम ये करना चाहते हैं कि ये साबित करें कि न सिर्फ़ हर दौर में कुरआन अल करीम उस साईंसी इल्म के मुताबिक है, बल्कि नई खोजे भी अपने हवाले इसी में पा रही हैं।हर आयत-ए-करीमा का बेशुमार मआनी हैं।चूंकि अल्लाह तआला की सभी सिफ़ात बग़ैर बंदिश के हैं, इसलिए उसके कलाम की सिफ़त (लफ़्ज़, बोल) की कोई हद नहीं है। ये सिर्फ़ कुरआन अल करीम का मालिक, यानी अल्लाह तआला है, जो उन सब मआनी को जानता है।और उसने उनमें से ज़्यादातर को अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को आगाह किया।और उसके इस मुबारक नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने, अपनी बारी में, जो आपको लगता था आपके सहाबा(साथियों) रज़ीअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन के मुताबिक हैं उन्हें बता दिया।हम मानते हैं कि ऊपर जो जानकारी हमने दी है वो मआनी के उस महासागर में से कुछ बूँदे ही हैं।

अब, अगर हम इन साईंसदानों से पूछें, "क्या तुम समझते हो कि एक शख्स जिसने लिखना और पढ़ना नहीं सीखा था वो चौदह सौ साल पहले इन हकाईक को सोच सकता था?" वो कहेंगे, "यह नामुमकिन है।इन हकाईक को हासिल करने के लिए इंसानियत ने सदियाँ बेशुमार किताबें पढ़ी और बेशुमार तर्जुबात किए। और इन सब तर्जु-बात को करने के लिए सालों पढ़ाई चाहिए, बड़ी तर्जुबेगाह चाहिए, और नाज़ूक आलात ओर उन्हें इस्तेमाल करने की जरूरत है।"

फिर, क्या यह सब कुछ सोचा जा सकता है कि एक शख्स जिसने कुछ भी नहीं सीखा और जो एक अजीब जाहिल समाज में बड़ा हुआ था क्या उसने ऐसे शानदार साईंसी हकाईक अपने आप खोजे और कायम किए होंगे? बिल्कुल नहीं।फिर, ये मानना नामुमकिन है कि कुरआन अल करीम मुहम्मद अलैहिस्सलाम के ज़रिए लिखा गया।एक किताब जिसने चौदह सौ साल पहले आज के हकाईक का ऐलान किया था जिन्हें लंबे अरसे के बाद बहुत तकलीफ़ों के बाद हासिल किया गया वो सिर्फ़ अल्लाह तआला की किताब हो सकती है।इंसान के पास इतनी शानदार ताकत नहीं हो सकती।सिर्फ़ अल्लाह तआला इतनी ताकत रख सकता है।कोई भी जो ऊपर बताई गई हकाईक को ध्यान से पढ़ता है वो इस पर यकीन रखता है।जो इससे इंकार करता है वो शख्स बेहद थकाऊ, ज़िद्दी ओर जाहिल होगा।जैसे कि मुहम्मद अलैहिस्सलाम कुरआन अल करीम के पारे/ बाब की इत्तला दे रहे थे, आप सिर्फ़ उन कलाम को आगे पहुँचा रहे थे जो अल्लाह तआला के ज़रिए आप पर ज़ाहिर किए गए, और जैसे दूसरों ने इसे सीखा वैसे ही आपने किया।

अब हम दूसरी अलामत की तरफ़ आते हैं जो इस हकीकत को ज़ाहिर करती है कि कुरआन अल करीम वाकई में एक आला चमत्कार हैः इसकी फहरिस्त की तरतीब।

जब कुरआन अल करीम को कप्यूटर के साथ जांचा गया, जोकि आज की हाई -लेवल टेक्नोलोजी की जदीद आलात है, तो ये देखा गया कि ये नाकाबिले यकीन बहुत अच्छे रियाज़ी की बुनियाद पर कायम किया गया है। नतीजा बहुत नुमाया है। ये नतीजा सिर्फ़ अल्लाह तआला का एक चमत्कार है।

जो तर्जुबा किया गया है उसमें गहराई से घुसने से पहले, हम इस बात को पढ़ेंगे कि किस तरह कुरआन अल करीम नाज़िल हुआ, और अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से नजूल के दौरान क्या फरमाया। इसके लिए कुरआन अल करीम को तरतीब के साथ करना होगा। कुरआन अल करीम को जैसे आज तरतीब में है इस तरह नाज़िल नहीं किया गया था। सबसे पहले सूरह अलक नाज़िल हुई। पहले सूरह अलक की पाँच आयात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई। वह बयान करती है, **"ऐ मुहम्मद ! पढ़ो ! अपने मालिक और चेरिश्र, अल्लाह के नाम पर , जिसने हर चीज़ तख़लीक की।"** "आदमी को बनाया, **सिर्फ एक (केवल) खुन के लौथड़े से[अलक]ः "पढ़ो ,और तुम्हारा रब(अल्लाह) सबसे रहम वाला है," " वो जो सीखाता है (इस्तेमाल के साथ) कलम को," " आदमी को सीखाता है जिसे वह नहीं जानता।" (96-1,2,3,4,5)**

हम पहले ही इस बात को बता चुके हैं जो डर और खौफ़ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम ने अपनी पहली नजूल पर महसूस किया था। आपने कभी इस बारे में नहीं सोचा था कि अल्लाह तआला उनको एक नये मज़हब का ऐलान करने का बेहद आला और भारी काम देगा। बार बार ईसाई तोहमतों के बरअक्स, सूरह मुज़ममिल की शुरूआती पाचँ आयात से साफ़ है, **"ऐ तू (मुहम्मद), लिबास में जुड़ा!" " रात तक इबादत के लिए खड़े हो जाओ,लेकिन पूरी रात नहीं," "इसका आधा, या थोड़ा कम," "या थोड़ा ज़्यादाः और कुरआन हल्के पढ़ो, मापी हुई तिलावत," "जल्द ही हम तुम्हारे पास एक भारी काम भेजने वाले हैं जिसे उठाना मुश्किल होगा," (73-1,2,3,4,5)** इस बात की निशानदही करता है कि आप खुद नबी मुंतखिब नहीं हुए थे और वो ये कि आप नहीं जानते थे कि अल्लाहु तआला आपको एक आला काम सौपने वाले हैं और आप गैर यकीनी तौर पर एक भारी बोझ सहन करने वाले थे।

इस हकीकत में ये बात वाज़ेह है कि ये काम कितना मुश्किल था जैसे ही मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की तशरीह शुरू की वैसे ही आपको कई दुशमनो ने घेर लिया। आपकी सारी कोशिशों के बावजूद, इस्लाम के छठे साल तक [मदारिज और ज़्रकानी में दिए गये खाते के मुताबिक] उमर रज़िअल्लाहु अन्हा के मोमिनों के साथ शामिल होने के दिन तक ईमान वालों की तादाद 56 से ज़्यादा नहीं थी, 45 आदमी || औरतें। फिर भी एक बिल्कुल ईमानदार, पाक, और मुकम्मल शखसियत होने और जो आला अहमियत अल्लाह तआला ने आपको दी थी उसको पहचानते हुए, नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने सारे

खतरे और बड़ी मुश्किलो का सामना बड़ी दृढ़ता और पक्के इरादे के साथ किया, और इस काम को कामयाबी के साथ पूरा किया।

आइए एक बार फिर दोहराएं कि पूरी दुनिया अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त करती है, और सिर्फ़ कुछ बड़े पादरियों को छोड़ कर आपकी किसी ने तंकीद नहीं की। आइए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इस्लाम के बारे में एक मज़मून पढ़े, जो एक **kurschner** नाम के एनसाइकलोपिडिया में स्टुटगार्ट, जर्मनी में, **1305** [**1888** सी.ई] में छपा था। हमने इस एनसाइकलोपिडिया को अपने हवालात का ज़रिया इसलिए चुना क्योंकि इस ज़मरे के किताबें जब तक मुमकिन हो सच्चाई का पालन करती हैं। इस मामले में हमें जो खदशात हैं वो हैं हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अखलाकी खसूसियात और फज़ीलत पर उसका तबसरा। चूंकि यह उन ख्यालात को ज़ाहिर करता है जिसे पिछली सदी के ईसाई साईसदां इस्लामी मज़हब के बारे में उजागर करते थे, हमने पूरे तौर पर मंदरजाज़ेल मतन को दूसरे लफ़्ज़ो में बयान कर दिया हैः

"मुहम्मद अलैहिस्सलाम का रजिस्टर्ड नाम अबुल कासिम बिन अबदुल्लाह है। वो इस्लामी मज़हब के बानी थे। आपकी पैदाईश मक्का शहर में **571**, में **12** अप्रेल को हुई अपने बचपन से ही आप तिजारत में लगे हुए थे, कई सफ़र आपने किए (!) , लोगों के साथ तआल्लुक बनाया, और सीखने में एक संजीदा दिलचस्पी का इज़हार किया आपने हज़रत खदीजा से शादी की, जोकि एक अमीर ताजिर की जवान बेवा थीं, जिन्होने आपको अपने शौहर से विरासत में मिले हुए कारोबार की देखभाल के लिए रखा। **610** में आपको वही आई कि वो एक नबी हैं जिसे अल्लाह की तरफ़ से पैगाम मिलते हैं और बुत परस्त अरबों को एक एक अल्लाह का नज़रिया बताने के लिए अंथक मेहनत शरू करदी। मुहम्मद अलैहिस्सलाम अपने पूरे दिल से यकीन रखते थे कि अल्लाह तआला ने उन्हें ये फर्ज़ सौंपा है। हालांकि मक्का की अकसरियत आपके खिलाफ थी, उन्होने आपके विचारों को ज़ोरदार तरीके से खारिज कर दिया, और यहाँ तक कि आपको कत्ल करने की भी कोशिश की, आपने अपनी जद्दोजहद नहीं छोड़ी, और अपनी सरगरमी को जारी रखा। आखिरकार, जब आपके मुखालिफो के मज़ालिम बढ़ गए और आपके लिए उन्हें सहन करना नाकाबिले बरदाश्त हो गया तो आपने मक्का शहर छोड़ दिया और यथरब (मदीना) की तरफ़ हिजरत (हगीरा) कहते हैं और इस तारीख को अपने कैलेंडर की शुरूआत के तौर पर कबूल करते हैं। मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने मदीना में बहुत सारे हामियों को पाया। आप अरब के मज़हब बुत परस्ती को ठीक करना चाहते थे, और उन पर अल्लाह की वहदानियत साबित करना चाहते थे। मुहम्मद अलैहिस्सलाम के मुताबिक, नबी इब्राहिम (अब्राहम), मूसा (मोसिस), और ईसा (जिसस) अलैहिम- उस- सलाम के ज़रिए बताए गए मज़हबी ज़रूरयात सब एक जैसी थीं, और इनके ज़रिए सीखाए गए मज़हब सच्चे थे। बाद में, हालांकि, पिछले दो मज़हब में मदाखलत कर दी गई और वो वक्त के दौरान गल उसूलों और बिदअत की वजह से यहूदी

और ईसाई मज़हव में तवदील हो गए। मुहम्मद अलैहिस्सलाम सव को वता रहे थे कि सारे सावका मज़ाहिव एक दूसरे के सिलसिले में थे और इस्लाम उन सव मज़ाहिव की सवसे ज़्यादा पाक शक्ल है।

"इस्लाम का मतलव है 'अपने आपको पूरे तौर (अल्लाह की रज़ा) पर जमा कर देना। कुरआन अल करीम इस्लामी मज़हव की पाक किताव है। जवकि दूसरे मज़ाहिव की पाक कितावें जिनका ज़िक्र है वो सिर्फ़ रूहानी मामलात के लिए वनी हैं, कुरआन अल करीम में समाजी, मआशी और फिके दार तालीमात भी मौजूद हैं। इन तालीमात में ऐसे उसूल भी शामिल हैं जो लोग दूनियावी ज़िंदगी में मुशाहदा करते हैं, और यहाँ तक कि सिविल कॉड के कई उसुलों में भी। इसके अलावा, इसमें अहकामात भी शामिल हैं कि कैसे इवादत के कामों को अदा किया जाए, कैसे रोज़ा रखा जाए, और कैसे धोया जाए, साथ ही साथ मशवरह देते है कि दूसरे लोगो और दूसरे मज़ाहिव के वोंटो को हुसने सलूक किया जाना चाहिए। कुरआन अल करीम ने हुकूम दिया उन गैर-मुस्लिम सरकारों के खिलाफ़ जंग लड़ो जो ज़ल्म को कायम करते हैं। इसकी वुनियादी ज़रूरत एक अल्लाह की इवादत करना है। ये मज़हवी तसावीर और शविहों को ममनुअ करार देते हैं। यह शराव और सूअर को मना करता है। ये मुसा (मोसिस) और ईसा (जिसस) अलैहिमुस्सलाम को नवी के तौर पर कवूल करता है। फिर ये इन दो नवियों को आखिरी नवी मुहम्मद अलैहिस्सलाम से कमतर मानता है। [यह एक वाज़ेह हकीकत है। क्योंकि मुहम्मद अलैहिस्सलाम की खुसूसियत और फौकियत तोरह और इंजील (वाइवल) में लिखी हुई हैं, जिन्हें मूसा और ईसा अलैहिमुस्सलाम को हसवे तरतीव वता दिया गया था। मूसा और ईसा अलैहिमुस्सलाम इस हकीकत को जानते थे और इसलिए उन्होने दुआ की और इलतिजा की कि वे आपकी उम्मत (मुसलमानों) में शामिल हो जाएँ। ईसा अलैहिस्सलाम की दुआएँ कुवूल करलीं, और अल्लाह तआला ने उनको ज़िंदा अर्श पर उठा लिया। दुनिया के आखिर में वह ज़मीन पर वापस आएँगे और मुहम्मद अलैहिस्सलाम की शरीअत की तकलदि करेंगे और उसे फैलाएंगे।] ये अच्छी खवर है कि जो इस्लाम मज़हव को मानते हैं और उसके ऐहकामात के साथ ज़िंदगी वसर करते हैं वो जन्नत में जाएंगे, जहाँ उन्हें सारे दुनियावी सुख, दरिया,फल,रेशम से ढके हुए सोफ़े और जवान और खुवसूरत हूरें (जन्नत की वांदियाँ) अता की जाएंगी।

"मुहम्मद अलैहिस्सलाम वेहद खुवसूरत, दयालु , तमीज़दार, और निहायत ईमानदार थे। आप हमेशा गुस्से और चिड़चिड़ेपन को नज़रअंदाज़ करते थे, और कभी सताते नहीं थे। आप मुसलमानो से हमेशा अच्छे मिज़ाज और दोस्ती वाला वने रहने के लिए फरमाते थे, और फरमाते थे कि नर्मी और सव जन्नत के रास्ते से गुज़रते हैं। आप फरमाते थे कि सच्चाई ,रहम, गरीवो को ज़कात, खातिरदारी , और शफ़कत इस्लाम के ज़रूरी अजज़ा हैं। आप हमेशा इतमिनान से रहते थे, आपने मुसलमानो के वीच हर किस्म के तफ़रके को खारिज कर दिया, और हर मुसलमान को एक जैसी इज़्ज़त दिखाई। आपने कभी भी जवरन सहारा नहीं लिया,जव तक कि ये नागज़ीर न हो, आपने हर तरह की मुश्किलों को अमन, ढारस,

चेतावनी और वज़ाहत करके हल करने की कोशिश की जिसमें आप अक्सर कामयाब होते थे। [ अपनी पूरी ज़िंदगी आपने कभी किसी की न मुख़ालफ़त की और न नुक़सान पहुँचाया। आप कभी भी किसी अर्ज़ी के लिए "न" कहते नहीं सुने गए। अगर आपसे जो चीज़ के लिए पूछा जाता वो आपके पास होती थी तो आप दे दिया करते थे; अगर आपके पास चीज़ नही होती थी तो आपकी ख़ामोशी की मिठास पूरी तसल्ली के लिए काफ़ी होती थी। आप अल्लाह तआला के महवूव थे। आप सय्यैद थे, सभी माज़ी, हाल और मुस्तकविल के लोगो के मालिक। ]**630** में आप मक्का वापस लोटे, आसानी के साथ शहर पर फतह हासिल की, और थोड़े ही अरसे में नीम जंगली अरवों को दुनिया की सबसे तहज़ीव याफ़ता लोंगो में वदल दिया।

"इस्लाम मज़हव आदमियो को कई शादियाँ करने की इजाज़त देता है कि हर वीवी एक जैसे हुकूक का मज़ा ले। मुहम्मद अलैहिस्सलाम **632, 8** जून को वफ़ात पा गए थे।" ये kurschner एनसाइक्लोपिडिया में से हमारे तर्जुमे का खात्मा है।

मंदरजाज़ेल नतीजा एनसाइकलोपिडिया के इस मतन से निकाला जा सकता हैः अगरचे तारीखदाँ जिसने इस मतन को लिखा है ऐसा नहीं लगता के वो पूरे होश में इस बात को मानता है कि इस्लाम अल्लाह तआला का मज़हव है, वो मानता है कि ये मुकम्मल मज़हव है, जिसने इसे एक अल्लाह में यकीन दिलाया, और जिसने जगंली अरवों से एक तमीज़दार कौम बनाई, और वह खासतौर से हमारे नवी की तारीफ़ और ताज़ीम करता है। दरअसल, मुहम्मद अलैहिस्सलाम जिन्हें पूरी दुनिया सवसे ज़्यादा मुकम्मल इंसान मानती है, आपको अपनी आला ईमानदारी और भरोसेमंदी की वजह से आपके कट्टर दुश्मन भी आपको '**मुहम्मद- उल- अमीन**= मुहम्मद सवसे ज़्यादा अमानतदार' पुकारते थे। आप नामुनासिव हालात के बावजूद इस पाक काम को सरअंजाम देते थे। थोड़ी देर बाद ज़िवाईल अलैहिस्सलाम (आला फरिश्ते) सूरह अलक की बाकी **14** आयात आपके पास लेकर आए। मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने कुरआन अल करीम की इन आयात को जो आप पर नाज़िल की गई थी उन्हें मक्का के लोगो को सुनाना शरू कर दिया। और उनके सख्त तासूरात के बावजूद उन्हें सच्चे मज़हव की तरफ़ दावत दी। मक्का वाले आप पर हसंते थे और मज़ाक उड़ाते थे । जव भी वो आपको (इवादत करते हुए) नमाज़ अदा करते हुए देखते तो आपको उसी तरह देखते जैसे कि तुम किसी को छुपे हुए बुत की इवादत करते हुए किसी का एतराफ़ करो, और वो कहेगें, "तुम पागल हो गए हो!" फिर अल्लाह तआला ने आप पर सूरह कलम की पहली चार आयात उतारीं जिसके मआनी हैं, **"नून। पैन और (रिकॉर्ड) के ज़रिए जो (आदमी) ने लिखा,-" तुम अपने रव (अल्लाह) के फज़्ल से नही पागल हो।" "नहीं, यकीनन आपके लिए एक नाकस इनाम है," और तुम (खड़े हो) आला किरदार के मिआर पर कायम हो।"** (**68-1,2,3,4**)

फिर आयत-ए-करीमा को नाज़ील किया उनकी वहस को खारिज करने के लिए जिन्होने कहा कि कुरआन अल करीम अल्लाह का कलाम नहीं था वल्कि ये मुहम्मद

अलैहिस्सलाम के ज़रिए तैयार किया गया था। इसके लिए, सूरह इसरा की **88**वीं आयत का मआनी है, "कहोः कि अगर पूरी आलमियत और जिन्न इस कुरआन की तरह पैदा करने के लिए एक साथ इकट्ठे होते हैं[बयान में, खुबसूरत नज़म व ज़ब्त में, और अपने मआनी की तकमील में], वो इस तरह का पैदा नहीं कर सकते, चाहे अगर वो कितना ही एक दूसरे की कितनी ही मदद और साथ के साथ हिमायत करें।" (**17-88**)

नजम सूरत की तीसरी और चौथी आयत से वाज़ेह है, "**न ही वो** (मुहम्मद अलैहिस्सल्लाम) **कह सकते (कुछ) अपनी (खुद) की इच्छा**। [क्योंकि आपको तौहिद का ऐलान करने (अल्लाह की वहदानियत) का, शिर्क को खत्म करने का, और शरीअत फैलाने का हुकूम दिया गया]। "**यह आप पर वही उतारने से कम नहीं है**।" (**53-3,4**)।

सूरह कहफ़ की **110**वीं आयत का मआनी है, "**कह दो (उनसे)ः मैं तुम्हारी तरह एक आदमी हूँ, लेकिन वही मुझ पर आई है, कि तुम्हारा अल्लाह एक अल्लाह है**; उसके शख्स की कोई मिसाल नहीं है, न ही उसकी सिफ़ात के लिए कोई साझेदार है।] **जो भी अपने मालिक** (अल्लाह) **को हासिल करना चाहता है, उसे रास्तेबाज़ी के साथ काम करने दो, और अपने मालिक** (अल्लाह) **की इबादत करने में, किसी को उसका शरिक न ठहराएँ**।" (**18-110**)

आखिर में, सूरह मुद्दसिर को नीचे भेजा गया उनको यकीन दहानी कराने के लिए जो अभी इस हकीकत के लिए के कुरआन-अल- करीम अल्लाह तआला का कलाम है इसमें शकूक रखते थे।

इस सूरह की शुरू की आयात के मआनी हैंः "**ऐ (मुहम्मद) चादर में लिपटे हुए!**" "**उठो और उन्हें आगाह करदो**[ उन लोगों को जो यकीन नहीं रखते उन्हें अल्लाह के सख्त आज़ाब के बारे में बता दो]!" **और आपका मालिक तुम बढ़ाओ**।" "**और अपना दामन दाग़ से पाक रखो!**" **और तमाम नफ़रत खत्म हो गई**=( उन चीज़ो से परे रहो जो मैंने ममनुअ की हैं)!" "**न ही उम्मीद रखो ,देने में, किसी बढ़ोतरी में** (अपने खुद के लिए)=(कभी किसी को याद दहानी कराके शर्मिंदा मत करो कि तुमने उसके ऊपर क्या अहसानात किए हैं)!" "**लेकिन अपने मालिक के सबब के लिए सब्र रखो और अटल रहो!**" "आखिर में, जब सूर फूँका जाएगा," "**वह दिन होगा-उस दिन-एक मुश्किल का दिन होगा,- "जो बग़ैर ईमान के होंगे उनकी आसानी से दूर होगा**।" (**74-1** से **10** तक)

और उसकी **24**वीं आयात से आगे तक का मआनी है, "**फिर वह कहेगाः यह कुछ नहीं है बल्कि जादू है, पुराने से निकाला गया;" यह कुछ भी नहीं है बल्कि एक मौत के अल्फ़ाज़ हैं!" "जल्द ही मैं इसे दोज़ख की आग में डाल दूँगा" "और उन्हें क्या समझाया जाए कि दोज़ख की आग क्या है!" "न ही यह बरदाश्त करने की इजाज़त देता है, और न ही यह अकेले छोड़ता है**[जो इसमें दाखिल होते हैं]!" "**आदमी के रंग को सियाही में तबदील कर देता है!" "इसके ऊपर उन्नीसों हैं** [अज़ाब देने वाले फरिश्ते]!" "**और हमने किसी और को नहीं बल्कि फरिश्तों को आग के मुहाफिज़ के तौर पर तैनात किया है (ताकि**

**वो जो आग के मुस्तहिक है उन्हें अज़ाब दे सकें)।और हमने उनकी तादाद सिर्फ़ काफ़िरों की आज़माईश के लिए मुकर्रर की है,-** ताकि किताब के लोग [यहूदी और ईसाई देखें कि जो नम्बर उनकी किताब (तोरह और बाइबल) में दिए गए हैं वही नम्बर यहाँ दिए गए हैं नतीजे के तौर पर वे] [मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नबुव्वत और] **कुरआन के बारे में एक यकीन पर पहुँचे।** और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ा सकते **हैं,-और बिना शक** [इस तादाद की सच्चाई की शक्ल में] **अहले किताब और ईमान वालों के लिए छोड़ सकते हैं, और वो जिनके** दिलो में एक बीमारी हे और काफ़िर कह सकते हैं, अल्लाह इस अलामत से क्या इरादा रखते हैं [नम्बर उन्नीस]?" " **इस तरह अल्लाह जिसे चाहता है भटकने के लिए छोड़ देता है** [यानी,बुरे लोग] **और जिसे चाहता है उनकी रहनुमाई करता है,**[यानी अच्छे लोग]ः **और कोई भी अपने मालिक की ताकत को नहीं जान सकता,** [यानी दोज़ख के लोगों पर अज़ाब देने के लिए तखलीक किए गए फरिश्तों की तादाद,] **सिवाए उसके।** [ये उन्नीस फरिश्ते दूसरे फरिश्तो के सराबराह हैं]=" (**74-24** से **31** तक)

इस सूरह में उन्नीस नम्बर, उन लोगों को एक जवाब है जो इस हकीकत पर शक करते हैं कि कुरआन-अल-करीम अल्लाह का कलाम है, ऐसा तोरह में भी लिखा था।

इस्लामी मज़हब में किसी चीज़ की पाकी के लिए इस्लाम के चार ज़रियों में से किसी एक का होना ज़रूरी है जिसे **Edilla-i-शरीअ** कहते हैं। 'उन्नीस' और **786** नम्बर कभी भी मुकददस नहीं कहे गए।इसके मुताबिक, ये नम्बर पाक नहीं है।**बहाइयों** में, एक बिदअत उन्नीसवीं सदी के आखिर में मज़हब के नाम पर ज़ाहिर हुई और जो थोड़े ही वक्त में पूरी दुनिया में फैल गई, उन्नीस नम्बर को मुकददस जाना गया।उनके रोज़े की मुददत एक साल में उन्नीस दिन हैं।हर बहाई दूसरे उन्नीस बहाइयों को हर उन्नीसवें दिन को अपने घर दावत में बुलाता है।उनके मज़हबी मामलात के असेम्बली के इनचार्ज उन्नीस रूकन पर मुश्तमिल है।उनके पास सब है लेकिन उन्होने इस्लामी अकीदे छः ज़रूरी अकाईद को उन्नीस नम्बर से तबदील कर दिया है।वे अपने आपको मुस्लमान कहते हैं, और वे इस्लामी नामों का ज़िक भी करते हैं जैसे कि अल्लाह और कुरआन, फिर भी उनको इस्लाम से कुछ लेना देना नहीं है।वे इस्लाम के गुप्त दुश्मन हैं।

बिदअत का एक और ग्रुप है जो मुस्लिम नाम की पीछे छिपा है **कादियानी,** या **अहमदिया** के मानने वाले, जिसे भारत में **1298** [**1880** सी.ई] में अंग्रेज़ो ने कायम किया था।ये लोग अहमद कादियानी (डी.**1326**[**1908** सी.ई]),जोकि इस बिदअत का कठपुतली बानी था, वो एक नबी था, इतना ज़्यादा इसका दावा करते हैं कि हमारे नबी से भी ज़्यादा उसे फौकियत देते हैं।वे ईसा अलैहिस्सलाम को भी कमतर मानते हैं। सारी मुस्लिम रियास्तों ने इत्तेफ़ाक राये से ये फैसला किया कि कादियानी मुसलमान नहीं हैं।उन्होने ये फैसला अपनी किताबों में लिख दिया और पुरी दुनिया में ऐलान कर दिया।पाकिस्तान के एक कादियानी जिसका नाम अब्द-उस-सलाम है उसे भौतिक में नोबेल ईनाम मिला।कुछ लोगो

को इस वाक्या में ख़ुशी मिली कि एक मुसलमान को कामयावी मिली।इसके बरअकस, यह कामयावी बिल्कुल ऐसी ही जैसे रूसियों को चाँद के मिश्न के लिए इनाम दिया जाना।क्योंकि ये काफ़िर, जानवुझकर या अनजाने में कुरआन-अल-करीम में वताई गई अमाल के उसूलों की तकलीद करते हैं अपनी दुनियावी सरगरमियों में।अल्लाह तआला उन्हें दुनिया में अपना मकसद हासिल करने के लायक बनाता है।हाँ, ऐसे लोगो के ज़रिए कामयावियाँ मुसलमानों के लिए शर्मनाक हैं, हालांकि आलमियत के लिए फायदेमंद है।इन काफ़िरो की तरह, मुसलमानों को भी कुरआन-अल-करीम का पालन करना चाहिए, कड़ी मेहनत करनी चाहिए, साईंसी खोजों को आलमियत के लिए फायदेमंद बनाना चाहिए और पूरी दुनिया में साईंस में, यकीन में और अख्लाकियात में अपनी ज़ाती मिसालें कायम करनी चाहिए।

कुरआन-अल-करीम तीसरा चमत्कार भी रखता है।आइए इसे देखते हैं।

इस्लाम से पहले अरव एक रैगिस्तान था जिसमें नीम बर्वर बददू घूमते रहते थे।वे मूर्ति पूजा करते थे।वे इबतिदाई ज़िंदगी गुज़ारते थे।वे अपनी बेटियों को ज़िंदा जलाने की खतरनाक रस्म पर अमल करते थे।क्योंकि नामनिहाद तनासुल ने दुनिया के किसी भी अहम गुज़रगाह पर कब्ज़ा नहीं किया हुआ था, आलमी तौर पर जाने जाने वाले हमलाआवर जैसे कि अलेकजेंडर द ग्रेट, फारसियन और रोमन जो अपने रास्ते में खड़े होने वाले हर एक से लड़ते थे उन्हें अरवियों के बारे में पता नहीं था,फिर वे उनके साथ कैसे लड़ते।इसलिए अरवियों को ईरानियों और रोमियों के ज़रिस की जाने वाली गैर अख़लाकियात,मज़ालिमों, और शैतानियत का पता नहीं चला।उन्होने अपने दस्तूर और वाहिमी अश्खास को महफ़ूज़ रखा।वे नाकाफ़ी और दुखी, लकिन साफ़ और सादा कौम मुहम्मद अलैहिस्सलाम की कियादत और कुरआन-अल-करीम की रहनुमाई में जिसे आप उनके लिए लेकर आए थे, अचानक तबदील हो गई और तहज़ीव की ऊँचाई को पहुँच गई, और एक ग़ैरमामूली असर के साथ एक ताकतवर इस्लामी रियास्त में तुर्किस्तान और मश्रिक में भारत में अपनी सरहदों के अंदर, तीस साल के अरसे में कायम हो गई।उन्होने इल्म में, साईंस में और तहज़ीव को आला मकाम तक पहुँचाया,और उस वक्त तक अनजान हकाईक को खोजा।वे इल्म की शाखाओं जैसे कि साईंस,अदवियात और अदव में आला मकाम तक पहुँचे।जैसा कि हम पहले ही मतन में वता चुके हैं कि वे इल्म में इतने ज़्यादा तरक्की कर गए थे कि अंडालुसियन युनिवर्सिटियो ने भी पॉपस के लिए एक तालीम प्राप्त की थी, और दुनिया के दुसरे हिस्सों से लोग इस मुल्क की तरफ़ भागते थे ताकि यहाँ से अपना तालीमी हिस्सा हासिल कर सकें।मदंरजाज़ेल तवसरा **The Spritual Development of Europe** जान डब्लू डरेपर के दूसरे लफ़्ज़ों में बयान से लिया गया है जोकि एक ग़ैर जानिवदार तारीखदां थे जिन्होने यूरोप में उस ज़माने के बारे में लिखा हैः "उस वक्त के यूरोपीय लोग पूरे मआनी में वर्वर थे।ईसाई मज़हव उन्हें वर्वरता वचाने में कम सावित हुआ था।जो ईसाई मज़हव करने में नाकाम रहा उसे इस्लाम ने मुनज़म कर लिया।अरवों ने जो स्पेन में आये थे उन्हें पहले अपने आपको धोना सिखाया।फिर उन्होने उन्हें फटे हुए और

लटकी हुई जानवरों की खालों से आज़ाद कराया जिनसे वे अपने जिस्मों को ढंकते थे, और उन्हें साफ़ और सुदंर कपड़े पहनने को दिए।उन्होने घर,वीला और महलों को तामीर किया।उन्होने वहाँ के लोगों को तालीम दी।उन्होने युनिवर्सिटी कायम की।मज़हबी कट्टरता बढ़ी गहरी निशस्त की तरफ़ से जिसने ईसाई तारीखदानो को सच्चाई से रोका, और वे कभी भी अपने आपको इस बात पर मनवा पाएंगे कि जो यूरोपीय तम्दुन मुसलमानो की तरफ़ शुक्रगुज़ारी रखती है वे उसे कभी कुबूल नहीं करेगें।"

थॉमस कार्ली जो पूरी तरह से ऊपर कहे गए हकाईक को मजुंर करते हैं, कहते हैं, "एक बहादुर नबी जिसने अरबों की एक किताब के साथ रहनुमाई की जिसे वे अच्छी तरह समझ गए।तब इस्लामी मज़हब चमक गया।इसने भारत से ग्रेनाडा तक इतनी बड़ी ज़मीन को उजागर किया, और पूरी दुनिया को जो उस वक्त तक अंधेरे में थी उसे रोशन किया।"

ला मार्टिन ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कहाः " एक फिलास्फ़र एक मुबलिग़ ,एक नबी, एक कमांडर, एक शख्स जिसने इंसानी सोच पर जादू चलाया, जिसने नए उसूल रखे, और जिसने एक ज़बरदस्त इस्लामी रियास्त कायम की।यह शख्स मुहम्मद अलैहिस्सलाम है।लोगों की बड़ाई को जाँचने के लिए इस्तेमाल किए गए सभी किस्म के गेज़ो के साथ उन्हें मापें।क्या कोई आदमी आपसे बड़ा है? नामुमकिन !"

कुरआन-अल-करीम के बारे में गिब्बन की राये मंदरजाजेल हैः "...और कुरआन अल्लाह की वहदानियत के लिए एक शानदार गवाही है।"(**The Decline and Fall Of The Roman Empire,** गिब्बन; डेरो ए.सोनडर के ज़रिए की गई तरमीम,**1952**,बाब **16**, भाग **2**, सफ़ह.**6531**)

अमेरिका एक सितारा शनास माइकल एच हार्ट, जिसने आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हमारे वक्त तक के सारे आला लोगों के बारे में मुतालअ किया,और उनमें से एक सौ को चुना, और मुहम्मद अलैहि स्सलाम को एक सौ आला लोगो में से सबसे आला चुना।उसने देखा कि उनकी ताकत कुरआन-अल-करीम से शरू हुई है, जोकि एक बहुत ही शानदार शाहकार है जिसे वे मानते हैं कि अल्लाह तआला ने उनके दिल में डाला।"

एक मश्हूर माहिरे नफ़सियात, और यू.एस.ए में शिकागो युनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर, जेल्स मासर्मन ने पैश की अज़ीम लोगों की एक फहेरिस्त जो तारीख की तारीखों की रहनुमाई करती है इस उनवान के तहत **अज़ीम लीडर कहाँ है?** **15** जुलाई **1974** के, **टाईम** के खुसूसी एडीशन में, जहाँ उसने उनकी ज़िंदगियों का मुतालअ और तजज़िया किया, जिसमें उसने मुहम्मद अलैहिस्सलाम को सबसे अज़ीम चुना, और इख्तिमाम किया कि "मुहम्मद अलैहिस्सलाम के बाद मूसा(मोसिस) अलैहिस्सलाम हैं।जिस्स(ईसा अलैहिस्सलाम) और बुद्वा कियादत के लिए काफ़ी अच्छे लोग नहीं थे।"एक यहूदी आम तौर पर मुहम्मद अलैहिस्सलाम पर मूसा अलेहिस्सलाम को फौकियत देता है।इसके बावजूद उसने कट्टरता पर हकीकत को तरजीह दी।

ये दोबारा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे जो अमेरिका में हुए आम राये के इंतोखाब में अकसरियत वोटों से 'सारे वक्तों के सबसे अज़ीम आदमी' मुंतख्बि हुए।

यह ऐसा कुछ नहीं है जो एक आम आदमी, एक औसत रहनुमा या एक मामूली कमांडर बर्बर लोगों की एक छोटी भीड़ को सबसे बड़ा करने के लिए कर सकता है, सबसे ज़्यादा तहज़ीब याफ़ता, सबसे ज़्यादा पाक, सबसे ज़्यादा खुसूसियात, सबसे ज़्यादा बहादुर, सबसे ज़्यादा इल्म वाली दुनिया की कौम में बदल दिया। ये अल्लाह तआला के ज़रिए बनाया गया चमत्कार है, जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिए कुरआन-अल-करीम को अरबीयों तक भेजा और इन सब चीज़ो को पूरा किया। ये ग़ैरयकीनी अज़ीम नतीजा सिर्फ कुरआन-अल-करीम की तकलीद करने और कुरआन-अल-करीम के अहकामात की फरमाबरदारी करने के नतीजे के तौर पर आया।

क्या ये सब हकाईक जो हमने बयान किए और जो इसके मवाद की तरतीब में इलाही तरतीबात क्या तुम्हें नहीं दिखाते के कुरआन-अल-करीम दुनिया का अज़ीम चमत्कार है? जैसे के तुम कुरआन-अल-करीम के तीसरे चमत्कार को देखते हो कि इसने दुनिया को तहज़ीब की तरफ़ रहनुमाई सिर्फ़ थोड़े वक्त में ही करदी।

अहमद सेफ़दत पासा रहीमा हुल्लाहु तआला, एक अज़ीम तारीखदां, जो **1312** [**1894** सी.ई] में इस्तांबुल में रहलत फरमा गए, उन्होने मंदरजाज़ेल तरीके से इसे बयान किया अपनी किताब **कियास-ए-अनबीया** (नबियों की तारीख) में: "ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर उठाए जाने (हमारा मतलब यह नहीं है कि 'उठाया जाना' ईसाई अदब में ज़िक किया गया है। इस्लाम के मुताबिक ईसा (जिस्स) अलैहि सलाम को सलीब पर नहीं चढ़ाया गया। यहूदा | जुडा इस्करियोट उनके धौकेबाज़ को पकड़ा गया और सूली चढ़ाया गया। ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने ज़िंदा आसमान पर उठा लिया। यह हमारे उठाए जाने का मतलब है।) जाने के चालीस साल बाद रोमियों ने यरूशलेम पर हमला किया, कुछ यहुदियों को कत्ल किया और बाकियों को बदीं बना लिया। उन्होने यरूशलेम को कुचल दिया और बैत-उल-मुकददस, यानी मस्जिद-ए-अकसा (अल-अकसा) को ढहा दिया। यरूशलेम जंगल में तबदील हो गया। यहूदी उस नाश के बाद कभी नहीं उठे, न ही वे दोबारा एक हुकूमत को फिर से कायम कर पाए। वे मुख्तलीफ़ जगहों पर मुंतशिर हो गए, जहाँ वे नीचे ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। ईसा अलैहिस्सलाम तीस साल के थे जब उन्हें नब्बुव्वत का पैग़ाम मिला। बारह लोगों ने उन पर यकीन किया। इन लोगों को **हवारियून** (रसूल,या शार्गिद) कहा जाता है। जब उन्हें आसमान पर ज़िंदा उठा लिया गया, तो शार्गिद बीखर गए, हर एक मुखतलिफ़ जगह पर चला गया एक नया मज़हब फैलाने के लिए। कुछ वक्त बाद, बाईबल के नाम में किताबें लिखी गई। वे तारीख की किताबों की तरह थीं ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में बताती हुई। असली बाइबल (इंजील) कभी हासिल नहीं की गई कुफ्र और शिर्क हर तरफ़ फैल गया। ईसा अलैहिस्सलाम का मज़हब तीन सौ सालों तक छुपा रहा। जिन लोगों को इसमें ईमान रखते हुए देखा गया उन पर परेशानी डाली गई। रोमन बादशाह कोंसटेंटाइन ने इस

मज़हब को फ्री 310 में फ्री कर दिया, और खुद भी एक ईसाई बन गया। उसने इस्तंबुल का शहर बनाया और अपना तख्त रोम से इस्तंबुल ले गया। अलबत्ता/अगरचे, क्योंकि इस मज़हब की ज़रूरयात पहले से ही खराब और भुलाई जा चुकी थीं। यह पादरियों के हाथों में खेंलो की तरह तकसीम हो चुका था। ईसाई दौर के तीन सौ पिचयानवें [395] साल में रोमन सलतनत दो मुखतलिफ़ मज़हबी रियास्तो में तकसीम हो गई। जो रोम में पॉप के इताअत करने वाले रह गए वे **कैथोलिक** पुकारे गए, जबकि लोग जिन्होने अपने आपको इस्तंबुल में कुलपति से जोड़ा वे **ओरथडोक्स** कहलाए। गिरजाघरों को तसाविरों और शबीहात से भर दिया गया। दूसरी कौमें पहले से ही नासमझी और शिर्क में जी रही थीं। रोमन ने पूरे यूरोप, मिस्त्र, सीरिया और ईराक पर कब्ज़ा कर लिया था। वे साईंस में बहुत तरक्की कर चुके थे लेकिन अखलाकियात में नीचे थे। वे जुल्म और वहशीपने को अपना चुके थे। उन्होने अपनी ग़ैर अखलाकियात उन मुल्कों में फैला दीं जिन पर उन्होने कब्ज़ा किया। खुशकिस्मती उन्होने अरबी जज़ीरे पर हमला नहीं किया।

"इस दौरान में,अरब,अपनी जाहिल दुनिया में दाखिल रहे। उनमें से कुछ ने किसी तरह अपने आपको ईसाईयत में मलहूज़ रखा, कुछ यहूदी मज़हब पर अमल करते रहे, एक बड़ी तादाद बुतों की इबादत में लगी हुई थी, और बाकी अभी भी नबी इब्राहिम(अब्राहम) और इसमाईल(ईश्माईल) अलैहिम-अस-सलावातो व-त-तसलीमात के बाँटे हुए पुराने रीती रिवाज़ों से बचे हुए की तकलीद करते रहे। मक्का के ज़्यादातर रहने वाले बुत परस्त थे। काबा बुतों में और तशबीहों में ढका हुआ था। और पुरी दुनिया अंधेरे और बिदअत में थी। अरब साईंसी तौर पर फंसे हुए थे, वे खुसूसियात के साथ अदब से तअल्लुक रखते थे। उनके बीच में बलीग़ बोलने वाले और असरदार शायर थे। ज़्यादातर लोग अपनी शायराना महारत की डींगे मारा करते थे। महारत की तरफ़ आम रूजहान अल्लाह तआला की पाक किताब की निशानी थी जो जल्द ही ज़ाहिर हो गई थी।"अहमद सफ़दत पासा से हमारा तर्जुमा यहीं खत्म होता है।

कोई ताअजुब | हैरानगी नही कि अल्लाह तआला दूसरी दुनिया में उन लोगों पर शदीद आज़ाब डाले जो इन सारे सुबूतों के बावजूद जो इस हकीकत से थे कि कुरआन-अल-करीम अल्लाह तआला की सच्ची किताब है इससे इंकार करते थे। ईसाईयों के इस तर्क का कि "कुरआन-अल-करीम में पूरी तरह से ज़ालिम उसुल हैं "इसका मंदरजाज़ेल जवाब होना चोहिएः "नहीं कुरआन अल करीम में बहुत सारे मतन हैं जो बताते हैं कि अल्लाह तआला बहुत रहम वाला और माफ़ करने वाला है। अगर एक गुनहगार अपने गलत कामों की माफ़ी मांगे, तो अल्लाह तआला उसे माफ़ कर देता है। ताहम यह किसी भी तरह जुल्म नहीं होगा उन लोगों पर अज़ाब नाज़िल करना जो इतने सारे सबूत होने के बावजूद भी कुरआन-अल-करीम में यकीन न रखे।

एक सच्चा मुसलमान होने का मतलब है कि न सिर्फ़ रिवाज़ो का अमल करते में इबादत के कामो को सरेफररिस्त रखे, बल्कि खुबसूरत अखलाकी आदात भी हासिल करे,

अपनी समाजी फराईज़ का भी ध्यान रखे, और रूहानी तौर पर बिल्कुल खालिस हो। अगर कोई शख्स लगातार अपनी इबादत करता है लेकिन उसी वक्त धोकेबाज़ी को अकलमंदी के साथ जोड़ता है, लोगो को धोखा देता है, यहाँ तक कि कभी कभी शैतानी तौर पर नशरो इशाअत करता है और कत्ल करता है, और झूठ बोलता है, वो सच्चा मुसलमान नहीं हो सकता, चाहे वो ऐसा होना का दावा ही क्यों न करे। अल्लाह तआला ने कुरआन- अल-करीम की **फुरकान** सूरह में हुकूम दिया है कि एक मुसलमान को कैसा होना चाहिए। सच्चे इस्लामी आलिम जिन्हें अहल अस सुन्ना रहीमा हुमल्लाहु तआला कहा जाता है उन्होने बेशुमार किताबें लिखीं इस चीज़ की वाज़ेह करने के लिए लेकिन हम अभी भी बुरी आदतों से खुद को पाक नहीं कर सकते, कुरआन-अल-करीम जितना मेहनत से काम करने का हुकूम दिया है उतनी नहीं कर सकते, अल्लाह तआला के अहकामात की फरमाबरदारी नहीं करते, अपने वादो का पालन नहीं कर सकते, अपने सड़को को गंदगी और खंडहरों का ढेर बना सकते हैं, और अपने आपको जिस्मानी और रूहानी तौर से साफ़ नहीं कर सकते। यह वही है जो अल्लाह का कलाम **कुरआन अल करीम** की शक्ल में है, अपने साफ़ अहकामात, हिदायात और नुस्खे के साथ, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहकामात और अहल-अस-सुन्नत के अलिमों के ज़रिए लिखी गई बहुत सारी किताबें हैं।

अल्लाह तआला मंदरजाज़ेल ऐलान करता है, जैसा कि कुरआन-अल-करीम की सूरह फतेह की **28**वीं आयत से वाज़ेह हैः

**"यह अल्लाह तआला है जिसने अपने नबी को सच्चाई का मज़हब और रहनुमा इस्लाम भेजा, सारे मज़ाहिब पर दावा करने के लिएः और गवाही के लिए अल्लाह तआला काफ़ी है (इस हकीकत की जाँच करने के लिए) [मुहम्मद अलैहिस्सलाम हैं] (सच्चे नबी)" (48-28)**

साफ़ सूरह की नवीं आयत से वाज़ेह है, **"यह अल्लाह तआला है जिसने अपने नबी (मुहम्मद अलैहिस्सलाम) को कुरआन [जोकि रहनुमा है।] और इस्लाम [जोकि सच्चाई का मज़हब है] के साथ भेजा, ताकि आप** इसे पूरे मज़ाहिब पर दावा कर सके, चाहे **पापी इससे नफ़रत करते हो।" (61-9)** और अल्लाह तआला ने वादा किया हैः **"अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारी करने वालों को ईनाम देगा।"**

इस सयाहत में 'शुक्रगुज़ारी' के लफ्ज़ का मतलब है 'कुरआन-अल-करीम में खसूसी बताए गए लफ्ज़ के मुताबिक पूरे तौर पर एक मुसलमान होना, और रहमतों का इस्तेमाल करना जो उसने हमें अपनी हिदायत की इताअत में दिए हैं। हम इस मतन में पहले बता चुके हैं कि आज इस ज़मीन पर एक अरब से भी ज़्यादा मुसलमान हैं। जिसका मतलब है हर चौथा शख्स एक मुसलमान है। अगर ये मुसलमान अल्लाह तआला के हुकूम की पैरवी करें और रूहानी और जिस्मानी दोनो तरह से पूरे तौर पर साफ़ हो जाएं, एक दूसरे के साथ भाईचारे का राब्ता कायम करें, साथ काम करें और सारे मैदानों में तरक्की करें, तो अल्लाह

तआला उन्हें ईनाम देगा, और फिर मुसलमान दोबारा से वही कयादत तहज़ीब में हासिल कर सकता है जैसी नसफ़ सदी में पाई थी।

**तुम्हारी मोहब्बत ने मुझे बेनकाब किया;**
**ऐ मेरे अल्लाह, मुझे तुझसे मौहब्बत है!**
**तेरा प्यार वाकई में इतना मीठा है;**
**ऐ मेरे अल्लाह, मुझे तुझसे मौहब्बत है!**
**न ही मुझे दौलत खुश करती है,**
**न ही मुझे गरीबी की फिक है।**
**तेरा प्यार ही, अकेला, मुझे खुश करता है;**
**ऐ मेरे अल्लाह, मुझे तुझ से मौहब्बत है!**
**तुने हमें इबादत करने का हुकूम दिया,**
**और सीधे रास्ते पर चलने की सलाह दी;**
**लामतनाही रास्ते से मज़ा लेने के लिए तुम्हारी नएमतें हैं।**
**ऐ मेरे अल्लाह, मैं तुझसे मौहब्बत करता हूँ!**

**ये नफ़्स** इंसान की फितरत में एक खतरनाक ताकत है।यह हमेशा आदमी को अल्लाह तआला की तरफ़ से हटाने की कोशिश में लगी रहती है।यह सबसे ज़्यादा बेवकूफ़ है, क्योंकि इसकी सारी इच्छाएँ इसके लिए नुकसानदह हैं।दोबारा फिर यही खतरनाक ताकत है जो एक मुसलमान को उसके ऊपर काबू पाने का सबब बनती है कुछ फरिश्तों के ऊपर आला मरतबा हासिल करने के लिए।) **नफ़्स मेरी बहुत ग़द्दार है; बेचारा मैं, इसके साथ इतना लचकदार हूँ !**

**मैने असली खुशी पाई है, बहुत खुबसुरत ;**
**ऐ मेरे अल्लाह, मुझे तुझसे मौहब्बत है!**
**इबादत ठीक से कर रहे हैं,**
**और दुनिया की कमाई भी कर रहे हैं,**
**वही है जो मैं रोज़ाना और रात में करता हूँ।**
**ऐ मेरे अल्लाह, मैं तुझसे मोहब्बत करता हू!**

**प्यार सिर्फ लफ्ज़ नहीं हैं, ऐ हिलमी** इस हमद के लेखक, हुसैन हिलमी इश्कि एफ़ंदी, अपने आप से मुखातिब हैं।)

**तुम्हारा अल्लाह सख्त मेहनत करने का हुकूम देता है;**
**अपने आदाब को तुम गवाही देने दो!**
**ऐ मेरे अल्लाह, मैं तुझ से मौहब्बत करता हूँ!**
**इस्लाम के दुश्मन बहुत ज़्यादा हैं,**
**मज़हब को कपट से हमला करते हुए;**

**किस तरह कोई बेकार बैठ सकता है!**
**ऐ मेरे अल्लाह,मैं तुझसे मौहब्बत करता हूँ!**
**एक चाहने वाला बस सुस्त नहीं बैठेगा,**
**ऐसा न हो कि उसके प्यारे को थोड़ी चोट लगी हो।**
**दुश्मन को खामोश करो, और फिर ईमानदारी से कहोः**
**ऐ मेरे अल्लाह, मैं तुमसे मौहब्बत करता हूँ!**

**मुहम्मद अलैहिस्सलाम के मोअजिज़ात** मंदरजाजेल वाक्यात **मिरात-ए-काएनात** से वाजेह किए गए हैं। वह किताब मोआजिज़ात से वाबस्ता कई ज़राए का बताते हैं, ताहम हम ज़राए नहीं लिख रहे हैं। और हमने कई चमत्कारों को मुख्तसिर किया है।

वहाँ पर गवाहों की काफ़ी तादाद इस हकीकत को बताती है कि मुहम्मद अलैहिस्सलाम सच्चे नबी हैं। अल्लाह तआला ने उन्हें मंदरजाज़ेल गैर मामूली ताज़ीम से तारीफ़ कीः **"क्या यह तुम्हारे लिए नहीं था, (ऐ मेरे प्यारे नबी,) मैं कुछ भी तखलीक नहीं करता!"** सारी बशर न सिर्फ़ अल्लाह तआला की मौजुदगी और वहदानियत की ज़ाहिर करती है, बल्कि मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नब्बुव्वत और आला सिफ़ात को भी ज़ाहिर करता है। सारे मोआजिज़ात (जिन्हें करामत कहते हैं) जो ओलिया के ज़रिए आपकी उम्मत (मसलमानों) में वाक्य हुए, वे असल में आपके मोअजिज़ात (जिन्हें मोअजिज़ात कहते हैं, जैसे हमने पहले बताया था) हैं। करामात के लिए लोगों के ज़रिए नमूदार हुए जो आपकी तकलीद करते थे और आपके मुताबिक खुद को ढाल लिया था। दरअसल, सारे दूसरे नबी अलैहिम उस-सलवात व-त-तसलीमात आपकी उम्मत (मुसलमानों) के बीच होना इच्छा रखते थे,या, बल्कि, क्योंकि वे सब आपके नूर (रोश्नी,हाला) से तखलीक किए गए थे, तो उनके मोअजिज़ात भी ,मुहम्मद अलैहिस्सलाम के मोआजिज़ात कहे जा सकते हैं। इनाम बुसेरी [डी.**695** (**1295** सी.ई)मिस्त्र], के ज़रिए **कसीदा-ए-बरदा** इस हकीकत की खुबसूरत वज़ाहत है।

वक्त के साथ, मुहम्मद अलैहिस्सलाम के मोअजिज़ात तीन दरजों में तकसीम हुए हैंः

**पहले दरजे** में वे मोअजिज़ात हैं जो आपकी मुबारक रूह की तखलीक के साथ शरू हुए और आपकी **बिसात** के साथ खत्म हुए, (ये वो वक्त था जब अल्लाह तआला ने आपको अपने अपना नबी मुकर्रर किया, जिसे उसने आपको अपने फरिश्ते जिब्राईल अलैहिस्सलाम के ज़रिए आगाह किया)।

**दूसरा दरजा** उन पर मुश्तमिल है जो बिसात के वक्त के दौरान से आपको आखिरत तक हैं।

**तीसरे दरजे** में आपके वो मोअजिज़ात शामिल हैं जो आपके गुज़रने के बाद से, साथ ही साथ जो दुनिया के खात्मे तक रोनुमा होते रहेंगे।

पहले दरजे कें मोअजिज़ात को **इरहास,** यानी शुरू करने वाले कहा जाता है।हर दरजा दो तबकों में बंटा है।मोअजिज़ात जो दिखाई देते थे; और वो जो दिमाग़ी तौर पर माने जाते थे।ये सारे मोअजिज़ात इतने ज़्यादा थे के इनका हिसाब लगाना कभी भी मुमकिन नहीं हुआ।दुसरे दरजे में मोअजिज़ात तीन हज़ार के आस पास अंदाज़ा लगाए गए।हम उनमें से **86** को मंदरजाज़ेल पैराग्राफ़ों में सूचना देते हैं।

**1-** मुहम्मद अलैहिस्सलाम का सबसे बड़ा मोअजिज़ा कुरआन-अल-करीम है।सारे शायर और अदब के आदमी जो आज तक के हैं उन्होंने अपनी कमियाँ बताई और कुरआन अल करीम की बेलोस अव्वलियत दिखाई! वे इस लायक नहीं थे कि अदब के टुकड़े करके इसकी किसी एक आयात का मुनफ़रिद मिआर देखते हुए तकरीबन इसको दोबारा कर सकते।बलाग़त और बयानात कें मामले में, ये इंसानी ज़बान से मुख्तलिफ़ है।एक वाहिद ज़बानी इज़ाफ़ा या छटाई इसके लफ़्ज़ो की रचना और मआनी की खुबसूरती को खराब कर सकती है।इसके किसी एक लफ़्ज़ की रद्दोबदल भी बेकार होती है।इसका शायराना अंदाज़ उन अरबी शायरो में से किसी भी एक से मिलता हुआ नहीं है।ये माज़ी और हाल के बहुत सारे वाक्यात की इतलाअ देता है।जितना ज़्यादा तुम इसे पढोगे या इसे सुनोगे, उतना ही ज़्यादा जोश तुम उसे पढ़ने या सुनने में महसूस करोगे।हो सकता है आम तौर पर थके हुए हो सकते हो, लेकिन कभी बोरियत महसूस नहीं करोगे।ये एक हकीकत कायम होती है बेशुमार वाक्यात को तर्जुबा करते हुए कि इसको पढ़ना या सुनना इसको किसी को पढ़ते हुए तो ये उदासी का इलाज कर सकता है।इसके पढ़े जाने को सुनकर या किरअत को सुनकर सख्त खौफ़ या अचानक डर महसूस करना ये कोई नायाब वाक्यात नहीं हैं, और कुछ लोग इसके असर से मर भी सकते हैं।बहुत सारे नाकाबिले यकीन हद तक ग़ैर मामूली दिल मुलायम हो जाते हैं जब वे कुरआन-अल-करीम को पढ़ते हुए या किरअत करते हुए सनते हैं और उनका मालिक ईमान वाला बन जाता है।कुछ इस्लाम के दुश्मन, खास तौर से वे कपटी काफ़िर मुलहिद मुसलमानी नामों में छुपे हुए जैसे, एक ग्रुप जिसे मुअत्तला, मुलाहिदा और करामता कहते हैं उन्होनें कुरआन अल करीम का मुतबादिल, उसे खराब करने की और तबदीली लाने की कोशिश की, ताहम उनकी कोशिशे नापसंदी में खत्म हो गई।दुसरी तरफ़ तोरह और बाई-बल, मुसलसल तबदील हुई, और वे अब भी लोगों के ज़रिए तबदील की जा रही हैं।कुरआन अल करीम साईंसी हकाईक के बारे में सारी जानकारी रखता है, इन मे वो भी शामिल हैं जो तर्जुबात के ज़रिए हासिल नहीं की गई, खुबसूरत अखलाकी उसूल और तरीके जो एक शख्स को आला दरजात से लैस करते हैं, अच्छाई जो इस दुनिया में और आखिरात में भी खुशियाँ लेकर आएंगी, शुरू की मखलूक साथ ही साथ आखिरी वाली, और चीज़े जिन से आदमी फायदे उगाता है साथ ही साथ जो नुकसान पहुँचाएगें, और वे सारी चीज़े जो वाज़ेहतौर पर या अलामात के ज़रिए समझाई गई।और वहाँ वे लोग भी हैं जो अलामती बयानात को समझते हैं।कुरआन अल करीम तोरह, बाइबल और ज़बूर पाक किताब जिसे अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस्सलाम (डेविड) पर उतारा था।वो पाक किताब हिब्रू

ज़बान में थी।ईसाई इसे 'psalms' कहते हैं।) में शामिल सारे खुले हुए और छुपे हुए हकाईक का ठोस सुबूत है।अल्लाह तआला उन सब जानकारियों को जानता है जो कुरआन अल करीम में शामिल हैं।उसने उसमें से ज़्यादातर अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सुचित किया।अली और हुसैन रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि वह दोनो उस तालीम एक बड़े हिस्से को जानते हैं।कुरआन अल करीम को पढ़ना एक बहुत बड़ी नैमत है अल्लाह तआला ने यह नेमत अपने हबीब (महबूब,प्यारे, यानी मुहम्मद अलैहिस्सलाम ),(यानी, मुसलमानो पर) की उम्मत (लोगों) पर निछावर की है।फरिश्ते इस नेमत से महरूम हैं।इस वजह से, वे सब ऐसी जगहों पर जमा होते हैं जहाँ लोग कुरआन-अल-करीम पढ़ रहे होते हैं और उसे सुनते हैं।सारी तफ़सीर की किताबों ने कुरआन अल करीम में मौजूद जानकारी का सिर्फ एक छोटा सा ही हिस्सा वाज़ेह किया है।इंसाफ़ वाले दिन, मुहम्मद अलैहिस्सलाम एक मिबंर पर चढ़ेंगे और कुरआन अल करीम की तिलावत करेंगे।लोग जो आप को सुनेंगे वे इसे पूरी तरह समझ जाएँगे।

**2-** मुहम्मद अलैहिस्सलाम का सब से बड़ा और आलमगीर तौर पर जाना जाने वाला मौआजिज़ा चाँद को दो टुकड़ो में कर देने वाला है।कोई और दूसरा नबी इस मोआजिज़े से नवाज़ा नहीं गया।मुहम्मद अलहिस्सलाम **52** साल के थे।एक दिन मक्का में ,क़ुरैशी काफ़िरों के सरदार आपके पास आए और चुनौती दी, "अगर तुम नबी हो तो, चाँद को दो टुकड़ो में कर दो।" जोश महसूस करते हुए कि हर कोई, खासतौर से आपके दोस्त नातेदार और रिश्तेदार ईमान वालों में शामिल हो जाएंगे, मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने अपने हाथ उठाए और दुआ की।अल्लाह तआला ने आपकी दुआ कुबूल करली और चाँद को दो टुकड़ों में बाटं दिया।चाँद का एक हिस्सा एक पहाड़ पर, जबकि दुसरा आधा दूसरे पर नमूदार हुआ।काफ़िरों ने कहा, "मुहम्मद ने जादू किया,"और वे अपने इंकार पर लगे रहे।एक बंद मंदरजाज़ेल तौर पर पढ़ा जाएगाः

**जब कुत्ते चाँद को देखते हैं तो वे भोंकते हैं।**
**हम क्यों चाँद पर इल्ज़ाम लगाते हैं? सुनना!**
**तुम जानते हो, एक कुत्ता हमेशा भोंकता है!**

और एक शेर ः

**ज़ाएके का खान सेहत के खोने की अलमात है,**
**लज़ीज मश्रूब उस शख्स के लिए ज़ाएके**
**में कढ़के हैं जिसकी सेहत खराब है।**

**3-** कुछ मुकददस जंगो में, पानी की किल्ल्त के वक्त में,मुहम्मद अलैहिस्सलाम अपने मुबारक हाथों को एक बरतन में डाल देते थे, पानी आपकी उँगलियों के बीच से बहना शरू हो जाता था और बरतन मुसलसल पानी से लबाबत भर जाता था।जो लोग उस पानी का इस्तेमाल करते थे उनकी तादाद कभी **80**, कभी **300**, कभी **1500** मिसाल के तौर पर तबूक की

मुक़द्दस जंग में, **7000** ,और उनके जानवरो की तादाद हटा कर। आपके बरतन से हाथ बाहर निकालने के बाद पानी का गिरना रूक जाता था।

**4-** एक दिन आपने अपने चाचा और उनके बच्चों से अपने पास बैठने के लिए कहा। फिर आपने उन्हें ऐहराम हमवार लिबास जो मुसलमान ज़ाएरीन मक्का में पहनते हैं। बराएमेहरबानी **सआदत-ए-अबदीया** के सातवें बाब के पाँचवे गुंचे को देखिए। ) के साथ ढक दिया और दुआ फरमाई, "**या रब्बी**(ऐ मेरे अल्लाह)**! मेरे ये चाचा और मेरे** बाप के भाई हैं। और ये लोग मेरे **अहल-ए-बैत** हैं। **इन्हें ढक ले और दौज़ख की आग से बचा ले, जैसे कि मैनें इन्हें इस कंबल के साथ ढका।**" एक आवाज़ जो लग रही थी कि दिवारों से आ रही है, उसने तीन बार, "आमीन" कहा।

**5-** एक दिन,जब कुछ लोगों ने आप से एक मौआजिज़ा करने को कहा,आपने दूरी पर एक पेड़ को पुकारा, उसे ये कहते हुए कि आपके पीछे वो आए। पेड़ ने अपने आप को उखाड़ा, आपके पास आया,अपनी जड़ों के साथ जो उसके पीछे आ रही थीं, आपके सामने आया, आपको सलाम किया,(यानी,कहा, "अस्सलामु अलैकुम,") और कहा, "**अश्हदो अन ला इलाहा इल-ल-अल्लाह, व अश्हदो अनना मुहम्मदन अबदहो व रसूलुल्लाह,**") (जिसका मतलब है, "मैं ईमान रखता हूँ और गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला मौजूद है और वाहिद है। और दोबारा, मैं ईमान रखता हूँ और गवाही देता हैं कि मुहम्मद अलैहिस्स्लाम आपके पैदा हुए बंदे और नबी हैं") फिर वह अपनी जगह वापिस चला गया और दोबारा खड़ा हो गया।

**6-** खैबर की पाक जंग के दौरान, जब उन्होने आपके सामने मेज़ पर ज़हरीली गौश्त के कबाब रखे तो,एक अवाज़ ये कहते हुए सुनाई दी, "या रसूलुल्लाह ऐ(अल्लाह के नबी)! मुझे मत खाइए। मुझ में ज़हर मिला है।"

**7-**एक दिन आपने एक आदमी से जिसके हाथ में एक बुत था कहा, "**क्या तुम एक ईमान वाले बन जाओगे अगर ये बुत मुझ से बात करले?**" आदमी ने दिफाअ किया, "मैं इसकी पचास सालों से पुजा करता आ रहा हूँ, और इसने मुझ से कभी एक लफ़्ज़ भी नहीं कहा। यह किस तरह अब तुम से बात कर सकता है?" जब मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने फरमाया, "**ऐ बुत तू! मैं कौन हूँ?**" एक आवाज़ यह कहते हुए सुनाई दी, "आप अल्लाह के नबी हैं।" इस पर बुत के मालिक ने ईमान वालों में शिरकत कर ली ।

**8-** मदीना में मस्जिद-ए-नबवी (नबी की मस्जिद) में एक खजूर की स्टंप थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब खुत्बा (तकरीर कहा जाता है) दिया करते थे तो उस स्टंप पर बेट जाते थे। उस स्टंप को हननाना कहा जाता था। जब एक मिबंर(मस्जिद में मंच) बनाया गया, तो आप उस स्टंप पर बेटने नहीं गए। पूरी जमाअत ने उसके अंदर से रोने की आवाज़ को आते हुए सुना। मुबारक नबी ने मिंबर को छोड़ा और हननाना को गले लगा लिया। अब वह नहीं रो रही थी। सारी आलमियत से अफ़ज़ल सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम ने वाज़ेह किया, "अगर मैं इसे गले नहीं लगाता तो, मुझ से अलैहदगी इसे दुनिया के खात्में तक रूलाती रहती।

इसी तरह दूसरे और मौआजिज़ात देखे गए और खबर दिए गए।

**9-** एक दूसरा अकसर देखा गया वाक्या था आपके हाथ में बजरी या खाने के टुकड़ो का अल्लाह तआला की तसबीह कहना शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट की तरह। (यानी, वो कहेंगी, " सुब्हानअल्लाह," जिसका मतलब है, " मैं अल्लाह तआला को हर किस्म की गलती से दूर जानता हूँ।")

**10-** एक दिन एक काफ़िर आपके पास आया और बोला, "मुझे कैसे पता लगेगा कि आप एक नबी हैं?" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, **"क्या तुम मुझ पर यकीन करोगे अगर मैं उस खजूर पर खजूरों के गुच्छे को(मेरी इताअत करो) अपने पास बुलाऊँ?"** काफ़िर ने जवाब दिया कि हाँ। जब अल्लाह के नबी ने बोला खजूरों का गुच्छा उछलता हुआ आ गया। जब अल्लाह के नबी ने हुकूम दिया, **"अपनी जगह वापस चले जाओ,"** पूरा गुच्छा अपनी जगह वापस चला गया,जिस तरह पहले लटका हुआ था उसी तरह लटक गया। यह देखने के बाद, काफ़िर ईमान वाला बन गया।

**11-** मक्का में भेड़ियों के एक झुंड ने एक भेड़ के झुंड पर हमला कर दिया और उनमें से एक भेड़ को खींच कर ले गए। जब चरवाहे ने उन पर वार किया और भेड़ को वापस पकड़ना चाहा, उनमें से एक भेड़िए ने बोलना शुरू कर दिया, शिकायत करने लगा, "क्या तुम अल्लाह तआला से नहीं डरते, कि तुम हमें हमारे खाने से महरूम कर रहे हो, जिसे अल्लाह तआला ने हमारे लिए भेजा है?" हैरानकुन, चरवाहे मे बुदबुदाया, "ओह एक भेड़िया बोल रहा है!" भेड़िया आगे बोला, "क्या मैं तुम्हें कुछ ऐसा बता दूँ जो इससे भी ज़्यादा हैरानकुन है? मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, अल्लाह तआला के नबी, मदीना में मौआजिज़ात दिखा रहे हैं।" चरवाहा रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुँचा, जो हुआ था वो बताया, और एक मुसलमान बन गया।

**12-** मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक मैदान में घुम रहे थे, जब आपको एक आवाज़ ये कहते हुए सुनाई दी, " तीन बार, "या रसूलुल्लाह (ऐ अल्लाह के नबी)। आप उस सिमत मुड़े जहाँ से आवाज़ आ रही थी, अपने देखा एक हिरनी बंधी पड़ी है, उसके बराबर मे एक आदमी सो रहा है। आपने हिरनी से पूछा वो क्या चाहती है। कमज़ोर आवाज़ में हिरनी ने कहा, " यह शिकारी मुझे पकड़ लाया।" वहाँ उस पहाड़ी पर मेरे दो दूध पीते बच्चे हैं।" बराएमेहरबानी मुझे जाने दें! मैं जाऊँगी और उन्हें दूध पीलाऊँगी, और वापस आ जाऊँगी।" नबी अलैहि सलाम ने पूछा, **"क्या तुम अपना वादा रखोगी और वापस आ जाओगी?"** हिरनी ने ज़मानत दी, " मैं अल्लाह तआला के नाम से वादा करती हूँ कि मैं वापस आऊँगी। अगर मैं नहीं आई, तब अल्लाह तआला का अज़ाब मुझ पर हो!" अल्लाह के नबी ने हिरनी को खोल दिया। वह भाग गई, कुछ वक्त बाद वह वापस आ गई। अल्लाह के नबी ने दोबारा उसे बाँध दिया। जब आदमी उठा और पूछा "ऐ अल्लाह के नबी! क्या

ऐसा कुछ है जो आप मुझे करने का हुकूम देना चाहते हैं?" नबी ने फरमाया, **"इस हिरनी को आज़ाद करदो!"** हिरनी बहुत खुश हुई कि उसने ज़मीन पर अपने दो पैर को पटका, और कहा, **"अश्हदो अन ला-इलाहा इल-ल-अल्लाह व अन्नाका रसूलुल्लाह** ( मैं ईमान रखती हूँ और गवाही देती हूँ कि अल्लाह मौजूद है और वे वाहिद है और आप उसके नबी हैं )," और उछल कर चली गई।

**13-** एक दिन आपने एक गाँव वाले को ईमान लाने के लिए बुलाया। गाँव वाले ने दिफ़ाअ किया, " मेरा एक मुसलमान पड़ोसी है। मैं आप पर ईमान ले आऊँगा अगर आप उसकी मरी हुई बेटी को ज़िंदा करदें। वे लड़की की कब्र पर गए, जहाँ रसूलुल्लाह ने उस लड़की का नाम ज़ोर से पुकारा। कब्र में से एक आवाज़ ने जवाब दिया, और वह बाहर आ गई। "अल्लाह के नबी ने उससे सवाल किया, **"क्या तुम दुनिया में वापस आना चाहती हो"** लड़की ने जवाब दिया, "या रसूलुल्लाह! मैं दुनिया में वापस नहीं जाना चाहती। मैं अपने बाप के घर में वापस जाने की बनिस्बत यहाँ पर ज़्यादा आराम में हूँ। एक मुसलमान दुनिया से आखिरत में बेहतर होता है। जब गाँव वाले ने यह देखा तो वह ईमान वालों में शामिल हो गया।

**14-** जाबिर बिन अबदुल्लाह रज़ी अल्लाहु अन्ह ने एक भेड़ पकाया। (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा यानी मुसलमान जिसने अल्लाह के नबी को जब आप हयात थे कम से कम एक बार देखा, या बात की उन्हे एक सहाबी कहते हैं। सहाबा या अस-हाब-ए-किराम का मतलब है सहाबी, यानी अल्लाह के नबी के साथी। ) ने उसे खा लिया। **"हड्डियाँ मत तोड़ना,"** पाक नबी ने हुकूम दिया। आपने हड्डियाँ एक साथ जमा कीं,उन पर अपना मुबारक हाथ रखा और दुआ की। अल्लाह तआला ने भेड़ को ज़िंदा कर दिया।

**15-** एक बच्चा रसूलुल्लाह के पास लाया गया। वह बोलता नहीं था जबकि वह काफ़ी बड़ा था। **" मैं कौन हूँ?"** नबी ने पूछा। बच्चे ने जवाब दिया, "आप अल्लाह के नबी हैं। " उसके बाद से उसने बोलना शुरू कर दिया और मरते दम तक अपनी बोली नहीं खोई।

**16-** कोई अनजाने में एक साँप के अंडो पर चढ़ गया और पूरे तौर पर अपनी रोश्नी खो बैठा। वे उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लाए। जब आपने अपना मुबारक थूक आदमी की आँखो पर रखा, तो वह दोबारा देखने लगा। दरहकीकत, वह अस्सी साल का था जब भी वह सूई में धागा पिरो सकता था।

**17-** मुहम्मद बिन खतीब से रिवायत हैः "मैं छोटा था। गर्म पानी मेरे ऊपर गिर गया, मेरा जिस्म सख्त जल गया। मेरे वालिद मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास ले गए। नबी ने अपना मुबारक थूक मेरे जिस्म के जले हुए हिस्सों पर लगाया और दुआ की। मैं फौरन ही ठीक हो गया। "

**18-** एक औरत अपने गंजे बेटे के साथ आई। अल्लाह के नबी ने अपना मुबारक हाथ लड़के के सिर पर रगड़ा। उसने शिफ़ा पाई। उसके बाल उगने शुरू हो गए।

**19-** एक खबर के मुताबिक जो सुनान की दो मुखतलिफ़ किताबों में तिरमज़ी और नसाई के ज़रिए लिखी गई हैं, एक दिन दोनो आँखो से अंधा एक आदमी आपके पास आया और मिन्नत करने लगा, " या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ! बराएमेहरबानी अल्लाह तआला से दुआ करिए ताकि मैं दोबारा देख सकूँ।"अल्लाह के नबी ने उसे मंदरजाज़ेल नुस्खा बताया: "बग़ैर गलती के वुज़ू करो! और फिर इस तरह दुआ मांगो: **या रब्बी (ऐ मेरे अल्लाह)! मैं तुझ से माफ़ी चाहता हूँ। मैं तेरे महबूब नबी मुहम्मद अलैहिस्सलाम की शफ़ाअत के ज़रिए तुझ से मांगता हूँ। ऐ मेरे प्यारे नबी मुहम्मद अलैहिस्सलाम! मैं आपके ज़रिए अपने रब से माफ़ी माँगता हूँ। मैं उससे मांगता हूँ कि आपकी खातिर मुझे दे। या रब्बी! इस बुलंद नबी को मेरी शफ़ाअत करने वाला बना! उनकी खातिर, मेरी दुआ कुबूल फरमा!"** आदमी ने वुज़ू किया और दुआ कही। उसकी आँखे फौरन खुल गई। मुस्लिम यह दुआ हमेशा पढ़ते हैं और अपना मकसद हासिल करते हैं।

**20-** एक दिन अल्लाह के नबी और (आपके चाचा) अबू तालिब एक सहरा में एक ट्रेक बना रहे थे। अबू तालिब ने कहा वह बहुत प्यासे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपने जानवर पर से उतरे और फरमाया, "**क्या आप** (प्यासे हैं)?" जब आपने ज़मीन पर अपनी मुबारक एड़ी से ज़रब मारी, तो पानी उबल पड़ा। आपने फरमाया, **"चाचा, इस पानी से पी लो!"**

**21-** हुदेबिया की पाक जंग के दौरान वे एक सूखे कुएँ के पास खेमाज़न हुए। सिपाहियों ने पानी की कमी की शिकायत की। अल्लाह के नबी ने एक बालटी पानी के लिए कहा। आपने बालटी के अंदर पानी से वुज़ू किया, और फिर उसके अदंर थूक दिया, और फिर उसके अदंर के पानी को कुएँ में डाल दिया। फिर आपने एक तीर उठाया और इसे कुएँ में फैंक दिया। इस पर देखा गया कि कुएँ में पानी भर गया था।

**22-** एक दूसरी पाक जंग में सिपाहियों ने शिकायत की उनके पास ज़्यादा पानी नहीं है। नबी अलैहिस्सलाम ने दो सिपाहियों को पानी देखने के लिए भेजा। वे एक औरत के साथ वापस आए जो एक ऊँटनी पर सवार थी। उसके पास दो किरबास पानी की थीं। (एक किरबा चमड़े का बरतन होता है जो पहले ताज़ा पानी ले के चलने के काम आता था।)नबी अलैहिस्सलाम ने उस औरत से थोड़ा पानी माँगा। आपने वो पानी जो उसने दिया उसे एक बरतन में डाल दिया। पूरी फौज ने उस बरतन के पानी को इस्तेमाल किया। सिपाहियों ने एक कतार बनाई, उन्होने अपने खुद के बरतन और तुलमों (बकरी की खाल की बोतलों) में पानी भरा। बदले में, उन्होने औरत को कुछ खजुरें दीं और उसकी तुलमों को भी भर दिया। नबी अलैहिस्सलाम ने उससे फरमाया, **"हमने तुम्हारे पानी की मीकदार को नहीं घटाया। यह अल्लाह तआला है जिसने हमें पानी दिया है।"**

**23-** आप मदीना में (तकरीर जिसे कहा जाता है) खुतबा दे रहे थे, जब किसी ने कहा, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! हमारे बच्चे, जानवर और खेत सूखे से मारे जा रहे हैं। बराएमेहरबानी हमारे बचाओ को आइए! "नबी ने अपना मुबारक हाथ उठाया

और अपनी दुआ पढ़ी। यह बग़ैर बादल वाला दिन था, फिर भी आपने अपने मुबारक हाथों को सख्ती से अपने चेहरे पर रगड़ा उस वक्त बादलों ने पूरे आसमान को ढक लिया। उस वक्त बारिश होने लगी। कई दिनों तक लगातार बारिश होती रही। आप मिंबर पर वाज़ कर रहे थे, जब, दोबारा उसी शख्स ने शिकायत की, "या रसूलुल्लाह! हम इस बारिश से मारे जा रहे हैं।" इस पर रसूल अलैहिस्सलाम ने अपनी मामूल की मुस्कुराहट दी, और दुआ फरमाई, **"या रब्बी! अपने दूसरों बदों पर भी इसी तरह रहम कर!"** बादल छट गए और सूरज चमकने लगा।

**24-** जाबिर बिन अबदुल्लाह रज़ीअल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत हैः मैं बुरी तरह से कर्ज़ में था। मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इस बारे में बताया। आप मेरे घर के सहन मे आए और खजूर के ढेर के चारों तरफ़ चलते हुए, तीन चक्कर लगाए। फिर आपने हुकूम दिया, **"यहाँ आने के लिए अपने लेनदारों को बोली लगाएं ।"** हर लेनदार को उसका हिस्सा दे दिया गया, और वहाँ खजूर के ढेर में कोई कमी नहीं हुई।

**25-** एक औरत ने तौहफ़े के तौर पर कुछ शहद भेजा। नबी अलैहिस्सलाम ने शहद कुबूल कर लिया, और खाली बरतन भेज दिया। कुछ समय बाद बरतन दोबारा शहद से भरकार वापस आ गया। इस बार औरत खुद वहाँ आई थी। उसने कहा, 'ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! आपने मेरा तौहफ़ा कुबूल क्यों नहीं किया? मैने कौन सा गुनाह सरज़द किया?" मुबारक नबी ने फरमाया, "हमने तुम्हारा तौहफ़ा कुबुल किया था। जो शहद तुमने देखा वो बरकत थी जिसे अल्लाह तआला ने तुम्हारे तौहफ़े के बदले में तुम्हें दिया।" औरत और उसके बच्चों ने शहद कई महीनों तक खाया। वो कभी कम नहीं हुआ। एक दिन उन्होने शहद को बेख्याली में दुसरे बरतन में डाल दिया। जब उन्होने उस बरतन में से इसे खाया, तो शहद जल्द ही खत्म हो गया। जब उन्होने इस वाक्ये की खबर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बताई, तो आपने फरमाया, **अगर शहद उस बरतन में रहता जिसे मैने वापस भेजा था, तो शहद में कोई कमी नहीं होती चाहे अगर उसे दुनिया के खात्मे तक खाते।"**

**26-** अबू हुरैरा से रिवायत हैः मैं अल्लाह के नबी के पास कुछ खजूरों के साथ गया आपसे उनपर अपनी मुबारक दुआ करने को कहा। आपने दुआ की ताकि उसमें बरकत हो, और मुझे खबरदार किया, **"ये ले लो और इन्हें अपने बरतन में रख लो। जब कभी तुम्हें खजूरों की ज़रूरत पड़े, उन्हें अपने हाथ से उठाना। कभी उन्हें डालने की कोशिश मत करना वरना वें चारों तरफ भिखर जाएँगी।"** मैं हमेशा ख़जूर वाले उस बैग को दिन और रात अपने साथ रखता था, और उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हा के वक्त तक मैने उन्हें खाया। वे इतनी ज़्यादा थीं कि जो लोग मुख्तलिफ़ मौकों पर मेरे साथ होते थे तो वे बहुत खजूरें खाते थें, और मैं मुट्ठी भर खजूरें ज़कात के तौर पर देता था। जिस दिन उसमान रज़ी अल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया तो खजूरों के साथ वाला बैग़ भी गायब हो गया।

**27-** रसूलुल्लाह सल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, सुलेमान (सोलोमन) अलैहिस्सलाम की तरह, हर किस्म की जानवर की ज़बान को समझते थे। जानवर अकसर आपके पास आते थे अपने मालिकों या दूसरे लोगों की शिकायतें करते थे। इस किस्म के वाक्यात दूसरों के ज़रिए कई बार देखे गए। हर बार एक जानवर आपके पास आता था, तो अल्लाह के नबी असहाब-ए-किराम (आपके साथी) को इसके बारे में वाज़ेह करते थे। हुनेन की पाक जंग के दौरान, आपने सफ़ेद खच्चर जिसका नाम दुलदुल था जिसकी आप सवारी कर रहे थे, उससे आपने कहाः **"नीचे बैठ जाओ"** जब दुलदुल हुकूम के साथ घुटनों के बल बैठ गया, अपने मुट्ठी भर रेत उठाई ज़मीन पर से और काफ़िरों पर फैला दी।

**28-**अल्लाह के नबी सल्लााहु तआला अलैहि वसल्लम के दूसरे सात अक्सर देखे गए मोअजिज़ा है आपका अनजान के बारे में जानकारी देना। इन मौआजिज़ात के तीन मुख़तलिफ़ ग्रुप हैंः मौआजिज़ात के पहले ग्रुप में वे सवालात मुश्तमिल थे जो आपके वक्त से पहले के वाक्यात के बारे में पूछे जाते थे। इन सवालात के जो जवाब आप देते थे वो कई काफ़िरों और संगादिल दुश्मनों को इस्लाम कुबूल करने का सबब बनते थे। दुसरे ग्रुप में आपके वो मौअजिज़ात हैं जिसमे आपने अपने वक्त के साथ के साथ आने वाले वक्त में होने वाले वाक्यात के बारे में जानकारी दी है।

तीसरे ग्रुप में उन वाक्यात के बारे में आपकी पैशनगोइयाँ हैं जो कयामत के दिन तक और जो कयामत के बाद में रोनुमा होंगीं। हम दूसरे ओर तीसरे ग्रुप में उन मौअजिज़ात में से कुछ के बारे में बताएंगे।

[इस्लाम की दावत के शुरू के सालों में असहाब-ए-किराम अबीसीनिया (इथियोपिया) हिजरत कर गए क्योंकि कााफ़िरों के ज़रिए ज़ुलमों का बढ़ावा हो रहा था। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबी जो आपके साथ मक्का में तीन साल के लिए कई पाबंदियों के तहत जो उन्हें कई किस्म की समाजी कारवाईयों से महरूम रखती थीं; इतना ज़्यादा कि उन्हें सिवाए अपने मुस्लिम शरीक मज़हब के किसी और से मिलने, बात करने या तिजारत करने की इजाज़त नहीं थी। कुरैश के काफ़िरों ने तिजारती रूकावट का एक पेराग्राफ यकजेहती मुहाएदा लिखकर काबा-ए-मोअज़म पर लटका दिया। अल्लाह तआला, कादिर मुत्तलक, ने उस तहरीरी दस्तावेज़ के ऊपर एक **अर्ज़ा** नाम का कीड़ा सेट कर दिया। उस छोटे कीड़े ने पूरा दस्तावेज़ खा लिया सिर्फ़ वो हिस्सा छोड़ दिया जिसमें **बिसमिकल्लाहहुम्मा** =अल्लाह तआला के नाम में लिखा हुआ था। अल्लाह तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस वाक्ए के बारे में जिब्राईल-ए-अमीन (जिब्राईल भरोसेमंद) के ज़रिए आगाह कर दिया था। और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने, अपनी बारी में बताया। अगले दिन अबू तालिब काफ़िरों के बड़े लोगों के पास गए और जो मुबारक नबी ने उनसे कहा था वे उन्हें बताया, मज़ीद ये बताते हुए कि मुहम्मद के रब (अल्लाह) ने उन्हें ऐसा बताया है। अगर उनका इलज़ाम सही साबित हुआ, तब उसी तिजारती रूकावट को उठा दो और उन्हें पहले की तरह पाने और दूसरे लोगो को मिलने से

न रोकें। अगर यह सच नहीं हुआ, तो मैं उनका बचाव बिल्कुल भी नहीं करूँगा।" कुरैश के बड़ों ने इस मश्वरे को मान लिया। वो एक साथ जमा हुए और काबा चले गए। उन्होने वो तहरीरी मुआहिदा उतारा, उसे खोला, और जैसा रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने फरमाया था वैसे ही देखा, सारी तहरीर खाई जा चुकी थी, और सिर्फ **बिसमिकल्लाहहुम्मा** का इज़हार अनछुआ था।]

फारस के शहनशाह ,हुस्रव ने मदीना में सफ़ीरों को भेजा। एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें बुलाया और जब वे आए, तो आपने उनसे फरमाया, **"आज रात तुम्हारा कैसर अपने बेटे के ज़रिए क़त्ल कर दिया जएगा।"** कुछ वक्त बाद सूचना बरामद हुई के कैसर अपने बेटे के ज़रिए क़त्ल कर दिया गया। [इरानी शाहों को कैसर कहा जाता है!]

**29-**एक दिन आपने अपनी बीवी हफ़ज़ा रज़ी-अल्लाहु अन्ह से फरमाया, **"अबू बकर और तुम्हारे वालिद मेरी उम्मत के ऊपर सदारत करेंगे।"** ऐसा कहकर, आपने ये अच्छी खबर दी कि अबू बकर और हफ़ज़ा के वालिद उमर रज़ी अल्लाहु अन्हुमा खलीफ़ा बनने वाले थे।

**30-** आपने अबू हुरैरा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हा को मदीना लाई जाने वाली खजूरों (अमीर लोगों के ज़रिए अपनी मिलकियत की ज़कात के तौर पर दी गई और)का इंचार्ज बनाया। अबू हुरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हा ने किसी को खजूरें चुराते हुए पकड़ा। उन्होने उस आदमी से कहा कि वे उसे अल्लाह के नबी के पास ले जाएंगे। फिर जब उस आदमी ने कहा कि वह गरीब है और एक बड़े कुंबे की देख रेख करता हूँ , तो उन्होने उसकी इलतिजा को सुना और उसे आज़ाद कर दिया। अगले दिन, अल्लाह के नबी ने अबू हुरैरा को बुलाया और उनसे पूछा, **"जिस आदमी को तुमने पिछली रात में पकड़ा उसने क्या किया था?"** जब अबू हुरैरा ने क्या हुआ था उसके मुतअल्लिक बताया, तो मुबारक नबी ने फरमाया, **"उसने तुम्हें धोखा दिया। वो वापस आएगा।** सचमुच ,उसी रात वह आदमी दोबारा आया और पकड़ा गया। उसने दोबारा इलतिजा की, "अल्लाह के वास्ते मुझे जाने दो," और उसे दोबारा जाने दिया गया। तीसरी रात उसकी मिन्नत अच्छी नहीं थी। इसलिए इस बार उसने दूसरे तरीके का सहारा लिया। "अगर तुम मुझे जाने दोगे तो मैं तुम्हें कुछ ऐसा सिखाऊँगा जो तुम्हारे लिए बहुत फायदे वाला होगा," उसने तजवीज़ दी। जब अबू हुरैरा ने इसे मंजूर कर लिया, तो उसने कहा, 'अगर तुम बिस्तर पर जाने से पहले हर रात कुरआन अल करीम की आयत **आयत अल-कुरसी** पढ़ोगे तो, अल्लाह तआला तुम्हें शैतान से बचाऐगा और तुम्हारे पास कभी नहीं आएगा," और चला गया। अगले दिन, जब रसूलुल्लाह ने अबू हुरैरा से पूछा पिछली रात क्या वाक्या हुआ था, तो उन्होने आपको सब कुछ बता दिया। इस पर नबी ने फरमाया, **"उसने इस बार सच बताया। हालांकि वह एक नीच झूठा है। क्या तुम जानते हो कि तीन रातों मे तुम किसके साथ बाते कर रहे थे?** "नहीं मैं नहीं जानता।" "वो शख्स शैतान था।"

**31-** आपने एक इलाके जिसे **मूता** कहते हैं फौजी भेजे बीजान्टिन बादशाह की फौजो के खिलाफ़ लड़ने के लिए। सहाबियों में से चार, जो फौज के कमांडर थे, एक के बाद एक, शहीद कए दिए गए। इस बीच में मुबारक नबी मदीना में मिंबर पर तबलीग कर रहे थे। अल्लाह तआला ने एक के बाद एक चारों शहीदों को आपको दिखा दिया, और आपने बदले में लोगों को इन वाक्यात को उन से बाबस्ता किया।

**32-** जैसे कि आप मुआज़ बिन जबल रज़ी अल्लाहु तआला अनहा को यमन के गर्वनर के तौर पर भेज रहे थे, तो आप उनसे शहर के बार्डर पर मिले और उनको बहुत सारी सलाहें दीं। आखिर में कहा, **"मैं और तुम अब कयामत के दिन तक दोबारा नहीं मिलेंगे।"** मुआज़ यमन में ही थे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मदीना में रहलत फरमा गए।

**33-** जब आप रहलत फरमा रहे थे तो,आपने अपनी बेटी फातिमा से कहा, **"मेरे सारे रिश्तेदारों में, तुम सबसे पहली होगी मुझ से दोबारा मिलने में।"** यह छह महीने बाद था जब फातिमा रज़िअल्लाहु अन्हा चल बसी, और जब तक नबी के किसी और रिश्तेदार ने वफ़ात नहीं पाई थी।

**34-** आपने कैसे बिन शमास रजिअल्लाहु अन्हा से फरमाया, **"तुम एक खुबसूरत ज़िंदगी गुज़ारोगे और फिर शहीद की मौत मरोगे।"** कैस मुसलमात-उल कज़ाब के खिलाफ़ यमामा मे अबू बकर रज़िअल्लाहु तआला अन्हा की खिलाफ़त के दौरान जंग लड़ते हुए शहीद हो गए।

आपने उमर उल फारूक, उसमान, और रज़ी अल्लाहु तआला अनहुमा अजमईन की शहादात की भी पैशनगोई की थी।

**35-** आपने खुशखबरी दी थी कि फारस के बादशाह choseroes और बीजान्टिन के कैसर की ज़मीने मुसलमानों के ज़रिए जीत लीं जाएंगी और उनके खज़ाने खर्च किए जांएगे और अल्लाह की रज़ा के लिए तकसीम कर दी जाएगी।

**36-** आपने पैशनगोई की कि एक बड़ी तादार आपकी उम्मत की समुंद्र में पाक जगं के लिए जाएगी और ये कि उम्म-ऊ हिराम रज़ी अल्लाहु तआला अन्हा सहाबियों में से एक उस पाक जगं में होगी। उसमान रज़िअल्लाहु तआला अन्हा की खिलाफत के दौरान, मुसलमान साइप्रस पहुँचे और वहाँ जंग लड़ी। मुबारक औरत जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ है वह उनके साथ थीं। वहाँ उन्हें शहादत मिली।

**37-** एक दिन रसूल अलैहिस्सलाम एक ऊँची जगह पर बैठे थे। आप लोंगो की तरफ़ मुड़े और फरमाया, **क्या तुम देख रहे हो मैं देखा रहा हूँ? मैं कसम खाता हूँ**(अल्लाह के नाम में) **कि मुझे फितना नज़र आ रहा है**(फसाद बग़ावत गुस्सा) **जो तुम्हारे घरों के बीच और सड़को पर फैलागा।"** उसमान रज़ी अल्लाहु अन्ह की जब शहादत हुई उन दिनों के दौरान, और यज़ीद के वक्त में भी मदीन में बहुत हंगामें हो गए थे, बहुत सारे लोगो को कत्ल कर दिया गया और सड़को पर खुन बहने लगा।

**38-** एक दिन आपने पैशनगोई की एक वाक्ये कि जहाँ पर आपकी एक बीवी खलीफ़ा के खिलाफ़ बग़ावत कर देगी। जब आएशा रज़ी अल्लाहु तआला अन्ह (आपकी प्यारी बीवी) अपकी बात पर खुश हुई, आपने फरमाया, " **या हुमैरा** [1] ( [1) प्यार का एक लफ़्ज़ जिससे हमारे मुबारक नबी अपनी प्यारी बीवी को बुलाते थे। हज़रत आएशा, सारे मुसलमानों की (रूहानी) माँ। ) **मेरे इन लफ़्ज़ो को मत भूलो! हो सकता है कि कहीं तुम वो औरत न हो!"** फिर आप अली रज़ीअल्लाहु अन्हा की तरफ़ मुड़े और बोले, **"अगर तुम्हारे पास इनके बारे में फ़ैसला करने का इखतियार हो तो, इनके साथ नर्मी का बरताव रखना!"** ये तीस साल बाद हुआ जब आएशा रज़िअल्लाहु ने अली रज़िअल्लाहु अन्हा (जो उस वक्त के खलीफ़ा थे) के खिलाफ़ जंग छेड़ दी, उन्हें हार का सामना करना पड़ा और बदीं बना लिया गया। अली रज़िअल्लाहु अन्हा ने उन्हें रहमदिली दिखाई और इज़्ज़त दी और उन्हें बसरा से मदीना भेज दिया।

**39-** आपने मुआविया रज़िअल्लाहु अन्हा [डी.60 (680 सी.ई.) दमिश्क] से फरमाया, **"अगर एक दिन तुम मेरी उम्मत पर हावी हो जाओ तो, जो अच्छाई करें उन्हें ईनाम देना, और मुजरिमों को माफ़ कर देना!"** मुआविया रज़िअल्लाहु अन्हा उसमान रज़िअल्लाहु अन्हा की खिलाफ़त के दौरान बीस साल तक दमिश्क के गर्वनर रहे, और बाद में उन्होने बीस साल तक खलीफ़ा का आफ़िस सभांला।

**40-** एक दिन आपने फरमाया, **"मुआविया को कभी हार नहीं होगी।"** जब अली रज़िअल्लाहु तआला ने इस हदीस-ए-शरीफ़ के बारे में सिफीन की जंग के दौरान सुना तो बोले, " मैं कभी मुआविया रज़िअल्लाहु अन्हा के खिलाफ़ नहीं लड़ता अगर मैं इसके बारे में पहले सुन लेता।"

**41-** आपने अम्मार बिन यासेर रज़िअल्लाहु तआला अन्ह से फरमाया, **"तुम बग़वत पसंद लोगो, बाग़ियों के ज़रिए कत्ल किए जाओगे।"** यकीनन, अम्मार को शहादत मिली चूंकि अली रज़िअल्लाहु अन्हा और वह मुआविया रज़िअल्लाहु अन्ह के खिलाफ़ लड़ रहे थे।

**42-** आपने अपनी बेटी फातिमा रज़ी अल्लाहु तआला अनहुमा के बेटे हसन के बारे में फरमाया, **मेरा यह बेटा खैर** (अच्छाई) **का ज़ारिया है। उसकी वजह से, अल्लाह तआला मुसलमानों की दो बड़ी फौजो के बीच अमन कराएगा।"** सालों बाद, वह मुआविया रज़िअल्लाहु अन्ह के खिलाफ़ जंग करने वाले थे, जब उन्होने छोड़ने का फैसला किया और अपनी खिलाफत को मुआविया रज़िअल्लाहु अन्ह के लिए छोड़ दिया ताकि फितना और मुसलमानों के खूनखराबे से बचा जा सके।

**43-** अब्दुल्लाह बिन जुबेर रज़िअल्लाहु तआला अनहुमा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को करे हाथ, और आते हुए खुन को पीते हुए देखा। जब प्यारे नबी ने इस पर ग़ौर किया तो आपने फरमाया, **"क्या तुम्हें उन चीज़ो का पता है जो तुम लोगों के ज़रिए सहने वाले हो? और वे तुम से ज़्यादा मुसीबत पाएंगे। दोज़ख की आग तुम्हें नहीं जलाएगी।"** जब अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने कुछ सालों बाद अपने आपको खलीफ़ा होने का

ऐलान कर दिया तो, अवद-उल-मलिक बिन मरवान ने दमिश्क से हजाज की कमांड में एक बड़ी फौज भेजी। अब्दुल्लाह पकड़ा गया और मारा गया।

**44-** एक दिन आपने अब्दुल्लाह इबनी अब्बास की माँ रज़िअल्लाहु अन्हुम अजमाईन को देखा और फरमाया, **"तुम्हारे एक बेटा होगा। जब** वह पैदा हो जाए तो मेरे पास ले आना!" बाद में, जब बच्चा पैदा हो गया तो, वे उसे आपके पास लाए। आपने उसके कानों में अज़ान और इकामत कितअत की और अपना लुवाब उसके मुँह में डाला। आपने उसका नाम अब्दुल्लाह रखा और उसे वापस उसकी माँ को दे दिया। **"अपने साथ खलिफ़ाओं के बाप को ले जाओ!"** आपने फरमाया। जब अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हा ने इसके बारे में सुना, तो वह प्यारे नबी के पास आए और नरमाई से आपसे पूछा कि आपने ऐसा क्यों कहा। नबी ने समझाया, **"हाँ, मैने ऐसा कहा है! यह बच्चा खलीफ़ाओं का बाप है। उनके दरमियान** (एक शख्स जिसका नाम)**सफ़फाह,** (एक नाम) **महदी, और एक शख्स जो ईसा अलैहिस्सलाम के साथ नमाज़ अदा करेगा होंगे।** कई खलीफ़ा अब्बासी रियासत के ऊपर सदारत करेंगे। वे सारे अवदुल्लाह बिन अब्बास के जानशीन होंगे।

**45-** एक दिन आपने फरमाया, **"मेरी उम्मत के बीच बेशुमार लोग आएँगे जिन्हें राफ़िदी बुलाया जाएगा। वे इस्लाम मज़हब को छोड़ देंगे।"**

**46-** आपने अपने बहुत सारे सहावा पर दुआएँ दीं, आपकी सारी दुआएँ कुबुल हो गई और जिन लोंगो से वावस्ता थीं उन्हें फायदा पहुँचा।

अली रज़िअल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत हैः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मुझे काज़ी[जज] के तौर पर यमन भेजना चाहते थे। मैंने कहा, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! मैं काज़ी के काम के बारे में कुछ नहीं जानता।" आपने अपना मुबारक हाथ मेरे सीने पर रखा और दुआ पढ़ी, **या रब्बी! इस शख्स के दिल में जो सही है वो डाल दे। इसे हमेशा सच बोलने की खुबी से नवाज़ दो!"** उस वक्त से मैं हमेशा शिकायतों में सच को जान जाता था जो मेरे पास आती थीं और मेरे फैसले हमेशा सही होते थे।

**47-** दस लोग जिन्हें अल्लाह के नबी ने अच्छी खबर सुनाकर खुश किया था कि वे जन्नत में जाएंगे उन्हें अशरा-ए-मुबशशरा कहते हैं। साद बिन एबी वक्कास रज़ी अल्लाहु अन्हा उनमें से एक थे। औहद की पाक जंग में मुबारक नबी ने उन पर ये कहते हुए रहमत दुआ फरमाई थी, **"या रब्बी! इसके तीरों को उनके हदफ़ पर पहुँचा और इनकी दुआएँ भी कुबूल फरमा!"** तब से साद की सारी दुआएँ कुबूल होती थी, और हर तीर जो वे फैंकते थे दुश्मन को मारता था।

**48-** आपने अपना मुबारक हाथ अपने चचेरे भाई के माथे पर रखा, अवदुल्लाह बिन अब्बास रज़ी अल्लाहु अन्हुमा और मंदरजाज़ेल दुआएँ कहीं ः **"या रब्बी! इस शख्स को मज़हब का एक गहरा आलिम बना दे और हिकमत का एक मालिक! इस पर कुरआन-अल-करीम के इल्म की नवाज़िश कर दे!"** तब से, वे अपने वक्त में इल्म की सारी

शाखाओ में, खासतोर से तफ़सीर में, हदीस में और फिकह में बेमिसाल थे। सहावा और तावईन जैसे कि हम पहले भी वाज़ेह कर चुके हैं कि, एक शख्स जिसने कम से कम एक बार अल्लाह के नवी को देखा या बात की, उसे एक सहावी कहते हैं। अगर एक शख्स ने नवी को नही देखा लेकिन अगर उसने कम से कम एक सहावी के साथ बात की या देखा,तो उसे **तावि** कहते हैं। तावि की जमा शक्ल है **ताबईन** ,जिसका मतलब है वे खुशकिस्मत लोग जिन्होने कम से कम एक सहावी को तो देखा हुआ था। लोग जिन्होने कम से कम एक सहावी को भी नहीं देखा, लेकिन जिन्होने कम से कम एक तावईन को देखा हुआ था तो उन्हें तवा-इ-तावईन कहते हैं। ) जो कुछ जानना चाहते वो उनसे ही सीखते थे। उन्होने अरफ़ी नामों के साथ शौहरत हासिल की जैसे कि तर्जुमान-उल-कुरआन, वहर-उल-इल्म, और रईस-उल मुफ़स्सिरीन इन लकाव का मतलव है बिलतरतीव, 'कुरआन का तर्जुमान,' इल्म का समुंद्र, और मुफ़स्सिरीन का सरवराह (आलिमों ने बहुत ज़्यादा सीखा कुरआन अल करीम की वज़ाहत करने के लिए)। उनके वेशुमार शार्गिदों ने मुसलमान मुल्कों को मालामाल किया।

**49-** आपने मंदरजाज़ेल दुआ अपने खादिमों में से एक अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआला अन्ह के लिए बोलीः **"या रब्बी! इसके माल को बहुत ज़्यादा और बच्चों को बेशुमार कर दो। इसकी ज़िंदगी लंबी कर दो, और उसे उसके गुनाहों के लिए माफ़ फरमा दे।** जैसे वक्त गुज़रता गया, उनकी मिलकियत में आहिस्ता आहिस्ता वढ़ोतरी होती गई। उनके बाग़ात और अंगूर के बाग़ों में हर साल बहुत ज़्यादा फल लगते थे। उनके बच्चों की तादाद **100** से ऊपर चली गई थी। वे **110** साल तक जिए। अपनी उम्र के आखिर में उन्होने दुआ की, " या रब्बी! तूने अपने प्यारे नवी की मेरे ऊपर मांगी गई तीनों दुआएँ कुवूल फरमाई, और तुने मुझे ये सारी रहमतें नाज़िल फरमाई। मुझे हैरानी है कि क्या तू चौथी दुआ भी कुवूल करेगा और मेरे गुनाहों को माफ़ कर देगा।" एक अवाज़ सुनाई दी, **" मैने चौथी वाली भी कुबूल करली। अपने दिल को अच्छा रखो!"**

**50-** आपने मंदरजाज़ेल वरकतें मालिक विन रविया रज़िअल्लाहु तआला अन्ह के लिए दुआ कीः **"तुम्हें ज़्यादा बच्चे हों!"** मालिक के अस्सी लड़के हुए।

**51-** वहाँ नाविघा नाम का एक मशहूर शायर था। जब वह अपनी कुछ नज़्में पढ़ रहा था तो मुवारक नवी ने मंदरजाज़ेल वरकत उस पर दुआ की जो अरबीयों के बीच फैली हुई थीं ः **" अल्लाह तआला तुम्हारे दाँत न गिरने दे!"** नाविघा **100** साल के थे, और उनके सफ़ेद दाँत अभी तक मोतियों के दानों की तरह चमकते थे।

**52-** आपने मंदरजाज़ेल दुआ उरवा विन जुद रज़िअल्लहु तआला अन्हा के लिए कहीः **"या रब्बी! इसकी तिजारत को फलदार बना!"** उरवा ने तसलीम कियाः "उस वक्त से, मेरी तिजारती सरगरमियाँ फायदे वाली रहीं। मुझे कभी नुकसान नहीं हुआ।

**53-** एक दिन आपकी वेटी रज़ी अल्लाहु तआला अन्हा भूख से सफ़ेद,आपके पास आई। आपने अपना मुवारक हाथ सीने पर रखा और दुआ की ः **" ऐ मेरे रव** (अल्लाह), **जो**

**भूखे लोगों को खिलाता है! मुहम्मद की बेटी फातिमा को भूखा न रहने दे!"** उसी वक्त फातिमा का चेहरा सेहतमंद और जानदार हो गया। उन्होने मरने तक भूख को कभी महसूस नहीं किया।

**54-** आपने अवद-उर-रहमान विन औफ़, जो अशरा-ए-मुवशशरा में से एक थे उनके लिए दुआ की। उनके माल में इतना ज़्यादा इज़ाफा हुआ कि वह मकामी कहानी का मज़मून बन गए।

**55-** आपने फरमाया, **"हर नबी की दुआ कुबूल होती है। और हर नबी अपनी उम्मत पर रहमतों की दुआ करते हैं। और मैं दुआ कर रहा हूँ कि मुझे इंसाफ़ वाले दिन अपनी उम्मत की शिफ़ाअत करने की इजाज़त मिले। इनशाअल्लाह, मेरी दुआ कुबूल होगी। मैं सबके लिए शिफ़ाअत करूँगा, सिवाए मुशरिकीन के।"**

**56-** आप मक्का के कुछ गाँवो में गए और अपनी पूरी कोशिश की गाँव के लोगों को ईमान वाल वनाने **के** लिए। उन्होने इंकार कर दिया। आपने उन पर लानत भेजी ताकि वे तवाही में पड़ जाएँ बिल्कुल उसी तरह जिस तरह नबी यूसुफ़ (जोसेफ़) अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वक्त में मिस्त्र के लोगों पर कहत साली आई थी। उस साल कहत ने उस इलाके पर हमले किया, और गावँ वालो को सड़ा हुआ खाना खाना पड़ा।

**57-** उतेवा, नबी के चाचा अवू लहब का वेटा, एक ही वक्त में वो नवी अलैहि सलातु वसलाम का दामाद भी था। वो शख्स न सिर्फ़ अल्लाह के नबी से इंकार

था, वल्कि उस सरवर (नावियों के मास्टर, इंसानियत के सवसे अच्छे) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कढ़वे ग़म का भी सवव था। उसने नवी की प्यारी वेटी, अपनी वीवी उम्म कुलसूम को तलाक दी थी। उसने उन पर कुछ वेहूदा गालियाँ भी उछालीं। गहरे दुख में, अल्लाह तआला के प्यारे ने दुआ की, **"या रब्बी! अपने कुत्तो मे से एक इस पर भेज दे !"** पहले से उतेवा और उसके दोस्त दमिश्क तिजारत की गर्ज़ से निकले हुए थे। रास्ते में वे रात के लिए रूक गए। वे गहरी नींद सो रहे,थे, जब उनपर एक खामोश घुसपेठिया, एक शेर आ गया। खतरनाक जानवर ने ग्रुप के सारे लोगों को एक एक करके सूंगा। जब उतेवा की वारी आई तो उसने उसे पकड़ा और टुकड़ों मे तोड़ दिया।

**58-** एक शख्स था जो हमेशा अपने उलटे हाथ से खात जब नवी ने उससे फरमाया, " **अपने सीधे हाथ से खाओ,"** वदकिस्मत से झूठ का सहारा लिया और कहा कि उसका सीधा हाथ काम नहीं करता। "नवी ने इस पर वददुआ दी, **"तेरा हाथ अब कभी न चल पाए।"** वह शख्स अपने मरने तक अपना सीधा हाथ मुँह तक नहीं ले जा पाया।

**59-** आपने फारस के शाह खुसरो परवेज़ को एक खत भेजा उसे इस्लाम की दावत देने के लिए। एक नागवार शख्स होने की वजह से, खुसरो ने खत को टुकड़े कर दिया और जो सफ़ीर उसके पास खत लाया था उसे शहीद कर दिया। यह वात सुनने पर,रसूल अलैहिस्सलाम को वड़ी मायूसी हुई और शाह पर यह कहते हुए वददुआ की, **" या रब्बी! इसके माल को वैसे ही टुकड़े कर दो जैसे इसने मेरे खत को फाड़ा!"** रसूलुल्लाह अभी हयात

ही थे जब खुसरो को उसके अपने ही बेटे शीरवह ने खंजर से टुकड़े कर दिया। और बाद में ,उमर रज़िअल्लाहु तआला अन्ह की खिलाफ़त के दौरान मुसलमानो ने पूरा फारस कब्ज़ा कर लिया, इस तरह खुसरो की तरफ़ से न ही कोई औलाद और न ही कोई मिलकियत बची।

**60-** जैसे कि रसूल अलैहिस्सलाम बाज़ार में सलाह दे रहे थे और उमर-ए-मारूफ़ और नहीं-ए-मुंकर (अमर-ए-मारूफ़ और नही-ए-मुंकर करने का मतलब है दूसरों को अल्लाह तआला के ऐहकामात की फरमाबरदारी करने के लिए बढ़ावा देना और उन्हें उसकी ममनुआत को करने से रोकने के लिए मश्वरा देना।) अदा कर रहे थे, एक विलेन हकेम बिन आस नाम का, जोकि मरवान का बाप भी था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पीछे से तकलीद करता हुआ आया, अपनी आँखे मसखरेपन से बंद कीं और मसखरे चेहरे बनाने लगा। जब नबी अलैहिस्सलाम पीछे मुड़े और उसे देखा, आपने लानत दी, **"तुम जिस तरह अपने आपको ज़ाहिर कर रहे हो इसी तरह रह जाओ।"** इस तरह विलेन का चेहरा उसके मरने तक इसी तरह मज़हका खेज खींचा रहा।

**61-** अल्लाह तआला हमेशा अपने हबीब (प्यारे) को तबाही से बचाता आया है। अबू जहल अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सबसे ज़्यादा सगंदिल दुशमन था। एक दिन, वह माना हुआ काफ़िर एक बड़ा पत्थर उठाता है और उसे मुबारक नबी के सिर पर मारने के लिए उठाता है। अचानक उसने रसूलुल्लाह के कंधो पर दो साँप देखे, हर कंधे पर एक। उसने पत्थर फैंक दिया और ऐड़ी पर भाग लिया।

**62-** एक दिन अल्लाह के नबी काबा-ए-मुआज़मा के पास नमाज़ अदा कर रहे थे, जब वही विलेन, अबू जहल, मौके का फायदा उठाता है और अपने हाथ में खंजर लेकर पंजो के बल मुबारक नबी की तरफ़ आता है। अचानक वह रूक जाता है, अजनबी खौफ़ के साथ, पीछे मुड़ता है और भाग जाता है। जब बाद में उसके दोस्त उससे पूछते हैं कि किस चीज़ ने उसे खौफ़ में भागने पर मजबूर कर दिया, उसने वाज़ेह किया, "अचानक मेरे और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बीच में आग की खाई नमूदार हो गई, और काफ़ी तादाद में लोग मेरे मुंतज़िर थे। अगर मैं एक और कदम आगे बढ़ाता वे मुझे पकड़ लेते और मुझे आग में डाल लेते। जब मुसलमानों ने इस घटना के बारे में सुना, तो उन्होने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से पूछा, कि क्या माजरा था। मुबारक नबी ने वाज़ेह किया, **"अल्लाह तआला के फरिश्ते उसे पकड़ लेंगे और उसे टुकड़े टुकड़े कर देंगे।"**

**63- कतफ़ान** की पाक जंग के दौरान हिजरत (हगीरा) के तीसरे साल में, रसूल अलैहिस्सलाम एक पेड़ के नीचे अकेले लेटे थे, जब एक काफ़िर दसूर नाम का, जोकि उस वक्त एक पहलवान था, वो अपने हाथ में तलवार लेकर आया और कहा, "अब तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा? **"अल्लाह करेगा,"** रसूलुल्लाह का जवाब था। जब मुबारक नबी ऐसा कह रहे थे, तो जिब्राईल नाम के फरिश्ते इंसानी रूप में ज़ाहिर हुए और काफ़िर को सीने पर चोट मारी। वह गिर गया और तलवार ज़मीन पर छोड़ दी। रसूल अलैहिस्सलाम ने तलवार अपने हाथ में उठा ली और फरमाया, **"तुमे मुझे से कौन बचाएगा?"** आदमी ने मिन्नत की, "आप

से बेहतर यहाँ पर कोई शख्स नहीं आप ही मुझे बचाएंगे।" मुबारक नबी ने उसे माफ़ कर दिया और जाने दिया। उस आदमी ने ईमान वालों में शमुलियत की और बहुत सारे लोगो को इस्लाम अपनाने का सबब बना।

**64-** हिजरत के चौथे साल में, जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम यहूदियों के किले की दीवर के नीचे **बनी नदीर** में अपने सहाबियों के साथ बातचीत कर रहे थे, तो एक यहूदी ने एक बड़े मिल पत्थर को नीचे फैंकने का इरादा किया। जैसे ही उसने अपने हाथ को पत्थर उठाने के लिए पकड़ा, उसके दोनों हाथ अपाहिज हो गए।

**65-** हिजरत का दसवां साल था और लोगो का जमूद दूर दराज़ मुल्कों से आ रहा था इस्लाम को अपनाने के लिए। दो काफ़िर आमिर और Erbed नाम के जमघटे( मुहम्मद अलैहिस्सलाम को कत्ल करने के इरादे से।) में मिल गया। जैसे ही आमिर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने बहाना किया कि वो मुसलमान बनना चाहता है, Erbed पाक नबी के पीछे छिप गया। जब वो अपनी तलवार को म्यान से बाहर निकालने की कोशिश करता है। तो उसके हाथ नहीं चलते, जैसे कि वो माजूर हो गया है। आमिर उसके बिल्कुल सामने, ऐसा निशान बनाता है जैसे पूछ रहा हो, "तुम क्यों कांप रहे हो? " इस पर रसूल अलैहिस्सलाम फरमाते हैं, **" अल्लाह तआला ने तुम दोनों के नुकसान से मुझे बचा लिया।"** जब दोनो विलेन एक साथ चले गए। आमिर ने Erbed से पूछा कि उसने अपना वादा क्यों पूरा नहीं किया। उसने बताया, " मैं किस तरह कर सकता था? मैनें कई बार अपनी तलवार निकालने की कोशिश की। लेकिन हर कोशिश मैने हम दोनो के बीच में तुम्हें पाया?" कुछ दिनों बाद, धूप वाले दिन में, अचानक आसमान बादलों से ढक गया और Erbed और उसका ऊँट बिजली गिरने से मर गए।

**66-** एक दिन नबी अलैहिस्सलाम वुज़ू करके अपने mests( पतावे के बग़ैर चमड़े के बूट जो जूतो के अंदर पहने जाते हैं।) में से एक को पहन रहे थे, और दूसरा पहनने ही वाले थे जब एक चिड़िया फड़फड़ाती हुई आई Mest को छीना और उसे हवा में लहराया। Mest में से एक साँप बाहर गिरा। फिर चिड़िया ने mests को ज़मीन पर छोड़ा और वापस उड़ गई। उस दिन से, ये सुन्नत है कि जूतों को पहनने से पहले झाड़ लें। (सुन्नत यानी कोई भी बरताव जो अल्लाह तआला के ज़रिए हुकूम नहीं किया गया बल्कि जिसे हमारे नबी अलैहिस्सलाम ने किया और सिफ़ारिश की।)

**67-** रसूल अलैहिस्सलाम ने पाक जंगो और रैगिस्तानो में खुद के बचाव के लिए खास गार्ड मुर्कर किए। जब सूरह माएदा की 67वीं आयत-ए-करीमा नाज़िल हुई ,जिसका मतलब है, **"अल्लाह तुम्हारी इंसानी नुकसानों से हिफ़ाज़त फरमाएगा,"** आपने नीजी गार्ड रखने का अमल खत्म कर दिया। आप दुश्मनो के बीच अकेले चले जाते थे और बग़ैर किसी खौफ़ के अकेले सो जाते थे।

**68-** अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआला अन्हा के पास रूमाल था जिससे एक बार अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना चेहरा सुखाया था। अनस ने

अपना चेहरा सुखाया और जब वो गंदा हो गया तो उसे आग में रख दिया। गंदगी सारी जल गई जबकि रूमाल बग़ैर जले रहा और बेहद साफ़ हो गया।

**69-** आपने एक बाल्टी से पानी दिया जो एक कुएँ से निकाला गया था और फिर बाकी बचा हुआ पानी वापस कुएँ में डाल दिया। उस वक्त से कुएँ में से मुश्क की खुशबू आती है।

**70-** उसबा बिन फिरकाद रज़ी अल्लाहु अन्ह को एक बीमारी जिसे लाल चिकत्रे कहते हैं उसने जकड़ लिया। रसूल अलैहिस्सलाम ने अपने कपड़े उतारे, अपने मुबारक हाथों पर थूका, और उसके जिस्म को अपने हाथों से रगड़ा। बीमार सेहतयाब हो गया। काफ़ी लंबे अरसे तक उनके जिस्म से मुश्क की खुशबू आती रही।

**71-** सलमान-ए-फारसी रज़िअल्लाहु तआला अन्हा ने ईरान को छोड़ा और सच्चे मज़हब की तलाश में मुख्तलिफ़ मुल्कों में सफ़र किया। उन्होने एक कारवां में जो बनी कलब के कबीले से तअल्लुक रखता था और अरब की तरफ़ जा रहा था उसमें शमूलियत कर ली। जब वे एक इलाके में जिसे वादी-उल-कुरा कहते थे अरब के रास्ते में पहुँचे, तो उनके साथियों ने उन्हें धोखा देकर गुलाम की तरह एक यहुदी को बेच दिया, जिसने बदले में मदीना से अपने रिश्तेदार यहूदी को बेच दिया। यह वाक्या (हिजरत) हगीरा से मेल खाता है, और जब सलमान मदीना में थे तो उन्होने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बारे में सुना कि आप मदीना को अपनी मौजूदगी से इज़्ज़त बख्श रहे हैं। वे बहुत खुश हुए क्योंकि वे नासरी आलिम थे और ये इतना लंबा सफ़र अरब का इस नज़रिए से किया था कि मौजूदा वक्त के नबी का मानने वाला बन जाऊँ, ऐसा उन्हें उनके आखरी रूहानी रहनुमा, एक बड़े आलिम के ज़रिए तजवीज़ किया गया था। उन बड़े आलिम ने उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शखसियत की खुसूसियात बताई थी और उनसे कहा था कि नबी तौहफ़ा कुबूल कर सकते हैं लेकिन खैरात को मना कर देंगे, उनके दोनो कंधो के बीच में (खुबसूरती की जगह) एक नबुव्वत की मोहर थी और ये कि उनके पास बहुत सारे चमत्कार थे। सलमान-ए-फारसी रज़िअल्लाहु अन्ह कुछ खजूरें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले गए, और कहा ये खैरात है। मुबारक नबी ने उसमें से एक भी नहीं खाई फिर वे कुछ **25** खजूरें एक पलैट में रखकर ले गए, और कहा ये तौहफ़े की नीयत से है। अल्लाह के नबी ने उनमें से कुछ खा लीं, और बाकी सहाबा को दे दीं। इस तरह सारे अस-हाब-ए-किराम ने खजूरें खा लीं। एक हज़ार गुठलियाँ उन (**25**) खाई हुई खजूरों में बनी रहीं। और सलमान ने रसूलुल्लाह का यह चमत्कार भी देख लिया। अगले दिन एक जनाज़ा था और सलमाान चाह रहे थे कि वे नबुव्वत की मोहर देंखे। अल्लाह के नबी ने किसी तरह यह भाँप लिया, आपने कीज़ उतारी, और मोहर-ए-नबुव्वत (नब्वुव्वत की मोहर) नज़र आगई। सलमान रज़िअल्लाहु अन्ह एक दम ईमान वाले बन गए। एक समझौता (सलमान और उनके यहूदी मालिक के बीच में) हुआ कि वे **300** खजूरों के पेड़ **1600** सोने के दरहम कुछ सालों में उनकी रिहाई के बदले में देंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम ने इसके बारे में सुन लिया। आपने **299** खजूर के पेड़ अपने मुबारक हाथों से लगाए। उसी साल पेड़ों में फल लग गए। एक पेड़, जिसे उमर रज़िअल्लाहु तआला अन्ह ने लगाया था वो बे फल था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस पेड़ को उखाड़ दिया और फिर इसे अपने मुबारक हाथों से लगाया। उस पेड़ पर खजूरें फौरन उग गई। फिर उन्होने सलमान रज़िअल्लाहु तआला अन्ह को अंडे के बराबर सोना दिया, जिसे एक पाक जंग में ग़नीमा के तौर पर लिया गया था। सलमान उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास ले गए और कहा कि सोना सोलह सौ दरहम वज़न करने के लिए बहुत छोटा था। नबी ने सोने को अपने मुबारक हाथों में पकड़ा और वापस इसे सलमान को दे दिया, और कहा इसे अपने मालिक के पास ले जाओ। उसमें से आधा सोना उनके मालिक का कर्ज़ा उतारने के लिए काफ़ी था, और बाकी आधा सलमान रज़िअल्लाहु अन्ह की मिलकियत बन गया।

**72-** एक दिन रसूल अलैहिस्सलाम नमाज़ अदा कर रहे थे, तभी शैतान आया और आपको नमाज़ से ध्यान हटाने की कोशिश करने लगा। आपने अपने मुबारक हाथों से शैतान को पकड़ा, और तभी उसे जाने दिया जब उसने वादा किया कि वो नमाज़ खराब करने की कोशिश नहीं करेगा।

**73-** मदीना में मुनाफ़िकों के सरदार, अब्दुल्लाह बिन उबेए ने अपनी मौत के वक्त अल्लाह के रसूल से मिला और आप से मिन्नत की, " बराएमेहरबानी आपने जो कमीज़ पहनी हुई है उसका मुझे कफ़न बना दें।" ये हमारे मुबारक नबी की आदत थी कि आपसे जो मांगा जाता वो आप दे दिया करते थे, आपने उसे अपनी कमीज़ दे दी और (जब वह शख्स मर गया) उसकी नमाज़े जनाज़ा (**सआदत-ए-अबदिया** के **15**वें बाब के पाचवें हिस्से को देखिए।) भी अदा कराई। अल्लाह के नबी की इस मिसाली सख़ावत की तारीफ़ करते हुए मदीना में सौ दूसरे मुनाफ़िको ने एक साथ इस्लाम क़ुबूल किया।

**74-** क़ुरैश के काफ़िरों में वलीद बिन मुग़ीरा, आस बिन वाईल, हारिस बिन कैस, असवद यागूस ,और असवद बिन मुत्तालिब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को परेशान और अज़ाब पहुँचाने वालो में सबसे आगे थे। जिब्राइल अलैहिस्सलाम आए और हिजर सूरह की **95**वीं आयत लेकर आए जिसका मतलब है, **"जो तुम्हारा मज़ाक उड़ाएँगे हम उन्हें सज़ा देंगे..."** और वलीद के पैर, दूसरे की एड़ी, तीसरे की नाक, चौथे का सिर, और पाँचवे की आँख की तरफ़ निशानदही की। वलीद एक तीर से ज़ख्मी हुआ, जो उसके पैर में गहरा घुस गया। एक मगरूरू शख्स होने की वजह से, वह तीर निकालने के लिए झुका नहीं। इसलिए तीर का धाती हिस्सा टखने की नस में घुस गया और Sciatica का सबब बना। आस एक तेज़ काँटे पर चढ़ गया और उसे एक थैले की सुजाने का सबब बना। हारिस की नाक से लगातार खून बहता रहा असवद एक पेड़ के नीचे खुश बैठा था, जब उसने अपना सिर पेड़ से टकरा दिया। और पाँचवा शख्स, जिसका नाम भी असवद था, वह अंधा हो गया। वे पाँचो लोग आखिर में खत्म हो गए।

**75-** तुफ़ैल, दोस कवीले का सरवराह, मक्का में, हिजरत से पहले ईमान वाला बन गया। उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से एक अलामात के लिए पूछा जिसके साथ वह अपने कवीले को इस्लाम की दावत दे सके। मुबारक नवी ने दुआ की, **"या रब्बी! एक आयत अता फरमाएँ** (एक निशानी, एक अलामत, एक सबूत) **इस शख्स पर।"** जब तुफ़ैल अपने कवीले वापस गए, एक नूर (रोशनी) उनकी भौहों के वीच चमक रही थी। तुफ़ैल ने दुआ की, " या रब्बी! मेरे चेहरे पर से ये अलामत हटा ले और मेरे ऊपर कही और लगा दे। मेरे चेहरे पर इसे देखकर , कुछ लोग इसे सज़ा की अलामत समझेंगे क्योंकि मेने उनका मज़हव छोड़ दिया।" उनकी दुआ कुवूल कर ली गई। हाले ने उनका चेहरा छोड़ दिया और उनके कोड़े की नोक पर मोमवत्ती की रोश्नी की तरह चमकने लगा। उनके कवीले वाले वक्त के साथ इस्लाम को कुवूल करते गए।

**76-** मदीना में वेनी नजजार के कवीले के दरमियान एक खुवसूरत औरत थी। वह एक जिन्नी के ज़रिए डराई जा रही थी जिसे उसके साथ प्यार हो गया था। एक दिन नवी अलैहिस्सलाम के मदीना हिजरत करने के वाद, जिन्नी उस औरत के घर के सामने एक दीवर के नीचे बैठा था, जव औरत ने उसे देखा और पूछा, "तुम मेरे पास अव क्यों नहीं आ रहे हो? "जिन्नी ने जवाव दिया," अल्लाह तआला के नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम ने ज़िना और दूसरे हराम के काम ममनुअ कर दिए हैं।"

**77-** विर-ए-मोओना की जंग में, काफ़िर अपने वादे से मुकर गए और **70** सहावा को शहीद किया। आमिर विन फुहेरा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा उनमें थे वे सवसे शरू के ईमान वालो में शुमार किए जाते हैं और सावका गुलाम थे जिन्हें अवू वकर रज़िअल्लाहु तआला अन्हा ने आज़ाद किया था। जव इस मुवारक मुसलमान को मौत का वौनस दिया गया तो, फरिश्तों ने उन्हें काफ़िरों की आँखो के सामने से आसमान पर उठा लिया। जव उन्होने इस वाक्ए की खवर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दी तो, मुवारक नवी ने वाज़ेह किया, **"उन्हें जन्नत के फरिश्तो के ज़रिए दफ़नाया गया, और उनकी रूह को जन्नत की तरफ़ उठा लिया गया।"**

**78-** हुवैव विन अदी रज़िअल्लाहु अन्ह, सहावा में से एक, उन्हें काफ़िरों के ज़रिए पकड़ लिया गया, जो उन्हें मक्का ले गए और वहीं उन्हें फांसी दे दिया। उन्होने उन्हें सूली पर से नहीं उतारा ताकि दूसरे काफ़िर उन्हें देखकर मज़ा लें। वे सूली पर चालीस दिनो तक लटके रहे थे। फिर भी उनका जिस्म सड़ा या खराव नहीं हुआ था, वल्कि उसमें से लगातार खुन रिस रहा था। जव अल्लाह के नवी को इस हादसे की खवर मिली, तो आपने ज़वेर विन अवाम और मिकदाद विन असवद रज़िअल्लाहु अन्हुमा को लाश को घर वापस ले जाने के लिए भेजा। इन हिरो ने लाश को सूली पर से उतारा और अपने घोड़े वापस मदीना की तरफ़ मोड़ दिए। वे मदीना के विल्कुल नज़दीक थे जव काफ़िरों में से **70** पड़ाव किए हुए घुड़सवारों ने उन्हें पकड़ लिया। दोनो मुसलमानो ने अपने आपको वचाने के लिए हुवैव के

जिस्म को ज़मीन पर रख दिया।ज़मीन अलग हो गई और हुबैब उस दरार में गायब हो गए।जब काफ़िरों ने यह चमत्कार देखा तो वे वापस मुड़े और सरपट भाग गए।

**79-** साद बिन मुआज़ रज़ी अल्लाहु तआला अन्ह उहूद की पाक जंग में ज़ख्मी हो गए और पहले ही शहादत हासिल कर गए।रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इतलाअ मिली कि **70** हज़ार फरिश्तों ने उनके लिए नमाज़े जनाज़ा अदा की जबकि उनकी कब्र खोदी जा रही थी तो पूरी जगह पर मुश्क की खुशबू फैल गई। ([**73** वां चमत्कार देखिए।)

**80-** हिजरत के सातवें साल में, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अबीसीनिया के बादशाह नेगुस, बीजान्टिन के बादशाह हएक्यूलस, फारसी के बादशाह हुसरव, बीजान्टिन के मिस्त्र में गवर्नर मुकोकस, दमिश्क में बीजान्टिन के गवर्नर, हारिस और उम्मान के सुलतान ,सेमामा को इस्लाम की दावत देने के लिए खतूत भेजे।जो सफ़ीर इन खतूत को लेकर गए थे वे जहाँ भेजे गए थे वे उन मुमालिक की ज़बाने नही जानते थे।हालाँकि, दूसरी सुबह वे उन ज़बानो को बोलना शुरू कर देते थे।

**81-** ज़ैद बिन हारिस रज़िअल्लाहु तआला अन्ह सबसे बड़े सहाबा में से एक, एक लंबे सफ़र पर निकले।वह आदमी जिसे उन्होने अपने खच्चर की देखभाल करने के लिए रखा था उसने उन्हें कत्ल करने की कोशिश की।ज़ैद ने मोहलत मांगी कि वो दो रकाअत नमाज़ अदा करलें।नमाज़ के बाद उन्होने तीन बार कहा, **"या अरहमर राहिमीन** (ऐ तू ,रहमदिलों के रहमदिल)इस दुआ को हर बार कहने के बाद, एक आवाज़ ये कहते हुए सुनाई दी, "इसे मत मारना।" हर बार जब आवाज़ सुनाई दी, खच्चर हाँकनेवाला उस शख्स को देखने के लिए बाहर जाता,(क्योंकि बाहर कोई नहीं था)।तीसरी कोशिश के बाद, एक घुड़सवार अपने हाथ में तलवार लिए अंदर घुसा और खच्चरबान को कत्ल कर दिया।फिर वह ज़ैद की तरफ़ मुड़ा और वाज़ेह किया।) " मैं सातवें आसमान पर था जब तुमने अपनी दुआ पढ़नी शुरू की, 'या अरहम-अर-राहिमीन !' जब तुमने उसे दूसरी बार कहा, मैं पहले आसमान पर पहुँच चुका था।और तीसरी बार में मैं तुम्हारे साथ हूँ ।" इस तरह ज़ैद का बावर हुआ कि घुड़सवार एक फरिश्ता है।

**82-** एक सहाबी जिनका नाम सफ़ीना था, जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुबारक बीवियों में से एक उम्म सलमा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा ने आज़ाद कराया था, वह कभी अल्लाह के नबी के साथ अपनी खिदमत में बेपरवाह नहीं हुए।बीजान्टिन फौजों के खिलाफ़ एक पाक जंग में वह दुश्मनो के ज़रिए बंदी बना लिए गए ।किसी तरह वह भाग गए और अपने घर जाने के रास्ते में थे, जब अचानक एक शेर से उनकी मुठभेड़ हो गई।उन्होने बोला, " मैं अल्लाह के नबी का नौकर हूँ ," और जो उन्होने तर्जुबा किया था वो सब शेर को बता दिया।शेर ने उनके साथ चलना शुरू कर दिया, अपनी आँखे और चेहरा उनके ऊपर रगड़ते हुए चलता रहा , और उनके साथ बहुत

नज़दीक होकर चल रहा था ऐसा न हो कि दुश्मन उन्हें नुकसान पहुँचा दे। जब मुसलमान सिपाही नज़र आने लगे, तो शेर वापस मुड़ा और चला गया।

**83-** कोई शख्स जेहजाह-ए-ग़फ़्फ़ारी नाम का, खलीफ़ा उसमान रज़िअल्लाहु तआला अन्ह के खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ। उसने वो छड़ी अपने घुटने से तोड़ दी जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाथ में लेकर चलते थे। एक साल बाद उस शख्स के घुटने में एक बीमारी जिसे एथ्रेक्स कहते हैं वो हो गई, जिसके सबब उसे मरना पड़ा।

**84-** मुआविया रज़िअल्लाहु तआला अन्हा हज (एक मुसलमान की ज़ियारत) करने के मक़सद से दमिश्क को छोड़ गए। रास्ते में, वे मदीना चले गए और अपने साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मिंबर दमिश्क ले जाने की कोशिश की, ताकी आपकी रूहानी रहमतों से फायदा हो सके। जैसे ही उन्होने एक थोड़ा सा ही मिबंर खिसकाया था, कि एक सूरज ग्रहण लग गया। हर तरफ़ अंधेरा छा गया, इतना ज़्यादा कि आसमान में सितारे नज़र आने लगे।

**85-** उहूद की पाक जंग में अबू कतादा रज़िअल्लाहु तआला अन्ह की एक आँख अपने मकाम से निकल कर उनके गाल पर गिर गई। वो उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास ले गए। अपने मुबारक हाथ से नबी ने खुद उनकी आँख को उसके खाके/मकाम में लगा दिया और दुआ की, **" या रब्बी! इसकी आँख को खुबसूरत बना दो!"** इस तरह अबू कतादा की यह आँख ज़्यादा खुबसूरत थी अपनी दूसरी आँख से, और इसकी रोश्नी भी दूसरी वाली से ज़्यादा थी। (कुछ सालो बाद) एक दिन अबू कतादा पोतो में से एक, उस वक्त के खलीफ़ा, उमर बिन अबदुल अज़ीज़ की हाज़िरी में था। जब खलीफ़ा ने उससे पूछा कि वह कौन है, तो उसने एक दोहा सुनाया कि वह उस शख्स का पोता था जिसकी आँख अल्लाह के नबी ने अपने मुबारक हाथ से तबदील की थी। जब खलीफ़ा ने दोहा सुना, तो उन्होने उसे वाज़ेह ऐहतराम और दिलकश रहम के साथ सलूक किया।

**86-** इयास बिन सनमा से रिवायत है ः खैबर की पाक जंग के दौरान अल्लाह के नबी ने मुझे अली रज़िअल्लाहु अन्हुमा के लिए भेजा। अली की आँख दुख रही थी और मुश्किल के साथ चल रहे थे। इसलिए मैने उनकी मदद की, उनको हाथ से पकड़ा। नबी ने अपनी खुद की मुबारक उंगलियों पर थूका और अली की आँखो पर उन्हें नरमाई से रगड़ा। आपने उन्हें (इस्लाम का) बैनर पकड़ाया, और उन्हें खैब्र के दरवाज़े के आगे लड़ने के लिए भेजा। दरवाज़ा इतना बड़ा था कि वे काफ़ी समय से उसे खोल नहीं पा रहे थे। अली रज़िअल्लाहु अन्ह ने दरवाज़े को उसके तखतों से उठाया, और असहाब-ए-किराम किले के अंदर दाखिल हो गए। उन्होने दूसरे बहुत सारे मुआजिज़ात मुख्तलिफ़ किताबों में लिखे हैं, खासतौर से **शवाहिद-उन-नुबुव्वा** मोला अबद उर रहमान जामी रहिमा-हुल्लाहु तआला के ज़रिए, और हुज्जतुल्लाहि **अल-ल-आलेमीन** यूसुफ़ नभानी के ज़रिए। **शवाहिद-उन-नुबुव्वा** असली फारसी में है और साथ के साथ तुर्की तर्जुमा भी है।

**मुहम्मद अलैहिस्सलाम के जौहर**

यहाँ हज़ारो किताबें है जो मुहम्मद अलैहिस्सलाम के जौहर के बारे में बताते हैं।जौहर का मतलब है आला मेयार।

मंदरजाज़ेल आपके **86** आला मेयार हैं।

**1-** सारी मखलूक में, मुहम्मद अलैहिस्सलाम की रूह पहली थी जिसे तखलीक किया गया।

**2-** अल्लाह तआला ने आपका नाम अर्श पर, जन्नत के बाग़ो में, और सातो आसमानों में लिखा।

**3-** ये भाव, **"ला इलाहा इल-ल-अल्लाह मुहम्मदुन रसूलुल्लाह**(कोई माबूद नहीं सिवाए अल्लाह तआला के, और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उसके नबी हैं)," एक गुलाब की पत्तियों पर लिखा हुआ है जो इंडिया में उगता है।

**4-** बसरा के ईद-गिर्द एक दरिया में एक मछली पकड़ी जाती है जिसकी सीधे पहलू में अल्लाह का नाम लिखा हुआ है और उल्टी तरफ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाम लिखा हुआ है।वहाँ और भी बहुत सारे इसी तरह के वाक्यात हैं।**एक मछली की तारीख** जिसे लंदन में **1975** में छापा गया, उसके **100** वे सफ़हे पर एक मछली की तस्वीर है जिस पर लिखा यह कहता है, उसकी पूँछ पर शानउल्लाह"।वहाँ यह भी कहा गया है कि पूँछ के दूसरी तरफ़ यह जुमला लिखा है ला इलाहा इल-ल-अलाह।इस असर के और भी बहुत सारी मिसालें हैं।।

**5-** वहाँ ऐसे भी फरिश्ते हैं जिनकी वाहिद ड्यूटी है मुहम्मद अलैहिस्सलाम के नाम को कहते रहने की हैं।

**6-** आदम अलैहिस्सलाम के आगे झुकने को सारे फरिश्तों को हुकूम हुआ था उसकी वजह थी कि उनके माथे पर मुहम्मद अलैहिस्सलाम का नूर(रोश्नी,हालो) था।

**7-** अज़ान(नमाज़ के लिए मुकर्रर करदा कॉल।) जो आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने में होती थी उसमें मुहम्मद अलैहिस्सलाम का नाम भी था।

**8-** अल्लाह तआला ने अपने हर एक नबी को हुकूम दिया ः "अगर मुहम्मद अलैहिस्सलाम तुम्हारे वक्त में नबी हों तो अपने लोगो को उनमें यकीन करने को कहो।"

**9-** तोरह इंजील(बाइबल)और ज़बूर के passages में मुहम्मद अलैहिस्सलाम आपके चार खलीफ़ा, (यानी,अबू बकर,उमर, उसमान और अली रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) आपके सहाबा, और आपकी उम्मत(मुसलमानो) के लिए सराहना और तारीफ़ मौजूद है।अल्लाह तआला ने मुहम्मद का लफ़्ज़ अपने खुद के नाम महमूद से लिया है और इसे नाम के तौर पर अपने हबीब(प्यारे,महबूब, सबसे ज़्यादा महबूब) को दे दिया।अल्लाह तआला ने अपने हबीब को अपने नाम 'रऊफ़' और रहीम से नवाज़ा।

**10-** जब आप दुनिया में आए तो फरिश्तों के ज़रिए आपकी खतना की गई।

**11-** जब आप दुनिया में वारिद होने वाले थे तो बहुत सारी निशानियाँ दिखाई दीं जो आपके ज़हूर की इतलाअ देती थीं।ये तारीख की किताबों साथ के साथ मोलिद की किताबों में

लिखा है, (यानी, किताबें जो आलमियत के सब से आल की पैदाईश और उन वाक्यात पर मुबनी हैं जो जन्म से पहले, इसके दौरान, और इसके बाद पर लंबी चौड़ी बातों पर मुबनी है।)

**12-** आपको दुनिया में आने के बाद, शैतान आसमान पर नहीं चढ़ पाया या फरिश्तो से कोई जानकारी चुरा पाए।

**13-**जब आप दुनिया में आए, तो सारे ज़मीन के बुत और मुर्तियॉ जिनकी इबादत की जाती थी वे सब उलटे मुँह गिर गए।

**14-** फरिश्ते आपको झुला झुलाते थे।

**15-** जब आप झुले में होते थे तो आप चाँद से बाते करते थे, जो आपकी उंगली की हरकत से इधर उधर होता था।

**16-** आपने झुले में ही बोलना शुरू कर दिया था।

**17-** एक बच्चे की तरह, जहाँ कहीं भी आप जाते थे, एक बादल आपके सिर के ऊपर चलता था, लगातर आपकी अपने साये में हिफ़ाज़त करता था। यह मोअजिज़ा आपकी नब्बुव्वत के शुरू होने तक जारी रहा।

**18-** एक बार, जब आप तीन साल के थे, एक बार फिर, जब आपकी नबुव्वत आपको बताई गई जब आप **40** साल के थे, और एक बार फिर, जब आप **52** साल के थे और मिराज की रात में आपको आसमान पर उठाया गया, फरिश्तो ने आपके सीने को साफ़ किया, आपके दिल को निकाला, और जो बेसिन वे जन्नत से लाए थे उसमें उसे धोया।

**19-** हर नबी के सीधे हाथ पर नबुव्त की मोहर होती है। मुहम्मद अलैहिस्सलाम की कंधे के ब्लेड की जिल्द पर, आपके दिल से लाइन पर थी। जब जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आपका दिल धोया और आपका सीना बंद किया, तो उन्होने आपके पीछे मोहर लगा दी जो वे जन्नत से लाए थे।

**20-** आप पीछे क्या है वे भी देखते थे साथ के साथ आगे वाली चीज़े भी देखते थे।

**21-** आप अधेंरे में भी उसी तरह देख लेते थे जैसे कि रोश्नी में।

**22-** आप नक्षत्र टोरस [बुल] में सात सितारों के झुरमूट को जिसे Pleiades कहा जाता है देख लेते थे, और उनके नम्बर बताते थे। ये सितारों का झुरमुट सात बहने भी कहलाता है।

**23-** आपका थूक कढ़वे पानी को मीठा, करता था बीमार लोगों का इलाज करता था और बच्चों को दूध की तरह खिलाता था।

**24-** जबकि आपकी मुबारक आँखे सोती थीं, तो आपका मुबारक दिल जागा रहता था। ये सारे नबियों अलैहिम उस-सलावातो व त- तसलीमत की आम खासियत थी।

**25-** अपने पूरी ज़िंदगी में आपने कभी उबासी नहीं ली। न ही किसी दूसरे नबी अलैहिम-उस-सलवातो व-त- तसलीमात ने ली।

**26-** आपका पसीना एक गुलाब की तरह खुशबूदार बू रखता था। एक गरीब आदमी आपके पास आया कि उसे अपनी बेटी के रिश्ते के लिए मदद चाहिए। उस वक्त मुबारक नबी के पास उसे देने के लिए कुछ नहीं था। इसलिए आपने अपना थोड़ा पसीना एक छोटी बोतल में रखकर उस आदमी को दे दिया। जब भी लड़की थोड़ा सा पसीना अपने ऊपर लगाती, उसके घर में मुश्क की खुशबू आती।

**27-** हालाँकि आप दरमियाने कद के थे, आपके सामने जब कोई लम्बे खड़े होते तो आप उनसे लम्बे लगते।

**28-** जब आप सूरज या चाँद की रोशनी में चलते तो आपकी परछाई कभी ज़मीन पर नहीं पड़ती।

**29-** मक्खियाँ, मच्छर या दूसरे कीड़े आपके जिस्म पर या जो भी आप पहनते उस पर नही उतरते थे।

**30-** आपके अंदुरूनी कपडे कभी गंदे नही होते चाहे आपने उन्हें कितना ही लम्बा पहने हो।

**31-** जब भी आप चलते, तो फरिश्ते आपके पीछे चलते। आपके सहाबी रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन आपके आगे चलते थे, उन्हें अपने पीछे "फरिश्तो के लिए" जगह खाली छोड़ने के लिए कहते थे।

**32-** जब आप एक चट्टान पर चढ़ते, तो आपका पैर चट्टान पर निशान बना देता। दूसरी तरफ़, जब आप रेत पर चलते, तो आप कोई पैरों के निशान नहीं छोड़ते। जब आप खुले में रफ़ाए हाजत करते तो, ज़मीन अलग हो जाती, पैशाब या मल अंदर ले लेती, और खुशबूदार बू फैला देती। ऐसी ही मामला दुसरे सारे नाबियों के साथ भी था।

**33-** जब आप सुनते कि कुछ लोगों ने अपना खुन पी लिया जोकि सींगी के ज़रिए निकाला गया था, तो आप फरमाते, "**दोज़ख की आग उसे नहीं जलाएगी** (जो ऐसा कर रहा है)।"

**34-** आपका सबसे बड़ा मोअजिज़ा मिराज पर जाना था। जन्नत के एक जानवर जिसे बुराक कहा जाता है आपको उस पर मक्का से यरूशलेम, और फिर आसमानों से 'अर्श ' पर ले जाया गया। आपको वहाँ गैर मामूली चीज़ें दिखाई गई। आपने अल्लाह तआला को असल में देखा लेकिन इस तरह से जो इंसानी इल्म से परे है। [ये देखना दुनिया के मामले से बाहर है यानी, आखिरत में।] एक लम्हे में आपको वापस घर ले आया गया। किसी और नबी को मिराज के मोअजिज़े नवाज़ा नहीं गया।

**35-** ये आपकी उम्मत (मुसलमानों) के लिए फर्ज़ (ज़रूरी) बना दिया गया के वे अपनी ज़िंदगी में एक बार सलावात पढ़ों( इस दुआ में एक मुसलमान मुबारक नबी पर, और नबी के घरबार, आपकी सारी औलाद जो दुनिया के खात्में तक आएँगी सब पर दुआ करता है। दुआ ये हैः **"अल्लाहुम्मा सल्ले अला सयैददना मुहम्मदीन व अला आलि सयैदना मुहम्मद"** ये बताया गया बरताव था कि जब भी तुम कहो, लिखो, सुनो या पढ़ो मुबारक नबी का नाम तो इस दुआ को बोलो।) (एक खास दुआ जिसे कहते हैं)। अल्लाह और फरिश्ते भी, लगातार सलवात की दुआ और सलाम कहते रहते हैं।

**36-** सारे फरिश्तों और इंसानो में, आपको सबसे ज़्यादा इल्म मिला है। अगरचे आप उम्मी थे यानी आपने किसी से कुछ नही सीखा। अल्लाह तआला ने ही आपको हर चीज़ बताई। जैसे आदम अलैहिस्सलाम को हर चीज़ बताया गया था, इसी तरह आपको हर चीज़ का नाम और इल्म बताया गया।

**37-** आपको आपकी उम्मत के सारे नाम पता कराए गए और सारे वाक्यात जो उनके बीच में हुए (और होंगे) उनका पता कराया गया।

**38-** आपकी दिमाग़ी काबलियत सारे दूसरे इंसानों पर फ़ौकियत रखती है।

**39-** आप सारी खुबसुरत आखलाकी सिफ़ात और आदात के साथ मुकम्मल थे जो आलमियत के पास हो सकते हैं। जब अज़ीम शायर उमर बिन फरीद से पूछा गया कि वे अल्लाह के नबी की तारीफ़ क्यों नहीं करते, उन्होने जवाब दिया, "मुझे ये अहसास होता है कि मैं आपकी तारीफ़ करने के लायक नहीं हूँ।" कलिमा-ए- शहादत में, अज़ान (या अज़हान) में, इक़ामत में, (मुकर्रर की गई इबादत के दौरान पढ़ने) में तशहहुद (बैठने की हालत और इबादात कहते) नमाज़ में, बहुत सारी इबादतों में, इबादत के कुछ अमाल में और खुतबों में, सलाह देने में, (कही गई दुआओं में) परेशानी के या उसादी के वक्त में, कब्र में, इंसाफ़ की जगह पर, जन्नत में, और सारी मखलूक के ज़रिए बोली गई ज़बानो में, अल्लाह तआला ने आपका नाम अपने खुद के नाम के साथ रखा।

**41-** आपकी सबसे ज़यादा बरतरी है कि हबीबअल्लाह हैं (अल्लाह तआला के प्यारे)। अल्लाह तआला ने आपको अपना प्यारा, एक दोस्त बनाया। वे आपको किसी भी दूसरे शख्स से ज़्यादा या किसी भी फरिश्ते से ज़्यादा प्यार करता है। अल्लाह तआला ने एक हदीस-ए-कुदसी में फरमाया, " **जैसे मैने इब्राहीम** (अब्राहम) **को** (अपने लिए) **खलील बनाया, इसलिए मैने अपने लिए तुम्हें हबीब बनाया।**

**42-** जुहा सूरह की पाँचवी आयत-ए-करीमा, जो अल्लाह तआला के वादे वाज़ेह करती है, " **मैं तुम्हे वो सब दूँगा जो तूम चाहते हो, जब तक तुम पूरे मुतमईन न हो,** [यानी, जब तक तूम कहो, 'काफ़ी'']," अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर हर किस्म की जानकारी ओर बरतरी , इस्लाम के उसूल, आपके दुश्मनो के खिलाफ़ मदद और उन पर जीत, फतूहात और जीत जो आपकी उम्मत के ज़रिए एहसास की गई, और सारे किस्म की सिफ़ारिशों और इज़हार उठाए जाने वाले दिन में, उसने ये सब अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर निछावर किए हैं। जब यह आयत-ए-करीमा नीचे आई, तो मुबारक नबी ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को देखा और फरमाया, " **मैं मुतमईन नहीं होऊँगा अगर मेरी** (वाहिद रूकन) **उम्मत का एक भी दोज़ख में छोड़ दिया जाएगा।"**

**43-** आपका मुबारक दिल हमेशा अल्लाह तआला के साथ होता था, रात में, जब सो रहे होते थे या जागे हुए होते थे, जब साथ में होते थे या जब अकेले होते थे, घर में होते या सफ़र में, जंग के हालात में, जब रोते और जब इसी तरह हँसते। दरअसल ,हर वक्त आपका दिल सिर्फ़ अल्लाह तआला में होता था। अपनी दुनियावी फराईज़ को निभाने के लिए और

अपना दिल वापस इंसानी दुनिया में लाने के लिए, आप फरमाते थे, **"ऐ आएशा! मेरे साथ थोड़ी बात करो** [ ताकि मैं अपने में वापस आ जाऊँ]" और फिर आप अपने सहाबा को देखने बाहर चले जाते, उन्हें सीखाने और तवलीग़ करने के लिए। (ये हिस्सा जो फर्ज़ नहीं है लेकिन जिसे मुसलमान नबी की सुन्नत मानकर अदा करते हैं, और जिसे कहते हैं) सुन्नत सुबह की नमाज़ की घर में अदा करने के बाद और फिर थोड़ी देर के लिए आएशा रज़िअल्लाहु अन्ह के साथ बात करने के बाद, आप फर्ज़ नमाज़ का इंतेज़ाम करने के लिए (सुबह की नमाज़ की दो फर्ज़ रकात) मस्जिद तश्रीफ़ ले जाते थे और सहाबा के साथ अदा करते थे। उस हालत को (बोलते हैं) हसाइस-ए- पैगम्बरी कहते हैं, ( और ये सिर्फ़ खास नबी के लिए होती है)। अगर आप आएशा रज़ी अल्लाहु अन्ह से बात किए बग़ैर बाहर चले जाते तो किसी की ताकत नहीं थी कि आपके चेहरे को देख पाए, आपके चेहरे पर इलाही इज़हार और नूर (रोश्नी, हालो) होने की वजह से।

**44-** अल्लाह तआला ने अपने सारे नबियों को कुरआन-अल-करीम में उनके नामों से ज़िक किया। मुहम्मद अलैहिस्सलाम के ; उसने आपको ताज़ीम के साथ इज़हार किया जैसे कि, **"ऐ मेरे नबी , मेरे पैग़म्बर।"**

**45-** आपकी तकरीर नियायत साफ़ और आसानी के साथ समझ में आने वाली थी। आपके पास मुख्तलिफ़ जगहो से मुलाकाती आते थे, और आप अपने मुलाकातियों के साथ उनकी ज़बान में बात करते थे। लोग आपको आदर के साथ सुनते थे। आपने फरमाया, **"अल्लाह तआला ने मुझे खुबसूरत ट्रेनिंग औ तालीम दी है।"**

**46-** थोड़े लफ़्ज़ों में आप बहुत कुछ कह देते थे। आपकी एक लाख से ज़्यादा (बयान कहा जाता है) हदीस-ए- शरीफ़ इस हकीकत का मुज़ाहरा है कि आप **जवामी-उल-कलीम** थे। कुछ आलिमों के मुताबिक, महुम्मद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की चार ज़रूरयात चार हदीस-ए-शरीफ़ के साथ बयान की हैं, जो मंदरजाज़ेल हैः

" **अमाल की जाँच इरादों के मुताबिक की जाती है** (उनको करने में)।"

" **हलाल** (इजाज़त) **वाज़ेह है, और हराम** (ममनुअ) **वाज़ेह है।"**

**" मुद्दई को गवाह पैश करना होता है, और मुद्दालेह को एक हल्फ़ उठाना होता है।"** और

**" जब तक एक शख्स अपने मुसलमान भाई के लिए वो नहीं चाहेगा जो वह अपने लिए चाहता है, तो वह एक मुकम्मल ईमान वाला नहीं बन सकता।"**

इन चारों हदीस-ए-शरीफ़ में से पहली इबादत के अमाल के मुतअल्लिक इल्म के लिए बुनियाद तश्कील करती है, दूसरी वाली लेन देन के (मिसाल के तौर पर खरीदना और बेचना) किराए पर, मुश्तरका मिलकियत, वग़ैरह) मुतअल्लिक इल्म देती है, तीसरी वाली फ़िका और सियासत के मुतअल्लिक इल्म देती है, और चौथी वाली अखलाक और अखलकियात के मतअल्लिक इल्म देती है।

**47-** मुहम्मद अलैहिस्सलाम मासूम थे। आपने कभी गुनाह अंजाम नहीं दिया, न ही जानबुझकर न ही गलती से, न ही बड़े गुनाह न ही माफ़ी लायक गुनाह, न चालीस साल की

उम्र से पहले न ही उसके बाद। आपको कभी भी गंदे तरीके से बरताव करते हुए नही देखा गया।

**48-** ये मज़हबी मंजूरी है मुहम्मद अलैहिस्सलाम पर ये कहते हुए रहमत की दुआ देना, **"अस-सलामु अलैका अयुह-न-नबीयू व रहमतुल्लाही"** , नमाज़ में बैठने वाली हालत के दौरान ।इस्लाम में और कोई दूसरा मज़हबी दावा। ।मंजूरी नहीं है कि तुम दूसरी मखलूक पर, जैसे किसी दूसरे नबी पर या एक फरिश्ते पर रहमतों की दुआ दो, जो नमाज़ की अदाएगी करने में की जाती है।

**49-** ओहद या इकतिदार के मुतालबे के बजाए आपने गरीबी को फौकियत दी।एक सुबह, जिब्राईल अलैहिस्सलाम से बातचीत करते हुए, आपने फरमाया के पिछली रात उनके पास एक निवाला भी खाने को नहीं था।उसी लम्हा इसराफ़ील अलैहिस्सलाम आए और पेशकश की, " जो आपने फरमाया अल्लाह तआला ने सुन लिया, और उसने मुझे भेजा है।किसी भी पत्थर के टुकड़े को आप छुएँ अपने हाथ से, अगर आप चाहे तो, उसे सोने, चाँदी या पन्ने में बदल लें।और आप चाहें तो अपनी नब्बुव्वत को एक फरिश्ते की तरह कर सकते हैं।रसूलुल्लाह ने जवाब दिया, **" मैं एक पैदा हुए गुलाम की तरह नब्बुव्वत चाहता हूँ ,"** और उसी बयान को तीन बार दोहराया।

**50-** जबकि दूसरे नबी अलैहिमुस्सलवातु वतसीमात खास वक्त में और खास मुल्कों में नबियों की तरह खिदमत बतौर रहे, मुहम्मद अलैहिस्सलाम एक नबी की तरह सारी आलमियत और जिन्नातों के लिए दुनिया के खात्में तक इस ज़मीन पर भेजे गए।ऐसे उलमा हैं जो बहस करते हैं कि आप जिन्नातों, जानवरों, पौधों और बेजान मखलूक, यानी सारी मखलूक के नबी थे।

**51-** जो दया अल्लाह तआला ने आप पर निछावर की वो तमाम मखलूकात तक पहुँची और उन्हें फायदा पहुँचाया।ये फायदे मोमिनों के लिए खास हैं।काफ़िर जो दूसरे नबियों अलैहिमुससलावातु वतसलीमात के वक्त में थे उन्हें अज़ाब दिया गया जैसे कि वे अभी तक दुनिया में हैं।फिर उन्हें नेस्तोनाबूद कर दिया गया।वे जो मुहम्मद अलैहिस्सलाम से इंकार करते थे उन्हें दुनिया में अज़ाब नहीं दिया गया।एक दिन आपने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा, " **अल्लाह तआला ने ऐलान किया है कि मैं** (उसकी) **मखलूक के तबकों पर रहम करता हूँ।क्या तुम्हें मेरे रहम में से अपना हिस्सा मिल गया?** जिब्राईल ने जवाब दिया, **"अल्लाह तआला की मुतासिरकुन अज़मत को महसूस करते हुए, मैं हमेशा दहशत के साथ अपनी किस्मत का इंतेज़ार करता था।मैं जब आपके लिए आयात लेकर आया**[सूरह तकवीर की **20**वीं और **21**वीं आयात] **जिससे मुराद थी कि मैं भरोसेमंद हूँ , मैं उस तारीफ़ की वजह से उस खौफ़नाक डर से आराम पा गया, और अपने आपको महफ़ूज़ महसूस करने लगा।क्या वहाँ कोई और चीज़ इससे ज़्यादा दया वाली हो सकती है?"**

**52-** अल्लाह तआला चाहता था कि मुहम्मद अलैहिस्सलाम पूरे तौर पर मुतमईन हो जाएँ।[जैसे कि हमने **42**वीं फज़ीलत में बयान किया, अल्लाह तआला आपको जो भी पसंद

था वो सब देगा जब तक कि आप मुतमईन महसूस न करें। ये हकिकत सुरह ज़ोहा में ऐलान की है।]

**53-** दूसरे नबियों ने काफ़िरो के इल्ज़ामों की अपने खुद की तशखीस की। दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ने मुहम्मद अलैहिस्सलाम के ऊपर जो इल्ज़ाम लगाए गए थे उनके खुद जवाब के देकर आपका दिफ़ाअ किया।

**54-** मुहम्मद अलैहिस्सलाम की उम्मत की तादाद दुसरे नबियों अलैहिमुस्सलवातु वतसलीमत की उम्मत की कुल तादाद से ऊपर है।

**55-** जैसे कि **मवाहिब-ए-लदुन्निया** किताब में लिखा है, वहाँ एक बड़ी मशहूर हदीस-ए-शरीफ़ है जिससे वाज़ेह है, " मैने अल्लाह तआल से मिन्नत की कि मेरी उम्मत की कभी दलालत पर एक राय मत करना (कोई चीज़ गलत, इनहेराफ़, बिदअत)। **उसने मेरी मिन्नत सुन ली।** एक दुसरी हदीस-ए-शरीफ़ मंदरजाज़ेल पढ़ी जाएगीः " **अल्लाह तआला तीन चीज़ो के खिलाफ़ तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगाः पहली; वे तुम्हें दलालत पर इत्तेफ़ाक राय करने से मफफ़ूज़ करेगा। दूसरा; एक मुसलमान जो छुत से मरेगा वो उतना ही सवाब** (रहमतें) **हासिल करेगा जैसे कि उसने शहादत हासिल की हो। तीसरी; अगर दो सालेह** ( पाक, सच्चे) **मुसलमान एक मुसलमान की अच्छाई की तसदीक करदें तो, वो तीसरा मुसलमान जन्नत में दाखिल होगा।"** और वहाँ एक और हदीस-ए-शरीफ़ है जिससे वाज़ेह है, "**मेरे सहाबा के दरमियान मतभेद,** (मज़हबी अमाल के मुतअल्लिक कुछ छोटी तफ़सीलात पर,) **वो** (अल्लाह तआला) **के** (फल) **तुम पर रहम है।**"दुसरी इसी तरह की हदीस-ए-शरीफ़ से बयान है, "**मेरी उम्मत के दरमियान मतभेद,** [जो मुख्तलिफ़ तरीकों को पैदा करे, मसलक, इबादत के अमाल के मुतअल्लिक ,] **दया है** (अल्लाह तआला की)।" जैसे कि आपकी उम्मत (मुसलमान) अपने आपको सच्चाई और सही तरीका ढूँढने में डालती है, तो उनके दरमियान राय में मतभेद आ सकते हैं। उनकी थकान (अल्लाह तआला की) दया को मुंतकिल करती है। इस हदीस-ए-शरीफ़ को दो किस्म के लोगो के ज़रिए इनकार कर दिया गया। पहला वाला वो शख्स जिसे 'माजिन' कहते हैं, और दूसरी किस्म को 'मुलहिद' कहते हैं। माजिन एक धोखबाज़ शख्स है जो अपनी दुनियावी इच्छाओं की वसूली के लिए मज़हब को पामाल करने की कोशिश करेगा। और मुलहिद एक बिदअती है जो एक काफ़िर बन जाता है जब आयत-ए-करीमा के मआनी को अपने दुनियावी फायदे के मुताबिक करने के लिए इसे बिगाड़ देता है। जैसे कि याहया बिन सईद ने देखा, इस्लामी आलिमों ने चीज़ों को असान बना दिया। जबकि उनमें से एक कहता है कि कुछ चीज़े (एक अमल,बरताव,वग़ैरह) हलाल हैं (इस्लाम के जरिए इजाज़त दी गई), दूसरे कहते हैं कि ये हराम है (ममनुअ)। कभी कभी, जबकि वे पाक लोगो से कहते हैं कि एक मखसूस बरताव हलाल है, कभी शरारत के वक्त , उसी बरताव को वे कहते हैं 'हराम'।

जैसे कि ऊपर बताई गई हदीस-ए-शरीफ़ इशारा करती है, इजमा-ए-उम्मत, जिसका मतलब है उन माहिर आलिमों जिन्हें मुजतहिद ([इजतिहाद का मतलब है कुरआन अल करीम

में आयत-ए-करीमा के अलामती मआनी का तर्क करना। एक आलिम जो काफ़ी इजतिहाद की अदाएगी के लिए सबसे पहले चाहिए होता है इस्लाम की बुनियादी ज़रूरयात को, कुरआन अल करीम को, सारी हदीस-ए-शरीफ़ पूरे ब्यौरे और तफ़सीली दाखले, जैसे कि हर आयत-ए-करीमा के नज़ूल का वक्त, कहाँ और किस वाक्ये पर इसका नजूल हुआ था, वो आयत-ए-करीमा जो दूसरों को बातिल कर देती है, कौन सी किसको बातिल कर रही है इन सबको सीखना, और इसके आगे, वक्त की सारी साईसी शाखाओं को सीखना, जो बदले में लचकदार सालों और खुद कुरबानी चाहती है। यह किताब सारी ज़रूरयात को वाज़ेह करने के लिए बहुत छोटी है। यहाँ हमारा मकसद है अपने पढ़ने वालों को इजतिहाद के काम के अध्भूत हजम की एक आइडिया उजागर करना। वो आलिम जिन्होने अपनी दुनियावी ज़िंदगी इजतिहाद के ग़ैर मामूली तौर पर दर्दनाक काम के लिए सर्फ़ कर दिया इतनी अज़ीम हिमायत ऐसा करके उन्होने की है कि हमारी तरफ़ से कोई शुक का दर्जा उनकी अदाएगी करने में कम पड़ेगा। अल्लाह तआला उनको आखिरत में सवाब देगा! बराएमेहरबानी ज़्यादा जानकारी के लिए **सुन्नी रास्ता** और **सआदत-ए-अबदिया** के पाँचवे गुन्चे को पढ़िए ये **आदिल-ए-शेरिया** में से एक है। दुसरे लफ़्ज़ो में, ये इस्लाम के बुनियादी ज़राए में से एक है। चार मुख्तलिफ़ (तरीके , या इस्लाम के रास्ते जिसे कहते हैं) मसालिक , (जिसके नाम हैं, **हंफ़ी, शफ़ि-ई, मालिकी** और **हंबली**) सच्चे और सही हैं। ये मसालिक (अल्लाह तआला के) मुसलमानो के लिए दया है।

**56-** रहमतें जो रसूलुल्लाह को दी गई वे दूसरे नाबियों को दी गई रहमतों से दुगनी हैं। जब एक शख्स एक इबादत का अमल करता है या दूसरा पाक अमल अल्लाह तआला के ज़रिए कबूल किया हुआ, तो न सिर्फ़ ये शख्स बल्कि उसका मज़हबी उस्ताद भी इस पाक अमल के लिए इनाम दिया जाता है। नएमतें जो उस्ताद के उस्ताद को दी जाएँगी वे उस्ताद को दी गई नएमतों से चार गुना ज़्यादा हैं। जबकि तीसरे उस्ताद को पीछली जाँच में आठ से दी जाने वाली बरकतें सौलह गुना मिल कर हैं। इसी तरह, पीछली जाँच में हर अगला उस्ताद दुगनी बरकत पाएगा जिस तरह पिछला वाला अपने आप अल्लाह के नबी तक, उस्तादों की कड़ी न पहुँच जाए। मिसाल के तौर पर, पीछे से **20**वां उस्ताद बावन हज़ार बयालिस सौ अठठासी मरतबा (**524288**) ज़्यादा बरकतें हासिल करेगा। मुहम्मद अलैहिस्सलाम आपकी उम्मत के हर एक के ज़रिए किए गए पाक काम के लिए ईनाम पाएँगे। इस हिसाब को मद्दे नज़र रखते हुए जिसके ज़रिए मुहम्मद अलैहिस्सलाम को हर अदा किए हुए पाक काम के लिए ईनाम दिया जाएगा, कोई नहीं जानता सिर्फ़ अल्लाह तआला उस ईनाम की मिकदार जानता है जिसे मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने लुतफ़ उठाया। ये बयान किया गया है (इस्लामी आलिमों के ज़रिए) कि सलफ़-ए- सालिहीन (यानी, शुरू के इस्लामी आलिम) अपने बाद वालो से आला थे। ये बरतरी ऊपर बताए गए हिसाब की रोशनी में लाज़मी तौर पर ज़ाहिर है। ।

**57-** आपको नाम से बुलाना, आपकी मौजूदगी में ज़ोर से बात करना, दूर से आप पर चिल्लाना,याआप से आगे चलना ये सब ममनुअ (हराम) था।दूसरे नबियों अलैहिमुससलावातु वतसलीमात की उम्मतें उन्हें उनके नामों से बुलाने की आदी थीं।

**58-** इसराफ़ील अलैहिस्सलाम, भी कई बार मुहम्मद अलैहिस्सलाम की ज़ियारत को आये।दूसरी तरफ़ , दूसरे नबियां अलैहिमुससलावातु वतसलीमात, के पास सिर्फ जिब्राईल अलैहिस्सलाम दौरा किया करते थे।

**59-** आपने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनके अपने ही फरिश्ते वाले रूप में दो बार देखा।इसके बरअक्स, फरिश्ते कभी भी दूसरे नबियों अलैहिमुससलावातु वतसलीमात के सामने अपने खुद के फरिश्ते के रूप में नहीं आते थे।

**60-**जिब्राईल अलैहिस्सलाम आपके पास **24** हज़ार बार आए।दूसरे नबियों अलैहिमुससलावातु वतसलीमात, मै मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़्यादा; **400** दोरे हासिल किए ।

**61-** अल्लाह तआला की कसम मुहम्मद अलैहिस्सलाम के नाम में खाने की इजाज़त है।किसी दूसरे नबी या फरिश्ते के नाम में इसकी इजाज़त नहीं है।

**62-** मुहम्मद अलैहिस्सलाम की मुबारक बीवियों रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुमा से आपकी रहलत के बाद शादी करना ममनुअ था।इस्लाम ने उन्हें मोमिनों की माँओं की तरह ऐलान किया था।दूसरे नबियों अलैहिमुस्सलावातु वतसलीमात की बीवियाँ या तो उनके लिए नुकसानदायक थी या उन सब के लिए कम से कम किसी फायदे की नहीं थीं।इसके बरअकस, मुहम्मद अलैहिस्सलाम की मुबारक बीवियाँ रज़िअल्लाहु तआला अन्हुमा आपको दुनियावी और अगली दुनिया एक जैसे सारे मामलात में आपका साथ देती थीं।सब्र के साथ फिर भी शुक्रगुज़ारी के साथ गरीबी का सामना किया, और इस्लाम के फैलाव के लिए सराहनीय खिदमात अंजाम दीं।

**63-** रसूलुल्लाह की मुबारक बेटिया और बीवियाँ रज़िअल्लाहु तआला अन्हुमा दुनिया कि आला खातून हैं।और आपके सहाबा भी नबियों से नीचे इंसानियत में आला दर्जो पर हैं।उनका शहर मक्का-ए-मुकर्रमा और दूसरी, मदीना-ए-मुनव्वरा इस ज़मीन पर सबसे कीमती शहर हैं।आपकी मुबारक मस्जिद(मस्जिद-ए-शरीफ़) में एक रकात नमाज़ अदा करना भी उसी तरह रहमत का हकदार है जिस तरह एक हज़ार रकात की नमाज़ अदा करने से हासिल होगा।यही उसूल दूसरी किस्म की इबादत पर भी लागू होता है।आपकी कब्र और आपकी मिंबर के बीच में जगह जन्नत का बाग़ है।आपने फरमाया, “ **एक शख्स जो मेरे गुज़रने के बाद मेरी ज़ियारत को आता है वो इसी तरह है जैसे वह मुझ से मेरी हयात में मिला हो।एक मोमिन जो किसी एक हरमऐन में मर गया हो उठाए जाने वाले दिन पर सलामती के एहसास के साथ दोबारा उठाया जाएगा।**दो मुबारक शहर मक्का और मदीना को **हरमैन** कहा जाता है।

**64-** आखिरत में रिश्तेदारी चाहे खुन की हो या निकाह(इस्लाम के ज़रिए किया गया शादी का मुहाएदा) के ज़रिए कोई कीमत नहीं रखती।रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रिश्तेदारों के साथ ऐसा नहीं है।

**65-** सच्चे मोमिन आपके मुबारक नाम के साथ कभी दोज़ख में दाखिल नहीं होंगे।

**67-** आपने जो भी बयान दिया है वह सच है, और जो आपने किया है वे भी।हर इजतिहाद आपके ज़रिए अदा किया गया उसे अल्लाह तआला के ज़रिए सही किया गया।

**68-** आपसे प्यार करना हर एक पर फर्ज़ है।आपने फरमाया, **" वह जो अल्लाह तआला को चाहता है वह मुझे चाहता है।"** आपसे प्यार करने के इशारे का मतलब है कि आपके मज़हब को, आपके तरीके, आपकी सुन्नत, और आपकी अखलाकी खुबसूरती को अपनाना।आपको ये कहने का हुकूम दिया गया, जैसा कि कुरआन अल करीम में वाज़ेह है, **"अगर तुम मेरी तकलीद करोगे, अल्लाह तआला तुम से प्यार करेगा।**

**69-** आपकी अहल-ए-बैत से प्यार करना वाजिब है।आपने फरमाया, **" वो जो मेरी अहल-ए-बैत से दुश्मनी रखेगा वह एक मुनाफिक** (धोखेबाज़) **होगा।"** आपकी अहल-ए-बैत आपके रिश्तेदार हैं जिन्हें ज़कात(इस्लाम की वाजिब खैरात जिसे कहा जाता है) अदा करने से मना किया गया।वे आपकी बीवियाँ और मोमिन हैं जो आपके दादा हाशिम की नस्ल से हैं।वे एक ही वक्त में उक्ले के ,ज़ाफर तय्यर के और अब्बास के अली हैं।

**70-** आपके सारे सहाबा रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन को प्यार करना वाजिब है।आपने फरमाया, **" मेरे बाद मेरे सहाबा पर दुश्मनी को बढ़ावा मत देना। ।उन्हे प्यार करने का मतलब है मुझे प्यार करना।उनकी तरफ़ दुश्मनी का मतलब मेरी तरफ़ दुश्मनी रखना है।जो उन्हें सताएगा वे मुझे सताएगा।जो मुझे सताएगा वह अल्लाह तआला को सताएगा।और जो उसे सताएगा अल्लाह तआला उन्हें अज़ाब देगा।"**

**71-** अल्लाह तआला ने मुहम्मद अलैहिस्सलाम के चार मददगार तखलीख किए, दो जन्नत में और दो ज़मीन पर।हसबे तरतीब वे हैं जिब्राईल, मिकाईल, अबू बकर, और उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

**72-** हर इंसान का एक जिननी दोस्त होता है, जो एक शैतान एक काफ़िर होता है, और जो हमेशा उसके दिल में शक डालता रहता है, उसके ईमान(यकीन) को लेने की कोशिश करता रहता है और उसे गुनाह का मुतकिब कराता रहता है।रसूल अलैहिस्सलाम ने अपने जिननी दोस्त को इस्लाम में तबदील कर दिया।

**73-** हर शख्स जो बालिग़ होने की उम्र में पहुँचने के बाद मरता है मर्द और औरत एक जैसे, उनकी कब्रों में मुहम्मद अलैहिस्सलाम के बारे में सवाल किया जाएगा।ये सवाल, " तुम्हारा रब(मालिक, ) कौन है" इसके बाद ये सवाल पूछा जाएगा, तुम्हारा नबी कौन है?"

**74-** मुहम्मद अलैहिस्सलाम की हदीस-ए-शरीफ़ को पढ़ना(या किरअत करना) एक इबादत का काम है।एक शख्स जो ऐसा करेगा उसे नेयमतें(सवाब) दी जाएंगी।और ये ज़्यादा

नेयमतों का सवब वनेगा अगर इस इवादत के काम को दूसरे सवाव वाले अमाल के साथ करेगा जिसे कहते हैं मुस्तहव ( मुस्तहब का मतलव है वरताव, एक अमल, एक वयान, एक इरादा, या एक सोच, जिस के लिए अल्लाह तआला आखिरत में नेयमतें देगा। पाक अमाल के लिए नेयमतें जो दी जाएंगी वे इस्लामी अदव में **सवाब** कहलाएंगे। ) हदीस-ए-शरीफ़ को पढ़ने से पहले वज़ू करना चाहिए, साफ़ कपड़े पहनने चाहिए, अच्छी खुशवू छिड़कनी चहिए, हदीस-ए-शरीफ़ की किताब को (अपनी नाफ़ से) किसी ऊँची जगह पर रखना है, जो शख्स इनको पढ़ रहा है उसे किसी नए आने वाले से मिलने के लिए खड़ा नहीं होना चाहिए, (अगर वहाँ कोई एक है), और जो इसे सुन रहे हैं उनके लिए है कि वे आपस में वात नहीं करें लोग जो हदीस-ए-शरीफ़ को आदतन पढ़ते हैं उनके चेहरे चमकदार, रोशन और सुंदर होते हैं। एक ही आदात (जिन्हें आदाव कहा जाता है) कुरआन-अल-करीम के पढ़ने (या किरअत करने) में ध्यान रखना चाहिए।

**75-** जव रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की रहलत का वक्त नज़दीक आया तो, जिव्राईल अलैहिस्सलाम आपके पास आए, बताया कि अल्लाह तआला ने अपको सलाम (सलामती और नैक खुवाहिशात) भेजा और पूछवाया कि वे कैसा महसूस कर रहे हैं मज़ीद ये कि मौत वहुत करीव है। फिर उन्होने आपको आपकी उम्मत के मुतअल्लिक वहुत ज़्यादा खुशखवरियाँ दीं।

**76-** आपकी मुवारक रूह निकालने के लिए, अज़राईल अलैहिस्सलाम (मौत का फरिश्ता) इंसानी भैस में आए और पूछा कि क्या वह “अंदर आ” सकते हैं।

**77-** आपकी मुवारक कव्र में मिट्टी किसी और जगह से ज़्यादा कीमती है, [जन्नत के बागों] या कावा सहित।

**78-** अपनी कव्र में आप हमारे लिए नामालूम ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। आप अपनी कव्र में कुरआन-अल-करीम की तिलावत करते हैं और नमाज़ भी अदा करते हैं। यही मामला दूसरे नवी अलैहिमुससलावातु वतसलीमात के साथ है।

**79-** पूरी दुनिया में, फरिश्ते लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए सलावात पढ़ते हुए सनते हैं, सारी सलवात की दुआएँ वे आपकी कव्र पर ले कर आते है और उसे आप तक पहुँचाते हैं। हज़ारो फरिश्ते रोज़ाना आपकी कव्र पर आते हैं।

**80-** हर सुबह और हर शाम जो आपकी उम्मत ने काम किए और इबादत के अमाल अदा किए वे सब आपको दिखाए जाते हैं। आप लोगों को वो अमाल करते हुए देखते हैं, और अल्लाह तआला से गलती करने वालों को माफ़ी देने के लिए दुआ करते हैं।

**81-** आपकी कब्र पर जाना, औरतों के लिए भी मुस्तहब है। औरतों को दूसरी कब्रों पर जाने की इजाज़त सिर्फ़ उस वक्त है जब वहाँ आस पास कोई मर्द न हो।

**82-** मुबारक नबी की रहलत के बाद और जब आप हयात थे, अल्लाह तआला उन सब लोगो की दुआएँ क़ुबूल करता था जो आपके वसीले से दुआ करते थे और उसकी रज़ा चाहते थे, चाहे वो दुनिया के किसी भी कोने में रहते हों। एक दिन एक गाँव वाला आपकी मुबारक कब्र पर आया और दुआ की, "या रब्बी! ये तेरा एहकाम है गुलामों का अज़ाद करने का। ये तुम्हारे नबी हैं, और मैं तेरा एक गुलाम। अपने नबी की रज़ा के लिए मुझे दोज़ख की आग से अज़ाद करदे!" एक आवाज़ ये कहती सुनाई दी, "ऐ मेरे बंदे! तुमने सिर्फ अपनी आज़ादी के लिए क्यों गुज़ारिश की बजाए इसके कि मेरे सारे बंदो की जानिब से मिन्नत करते? अब जाओ! मैने तुम्हे दोज़ख से आज़ादी दी।"

हातिम-ए- असाम बलही[डी.**237**(**852** सी.ई.)] वसीह पैमाने पर जाने वाले एक औलिया, रसूलुल्लाह की कब्र के पास खड़े हुर और दुआ की, "या रब्बी! मैं तेरे रसूल की कब्र पर हाज़िरी देने आया हूँ। बराएमेहरबानी मुझे खाली हाथ वापस मत लौटाना!" एक आवाज़ ये कहती सुनाई दी, "ऐ मेरे बंदे! मैं अपने प्यारे की कब्र पर तेरा आना क़ुबूल करता हूँ। मैं तुझे माफ़ करता हूँ और उनको भी जो तेरे साथ इस ज़ियारत के दरमियान थे।"

इमाम-ए-अहमद कसतलानी रहमतुल्लाहि अलैह से रिवायत है, " मैं कुछ सालो से एक खास बीमारी में मुबतला था। डॉक्टर इसका इलाज नहीं कर पाए थे। एक रात, मक्का में, मैं अल्लाह के नबी से गिड़गिड़ा के मिन्नत कर रहा था। उस के बाद मैं उस रात सोने को लेट गया, मैने एक शख्स को देखा जिसके हाथ में एक काग़ज़ का टुकड़ा था। काग़ज़ पर इस तरह कहा गया था, यहाँ रसूलुल्लाह की इजाज़त है अहमद कसतलानी की बीमारी के मुतअल्लिक और उसके इलाज का नुस्खा है। जब तक मैं जाग गया, बीमारी पहले से ही जा चुकी थी।"

कसतलानी ने दोबारा बयान कि ः " एक लड़की को मिरगी की बीमारी थी। मैने अल्लाह के नबी से गिड़गिड़ा कर मिन्नत की। सिफ़ारिश करी की ताकि वह लड़की ठीक हो जाए। मेरे सपने में वे जिन्नी लेकर आए जिसने लड़की को मिरगी वाला बनाया था। मैं उसके ऊपर चिल्लाया और उसे बका। उसने कसम खाई कि वह अब कभी दोबारा लड़की को नुकसान नहीं पहुँचाएगा। फिर मैं उठ गया। जल्द ही मैने सुना कि लड़की मिरगी से बहाल हो गई है।

**83-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कब्र से उठाए जाने वाले पहले इंसान होंगे। आप जन्नत का लिबास पहने हुए होंगे। आप (जन्नत के घौड़े) बुराक पर सवार होकर जमा किए जाने वाली जगह (जिसे इस्लामी अदब में महश्र की जगह कहा जाता है) पर जाएगे अपने हाथ में एक झंडा 'लिवा-ए-हम्द' लिए हुए। सारे लोग नबियों समेत इस झंडे के नीचे खड़े होंगे। वहाँ एक हज़ार साल इंतेज़ार होगा, सभी लोगों के लिए एक पूरी तरह से थकाऊ इंतज़ार। परेशान होकर, लोग हर एक नबी से मिन्नत करेंगे आखिरी इंसाफ के शुरू करने के लिए ,आदम से शुरू होगा और फिर दूसरों तक जाएगा, यानी नूह (नोह), से इब्राहीम (अब्राहम),से मूसा (मोसस),और ईसा (जिसस) अलैहिमससलावातु वतसलीमात तक। हर नबी कोई उज़्र देगा और या तो वे अल्लाह तआला के सामने बहुत ज़्यादा शार्मिंदा होंगे या उससे बहुत ज़्यादा खाईफ़ होंगे सिफ़ारिश करने के लिए। आखिर में वे मिन्नत करते हुए रसूलुल्लाह के पास आँएगे। आप सज्दे में जाएंगे और दुआ करंगे, और आपकी सिफ़ारिश/शफ़ाअत कुबूल करली जाएगी। इंसाफ शुरू किया जाएगा, आपकी उम्मत (मुसलमान) के लोगों का फैसला पहले किया जाएगा। फैसले के बाद मुसलमानों को (पुल जो दुनियावी तर्जुबे से वाज़ेह नही हो सकता और जिसे कहते हैं) सिरात को पार करना होगा और जन्नत में दाखिल किया जाएगा। जहाँ कहीं भी वे जाएंगे वे पूरी जगह को रोश्नी से भर देंगे। जैसे ही फातिमा रज़िअल्लाहु अन्ह सिरात को पार करेंगी, एक आवाज़ आएगी, "सारे लोग अपनी आँखे बंद कर लो! मुहम्मद अलैहिस्सलाम की बेटी आ रही हैं।"

**84-** आप छः मुख्तलिफ़ मकामात पर शफ़ाअत करेंगे।

पहले, अपनी शफ़ाअत से जिसे **मकाम-ए-महमूद** कहा जाता है, आप पूरी इंसानियत को जमा किए जाने वाली जगह पर इंतेज़ार के अज़ाब से बचा लेंगे।

दूसरे,अपनी शफ़ाअत से आप वहुत सारे लोगों को वग़ैर हिसाव के वुलावे के जन्नत में दाखिल का सवव वनेंगे।

तीसरे, आप कुछ मोमिनो को अज़ाव से वचाएंगे जिसके वे मुसतहिक होंगे(दूसरी सूरत में अपने गुनाहो के लिए उनको माफ़ी नहीं है)।

चौथे, आप दोज़ख से कुछ वड़े गुनाह किए हुए मोमिनों को वचाएंगे।

पाँचवा, कुछ लोग एक जगह जिसे **अराफ** (जो न तो जन्नत है नही दोज़ख) वोलते हैं वहाँ इंतज़ार कर रहे होगें क्योंकि उनके पाक काम और गुनाह वरावर होंगे।आप उन लोगों की शफ़ाअत करेंगे और वे जन्नत में दाखिल होंगे।

छठा, आप जन्नत के लोगों के वढ़ावे के लिए शफ़ाअत करेंगे।हर एक सत्तर हज़ार लोगों में से जिन्हें आपने शफाअत करके हिसाव किताव से वचाया वे सत्तर हज़ार लोगों के लिए सिफ़ारिश करेंगे, जो वग़ैर हिसाव के वुलावे के जन्नत में दाखिल होंगें।

**85-** ये हदीस-ए- कुदसी([1] एक हदीस-ए-कुदसी अल्लाह का कलाम है जिसे उसने अपने मुवारक नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दिल में डाला।) में ऐलान किया गया था, **" अगर मैं तुम्हें नहीं बनाता, तो मैं कुछ भी नही बनाता।"**

**86-**रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्ल्लम को जो रूतवे का दर्जा जन्नत में हासिल होगा उसे **वसीला** कहा जाता है।यह जन्नत में सवसे ऊँचा मकाम है।जन्नत के पेड़ **सिदरा-त-उल-मुनतहा** पुकारा जाता है जिसकी हर एक शाख जन्नत में रहने वाले तक पहुँचती है, इस तरह हर कोई इसकी शाखों पर मज़ा लेता है, इसकी जड़े इसी ऊँचे रूतवे में हैं।हर एक नेयमत जो जन्नत के लोग लुत्फ़ उठाएंगे वो इन शाखों से ही आएगा।

**अपनी दौलत पर घमंड मत कर, ऐ तू अक्ल के मालिक!**

**ज़िंदगी दुख-सुख के साथ घिरी हुई है, और सबका खात्मा है।**

**जब मौत का वक्त आएगा, तो कोई तुम्हें बचाने नहीं आएगा;**

**अपनी इच्छाओं पर काबू करो, तुम आखिर में मिट्टी में बदल जाओगे।**

सीधे रास्ते पर रहो, अल्लाह तुम्हें बदनामी से बचा लेगा!

अबदी ज़िंदगी के बारे में सोचो, छाया को मत सजाओ;

अहले सुन्नत किताबों को पढ़ो, इस हट को छोड़ दो;

देर होने से पहले जाग जाओ, ज़िंदगी बर्बाद करने में बहुत कम है;

तुम बर्बादी में खत्म हो सकते हो, इसलिए इस बुरी आदत को छोड़ दो।

सीधे रास्ते पर रहो, अल्लाह तुम्हें बदनामी से बचा लेगा!

शैतान तुम पर हँसेगा ,इस अनजानेपन को देखते हुए;

अपने आप में वापस आओ, ऐसा न हो कि वो घिनावना तुम्हारा मज़ाक उड़ाए।

बदमाशी से बचें, फ़र्ख और शौहरत दूसरे की जाएदाद बने;

सारी दुनियावी कदरों में खुबसुरत अखलाकी खासियत ऊपर है।

सीधे रास्ते पर रहो, अल्लाह तुम्हे बदनामी से बचा लेगा।

अल्लाह  तआला के साथ तुम्हारे रिज़क के लिए ज़मानत खड़ी है।

ये तुम्हारे काबिल नहीं कि दूसरों के आगे तुम सिर झुकाओ तुम्हारी ग़फ़लत के

बदले में मसीबत तुम पर आ सकती है, ये तुमको फकीर की सलाह के टुकड़ें हैं।

सीधे रास्ते पर रहो, अल्लाह तुम्हें बदनामी से बचा लेगा!

## रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की खुबसूरत अखलाकी खसूसियात व आदतें

नीचे अल्लाह के नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की **50** खुवसूरत ख़सूसियात और आदातें ः

**1-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इल्म में, इरफ़ान (रोश्नी खयाली,सखाफ़त) में, फ़हम (समझ, अकल,बूझ) में,यकीन (तसदीक,पक्का इल्म)में,अक्ल में, दिमाग़ी काबिलियत में, सखाफ़त में, शफ़कत में, सब्र में, हौसला अफ़ज़ाई में, मुहिब वतनी में, वफ़ादारी में, भरोसे में, बहादुरी में, शान में, शजाअत में, बलाग़त में, बयानात में, निडरता में, खुबसूरती में, वरा (दुनियावी आराम को नज़रअंदाज़ करना जिसके बारे में एक शख्स को शुबह हो कि क्या ये इस्लाम के ज़रिए इजाज़त दिए गए हैं या नहीं) में, पाकी में, मेहरबानी में, इंसाफ़ में, हया (झिझक, शर्म के अहसास) में, जुहद (दुनियावी आराम को नज़रअंदाज़ करने का ऊँचा रूतबा)में, और तक़वा (उन अमाल को नज़रअंदाज़ करना जो ममनुअ हैं) में आप सारे नाबियों से आला हैं। आप दूसरे लोगों को अपने, दोस्त और दुश्मन के खिलाफ़ नापसंददीदा तरज़े अमल के लिए माफ़ कर देंगे। आप कभी उनसे बदला नहीं लेंगे। उहूद की पाक जंग के दौरान जब उन्होने आपके मुबारक गाल को खुन बहाया और आपका मुबारक दाँत तोड़ दिया, तो आपने उन लोगों के बारे में जिन्होने आपको नुकसान पहुँचाया था उन्हें मंदरजाज़ेल दुआएँ दींः **"या रब्बी! इन्हें माफ़ करदे! इनकी नासमझी के लिए इन्हें बख्श दे।"**

**2-** आप इंतेहाई रहमदिल थे। आप जानवरों को पानी देते। आप अपने हाथ पानी के बरतन को पकड़े रहते जब तक कि जानवर पूरी तरह मुतमईन नहीं हो जाते। आप जिस घोड़े पर सवारी करते उसकी गंदगी साफ़ कर देते।

**3-** जब लोग आपको पुकारते, चाहे वे कोई भी होते तो, आप जवाब देते, "लबैक (जी हॉ,सर) कहते।" आप जब साथ में होते तो कभी अपनी टांगे नहीं फैलाते। आप अपने घुटनो पर बैठते। आप जब कभी एक पैदल सवार को देखते जैसे कि आप एक जानवर पर सवार होते तो, आप उस शख्स को जानवर पर अपने पीछे बैठा लेते।

**4-** आप कभी किसी को नीचे नहीं देखते। एक मुहिम के दौरान, आपके साथियों में से एक ने भेड़ को ज़िबह करना शरू किया जिसे उन्होने खाना था, दूसरे ने खुद पर खाल खीचनी शरू कर दी, और दूसरे ने कहा मैं खाना पका लूँगा। जब रसूलुल्लाह ने फरमाया मैं आग की लकड़ियाँ फराहम कर देता हूँ, उन्होने कहा, " ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! बराएमेहरबानी बैठिए और आराम करिए! हम आग की लकड़ियाँ भी ले आँएगे।" इस पर मुबारक नबी ने फरमाया, **"हाँ, तुम कर लोगे! मैं जानता हूँ तुम सारा काम कर लोगे! लेकिन मैं अपने आपको अलग नहीं रख सकता और बैठ जाऊँ जबकि दूसरे**

**काम कर रहे हैं। अल्लाह तआला उस शख्स को नापसंद फरमाता है जो अपने साथियों से अलग बैठे।"** आप खड़े हो गए और आग की लकड़िया ढ़ँढ़ने चले गए।

**5-** जब कभी आप अपने सहाबा रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन के एक ग्रुप में शामिल होते जो एक साथ बैठे होते तो आप कभी सबसे ज़्यादा अहम सीट पर न बैठते। आप अपने आपको पहली ग़ैर मरबूत सीट जो आपने देखी होती उस पर बैठ जाते। एक दिन आप अपनी छड़ी को हाथ में लिए बाहर निकले। लोग जिन्होने आपको देखा खड़े हो गए। आपने उन्हें तंबीह की, **" मेरे लिए ऐसे लोगों की तरह खड़े मत हो जो एक दूसरे के लिए ध्यान में खड़े होते हैं! मैं तुम्हारी तरह एक इंसान हूँ। मैं किसी भी दूसरे शख्स की तरह खाता हूँ। और मैं जब थक जाता हूँ तो बैठता हूँ।"** (आप सरकारे दो आलम बुहत सादगी और नरम मिजाज़ थे लेकिन नजदी वाहाबी और तमाम भटके हुए फिरके हदीसो व कुरानुल करिम की गलत वज़ाहते करते हुए मासुम मुसलमानो को गुमराह करते हैं आप सरकारे दो आलम इन्सानो मे सबसे आला इन्सान और नबीयो मे सबसे आला नबी हैं। वहाबीयो के बारे मे तफसीरी जानकारी के लिए हमारी किताब अंगरेज़ी जासूस के एतराफात किताब को पड़े)

**6-** आप ज़्यादातर अपने घुटनों पर बैठते थे। आप अपने घुटनों के चारों ओर अपनी बाहों को घुमाते हुए देखे जाते थे। आपने अपने मुलाज़मीन को अपनी रोज़मर्रा सरगरमियों से खारिज नहीं किया जैसे कि खाना, तातील वग़ैरह। आप काम में उनकी मदद कर देते थे। आप कभी किसी को मारते हुए या किसी की कसम खाते हुए नहीं देखे गए। अनस बिन मालिक, जो मुस्तकिल आपकी खिदमत थे, से रिवायत है, " मैने अल्लाह के नबी की 14 साल खिदमत की। जो खिदमत उन्होने मेरी की वो उस खिदमत से ज़्यादा थी जो मैने उनकी की। मैने आपको कभी अपने साथी पार या मुझे डाँटते हुए नहीं देखा।"

**7-** आप अपने कपड़ो में पैबंद लगाकर ठीक करते थे, अपनी भेड़ो का दूध धोते थे, और अपने जानवरों को खुद ही खिलाते थे। आप अपनी खरीदारी घर लाते थे। जब सफ़र में होते तो अपने जानवरों को खुद खिलाते। कभी-कभी आप उनकी कंघी भी करते। कभी-कभी आप खिदमात खुद ही कर लेते, और कभी-कभी आप अपने मुलाज़िमों के साथ उनकी मदद कर देते।

**8-** जब कुछ लोग अपने मुलाज़िम आपके लिए भेजते तो, आप मुलाज़िमों के साथ,हाथ में हाथ डालकर घुमते जैसा कि मदीना में ये रिवायत थी।

**9-** आप बीमार लोगों की मिज़ाज पुरसी करते जाते और जनाज़ो में शामिल होते।काफ़िरो और मुनाफ़िकों को मनाने के लिए आप उनके बिस्तर पर पड़े हुए रिश्तेदारो से भी मिलने जाते।

**10-** (मस्जिद में) सुबह की नमाज़ अदा करने के बाद, आप पूछते, " **क्या हमारे कोई भाई घर में बीमार हैं?** (अगर वहाँ कोई है,) **चलो उन्हें देखने चलें।**" जब वहाँ कोई बीमार नहीं होता तो, आप पूछते, "**क्या वहाँ कोई फैमिली है** (जिसे मदद चाहिए) **उनके जनाज़े के साथ? चलो चलें और उनकी मदद करें** ।" अगर वहाँ कोई जनाज़ा होता, तो आप गुस्ल कराने और कफ़न पहनाने में मदद करते, (खास नमाज़ जो एक मुसलमान को दफ़नाने से पहले अदा की जाती है) नमाज़े जनाज़ा अदा करवाते, और कब्रिस्तान तक हुजूम के साथ चलते।जब वहाँ हाज़िरी देने के लिए कोई जनाज़ा नहीं होता तो, आप फरमाते, "**अगर आप को एक सपने की तफ़सीर करानी है तो, मैं करूँगा।मुझे इसे सुनने दो फिर मैं इसकी तफ़सीर बताऊँगा।**"

**11-** जब आप अपने सहाबा मे से किसी एक को **3** दिन तक नही देखते थे तो आप उसकी तफतीश करते थे।अगर मुताअल्लिक सहाबी सफर पे होते तो आप उस पर बरकत का मुतालबा करते।अगर सहाबी के बारे मे कहा जाता कि वह किसी क़ज़बे मे हे तो आप उनसे मिलने जाया करते।

**12-** जब आप रास्ते मे किसी मुसलमान से मिलते, तो सलाम की उम्मीद करते।

**13-** आप ऊँट, घोड़े, खच्चर या गधे की सवारी करते, और कभी-कभी वह जानवर पर अपने साथ पीछे किसी को बैठा लेते।

**14-** आप अपने मेहमानो और सहाबा की खिदमत करते और कहते " **एक मुआशरे का एक नेक और अज़ीम मेम्बर वो हे जो उनकी खिदमत करता है।**"

**15-**आपको कभी ठहाके मार कर हँसते हुए नहीं देखा गया।आप सिर्फ़ खामोशी से मुसकुराते थे।और जब आप मुसकुराते थे तो आपके आगे के मुबारक दाँत नज़र आते थे।

**16-** आप हमेशा रंजीदा और उदास दिखते, और बहुत कम बोलते थे। आप मुसकुराहट के साथ बात शुरू करते थे।

**17-** आप कभी कुछ भी ग़ैर ज़रूरी या बेकार नहीं बोलते थे। आप मुख्तसर, पुरअसर, साफ़, और जब ज़रूरत होती थी तब बोलते थे। कभी-कभी आप एक ही बयान को तीन बार दोहराते थे ताकि इसे अच्छी तरह समझा जा सके।

**18-** आप अजनबियों से मज़ाक करते और उनसे जान पहचान बढ़ाते, बच्चों और बूढ़ी औरतों, और अपनी मुबारक बीवियों पर भी। ताहम ये मज़ाक आपको कभी अल्लाह तआला के बारे में भूलने का सबब नहीं बनते थे।

**19-** आपकी ज़हूर माशाअल्लाह इतना मुतासिर कुन था कि कोई चेहरे पर देखने की हिम्मत नहीं करता था। एक मुलाकाती जो आपके मुबारक चेहरे को देख लेता था उसे पसीना छूट जाता था। जिसे पर आप फरमाते, " **परेशान मत हो! मैं बादशाह नहीं हूँ, और मैं बिल्कुल भी ज़ालिम नहीं हूँ। मैं एक औरत का बेटा हूँ जो सूखा मीट खाती थी।** " ये अल्फ़ाज़ आदमी का खौफ़ भगा देते थे और उसे जो कहना होता था वह कह देता था।

**20-** आपके पास गार्ड या चौकिदार नहीं था। कोई भी मुलाकाती अंदर चला जाता और आप से बाते कर लेता।

**21-** आपके पास नरमाई की ताकत वाली हिस थी दरहकीकत आप इतने ज़्यादा शर्म वाले थे किसी शख्स के चेहरे को देखने में।

**22-** आप एक शख्स की गलती को अपने दाँत से नहीं फैकते थे। आप किसी की शिकायत या एक शख्स के पीछे नहीं बोलते थे। जब आप किसी के बरताव या अल्फ़ाज़ को पसंद नहीं करते तो फरमाते, " **मैं हैरान हूँ कि कुछ लोग ऐसा क्यों करते हैं?** "

**23-** हालांकि आप अल्लाह तआला के प्यारे, सबसे ज़्यादा महबूब और मुंतखिब किए हुए नबी थे, आप फरमाया करते थे, " **तुम्हारे बीच मैं वो हुँ जो अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा जानता हूँ और डरता भी सबसे ज़्यादा हूँ।** " एक और बयान जो आप फरमाया करते थे वो है ः " **अगर तुम वो देख लो जो मैं देख रहा हूँ, तो तुम बहुत थोड़ा हँसोगे और ज़्यादा रोओगे।** " जब आप आसमान में बादल देखते तो आप कहते, " **या रब्बी! इन बादलों के ज़रिए हम पर अज़ाब मत भेजना!** " जब कभी हवा चलती, आप दुआ करते, " **या रब्बी!**

**हमें मूफ़ीद हवाएँ भेजें।"** जब आप गरज सुनते, तो आप दुआ करते, **"या रब्बी! अपने गज़ब के साथ हमारा खात्मा न कर, और अपने अज़ाब के साथ हमें फना न कर,और इससे पहले, हमें अच्छी सेहत अता फरमा।"** जब कभी आप नमाज़ अदा करते, आपके सीने से सिसिकियों की आवाज़ उस वक्त भी आती जब आप कुरआन अल करीम की तिलावत कर रहे होते।

**24-** आपका दिल साहस और बहादुरी की हैरतअंगैज़ डिग्री रखता था।हुनैन की पाक जंग के दौरान, मुसलमान माले ग़नीमत जमा करने इधर-उधर हो गए और आपके साथ तीन या चार लोग रह गए।काफ़िरो  अचानक इजतमाई हमला कर दिया।अल्लाह के नबी उनके खिलाफ़ खड़े हो गए और उन्हें शिकस्त दी।इसी तरह का वाक्या कई बार हुआ।आप कभी पसपा नहीं हुए।

**25- मवाहिब-ए-लदुनिया** के दुसरे बाब के तीसरे हिस्से में अबदुल्लाह इबनी उमर ने जो कहा है उसका हवाला दिया गया है कि उन्होने किसी और को फख्र-ए-काएनात(काएनात के मालिक) से ज़्यादा दिया गया बयान के मुताबिक वहाँ मक्का में एक मशहूर पहलवान था जिसका नाम रुग़ाना था।वे अल्लाह के नबी से कहीं शहर के बाहर मिला नबी ने उससे पूछा, **" ऐ रुगाना! तुम इस्लाम को क्यों नहीं अपना लेते?"** उसका सवाल था, कि क्या तुम अपनी नब्बुव्वत को जाँचवाने के लिए एक गवाह पैश कर सकते हो।इस पर मुबारक नबी ने ललकारा, **"चलो एक कुश्ती का मुकाबला रखते हैं।क्या तुम एक मोमिन बन जाओगे अगर तुम्हारी कमर ज़मीन** से लग जाए?" हाँ मैं करूँगा उसका जवाब था।मैच अभी शुरू ही हुआ था रुग़ाना की कमर ज़मीन से लग गई।बेवकूफ़, रुगाना ने कहा, "ये एक गलती थी।चलो दोबारा कुश्ती लड़ते हैं।" इस तरह मैच को तीन बर खेला गया, और हर बारी रुग़ाना कमर के बल नीचे था।यही वाक्या **शवाहिद-उन-नब्बुव्वा** के तीसरे बाब के शरू के सफ़हो में था।इस हवाले के मुताबिक, रुग़ाना ने तीसरे मैच के बाद कहा, "मेरी इस्लाम में शामिल होने की कोई नियत नहीं है।ताहम मैंने कभी हारने की उम्मीद नहीं की।मैं हैरानी और तारीफ़ से देख रहा हूँ कि तुम मुझ से ज़्यादा ताकतवर हो।" इसलिए उसने अपना , आधा झुण्ड अल्लाह के नबी को तौहफ़े के तौर पर दे दिया और चला गया।अल्लह के नबी झुण्ड को मक्का की तरफ़ चराने लगे, तभी वो वापस भागता हुआ आया, उसने कहा ः

- ऐ मुहम्मद! अगर मक्का के लोग पूछेंगे ये झुण्ड तुम्हे कहाँ से मिला तो आप क्या जवाब दोगे?

- मैं कहूँगा, "रुग़ाना ने मुझे ये तौहफ़े के तौर पर दिया।"

- और फिर क्या कहोगे जब वे पूछेंगे क्यों।

- मैं कहूँगा, "हमने कुश्ती का मैच खेला, मैने उसे हरा दिया और उसकी कमर को ज़मीन से छुआ दिया। इसलिए उसे मेरी ताकात पसंद आई और ये झुण्ड मुझे दे दिया।"

- बराएमेहरबानी उन्हें ऐसा मत बताना! मेरी बेइज़्ज़ती होगी। उन्हें कहना कि मैने तुम्हें ये इसलिए दिया क्योंकि मुझे तुम्हारा बोलने का तरीका पसंद आया।

- मैने अपने रब (अल्लाह) से कभी झूठ न बोलने का वादा किया है।

- फिर मैं ये झुण्ड वापस ले लेता हूँ।

- ठीक है, अगर तुम चाहते हो तो इन्हें वापस ले लो! मैं अपने रब खुश करने के लिए हज़ारो झुण्ड कुरबान कर सकता हूँ।

अल्लाह के नबी का मज़बूत अकीदे और सदाकत के साथ मुहब्बत में गिर कर, रुग़ाना ने (तसदीक का इज़हार जिसे कहते हैं) **कलिमा-ए-शहादत पढ़ा,** (जो पहले मतन में वाज़ेह किया जा चुका है) और एक मुसलमान बन गया।

वहाँ एक और पहलवान था, जिसका नाम अबुल-असवादिल जुमाही था। वह ऊँट की खाल पर खड़ा हो गया, दस दुसरे मज़बूत लोग खाल को खीचने लगे यहाँ तक कि वो टुकड़ों में फट गई, और वे पहलवान को एक इंच भी हिलाने में नाकाम रहे। एक दिन उस शख्स ने अल्लह के नबी से कहा कि वह मुसलमान बन जाएगा अगर वह उनके खिलाफ़ कुश्ती के मुकाबले में हार जाता है तो। इसलिए उन्होने एक मैच खेला, जो पहलवान के कमर के बल सीधा गिरने के साथ खत्म हो गया। अगरचे, वह मोमिन नहीं बना।

**26-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बेहद दरियादिल थे। आप सैकड़ों ऊँट और भेड़ें दान कर देते थे बग़ैर खुद के लिए एक सिर भी रखे हुए बहुत सारे सख्त दिल काफ़िर खैरात के अमाल में आपकी दरियादिली की तारीफ़ करते थे और मोमिन के साथ शामिल हो गए।

**27-** आपको कभी " न ", कहते नहीं सुन गया, जो चीज़ भी आप से पूछी जाती। अगर आप से जो चीज़ पूछी गई है वो आपके पास होती तो आप दे देते। और आपकी खामोशी इस बात की निशानदही करती थी कि ज़रूरत वाली चीज़ आपके पास नहीं है।

**28-** इलाही पेश्कश के बावजूद जहाँ अल्लह तआला ने वादा किया, " **मुझे से पुछो, और मैं तम्हें दूँगा,"** आप दुनियावी माल के लिए नहीं पूछते थे। आप कभी छने हुए गेहूँ के आटे की रोटी नहीं खाते थे। आप हमेशा वग़ैर छने हुए जौ के आटे से बनी रोटी खाते थे। आप कभी पेट भरने तक नहीं खाते थे। आप रोटी खाली खा लेते थे, और कभी खजूरों के साथ, सिरके के साथ, फल के साथ, सूप के साथ या ज़ैतून के तेल में रोटी के टुकड़े भिघोकर आप खा लिया करते थे। आप चिकन के साथ-साथ खरगोश, ऊँट, या हिरन का गोश्त, मछली, सूखा गोश्त, और चीज़ भी खाते थे। आपको अगली टांग का गोश्त पसंद था। आप अपने हाथ से गोश्त पकड़ते थे ओर निवाले लेकर इसे खाते थे। छुरी (और काँटे) को इस्तेमाल करने की भी इजाज़त है। आप अक्सर दूध पीते थे या खजूरे खाते थे। कभी-कभी आप दो या तीन महीनों के लिए अपने घर में कुछ भी खाना या कोई रोटी नहीं बनाते थे, इसलिए आप महीनों के लिए सिर्फ़ खजूरे खाते थे। ऐसा भी मुसतकिल कुछ नहीं खाते थे। आपकी वफ़ात के बाद, ये पाया गया कि एक यहूदी ने तीस किलोग्राम जौ के लिए जो हमारे मुबारक नबी ने उससे लिए थे उसके बदले आपकी डाक का कोट मोहरे के तौर पर रख लिया था।

**29-** आपको कभी ये कहते हुए नहीं सुन गया कि आपको इस किस्म का खाना पसंद नहीं है। आपको जो पसंद होता था आप खाते थे, और आप न सिर्फ़ वो खाना खा लिया करते थे, जो आप पसंद नहीं फरमाते थे, फिर भी आप कुछ नहीं कहते थे।

**30-** आप दिन में एक बार खाते थे। कभी-कभी आप अपना रोज़ाना का खाना सुबह खा लिया करते थे, और कभी-कभी आप शाम में खाया करते थे। जब आप घर जाते थे, तो आप फरमाते, " **क्या कुछ है खाने के लिए?"** अगर जवाब मनफ़ी होता तो आप रोज़ा रख लेते ।

खाने को किसी चीज़ जैसे मेज़ कवर; ट्रे या एक मेज़ के ऊपर रखने के बजाए, आप उसे फर्श पर रख लेते थे, अपने घुटनों पर बैठते थे, और बग़ैर किसी चीज़ पर झुके हुए अपना खाना खाते थे। आप पहले बिसमिल्लाह (बिसमिल्लाह कहने का मतलब है

बिसम-इल्लाह-इर-रहमान-इर-रहीम  का लफ़्ज़ कहना, जिसका मतलब है, "अल्लाह के नाम में, जो रहम वाला और करम करने वाला है।") कहते और फिर खाना शरू करते।आप अपने सीधे हाथ से खाते थे।

**31-** कभी-कभी आप जौ और खजूरो की रकम को अलग रख दिया करते थे जिससे आपकी नौ बीवियों और कुछ खाादिमों का एक साल के लिए गुज़ारा चलता था, उस रकम में से कुछ गरीब लोगों को खैरात के तौर पर दे दिया जाता।

**32-** मटन, शोरबा, कद्दू ,मिठाई, शहद, खजूर, दूध ,क्रीम,तरबूज़, अंगूर, खीरा और ठंडा पानी ये ऐसे खाने(और मशरूबात) थे जो आप खासतौर से पसंद फरमाते थे।

**33-** जब आप पानी पीते, तो आप कहते बिसमिल्लाह, छोटे घूँट लेते, और दो बार रूकते,(इस तरह पीने के अमाल को तीन हिस्सों में बाँट देते)।आप पीने के बाद "**अल-हमदु-लिल्लाह**",कहते (अल हमदु लिल्लाह का मतलब है, "अल्लाह तआला का शुक्र और तारीफ़ करता हुं।")

**34-** दूसरे नबियों की तरह, आप भी खैरात या ज़कात नही लिया करते थे।आप तौहफ़े कुबूल कर लिया करते थे, ज़्यादातर बदले में और ज़्यादा दे देते थे।

**35-** आप कुछ भी जिस किस्म का भी कपड़ा आपको मिलता या जिसको पहनने की इजाज़त थी वो सब पहन लिया करते थे।आप अपने आपको हमवार कपड़े से ढकते थे जो मोटी सामग्री से बनते थे, जैसे एहराम, अपने खुद के चारों और कमर पर कपड़ा लपेटते थे, और कमीज़े पहनते थे और लंबा और काफ़ी कपड़ा पहनते थे।ये कपड़े सूत, ऊन या बाल से बुने होते थे।कभी-कभी आप सफ़ेद लिबास पहनते थे, और कभी-कभी आप हरे कपड़े पहनते थे।ऐसा भी वक्त था कि आपने सिले हुए कपड़े पहने।जुमें में, खास दिनों में जैसे कि ईद के दिनों में, सिफ़ारती दावतों में और जंग के दौरान, आप कीमती कमीज़े और कपड़े पहनते थे।आपके लिबास ज़्यादातर सफ़ेद होते थे।ऐसा भी वक्त होता था जब आप हरा, लाल या काला लिबास पहनते थे।आप अपने बाजुओं को कलाई तक और अपनी मुबारक टांगो को नीचे दरमियानी पिंडली तक ढक कर रखते थे।**शमाईल-ए-शरीफ़ा** इमाम-ए-तिमज़ी रहिमा हुल्लाहु तआला के ज़रिए किताब में मंदरजाज़ेल बयान है : " रसूलुल्लाह एक कुरता(जिसे कमीज़ कहते हैं) पहनना पसंद करते थे।आप की कमीज़ की आसतीने आपकी कलाई तक पहुँचती थी।आसतीनो या कॉलर में कोई बटन नहीं होते

थे। आपके जूते चमड़े के होते थे, और हर जूते में एक पट्टा होता था दो तारे होती थीं जो दो उगंलियों के बीच से जाकर और जूते के आगे पट्टे में जुड़ जाती थीं। लिबास और जूते पहनने में रिवायत का ध्यान रखा जाता था। रिवायत को खारिज करने से शौहरत का सबब बनता था। और शौहरत, बदले में, वो चीज़े थी जिसे नज़रअंदाज़ किया जाए। जब आप मक्का में दाखिल होते तो, आप अपने मुबारक सिर के चारो तरफ़ एक काली पगड़ी बांध लेते थे।"

**36-** आप ज़्यादातर सफ़ेद और कभी-कभी काला मसलिन अपने सिर के इतराफ़ एक पगड़ी की तरह बाँध लेते थे, उसके सिरे को आप अपने दोनो कंधो के बीच में रखते थे। आपकी पगड़ी न तो लबीं होती थी न ही बहुत छोटी ; ये लम्बाई में साढ़े तीन मीटर होती थी। आप अपनी पगड़ी बग़ैर सिर की टोपी के पहनते थे। कभी-कभी आप एक स्कल्कैप एक कार्ड के साथ और बग़ैर पगड़ी के पहनते थे।

**37-** जैसे कि अरब में यह रिवाज़ था, आप अपने बाल अपने कानो के बस्ती सैकशन तक बढ़ाते थे, जब लंबे हो जाते थे तो उन्हें ट्रीम करवा देते थे। आप अपने बालों में खास मरहम लगाते थे। जब कभी आप सफ़र पर जाते तो अपने मरहम की शीशी साथ ले जाते थे। जब आप मरहम लगाते थे, तो आप पहले मरहम को एक मसलीन के टुकड़े से ढकते थे और फिर अपनी टोपी लगाते थे, ताकि मरहम बाहर से बग़ैर इसके नज़र न आए। कभी-कभी आप अपने बालों को लंबा बढ़ने देते थे और आपके दोनो तरफ़ लटके रहते थे। जिस दिन आपने मक्का फतह किया आपके बालों में दो कर्ल थे जो इस तरह लटके हुए थे।

**38-** आप अपने हाथों और सिर पर मुश्क और दूसरी किस्म के खुशबू लगाया करते थे, और अपने आपको मुसब्बर लकड़ी और कपूर के साथ मुअतिर करते थे।

**39-** आपका बिस्तर कच्चे चमड़े से बना होता था जिसमें खजूर के धागे घुसे होते थे। जब उन्होने आपको ऊन से भरा हुआ बिस्तर पेश किया तो, आपने उसे मना कर दिया, ये कहते हुए, **" ए आएशा! मैं अल्लाह के नाम की कस्म खाता हूँ कि अगर मैं चाहूँ तो अल्लाह तआला मेरे साथ हर तरफ़ सोने और चाँदी के ढेर लगा दे।"** कभी-कभी आप कम्बल मैट, लकड़ी के बिस्तर, ज़मीन पर, ऊन से बुनी हुई चटाईयों पर, या फिर सूखी मिट्टी पर सो जाते थे।

[इवनि आविदीन रहिमा हुल्लाहु तआला ने अपने रोज़े वाले बाव के शरू के हिस्से में बताया," रसूलुल्लाह और आपके चार खलीफ़ा जो आपके वाद आए उन्होने वरावर जिन अमाल को किया वे **सुन्नत** कहलाए। (अहमियत के हिसाब से, सुन्नत की दो किस्में हैं। ) (वे अमल जिसे) **सुन्नत-ए-हुदा** कहते हैं उन्हें छोड़ना मकरूह[ ([1] एक अमल, वरताव,एक लफ़ज़ जिसे अल्लाह के नवी ने नज़रअंदाज़ किया अगरचे उसे वराहे रास्त कुरआन अल करीम में मना नहीं किया गया वे **मकरूह** हैं। नवी ने न सिर्फ़ ऐसे वरताव को मना किया, वल्कि आपने मुसलमानों को इन्हें नज़रअंदाज़ करने की सलाह दी। )है। ताहम (अमाल जो) **सुन्नत-ए-ज़ाएदा** हैं उन्हें छोड़ना मकरूह नहीं है।

अवदुलग़नी नवलूसी रहिमा-हुल्लाहु तआला [डी.**1143** (**1731** सी.ई) दमिश्क] ने अपनी किताव **हदीका** में लिखा, " **सुन्नत-ए-हुदा** इवादत का वो अमल है जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अदा किया लेकिन दूसरे मुसलमानों को इसे छोड़ने की सलाह नहीं दी। अगर ये इवादत का वो अमल है जिसे आपने लगातार किया, इसे **सुन्नत-ए-मोअक्कदा** कहते हैं। अमाल जो अल्लाह के नवी आदतन करते थे वो **सुन्नत-ए-ज़ाएदा**, या **मुस्तहव** हैं। इन अमाल की एक मिसाल है कि सीधे हाथ की तरफ़ से शुरूआत करना और जब तुम कुछ फाएदे वाला काम करने लगो, जैसे कि एक घर की तामीर, खाना,पीना, वैठना, खड़े होना[विस्तर पर जाना]अपने कपड़े पहनना, आलत इस्तेमाल करना वगैरह तो सीधे हाथ का इस्तेमाल करो। ये दलालत (इस्लाम से मुनहरिफ़) नहीं है कि इस किस्म की सुन्नत पर ध्यान देना या रिवाज़ के अमाल को वक्त के साथ कायम करना जोकी इस्लाम के कायम के वाद हुइ और जिन्हें हम इजलास में विदत कहते हैं, मिसाल के तौर पर नए गैजेट का इस्तेमाल करना जैसे कि छन्नी, चम्चे इस्तेमाल करने की, आरामदह गद्दों पर सोने की, रेडियो, टेलिविज़न सेट कांफ्रेंस में, स्कूलों में, अखलाकियत की किलासों में और साईंस में इस्तेमाल करने की, सव किस्म के आमद ओ रफ़त इस्तेमाल करने की, और तकनीकी मराहत का फ़ाएदा उठाने की जैसे कि चश्में और कैलकूलेटर सवको इस्तेमाल करने की इजज़ात है। कोई चीज़ जो इस्लाम के वाद कायम कि गई वो **विदअत** कहलाती हैं। चीज़े जो सम्मेलन ए विदअत के दाएरे में आती हें ये हराम (ममनुअ) है ऐसी चीज़ो और ईजदात को इस्तेमाल करना जो मजलिस में विदअत के दायरे में अमल में लाई गई जोकिहराम हैं। **सदाअत-ए-अवदिया** और इस्लामी अख़लाकी (Ethics of islam) मे तफ़सीरी जानकारी मौजूद है। रेडियो, लाऊड स्पीकरों और टेप रिकारडरों को नमाज़, अज़ान की इवादत तवलीगो और खुतवो में इनके इस्तेमाल पर तफ़सीली जानकारी दी गई

है। ये एक बहुत बड़ा गुनाह है कि बिदअत की ईजाद करना या इबादत के अमाल में छोटी सी भी काँट छाँट करना। जिहाद, पाक जंग, ये सब इबादत के अमल हैं। एक जंग में सब तरह के तकनीकी औज़ार का इस्तेमाल करना एक बिदअत का अमल नहीं हैं। क्योकि एक जंग में हर किस्म के साईंसी मिडिया का इस्तेमाल करना इस्लाम का एहकाम है। इबादत के अमाल की अदाएगी में फाएदेमंद सहूलियत की ईजाद ज़रूरी है। फिर भी ऐसी सहूलियात की ईजाद करना जो जो ममनुअ अमाल को बढ़ावा दे या इबादत में कोई तबदीली ईजाद करना ये बिदअत के काम हैं। मिसाल के तौर पर, मिनार पर चढ़ कर अज़ान (अज़ान,इबादत के लिए पुकारना) देना ज़रूरी है। अगरचे एक लाऊड स्पीकर के ज़रिए अज़ान देना बिदअत है। क्योंकि ये एक (इस्लाम का) एहकाम नहीं है कि एक औज़ार के ज़रिए पुकारना। एहकाम बताता है कि पुकारने में इंसानी आवाज़ का इस्तेमाल होना चाहिए। इसके अलावा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नमाज़ के औकात या दूसरे इबादत के अमाल को घंटिया बजाकर , भौंपू बजाकर, या मौसिकी के अलात बजाकर एलान करने के लिए मना फरमाया है।]

**40-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी दाढ़ी मुट्ठी भर से ज़्यादा लम्बी नहीं बड़ाते थे। आप उसे छोटा कर लेते थे जब वे बढ़ जाती थी। [ये सुन्नत है कि मुट्ठी भर लंबी दाढ़ी रखना, और जहाँ आदमियों के लिए दाढ़ी रखना रिवाज़ है वहाँ ऐसी जगहों पर ये वाजिब है। जब ये हद से बढ जाए तो इसे छोटा करना सुन्नत है। एक मुट्ठी भर से छोटी रखना ये एक बिदअत का काम है। ऐसी दाढ़ी को एक मुट्ठी भर तक पहुँचने के लिए बढ़ाना वाजिब है। अपनी दाढ़ी को एक साफ़ करना मकरूह है। हालांकि, जब तुम्हारे पास कोई उज़र हो तो इसे साफ़ करने की इजाज़त है।]

**41-** घर में आपकी मिलकियत में एक शीशा, एक कंधा, एक सुरमेदानी जिसमे आप सुरमा रखते थे जो आप हर रात अपनी आँखो में लगाते थे, एक मिस्वाक, ([1] एक छोटी डंडी (20 सेंटीमिटर लंबी और एक सेंटिमिटर से ज़्यादा मोटी नहीं) एक खास झाड़ी जिसे एराक (साल्वाडोरा परसिका) कहते हैं जो अरब में उगती है उससे काटी जाती है। मिस्वाक के एक कोने को फाइबर में बढ़ा कर और इसे एक टूथब्रश की तरह इस्तेमाल करते हैं।) कैंची, धागा और सूई ये सब कभी गैर हाज़िर नहीं होते थे। आप जब सफ़र पर जाते तो भी ये सब चीज़े अपने साथ लेकर जाते थे।

**43-** आप हर चीज़ को सीधे हाथ से शुरू करने में लुत्फ़ लेते थे और हर चीज़ अपने सीधे हाथ से करते थे। सिर्फ़ एक चीज़ जो आप अपने उलटे हाथ से किया करते थे वो टॉयलेट में अपने आपको साफ़ करना।

**44-** नम्बरें में किए गए कामों के साथ,जब भी मुमकिन हुआ आप बे बेशुमार तादाद की तरजीह देते थे।

**45-** रात की नमाज़ के बाद, आप आधी रात तक सोते थे, फिर उठ जाते थे और बाकी का वक्त सुबह की नमाज़ तक इबादत में गुज़ारते थे।आप अपने दाहिने पहलू पर लेटते थे, अपना सीधा हाथ अपने गाल के नीचे रखते थे और जब तक आपको नींद नहीं आ जाती आप कुछ सुरतें(कुरआन अल करीम के बाब) पढ़ते रहते।

**46-** आप तफ़ उल,( जिसका मतलब है चीज़ो से अच्छी खूबी निकालना) को फौकियत देते थे।दूसरे लफ़ज़ों में, जब आप कोई चीज़ पहली बार देखते या अचानक देखते तो, आप उसे उम्मीद मंद नज़र से वाज़ेह करते।आप किसी भी चीज़ को मनहूस वाज़ेह नहीं करते थे।

**47-** ग़म के वक्त, अपनी दाढ़ी को पकड़कर, आप संजीदगी से सोचते।

**48-** जब कभी आप उदास होते तो,आप नमाज़ पढ़ना शरू कर देते।जो खुशी और मज़ा आपको नमाज़ के दोरान महसूस होता वो आपकी उदासी को मीटा देती।

**49-** आप कभी चुगलख़ौर या अफ़वाह फैलाने वाले को नहीं सुनते थे।

**50-** जब कभी आप एक तरफ़ या पीछे किसी चीज़ को देखना चाहते तो, आप अपने पूरे जिस्म को उस तरफ़ घुमाते थे, बजाए इसके के सिर्फ़ सिर घुमा दिया।
**तवज्जुह** ः इस्लामी उलमाओं रहिमा-हुमल्लाहु तआला ने ऊपर बताए गए हमारे आका नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुलूक को तीन ज़मरों में बाँटा है। पहली किस्म उस बरताव पर मुश्तमिल है जो मुसलमानो के ज़रिए तकलीद कि जाती है।उन्हें **सुन्नत** कहते हैं।दूसरे ज़मरे में वो बरताव हैं जो खास हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म से मुंसलिक हैं उन्हें **खसाईस** कहते हैं इनकी तकलीद करने की इजाज़त नहीं है। तीसरे ज़मरे में वो बरताव हैं जो मजलीस पर ज़म किए गए हैं।हर मुसलमान इनकी तकलीद कर सकता है अपने मुल्क में मजलीस पर मुबनी जायज़ हों।अपने मुल्क के मजलीस के उसूलों को बग़ैर

माने हुए इनकी तकलीद करना फितने (भड़काव) का सबब बन सकता है। और फितना करना, अपने आप में, हराम है।

**दुनियावी जाएदाद, सोना और चांदी हमेशा के लिए किसी के नहीं हैं ;**

**टूटे दिल को खुश करना आपको बढ़ावा देगा।**

**ज़मीन जिल्दी है, जो मुसलसल बदल जाती है ;**

**इंसानियत एक लालटेन है, जो आखिर में बाहर जाएगी।**

## भाग तीन

## इस्लाम और दूसरे मज़ाहिब

हमारी किताब के इस बाब में, हम आपको इस्लाम के बारे में बताएंगे, जैसे कि हम अभी तक करते आए हैं, तारीख के पुराने सफ़हों से तुम्हारी यादों को उजागर करेंगे, और सारे मज़ाहिब की ज़रूरयात के बारे में मालूमात के कीमती टुकड़े फराहम करते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आप वही मज़ा इस बाब को पढ़ने में महसूस करेंगे जैसा कि आपने पिछले बाब को पढ़ने में महसूस किया। जैसा कि हम अकसर बार बार बताते हैं ; आज, **21** वीं सदी की चौखट पर, लोगों के पास थोड़ा वक्त है, ज़्यादा काम है करने के लिए, और अपने दिमागों में मुख्तलिफ़ मसाईल को घुसा रखा है। इसके अलावा, आज के लोग इल्म के बिल्कुल नए टुकड़ो से लैस हैं। वो हर किताब को जो उन्होने पढ़ी इस नए इल्म से जाँचते हैं। इसलिए, हम उनके साथ बातचीत करने वाले खयालात साईंसी,मंतकी, मुसतनद और आज के इल्म और ज़िंदगी के हालात के साथ मुताबकत रखते हैं। कोई भी शकगुज़ारी की डिग्री मुख्तसिर साबित होगी अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के लिए उसने हमें लिखने और (अंग्रेज़ी में

तर्जुमा करने के और)इस किताब को छापने के लायक बनाया, जिसे हमने सालाना नए हिस्सों को जोड़कर पूरा किया। अल्लाह तआला की रहमतें लामहदूद हैं।

हमें हासिल होने वाले तारीफ़ के खतूत को देखते हुए, हमें ये अंदाज़ा होता है कि हमारी किताब पढ़ी जा रही है और जो पढ़ रहे हैं फायदा उठा रहे हैं, और हम अपने रब (अल्लाह तआला) की हमद (शुक्र और तारीफ़) करते हैं। जो बरकतें हमारे कारिईन ने हमें दीं और जो शुक्रिया उन्होने हमें दिया वो हमारी सबसे बड़ी कामयाबी है। ये तारीफ़ के खतूत और कॉलस हमें और ज़्यादा मेहनत से काम करने के लिए बढ़ावा देते हैं।

ये कहते हुए अफसोस होता है, कि इस्लामी आलिमों के ज़रिए लिखी गई किताबों को समझने के लायक लोगों और उनको आम लोगो को काबिले फहम करने वाले लोगों की तादाद में कमी हुई है। असल में, अब वहाँ मज़हब का कोई माहिर नहीं बचा है। चूँकि इस्लाम ताज़ा तरीन, सबसे बेहतरीन और सबसे ज़्यादा मंतकी मज़हब है, इस्लामी किताब को लिखने के लिए एक आला सतह की तालीम अरबी और फारसी जानना इसके अलावा (कम से कम) एक यूरूपी ज़बान को जानना, और इस्लामी इल्म की शाखाओं को जानना इसके अलावा सबसे ज़्यादा कुदरती और साईंसी मालूमात के साथ लैस किया जाना है। हमारी किताबे मज़हबी हुक्काम और साईंसी माहिर के ज़रिए लिखी गई किताबो की वज़ाहतें और आसानियाँ हैं, और हमने इस नाज़ुक काम में अपनी तव्वजुह मरकज़ की है। हमने हमेशा झूठ को नज़रअंदाज़ किया। जो खतूत हमे हासिल होते हैं उनको हम सावधानी से जाँच करते हैं और उन्हें साईंसी और मंतकी जवाब देते हैं। हमारी किताबों के कुछ हिस्से (जो असल में तुर्की में हैं) अंग्रेज़ी, फ्रेंच और जर्मन में तर्जुमा किए गए हैं और पूरी दुनिया में फ़ैल गए हैं। एक दूसरी हकीकत जो हम खुशी से देखते हैं वो ये कि दूसरे इस्लामी मआशरे हमारी किताबों को जानते हैं, हमारी किताबें पसंद करते हैं, और हमारी किताबों के तबसरों को अपनी इशाअत में जगह देते हैं। हम इन चीज़ों पर घंमड नही करते। जो हम कर रहे हैं उसके लिए इस्लामी आलीमों के ज़रिए लिखी गई कीमती और दुनिया भर में फैली हुई किताबों को पढ़ना और मुतालअ करना है, उनको ज़मरों में दरजा बंदी करना, मवाज़ना करना, उनसे मुनासिब और मंतकी हकाईक उठाना, और इन हकाईक को इतनी आसान और रवादारी से छापना कि हर किसी के ज़रिए इसे आसानी के साथ पढ़ा और समझा जा सके। हम जो किताबें छाप रहे हैं वो हमारे हिस्से में कोई इज़ाफा नहीं हैं। हम इन जानकारी के हिस्से को ,जिसमें हमें बहुत ज़्यादा सावधानी और भारी मेहनत करनी पड़ी, अपने पढ़ने वालों के आगे इस तरह रख रहे हैं, ताकि वे उसे पड़ने के लायक हों और उसे आसानी के

साथ सीख सकें। ये पढ़ने वालों पर है कि उसमें से नतीजा निकालें। हमारा फर्ज़ है कि ये सामान तैयार करें। और हम ये इच्छा से कर रहे हैं, बग़ैर किसी दुनियावी बदले की उम्मीद के। हम अल्लाह तआला से ईनाम चाहते हैं। वे जो हमारी किताब के इस बाब को पढ़ेंगे वे सीखेंगे कि इस्लामी मज़हब ही सिर्फ़ अल्लाह तआला को जानने तक रसाई हासिल करने और उससे करीब होने का ज़रिया है, कि इंसान एक मज़हब के बग़ैर नहीं रह सकता, वो मज़हब जो लोगों के अखलाकी बरताव को ठीक करता है और कभी भी दुनियावी फायदे और सियासी हिकम अमली के लिए इस्तेहसाल नहीं हो सकता, ये कभी ज़ाती मकासिद और घिनौने मकासिद के लिए एक औज़ार नहीं हो सकता, और ये कि दुनिया में और आखिरत में खुशियाँ हासिल करना सिर्फ़ अपने आपको इस्लाम के मुताबिक बनाना है।

हालांकि इस्लाम सबसे ज़्यादा सच्चा और मंतकी मज़हब है, फिर भी इसको फैलाने के लिए बहुत कम कोशिश की गई। ईसाइयों ने जो तंज़ीमे ईसाईयत को फैलाने के लिए कायम कीं वे दोनों ही बेशुमार और बड़ी हैं। हारपुत के इस्हाका एफ़ंदी के ज़रिए लिखी गई किताब **दिया-उल-कुलूब** और जिसे **1294**[**1877** सी.ई] में शाय किया गया जो एक नायाब इस्लामी अलिम थे जिनकी किताबें हमारी इस किताब को लिखने में अहम ज़राए में से एक है जिसे हमने इस्तेमाल किया और जिन्हें हम आगे भी हवाला देंगे, उसमें मंदरजाज़ेल जानकारी है ः

" ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट समाज जिसे बाइबल हाऊस कहा जाता है, जिसे **1219** [**1804** सी.ई] में कायम किया गया, उसने बाइबल को दो सौ चार(**204**) मुख्तलिफ़ जुबानो में तर्जु मा किया। **1872** तक, उसे समाज के ज़रिए छापी गई किताबों का शुमार सत्तर मिलियन हो गया। उस समाज के ज़रिए ईसाईयत को फैलाने के लिए जो पैसा खर्च किया गया वो दो लाख़ पाँच हज़ार तीन सौ तेरह(**205,313**) ब्रिटिश सोने के सिक्के थे, जो आज के एक्सचेंजो की दर के मुताबिक ,[जबकि एक ब्रिटिश सोने का सिक्का दो लाख बीस हज़ार(**220,000**)तुर्की लीरा की लागत है] जो कि **45** बिलियन तुर्की लीरा के बराबर है। ये समाज आज भी अमल में है, शिफ़ा खाने, अस्पताल,कांफ्रेंस हाल,लाइब्रेरी,स्कूल,सिनेमा और दूसरे मनोरंजन और खेलों के अदारे दुनिया की बहुत सारी जगहों पर कायम करके, और जो उन जगहों पर भरोसा करते हैं उन लोगों को ईसाईयत की तरह राग़िब करने के लिए अज़ीम कोशिश कर रहे हैं। कैथोलिक इन अमाल में पीछे नहीं हैं। इसके अलावा, वे गरीब आबादी को ईसाईयत की तरफ लुभाते हैं जवान लोगों के लिए नौकरियाँ ढूँढ कर और तिब्बी इम्हाद मुहैय्या कराते है।

आज, कुछ मुसलमान मुल्कों में जैसे कि पाकिस्तान, साऊथ अफ्रीका और सऊदी अरब में कुछ छोटी (इस्लामी) समाज हैं, और कुछ छोटे इस्लामी मरकज़ यूरोपी मुल्कों और अमेरिका में हैं। ये मराकज़ इस्लामी इशाअत लेकर चलते हैं। अलबत्ता, क्योंकि ये मराकज़ मुख्तलिफ़ गुपो की किस्म के ज़रिए मदद किए जाते हैं, उनकी इशाअत एक दूसरे पर तंकीद करती है, इस्लामी एकता को खराब करती हुई जिसे हमारे मज़हब ने हुकूम दिया,और अलैहदगी पसंद को जन्म देती हुई। हमारी कंपनी एहलास की गुंजाइश सिर्फ कुछ ही ज़बान तालिबे इल्मों को हमारी किताबे पढ़ने के लिए इजाज़त देती है। सारी अनचाही शर्तो के लिए, हमारी नम्र इशाअत पूरी दुनिया में पढ़ी जाती हैं और इस तरह सही रास्ते पर मुसलमानों की तादाद में हर साल इज़ाफा होता जा रहा है। सौ साल पहले मुसलमानों का जो नम्बर $^{1}/_{3}$ था ईसाईयों के मुकाबले वो आज तकरीबन उनके शुमार के आधा हो चुका है। क्योंकि मुसलमान अपने उसूली कवाईद के वफ़ादार हैं और अपने बच्चों को इस्लामी तालीम के साथ उठाते हैं। इसके बरअक्स, ईसाई दुनिया में जवान नसल देखती है कि ईसाईयत मौजूदा साईसी इसलाहात और जदीद तकनीकी जाँच में कांऊटरपॉइंट में है, और कायल मुलहिद बन जाते हैं। दूसरी तरफ़, इशतराकी रियास्तें, एक साथ मज़हब को पामाल और मना करती हैं। इनमें से कुछ में, जैसे, अलबानिया में, ज़्यादातर इश्तराकी शासन के तहत ([1] इश्तराकी शासन अब खत्म हो चुका है।) मज़ाहिब को एक मज़ाक की चीज़ो के रूप में आम जगहों पर जिन्हें 'मुलहिद के अजाईब घर कहा जाता है वहाँ पैश किया जाता है। ये एक हकीकत है जो ब्रिटिश इशाअत में खबर की गई कि ब्रिटेन में मुलहिदों की तादाद, जहाँ ज़्यादातर ऊपर बताई गई बड़ी ईसाई तंज़ीमे मौजूद हैं वो पूरी आबादी की तीस फीसद है।

फिर हमारी इशाअत की इस बढ़ती हुई तारीफ़ का बेमुकाबला ईसाईयत के नाकाबिले यकीन डूबने से इसकी तमाम कोशिशो के बरअक्स क्या सबब है? वजह वाज़ेह है। इस्लाम सबसे ज़्यादा तहज़ीब याफ़ता, सबसे ज़्यादा मुनासिब, और सच्चा मज़हब है। इस्लाम को हमारी किताबों में बहुत मुखलिस और साफ़ ज़बान में वाज़ेह किया जाता है कि कोई भी ग़ैर मुस्तहकम और बाज़ाबता शख्स जो इन्हें पढ़ेगा वो देखेगा कि इस्लाम सबसे ताज़ा तरीन सच्चा मज़हब है, ये तमाम जहीद साईस और समझ के साथ रज़ामंद है, ये कोई तोहमपरस्ती नहीं रखता, और ये कि इसकी बुनियादी बजाए पहले से तए शुदा जिसे तसलीस कहते हैं इस पर होने के बजाए अल्लाह की वहदानियत पर हैं, और इस वक्त इस्लाम में यकीन रखेगी। तव्वजुह मरकोज़ करने के बाद में ये ज़ाहिर हो जाएगा कि अल्लाह की वहदत में ईमान लाना सच्चे मज़ाहिब की ताबीर में बुनियादी और ग़ैर तबदील अनसर है, वो

ये कि जब एक सच्चा मज़हब लोगों के ज़रिए तोड़ा मोड़ा जाएगा तो, अल्लाह तआला इसे बहाल करने के लिए एक नया नबी अलैहि सलाम भेजेगा, और ये कि इस्लाम हतमी है, सबसे ज़्यादा साईंसी और सच्चे मज़ाहिब के सिलसिले में सबसे ज़्यादा इतलाअ देने में इस्तेमाल किया जाने वाला। इस सिलसिले में, हारपूत के इस्हाक एफ़ेंदी ने इस्लाम और ईसाई यत के बीच मवाज़न किया है, जो पिछली कुछ सतरोंह पर और हमारी किताब के मंदरजाज़ेल मतन पर काबिज़ हैं, वो ये हकीकत बताता है कि दोनो मज़ाहिब एक जैसे बुनियादी उसूलों को शेयर करते हैं और ये कि ईसाई मज़हब बाद में यहूदियों के ज़रिए मदाखलत करके और खराब किया गया।

एक दुसरा नुकता जो उठाता है वो है इस्लाम और ईसाईयत का अखलाकी सतह पर मवाज़ना। हमारी किताब के पास बाब की बारीक बीनी से मुतालअ, Could Not Answer एक दुसरी किताब जो हमने शाय की उसके आठवें बाब की स्कैनिंग के साथ हौसला अफ़ज़ाई की जा सकती है, ये बेनकाब करेगी इस हकीकत को कि दोनो मज़ाहिब एक ही मज़मून को एक जैसे अतवार के साथ सुलूक करेंगे और इंसानियत पर एक ही हुकूम देते हैं। आज, अगर एक ईसाई तीन खुदाओं के बजाए एक अल्लाह और मुहम्मद अलैहि सलाम आखिरी नबी में यकीन रखें तो वो एक मुसलमान बन जाए। आज के ज़्यादातर आम अहसास ईसाई तसलीस के उसूल को मुसतरिद करते हैं, इस कलाम की तफ़सीर के मुखतलिफ़ वज़ाहत के मुतालअ को पैश करते हैं, और एक ही अल्लाह पर ईमान रखते हैं। बड़ी तादाद में ईसाईयों ने इस हकीकत को महसूस किया और अपनी इच्छा से मुसलमान बन जाए। ये चीज़े हमारी किताब के इबतिदाई हिस्से में, इस उनवान के तहत **वो क्यों मुसलमान बन गए** पैश की गई हैं। ईंसानी रूह मज़हब पर पलती है। एक शख्स बग़ैर मज़हब के बिल्कुल ऐसे ही जैसे एक जिस्म बग़ैर सिर के। जैसे कि एक जिस्म को सांस लेने, खाने और पीने की ज़रूरत है, उसी तरह रूह को मुकम्मल शखसियत की पहचान, अपने आपको पाक करने ,और अमन हासिल करने के लिए मज़हब ज़रूरत है। एक गैर मज़हबी शख्स एक मशीन या एक जानवर से मुख्तलिफ़ नहीं है। मज़हब एक अज़ीम अनसर है जो आदमी को अपने अल्लाह से आगाह कराता है, उसे जुर्म के खिलाफ़ बचाता है, उसका रास्ता साफ़ करता है, उसके दिमाग़ का गुलाम बनाता है, अफसोस के वक्त उसे दिलासा देता है, उसे माद्दी और रूहानी ताकत देता है, उसे समाज में इज़्ज़त, एहतराम और प्यार दिलाता है, और आखिरत में उसे दोज़ख की आग के खिलाफ़ बचाता है।

जब तक आप हमारी किताब के इस हिस्से को पूरा करते हैं, आप देखेंगे कि सारे आसमानी मज़ाहिब एक दूसरे के जानशीन हैं, यानी हकीकी यूनानी मज़ाहिब जिसे अल्लाह तआला ने एक दूसरे के लिए मुतावादिल रखा और मुख्तलिफ़ औकात को तजदीद किया गया वो असल में एक मज़हब, एक ईमान है, कि जब एक सच्चा मज़हब अल्लाह तआला के ज़रिए भेजा गया वो लोगों के ज़रिए मदाखलत किया गया इसे अल्लाह तआला के ज़रिए मुर्करर किए गए और भेजे गए नबी अलैहिम उस-सलाम के ज़रिए सही किए गए ,और ताज़ा मज़हब **इस्लाम** है, जिसे मुहम्मद अलैहि सलाम के ज़रिए भेजा गया।

इस्लाम के खिलाफ़ सबसे ज़्यादा दुश्मनी ब्रिटिश असल की है।बरतानवी रियास्त की पालिसी बुनियादी तौर पर अफ्रीका और भारत में कुदरती वसाईल के इस्तेहाल पर मुबनी थी, वहाँ के रहने वालों को जानवरों की तरह नौकरी पर रखना, और उनकी सारी कामयाबीयों को बरतानिया में मुंतकिल करना।जो लोग इस्लाम के साथ एज़ाज़ रखते हैं, जो इंसाफ़, बाहिमी मुहब्बत और मदद की रहनुमाई करता है, वो बरतानवी जुल्म और तकरार को मुस्तरिद करता है।दूसरी तरफ़, ब्रिटिश सरकार ने **कॉलोनियों की एक वुज़ारत** कायम की और इस्लाम पर मुबनी तौर पर ग़ददराना मंसूबो और अपनी पूरी फौजी और सियासी कुव्वतों के साथ हमला कर रही है।इस बात का एतराफ़ हैम्फ़र, हज़ारो मर्द और औरत जासूसों में से एक ने किया है जिसे उस वुज़ारत की निगरानी में किया गया है, उसने **1125**[**1713** सी.ई] मे शुरू होने वाली सरगरमियों में से कुछ की वज़ाहत की, उनमें से कुछ की वज़ाहत की जो इंसानियत के लिए एक शर्मनाक शर्म है।ये एतराफ़ अरबी, अंग्रेज़ी और तुर्की में हकीकत किताबेवी के ज़रिए **19**

**91** में शाय की गई। (एक अंग्रेज़ जासूस का एतराफ़, **1991**,हकीकत किताबेवी,फतिह, इस्तांबुल, तुर्की।)

*गुलाबो की बुलबुल प्यार के बग़ीचे मे फल फूल रही थी ,*

*इस्लाम का हिरो गहरी तड़प से इंतेज़ार कर रहा था,*

*महबूब अपने हबीब के मुहब्बत मे जलकर राख हो गया;*

*उस वक्त का मातम जिसमे तुम्हें देखा नहीं !*

*इल्म और सादगी में, तुम कहते हो 'सिला',*

*क्योंकि तुमने इल्म की दो शाखाओं को मुश्तरका किया*

*उस समुंद्र में डुबकी लगाई जिसकी कोई आखिर नहीं ,*

*तुमने ज़िक के समुंद्र से सबसे बड़ा हिस्सा लिया!*

*कुछ लोग किनारे पर जाते हैं, और कहते हैं, " मेरे लिए काफ़ी है। "*

*कुछ इसे दूर से देखते हैं, और होश खो देते हैं, चक्कर खा जाते हैं।*

*कुछ सिर्फ़ देखते हैं, और कुछ सिर्फ़ एक घूंट लेते हैं।*

*तुम वही हो जो समुंद्र से लबालब पीतो हो !*

*आपका काम कुरआन और हदीस के बाद तरजीहात में आता है ः*

*अपके अलफ़ाज़, इतने बरकती, रूहों की दवा पैश करते हैं ;*

*आप रूहानियत की दुनिया के कमांडर हो ;*

*मुजददीद-ए-अलफसानी अपको लकब दिया गया।*

*जिसने हमें तुम्हारे बारे में बताया , फितरत से तुम्हारे दोस्त,*

*तुम्हारी बरकत के रूजहान के लिए तेज़ वाहिद आलिम ,*

*सय्यैद अबदुलहकीम तुम्हारे प्यार से जल रहा है।*

*बराएमेहरबानी शफ़ाअत*

*काएनात दोबारा तुम्हारे काम के साथ रोशन होती है,*

*हमें मज़बूती से जागने की तरफ मुतवज्जेह करती है,*

*चौदहवीं सदी के अंधेरे को खत्म करती है,*

*अरवास  की रोशनी है, बाकी सिर्फ एक सपना।*

*हम उसके शार्गिद हैं और वह तुम्हारा परिस्तार;*

*आपके दिलों की रोश्नी यकीनन एक दूसरे पर नज़र आएगी।*

*कोई शक नहीं तुम ,एक दूसरे के साथ मुहब्बत में हो,*

*वो जो मकतूबात को जानते हैं वो तुम से और एक दूसरे से मुहब्बत करेगा।*

(इमाम-ए-रब्बानी मुजददीद अलफसानी कुददिसा सिरोह[डी.**1034**(**1624** सी.इ)सरहिंद, भारत]बराएमेहरबानी **नब्बुव्वत के सबूत** अपकी किताब **इसबात-उन-नब्बुव्वा** के अंग्रेज़ी या हिन्दी तरजुमें को देखिए।उनके किमती असासे **मकतूबात** से खुतूत हमारी किताब **सआदत-ए-अबदिया** का एक खास हिस्सा हैं। 'सिला' का मतलब है 'जोड़ना'।उन्हें ऐसा इसलिए बोला जाता है क्योंकि उन्होने इस्लामी इल्म की दो कुशादह शाखाओं को मिलाया, यानी, शरीअत, जिसमें तमाम इस्लामी कैनोनिकाल उसूल, कानून, एहकामात, ममनुआत वग़ैरह शामिल हैं, और तरीका, जो सारे रूहानी रास्तों और अहकामात का मजमुआ है इस्लाम में।ये दोनों शाखाएँ उनके वक्त तक एक दूसरे से अलग समझी जाती थीं।)

(मुहम्मद अलैहि-सलाम आखिरी नबी हैं।आपके बाद कोई नबी नहीं आएगा।इस्लामी आलिम दुनिया के खात्में तक लोगों को इस्लाम सिखाते रहेंगे।इन आलिमों में से सबसे अज़ीम 'मुजददिद' कहलाएंगे।मुहम्मद अलैहि सलाम के बाद हर हज़ारवें साल में अल्लाह तआला इस्लाम मज़हब को बहाल करेगा और मुसलमानों को पामाल होने से बचाएगा एक बहुत ही मुवसिर इस्लामी आलिम के ज़रिए जिसे 'मुजददिद' कहा जाएगा।इमाम-ए-रब्बानी

कुददिसा सिरोह ऐसे 'मुजददिद' में से पहले हैं। मुजददिद-ए-अलफ़ासानी का मतलब है दूसरी सदी के बहाल करने वाले।) **आपको मुजददिद-ए-अलफ़ासानी का खिताब से नवाज़ा गया।**

( सिफ़ारिश। आखिरत में, पाक मुसलमान, अल्लाह तआला के ज़रिए चाहे जाने वाले लोग अल्लाह तआला के साथ गुनहगार मुसलमानों की माफ़ी के लिए सिफ़ारिश करेंगे। इस सिफ़ारिश को शफ़ाअत कहते हैं।]

**अरवास** वान के पास एक गाँव है, एक शहर मशरिकी तुर्की में।

# इस्लाम बर्बरता का मज़हब नहीं

अगर तुम काहलेनबर्ग के पहाड़ पर चढ़ोगे, जहाँ तुर्कों ने अपने फौजी हैडक्वाटर कायम किए थे **1095**[**1683** सी.ई.] में विएना की घेराबंदी के दौरान, क्योंकि ये शहर पर मिसाली निगाह रखने के लिए साज़गार बुलंदी थी, वहाँ तुम एक यादगार देखोगे जिस पर एक अलामत पर लिखा है, "खुदा हमें प्लेग की बुराई और तुर्कों से बचाए।" उसी अलामत के नीचे मनगढ़ंत लिथोग्रोफ़ है जिसमें नुमाईश की गई कि तुर्क इसाई औरतों और बच्चों को काट रहे हैं। उस वक्त ईसाई तुर्कों को दुनिया के सबसे ज़्यादा वहशी, सबसे ज़्यादा ज़ालिम, और सबसे ज़्यादा जंगली के तौर पर नुमाइंदगी करते थे। उनका कहना था कि तुर्क इतने ज़्यादा ज़ालिम या वहशी नहीं होते अगर वे ईसाई होते। वो जो इल्ज़ाम लगाते थे कि इस्लाम बर्बरता का मज़हब है वो थे ईसाई पादरी, जो उस वक्त के ज़ालिम और ज़ालिम तानाशाह थे। ये झूठ हमेशा मज़हबी असबाक में अहम हिस्सा रखता था जो स्कूलों में पढ़ाया जाता था, और इसलिए ईसाई बच्चे इस नसीहत के साथ कि इस्लाम बर्बरता का मज़हब है उनके दिमागों को धोया जाता। ये खौफ़नाक तशहीर सदियों तक चली, इसकी तेज़ी हमारे वक्त तक कायम है। हरपूत के इस्हाक एफ़ंदी रहिमा-हुल्लाहु तआला ने अपनी किताब में, एक किताबचह से मंदरजाज़ेल हवाला लिया है जिसे एक पादरी ने **1860** में इस्लाम को बदनाम करने की गर्ज़ से लिखा था ः

ईसा अलैहि-सलाम' ने अपने मज़हब की इशाअत के लिए हमेशा लोगों को प्यार,नर्मी, रहमदिली और मदद के साथ सुलूक किया। इसी वजह से ईसाइयत के शुरू के कुछ सालों के अंदर ही पाँच हज़ार लोग ईसाई बन गए। इसके बरअक्स, इस्लाम, एक बेरहमी का मज़हब,

लोगों पर ज़बरदस्ती थौपा गया और कत्ल की धमकी के साथ।मुहम्मद अलैहिसलाम ने इस्लाम को ताकत,धमकी,लड़ाई और पाक जंग के ज़रिए फैलाने की कोशिश की।नतीजे के तौर पर, आपकी नब्वुव्वत के ऐलान के **13** साल बाद लोगों की तादाद जिन्होने सिर्फ़ बातचीत के नतीजे में इस्लाम को कुबूल किया वो एक सौ अस्सी के आस पास होगी।ये ई साई मज़हब जोकि एक सच्चा और इंसानी मज़हब है और इस्लाम, जोकि एक बेरहमी का मज़हब उनके बीच के फर्क को वाज़ेह करने के लिए काफ़ी है।ईसाईयत मुकम्मल और इंसानी मज़हब है जो इंसानो के दिलों में घुसता है, रहम और शफ़कत की हौसला अफ़ज़ाई करता है, और कभी ताकत या दबाव इस्तेमाल नहीं करता ।इस हकीकत की एक निशानी ये है कि ईसाई मज़हब ही सच्चा मज़हब है वो ये कि ईसाई मज़हब का ज़हूर यहूदी मज़हब को खारिज करता है, जो उससे पहले एकजुट मज़हब था।जब अल्लाह तआला ने एक नया नबी भेजा, तो उससे पहले के मज़ाहिब खारिज हो जाने चाहिए।क्योंकि यहूदी ईसाई मज़हब से इंकार करते थे, कई तबाहियाँ उन पर आई, और उन्हें बेइज़्ज़ती और थू थू का सामना करना पड़ा।एक नए नबी के ज़हूर के लिए इस हकीकत की निशानदही है कि पिछले मज़ाहिब खत्म हो जाते हैं।दूसरी तरफ़, मुहम्मद अलैहि सलाम ने ईसाई मज़हब को खत्म नही किया, न ही ईसाईयों पर मुख्तलिफ़ तबाहियाँ आई, जैसा कि यहूदियों के मामले में हुआ था, बल्कि इसके बरअक्स, ईसाईयत और बसीह फैल गया।मुसलमानों की सारी कोशिशों, कत्ले आम और चर्च की पमाली,(मिसाल के तौर पर खलीफ़ा उमर के ज़माने में चार हज़ार गिरजाघरों को बरबाद किया गया) के बावजूद ईसाई दिन पर दिन तादाद में बढ़ रहे हैं और फलाह व बेहबूद में बेहतर हो रहे है, जबकि मुसलमान बेईज़्ज़ती का शिकार हो रहे हैं, गरीब से गरीब होते जा रहे हैं और दुनिया भर में अपनी कीमत और अहमीयत खोते जा रहे हैं।"

इस्हाक एफंदी रहिमातुल्लाही अलैह ने पादरी के इल्ज़ामात का मंदरजाज़ेल जवाब दिया ः

सबसे पहले, पादरी के ज़रिए दी गई जानकारी और आदादो शुमार हकाईक से परे हैं।**कुरआन-अल-करीम** इस्लाम की पाक किताब,में हिदायत शामिल है, **"मज़हब में कोई दबाव नहीं है।"** हालांकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम मज़हब की इशाअत करते वक्त कभी कोई दबाव या धमकी का इस्तेमाल नहीं किया, इस्लाम को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक अपनाने वालों की लोगों की तादाद थोड़े ही वक्त में बढ़ गई थी।एक ईसाई तारीखदाँ और कुरआन अल करीम का तर्जुमा करने वाले सेल के ज़रिए दिए गए बयान ने हमारे तर्क की तसदीक की।[जार्ज सेल वफ़ात **1149**[**1736** सी.ई.]।वो एक ब्रिटिश पादरी था।उसने **1734** में कुरआन अल करीम अंग्रेज़ी में तर्जुमा किया था।उसने अपने काम के

तआरूफ़ में इस्लाम के बारे में तफ़सीली जानकारी दी है।] उसने अपने **कुरआन के तर्जुम** में मंदरजाज़ेल बयान दिया, जिसे **1266**[**1850** सी.ई.] में छापा गया। "हगीरा तब तक नहीं हुआ था जब मदीना में पहले से ही मुस्लिम रिहाईश के बग़ैर कोई घर नहीं था।" इसका मतलब है कि शहरी लोग जिन्होने तलवार की शक्ल तक नहीं देखी थी उन्होने इस्लाम को अपनी इच्छा से क़ुबूल किया सिर्फ़ इस मज़हब अज़मत और सच्चाई की वजह से।मंदरजाज़ेल आदादो शुमार इस्लाम का तेज़ी से बढ़ने का इशारा हैं।मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के वक्त तक मुसलमानों की तादाद एक लाख़ चौबीस हज़ार(**124,000**) हो चुकी थी।अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की वफ़ात के चार साल बाद, उमर रज़ी अल्लाहु अन्ह ने चालीस हज़ार मज़बूत मुसलमान फौज भेजी, और उस फौज ने इरान, सीरिया, कोनया तक अंतोलिया का एक हिस्सा, और मिस्त्र फतह किया।उमर रज़ी अल्लाहु तआला अन्ह ने कभी ज़ुल्म का सहारा नहीं लिया।उन्होने कभी ईसाई और आग पूजने वालों पर ज़ुल्म नहीं किया जो उन मुल्कों में रह रहे थे जिन्हें उन्होने तानशाहों के कब्ज़े से लिया।उनका इंसाफ़ पूरी दुनिया, दोस्त और दुशमन सबने माना।ज़्यादातर लोग जो इन मुल्कों में रह रहे थे उन्होने इस्लामी मज़हब में कामिल अख़्लाक और इंसाफ मौजूद देखा और अपनी इच्छा से मुसलमान बन गए।बहुत कम अपने पुराने मज़हब जैसे ईसाई, यहूदी और मागी मज़हब में रहे।इस तरह, तरीखदाँ जो एकमत से इस बात को मानते हैं कि मुसलमान मुल्कों में रहने वाले मुसलमानों की तादाद दस साल में बीस या तीस मिलियन हो चुकी थी,जोकि अपने वक्त के हिसाब से बहुत कम मुद्दत का था।उमर रज़ि अल्लाहु अन्ह ने अकेले चार हज़ार गिरजाघरों को तबाह किया, एक सख्त जवाब लोगों को जिन्होने उनसे पूछा कि किस चर्च को वे एक मस्जिद में तबदील करेंगे, जब वे यरूशलेम में दाखिल हुए, और अपनी पहली नमाज़ चर्च के बाहर अदा की।

ईसा अलैहि सलाम के आसमान पर(जैसे वे ज़िंदा थे) उठाए जाने के तीन सौ साल बाद कोंसटेंटाइन **1** ने ईसाई मज़हब को अपनाया उसकी मदद और ज़ोर जबरदस्ती वाले तरीके से ईसाईयों की तादाद सिर्फ़ तीन मिलियन तक पहुँची।कोई भी यहूदी जो ईसाई मज़हब के लिए इंकार करता उसे कोंसटेंटाइन के ज़रिए बताए गए अज़ाब का निशाना बनना पड़ता जैसे कि कानों को कटवाना और पत्थर ज़नी सहना पड़ता।

इस इल्ज़ाम के लिए कि जब ईसाई मज़हब ज़ाहिर हुआ तो यहूदी मज़हब मंसूख हो गया और यहूदियों को मुख्तलिफ़ तबाहियों का सामना करना पड़ा; इससे ये ज़ाहिर होता है कि पादरी ने अच्छी तरह से तारीख नहीं पढ़ी और इसलिए उसे हकाईक के बारे में ज़्यादा

जानकारी नहीं हुई। क्योंकि ईसाई मज़हब के ज़हूर से बहुत पहले ही यहूदी मज़हब आलूदह हो चूका था, यरूश्लेम को पहले असीरियन राज बुहतुननासर(Abuchednezzar) [604-56] बी.सी.] ने तबाह किया, और बाद में रोमन ने। इन तबाहियों के बाद, यहूदियों को बहुत ज़्यादा समाजी रूकावटों का सामना करना पड़ा जिससे वे कभी नहीं सभंल पाए। क्योंकि ये सारे वाक्यात ईसाई मज़हब के ज़हूर से पहले रूनुमा हुए ,इसलिए इनका ईसाईयत कोई लेना देना नहीं है। आज, जबकि हम 21 वीं सदी में दाखिल हो रहे हैं, हम अपने सामने एक यहूदी रियास्त देख रहे हैं। ज़ाहिर है, इसलिए , ईसाईयत के बावजूद यहूदी मज़हब बचा हुआ है। ये सच बात है, कि आज के इज़राइल के कयाम से पहले, यहूदी यूरोप के मालयाती ज़राओं, बैंक, प्रेस के इदारे और भारी सनअतों में नुमायाँ औहदों पर थे, और यहूदी वकील आलमी मकबूलियत का मज़ा ले रहे थे। ब्रिटेन में यहूदी आबादी ने सलतन्त का सबसे दौलतमंद लार्ड, लार्ड डिसराइली ([1] बेंजामिन डिसराइली, (1804-1881), 1868 अंग्रेज़ी वज़ीरे आज़म, और दोबारा 1874,से 1880 तक। ) बनाया। रोथ्सचाइल्ड ([2] मेयर आर्शेल रोथ्सचाइलड,[1743-1812] जर्मन बेंकर और आलमी बेंकिग फर्म का बानी, हाऊस ऑफ रोथ्सचाइलड; और उसका बेटा भी, नाथन मेयर रोथ्सचाइलड ,(1777-1836), ब्रिटिश बेंकर। ),एक दूसरा यहुदी,दुनिया का सबसे ज़्यादा मालदार शख्स। यहाँ तक की आज, यूरोपी और अमेरिकी बाज़ार और ज़्यादातर कंपनियाँ यहूदियों के कब्ज़े में हैं। इसका कहने का मतलब ये हुआ कि पादरी अपने इस इल्ज़ाम में बिल्कुल गलत था कि जैसे ही ई साई मज़हब का ज़हूर हुआ वैसे ही यहूदी मज़हब गायब हो गया और यहूदियों पर मुख्तलिफ़ अज़ाब नाज़िल हो गए, जो कि कुछ नहीं था सिवाए फ़रेबे नज़र के जो उसके दिमाग़ में जादू कर गया था।

ईसाई पादरियों ने ऐलान किया कि ईसाईयत इन अनासिर पर मुबनी है जैसे कि प्यार, नरमी, रहमदिली, और आपसी मदद। हमारा एक पड़ोसी ईसाई, पादरी था। हमने उससे उस मतन के बारे में पूछा जो हम पाक बाइबल के तुर्की तर्जुमे के एक सौ उनसठ सफ़हे पर पढ़ा जिसे 1303[1886 सी.ई.] में इस्तांबुल में शाय कराया गया। ये मतन, पुराने अहमद नामें में Denteronomy के बीसवें बाब के 18 वीं आयात की दसवी के ज़रिए, इसे मंदरजाज़ेल मजाज़/Authorized (बादशाह जेम्स) के तर्जुमे में इस तरह पढ़ा जाएगा।ः

"जब तुम इसके खिलाफ़ लड़ने के लिए एक शहर के करीब आते हो, फिर उसके ऊपर सलामती रखो।" "और यह होगा, अगर यह तुम्हारी सलामती का जवाब देगा,

और तुम में खुले, फिर यह होगा, कि जो लोग उसमें पाए जाएँगे वे तुम्हें मददगार होंगे, और वे तुम्हारी खिदमत करेंगे।" और अगर वह तुम्हारे साथ सलामती नहीं रखता, बल्कि तुम्हारे खिलाफ़ जंग लड़ता है, तब तुम उसका मुहासरा करलो ः" " और जब तुम्हारे रब खुदा ने इसे तुम्हारे हाथों में पहुँचा दिया, तो तलवार के किनारे के साथ हर मर्द को मिटा देना ः" "लेकिन औरतें, और छोटे बच्चे, और मवेशी, और वो जो शहर में हो, यहाँ तक कि इसकी तमाम खराबी को भी, खुद अपने ऊपर ले लो; और तुम अपने दुश्मनो की खराबी खाओ, जो रब तेरे खुदा ने तुम्हें दिया।" "इस तरह तुम उन सभी शहरों के साथ ऐसा करोगे जो तुम से बहुत दूर हैं, जो इन मुल्कों के शहरों में से नहीं हैं।" "लेकिन इन लोगों के शहरों के लिए, जिसे रब तेरे खुदा ने तुम्हें विरास्त के लिए दिया, तुम ज़िंदा रहने वाले कुछ भी ज़िंदा नहीं बचाओगे ः" "लेकिन तुम उनको तबाह करोगे; यानी,हित्ती, और एमोरियों, कनानियों और परिज्जियों, हिव्वी, और ज्यूबूसाइट को; जैसा कि रब तेरे खुदा ने तुम्हें हुकूम दिया ः" "वे तुमको सिखाते हैं कि उनकी तमाम बदबखतियों के बाद नहीं करना, जो उन्होने अपने खुदाओं के साथ किया है; तो क्या तुम अपने रब खुदावद के खिलाफ़ गुनाह करोगे।" (Dent:20-10 से 18 तक)

हमने अपने ईसाई पड़ोसी से कहा," तुम्हारी पाक बाइबल कमज़ोर लोगों की तरफ़ बहुत ज़ालमाना बरताव का हुकूम देती है।यह हुकमनामा, जो तुम्हारी पाक बाइबल में मौजूद है वो ईसाई की नाम निहाद रहमदिली और माफ़ी के करीब भी नहीं है जिसको तुम बारबार दोहराते हो।कहाँ है तुम्हारी दया और रहम? पाक बाइबल में ये मतन जुल्म और खौफ़नाक वहशीपन का हुकमनामा है।इसके बरअक्स, हमारी पाक किताब, करआन अल करीम एक वाहिद लफ़ज़ भी शामिल नहीं है जो दुश्मनों की तरफ़ ऐसे खौफ़नाक बरताव की तरफ़ बढ़ावा दे।इसलिए तुम्हारा मज़हब तुम्हें जुल्म की तरफ़ उकसाता है।इसके बरअक्स, कुरआन अल करीम रहम, दया और माफ़ी के इज़हार से भरा पड़ा है, और जुल्म को ममनुअ करार देता है।फिर किस लिए ईसाई पादरियों की हिम्मत हुई ये इल्ज़ाम लगाने की कि इस्लाम बर्बरता का हुकम देता है और ईसाई मज़हब रहम का मज़हब है? यहाँ ये तुम्हारी पाक बाइबल से मतन है! इसका कहने का मतलब ये हुआ कि, तुम्हारे दावे के बरअक्स, पाक बाइबल वहशीपन, बर्बरता, और जुल्म का हुकम देती है।तुम इसे किस तरह वाज़ेह करोगे?"

पादरी पहले तो अपने आपको बचाने के लिए ऐतराज़ करने लगा कि वे इस मतन के बारे में जानता ही नहीं।जब हम ऊपर बताए गए पाक बाइबल के तुर्की तर्जुमे को लाए

और उसे एक सौ उन्सठवाँ सफ़ह दिखाया, तो उसने कहा, "अच्छा इस मतन का ईसा अलैहि सलाम से कुछ लेना देना नहीं है। ये मतन तोरह से हवाला किया गया है, जोकि मूसा से तअल्लुक रखती है। एहकाम जो तुम तंकीद कर रहे हो वो वे हैं जो अल्लाह तआला ने मूसा के लोगों को दिए ताकि वे मिस्त्र से अपने निकाले जाने का बदला ले सकें। मिस्रियों ने उस वक्त के सच्चे मज़हब को इंकार किया और यहाँ तक कि (मूसा) मोसिस अलैहि सलाम को कत्ल करने की भी कोशिश की। इस पर अल्लाह तआला ने यहूदियों को हुकूम दिया कि नाम निहाद कौमों के काफ़िरों को तबाह करके उनसे बदला लो। यह इस पैराग्राफ/मतन का मतलब है, जो पाक बाइबल में जोड़ा गया है। इसका ईसाई मज़हब से कुछ लेना देना नहीं है।" इस पर हमने उससे कहा : "हर मज़हब की एक पाक किताब है। एक मज़हब के मानने वाले उसकी पाक किताब में मुकम्मल तौर पर यकीन रखते हैं। इसके पैराग्राफ़ कहाँ से लिए गए, या उनको किस तरह तरतीब किया गया, इस सवाल का कोई मसला नहीं है। एक पाक किताब को अल्लाह कि किताब के तौर पर और उसके पैराग्राफ़ जो इसमें शामिल होते हैं अल्लाह के एहकामात मानकर यकीन किया जाता है। ईसाइयों की पाक/मुकद्दस किताब **मुकद्दस बाइबल**, यानी तोरह और बाइबल हैं। इसलिए पाक बाइबल में सारे पैराग्राफ़ों को तुमने अल्लाह के एहकामात मानना चाहिए। तुम अपनी पाक बाइबल को उसके पैराग्राफ़ की सदाकत के सिलसिले मे दर्जाबंदी नहीं कर सकते, मिसाल के तौर पर एक पैराग्राफ़ को फरसूदा बताकर, दूसरे को यहूदियों के बारे मे बताकर, और एक को मूसा से या गैर ईसाई बताकर कमतर नहीं कर सकते। तुम एक हिस्से में यकीन रखकर और दूसरे को इंकार नहीं कर सकते तुम्हें इसमें पूरे में यकीन रखना होगाअगर बाइबल किताब **Deuteronomy** के इस पैराग्राफ़ का ईसाई मज़हब से कुछ लेना देना नहीं तो, तुम्हारी दुनियावी कांसिलो पाक बाइबल से इसे काट देना चाहिए या फिर कम से कम पूरी दुनिया में यह ऐलान कर देना चाहिए कि यह ख़ुराफ़ात वहम था जो बाद में बाइबल में डाल दिया गया। चूँकि उन्होने ऐसा नहीं किया, तुम इस पैराग्राफ़ में अल्लाह का एहकाम समझकर यकीन करते रहोगे। इसके मुताबिक, तुम इस बात की तसदीक कर रहे हो कि ईसाई मज़हब एक बेहद वहशी, ज़ालिम, बेरहम और मौत से निपटने वाला मज़हब है।"

ईसाई पादरी इससे मुतफ़िक था। क्योंकि उसने कभी भी पाक बाइबल को पूरा नहीं पढ़ा था, और न ही कभी पुराने अहद नामे/Old Testament को देखा था और इसलिए यह पहली बार था कि उसने इसे देखा था, वह हैरानी से मुँह खोले हुए देख रहा था। आखिरकार, उसने हमसे कहा, " तुमने न सिर्फ़ मुझे बल्कि पूरे ईसाई जगत को शर्मिंदा

कर दिया। मैं कोई माहिरिन नहीं हूँ, और मैं यह भी कुबूल करता हूँ कि मैं बहुत ज़्यादा पाक नहीं हूँ।मैं सोचता था कि पाक बाइबल में सिर्फ़ रहम, नरमी और माफ़ी है।इस बेरहमी के पैराग्राफ़ ने मुझ पर तबाहकुन असर डाला है।मैं शार्मिंदा भी हूँ कि मैं एक पादरी हूँ।जब मैं घर वापस जाऊँगा,तो मैं ज़रूर कुछ आलिम थेअलोजियन को इसके बारे में बताऊँगा मैं हुक्काम को पाक बाइबल में से इस पैराग्राफ़ को हटाने के लिए इल्तिजा करूँगा।यह पैराग्राफ़ बेशक खुराफ़ाती है।क्योंकि अल्लाह ऐसे भयानक हुकूम नहीं दे सकते।यह पैराग्राफ़ यहूदियों की जालसाज़ी हो सकती है।' हमने उसे दिलासा दिया।हमने उसे अपनी अंग्रेज़ी की इशाअत में से एक, जिसका नाम **इस्लाम और ईसाईयत** है उसे पढ़ने के लिए दी।हमने कहा, "अगर तुम इस किताब को पढ़ोगे तो देखोगे कि पाक बाइबल में और बहुत सारी गलतियाँ हैं।असल में, एक खबर के मुताबिक ये गलतियाँ तकरीबन बीस हज़ार है!" क़ुरआन अल-करीम और तोरह और बाइबल की आज की कापियों के पिछले सेक्शन में क़ुरआन अल करीम और बाइबल का मवाज़ना किया गया है।बराएमेहरबानी इस सेक्शन पर नज़र सानी करिए!

पाक बाइबल, जिसे ईसाई मानते हैं कि अल्लाह तआला के ज़रिए नाज़िल की गई आसमानी किताब है, जिसमें जुल्म और बहशत का हुकूम देने वाले पैराग्राफ़ की एक बड़ी तादाद है।हम सिर्फ़ उन नाम निहाद मासूम और रहमदिल ईसाईयों के लिए एक सबक के तौर पर एक अहम तादाद का ज़िकर करेंगे जिन्होने मुसलमानों को बर्बर बुलाया और इस्लाम को बारबार्स का मज़हब बुलाया।

तादाद के 31वें बाब के शुरू में "लार्ड ने" मोसेस को हुकूम दिया "इज़राइल के बच्चों मदनियों से बदला लो ः..."(Numः 31-2) और सातवीं और बाद की आयात मंदरजाज़ेल तौर पर पढ़ी जाएगीः "और उन्होने मदनियो के खिलाफ़ जंग लड़ी, जैसा कि लार्ड ने मोसिस को हुकूम दिया था; और उन्होने सारे आदमियों को हुकूम दिया था; और उन्होने सारे आदमियों हलाक कर दिया।" (ibid:) "और इज़राइल के बच्चों ने मदनियों की सारी औरतों को और उनके छोटे बच्चो को बंदी बना लिया, और उनके मवेशी की, और उनकी सारी झुंड, और उनके सारे माल की लूट को उन्होने ले लिया।" "और जहाँ उन्होने डेरा डाला वहा सारे शहरों को आग लगा दी, और उनके सारे बड़े महलों को आग से जला दिया।" (ibid:9,10) बाद की आयात में लिखा है कि मूसा अलैहि सलाम अपने अफसरान पर गुस्सा हुए क्योंकि उन्होने औरतों को ज़िंदा छोड़ दिया था, और ये कि उन्होने

सारी औरतों के लड़कों को कत्ल करने का हुक्म दिया।(ibid:14,15,16,17) दूसरी तरफ़, बाद की आयत, (आयत 35) से हवाला है कि हलाक न की गई लड़कियों की तादाद बत्तीस हज़ार थी।कत्ल किए गए लोगों की तादाद के बारे में ज़रा सोचिए!

Deuteronomy के सातवें बाब के शरू की आयात मंदरजाज़ेल तौर पर पढ़ी जांएगी ः "जब रब तेरा खुदा तुझे उस ज़मीन पर ले जाएगा तुम उसके पास जाओ, और तुझ से पहले बहुत सारी कौमों को खड़ा कर दिया, हित्तियों और गिरगा-शितियों,... और अमोरियों, और कनाानियों, और पेराज़चिइट्रस, सात कौमें तुम से ज़्यादा बड़ी और ताकतवर। "और जब रब तेरा खुदा उन्हें तेरे सामने पहुंचाएगा; तू उन्हें मार डालेगा, और पूरे तौर पर तबाह कर देगा; तू उनके साथ कोई अहद न बनाओ और उनसे रहम करोः" (Dent:7-1,2)

एक्सोदेस के 32वें बाब की 27वीं आयत मंदरजाज़ेल तरीके से पढ़ी जएगी ः "और उसने उनसे कहा, इस तरह इज़राइल का खुदा रब फरमाता है, हर आदमी अपनी तलवार अपने पास रखे, और पूरे खेमे से दरवाज़े से दरवाज़े तक बाहर जाएँ और अंदर आएं, और हर आदमी अपने भाई, और हर आदमी अपने साथी, और हर आदमी अपने पड़ोसी को कत्ल कर डाले।" (एक्स ः 32-27)

शमूएल 1 के 27वें बाब की आठवीं और बाद की आयत में लिखा है कि दाऊद (डेविड)अलैहि सलाम और उनके सिपाहियों ने "Geshu-rites, and Gezrites और अमालेक पर हमला किया" और किसी भी औरत या मर्द को ज़िंदा न छोड़ा।" (1 शमः 27-8,9)

शमूएल 2 के आठवें बाब में लिखा है कि दाऊद अलैहि सलाम ने " दो और बीस हज़ार सीरियाई आदमियों को हलाक किया," ( 2 sam : 8-5) और फिर बाद में उन्होने "अठारह हज़ार आदमियों को हलाक किया"। (ibid:13) दसवें बाब के आखिरी हिस्से में बयान है कि उन्होने" "सीरिया के सात सौ रथों के आदमियों को, और चालीस हज़ार घुड़सवारों को हलाक किया," (10-18) जबकि बारवें बाब की खबर है कि उन्होने जिन शहरों पर कब्ज़ा किया वहाँ के रहने वालों को कत्ल कर दिया " आरे के नीचे, और लौह की हैरो के नीचे, और लौहे की कुल्हाड़ियों के नीचे, और उन्हें ईटो के भट्टे से गुज़रवाया।" (12-31)

यह पुराने अहद नामे में लिखा है कि मूसा अलैहि सलाम के बाद यूशा अलैहि सलाम ने लाखों लोगों को कत्ल कराया। (Jooh:8, और बाद के बाव)

मैथ्यू के दसवें बाव की 34वीं आयत के हवाले से ईसा अलैहि सलाम ने ऐसा कहा है, " ये मत सोचो कि मैं ज़मीन पर अमन भेजने आया हूँ ः मैं अमन के लिए नहीं, बल्कि एक तलवार के लिए आया हूँ।" (Matt :10 – 34)

लयूक के 12वें बाव के 51वीं आयत में लिखा है कि ईसा अलैहि सलाम ने कहा, "मान लो कि मैं ज़मीन पर अमन देने आया? मैं तुम्हें बताता हूँ ,नहीं ; बल्कि वटवारे के लिए ः" (लयूक ः 12-51)

दोवारा, लयूक के 22वें बाव के 36वीं आयत से रिवायत है ईसा अलैहि सलाम ने ऐसा कहा,"...लेकिन अवु ,जिस के पास एक पर्स है, उसे उसे लेने दो, और उसी तरह उसकी पकड़ भी ः और जिस के पास तलवार नहीं है, उसे अपना कपड़ा बेचने दो, और एक खरीद ले।" (लयूक ः 22-36)

एक माकूल शख्स जो पाक बाइवल को पढ़ेगा वह देखेगा कि यह वहशीपन और जुल्म के मनाज़िर से भरी पड़ी है, और ये कि वे सारे मंज़र नबियों और अल्लाह तआला के प्यारे वंदो से बयान करदह बताए गए हैं।

इस किताब के हुकूम के मुताबिक, जिसे वे अल्लाह तआला का कलाम मानते हैं, ईसाईयों ने एक दूसरे और मुसलमानों और यहूदियों पर जुल्म किया, कत्ले आम की सज़ा दी जो तारीख में खुन से लिखी गई है।यह **कसफ-उल-असर व फी किसास-ए-अंबिया** किताब के 27वें सफ़हे पर मंदरजाज़ेल तौर पर बयान है जिसे असल में अंग्रेज़ी में एलेक्स कीथ ने लिखा था और एक मेरिक नाम के पादरी के ज़रिए फारसी में तर्जुमा किया गया ः " कानसटैनटाइन महान ने अपने मुल्क में सारे यहूदियों की काट छांट का हुकूम दिया उनके कान काटँने और मुख्तलिफ़ जगहों पर उनको जिला वतन करने का हुकूम दिया।" पादरियों के ज़रिए लिखी गई एक किताब जिसका उनवान था सियार **उल-मुतकद्दिमीन** उसमें मंदरजाज़ेल जानकारी हैं ः " 372 सी.ई. में, रोमन वादशाह Gratianus ने, अपने कमांडरों के साथ सलाह करने के बाद मुल्क में सारे यहुदियों को ईसाईयत को अपनाने का और जो मज़्ज़म्मत करें उन्हें कत्ल करने का हुकूम दिया।"

पादरियों के ज़रिए लिखी गई एक किताब में जो 1265[1849 सी.ई.]में बेरूत में शाय की गई उसमें लिखा है कि दो सौ तीस हज़ार प्रोटेस्टेंट को कैथोलीक के ज़रिए इस बिना पर हलाक कर दिया गया कि वे पोप को कुबूल नहीं करेंगे। एक किताब के 41वें और 42वें सफ़हो पर जो एक कैथोलिक पादरी थामस के ज़रिए अंग्रेज़ी से ऊर्दु में तर्जुमा की गई और जिसे मिरात उस-सिदक के उनवान से 1267[1851 सी.ई] में शाय किया गया उसमें लिखा है कि प्रोटेस्टेंट ने छः सौ पैंतालीस (645) मोनास्ट्री, (90) नव्वे स्कूल, तेईस सौ और छिहत्तर (2376) चर्च और एक सौ दस (110) अस्पताल कैथोलिक से हड़पे और बग़ैर किसी चीज़ के बेच दिया। रानी एलिज़ाबेथ के हुकूम पर कैथोलिक पादरियों की तादाद को जहाज़ पर बिठाया गया और समुंद्र में छोड़ दिया गया। किताबों की जिल्दो में इन मज़ालिम और तबाहियों के बारे में तफ़सील से बताया गया है। पादरियों के ज़रिए लिखी गई ये किताबें साबित करती हैं कि असली वहशी ईसाई थे जिन्होने मुसलमानों को वहशी का कलंक लगाया।

ईसाई पादरी कुरआन अल करीम में एक लफ़ज़ नहीं ढूँढ पाए जो उनके इल्ज़ाम की तसदीक़ कर पाता कि इस्लाम बर्बरता का मज़हब है। दूसरी तरफ़, ऊपर बताए गए पैराग्राफ़ जिसे हमने Old Testament से बयान किया था वो दिखाता है कि ईसाई मज़हब, इस्लाम के बजाए, बिल्कुल बर्बरता का मज़हब है। किस तरह ईसाई पादरियों का मुँह पड़ सकता है इतने ज़्यादा उनकी अपनी पाक बाइबल में बर्बरता के अहकामात होने के साथ इस्लाम को एक बर्बरता का मज़हब पुकारने के लिए? पहले उन्हें अपनी पाक बाइबल का जाएज़ा लेने दो, ईसाईयत के नाम पर बर्बरता को बढ़ावा देने के बारे में पढ़ने दो, और शार्मिंदगी महसूस करें, चाहे थोड़ी ही सही।

नाम निहाद,मासूम, तहज़ीब याफ़ता और रहमदिली ईसाईयों ने सलीबी महाज मुंज़म किया ईसा अलैहिस्सलाम के वतन और यरूशलेम को मुसलमानों के हाथों से बचाने के लिए ,जिन्हें वे बर्बर बुलाते हैं। उस वक्त के ईसाई नीम जंगली ज़िंदगी जी रहे थे, जबकि मुसलमान तहज़ीब के शिखर पर थे और पूरी दुनिया की इल्म,साईस, फनून, ज़राअत, और अदबियात में रहनुमाई कर रहे थे। दौलत और फलाह जो वे मज़ा ले रहे थे वो कुदरती फल था उनकी आला तहज़ीब पर पहुँचने का। यह फलाह की आला डिग्री आधे नंगे ईसाई लोगों की आँखो को चमका रही थी, और मुसलमान नएमतों से लुत्फ़ अंदोज़ हो रहे जिनसे वे ललसा रहे थे। उनकी सारी सोचें इस बात पर टिक गई थी कि किस तरह अमीर मुसलमान

मुल्कों को तवाह करें। आखिरकार एक वहस मिली। ये ज़रूरी हो गया कि मुसलमानों से ईसा अलैहिस्सलाम से मुतअल्लिक मुकद्दस ज़मीनें हटा ली जाएँ।

पिरारा एल एरमाईट नामी एक दुशमन पादरए और पैसे और खुन का प्यासा इस दावे के साथ आया कि उसने एक सपना देखा जिसमें ईसा अलैहिस्सलाम उसके पास आए हैं और मदद के लिए चिल्ला रहे हैं यह कहते हुए, "मुझे मुसलमानों के हाथों से बचा लो!" उसने यरूशलेम को वचाने के लिए एक फौजी मुहिम शरू की, लगातार लोगों को उकासाता रहा और वढ़ावा देता रहा। यह एक मौका था जिसकी तलाश में लुटेरे थे। यह सपना देखते हुए कि वे उन जगहों पर कीमती चीज़े हासिल कर पाएंगे, उन्होने पहली मुहिम में जो पिरारे एल एरमाइट के ज़रिए नसव की गई थी उसमें शामिल हो जाए। उनके कंमाडर पागल पादरी एल एरमाइट और गरीव नाइट गौंटियर थे। सिर्फ़ लुटेरों पर मुशतमिल,यह पहले कूसेडर उन्होने अभी अपने मुल्कों को नहीं छोड़ा था कि उन्होने लूट शूरू कर दी। उन्होने जर्मनी में कुछ शहरों को तवाह किया। जब वे इंस्तावुल में दाखिल हुए, उन्होने खुशहाल वीजान्टिन शहर को मुकम्मल वेअसर तरीके से तवाह किया। जिन चीज़ो को वे चुरा रहे थे उनके मालिकों की चीख व पुकार सुने वग़ैर। पूरी तरह खुल कर, कूसेडर ने कस्वों और गांवो के ज़रिए से अपना रास्ता बना रहे थे, विना सोचे समझे जगहों और लोगों पर हमला कर रहे थे, जब उन्हें यरूशलेम पहुँचने से पहले सेल्जुक तुर्को के ज़रिए रोका गया और तवाह किया गया। फिर दूसरे कूसेडर नमूदार हो गए। धीरे धीरे, सलीवी जंग एक इज़्ज़त का मामला वन गई, और मुम्ताज़ वादशाहों ने इस मुहिम में शमूलियत करली, जिसका मतलव था बड़ी फ़ौजें। एक खवर के मुताविक, एक लाख मज़वूत, [या कम से कम **600,000**,] हमला करने के लिए आगे वढ़ीं। यह सलीवी जंग एक सौ चौहत्तर सालों तक आठ लहरों में जारी रहीं **489**[**1096** सी.ई.] से **669**[**1270** सी.ई] तक। वाद में, कूसेडर तुर्को के खिलाफ़ मुंज़म हो गए। उसमानिया/ओटोमन तुर्को ने कूसेडिंग फौजों के खिलाफ़ पाक जंगे लड़ीं और उन्हें Nighbolu और Verna में पस्त किया। कुछ कट्टर ईसाईयों ने वाल्कन जंग को भी जो **1330**[**1912/13** सी.ई] में लड़ी गई थीं इन मुहिमों में शामिल कर लिया, और उस जंग को जो उन्होने तुर्को के खिलाफ़ लड़ी, उसे कसेडिंग मुहिम मान लिया।

जर्मन का वादशाह फेडरिक वरवारोसा, फेडरिक **2**, कोनार्ड **3**, हेनरिक **7**, वरतानवी राजा रिर्चड शेर दिल (कोयूर डी शेर), फ्रेंच राजा फिलिप अगस्टे और सेंट लुइस, हंगेरियन राजा एंड्रियास **2** वहुत सारे राज और शहज़ादों में थे जिन्होने सलीवी जंग में शमूलियत की। रास्ते में हर किस्म का वहशीपन का जुर्म करते हुए और, जैसा कि हमने पहले

ही बताया कि इस्तांबुल जो कि उनके अपने ही हम मज़हब से तआल्लुक रखता था, बीजान्टिन, उसे जलाते, तबाह करते हुए और लुटते हुए, वे यरूशलेम पहुँचे। मंदरजाज़ेल पैराग्राफ़ पाँच जिल्दों की किताब से दुसरे लफ़्ज़ो में बयान किया गया है जो मिचाऊद के ज़रिए सलीबी मुहिमों के बारे में है ः

" **492**[**1099** सी.ई.] में क्रसेडर यरूशलेम में अपना रास्ता बनाने के काबिल थे। जब वे शहर में दाखिल हुए तो उन्होने वहाँ के रहने वाले सत्तर हज़ार मुसलमानों और यहुदियों को हलाक किया। सड़के खुन से भर गई। लाशों के ढेर ने सड़के बंद करदीं। क्रूसेडर इतने ज़्यादा वहशी हो चुके थे कि उन्होने दस हज़ार यहूदियों को हलाक कर दिया जो उन्हें जर्मनी में राइन के तट पर मिले थे।" दूसरी तरफ़, मुसलमान तुर्को ने वियना में एक भी औरत या बच्चा हलाक नहीं किया। पहाड़ पर लिथोग्राफ़ ख्याली था। अलबत्ता,क्रूसेडर की बर्बरता जेरूसलेम में, साफ़ हकाईक हैं।

अहमद सेफ़दत पाशा, रहिमा-हुल्लाहु तआला ने अपनी किताब **किसास-ए-अंबिया** में मंदरजाज़ेल बयान किया ः

" क्रूसेडिंग फौज ने **492**[**1099** सी.ई.] में जेरूसलेम पर हमला किया। उन्होने उसके सारे बाशिंदो को तलवार पर रख लिया। उन्होने सत्तर हज़ार हज़ार से ज़्यादा मुसलमानों को जिन्होने मस्जिद-ए-अक़सा में पनाह ले रखी थी उन्हें हलाक कर दिया। उन मुसलमानों में से ज़्यादातर तादाद इमामों (मज़हबी रहनुमाओं), आलिमों, ज़ाहिद (बेहद पाक मुसलमानों), और ऐसे लोगों की थी जो एक गन का इस्तेमाल करने के लिए बहुत बूढ़े थे। ईसाई वहशियो ने कीमती पत्थर जिसे **सहरतुल्लाह** बोलते हैं उसके नज़दीक खज़ाने में तारीखी आइटम और बेशुमार सोने और चाँदी की मोमबत्ती की छड़ियों को लूटा। सीरिया के ज़्यादातर शहर क्रूसेडर के कब्ज़े में आ गए, और नतीजे के तौर पर **जेरूसलम की सल्तनत** वुजूद में आई ।कई लंबे सालों तक सैकड़ो लड़ाइयाँ इस सल्तनत और मुसलमानों के बीच लड़ी गइ। आखिरकार, सलाहऊददीन-अयूबी रहिमा हुल्लाहु तआला [डी-**589** (**1193** सी.ई.) ने मुख़तलिफ़ लड़ाइयों के बाद ,**583**[**1186** सी.ई] में एक कामयाबी जीत ली जिसे हट्टीन कहते हैं, और जेरूसलम में जुमें में दाखिल हो गए जो रजब के मुबारक महीने की **20**वें दिन से मेल खाता था। मंदरजाज़ेल कुछ सालों में उन्होने बहुत सारे शहरों को क्रूसेडरों से पाक किया और लाखों मुसलमानों को क़ैद से बचाया। जेरूसलम के बड़े, बिशप और पादरियों ने मातमी कपड़े पहने और अपने इंतेकाम को फैलाने के लिए यूरोप के सफ़र पर निकल

गए। पॉप को जब हार की खबर पहुँची तो वह सदमें से मर गया। क्रूसेडर की एक नई पैन यूरोपीय फौज कायम की गई। जर्मन बादशाह फ्रेडरिक, फ्रांस का राज फिलिप, और बरतानिया का राज रिर्चड, अपने सीनों पर सलीब पहनकर अपनी फौजो के साथ आए। फिर भी जेरूसलेम को हासिल करने की उनकी कोशिश नाकामी में खत्म हो गई। **690**[**1290** सी.ई] में, मिस्री सुल्तान मलिक अशरफ़ रहिमा हुल्लाहु तआला ने अक्का पर जीत हासिल कर ली, जोकि क्रसेडर का मर्कज़ था, साथ ही साथ दूसरे शहर भी, इस तरह सलीबी जंग का खात्मा हो गया।"

अठासी सालों तक यानी,**1099** से **1187** तक जेरूसलेम ईसाईयों के कब्ज़े में रहने के बाद आखिरकार बाद की बताई गई तारीख में सलाहऊददीन-ए-अयूबी के ज़रिए बचा लिया गया। उस मुबारक कमांडर ने रिर्चड शेर दिल को पकड़ लिया। हालांकि, उससे एक जंग के कैदी जैसा सुलूक करने के बजाए, उन्होने उसके साथ वही बेहद मेहरबान और नरम मेहमान नवाज़ी दिखाई जैसे वे एक पड़ोसी मुल्क के राज के साथ दिखाते जो उनसे अदब से मिलने आता। यह जंगली इस्लाम और प्यारे ईसाई मज़हब के बीच फर्क दिखाने के लिए एक अहम मिसाल थी!

यह सही है कि मुसलमानों ने कुछ गिरजाघरों को मस्जिदों में तबदील कर दिया। अलबत्ता कोई गिरजाघर तबाह नहीं किया गया। इसके बरअक्स, उनमें से बहुत सारे दोबारा बनाए गए। जब सुलतान मुहम्मद खान रहिमा हुल्लाहु तआला ने इस्तांबुल पर फतह हासिल की, तो उन्होने सेंट सोफ़िया, जोकि एक चर्च था, उसे एक मस्जिद में बदल दिया। यह अमन के लिए बातचीत के दौरान शर्तों में से एक पेश की गई। यह न सिर्फ़ एक मज़हबी वाक्या था बल्कि एक यादगार थी तुर्को की अज़ीम जीत की। हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पहले से ही इस्तांबुल की फतह के बारे में बताया था और कहा था, **"उनके लिए कितना खुशाकिस्मत है..."** फातेह और उसखी फौज के बारे में। फातेह सुलतान मुहम्मद खान जिन्होने इस्तांबुल फतेह करके एक नए युग का आगाज़ किया वे सेंट सोफ़िया को जो ईसाई मज़हब की एक अलामत थी उसे एक मस्जिद में तबदील करके इस वाक्ये को पूरी दुनिया में ऐलान करना चाहते थे। फातेह सुलतान मुहम्मद खान ने कभी सेंट सोफ़िया को तबाह नहीं किया। इसके बरअक्स, उन्होने उसे मरम्मत कराया। कुरआन अल करीम में गिरजाघरों को मसख करने के मुतअल्लिक कोई हुकूम नहीं है। जैसा कि हम बाद में देखेंगे कि, मुसलमान हुकूमतों ने बग़ावत के खिलाफ़ हमेशा गिरजाघरों और दूसरे मंदिरो की हिफ़ाज़त की।

अब हम तुम्हें बताते हैं कि एक मस्जिद को चर्च में तबदील करने का काम ईसाईयों के ज़रिए पूरा किया गया, जोकि अपने आपको प्यारा, मासूम , और रहमदिल बताते हैं। मंदरजाज़ेल पैराग्राफ़ इस्पानी=स्पेन से दूसरे लफ़ज़ो में तर्जुमा किया गया है, जिसे शहज़ादे सेल्वाटोर, प्रोफेसर ग्रस, थेअलोजियन के तअव्वुन से जर्मनी के शहर वुर्ज़बर्ग में **1312**[**1894** सी.ई.] में शाय की गई ः

" कोर्डोवा (अरबी अदब में क़ुरतुवा) स्पेन के अहम शहरों में से एक है। यह स्पेन में अरब अंडलुसियन रियास्त की राजधानी था। जब तारिक बिन ज़ियाद रहिमा-हुल्लाहु तआला की कमांड मे मुसलमानों ने (जिब्राल्टर पार किया) **95**[**711** सी.ई.] में स्पेन में उतर गए, तो उन्होने शहर को अपनी राजधानी बना लिया। अरबी अपने साथ शहर में तहज़ीब लेकर आए और इसे नीम जंगली आबादी से स्पेन का सख़ाफ़ती मर्कज़ बना दिया। उन्होनें एक बड़ा महल[अल-क़सर] के नाम से बनाया, अस्पतालों और मदरसों (इसलामी यूनिवर्सिटियों) के अलावा। इसके अलावा, उन्होने एक जामिया[बड़ी युनिवर्सिटी) भी कायम की, जोकि उस वक्त में यूरोप में पहली यूनिवसिर्टियो कायम की गई थी। उस वक्त तक यूरोपीय तहज़ीब में इल्म में, साईंस में, अदबियात में, खेती-बेड़ी में, और इंसानियत में बहुत पीछे थे। मुसलमान उनके लिए इल्म, साईंस,और तहज़ीब लाए ,और उन्हें पढ़ाया।

"अबद-उर-रहमान बिन मआविया बिन हिशाम बिन अबद-उल-मालिक रहिमा-हुमुल्लाहु तआला[डी.**172** (**778** सी.ई.)], आंदालुसिया में इस्लामी रियास्त के बानी, ने क़ुतुबा (कॉर्डोबा) में एक अज़ीम मस्जिद कायम करने का इरादा किया। वे चाहते थे बग़दाद की मस्जिदों से ज़्यादा यह मस्जिद बड़ी, प्यारी और ज़्यादा खूबसूरत हो। उन्हें एक पलॉट मिल गया जो वे सोचते थे कि मस्जिद के लिए बिल्कुल मुनासिब है! वो पलॉट एक  ईसाई का था। वह अपने पलॉट के लिए बहुत ऊँचा पैसा माँग रहा था। एक इंसाफ पसंद हुकूमरान होने की वजह से अबद-उर रहमान **1** ने उस पलॉट को हासिल करने के लिए ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं की, जोकि वे आसानी से कर सकते थे। उन्होने उस पलॉट के मालिक को वे रकम अदा करदी जो उसने माँगी थी। ईसाईयों ने पैसे को अपने लिए एक छोटा सा चर्च बनाने के लिए इस्तेमाल किया। मुसलमानों ने **169**[**785** सी.ई.] में मस्जिद की तामीर करनी शुरू की। तामीर के दौरान, अबद-उर-रहमान हर दिन दूसरे कारकनों के साथ कुछ घंटो के लिए काम करते थे। तामीर के लिए ज़रूरी सामान मुख्तलिफ़ जगहों से मंगाया गया। लकड़ी के हिस्सों के लिए ज़रूरी लकड़ी लेबनान से, जोकि अपने कीमती पेड़ो के लिए मश्हूर था, मश्रिक के मुख्तलिफ़ हिस्सों से रंगीन संगमरमर की बड़ी गांठ लाई गई, और कीमती पत्थर

मोती, पन्ने और हाथी दांत ईराक और सीरिया से मंगाए गए, और इस सारे सामान ने पलॉट पर बड़ा ढ़ेर लगा दिया। सारी चीज़े बहुत ज़्यादा खूबसूरत और भरपूर थीं। आहिस्ता-आहिस्ता ,मस्जिद की दिवारें ऊँचाई पर पहुँच गईं कि एक शानदार इमारत की पहली झलक नज़र आने लगी। अबद-उर-रहमान **1** मस्जिद की तकमील को देखने के लिए लंबे अरसे तक ज़िंदा नहीं रहे। वे **172**[**788** सी.ई] में वफ़ात पा गए। उनके बेटे हिशाम, और उनके पोते हाकिम **1**, " रहिमा-हुमुल्लाहु तआला जो बिलतरतीब उनके जानशीन थे उनकी अज़ीम कोशिशो से, मस्जिद दस साल में बनकर तैयार हो गई। हालांकि सालों के दौरान मुलहिकात के साथ, ये **380**[**990** सी.ई] से पहले नहीं पूरा हुआ, जिसका मतलब है दो सौ पाँच साल बाद , मस्जिद अपने कामल के खात्मे पर पहुँची। **366**[**976** सी.ई] में हाकिम **2** ([**1**] हाकिम **2 366**[**976** सी.ई] में वफ़ात पा गए)। ने मस्जिद के लिए एक सोने का मिम्बर बनवाया। यह सब उन सभी तवील सख्त महनत वाले सालों का नतीजा है जो इतने गज़ब की, खुशगवार और बेहद खूबसूरत शाहकार वाली मस्जिद बनी। यह मस्जिद आयतकार की शक्ल में **135 X 120** मीटर के तौल व अर्ज़ के साथ थी। दो मतवाज़ी बाज़ू, हर एक **135** मीटर,मस्जिद के नज़दीक के नज़दीक एक खुल यार्ड बनाने के लिए मर्कज़ी तौसीअ की गई। वहाँ मस्जिद में एक हज़ार, चार सौ औ उन्नीस (**1419**) खम्बें थे, हर एक दस मीटर लम्बा था। ये खम्बें दुनिया की बहतरीन किस्म के मार्बल से बने हुए थे। खंबो पर मेहराबें तरह तरह के संगमरमर के टुकड़ो को काट कर बनाई गई थीं। जब तुम मस्जिद में दाखिल होगे तो तुम्हारी आँखे खम्बों के जंगल के ज़रिए पेश की गई शानदार मंज़र में खो जाएगी। " खंभे के संगमरमर के कैप्शन ने देखने वाला को इतनी मज़बूती से तारीफ़ का हुकूम दिया कि जैसे ही एक मेहमान मस्जिद में घुसता है वह उसकी खुबसूरती से मुतासिर हो जाता है। यह ऐसी खूबसूरती थी जो दुनिया ने उस वक्त तक नहीं देखी थी।

वहाँ मस्जिद में बीस दखिले थे। हर दाखिले से पहले एक खास नारंगी -बाग़ थे, जिससे मस्जिद से घिरी हुई थी। मस्जिद के चारों ओर तरह के बाग़ात थे, तालाब थे पानी के जेट के साथ,और फव्वारे थे। शादिरवान (किनारों पर नलों के ज़खाईर) लगाए गए ताकि मुसलमान वुज़ू कर सकें। मस्जिद का फर्श बहुत ही कीमती संगमरमर जिसे नायाब लकड़ी से सजाया गया। लेबनान की कीमती लकड़ी छत की तामीर के लिए इस्तेमाल की गई जो मस्जिद को एक ग़ैर मामूली खूबसूरती और शान मुहैय्या करवाती है! वहाँ दीवारों और छतों पर नक्काशियाँ, कुंदाकारी,राहत और खूबसूरत तहरीरें थीं। अगर तुम मस्जिद में दाखिल होगे और चारो तरफ़ निगाह दोड़ाओगे तो तुम महसूस करोगे जैसे कि इस शानदार खंभो के

जंगल का कोई आखिर नहीं है। रात में मस्जिद का इंटीरियर हज़ारों मोमबत्तियों में से निकलने वाली रंगीन रोशनियों की वजह से एक सपने की तरह हो जाता है।

“यह नफ़-उत-तीव मिन-ग़सनी अंडुलस-इर-रातीब नामी किताब में लिखा है, जो एक मशहूर तारीखदाँ अहमद अल-मक्कारी[डी **1041** (**1632** सी.ई.), ने मिस्र में लिखा, कि मस्जिद में रोशनी करने वाले लैंप और मोमबत्तियों तादाद सात हज़ार चार सौ और पच्चीस (**7425**)थी, उस नम्बर का आधा साल के औसत दिनो को रोशन करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, वह सब रमज़ान की रातों में और ईद साथ ही साथ दूसरी पाक रातों में रोशन किया जाता है, यानी चौबीस हज़ार (**24000**) ओक्कस (**67200** l.b) ज़ैतून के तेल लैप और मोमबत्तियों को जलाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, और वह **120** ओक्कस (**236** l.b) एम्बरग्रीस और मुसब्बर मस्जिद को महकाने के लिए जलाया जाता था।

“ मिनारों को अनार की शक्ल में अनवान के साथ ताज पहनाया गया था। अनवान को कीमती गहनो, मोतियों और पन्नों से सजाया गया था, ओर पत्थरों के बीच में जगहों का सोने के टुकड़ों से भरा गया था। मुंजिद, एक लुग़त ईसाई पादरी के ज़रिए लेवनान में लिखी गई, कुतबा की मस्जिद की दो ख़ूबसूरत तसवीरें शामिल थीं।

“ जब ईसाईयों ने अंडालूसी रियास्त को पामाल किया और कुतबा पर हमला किया **897**[**1492** सी.ई.] में, सबसे पहली चीज़ जो उन्होने की वह थी मस्जिद पर हमला। उन्होने अपने घोड़े बेहद खुबसूरत और शानदार मस्जिद में घुसा दिए, और मस्जिद में पनाह लिए हुए मुसलमानों को इतना ज़यादा बेदर्दी से हलाक किया कि खुन बहकर मस्जिद के दरवाज़ों से बाहर चला गया। फिर सोने की मिनारं तोड़ दीं और आपस में टुकड़े बाँट लिए। उन्होने हाथी दांत की रहलों (निचले मेंज़े पढ़ने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली) को भी बांट लिया। वहाँ मिनार में एक खुफ़िया दराज़ में कुरआन अल करीम की एक शानदार कॉपी छुपी हुई थी। मोतियों और पन्ने से कढ़ाई हुई ,यह ठीक वही कॉपी थी कुरआन अल करीम की जिसे उसमान रज़ि अल्लाहु अन्ह के ज़रिए लिखा हुआ था। उन्होने उस ख़ूबसूरत किताब को ढूँढ लिया और इसे अपने पैरो के नीचे रौंद डाला, इस तरह बेमिसाल और शानदार मास्टरपीस,मिनार और कुरआन अल करीम की कॉपी,पूरे तौर पर ज़ाया करदी गई क्रूर स्पेनियों ने सारे मुसलमानों और यहूदियों को तलवार की ताकत के ज़ोर पर ईसाई बना दिया। वे यहूदी जो उनसे बचके भाग गए उन्होने उसमानिया सल्तनत में पनाह ली। तुर्की में

आज जे यहूदी रह रहे हैं वह उन लोगों के नाती- पोते हैं। दूसरी तरफ़, मुसलमानों ने, जो मुल्क के पहले फातेह थे, उन्होने कभी वहाँ रह रहे ईसाईयों या यहूदियों को परेशान नहीं किया, न ही उन्होने कभी उन्हें अपनी इवादत के मज़हबी अमाल को करने से रोका।

" मुसलमानों और यहूदियों को, ईसाई स्पेनियों ने बेजोड़ बर्वरता के कामों के ज़रिए पामाल करने के बाद, उस मस्जिद का तवाह करने का आगाज़ हुआ। सबसे पहले उन्होने मिनारों पर अनार की शक्ल के, सोने और पन्ने-से सजे हुए अनवान को निचे गिराया और उसे लूटा। उन्होने उनकी जगहों पर आम पत्थरों से बने हुए गंदे अनवान लगा दिए ,जोकि वात करने के लिए ,फरिशतों की नुमाएंदगी करते थे। उन्होने छतों में से लकड़ी के ज़ेवरात तोड़ दिए, और सगंमरमर के फर्श को टुकड़ों में तोड़ दिए, उनकी जगहों में आम पत्थरों को लगा दिया। उन्होने दिवारों के ज़ेवरात को छिलकर निकाल लिया। उन्होने खंभो को गिराने की कोशिश की, जिसमें में वे जुज़वी तौर पर कामयाब हो गए। जो खंभे वच गए थे उन्होने उनपर सफ़ेदी करादी। हज़ारों खंभे गिरा दिए गए और ज़मीन पर मार्वल/संगमरमर का एक वड़ा ढेर लग गया। ज़्यादातर बीस रास्ते पत्थरो से बने दिवारों से बंद कर दिए गए। बर्वरता के आखिरी अमल के तौर पर, **929**[**1529** सी.ई.] में उन्होने मस्जिद को चर्च में तवदील करने का फैसला किया। उन्होने उस वक्त के स्पेन और जर्मनी के राजा, कार्लोस **5**[चार्ल्स क्विंट(**906-966**[**1500-1558**]), से ऐसा करने की इजाज़त हासिल करने के लिए अरज़ी डाली। चार्ल्स क्विंट ने पहले तो ऐसा करने की इजाज़त देने से इंकार कर दिया। ताहम कट्टर कार्डिन्स ने लगातार उस पर ज़ोर डाला, यह दिफ़ाह करते हुए कि यह एक मज़हबी कानून है जिसे पूरा होना चाहिए। उनमें सबसे आगे कार्डिनल एलोनसो मॉरिक था, जिसके पास ज़्यादा ताकत थी, और जो पहले से ही पॉप से रज़ामंदी ले चुका था। यह देखकर कि पॉप भी मस्जिद को चर्च में तवदील करना चाहता है, चार्ल्स क्विंट ने भी इस कलिसाई साज़िश के घुटने टेक दिए। यह फैसला किया गया कि चर्च में तवदिली के लिए दूसरे और बहुत सारे खंभो को तोड़ना पड़ेगा। इसलिए मस्जिद में जो खंभे को तोड़ना पड़ेगा। इसलिए मस्जिद में जो खंभे बचे रह गए थे उसको कम करके आठ सौ वारह कर दिया गया, जिसका मतलब है कि कम से कम उन कीमती मार्वल। संगमरमर के खंभो में से छः सौ खत्म कर दिए गए। जो चर्च बनाया गया वह एक नक्काली भद्दे कोस की शक्ल में था; मस्जिद के वीच में **52** से **12** लम्बाई-चौड़ाई में। जव चार्ल्स क्विंट कोंडोवा गया और चर्च को देखा तो उसे इतना दुख हुआ कि उसने कार्डिनलस की यह कहते हुए मज़म्मत की, 'इस आदम नज़र ने मुझे इतना दुखी कर दिया इस बात पर कि मैंने इस बात इस तवदीली

की तुम्हे इजाज़त क्यों दी। अगर मुझे अगर पता होता कि तुम आर्ट के उस खूबसूरत काम को जिसका इस ज़मीन पर कोई बराबरी नहीं थी, तुम इस तरह बरबाद करोगे, तो मैं तुम्हें कोई इजाज़त ही नहीं देता, और मैं तुम सबको सज़ा देता। यह भद्दा चर्च जो तुमने बनाया है यह एक चक्की की इमारत बनाने से ज़्यादा नहीं है जो तुम्हें हर तरफ़ नज़र आती है। लेकिन इस तरह की दूसरी शानदार मस्जिद बनाना नामुमकिन है जो तुम लोगो ने खत्म खी है। आज, उस खूबसूरती की गहराई से तारीफ़ करते है उस बर्बरता, और दयनीय ढंग से मज़ाक उड़ाया इस बीच में बौने की तरह चर्च का, और उनकी शिकायतों को गुमराह करने के लिए, इस तरह की शानदार शाहकार को इस तरह तरह के मजसमें में डाल दिया।" यह हमारे स्पेनियाई तर्जुमे का खात्मा है।

जो पैराग्राफ़ तुमने ऊपर पढ़ा वह एक ईसाई ग्रुप के ज़रिए लिखा गया है जिनके बीच में पादरी भी शामिल थे। यह सादा सच्च है। तुम यहाँ हो ः देखो कौन दूसरे लोगों को अपने मज़हब बदलने के लिए ज़ोर लगा रहा है, जो मज़हबी मंदिरों को जलाते और लुटते हैं, और जो जुल्म को बढ़ावा देते हैं। कोंडोबा में मस्जिद का नाम ला मज़किटा चर्च है। ये लफ़्ज़ 'मज़किटा (अरबी) लफ़्ज़ मस्जिद, से लिया गया है (जिसका मतलब है एक जगह जहाँ मुसलमान नमाज़ या सलात के दौरान अपने आपको झुकाते हैं। इसलिए मस्जिद। इसके कहने का मतलब है कि वह इमारत अब भी मस्जिद का नाम लिए हुए है, और जो ज़ाएरीन इसे देखने आते हैं वे इसे एक चर्च की तरह नहीं देखते, बल्कि इस्लामी तहज़ीब के एक अज़ीम और आलीशान शाहकार के तौर पर देखते हैं

अबद-उर-रशीद इब्राहीम एफ़ंदी[डी.**1944**, जापान में] ने अपनी किताब 'आलम-ए-इस्लाम' की दुसरी जिल्द में 'अंग्रेज़ो की इस्लाम के खिलाफ़ दुशमनी' के बारे मैं एक बाब में मंदरजाज़ेल बयान किया जो इस्तांबुल में **1328**[**1910** सी.ई] में शाय की गई ः "अंग्रेज़ो का बुनियादी मकसद खिलाफ़त-ए-इसलामिया (इस्लामी खिलाफ़त) को खत्म करना था। क्रिमियन जंग, जो उनकी छलकपट भड़काने वाली पालीसी का नतीजा था और जिसके दौरान उन्होने जानबुझकर तुर्को का साथ दिया था, वह खिलाफ़त के इदारे को पामाल करने के लिए उनके पलानों में से एक पड़ाव था। पेरिस का मुआहिदा उनके छलबल का खुला भंडाफोड़ था। [लुसाने में की गई अमन की बातचीत के दौरान रखी गई तजवीज़ात भी उनकी दुशमनी ज़ाहिर करती है।] सारी तबाहियाँ जो पूरी तारीख में तुर्को पर पड़ीं वे सब असल में अंग्रेज़ी हैं, असल मकसद को छुपाने के लिए इस्तेमाल किए गए भेस के बावजूद। ब्रिटिश पॉलिसी इस्लाम की पामाली पर मुबनी है। यह पॉलीसी इस्लाम से उनके डर

से बरामद हुई। मुसलमानों को गुमराह करने के लिए, उन्होने बेईमानी किराए के सैनिकों का इस्तेमाल किया। वे उन्हें इस्लामी आलिम, हिरो के तौर पर नुमाएंदगी करते है। हमारे कहने का सार यह है कि ः इस्लाम के सबसे ज़्यादा भयानक दुश्मन ब्रिटिश पहचान के तहत दुबके हुए है।" ब्रायन विलियम्स जेनिंग्स, एक अमेरिकी कानूनदान और सियस्तदान,**1891** और **1895** के बीच में अमेरिकी कांग्रेस में House Of Representatives की रूकनियत, सम्मेलनों और अपनी किताबों के लिए मश्हूर थे। **1913** और **1915** के बीच में वह अमेरिका के वज़ीरे खारजा थे। **1925** में वह वफ़ात पा गए। उन्होने अपनी किताब **भारत में बरतानवी में बरतानिया** की इस्लाम की तरफ़ दुशमनी, उनकी बरर्बता और जुल्मों के बारे में लिखा।

ईसाईयों के जुल्म व सितम और मुसलमानो के खिलाफ़ तश्दुद की सबसे जंगली और सबसे वहशी मिसाल भारत में अंग्रेज़ी के ज़रिए मुरतब किए गए। ये **अस-सवरत उल-हिंदिया** किताब में मंदरजाज़ेल तरीके से बयान किया गया है, जिसका मतलब है 'भारती इंकलाब, अल्लामा फ़दल-ए-हक्क खैर-अबादी, भारत में एक अज़ीमं इस्लामी आलिम, और **अल-यवाकीत-उल-मिहरिया** मौलाना गुलाम मिहर अली के ज़रिए लिखी गई और भारत में **1384** [**1964** सी.ई.] में शाय की गई और इसके तबसरे में ः" **1008**[**1600** सी.ई.] में ,पहले के तौर पर, अंग्रेज़ो को अकबर शाह की रज़ामंदी मिली भारत के शहर कलकत्ता में तिजारती मरकज़ खोलने के लिए। शाह-ए-आलम के ज़माने में उन्होने कलकत्ता में ज़मीन के इलाको को खरीदा, और उन इलाको की हिफ़ाज़त के लिए सैनिक लेकर आए। बाद में यह इजाज़त एक गैर मामूली हक बन गई जो वे पूरे भारत में ईनाम के तौर पर इस्तेमाल कर रहे थे सुल्तान फ़ेरूह सर शाह का तिब्बी इलाज करने के तौर पर। शाह आलम **2** के वक्त के दौरान दिल्ली में घुसपैठ के ज़रिए उन्होने Executive ताकत को हासिल कर लिया और जुल्म को करना शुरू कर दिया। इसी दौरान, भारत में रह रहे वहाबियों ने सुन्नी, हंफ़ी और सूफ़ी सुल्तान बहादुर शाह ज़फर **2** को एक बिदअती कहकर इल्ज़ाम लगाया, एक गाली जो आहिस्ता-आहिस्ता उन्हे एक काफ़िर बुलाने में तबदील हो गई। इन बदनाम करने वालो के ज़रिए हिमायत किए गए, हिंदू नामी काफ़िरो के ज़रिए और खासतौर से वज़ीर एहसान उल्लाह खान की नमकहरामी की वजह से, बरतानवी सिपाही दिल्ली में घुस गए। उन्होने घरो और दुकानों पर छापे मारे, चीज़ो और पैसे को लूटा। उन्होने बहुत सारे लोगो को नेज़े पर रखा, औरते और बच्चों सभी को पीने के लिए पानी ढूँढना नामुमकिन हो गया था। उन्होने बूढ़े बहादुर शाह ज़फर और उनके घरवालों को, जो हूमायूँ शाह के मकबरे में पनाह लिए

हुए थे, उन्हें गिरफ्तार कर लिया, और उनके हाथो को पीछे बाँध कर उन्हें किले की तरफ़ धकेला। रास्ते में प्रधान हडसन ने शाह के तीनो बेटो को उनके कपड़ों से नंगा किया सिर्फ़ अंडरवियर उन पर छोड़ी और उनके सीनो में गोली मार कर उनको शहीद कर दिया। उसने उनके खुन को पिया और उनकी लाशों को किले के दाखिले पर टंगवा दिया। दूसरे दिन वह उनके सिरो को अंग्रेज़ी कमांडर हेनरी बर्नाड के पास ले गया। फिर सिरों को पानी में उबाल कर,वह सूप बहादुर शाह ज़फर और उनकी बीवी के पास ले गया। भूखे जोड़े ने सूप को एक चम्चे में फौरन अपने मुंह में रख लिया। ताहम उन्होने न उसे चबाया या निगला, अगरचे उन्हे यह पता नहीं था कि किस तरह का गोश्त था। उन्होने अपने मुंह से समान निकाला और ज़मीन पर रख दिया। हडसन, बदमाश पादरी, ने उनका यह कहकर मज़ाक उड़ाया, 'तुम इसे क्यों नहीं खा रहे हो? यह तो मज़ेदार सूप है। मैने इसे तुम्हारे बेटो के गोश्त से बनाया है। फिर उन्होने सुल्तान, उसकी बीवी और दूसरे नज़दीकी रिश्तेदारों को रंगून(**यांगून** का पुराना नाम , म्यांमार (बर्मा)की राजधानी) जिलावतन कर दिया और उन्हें वहाँ बंदी बना लिया। " सुल्तान की **1279** में कालकोठरी में मौत हो गई। दिल्ली में उन्होने तीस हज़ार मुसलमानों को शहीद किया, उनमें से तीन हज़ार को गोली मार कर और सत्ताईस हज़ार को ज़िबह करके मार डाला। उनमें से सिर्फ़ वे बच पाए जो रात में भाग लिए थे। दूसरे शहरों और गाँव में भी,बेशुमार मुसलमानों को ईसाईयों के ज़रिए कत्ल किया गया, जिन्होने तारीखी फनी काम को जला दिया, बेमिसाल और बेशकीमती गहनों के टुकड़े जहाज़ पर चढ़ा दिए और उन्हें लंदन रवाना कर दिया। अल्लामा फदल-ए-हक्क को अंडामान जज़ीरे में कालकोठरी में **1278**[**1861** सी.ई.] में शहीद कर दिया गया।

**1994** के **28** दिसंबर की तारीख वाले कलैण्डर के शीट के पीछे मंदरजाज़ेल बयान किया गया है जिसे तुर्की के रोज़नामा अखबार तुर्कीये के ज़रिए छापा गया था ः" भारत में अंग्रेज़ी राज के दौरान, आमेर के शहर में सत्तर मुसलमानों यह बहाना करके गोली मार दी गई कि वे एक अंग्रेज़ साइकिल सवार लड़की को उकसा रहे थे। जब (अंग्रेज़)गर्वनर से पूछा गया कि इतनी सख्त सज़ा की क्या वजह थी,तो उसने जवाब दिया, 'एक अंग्रेज़ लड़की उनके देवताओं से ज़्यादा कीमती है।' **31** दिसंबर **1994** के तुर्की के रोज़नामा अखबार तुर्की ये में एक तस्वीर ज़ाहिर हुई जिससे वाज़ेह हुआ कि एक बोस्नियाई लड़की सड़क पर खुन में पड़ी हुई है और एक सर्बियाई सिपाही उसके पास हँसी के गेल में खड़ा है। जैली उनवान ने कहा, " सात साल की नरमिन को, ईसाई बर्बर ने नवंबर, **1994** में साराजेवो में कत्ल कर दिया। "

जब रूसियों ने **1400**[**1979** सी.ई.] में अफ़गानिस्तान पर हमला किया और मुल्क पर तबाही मचानी शरू की, इस्लामी फन के कामों को तबाह किया और मुसलमानों को कत्ल करना शुरू कर दिया, उन्होने पहले अज़ीम आलिम वली इब्राहिम मुजददिदी, उनकी बीवी और बेटियों, ओर उनके एक सौ इक्कीस शार्गिदों को गोली मार कर शहीद कर दिया। अंग्रेज़, फिर उस बर्बर कत्ले आम का ज़िम्मेदार था। क्योंकि, जब हिटलर, नाज़ी जर्मनी का चांसलर ने, **1945** में रूसी फौजों को हरा दियाा और मास्को में घूमने ही वाला था कि, उसने रेडियो पर ब्रिटिश और अमेरिकन हुक्काम से रूसियों को पामाल करने के लिए अपनी इच्छा ज़ाहिर की यह कहते हुए , " मैं हार मानता हूँ। मैं तुम्हारे आगे झुकता हूँ। मुझे रूसी फौज को कुचलने दो और पूरी दुनिया वो इश्तराकियत के शर से बचाने दो। " चर्चिल, ब्रिटिश वज़ीरे आज़म ने, उसकी इलतिजा को नकार दिया। अमेरिकी और ब्रिटिश फौजो ने रूसियों को हिमायत करते रहे और जब तक रूसी नहीं आ गए वर्लिन में दाखिल नहीं हुए। ये उनकी पालीसी थी जबकि रूसी दुनिया के लिए एक शर बने रहे।

हमारी नियत नही है कि हम ईसाईयों के ज़रिए किए गए बर्बरता के मुख्तलिफ़ इकदाम की एक फ़हरिस्त बनाएँ या उन्हें बढ़ाएँ। तारीख बेशुमार मज़ालिम के कामो से भरी पड़ी है। ट्रिब्यूनल जिसे तहकीक कहा जाता है, कत्ले आम जिसे सेंट बर्थोलोमेव और दूसरे बहुत कत्ले आम जो मज़हब के नाम पर हुए वे समझ से बाहर मज़ालिम हैं जो साफ़ मिसाले हैं जो ईसाईयों ने दूसरे फिरकों के ईसाईयों के साथ और दूसरे मज़ाहिब के खिलाफ़ ज़ाहिर किए। मुसलमान हुकूमरानो में से या कमांडरो या रियास्ती कोई भी ईसाईयों की तरह जुल्मों को बढ़ावा देने वाला नहीं था या ऐसे मज़ालिम को मज़हब असबाब के चक्कर करने के लिए मुकर्रर करना नहीं था या मुसलमानों को ईसाईयो के खिलाफ़ उकसाना। इस्लाम किसी भी मखलूक की तरफ़ कोई जुल्म की मंज़ूरी नहीं देते। सारे मुस्लिम मज़हबी हुक्काम मुसलमानो को जुल्म से रोकते हैं। यहाँ आपके लिए एक छोटी सी मिसाल है ः

इसे मंदरजाज़ेल तरीके से **फज़लक-ए-तारिह-ए-उसमानी** (उस्मानिया तारीख का एक खुलासा) के आठवीं इशाअत, और तारिह-ए-दौलत-ए-उसमानिया (उस्मानिया रियास्त की तारीख) **1325**[**1907** सी.ई] की तीसरी इशाअत में अबद-उर-रहमान सेरेफ़ बे, मकतब-ए-सुलतानी (सुल्तान का स्कूल) के डायरेक्टर के ज़रिए बयान किया गया है ः " सुंबुल आग़ा, दार-उस-सआद के रिटायरड आग़ा मिस्र जा रहे थे, जब उनके जहाज़ को मोलतिज़ के समुद्री लुटेरों ने हमला कर दिया, जिन्होने हमले के दौरान आगां को शहीद कर दिया। मोर्यू (पेलोपोन्नेस) पर विनीशियन जहाज़ों से लैंड की हुई फौजों ने हज़ारो मुसलमानो,

बच्चे और औरतें सब को एक बराबर कत्ल कर दिया। अठारहवें उसमानिया बादशाह, सुल्तान इब्राहिम, एक बेहद रहमदिल शख्स था। वह ईसाईयों के ज़रिए किए गए इस बरर्बरता के बढावे पर गहरे सदमें में चले गए। **1065**[**1646** सी.ई] में उसने एक फरमान ज़ारी किया कि उस्मानिया इंतेज़िमा में रहने वाले ईसाई मेहमानो से मुसलमानों के कत्ल का बदला लिया जाए[जिसका मतलब था उनका कत्ल किया जाए,]। अबू-स-सईद एफ़ंदी रहिमा-हुल्लाहु तआला उस वक्त के शैख उल इस्लाम(मज़हबी अमूर के सरबराह), अपने साथ Bostancibari (शाही गार्ड) को अपने साथ ले गए ,(उस्मानिया सलतन्त) बादशाह की खिदमत में हाज़िर हुए। उन्होने कहा यह हुक्मनामे का मतलब है कि ज़ालिम कत्ल, जिसके सबब यह इस्लामी मज़हब के बेमेल है। अल्लाह तआला की पाक किताब के सख्ती से मानने वाले, जो सारे उसमानिया सुलतान की आम खासियत थी, सुलतान इब्राहिम रहिमा हुल्लाहु तआला ने सलाह को अपना लिया और अपने हुकुमनामे को रद्द कर दिया।"

शम्स-उद-दीन सामी [डी. **1322**(**1904** सी.ई.) ने **कामूस उल-अलाम** में मंदरजाज़ेल बयान किया ः " सुलतान इब्राहिम का डील डौल और जिसामत अच्छी तरह से दुरूस्त था, और उनका चेहरा खूबसूरत था प्यारी आँखो के साथ। वे अपने हलीम और रहमदिल शखसियत के लिए जाने जाते थे।" ऐसा था इस्लामी मज़हब। जबकि मुसलमान मज़हबी आदमी ईसाईयों को मौत से बचा रहे थे, ईसाई पॉप, मुहिब वतन और पादरी पूरी दुनिया को मुसलमानों को कत्ल करने के लिए पुकार रहे थे। इस वाज़ेह हकीकत के बावजूद, ये बेशर्म लोग इस्लाम पर यह तोहमत लगाने का मुंह रखते थे कि ये बरर्बरता का मज़हब है, और ईसा अलैहि सलाम का हवाला देते हुए, 'जैसा कि कहा गया है,' और जिसने तुम्हे एक गाल पर मारा उसे दूसरा भी दे दो;..." (लयूक ः **6-29**), सलाह का एक टुकड़ा है कि वे पूरी तारीख में फहराते हैं, वे अपने साथी मज़हबियों की झेंप को भी नहीं छोड़ते।

मुसलमान बच्चों को झूठ और बदनामियों और उनको पैसा और औहदे देने का वादा करते हुए गुमराह किया, अंग्रेज़ो और उनके यहूदी हलीफ़ो ने मुस्लिम उसमानिया रियास्त को खत्म कर दिया। उन्होने ग़ैर मज़हबियत को मश्हूर किया और उसे नौजवान नसल में फैशन की तरह फ़ैलाया। उन्होने औरतों का वग़ैर सिर ढके जिस तरह इस्लाम ने बताया उस तरह बाहर जाना भोंडापन, अल्कोहल पार्टिया, ग़ैर अख्लाकियत, और ग़ैर मज़हबीयत को जदीद तरज़े ज़िंदगी को सही करार दिया। उन्होने इस्लामी आलिमों और इस्लामी इल्म को पामाल किया। अंग्रेज़ी जासूसो और मेसोनिक एजेंटो ने मज़हबी आदमियों के भेस में होकर और इस्लाम के खुबसूरत अख्लाकी हस्ती और उसके मज़हबी अमाल के असली निज़ाम को

बरबाद कर दिया। इस्लाम अपने जोहर में जा चुका है, अगरचे यह अपने नाम में मौजूद है। यूनियन की पार्टी के वक्त में, यहाँ तक कि कानून साज़ बैज़ और पाशा इस्लाम के दुश्मन बन गए। उन्होने इस्लाम के तबाहकुन कानून को पास किया। किसी मज़हब और अकीदे की तामील के तौर पर उसे एक गलती की तरह पैश किया गया था। बेशुमार मुसलमानो को लटकाया गया और कत्ल कर दिया गया। पाक अमाल जैसे कि इस्लाम के अहकामात का एलान करना और इस्लाम की ममनुआत को नज़रअंदाज़ इन सबको अलैहदगी पसंद के तौर पर लांछित किया गया। जो अमर-ए-मारूफ़ यानी जो इस्लाम का सच्चा जुज़ बताते थे, उन्हें हुकूमत का दुश्मन बताया गया। अल-हमद-ओ-लिल्लाह (सब तारीफ़ और शुक्र अल्लाह के लिए है)! ईसाईयों का जुल्म खात्मे पर आया। इस्लाम का सूरज हमारे मुबारक मुल्क (तुर्की) में फिर से रोशन हुआ। दुशमनो के झूठ और जालसाज़ियाँ रोशनी में आईं। सच्ची मज़हबी तालीमात आज़ादी से लिखी जाने लगीं। आज हर मुसलमान को इस आज़ादी के लिए अपना शुक्रिया दिखाना चाहिए और हमारे पाक मज़हब के सच्चे जुज़ को सीखने के लिए अपना सबसे अच्छा करना चाहिए जिसकी हिफ़ाज़त के लिए हमारे बुर्ज़गों ने अपनी जानों की कुर्बानी दी। अगर हम अपने मज़हब को अपने बच्चों को नहीं सीखाएंगे और उन्हें शरीअत (इस्लाम के ज़रिए बताया गया जिंदगी का तरीका) के मुताबिक मुंज़म नहीं करेंगे तो, दुश्मन इंतेज़ार में बैठे हैं और जो मूर्ख उनके ज़रिए खरीदे गए हैं वे अपना जुल्म शुरू कर देंगे और हमारे बच्चों को धोखा देना शुरू कर देंगे। यूरोप और अमेरिका के सारे लोग मोत के बाद उठाए जाने पर जन्नत और दोज़ख की मौजूदगी पर यकीन रखते हैं। हर हफ़्ते वे अपने गिरजाघरों को सभाओं को भरते थे। उनके स्कूल के निसाब में मज़हबी सबक ज़रूरी थे। अगर एक शख्स कहे कि यूरोपीयन और अमेरिकन अकलमंद, मोर्डन और तहज़ीब याफ़्ता हैं और घमंड से झूठ, पीने, भोंडापन और ज़िना की तकलीद करे एक तरफ़ और दूसरी तरफ़ उनके करने पर यकीन न करें, क्या वह एक झूठा नहीं है? हम मुसलमान कहते हैं कि ईसाई लाइल्म, मूर्ख, और वापस जाने वाले हैं। क्योंकि उन्होने ईसा अलैहि सलाम और उनकी मुबारक माँ को देवता बना दिया। वे उन्हें देवता मानते हैं, पूजा करते हैं, और इस तरह मुशरिकीन बन जाते हैं। उन में वहाँ लोग हैं जो मुहम्मद अलैहि सलाम की शरीअत के साथ दुनियावी अमूर में मुतमईन तौर पर काम करते हैं। ये लोग अल्लाह तआला की बरकतें हासिल करते हैं और आराम और सुकून से रहते है। बहरहाल, क्योंकि वे आला पैगम्बर पर और आपकी शरीअत में यकीन नहीं रखते तो, उन्हें दोज़ख की अबदी आग को सहना होगा।]

अब, आपको यह दिखाने के लिए कि एक सच्चा मुसलमान कैसे बरताव करता है, हम हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक खत तर्जुमा करते है ः

खत जो हमारे आका पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (आपके सेक्रेटरी के ज़रिए) लिखा सारे मुसलमानो से मुखातिब है और मंदरजाज़ेल पढ़ा जाएगा ः[खत की असली कॉपी **मजमूअ-ए-मुनशा-तस-सलातीन** की पहली जिल्द के **30** वें सफ्हे पर मौजूद है जिसे फरिदुन बेए ने लिखा।]

“ यह खत इस वादे की इतलाअ देने के लिए लिखा गया था जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबदुल्लाह के बेटे ने सारे ईसाईयों से किया था। जनाब-ए-हक ने यह खुशखबरियाँ दी थीं कि वे आप को अपने रहम के तौर पर भेज रहा हूँ , और आपको एक काम सौंपा कि बचत की नकलो व हरकत इंसानियत के लिए जमा की गई है। आप मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस खत को उस वादे को दस्तावेज़ करने के मक़सद से रिकार्ड कराया जो आपने सारे ग़ैर मुस्लिमों से किया था।

“ अगर कोई इस वादे के बरखिलाफ़ अमल करेगा तो, चाहे वह एक सुल्तान हो या कोई और तो, उसने जनाब-ए-हक के खिलाफ़ बग़ावत की और उनके मज़हब का मज़ाक उड़ाया, और इसलिए मज़म्मत के लायक होगा। अगर एक ईसाई पादरी या टूरिस्ट इस नियत के साथ रोज़ा रखता है कि वह पहाड़ में, एक निचली जगह में या रेत में, इबादत कर रहा है तो, मैं अपनी तरफ़ से, मेरे दोस्तों और जानने वालों और मेरी पूरी कौम की तरफ़ से उन पर से हर किस्म की ज़िम्मेदारियों को मंसूख कर दिया। वे मेरी हिफ़ाज़त में हैं। मैने उनसे हर किस्म के टेक्स को माफ़ कर दिया जो उन्हें उस रज़ानामें की ज़रूरयात को पूरा करने के लिए अदा करना पड़ता था जो हमने दूसरे ईसाईयों के साथ तए किया था। उन्हें जज़या या खराज नहीं देना होगा, या जितना वे चाहें उतना अदा कर सकते हैं। उन्हें मजबूर या जो़र ज़बरदस्ती न करें। उनके मज़हबी लिडरों को न हटाएँ। उन्हें उनके मंदिरों से बेदखल न करें। उन्हें सफ़र करने से न रोकें। उनकी खानकाहों या गिरजाघरों के किसी भी हिस्से को तबाह न करें। उनके गिरजाघरों से चीज़ो को ज़ब्त न करें या उन्हें मुसलमानों की मस्जिदों मे इस्तेमाल न करें। जो कोई इसकी इताअत नहीं करेगा वह अल्लाह और उसके पैग़म्बर की नाफ़रमानी करेगा और इसलिए यह एक गुनाह है। ऐसे लोगो पर जज़या या गरामत जैसे टैक्स मत लगाओ जो कोई तिजारत नहीं करते बल्कि हमेशा इबादत में मश्गूल रहते हैं, चाहे वे कहीं भी हों। मैं उनके कर्ज़ो की समुंद्र या ज़मीन, मश्रिक या मग़रिब में हिफ़ाज़त

करूँगा। वे मेरी हिफ़ाज़त में होंगे। मैं उनका बचाव करूँगा। उनके ऊपर जो पहाड़ो में रहते हैं और इबादत में मश्गूल रहते हैं उन पर (टैक्स जिसे कहते हैं) खराज और अश्र[कन] फसल के लिए मत लगाओ। उनकी फसल में से एक हिस्सा बएत-उल-माल[रियास्ती खज़ाने] के लिए वकफ़ मत करो। क्योंकि,उनकी खेती सिर्फ़ रिज़क के लिए है, न की मुनाफ़े के लिए। जब तुम्हें जिहाद (पाक जंग) के लिए आदमियों की ज़रूरत पड़े तो उनका सहारा मत लो। अगर ज़रूरत पड़ जाए जज़या[इंकम टैक्स] लगाने की तो सालाना उनसे **12** दरहम से ज़्यादा न लिया जाए ,चाहे वे कितने ही अमीर क्यों न हो और चाहे कितनी ही मिलकियत उनके पास हो। उनके ऊपर टैक्स या बोझ न लादा जाए। अगर उनके साथ कोई बहस हो जाए तो उन्हें दया रहम और तरस के साथ बरताव किया जाए। उन्हें हमेशा अपने रहम और दया के साए में रखो। जहाँ कहीं भी हों ईसाई औरतो को जिन्होने मुसलमान आदमियों से शादी की हो उनके साथ बुरा सुलूक मत करो। उन्हें उनके चर्च जाने और उनके मज़हब के मुताबिक के इबादात करने से मत रोको। जो कोई अल्लाह तआला के इस हुकूम की नाफरमानी करेगा या इसके बरखिलाफ़ अमल करेगा वह अल्लाह तआला के हुकूम और उसके पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ़ बग़ावत करेगा। उन्हें उनके चर्च की मरम्मत करने में मदद करनी चाहिए यह मुआहिदा जाइज़ है और दुनिया के खात्में तक ग़ैर तबदील रहेगा, और किसी को इसके बरखिलाफ़ जाने की इजाज़त नहीं है।"

यह मुआहिदा अली रज़ि-अल्लाहु अन्ह के ज़रिए हिजरत के दूसरे साल में मुहर्रम के तीसरे दिन मदीना की मस्जिद-ए-सआदत में लिखा गया। दस्तखत किए गए हैं ः

मुहम्मद बिन 'अबदुल्लाह' सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

अबू बकर बिन एबी कुहाफ़, उमर बिन हत्ताब, उस्मान बिन अफ़ान, अली बिन एबी तालिब, अबू हुरेरा, अब्दुल्लाह बिन मसूद, अब्बास बिन अबाम, तलहा बिन अब्दुल्लाह, साद बिन मुआज़, साद बिन उबाद, साबित बिन कैस, ज़ैद बिन साबित, हारिस बिन साबित, अब्दुल्लाह बिन उमर, अम्मार बिन यासिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

जैसा देखा गया है, हमारे अज़ीम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुकूम दिया कि दूसरे मज़ाहिब को लोगों को बहुत ज़्यादा रहम और नरमाई से पैश आओ और ईसाई गिरजाघरों को न तो नुकसान पहुँचाया जाए न ही तबाह किया जाए।

अब Immunity के तर्जुमे को पढ़ते हैं जिसे उमर रज़ि अल्लाहु अन्ह, जिन पर इल्ज़ाम था अपनी खिलाफ़त के दौरान एलिजा के लोगों को दिए गए ,चार हज़ार गिरजाघरों को तवाह करा दिया। इल्यास अलैहि सलाम के नाम को ईसाईयों के दरमियान एलिजा पुकारा जाता है। इसी तरह, वे यरूशलेम को इल्या(एलिजा) पुकारते हैं।

" यहाँ उमर उल फारूक रज़ि अल्लाहु तआला अन्ह, मुसलमानों के अमीर के ज़रिए दिया गया बचाव का खत है, यरूशलेम के रहने वालों को, उनकी मौजूदगी, उनकी ज़िंदगियों, गिरजाघरों, बच्चों, कमज़ोर, सेहतमंद, और बाकी सारे लोगो के लिए उनकी मौजूदगी को समझने के लिए लिखा गया ः मंदरजाज़ेल तरीके से ः

" मुसलमान उनके चर्चो में नहीं घुसेंगे, न ही उनके चर्चो का कोई हिस्सा तबाह करेंगे, उनकी मिलकियत के छोटे से टुकड़े को भी ठीक नहीं करेंगे, या किसी भी किस्म की ज़ोर ज़बरदस्ती उनको अपने मज़हब को तबदील करने या इबादत के अमल को बदलने या इस्लाम में शामिल होने के लिए कोई ज़ोर आज़माई नहीं की जाएगी। कोई मुसलमान उन्हें छोटा सा भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते। अगर वे अपने शहर को छोड़कर जाना चाहते हैं अपनी मरज़ी से तो जब तक वे मंज़िल तक न पहुँच जाएँ उनके माल, जान और पाकी की हिफ़ाज़त की जाएगी। अगर वे यहाँ रहना चाहते हैं तो वे मुकम्मल हिफ़ाज़त में रहेंगे। उन्हें सिर्फ़ जज़या[इंकम टेक्स] अदा करना होगा जो यरूशलेम में रहने वालों के लिए ज़रूरी है। अगर यरूशलेम और बीजान्टिन के कुछ लोग अपनी फेमिली और पोर्टेबल जाएदाद के साथ यहाँ से जाना चाहते हैं और अपने गिरजाघरों को और दूसरी इबादत की जगहों को खाली करके जाना चाहते हैं तो उनकी ज़िंदगियों, गिरजाघरों, सफ़र के इखराजात और सामान की तब तक हिफ़ाज़त की जाएगी जब तक कि वे अपनी मंज़ील पर न पहुँच जाएँ ः ग़ैरमुलकियों पर फसल तक कोई टेक्स नहीं लगाया जाएगा, कोई बात नहीं चाहे वे यहाँ रहें या चले जाएँ।"

**दस्तखत** ः

मुसलमानो के खलीफ़ा उमर बिन खत्ताब

**शहादत** ः

खालिद बिन वालिद

अवद उर-रहमान विन औफ़

अमर इवन-इल आस

मुआविया विन एवी सुफ़यान

उमर रज़ि अल्लाहु अन्ह ने यरूशलेम की घेरावंदी में अपनी मुवारक मौजूदगी में शिरकत की।ईसाईयों ने जज़या देना मंजूर किया और मुसलमानों की हिफ़ाज़त में चले गए।उन्होने खुद उमर रज़ि अल्लाहु अन्ह को यरूशलेम की चावियाँ सौंपी।इस तरह वे अपनी खुद की रियास्त बीजान्टिन के भारी करों, जुल्मों, अज़ाब, दवाओ और मज़ालिम से आज़ाद हो गए।जल्द ही उन्होने मुसलमानों की रहमदिली देख ली, जिन्हें वे अपने दुश्मनो की तरह देखते थे।उन्हें एहसास हो गया कि इस्लाम एक मज़हव है जो अच्छाई और खूवसरती का हुकूम देता है और लोगों को इस दुनिया और आखिरत की खुशी की तरफ़ रहनुमाई करती हैं।कम से कम मजवूरी या धमकी के विना, उन्होने वड़े ग्रुपों में इस्लाम को कुवूल किया जोकि एक शहर की एक तिहाई के वरावर था।

दोनों ऊपर वताए गए दस्तावेज़ की ग़ौर से जाँच करने से एक वार फिर यह ज़ाहिर हुआ कि सच्चे मुसलमान, सच्ची मज़हवी रहनुमाई ज़ाहिर करती है दूसरे मज़ाहिव की तरफ़ रवादारी, ईसाईयों और यहूदियों की मदद, और यहाँ तक कि उनके गिरजाघरों और मंदिरो की मरम्मत कराना, कितना कम ज़ोर लगाना पड़ा उन्हें इस्लाम में शामिल करने के लिए या उनके मंदिरो को तवाह करने के लिए।क्या वहाँ कोई मुसलमान नहीं था जो ईसाईयों के साथ वुरा वरताव करता? शायद, वहाँ कुछ थे।ताहम वे कुछ चंद लोग ही थे लाइल्म जो हमारे मज़हव के एहकामात से लाइल्म थे।इसके नतीजे में उनकी वेहुरमती हुई ,और दुसरे मुसलमानों की तरफ़ से उन्हें सज़ा दी गई।कोई मुसलमान सही समझ वाला और इस्लाम के एहकामात की काफ़ी इल्म वाला उनकी तकलीद नहीं करेगा।वे लोग, जो सिर्फ़ नाम के मुसलमान थे, वे न सिर्फ़ ईसाईयों को वल्कि मुसलमानों को भी सताते थे।उनके जुर्म को इस्लाम से कुछ लेना देना नहीं है।अल्लाह तआला ने कुरआन अल करीम की सूरह निसा की 168 वीं आयत में एलान किया है ः " **वे जो ईमान को नकारते हैं और गलती करते हैं,-अल्लाह उन्हें कभी माफ़ नहीं करेगा, न ही किसी भी तरह से उनकी रहनुमाई करेगा।" (4-168)**

अगर कुरआन अल करीम की तफ़सीर की जाँच करे, तो देखा जाएगा कि अल्लाह तआला ने (मुसलमानो) हमेशा दूसरे लोगों को रहम, नरमी और माफ़ी के साथ सुलूक करने का हुकूम दिया, जो तुम्हें नुकसान पहुँचाए उन्हें माफ़ करदो, हमेशा सहज रूप से मुसकुराओ और नरमाई से बोलो, सबर रखो, और समाजी तआल्लुकात में इमतियाज़ को तरजीह देते हैं। यह दुनिया की तारीखों में लिखा है कि हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा मेल जोल का मश्वरह देते थे और जो आपकी मुखालफ़त करते थे उन्हें भी दया वा हाथ देते थे।

क्योंकि ईसाई पादरियों ने अपनी आँखे सच्चाई से बंद करली थी, इस्लाम को वे बर्बरता का मज़हब पेश करते थे, और जवान ईसाईयों को इस भ्रम से पढ़ाते थे, जो घबराहट बेचारे गरीब ईसाई मुसलमान मुल्को में पहली बार जाने में महसूस करते थे हकीकत को जानने के बाद हैरानी में रह जाते थे। हम कुछ मिसालें देते हैं। मंदरजाज़ेल कुछ इकतिबास हैं जो इस मज़मून पर ईसाईयों के ज़रिए लिखी गई किताबों से दूसरे लफ़्ज़ों में बयान किए गए हैं। यह मंदरजाज़ेल तरीके से इस किताब जिसका नाम **कांस्टेंटिनोपल से खुतूत**, मिस जॉजीना मैक्स मुलर जो इस्तांबुल मे रहती थीं उनके ज़रिए लिखी गई, और **1315**[**1897** सी.ई.] में शाय की गई ः

“ जब हम स्कूल में थे, तो हमें यह पढ़ाया गया कि मुसलमान बीहड़ लोग हैं और खास तौर से तुर्क, पूरी तरह से बेरहम बर्बर थे। यह पहले से ख्याल मेरे ज़मीर में इतना गहरा जड़ पकड़े हुआ था कि मैं अपना खौफ़ और बेचैनी बयान नहीं कर सकती जो मैने अपने बेटे के बारे में जो कि वज़ारते खारजा में एक सिवील सर्वेंट था कि उसकी ड्युटी इस्तांबुल में लगी है। इसके बरअक्स, जो दिन मैने इस्तांबुल मे गुज़ारे वे मेरी ज़िंदगी के सबसे खुशहाल दिन थे। मेरे बेटे के इस्तांबुल जाने के बाद , मेरे खामिद प्रोफ़ेसर मुलर और मैने उसके पास जाने का फैसला किया। मेरे खामिद आलमी तौर पर मश्हूर आदमी थे जो तारीखी वाक्यात में खोज कर रहे थे। उन्होने मेरे तुर्को के खौफ़ को बांटा नहीं, और चाहते थे कि उन तारीख जगहो पर खोज करें। मेरी सफ़रकी पूरी तैयारी के दौरान मैं उस भय से काँपती रही जो मेरे अंदर बैठ गया था। वे बर्बर मुसलमान किस तरह हमारे साथ बरताव करेंगे? आखिरकार हम इस्तांबुल पहुँच गए। पहला तास्सूर जो इस्तांबुल का हमें मिला वे था उसकी खुबसूरत सिनरी, जिसने हमारे ऊपर ठंडा असर डाला। बहरहाल, असली हैरानगी हमें मुसलमानों के साथ हुई जिनसे हम पहली बार मिल रहे थे। वे बेहद नरम, कतई तौर पर सजे हुए ,और बेहद मोहज़ब लोग थे। जैसे कि हम इस्तांबुल की भीड़ भरी सड़कों पर टहल रहे थे, मस्जिदों में जा

रहे थे, दूर दराज़ के इलाकों में बीजान्टिन के आर्ट के काम का मुशाहदा किया, हमें किसी खतरे या खौफ़ का ख्याल नहीं आया। सारे लोग जिन से हम मिले वे सब हमारे साथ दोस्ताना थे। वे हमेशा हमे आसानी देते थे। हम दूसरे मज़हब के थे, अकेले मुखालिफ़ जज़बात उभर सकते थे, लेकिन उन्हें उससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वे दूसरे मज़ाहिब को वही इज़्जत देते थे जो वे अपने मज़हब को देते थे। जैसे कि मैने इनको देखा, मुझे उन लोगो की तरफ़ जलने वाला गुस्सा महसूस हुआ, जिन्होने हमें गलत जानकारी और तालीम दी थी। उन झूठों के बरअक्स जिनके साथ हमें स्कूल कराया गया, वे ईसा अलैहि सलाम से नफ़रत नहीं करते थे, बल्कि वे उनमें एक दूसरे पैगम्बर ते तौर पर यकीन रखते थे। वे हमारे मज़हबी रसूम में कभी दखल अंदाज़ी या मज़ाक नहीं उड़ाते थे। वे हमें इंसानों के तौर पर इज़्ज़त देते थे। हमारे मुसलमानों को बग़ैर खुदा के शैतान को मानने के तौर पर देखने की वजह से, वे हमारे मज़हब के खिलाफ़ एक भी नामुनासिब लफ़ज़ नहीं निकालते थे। उसूली तहज़ीबें इस्लाम के साथ एक साथ नहीं आई थीं, जो हमें बताया गया था वो हवा भरा हुआ सच्चाई का एक छोटा सा बीज था। वो सच्चाई का बीज था कि मुसलमान अपने रसम और रिवाज़ के ज़बरदस्त पालन करने वाले थे और इसलिए कुछ गंदी रसमों को जो सम्मेलनो के मुकाबले थीं और जिन्हें मग़रिबी लोग तहज़ीब के नाम में दुलारते थे उन्हें वे इंकार करते थे। बहरहाल, अहसास करने के लिए थोड़ा समझना पड़ा कि ये सारी चीज़ें सिर्फ़ ग़ैर अहम थीं जिनका तहज़ीब से कुछ लेना देना नहीं था।

“ तुर्क अपनी मजलिसों और इस्लाम के खुबसूरत उसूलों के लिए सख्त इताअत करने वाले थे। वे हमेशा इन इकदार को अपनी रोज़ाना की ज़िंदगी में तरतीब देते थे। जहाँ तक मेरा तअल्लुक है, तुर्क सबसे अच्छे मुसलमान हैं। जब मैं उनका मवाज़ना उन मुसलमानों से करती हूँ जिनसे मैं ईरान और अरबिया में मिली तो मैं देखती हूँ कि इनमें उन सब से ज़्यादा सच्चे मुसलमानो की काबिलियत हैं। यह देखकर आपको अज़ीम खुशी मिलेगी कि जिस दिली ईमानदारी के साथ तुर्क अपने इस्लामी फराईज़ को निभाते हैं, और नतीजे के तौर पर आप अपने आपको उनसे करीब पाते हो और गहरी हमदर्दी और ताज़ीम उनके लिए रखते हो। सड़को पर, मैदानो में, बाग़ों और ऑचार्ड, बाज़ारों में और दुकानों में, तुम देखोगे कि काम के हर दर्जे के लोग, सिपाही, कुली और भिखारी एक जैसे सब, घुटने के बल बैठे हैं और सज्दे में गिरे हैं अपनी दुआ कहने के लिए ,या अपने हाथ फैलाकर अपनी इबादत कर रहे हैं। ये सारी इबादत कभी डींग मारने के लिए नहीं की गई। एक मुसलमान सच्चे यकीन के साथ अपनी इबादत से जैसे ही फ़ारिग होता है वैसे ही अपने काम पर वापस लौट

जाता है, जोकि बहुत कम वक्त लेता है।मुसलमान कुरआन अल करीम में लिखे हुए अखलाकी उसूलों को सख्ती से पकड़ता है।एक चीज़ जो हमें कभी नहीं भूलनी चाहिए वे है कि ज़रा सी तबदीली के बग़ैर तेरह और एक निस्फ़ सादियों तक इन खुबसूरत अखलाकी उसूलों ने अपनी कदीम पाकी को बरकरार रखा।इनमें से ज़्यादातर हकाईक एक यूरोपीय राजधानी शहर में मालूम नहीं थे।आज के मुसलमानो को जो तहज़ीब के दुश्मनो के तौर पर देखे जाते हैं ये सब यूरोपीय लाइल्मी का नतीजा है जिन्हें मुहम्मद अलैहि सलाम के ज़रिए रखे गए खुबसूरत अखलाकी उसूलों का इल्म नहीं था।दूसरी तरफ़, ऐसा नहीं लगता कि उन्होने पैग़म्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का कलाम नहीं सुना, जो इस तरह पढ़ा जाता है ः **' मैं कोई नहीं बल्कि एक इंसान हूँ।जब मैं अल्लाह तआला का कोई एहकाम तुम्हें सुनाऊँ तो फौरन इसे मान लो।अगरचे, मैं जब दुनियावी अमूर के बारे में अपने आप कुछ कहूँ तो, यह अल्लाह तआला का एहकाम नहीं है।मैं इसे इंसान होने के नाते कहता हूँ।'** मुहम्मद अलैहि सलाम के वक्त से साईसी जानकारी में बहुत तरमीहात हुई हैं।इस्लामी मज़हब हुकूम देता है कि उन दिनों में जो तकनीक इस्तेमाल की जाती हैं वे नए हालात के मुताबिक नज़र सानी की जा सकती हैं।अगर यह नज़र सानी वक्त की बदलती ज़रूरयात के साथ मुतावकत में मुंज़म रहें तो, इस्लामी मज़हब को किसी भी कशीदगी का सामना न करना पड़े, और यह हमेशा एक मुहज़्ज़ब मज़हब के रूप में मशहूर रहे।

" तुर्क दूसरे मज़ाहिब के मानने वालो की तरफ़ अपनी नरमाई में इतने मासूम थे कि आज बहुत सारी रियास्ती साईसी और तकनीकी औहदों पर ईसाई बैठे हुए हैं।फिर, हम मज़हबी इल्म और साईसी मुख्तलिफ़ प्लेटफ़ार्मो पर क्यों नही मानते?असल में ,हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मग़रिब में मज़हबी और साईसी मामलात बाद में एक दूसरे से अलग हो गए थे और बहुत मुश्किल से ईसाई पादरियों को उनके सियासी मामलात में मज़हबी इस्तेहसाल करने से रोका गया था।यह कोई असान कारोबार नहीं था कि ईसाई दुनियावी कारोबार में मज़हबी इस्तेहसाल की बुराइयों को समझ पाते।हाँ,अल्लाह तआला के अहकामात कभी तबदील नहीं हो सकते।इबादत, इंसाफ़ और अखलाक के बताए गए उसूल की देख रेख होगी।मिसाल के तौर पर, स्कॉटलैंड के चर्च ने ऐलान किया कि चर्च में ऑर्गन बजाना गुनाह है और ऐलान किया कि जो अपने चर्च में ऑर्गन की मंज़ूरी देंगे वह दोज़ख में जाएगा।चर्च के इस रद्देअमल से यह ज़ाहिर होता है कि मज़हबी मामलों की संजीदगी को समझने के लिए ये गलत है कि साईसी साज़ो को दुनियावी मज़े के लिए इस्तेमाल किया जाए।दूसरी तरफ़, यूरोपीय पौशिदा कदामत पसंद उसमानियों साईसी और सख़ाफती वेहाली

के खिलाफ़ मज़ाहमत की, सारी नई साईंसी खोज को यह कहकार नामंज़ूर कर दिया कि यह एक शैतानी इखतलाफ़ है, और इस तरह इस्लामी मज़हब पर तौहमत लगा दी। इस वक्त के दौरान , मुसलमानों ने अपने आपको बेशक इन जाहिल कट्टरता से बचा लिया।

" यूरोपीय अपने आपको ज़ालिम और लड़ाकू लोग मानते थे। अगरचे,उनकी नाम निहाद जुल्मों को बताने की गरज़ से सुनाई गई सारी कहानियाँ पुराने ज़राए से ली गई थीं। अब चलो हम अपने दिलों पर हाथ रखते हैं और कुछ ईमानदार तर्क करते हैं ः निस्फ़ सदी में यूरोपीयों ने मज़ालिम को खत्म नहीं किया? मेरी नज़र में, हम यूरोपी उन सालों में सख्त बेरह थे। हमारी तारीख़ जुल्म और ज़द कौब की मिसालो के साथ भरी पड़ी है। दूसरी तरफ़ ,क़ुरआन अल करीम, हुकूम देता है कि जंगी केदियों के साथ बरताव करो और पादरियों,बूढ़े लोग,औरतों और बच्चों को नुकसान न पहुँचाया जाए चाहे जंग के दौरान ही क्यों न हो। वहाँ कुछ मुसलमान कमांडर थे जो कुरआन अल करीम के ज़रिए दी गई पाबंदी की बगावत करते थे। ताहम ये वो लोग थे जिन्होने कुरआन अल करीम को नहीं पढ़ा था और जिन्होने मज़हबी तालीम जाहिल उस्तादों से ली थी। यह बहुत फायदे वाली बात होगी कि कुरआन अल करीम को सारे मज़ाहिब में तर्जुमा और वाज़ेह किया जाए। मैं समझती हूँ कि ,इस मारके को समझने के लिए कुछ और वक्त दरकार है। क्योंकि, सारे मुस्लिम मुल्को में मज़हबी अमाल के लिए अरबी के अलावा किसी और ज़बान का इस्तेमाल करना गुनाह का काम समझा जाता है। कुछ सालों पहले इंडिया में मद्रास मे एक मुसलमान ने मस्जिद में अरबी के बजाए हिंदी में कुछ कुरआन की आयात को पढ़ दिया था जिसका वजह से उसे मज़म्मत की गई थी। [क्योंकि इसे न सिर्फ़ करआन की वज़ाहत करने के लिए बल्कि कुरआन की किरअत करने के तौर पर इस्तेमाल किया गया था। ]कुरआन अल करीम बेहद तहज़ीब याफ़ता और फहम वाली मज़हबी किताब है। कुछ मुसलमान जो कुरआन अल करीम को नहीं समझ पाते वे कट्टर लोगो के हाथों में खिलौना बन जाते हैं जो अपने बिदअती ईमान अैर बेकार ज़ाती आइडिया उन पर थौंप देते हैं। अगरचे, इस्लामी आलिम कुरआन अल करीम को पढ़ा है वे इस हकीकत को देख लेते हैं कि उनका मज़हब बेहद मुफ़ीद है और ये कि गलत उसूल जो कुछ जगहों पर फैलाए जा रहे हैं वे कुरआन अल करीम के बिल्कुल बरअक्स हैं। मैं खुले तौर पर यह वाज़ेहा करती हूँ कि कोई और दूसरे दो मज़ाहिब इतने एक दूसरे से माहियत में मुंताबकत नहीं रखते जितने कि इस्लाम और ईसाईयत। ये दोनो मज़ाहिब भाई हैं। ये बिल्कुल उन बच्चों की तरह हैं जिनके माँ बाप एक हैं। ये एक ही रूह से मुतासिर हैं। "[किताब की खातून लेखिका ऐसा इसलिए कह और सोच रही हैं क्योकि वे अपने

बचपन में इन झूठ के असरात में थीं जो उन पर लादे गए थे।हकीकत इसके बरअक्स है।कुरआन अल करीम को कई ज़बानो में तर्जुमा किया गया और मुख्तलिफ़ ज़बानों में वाज़ेह किया गया।अगरचे, इन तर्जुमात और वज़ाहात को बजाते खुद करआन अल करीम के देखनाा गलत है या इसको इबादत के अमाल में जैसे कि नमाज़ में किरअत करना गलत है।]

ऊपर बताए गए खत से कई हकाईक इधर उधर होते हैं।इस्लाम ने कभी भी दूसरी ज़बानों मैं कुरआन अल करीम का तर्जुमा करने से या दूसरी ज़बानों में वाज़ेह करने से कभी भी मना नहीं किया।इस्लाम ने जिस बात से मना किया है वे है कि इसे गलत तर्जुमा न किया जाए दूसरी ज़बानो में, अरबी में अकेले, या लाइल्मी के नतीजे के तौर पर चाहे यह कपट और बेवफ़ा मकासिद के लिए किया गया।हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, " **एक शख्स जो कुरआन अल करीम को अपनी ज़ाती समझ के लिए तर्जुमा करता है वह एक काफिर बन जाता है।** " अगर हर कोई अपनी समझ के मुताबिक जैसा उसने समझा उसे वाज़ेह करता तो, वहाँ पर सिरों की तादाद की तरह गलत वज़ाहत हो जाती , इस्लामी मज़हब को बेजोड़ और तज़ाद में तबदील कर देती जैसे कि आज की ईसाईयत है।हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरा कुरआन अल करीम अपने सहाबा को वाज़ेह किया।आपने मुराद-ए-इलाही (अल्लाह तआला का क्या मतलब है) उनसे मंसूब किया।सहाबा ने इन मआनी को ताबिईन को बताया, जिन्होने अपनी बारी में इन्हें अपनी किताबों में लिख दिया।वहाँ बहुत सारी तफ़सीर को किताबें (कुरआन अल करीम की वज़ाहत) लिखी गई।बेशुमार तफ़सीर फारसी और तुर्की में और हज़ारों मज़हबी किताबें लिखी गई।फारसी की तफ़सीरों में से एक **मवाहिब-ए-अलिया**, जिसे हिरात के शहर में हुसैन वाईज़ काशिफ़ी रहिमा हुल्लाहु तआला के ज़रिए[ डी.**910** (**1505** सी.ई.), हिरात में], इस खातून की पैदाईश से साढ़े तीन सौ साल पहले लिखा गया।उसमानिया सुल्तान और आलिमों ने बयान दिया कि उनकी तफसीर बहुत कीमती है, और उसे तुर्की में तर्जुमा कर लिया, इसका उनवान **मवाकिब** रखा।जो शख्स मद्रास में मज़्ज़मत किया गया वह एक बिदअती था, इस्लाम का एक कपटी दुश्मन जिसका असली मकसद इस्लामी मज़हब को नापाक करना था।उसकी मज़्ज़मत की गई क्योंकि उसने कुरआन अल करीम को गलत बिदअती मआनी देने की कोशिश की थी।जिन्होने उसकी मज़्ज़मत की थी वे अज़ीम इस्लामी आलिम थे जिन्होने फारसी और हिंदी ज़बानों में मज़हबी किताबें लिखी थीं।

अब हम इस मज़मून पर अपना ध्यान एक दूसरी ग़ैर मुल्की खातून के विचार की तरफ़ लगाते हैं। मंदरजाज़ेल हवाला **Twennty Six years on The Bosphorus** से दूसरे लफ़्ज़ो में बयान किया गया है, जिसे एक बरतानवी लेडी, जिनका नाम मिस.दोरिना एल.नीव था, जो इस्तांबुल में 1881 और 1907 के बीच[1325 ए.एच] में रहती थीं।

मुसलमानों को उनकी नरमाई के लिए तारीफ़ करने के बाद और उनके खुले दिमाग़ की कुछ मिसालें देने के बाद जो वे दूसरे मज़ाहिब के मानने वालों के साथ दिखाते थे, मिस.नीव ने कुछ गलतियों पर ध्यान दिया और उनकी तंकीद की। बराएमेहरबानी पढ़ें वह क्या कहती हैं ः

" यहाँ मुहर्रम (इस्लाम का पहला महीना) के नाम में एक मज़हबी रसम की जाती है। मैं कई सालों से इस्तांबुल में रह रही हूँ ,और मैं कभी उस मज़हबी रसम को देखने नहीं गई। लोग जो उन्हें देखने जाते हैं वे कहते हैं कि वे मुस्लिम रसमें शदीद कड़ी और भयानक रूप से जंगली हैं। लोग जो उन रसमों को करते हैं वे आगे आते हैं उनके शरीर का ऊपर का हिस्सा नंगा होता है, हसन और हुसैन के नाम लेकर चिल्लाते हैं (पैगम्बर के दो मुबारक नवासों के नाम) और अपने नंगे बदन को वहशी पने से मोटी जंज़ीरो से मारते हैं जो उन्होने हाथो में पकड़ी होती हैं, जिससे उनका बदन पूरा खुन में हो जाता है। "

मिस नीव ने एक रसम रूफाईस के बारे में मंदरजाज़ेल लिखा जिसमें उनके जानने वालों ने शिरकत की। " जैसे कि मेरे दोस्तों ने बताया, दरवेश,[या रूफ़ाईस] अपने पेट के नीचे तक नंगे और चिल्लाते हुए ,एक लाईन बनाते हैं (इज़हार नामा कहा जाता है) शहादत ज़ोर से कहते हैं और अपने शरीर को आगे और पीछे घुमाते हैं। फिर अपनी हरकात को आहिस्ता से बढ़ाते हैं, वहशी पने से चिल्लाते हुए और पागलपने के तौर पर शोर मचाते हुए या मिर्गी के दौरे की तरह, वे हवा में उछलते हैं जब तक के वे अपने हवास न खो दें। इस दौरान वे अपने आपको अपने हाथों में पकड़ी हुई छुरियों से बार बार वार करते हैं, इतना ज़्यादा कि उनमें से कुछ ज़मीन पर गिर जाते हैं, उनके पूरे जिस्म पर खुन होता है। दूसरी तरफ़, कुछ तुर्की औरते जो यह यकीन रखती हैं के ये आदमी पूरे तौर पर बरकती हैं और इस अफज़ाईश की हालत में पाक हैं वे अपने नाजाईज़ बच्चे लेकर आती हैं और उन्हें उन आदमियों के पैरों की नीचे फैंक देती हैं ताकि वे अपनी बीमारियों से बहाल हो जाएँ। क्योंकि उनका मानना है कि अगर ये रूफाईस अपने हाल के दौरान इन बच्चों को अपने पैरों के नीचे

रोंद देंगे तो वे सारी बीमारियों से छुटकारा पा लेंगे।मैं सोचती हूँ ये पागल आदमी बच्चों को मौत की तरफ रौंद देते होंगे।किस तरह लोग ऐसे यकीन रख सकते हैं? रूफ़ाईस की चीख अपने मठों/कान्वेंट में, प्याज़ और लहसून की बू के साथ पूरे कान्वेंट को भर देती है और मुलाकातियों को बिमार कर देती है।ये सब मुझे बताने के बाद, मेरे दोस्तों ने मज़ीद बताया, " ये सनकीपन हमें पूराने ज़माने की वहशीपन की याद दिलाता है।हमने ऐसा पुराना बरताव और किसी जगह पर नहीं देखा।इस भयानक और खौफ़नाक नज़ारे ने हमें बीमार कर दिया।"

अब हम दो मुख्तलिफ़ मतन की अपनी जाँच करते हैं। किसी हद तक मिस मुलर सही हैं और लगता है कि उन्होने इस्लाम को अच्छे से पढ़ा है।मिस नीव अगरचे गलत हैं।उन्होने मुहर्रम की रसम को इस्लाम से जोड़ दिया, जिसका लाइल्म लोगों के ज़रिए खोजा गया, और रूफ़ाई की रसम जिसका इस्लाम से कोई वास्ता नहीं, और नतीजा निकाल दिया कि यह मज़हब जंगली और पुराना है।ये रसूम हज़रत अहमद रूफ़ाई[डी.**578** (**1183** सी.ई.) मिस्र में] के बाद एजाद की गईं और मज़हबी तौर पर जाहिल लोगों के ज़रिए।ये एक गलती है जो ज़्यादातर यूरोपीय के ज़रिए की जाती है जो इस्लामी मुल्क में इतना लंबा रूकना बेकार करते हैं और कुछ बिदअती चीज़ो की वजह से इसकी मलामत करते हैं इस मामले की जाँच किए बग़ैर, बजाए इसके कि उन सालों को चारो इतराफ़ घूमने में लगाते और हज़ारों मदरसों में पढ़ाए जा रहे साईंसी और मज़हबी पाठों का मुतालअ करते और नमाज़ की दुआएँ जो सैकड़ों हज़ारों मुसलमान वुज़ू अदा करते हैं और मुकम्मल जिस्मानी और रूहानी सफ़ाई के साथ अदा करते हैं और गहरे पाक यकीन के साथ मस्जिदों में अदा करते हैं।यह ईसाई कट्टरता में जड़ पकड़ा हुआ है और इस्लाम के खिलाफ़ एक दुश्मनी है।

मिस जॉर्जीना मुलर के सुझाव, यानी कुरआन का तर्जुमा और मज़हब को दुनियावी फायदों के लिए इस्तेहाल न करना, ये सिर्फ़ बहुत सारी इस्लामी ज़रूरयात में से दो हैं जो हमेशा सच्चे मज़हबी आलिमों के ज़रिए पढ़ाए जाते हैं और जो हुकूमतें उनकी तकलीद करती हैं उनके ज़रिए नाफिज़ किए जाते हैं।अहल अस-सुन्नत रहिमा हुमुल्लाह तआला के आलिमों के ज़रिए लिखी गई किताबों की वजह से, बिदअती **72** मुनहरिफ़ गुपों से मुंसलिक जिनका ज़िक्र हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया था, और बेवकूफ़ रसमें जो झूठे और तवाहकुन सुफ़ियों के ज़रिए इस्लाम को अंदरूनी तौर पर पामाल करने की गरज़ से फैलाई गई इस्लामी मज़हब से अलग करदी गई।इन अज़ीम रसूम जिन्हें मुहर्रम की रसूम कहा जाता है और मनगढ़ंत रसूम जो बिदअती जिन्हें रूफ़ाईस कहते हैं

उनके ज़रिए अदा की जाती हैं उनका इस्लाम मज़हब से कुछ लेना देना नहीं है। इस किस्म के रसूम मुसलमान रियास्तो के ज़रिए ममनुअ हैं। जैसे कि मुख्तालिफ़ किताबों में लिखा है ,जैसे कि **फतवा-ए-हदिसिया, मकतूबात** के आखिरी हिस्से के **266**वें खत में, हदीका और बरीका में, वहाँ एक फतवा (एक वज़ाहत जो एक इस्लामी आलिम के ज़रिए एक मुसलमान के सवालों के जवाब में दी जाती है। फतवा जिन ज़राओं के ऊपर मुबनी होता है वे इससे मुंसलिक है। )है जो बताता है कि ऐसे रसूम हराम हैं ( इस्लाम के ज़रिए ममनुअ)

इस्लाम खेलों, संगीत, जादू या महारत के करतब पर मुबनी नहीं है। अहमद इबनी कामल एफ़ंदी रहिमा-हुल्लाहु तआला[ डी.**940**[**1534** सी.ई.] अज़ीम आलिमों में से एक जिन्हे शैख उल इस्लाम (मज़हबी मामलात के चीफ़) का दर्जा मिला हुआ था उस्मानिया रियास्त में, उन्होने अपनी किताब अल-मुनीरा में मंदरजाज़ेल मुशाहदा कियाः "बुनियादी तौर पर एक शैख (एक रूहानी लीडर) पर मुंहसिर करता है और उसके मुरिदों (शर्गिदों) पर कि वे अपने आपको शरीअत के मुताबिक ढ़ालें, जो अल्लाह तआला की ममनुआत और एहकामात पर मुश्तमिल हैं। हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ' **अगर तुम देखो एक शख्स को हवा में उड़ते हुए या संमुद की सतह पर चलते हुए या आग के टुकड़ों को मुंह में रखते हुए और निगलते हुए ,और फिर भी उसके लफ्ज़ और अमाल शरीअत के मुकाबिल न हों तो उसे एक जादूगर, एक झूठे, और एक बिदअती के तौर पर जान लो जो लोगों को गुमराह कर रहा है!"** सच्चा इस्लामी मज़हब अहल अस सुन्नत रहिमा हुमल्लाहु तआला के आलिमों के ज़रिए बताया गया जो सारे किस्म की खुराफ़ात से दूर है और आम अहसास की तरफ़ ज़िम्मेदार है। इस्लाम की पाक किताब कुरआन अल करीम है। कुरआन अल करीम ने हुकूम दिया कि सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत की जाए और सीखाया कि इस इबादत का तरीका अकेले उसी के ज़रिए बताया गया है। ये सबसे ज़्यादा खुबसूरत, सबसे ज़्यादा बकार वाली, सबसे ज़्यादा सलामती इबादत के अमाल जो एक बंदे को सबसे ज़्यादा सेहतमंद रखता है। कुरआन अल करीम की तालीमात के मुताबिक,सारे मुसलमान अल्लाह तआला की निगाह में बराबर हैं। वाहिद बुनियादी जहाँ एक मुसलमान को दूसरे के ऊपर फौकियत मिलती है वो है तकवा और इल्म। तकवा का मतलब है अल्लाह तआला का डर। कुरआन अल करीम की हजरात सूरह की **13**वीं आयत का मतलब है, **"अल्लाह तआला की निगाह में सबसे ज़्यादा कीमती और सबसे ज़्यादा परहेज़गार वो है जो सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला का ख़ौफ करे।"** लोगों को इस्लाम में तबदील करने में मजबूरी सिर्फ़ कुरआन अल करीम में एक पाबंदी के तौर पर होता है। जिहाद (पाक जंग)इस्लाम को

बताने के लिए किया जाता है, न कि लोगों को मोमिन बनाने के लिए।कुरआन अल करीम हमेशा लोगों को रहम और दया करने का हुकूम देता है।लोग जो इन अहकामात से मंकिर होते हैं उनका इस्लाम से कोई वास्ता नहीं।

आज की पाक बाइबल में अब भी पेराग्राफ़ हैं जिसमें अल्लाह तआला के अहकामात हैं।ये पेराग्राफ़, कुरआन अल करीम की तरह,लोगों को दया के साथ बरताव करने का सलाह देते हैं।इस्लामी आलिम इस बात को मानते हैं कि पंचतुल्य और बाइबल के पैराग्राफ़ जो कुरआन अल करीम के मुआहिदे के साथ हैं वे अल्लाह तआला का कलाम है।नसरानियत, ईसाईयत की असली शक्ल, वो एक मज़हब था जो अल्लाह तआला की एकता पर यकीन रखने का हुकूम देती थी।तसलीस का तनाज़िर या तनाज़ा खुदाई का सुराग़ गलत तश्रीह का नतीजा था जिसने यहूदियों को नसरानियत को तबाह करने के लिए उनकी सरगरमियों में मोके फराहम किए।ईसा अलैहि सलाम ने सलाह दी, “और जो तुम्हारे एक गाल पर मारे तुम उसे दूसरा भी दे दो,...(लयूक ः **6-29**) और अपने सताने वालो को ये कहते हुए दुआ दी, “..बाप,इन्हें माफ़ करदे; क्योंकि ये नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं..” (ibid : 23-34) जबकि दोनो मज़ाहिब ने रहम और शफ़कत के बारे में बताया, और जबकि दोनों ही सब्र और अच्छाई पर मुबनी हैं, तो क्यों सादियों से दोनों के खिलाफ़ ये दुश्मनी और जुल्म हैं? ये वहशीपन और जुल्म एकतरफ़ा हैं, और ये हमेशा ईसाईयों के ज़रिए बढ़ावा दी गई, जो इस हकीकत को तसलीम करते हैं।

ऊपर बताए गए वाक्यात ईसाई पादरियों और ईसाई तारीखदानों के ज़रिए लिखे गए अदब से लिए गए हैं।अगर यह जानकारी हम इस्लामी आलिमों के ज़रिए लिखी गई किताबों से हासिल करते तो शक के लिए कुछ जाइज़ हो सकती थी।मुसलमानो के खिलाफ़ यह जुल्म कितना लंबा जारी रहेगा? आइए हम बेरूनी ज़राए का हवाला देते हैं ये देखने के लिए कि ये जुल्म और पनचाएती फ़ैसला जिसे कानूनी जाँच कहते हैं कब तक जारी रहा।यूरोपीय ज़राए के मुताबिक, सालसी जाँच छः लंबी सदियों तक, **578**[**1183** सी.ई.] से **1222**[**1807** सी.ई.] तक जारी रही, और उन भयानक फैसलों में, जिसकी शाखे इटली में, स्पेन में और फ्रांस में थीं लोगों की बेशुमार तादाद को बेइंसाफ़ी के साथ कत्ल किया गया,जलाया गया, या मारने की हद तक ज़दकौब किया गया या तो मज़हब के नाम में या पादरियों के अपने ज़ाती मफ़ाद के लिए या फिर क्योंकि वे नए खयालात कायम कर रहे थे।

स्पेन में यहूदी और मुसलमानो की अबादी उस फैसलों को तब तक भुगतती रही जब तक कि उनकी तबाही का काम पूरा नही हो गया।इसके बाद स्पेन के राजा फर्डिनेंड[डी. **922**(**1516** सी.ई.)] जिसने अपने ही बेटे इन फैसलों में मौत की सज़ा दी थी, उसने गर्व से कहा, " अब यहाँ स्पेन में कोई मुसलमान या गैर मज़हबी लोग बाकी नहीं बचे।" इस सालसी जाँच में हर किस्म की साईंसी तरहीमात और तकनीकी खोजों को गुनाह की तरह करार दे दिया गया, न सिर्फ़ दूसरे मज़ाहिब के मानने वालों को तबाह कर दिया, बल्कि समाज के सारे रोशन रूकन को भी तबाह कर दिया।

यहाँ तक कि गलील को भी सालसी जाँच में मुकदमा दायर किया गया क्योंकि उसने एक हकीकत जो मुसलमानो से सीखी थी कि ज़मीन गोल है और वह घूमती है और चक्कर लगाती है इसका ऐलान किया था, और यह सिर्फ़ उसकी अपनी सरकारी तर्क था जिसने उसका सिर बचा लिया।सालसी जाँच चर्च के रूकान के ज़रिए निगरानी की जाती थी, और सारी कारवाई खुफ़िया तरीके से की जाती थी,और बैठकें और सुनवाई सब परदे में होती थीं। यह जाँच इंसानी तारीख के लिए एक शर्म की बात है खासतौर से ईसाईयत के लिए।नेपोलियन बोनापार्ट को **1222**[**1807** सी.ई] में स्पेन में इस जाँच को खत्म करने के लिए शहीद मुश्कीलात का सिलसिला पार करना पड़ा।कुछ वक्त बाद ज़ालिम सालिस फिर उठ खड़े हुए ,और तारीख के सफ़हे **1250**[**1834** सी.ई.] में डूबा दिए।हालांकि बेशुमार सालसी जाँच के ज़रिए दी गई मौत की सज़ाओं का कोई ठीक तादाद का पता नहीं है, बेशक यह लाखों से परे है।असल में,यह कहना कि स्पेन में अकेले एक छोटे जाँच कर रही अदालत ने **28** हज़ार लोगों को मौत की सज़ा दी यह उन बहुत सारी इंसाफ़ की अदालतों के ज़रिए नाफिज़ की गई सज़ाओं का एक मोटे तौर पर अंदाज़ा लगाया जा सकता है।हरपूत के इस-हाक एफ़ंदी रहिमा हुल्लाहु तआला ने अपनी किताब **दिया-उल-कुलूब** में(मज़हबी) गुनाहों, जुल्म, और मार-काट का नम्बरो का अंदाज़ा बताया है कि कितना ईसाईयों के ज़रिए मुसलमानों और यहूदियों के खिलाफ़, कैथोलिक का प्रोटेस्टेंट के खिलाफ़, और प्रोटेस्टेंट के ज़रिए कैथोलिक के खिलाफ़ बढ़ावा दिया गया।इसके मुताबिक, सलीबी जंग में राज थियोफिलस और उसकी बीवी थियोडोरा के राज के दौरान ग़ैर ईसाईयों की पामाली के लिए हुई लड़ाइयों में, पॉप ग्रागोरियस के हुकूम से बड़े पैमाने पर फांसियाँ, ताकत के ज़रिए से लोगो को ईसाई करने के लिए कत्ले आम, स्पेन में अंडालूसी रियास्त में रह रहे मुसलमानो और यहूदियों का बड़े पैमाने पर कत्ले आम, खुन के गुस्ल के दौरान जो केथौलिक ने प्रोटेस्टेंट के खात्में के लिए बढ़ावा दिया, पहली बार रात में जिसे सेंट बार्थोलोमेव के नाम

से जाना जाता है और बाद में आयरलैंड में, ब्रिटिश महारानी एलिज़ाबेथ के ज़रिए मुंज़म और हुकूम पर कैथोलिक के खूनी पोग्रोम में, और दूसरे इसी तरह की मार काट में पच्चीस करोड़ लोगों की तादाद बताई ,जो एक हकीकत है ईसाई तारीखदानों के ज़रिए लिखी गई।

बड़े पैमाने पर कत्ले आम कई बार रूसियों के ज़रिए बढ़ावा दिया गया मिसाल के तौर पर बस्ती एशिया में **1321**[**1903** सी.ई.] में,**1917** में बोलशेविक इंकलाब में, पहली जंगे अज़ीम के बाद पूरी दुनिया में, और खासतौर से **1406**[**1986** सी.ई.] में अफ़ग़ानिस्तान में, मुरतब के नबंर कई गुना हो।

ऊपर बताए गए दस्तावेज़ी, जो ज़्यादातर ईसाई ज़राओं से लिए गए हैं, वे मंदरजाज़ेल हकीकत ज़ाहिर करते हैं ः

**1-** इस्लाम कभी भी बर्बरता का मज़हब नहीं रहा है, और मुसलमानों ने कभी भी ईसाईयों के खिलाफ़ कोई गुनाह नही किया है, कम अज़ कम किसी भी खूनी मकासिद के लिए नहीं।इसके बरअक्स, मुसलमानों ने ईसाईयों की हिफ़ाज़त की है जब कभी उन्हें हिफ़ाज़त की ज़रूरत पड़ी।

**2-** इसके बरअक्स, ईसाई एक दूसरे को मुसलमानों और यहुदियों के खिलाफ़ अपने साथी मज़हबियो के खिलाफ़ जो दूसरे फिरके के थे भड़काते रहते थे, उनके खिलाफ़ हर किस्म के जुल्म और बर्बरता को बढ़ावा देते थे, और ईसा अलैहि सलाम के मज़हब को सिर्फ़ एक बर्बरता में तबदील कर दिया।

चाहे कुछ भी इन लोगो के दिमाग़ में इसका मकसद रहा हो जो इस बर्बरता को भड़का रहे थे, चाहे ज़ाती मकासिद हों, वतन दोस्ती हो, लूट मार के इरादे हों, जलन और इंतेकाम के अहसासात हों,जिनका मज़हब से कुछ लेना देना न हो, चाहे मज़हबी मकासिद को पूरा करना हो, इसका नतीजा मासूम लोगों की जिंदगियाँ था।

मज़हब का मतलब है **तरीका जिसे अल्लाह तआला ने मंज़ूर किया**, जो असली अखली सिफ़ात से लैस है, जो दया और रहम का हुकूम देता है, बड़े और बुर्जुगों की तरफ़ फरमाबरदारी और जवान लोगों और छोटों की तरफ़ प्यार का हुकूम देता है, जो लोगों को सच्चाई की तरफ़ गामज़न करता है और कौन सा बड़ा गुनाह है जो ज़ाती मफ़ाद के लिए इस्तेमाल होता है।यह मज़हब को नापाक करना है कि इसे सियासी मफ़ाद या दूसरे

नुकसानदायक मकासिद और मफ़ाद के लिए इस्तेमाल किया जाए या कुछ लाइल्म लोगों को मज़हब के नाम पर भड़काया जाए। यह अल्लाह तआला,जो सबसे ज़्यादा माफ़ करने वाला और सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है उसकी निगाह में यह सबसे बुरा गुनाह है। क्या एक पॉप या एक कार्डिनल जो लोगों को मुसलमानों का कत्ले आम करने के लिए जमा करले अपनी खुद की पाक किताब की खिलाफ़ वरज़ी की खीमत पर तो क्या वह एक मज़हबी आदमी कहलाएगा? उन बड़े लोगों के सम्मान में इस्लामी क्या है जो अपने बादशाह और मुहिब वतनों के खिलाफ़ मुसलमानों को भड़काते हैं कि "लोग अपने मज़हब को खो रहे है"? अल हमदो लिल्लाह (सब तारीफ़ और बड़ाई अल्लाह के लिए है)आज के समाज में मुश्किल से कोई बेवकूफ लाइल्म होगा जो मज़हबी और साईंसी अमूर वालो को गुमराह करने वाला हो। आज, बेहतर मवासलात की सहूलियात और आमदोरफ़त की तेज़ स्पीड की वजह से जवान ईसाई और मुसलमान एक दुसरे के मज़हब को सीख रहे हैं, एक दूसरे के मुल्क जा रहे हैं, एक दूसरे से मिल रहे हैं और दोस्त बना रहे हैं। अब ईसाई भी इस हकीकत को देख रहे हैं कि इस्लाम बर्बरता का मज़हब नहीं है और समझ गए हैं कि दोनो मज़हब लाज़मी तौर पर एक जैसे हैं।

आज बहुत सारे ईसाई बयान करते हैं कि वे ईसाई जुल्मों के बारे में तारीख में पढ़कर बहुत दुख महसूस करते हैं, अब वे बिल्कुल भी उन जाहिल लोगों के साथ राज़ी नही हैं, और ये कि वे जानते हैं कि इस्लाम सबसे ज़्यादा तहज़ीब याफ़ता मज़हब है, और सच्चे मुसलमान सोबर,तहज़ीब याफ़ता; अच्छा बरताव करने वाले और मिलनसार लोग हैं। दरहकीकत, वे किसी भी राय पर जो इन हकाईक से बरअक्स हो उनके खिलाफ़ ज़रूरी जवाब दे सकते हैं। आइए दुआ करें ताकि लोग मज़हब को मज़हब की तरह जाने, ताकि वे इसे घिनौने ज़ाती मफ़ादों के लिए दिलेराना इस्तेमाल न कर सकें, और इस तरह वे ग़ैर मज़हबी इश्तराकियों के खिलाफ़ तआवुन, जद्दोजहद कर सकें और उन कौमों की आज़ादी और हकूक के लिए कोशिश कर सकें जो उनके पंजो में दब चुके हैं और लोगों के लिए जो उनके जुल्मों में कराह रहे हैं! अल्लाह तआला पूरी इंसानियत को इस्लाम की इज़्ज़त से नवाज़े, जो उसकी नज़र में वाहिद सच्चा मज़हब है, और उसकी कामिल फरमाबरदारी के साथ। आमीन।

# मुस्लिम लाइल्म नहीं हैं

इस्लाम के बारे में मग़रिबी इशाअतों में एक मुआहिदे का ज़िक है कि मुसलमान बेहद जाहिल होते हैं, ये कि ज़्यादातर मुसलमान लोग एशिया और अफीका में जो उनके राब्ते में आए वे लिखना और पढ़ना नहीं जानते थे, और ये कि 18वीं और 19वीं सदियों के सालों में वहाँ कोई एक भी नाम मुसलमान का नहीं था साईसंदानों के बीच में जिन्होने साईंस या तहज़ीब में कोई नाम कमाया हो।इन मग़रिबी ज़राओं में से कुछ एक तंग नज़र तशखीस करते हैं, यह इल्ज़ाम लगाते हैं कि इस्लामी मज़हब तरक्की के लिए रूकावट है, जबकि कुछ नाकिस नतीजे पर पहुँचे कि यह जहालत है जिसने मुसलमानों को ईसाईयत की अज़्मत से परे रखा और मिशनरियों की सारी कोशिशो के बावजूद इन्हें ईसाईयत को अपनाने से रोके रखा।

पीछे तारीख में नज़र डालने से यह सच्चाई ज़ाहिर होती है जो ईसाई इल्ज़ामों के बिल्कुल उल्टा है।क्योंकि इस्लाम हमेशा इल्म की सराहाना करता है और मुसलमानों को सीखने के लिए उकसाता है।सूरह ज़मर की नबी आयत-ए-करीमा का मतलब है, "...**कहो ः क्या वे बराबर हैं, जो जानते हैं और जो नहीं जानते? यह वे हैं जो खत्म हो गए हैं समझ के साथ कि यह नसीहत मिलती है।**"(39-9) मंदरजाज़ेल हुकूम हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म का आलमगीर तौर पर जाना जाता है ः " **चाहे अगर इल्म चीन में है, जाओ और इसे सीखो।" " जहाँ इल्म है वहाँ इस्लाम है।" " ये मुसलमान मर्द और औरतों** (इस्लाम का हुकूम) **पर फर्ज़ है कि इल्म जाने और इसे सीखे!"** इस्लाम इल्म हासिल करने को इबादत करने के बराबर मानता है, और आलिमों के ज़रिए इस्तेमाल की गई स्याही को मुसलमानों के खुन के बराबर मुसलमानो ने ईसाईयत को नामंजूर किया क्योंकि इस्लाम मज़हब ईसाईयत से बहुत ज़्यादा तर्क वाला और बहुत ज़्यादा सच्चा है।

इस्लाम पीछे की तरफ़ जाने वाला मज़हब नहीं है, बल्कि इसके बरअक्स ये सारी तबदिलियों की तकलीद करने, और रोज़ाना नए हकाईक को खोजने और हमेशा तरक्की करने का हुकूम देता है।इस वजह से इस्लाम के पहले दिनो से इल्म के माहिरो की अज़ीम कद्र की जाती है, मुस्लिम अरब अदबियात में, किमयाई में, नजूमशनासी में, जुगराफ़िया में,तारीख में, अदब में, रियाज़ी में, इंजीनियरिंग में, आर्किटेक्चर में, और अखलाकी और समाजी साईंसी में, जो उन सब साईंस में, जो उन सब साईंस की बुनियाद है इसे आला मकाम हासिल है, तालीमयाफता कीमती आलिम,जज, माहिर और मासटर, जो आज भी गहरी इज़्ज़त के साथ याद किए जाते हैं और पूरी दुनिया के उस्ताद और तहज़ीब के लिए रहनुमा

बन गए। यूरोपी लोग, जो उस वक्त आधे वर्वर थे उन्होने साईंस मुस्लिम युनिवर्सिटियों में पढ़ी, और ईसाई मज़हवी हुक्काम, जैसे कि पॉप सिलवस्टर ने भी अंडालूसियन यूनिवर्सिटियों में लेक्चर हासिल किए। यूरोपीय ज़वानो में आज इस्तेमाल किए जाने वाले कई साईंसी लफ्ज़ अरवी असल के हैं मिसाल के तौर पर 'कैमिस्टरी' 'किमया' से 'अलजवरा' अल-जेवीर से लिए गए हैं। क्योंकि ये मुस्लिम अरवी थे जिन्होने दुनिया को इन साईंस को पढ़ाया।

यूरोप वाले इस गलतफहमी में आस पास घूम रहे थे कि ज़मीन दीवारों से घिरी एक फलैट जगह थी, जब मुसलमानों ने इसे दरयाफ़त किया कि यह एक गोल, घूमता हुआ सय्यारा है। मेरिडियन की लंबाई जो उन्होने सिनजर के जंगल में मूसुल के आसपास मापी वे हैरतअंगेज़ तौर पर आज की पैमाईश के साथ मिलती है। यह फिर से, मुस्लिम अरव था, जिसने ग्रीक और रोमन की फलसफे की किताबों को खत्म होने और पामाली से महफूज़ किया, जिन्हे निस्फ़ सदी के फहशी जाहिल और मोतसिव काहनो ने ज़ोरदार तरीके से पावंदी लगा दी थी, और उसका तर्जुमा शुरू किया। यह हकीकत है जो आज मुनासिब ईसाईयों के ज़रिए मानी जाती है कि असली रेनेसां, (जिसका मतलब है कदीमी कीमती साईंस की वहाली)इटली में नहीं आया था, वाल्कि अव्वासिद दौर के दौरान अरव में आया था; यानी यूरोपी रेनेसां से वहुत समय पहले। यह शर्म की बात है, अगरचे, **17**वीं सदी में इस बड़ी तरक्की ने अचानक अपनी गति को खो दिया। यह ईसाई और यहूदी पॉलीसी थी जो इस तवाहकुन खरावी की वजह थी जो मुसलमानो को मज़ीद साईंसी खोज करने से पीछे हटने के लिए तैयार थी, जैसे कि, "हर चीज़ जो ईसाईयों के ज़रिए वनाई गई है गंदी ममनुअ(हराम) है मुसलमानों के लिए। जो मुसलमान इन्हें अपनाएंगे या इसकी नकल करेंगे वे काफ़िर वन जाएंगे," और वो मज़हवी लाइल्मी कट्टरपंथी जिन्होने उस पर यकीन रखा। मौजूदा सदियों में उसमानिया इल्म में मुसलमानों के सवसे अज़ीम रहनुमा थे। पूरे ईसाई जगत ने इस इस्लामी सलतनत की कमज़ोरी के लिए सियासी और फौजी हमले शुरू कर दिए दुनिया में होने वाली वेहतरी और तहकीकात की तरफ़ से इस की खरावी की हालत में इसे कम करने के लिए। एक तरफ़ सलीवी हमले, और दूसरी तरफ़ तखरीवी और अलैहदगी पसंद सरगरमियाँ जो उनके ज़रिए विदअती मुसलमानो के ज़रिए की गई , उसमानिया रहनुमाई को साईंस और तकनीक में तोड़ फोड़ कर दिया। अंदरूनी और वेरूनी हमलों दोनो ने तुर्को को देरपा नुकसानात दे दिए। वे अव नए असरदार औज़ार वनाने के लायक नहीं रहे। न ही वे अव अपने मुल्क के कब्ज़े में रहीं अज़ीम ज़राओं को पूरे तौर पर कावू में रख पाए। उन्हें सनअत और अपने मुल्क की खुद की तिजारत को गैर मुलकियों पर छोड़ना पड़ा। वे गरीव हो गए।

सारे शोबों में लगातार तरमीहात दुनिया में रोज़ाना के वाक्यात हैं। हमें उनकी लगातार तकलीद करनी चाहिए ,उन्हें याद करना चाहिए, और सीखाना चाहिए। हमें बुर्जुगों की तकलीद करनी चाहिए ,न सिर्फ़ सनअत और टैकनीक में, बल्कि मज़हबी और अखलाकी अतवार में भी, और हमें ईमान वाली और मोहज़्ज़ब नसल उठानी चाहिए। आइए हम आपको एक छोटी सी मिसाल देते हैं ः

तुर्को को आलमगीर तौर पर नाकाबिले यकीन पहलवान माना जाता था। वेशक, वे हमेशा वेनुलअकवामी कुश्ती की चेमपीयनशीप जीतते थे। मौजूदा सालों में, अगरचे, हम वहुत कम अपने आपको घेरे में महसूस कर पाए हैं। क्या आप जानते हैं क्यों? पहले, यूरोप के लोग कुश्ती नहीं जानते थे। उन्होने हम से सीखा, उसे वेहतर बनाया और मुकम्मल किया, उसमें मज़ीद नए और तेज़ अमल, नए पेंतरे और नई तकनीक डाली। और दूसरी तरफ़, हम पुराने स्टाईल पर लटके रहे, उन्हें भी हम नहीं जानते। हम अभी तक पहलवानी में वहतरी सही तरह से नहीं कर पाए। न ही हमारी इच्छा होती है कि ग़ैर मुल्की पहलवानों से सबक सीखें। इसलिए, नई तकनीक जो उन्होने तैयार की उसको जानते हुए ,वे आसानी के साथ हमारे पहलवानों को ज़मीन दिखा देते हैं। इसलिए, हमें लोगों से दुनियावी अमाल सीखने हैं जो इन्हें जानते हैं और जितना हम करते आए थे उससे हमें वेहतर करना है। एक शख्स जो अपने आपको हर चीज़ में दूसरो से वेहतर समझता है वो या तो वेवकूफ़ है या एक अहंकारवादी।

हमारी मज़हब साईसी इल्म से अलग मज़हबी इल्म रखता है। यह सख्त हराम है मज़हवी तालीमात में, इस्लामी अख्लाकी उसूलों में, या इवादत के तरीकों में छोटी सी भी कॉंट छॉंट करना। जब यह दुनियावी अमूर में और साईसी इल्म में आता है, हालांकि, इस्लाम ने हमें हुकूम दिया है कि सारी वेहतरी के साथ चलें, सीखें और नई खोजों को इस्तेमाल करें। नाम निहाद दानिश्वरों ने जिन्होने उसमानिया इंतेज़ामिया में इस हिदायात के सेट को उलटा कर दिया। ईसाई धोखे में पड़कर,उन्होने मज़हवी तालीमात को सुधारने की कोशिश की और इस्लाम की ज़रूरयात को खत्म कर दिया। उन्होने यूरोप में हो रही साईसी वेहतरियों और नई खोजों की तरफ़ से ऑंखे वंद करलीं। दरहकीकत, उन्होने तरक्की पसंद दिमाग़ उसमानिया वादशाहों को शहीद कर दिया जो वक्त के साईसी इल्म और जदीद तकनीक की तकलीद करने की नीयत रखते थे। फ्रीमेसंस के हाथों में उनकी ज़ाती कोशिशो से महरूम, उन्होने मज़हवी इसलाहात और अलैहदगी पसंदो में तरक्की की मांग की। कहने के लिए हैरानकुन है कि पाक मज़हवी तालीमात को खराव करने की भयानक कोशिशे सियासी

पार्टियों के बीच एक झुकाव बन गई और मौजूदा सालों तक अपनी गिरफ़्त कायम रखी। कुछ सियास्तदान इन शातिर सनक में इतने ज़्यादा अंधी हौसला अफ़ज़ाई में आ गए कि इसने कुछ सच्चे मुसलमानों को जिनकी गलती सिर्फ़ इतनी थी कि वे सियासत में अपनी थोड़ी दिलचस्पी दिखाना चाहते थे, या बल्कि, अपनी पार्टी की हिमायत नहीं करना चाहते थे। अल्लाह तआला का बेशुमार शुक्र है कि उसने आखिर में ऐसे मुहाफिज़ तखलीक किए जिन्होने ऐसे लोगों को रोका जो हमारे पाक और अज़ीम लोगों को तबाही की तरफ़ रहनुमाई कर रहे थे। नहीं तो, हम अपने मुबारक मज़हब और खुबसूरत मुल्क से हाथ धो बैठते, और इश्तराकियों के पंजो में फँस जाते। अल-हमद-ओ-लिल्लाह' अला हाज़िह-इन-नी माह!

आज[1985 सी.ई] तुर्की में 19 युनिवर्सिटियाँ हैं। जवान मुसलमान तुर्क जदीद दुनियावी इल्म और मुसबत साईंस सीख रहे हैं और इस तरह दूसरी मुस्लिम मुल्कों की रहनुमाई कर रहे हैं। 1981-82 तक मुसलमान मुल्कों से तुर्की यूनिवर्सिटियों में आने वाले तालीबे इल्मों की तादाद कई हज़ार थी। मंदरजाज़ेल हवाला एक मज़मून से लिया गया है जो मुसलमान मुल्कों मे हो रही साईंसी खोजों से मुतअल्लीक हैं जिसे एक माकूल यूरोपीय के ज़रिए शाय किया गया। मज़मून, फ्रांस के एक लेखक जिनका नाम जीन फेरेररा था के ज़रिए लिखा गया था जो जनवरी 1978 के 724 नम्बर के शुमारे में एक दोरानिया में जिसका उनवान **Science et vie** था उसमें शाय हुआ था। मज़मून की सुर्खियाँ थीं **Les universities du petrole** =(पेट्रोलियम यूनिवर्सिटियाँ) फेरेरा के कुछ मुशाहदे मंदरजाज़ेल हैं ः

" मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म 632 मदीना में अपनी प्यारी बीवी आएशा के बाज़ूओं में रहलत फरमा गए। मुसलमानो ने आगे आने वाले सालों के दौरान, अपने अबाई घर जिसे आज सऊदी अरब बोलते हैं वहाँ से आगे बढ़े, एक भारी इस्लामी सलतनत एक बड़े इलाके तक अंटलांटिक समुंद्र से अमूर नदी तक फैलाकर कायम की। बेहद मज़बूत, सब्र वाले और बहादुर लोग जैसे कि मुसलमान थे, वे अपनी फतूहात के बाद बहुत ज़्यादा रहम दिखाते थे। हर जगह जहाँ से वे गुज़रे, उन्होने एक तहज़ीब कायम जिसकी लम्बाई चौड़ाई हम अभी तक नहीं जान पाए। इस्लामी यूनिवेर्सिटियाँ, एक बड़े इलाके पर कायम थीं बग़दाद और कॉर्डोबा के बीच तक फैली हुई थीं, उन कदीम तहज़ीबों को दोबारा बहाल किया जो यूरोपी जिहालत को मिटाने वाली थीं। टॉलेमी, यूक्लिड और आर्किमिडीज़ के कामों को अरबी में तर्जुमा करते वक्त, मुसलमानो ने अपनी ज़बान में इडियन साईंसदानों के ज़रिए लिखे गए कामों को पढ़ा, और दुनिया भर में उसे दोबारा शाय किया। खलीफ़ा

हारून-उर-रशीद के ज़रिए सफ़ीरों का एक ग्रुप ऐकस ला-चैपलेड चार्लमेन आठवीं सदी में पहली बार मिलने के लिए भेजा वे हैरान रह गए यह जानकार कि महल में ज़्यादातर लोग जाहिल और लाइल्म थे।यूरोपवासियों का आकड़ों के साथ पहला तर्जुबा नवीं सदी में हुआ, जब मुसलमानों ने उन्हें नम्बरों के बारे में पढ़ाया, ज़ीरो से शुरूआत करके।असल हकीकत में, हिंदुस्तानी **ज़ीरो** को खोजने वाले थे।बहरहाल, ये मुसलमान थे, जिन्होने इसे युरोपीय को पहुँचाया।इसी तरह, मुसलमान पहले उस्ताद थे जिन्होने यूरोपीयों को ट्रिगोनोमेटरी/trigonometry पढ़ाई।मुस्लिम युनिवर्सिटियों में मुसलमान उस्तादों ने अपने गोरे शार्गिदों को साइन,कोसाइन और,कुछ समय बाद, त्रिकोणमिति/ trigonometry भी पढ़ाई।जो कुछ भी तरक्की **9**वीं और **12**वीं सदियों के बीच में इल्म के नाम पर दुनिया में हुई वे सब एक ही इल्म के ज़राए से पैदा हुई ः मुस्लिम यूनिवर्सिटियों से।

[उस्मानिया सलतनत में पढ़ने वाले इल्म और साईसं के आदमियों का नम्बर हिसाब खारिज कर देता है।आला खिदमात जो उन लोगों ने आज की तहज़ीब को सौंपी वो उनकी किताबों में झलकती हैं।उन अज़ीम लोगों में से एक मुसतफ़ा बिन अली एंफ़ंदी रहिमा-हुल्लाहु तआला, यवुज़ सुल्तान सलीम रहिमा-हुल्लाहु तआला की मस्जिद के मुवक्कित(टाइमकीपर),[डी.**926**(**1520**सी.ई.)]इस्तांबुल में,और रईस- उल -मुनजजीमीन (सुल्तान के चीफ़ नजूमी) वह **979**[**1571** सी.ई.] में वफ़ात पा गए।उनकी जुग़राफ़िया की किताब **इ`लाम-उल-इबाद** और उनकी फलकियात की किताबें, **तेस-हील-उल-मीकात फी-इल्म-इल-औकात, तएसीर-इल-कवाकिब** और **किफ़ायत-उल-वक्त फी रब-ए-दाएरा,** सबमें हैरानकुन जानकारी शमिल है।अबद-उल-अज़ीज़ वफ़ाई रहिमा हुल्लाहु तआला[डी.**874**(**1469**सी.ई.)] के ज़रिए लिखी गई किताब किफ़ायत-उल वक्त लि-मारिफत-ए-दाएरा भी जदीद सितारों की मालूमात फराहम करती है।]

"क्योंकि कदीम यूनानियों के ज़रिए लिखी गई दवाई की किताबों को करून वस्ती के लाइल्म ईसाईयों के ज़रिए जला दिया गया था, आज हमारे पास उनकी असली कापियाँ नहीं हैं।उन असली मतन में कुछ हिस्से इधर उधर भुला दिए गए और इसलिए वो वहशी तबाहियों से बच गए।वे हिस्से अरबी में बग़दाद के हुसैन इबनि जोहग के ज़रिए तर्जमा किए गए।उस महान हस्ती ने प्लेटो और अरस्तू के कामों को भी अरबी में तर्जुमा किया।

" मुहम्मद बिन मूसा हरज़मी, तीन भाईयों में से एक जो बग़दाद में रियाज़ी, जियोमेटरी और सितारों के इल्म के आलिम थे खलीफ़ा मामून( सातवें अब्बासी खलीफ़ा।हारून-उर-रशीद पाँचवें खलीफ़ा के बेटे।वे बग़दाद के पास **786** में पैदा हुए,और **833** में वफ़ात पा गए।उन्हें टैसास में दफ़नाया गया के दौर में, उन्होने सूरज की ऊंचाई और खते अस्तवा की लम्बाई का हिसाब लगाया, और आलात बनाए जिन्हें असतरलाब(एस्ट्रोलाबे)[रब`इ-दाएरा] कहते हैं और इबादत के औकात को तय करने के लिए इस्तेमाल किया।उनकी किताब जिसका उनवान जबर(अलजबरा)थी वह अंग्रेज़ी में तर्जुमा की गई, और उनकी किताब असतरलाब(एस्ट्रोलाबे) लैटिन में तर्जुमा की गई।उन्होने **233**[**847** सी.ई.] में वफ़ात पाई।

"यह साबित करते हुए कि एक गोलकार शक्ल है, मुस्लिम सितारा शनासों ने यूरोपीय वहम को मिटा दिया कि 'ज़मीन एक ट्रे की तरह सपाट है।अगर तुम लम्बे समुंद्री सफ़र पर निकलोगे तो तुम गिर जाओगे।' वे ज़मीन के घेरे को ठीक तरह से मापने में कामयाब हुए।कहते हुए दुख है कि,अब्बासी सलतनत,जिसने यूरोपीय को बहुत सारे हकाईक पढ़ाए और जिन्होने हालात तैयार किए जिससे रेनेसां का जन्म हुआ,उनका धीरे-धीरे ज़वाल होना शुरू हुआ, जो बग़दाद के मंगोलों के हमले के साथ अपने नादिर को पहुँच गया **656**[**1258**सी.ई.]में।शहर में आगज़नी और तबाही मचाते हुए,मंगोलों ने मुसलमानों के ज़रिए कायम की गई एक तहज़ीब को खत्म कर दिया।अब हालात कैसे हैं? क्या हम इस्लामी तहज़ीब में एक दूसरे रेनेसां की उम्मीद करते हैं?

"निस्फ़ सदी में,मुसलमान सोने,कीमती मसाले,खुशबूदार सुगंधित लकड़ी[जैसे कि मुसब्बर की लकड़ी,वग़ैरह] के लिए देखे जाते थे,और उनमें से कुछ यूरोप को भेजते थे।आज,काले सोने ने इन सब चीज़ो को हटा दिया,[जैसे कि सुलेमान(सोलोमन) अलैहिसलाम के ज़माने में एक केस था।]मुझे हैरानी है क्या मुसलमान एक बार फिर दोबारा इतनी बड़ी रियास्त कायम कर पाएँगे जितनी बड़ी सिकंदर[डी **323** बी.सी.] और नेपोलियन[**1769-1821** सी.ई.] ने कायम की थीं? मौजूदा अरबी फलाह पेट्रालियम की वजह से है।वे कोशिश कर रहे हैं कि इस अमीर खज़ाने के ज़रिए जो इनके हाथ में है उसे इस्तेमाल करके ताकतवर बन जाएँ।प्रोफ़ेसर मुहम्मद अल शामली,डारेक्टर कुवैत रिसर्च सेंटर की हिकमते अमली ध्यान में लाई गई,वह मंदरजाज़ेल है ः सबसे पहले हमें, इल्म और साईंस में तरक्की करनी है।इस तरह,अपनी बारी में,हमें साईंसी रिसर्च और इल्म के आदमियों को

तालीम देने की कोशिशो को बढ़ाना पड़ेगा।" यह फ्रांस के लेखक फरेरा के ज़रिए लिखे गए मज़मून से तर्जुमा किए गए पैराग्राफ का खात्मा है।

इस्लामी आलिमों ने बयान किया कि **इस्लामी इल्म** दो हिस्सों पर मुश्तमिल है ः **मज़हबी इल्म**, और **साईंसी इल्म**।एक इस्लामी आलिम होने के लिए यह ज़रूरी है कि दोनो हिस्सों को सीखा जाए हर मुसलमान को मज़हबी इल्म सीखना और अमल करना चाहिए, (पहला हिस्सा)।दूसरे लफ़्ज़ों में, यह **फर्ज़-ए-एन** है।साईंसी इल्म के तौर पर, (यानी दूसरा हिस्सा;) यह सीखना होगा, जितना ज़रूरी है, सिर्फ़ उन मुसलमानों के लिए जिनके पैशे के लिए यह करना ज़रूरी हो।दूसरे लफ़ज़ो में,यह **फर्ज़-ए-किफ़ाया** है।एक कौम जो इन दो नियमों का लेकर चलती है वे बेशक तरक्की करती है और तहज़ीब पाती है।अल्लाह तआला ने करआन अल करीम की सूरह शूरा की **20**वीं आयत में वाज़ेह करता है, "किसी भी शख्स के लिए जो आखिरत में झुकाव चाहता है,हम उसके झुकाव में बढ़ोती देते हैं ;

और किसी भी शख्स के लिए जो इस दुनिया में झुकाव चाहता है, हम किसी हद तक उसे दे देते हैं, लेकिन वह आखिरत में कोई हिस्सा या बहुत नहीं पाएगा।" (**42-20**)इच्छाएँ सिर्फ़ लफ़्ज़ों से हासिल नहीं होतीं।यह ज़रूरी कि वजूहात, यानी,काम को मज़बूती से पकड़ा जाए।अल्लाह तआला ने वादा किया है उनकी इच्छाएँ देने का जो अपने आपको मेहनत में लगाते हैं इस दुनिया की और आखिरत की रहमतें हासिल करने के लिए।उसने ऐलान किया कि वो किसी को भी देगा जो काम करेगा,मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम यकसां।योरोपीय,अमेरिकियों, और इश्तराकियों सबको दुनियावी बरकतें मिलेंगी क्योंकि वे उनके लिए काम कर रहे हैं।निस्फ़ सदी के मुसलमान तहज़ीब के रहनुमा थे क्योंकि वे उनके लिए काम कर रहे हैं।निस्फ सदी के मुसलमान तहज़ीब के रहनुमा थे क्योंकि उन्होने ज़रूरत के मुताबिक काम किया।तबाहकुन अमाल जो दुश्मनो के ज़रिए जारी किए गए जो अब्बासी और उस्मानियों को अंदरूनी तौर पर कमज़ोर करने के लिए शुरू किए गए यहाँ तक कि उन्हें साईंस को सीखते और पढ़ाने से रोके बग़ैर और कोई भी साईंस और फन का काम करने से बाज़ रखने के बग़ैर।नतीजे के तौर पर, अज़ीम सलतनते ढह गई।मज़हबी इल्म ईमान (यकीन),इबादत, और अखलाकी बरताव पर मुश्तमिल होता है।इन तिनो अजज़ा में से किसी एक की भी नामोजूदगी का मतलब है कि मज़हबी इल्म नामुकम्मल है।और किसी चीज़ का नामुकम्मल होना, अपने आप में,बेकार है। कदीमी रोमन और

यूनानी और सारे यूरोपीय और एशियाई रियास्तों में साईंसी इल्म था। ताहम उनकी मज़हबी तालीम नामुकम्मल थी। इस वजह से, उन्होने साईंस और तकनीक में जो बरकतें हासिल कीं उनका गलत इस्तेमाल किया। उन्होने फन के कुछ कामों को ग़ैर मोहज़्ज़ब तरीके से इस्तेमाल किया, जबकि उनमें से कुछ ने अपनी तकनीकी खोजों को दूसरे लोगों को सताने और तबाह करने में इस्तेमाल किया। अकेले तहज़ीब हासिल करने में, वे टुकड़ों में बंट गए, ढह गए, और खत्म हो गए।

एक ही नज़रिए की तरफ़ से, मोजूदा शानदार और फरोग़ देने वाली रियास्त के बावजूद कि कुछ ग़ैर मुस्लिम लेकिन नज़रयाती तौर पर इस्लामी समाजी रियास्तो ने साईंस और तकनीक में हासिल किया है, वे मज़हबी इल्म के सभी तीनो अजज़ा से महरूम हैं। वे सबसे ज़्यादा बदतरीन किस्म के जुल्म व-ज़बत कर रहे हैं, जोकि सबसे ज़्यादा जंगली लोग हैं, अकेले तहज़ीब वालो को, ऐसा करने से नफ़रत होगी। इस किस्म की रियास्तें,इस्लामी इल्म से खाली होती हैं, और खत्म होने के लिए बर्बाद हैं। तारीख तरमीम पर मुश्तमिल है। सऊदी अरब जैसे मुल्कों को तारीख से सबक सीखना चाहिए और अपने ईमान और अखलाक को सुधारना चाहिए बजाए इसके कि सिर्फ़ दुनियावी बरकतों के लिए काम करें। सिर्फ़ साईंसी तरक्की उनकों तहज़ीब की तरफ़ रहनुमाई या अज़ाब से महफ़ूज़ नहीं रख सकती।

तुर्क अपने बुर्जुगो की तरह काम कर रहे हैं, दूसरी मुस्लिम कौमों के लिए वे साईंसी रहनुमा बन गए हैं। हालांकि, अगर कुछ जवान लोग कुछ धोका देती सियासी रूझानों में घिर जाते हैं, फिरकावाराना गिरोह में शामिल हो जाते हैं और एक दूसरे का गला घोटने की कोशिश करते हैं बजाए इसके कि साईंस और तिब की पढ़ाई करें और अपने मुल्क की फलाफ के लिए काम करें, उनके मुसतकबिल के लिए लिए गए दर्द के लिए अफसोस, उन पर लगाई गई उम्मीद के लिए अफसोस, और अफ़सोस हमारे गरीब मुल्क के लिए! वाहिद चीज़ जो हमारे जवान लोगों को ऐसी नुकसानदायक खयालात से, बिदअती आइडियो से और गलत तरीकों से महफ़ूज रखेगी वो है उन्हें अपने दिलों को पाक करना होगा और अपने अखलाकी रवय्यों को खुबसूरत बनाना होगा। और इन दोनों फज़ीलत का ज़रिया, अपनी बारी में, मज़हब है। मज़हब के लिए, जैसे कि हम बार बार बताते आए हैं, एक शख्स को गुनाह करने से और बिदअती की तरफ़ मुंतकिल होने से महफ़ुज़ रखें,उसे उसके मुल्क के साथ और उसके मुल्क के हिरों के साथ जोड़ें, और उसे सच्चाई/ सही रास्ता दिखाएं। 'मज़हब' कहने का हमारा मतलब क्या है, सच्चा मज़हब जो है इस्लाम, और इसे सही तरीके

से सीखना।नफ़रत और बिदअती ईमान जो कुछ जालसाज़ बदमाशों ने मज़हब के नाम पर हिमायत किए जवान लोगों को गुमराह करने के लिए उसका मज़हब से कोई लेना देना नहीं है।इस्लामी मज़हब ऊपजाऊ है।यह कभी भी तबाहकुन या अलैहदगी वाला नहीं रहा है।अरे तुम कीमती जवानों!उन लोगों से परे रहो जो तुम्हें तबाह करने वाली और अलग करने वाले अमाल में लगाते हैं।क्योंकि वे लोग इस्लाम और हमारे मुल्क के दुश्मन हैं।

## मज़हब, धर्मशास्त्र, और मज़हब और फलसफे के बीच का फर्क

सिर्फ़ एक अल्लाह है;सिर्फ़ उसकी तरफ़ एक ही रास्ता है।चूंकि मज़हब वह ज़रिया है जिससे अल्लाह तआला को जाना जाता है, दुनिया भर में सिर्फ़ एक ही मज़हब होना ज़रूरी है।आज दुनिया में मुख्तलिफ़ मज़ाहिब और अक़ाईद हैं।अगर हम करीब से देखेंगे, तो यह समझ आएगा कि तीन बड़े मज़ाहिब-यहूदियत,ईसाईयत और इस्लाम-सिर्फ़ एक अल्लाह में ईमान रखते हैं और ईमान के एक जैसे बुनियादी उसूल हैं, और ये तीन मज़ाहिब एक दूसरे की तकमील हैं।ये तीनो मज़ाहिब एक कड़ी में तीन कामयाब लिंक हैं।जैसे जैसे सदियां बीतती गईं, खराब और बदले हुए मज़ाहिब को पाक किया गया और तब तक अल्लाह तआला ने "**इस्लाम**" को नहीं भेजा, जो सबसे मुकम्मल और सच्चा मज़हब है।जैसे कि हम बार बार कहते रहें हैं इस किताब में कि, "**इस्लाम**" लफ्ज़ के दो मआनी हैं।इसका मतलब है अपने आपको अल्लाह तआला के लिए दे दो, और ये आखिरी मज़हब का नाम है जो मुहम्मद(अलैहि सलाम) के ज़रिए बताया गया।अहल-ए-किताब(पाक किताबों के साथ मज़ाहिब) दिगर दो मज़ाहिब के नाम हैं।

हम कोशिश कर रहे हैं कि किस तरह ये मज़ाहिब अल्लाह तआला के ज़रिए भेजे गए।हम इनकी बुनियादी बातों की वज़ाहत करेंगे।इन तीन अज़ीम मज़ाहिब के अलावा, वहाँ और भी मज़ाहिब हैं अल्लाह के तसव्वुर के बग़ैर, जो सिर्फ़ अखलाकी उसूलो पर मुबनी हैं।ये हमारे मज़मून के लिए बेतुके हैं, लेकिन ये मज़ाहिब दुनिया में लोगों की एक बड़ी तादाद के ज़रिए यकीन किए जाते हैं।इसलिए ,हम सोचते हैं कि यह एक अच्छा खयाल है कि मरकज़ी मोज़ूअ से पहले इनकी जानकारी पहले दे दी जाए। ब्राहामिनिज़म,पारसी मज़हब और बौद्ध मज़हब उनमें सबसे अहम हैं।कुछ समय पहले, ये तीनों मज़ाहिब डेढ़ अरब लोगों का ईमान थे।हिंदुस्तानी,बर्मी,लाओटयन,जापानी,चीनी,मलायी,कोरियाई,और दूसरे मुख्तलिफ़

लोग जो उनके पड़ोसी थे इन मज़ाहिब में यकीन रखते थे। ये मुमकिन है कि यूरोपीय और अमेरिकियों के बीच कुछ बोद्ध मज़हब वाले मिल जाएं, लेकिन वे बहुत कम होंगे। ताज़ातरीन बैनलअकवामी आदाद व शुमार के मुताबिक, इन मज़ाहिब पर इन्हिसार करने वालों की तादाद घटकर **400** मिलियन हो गई है। इसकी वजह है इश्तारिकियों के प्रोपेगेंडा की तासीर और हकीकत ये है कि चीन में नौजवान नसल किसी मज़हब के लिए कोई अहमियत नहीं रखता। अब,आइए हम इन मज़ाहिब को तफ़सील से जाँच करते हैं और इनमें इंसानी किरदार को देखते हैं।

## ब्राहम्णों का मज़हब

ब्रामा का मतलब है पाक लफ़्ज़। मज़ार-ए-जान-जाना (मज़ार-ए-जान-ए-जाना को दिल्ली में **1195** (**1781** ए.डी.) में शहीद किया गया।) इंडिया में एक इस्लामी आलिम थे,उन्होने अपने **14**वें खत में लिखा, "यह मज़हब ईसा (जिस्स) अलैहि सलाम से कई सदियों पहले हिंदुस्तान में जन्मा। यह सच्चा आसमानी मज़हब था। इसके मानने वाले इसे खराब करने के बाद काफ़िर (ग़ैर ईमान वाले) बन गए।" ब्राहमण उनका नाम था जो लोगों के रहनुमा थे जो इस मज़हब में यकीन रखते थे। ब्राहमणों में से एक की पूजा होती थी। कहा जाता है कि ब्राहमा के चार बेटे थे। उनमें से एक माना जाता है कि उसके मुंह से तखलीक में आया और बाकी तीन उसके हाथों और पैर से निकले। उसके चार बेटो की वजह से लोगों को ब्राहमणों के ज़रिए चार दर्जो में बाँट दिया गया ः

1) **ब्राहमण** ः ये ब्राहमण मज़हब के मुकददस राहिब थे। उनका काम पाक किताब जिसे **वेद** कहा जाता है उसका पढ़ना ओर वज़ाहत करना था और दूसरे रूकनों की रहनुमाई करना था। ये सबसे ज़्यादा असरदार थे। कोई उनके हुकूम के खिलाफ़ बग़ावत नहीं कर सकता था। हर कोई उनसे डरता था।

2) **योद्धा/लड़ाकू** ः इस दर्जे में हुकूमरान, राजा, अज़ीम सियास्तदां और सिपाही। ये " कृष्णा" कहलाते हैं।

3) **ताज़ीर और किसान** ः इनको "vayansa" बोलते हैं।

4) **किसानों,कारकनो, मुलाज़मीन, और इसी तरह/वग़ैरह** ः कोई भी जो इन चारो दर्जो से बाहर हो "पारिया" कहलाता है। एक परिया को एक अच्छी ज़िंदगी जीने का कोई हक

नहीं।उन्हें जानवारों की तरह बरताव किया जाता है।ब्राहमण मज़हब में बुत होते हैं।ये बुत और उनके मआनी,क्या खाने वाला है क्या खाने वाला नहीं, जुर्म और सज़ा उनके लिए ये सब इनकी मुकददस किताब में लिखा है।**मानव धर्म शास्त्र** [जिसका मतलब है ः मनु की मज़हबी किताब]।ब्राहमण मुश्रिकीन होते हैं।सबसे बड़ा देवता "कृष्णा" होता है, जिसने बुराई को खत्म करने के लिए अवतार लिया।दूसरा बड़ा देवता "विष्णु" है।विष्णु बहुत अहम है।इसका मतलब है ऐसी चीज़ जो इंसानी जिस्म में घुस जाती है।उनका तीसरा भगवान "शिवा" है।विष्णु को चार हाथों के साथ एक शख्सियत की शक्ल में देखा जाता है और इसका रंग गहरा नीला है।इसको या तो अपनी ही ईगल जिसे "गरूड" बोलते है या कमल के एक फूल पर या एक साँप पर बैठे हुए देखा जाता है।ब्राहमण मत के मुताबिक, विष्णु इस दुनिया में नौ बार मुख्तलिफ़ शक्लों[जैसे कि इंसान,पशु और फूल की शक्ल] में नीचे आ चुका है।उससे उम्मीद की जाती है कि वह दसवीं बार भी नीचे आएगा।

ब्राहमा के मज़हब में,मखलूक को मारना सिर्फ़ जंगजू वाली हालतों में जाईज़ हैं।दूसरे औकात में, जानदार मखलूक,इंसान या जानवर,किसी को नहीं मारा जा सकता।इंसानी मखलूक को पाक मखलूक तसव्वुर किया जाता है।रूह की "मुंतकली" माना जाता है।वो ये कि, एक इंसान के मरने के बाद, उसकी रूह दूसरी शक्ल में दुनिया में वापस आएगी।चूंकि यह माना जाता है कि विष्णु इस दुनिया में जानवर की शक्ल में वापस आएगा, तो किसी भी जानवर को मारना बिल्कुल मना है।यही वजह है कि उनमें कट्टरपंथी कभी भी गोश्त नहीं खाते हैं।

**मानव धर्म शास्त्र** की किताब के मुताबिक इंसानी ज़िंदगी चार गुप में तकसीम हैः

**1-** ग़ैर फआली ;

**2-** शादी शुदा ज़िंदगी ;

**3-** अकेले रहना ;

**4-** भीख मांगना।

मज़ार-ए-जान-ए-जाना (रहमतुल्लाहि अलैह),हिंदुस्तान में (सुफ़िसम)तसव्वुफ़ के इस्लामी इस्लामी आलिमों में से एक ने ,लिखा, "हिंदुस्तान के काफ़िरो के जश्न" में अपने **14**

वें खत में फारसी ज़बान में लिखा। वह कहते हैं ः "अल्लाह तआला सब इंसानों को, हिंदुस्तान में रहने वाले लोग भी इसमें शमिल हैं, खुशी का रास्ता दिखाता है। उसने एक किताब वेद और बीद के नाम से एक फरिश्ते जिसे बर्नीहा कहा जाता है उसके ज़रिए भेजी। उस किताब के चार हिस्से हैं। उस मज़हब के मुजतहिदों (अज़ीम आलिमों) ने उसमें से छः मज़हब निकाल लिए। उन्होने ईमान के मुतअल्लिक हिस्से को 'धर्म शास्त्र' कहा। उन्होने इंसानो को चार दर्जात में तकसीम किया। इबादात के मुतअल्लिक हिस्से को उन्होने 'कर्म शास्त्र' कहा। उन्होने एक आदमी के जीवन काल को चार मुद्दत में बाँट दिया। हर मुद्दत 'जक' कहलाई। वे सारे अल्लाह तआला की वहदानियत, थे, इस दुनिया की मुंतकली, और इंसाफ़ के दिन में यकीन रखते थे,जहाँ इंसानो से पूछताछ की जाएगी और सज़ा दी जाएगी। वे चमत्कार,खुलासे या पेशानगोई के अमल कर सकते हैं अपने खुद के नफ़स (आदमी के अंदर बुरी इच्छाएँ) के खिलाफ़ लड़कर। बाद की नसलों के ज़रिए इस मज़हब में नई खोजें उनके काफ़िर बनने का सबब बनीं। जब इस्लाम का ज़हूर हुआ तो उनका मज़हब बातिल हो गया। उनमें से वो जो मुसलमान नहीं बने वह काफ़िरो के तौर पर दर्जाबंदी कर दिए गए। हम उन पर तबसरा नहीं कर रहे जो इस्लाम से पहले मर चुके।"

" **पारसी मज़हब**" ब्राहमण मज़ब की शाखों में से एक है। वे आग, गाय और मगरमच्छों की इबादत करते हैं। वे एक झूठे मज़हब के मानने वाले हैं जिसे किसी ने कायम किया जिसे ज़रदुश्त कहा जाता था कुशताब के युग के दौरान, फारस के शाहो में से एक जिसे चॉसरो कहा जाता है, और यह पता नहीं कि वह रहता था या नहीं। वे अपने मुरदे को दफ़नाते नहीं हैं। वे उन्हें खास टॉवरो में रखते हैं और गिद्धों को लाशे खाने देते हैं। एक दूसरे ग्रुप में जिसे " **सिख**" बोलते हैं दाढ़ी रखना पाक समझा जाता है। वे अपनी दाढ़ी कभी नहीं कटवाते। एक दूसरा ग्रुप "**हिंदुइस्ट**" कहलाता है। ये लोग नीचले दर्जो की सारी मिरास में यकीन रखते थे। ये यकीन इतने पुराने हैं कि वे बिल्कुल दूर हैं।

ब्राहमण हर किसी की हिम्मत बढ़ाते हैं "ब्राहमण मज़हब के साधुओं को सुनने के लिए, उनके साधुओं की फरमाबदारी करने के लिए, मनु की किताब की तकलीद करने के लिए, अपने आपको पारिया कहलाए जाने वाले लोगों से वाबस्ता न करना, और किसी भी ज़िंदा मखलूक को न मारना।" उन्होने कभी रूह या जिस्म के मुतआल्लिक कोई जानकारी नहीं दी। वे मानते हैं कि इंसानी मखलूक मुकद्दस मखलूक है। हिंदुस्तान में गंगा नदी भी,पाक है। इस नदी का पानी पीना,इसमें नहाना,और अपने मुरदों को इसमें फैकना,यह उनके लिए एक पाक काम है।

ब्राहमण के मज़हब को तजदीद की,पाक करने की और अपडेट करने की ज़रूरत है। ब्राहमनिसम का मज़हब तकरीबन बुतपरस्ती के साथ मुतरजम हो चुकी है; उन्होने कुछ बुतों की पूजा भी की। बदकिस्मती से, सौ साल बाद, यह मज़हब एक आदमी जिसका नाम **बुद्धा** था उसके ज़रिए बिल्कुल खराब हो गया, जो ईसा अलैहि सलाम से **600** साल पहले पैदा हुआ था। बुद्धा की लूथर के साथ तुलना करना यह मुमकिन है, जिसने कैथेलिक मज़हब में बहुत सारे औहदों को मुस्तरिद किया, लेकिन जिसने एक नया बिदअती फिरका जिसे प्रोटेस्टेंटइस्म कहते है वो भी कायम किया।

## बुद्ध मज़हब

बुद्धा अदाज़न ईसा अलैहि सलाम से **560** साल पहले इंडिया में एक गाँव जिसे "कपिलवस्तु" (इसका दूसरा नाम लुम्पिनी है)कहते हैं,जो बनारस शहर से **160** किलोमिटर शुमाल में है उसमें उसका जन्म हुआ। उसका असली नाम "गौतम" या "गौतमा" था। बुद्धा उसका लकब था जिसका मतलब "तालीमयाफ़ता,रोशन,देवता।"बुद्धा एक इंसान था। उसका बाप उस इलाके का राजा था। जैसे कि बताया जाता है, कि बुद्धा की माँ ने कुछ सपने देखे और उन्हें अपने खामिद को सुनाया। बुद्धा जब **29** साल का हुआ तो महल से भाग गया। वह जंगल में अकेला रहता था खुद बनाई हुई रियाज़त (भुखमरी) की हालत में। जब उसे पता चला कि भुखमरी काफ़ी नहीं है तो वह दोबारा आम ज़िंदगी में वापस लौट गया। फिर वह दोबारा ध्यान मे चला गया। आखिरकार,जब वो **35** साल की उमर को पहुँचा तो, जबकि वो एक अंजीर(बो)के पेड़ के नीचे नरानजारा नाम के दरिया के किनारे बैठा था,वह चिंता में डूब गया और ज़हनी तौर पर रोशन हो गया, और इस तरह दिव्यता हासिल की। इस तरह आखिरकार, गौतम **बुद्धा** बन गया। वह अपने खयालात जब तक **80** साल की उमर में वह फौत नहीं हो गया तब तक फैलाने की कोशिश करता रहा। बुद्धा ने कहा कि ब्राहमिनिस्म का ईमान खराब है; बुतों की इबादत करना गलत है; और हुकूम दिया कि बुतों को टुकड़ों में तोड़ दिया जाए। लोग उसे सुन कर उसके नए खयालात से मुतासिर होते थे। वे उसकी तकलीद करने लगे। इस तरह एक नया मज़हब जिसका नाम बुद्धिइस्म पड़ा कायम हुआ। बुद्धा कहता थे कि वह खुद एक इंसान है,और उसने कभी कभी एक देवता होने का दावा नहीं किया। लेकिन उसकी मौत के बाद उसके शार्गिदों ने उसे पूजना शूरू कर दिया। उन्होने उसके नाम के मंदिर बनाने शुरू कर दिए, और, उसके मुर्तियाँ लगाने के बाद, उन्होने उसकी इबादत शुरू कर दी। इस तरीके से, उन्होने इसे एक गलत मज़हब में बदल

दिया।बुद्ध मज़हब में कोई भगवान नहीं था।बुद्धा को भगवान माना जाने लगा।इसी वजह से,पिछली सदी के आखिर तक, वे मानते थे कि बुद्धा एक भगवान था और यह कि वह कभी पैदा नहीं हुआ और कभी इस दुनिया में नहीं रहा।लेकिन जब कुछ पक्की जानकारी उसकी पैदाइश की जगह की और ध्यान की जगहों के बारे में हासिल हुई और दूसरे जिंदगी से वाबस्ता हकाईक पता चले तो, ये माना गया कि वह भी एक आदमी था।

बुद्ध मज़हब चार बुनियादी उसूलों पर मुबनी है ः

**1-** ज़िंदगी पूरी परेशानियों से भरी है।खुशी और मज़ा ऐसी चीज़ें हैं जैसे एक फेंटम और एक गुमराह करने वाला सपना।जन्म, बुढ़ापा, बीमारी और मौत कढ़वे हकाईक हैं।

**2-** अहम रूकावट जो हमें इन सब परेशानियों से छुटकारा हासिल करने से रोकती हैं वह है हमारी मज़बूत इच्छाएँ, जो हमारी लाइल्मी से निकलती हैं, और किसी भी तरह जीने के लिए हमारी इच्छा।

**3-** इन परेशानियों पर काबू पाने के लिए, यह ज़रूरी है कि हमें अपनी ज़िंदा रहने के लिए दाएमी इच्छाओं साथ ही साथ हमारी आरज़ी खवाहिशों को भी बुझाना होगा।

**4-** आदमी को असली सुख अपने जीने के लिए इच्छा को खत्म करने के बाद ही मिलता है।इस हालत को " निरवाण" कहा जाताा है।निर्वाण का मतलब है एक शख्स जो इच्छाएँ या उमंगे छोड़ चुका हो।दुनिया भर के मामलों से परहेज़ करके, वह मुकददस आराम करता है।बुद्धा ने आराम हासिल करने के आठ मज़मून बताए हैं।वे नीचे लिखे हुए हैं ः

**1-** अच्छा ईमान

**2-** अच्छा फैसला

**3-** अच्छा लफ़्ज़

**4-** अच्छा अमल

**5-** अच्छी ज़िंदगी

**6-** अच्छा काम

7- अच्छा ध्यान

8- अच्छा दिमाग़

ब्राहमण मज़हब में सारी ज़ाते (दर्जे) बुद्धा ने नामंज़ूर कर दीं।उसने जो इस्तेहकाम ब्राहमण मज़हब में दर्जो को दिए गए थे उन्हें कुबूल नहीं किया।वे फौकियत नहीं देते।उसने उन लोगों को जिन्हें पारिया कहा जाता था उन्हें गले लगाया(प्यार)किया।इंसानी मखलूक मुकद्दस तखलीक नहीं मानी जाती।इसके बरअक्स,उसने दावा किया कि इंसान बहुत अधूरा है लेकिन वे अपने गुनाहों से छुटकारा पा सकते हैं कम से कम मिकदार के साथ मुतमईन होकर,हर किसी के साथ दोस्ताना बरताव रखकर,और भूखा रह कर।यह एक हकीकत है कि बुद्धों में कुछ लोग हैं जो अपनी नफ़स(एक ताकत आदमी के अपने अंदर जो उसे बुराई करने के लिए उकसाती है)को रोशन करते बहुत सख्त हालात में लंबे समय तक अपने आपको भूखा रखकर जिसके नतीजे में वे चमत्कार कर जाते हैं।इस वजह से इन लोगो में कुछ हिस इतनी उजागर हैं कि वे कुछ हैरानकुन महारते इलाही तौर पर कर जाते हैं।लेकिन इन महारतों को मज़हब के साथ या अल्लाह तआला से प्यार के साथ कोई राब्ता नहीं है।उनकी रूहें खाली हैं।क्योंकि ,बुद्ध मज़हब(अल्लाह) में ईमान नहीं है।

बर्मा,एक एशियाई मुल्क है थाएलैंड, बांगलादेश और मलेशिया की बीच में,जिसमें ग़ैर हकीकी और ग़ैर अखलाकी अबादी है।मसीही दौर से **543** साल पहले जब उस मुल्क में बुद्ध मज़हब आया।सही और रहम से भरा हुआ,जो एक आसमानी मज़हब के लाज़मी अजज़ा हैं, यह जंगली लोगों में बहुत जल्दी फैल गया।दस सदियों बाद इंडिया से आए ताजिर अपने साथ इस्लाम लेकर आए।इस्लामी इल्म और इस्लामी अखलाक भी फैला।उसके बाद अंग्रेज़ आए, कुदरती ज़राओं का इस्तेहाल करने के लिए, जो बदकिस्मती से अपनी ग़ैरमुल्की पॉलीसी के तहत उन्होने उसका वापस भुगतान किया।हर किस्म के झूठ, हथियार, जासूसी और मिशनरी तिगड़म और जबर का इस्तेमाल करके, उन्होने इस्लाम के लिए एक जानिबदार नफ़रत फरोग़ की।जब अंग्रेज़ो ने दूसरी जंगे अज़ीम के बाद मुल्क को छोड़ा, वे अपने पीछे किया छोड़ गए वे था जंगली जानवरों की भीड़ जो इस्लाम पर हमला कर रही थी।जैसा कि हमने सीखा उन खतूत से जो मज़हबी आदमियों की तरफ़ से आए जो किसी तरह से जुल्म से बचकर भाग गए थे, बर्मा की फ़ौजों ने घरों पर हमले किए, आदमियों को कत्ल किया,औरतों और लड़कियों को ले गए, हर किस्म की गंदगी की, उनकी ज़ाती अजज़ा को काट दिया, उनकी आँखे बाहर निकाल लीं,और आखिर में उन्हें मारने के लिए छोड़

दिया।हम यकीन है कि अल्लाह तआला ने शहीदों को उस दर्द से बचाया।हो जो उनके घाव और टूटी हडिडयों का सबब बने।उनकी सिर्फ़ एक ईच्छा है कि "दुनिया में वापस आएं और एक बार फिर शहादत के दौरान नाजुम ज़ाएके को चखें।"दूसरी तरफ़, बर्मा के बदमाश जिन्होने अंग्रेज़ो के मुसलमानो के खिलाफ़ पलान को अमल में लाए वे अंग्रेज़ी कोच में शामिल होंगे जबकि वे दुनिया और आखिर दोनो में इलाही अज़ाब सहेंगे।

कन्फयूशियस,एक चीनी फलसफ़ी, वह **70** साल का था जब वह मरा मसीही दौर से **479** सालों पहले।उसने अपनी किताबों के साथ शौहरत हासिल की जो उसने अखलाकी रियास्त इंतेज़ामिया पर लिखीं।उसके बाद, उसकी फलासफ़ी एक मज़हब फिरके में बदल गइ।उसकी किताबें किसी आसमानी मज़ाहिब की कोई जानकारी नहीं रखतीं।

## यहूदी मज़हब और यहूदी

मुकद्दस किताबों के मुतालअ,तारीखी सबूत,और काम जो हमारे दिनों तक मौजूद हैं ज़ाहिर करते हैं कि मज़हब जो लोगों को एक अल्लाह में यकीन रखने का हुकूम देता है यानी,इस्लाम,वो आदम (अलैहि सलाम) के वक्त से मौजूद है।आदमी के ज़मीन पर ज़ाहिर होने के बाद,अगरचे बहुत सारे पैगम्बर(अलैहिमुस्सलावतु वतसलीमात)उन्हें भेजे गए हज़रत आदम (अलैहि सलाम) और हज़रत इब्राहम (इब्राहिम अलैहिस-सलाम) के वक्त के दौरान,उन्होने कोई एक बड़ी किताब नहीं भेजी।अल्लाह तआला ने उन पर छोटे किताबचे जिन्हें "सुहुफ़" बोलते है वे भेजे।वहाँ एक सौ सुहुफ़ थे, जिन में से दस इब्राहम(इब्राहम अलैहिसलाम)के भेजे गए।तारीखदानों के मुताबिक,हज़रत इब्राहिम(अलैहिस्सलातुवसल्लम) ईसा अलैहि सलाम से **2122** सालों पहले एक शहर जो यूफ़्रेट्स और टाइग्रिस नदियों के बीच में है,उसमें पैदा हुए।जैसे कि बताया गया,वे **175** सालों तक ज़िंदा रहने के बाद एक शहर जिसे "**खलीलउररहमान**"(हेब्रोन)कहा जाता है यरूशलेम के नज़दीक वफ़ात पा गए।**La Bible a Dit vrai** (मुकद्दस बाइबल ने सच बताया)किताब के मुताबिक जिसे एक मार्स्टन नामी लेखक ने शाय किया,बहुत सारी चीज़े जो हज़रत इब्राहिम से वाबस्ता थीं हाल ही में उन जगहों पर मिलीं।इस तरह,यह हकीकत कि वे ऊपर बताए गए वक्त में रहते थे

आसानी के साथ समझा जा सकता है। उनके सौतेले बाप का नाम "**आज़र**" था। उनके अपने बाप "**तारोह**" जब वे बच्चे थे तब ही मर चुके थे। आज़र एक फनकार था जो बुत बनाता था। जब हज़रत इब्राहिम (अलैहि सलाम) बच्चे थे तब से ही, वे जानते थे कि बुतों की इबादत नहीं करनी चाहिए।

उन्होने अपने सौतेले बाप के बनाए हुए बुतों को तोड़ दिया और उनके मुल्क के हाकिम के साथ मज़हबी मामलात पर बहस करने लगे, यानी नमरूद के साथ, बाबिल (बेबीलोन) का राजा नमरूद बहुत ज़्यादा ज़ालिम और बेरहम बादशाह था। जैसे कि बताया गया,नमरूद उसका असली नाम नहीं था, यह एक लकब था[जैसे फिरौन]। जब नमरूद एक छोटा बच्चा था, एक जवान साँप उसके नथने में घुस गया और उसे बेहद बदसूरत बनाने का सबब बना। वह इतना बदसूरत दिखता था कि उसका बाप भी उसका बदसूरत चेहरा देखना पसंद नहीं करता था। नतीजे के तौर पर, उसने उसे कत्ल करने का फैसला किया। लेकिन उसकी माँ की इल्तिजा पर, उसे कत्ल नहीं किया गया। इसके बजाए उसे एक चरवाहे को दे दिया गया। चूंकि चरवाहा भी उसकी बदसूरत शक्ल देखना गवारा नहीं कर पाया,उसने उसे एक पहाड़ पर अकेले छोड़ दिया। एक मादा बाघ ने जिसका नाम नमरूद था बच्चे को चूस कर मरने से बचाया। यह नाम नमरूद बाघ से आया। उसके बाप की मौत के बाद, नमरूद उसकी जगह पर बैठा,और अपने आपको ख़ुदा समझने लगा और चाहने लगा कि लोग उसकी इबादत करें। इस जंगली,सख्त आदमी को इब्राहिम (अलैहि सलाम)के ज़रिए सच्चे मज़हब की तरफ़ बुलाया गया। वे अपने लोगों को बुतों और नमरूद की इबादत करने से रोकने की कोशिश करते थे। लेकिन उन्होने इस अमल को नहीं छोड़ा। कलडीन कौम के सारे लोग साल में एक बार एक जगह में इकट्ठा होकर त्यौहार मनाते थे। फिर,उसके बाद वे बुतों के घर जाते थे अपने आपको बुतों के आगे झुकाने के लिए। उसके बाद वे अपने घरों को वापस चले जाते। एक बार त्यौहार के वक्त,इब्राहिम (अलैहि सलाम)बुतों के घर में चले गए और सारे बुतों को कुल्हाड़ी से तोड़ दिया। फिर वे भाग गए कुल्हाड़ी को बड़े बुत के गरदन में टाँग कर। जब कलडीन के लोग बुतख़ाने में घुसे तो उन्होने देखा कि सारे बुत टुटे हुए हैं।

वे चाहते थे कि जिस आदमी ने इन्हें तोड़ा है उसे पकड़ें और उसे सज़ा दें। वे इब्राहिम (अलैहि सलाम)को लेकर आए और उनसे पूछा कि क्या उन्होने ऐसा किया है। इब्राहिम (अलैहि सलाम)ने जवाब दिया, "मुझे लगता है कि बड़ा बुत कुल्हाड़ी के साथ ने ऐसा किया है क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसके अलावा किसी और की इबादत की

जाए।लेकिन,तुम बड़े बुत से क्यों नहीं पूछ लेते?" उन्होने जवाब दिया, "तुम किस तरह चाहते हो कि हम एक बुत से बात करें जब तुम जानते हो कि एक बुत बात करने के लायक नहीं?" इस पर,उन्होने जवाब दिया, "तो तुम ऐसे बुतों को क्यों पुजते हो जो बात नहीं कर सकते या अपने आपको टुटने से बचा नहीं सकते,फिर? तुम और तुम्हारे बुतों पर शर्म हो!" तो वे चाहते थे कि इस तरह वे बुतों की इबादत छोड़ दें।लेकिन उनकी कोशिश बेकार गई।यह हकीकत **52**वीं आयत और आगे बयान की गई है।उन्होने इस वाक्ये की खबर नमरूद को दी।नमरूद इब्राहिम (अलैहि सलाम)को देखना चाहता था।जब वे नमरूद की मौजूदगी में थे तो, उन्होने उसे सज्दा नहीं किया।जब नमरूद ने उनसे पूछा कि उन्होने सज्दा क्यों नहीं किया तो, उन्होने जवाब दिया, " मैं किसी के आगे सज्दा नहीं करता सिवाए अल्लाह तआला के, जिसने मुझे तखलीक किया।" नमरूद इब्राहिम(अलैहि सलाम)के ज़रिए दिए गए सबूतों पर तर्क करने के लायक नहीं था।जब हज़रत इब्राहिम ने उससे कहा कि अल्लाह एक था, सबसे ऊपर और हमेशा रहने वाला और यह कि नमरूद कोई नहीं है सिर्फ़ एक इंसान है।नमरूद उनसे बहुत गुस्सा हुआ।अपने आदमियों के ज़रिए बढ़ावा मिलने पर,उसने हज़रत इब्राहिम को ज़िंदा जलाने के लिए आग में फैकने का हुकूम दिया।यह हकीकत कुरआन अल करीम(सूरह बकराह **258**) में लिखी हुई है ः " **क्या तुमने सुना कि उस आदमी ने, जिसे अल्लाह ने हाकमियत बख्शी,उसने रब के बारे में इब्राहिम से क्या कहा? इब्राहिम ने कहा, 'अल्लाह तआला मशरिक से सूरज लाता है, अगर तुम खुदा हो तो इसे मग़रिब से निकालो, 'इनकार करने वाला परेशान हो गया।अल्लाह तआला जुल्म के अमल करने वालों को सही रास्ता हासिल नहीं करने देता।**' सूरह अस-सफ़ात,**97** ः "**बुत परस्तो ने कहा ः 'एक इमारत लगाओ और वहाँ से इसे आग में फैंको।'लेकिन,जब उन्होने इसे बना लिया और हज़रत इब्राहिम को वहाँ से आग में फैंका तो,आग एक फूल का बाग़ बन गई।**' जैसे कि कहा जाता है,आग एक तालाब बन गई जिसमें बहुत सारी मछलियाँ थीं।मछलियाँ लकड़ी से तखलीक की गई।यह हकीकत कुरआन अल करीम(सूरह अंबिया **68-69**) में वाज़ेह हुई ः "**अगर तुम कुछ कर सकते हो तो करो, हमारे खुदाओं की तरफ़ मददगार हो" उन्होने कहा।हमने कहा ः "ए, आग! इब्राहिम की तरफ़ ठंडी और बग़ैर नुकसान वाली हो जा।उन्होने उनके लिए एक जाल बिछाना चाहा।, लेकिन वे खुद तबाह हो गए।**" नमरूद का नाम कुरआन अल करीम में नहीं है, लेकिन नमरूद नाम तोरह( "पुराने अहदनामे" बाइबल के सेकशन में) में है।आज वहाँ एक तलाब है जिसका नाम "आईन-ए-ज़लीका" या "खलीलउररहमान" है।यह उर्फा शहर में पचास से तीस मुख्वा मिटर है।यह तालाब वह जगह समझी जाती है जहाँ हज़रत इब्राहिम को आग में फैंका गया

था, और जहाँ तालाव की मछलियाँ लकड़ी से तखलीक की गई यकीन की जाती हैं। तालाव की ज़ियारत करने वाले कभी उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाते।

हज़रत इब्राहिम की दो बार शादी हई। भले ही उनकी पहली बीवी सारह (सारा) **70** साल की थीं,उनके कोई बच्चे नहीं थे। इस पर,हज़रत इब्राहिम ने एक जारिया जिसका नाम हाजरां (हागर)था जो एक तौहफ़े के तौर पर मिस्र के फिरौन के ज़रिए उनको दी गई थी। उन्हें उनसे एक बेटा हुआ जिसका नाम इस्माईल हुआ। इस पर सारह ने भी अल्लाह तआला से दुआ की एक बच्चे के लिए। अल्लाह तआला ने उन्हें एक बच्चा अता कर दिया। उसका नाम इस्हाक़ रखा गया। इस्माईल (अलैहि सलाम)और इस्हाक (अलैहि सलाम) अरबिया (हजाज़) में अरबों और इबरानियों के,बिलतरतीव अजदाद थे। यानी, अरबी और इबरानी (यहूदी) दोनो भाई थे एक ही बाप से लेकिन मुख्तलिफ़ मांओ से। इब्राहिम (अलैहि सलाम) मुहम्मद (अलैहि सलाम) के दादाओं में से हैं।

इब्राहिम (अलैहि स-सलातु वस्सलाम)**90** साल की उमर में एक नबी बने। वे तौहीद पढ़ाते थे। क़ुरआन अल करीम में अल-ए-इमरान सबक की **67**वीं आयत के तफ़सीर के मआनी हैं ः "हज़रत इब्राहिम न ही एक यहूदी हैं न ही एक ईसाई। वे "हनीफ़" हैं जिसका मतलब है एक शख्स जो सही की तरफ़ मुड़ा,और एक "मुस्लिम",यानी,एक शख्स जिसने खुद को उसके हवाले कर दिया।"

पैगम्बर जिन्होने यहूदी मज़हब की बुनियादी बातें बताई वे हज़रत मूसा हैं। मोसेस (मूसा[अलैहि सलाम]) ईसा अलैहि सलाम से **1705** सालों पहले म्रिस के शहर मेम्फिस में पैदा हुए। चुंकि उनकी जन्म की तारीख के बारे में मुख्तलिफ़ कहानियाँ हैं,तो यह साफ़ पता नहीं है कि उस वक्त म्रिस में कौन सा फिरौन राज कर रहा था। जबसे फिरौन ने सपना देखा था जिसमें उसने देखा था कि एक लड़का जो उस साल में पैदा होगा वह उसे मारेगा, तो उसने अपने आदमियों को उस साल में पैदा होने वाले सारे लड़कों को मारने का हुकूम दिया। इस वजह से मोसेस की माँ ने उन्हें एक संदूक[लकड़ी के बक्से] में रखकर दरियाए नील में छोड़ दिया,जबकि अल्लाह तआला से उनकी सलामती की दुआ मांगती रही। यह संदूक,इसमें लड़के के साथ,फिरौन की बीवी को मिल गया। लड़के को फिरौन के ज़रिए भी देखा गया। लेकिन,जब फिरौन और उसकी बीवी ने लकड़ी का संदूक दरिया में देखा तो उसकी बीवी ने एक सुझाव रखा ः "अगर इस संदूक में कोई जानदार चीज़ हुई तो

इसे मेरा होने देना, अगर माल हुआ,तो वो तुम्हारा,ठीक है?" चुंकि यह उसके ज़रिए मंज़ूर किया गया था इसलिए वह बच्चे को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा पाया।

मूसा नाम का मतलब है "पानी से बचाया गया "।ईसाई उन्हें "मोसेस" या "मोइस" पुकारते हैं।हज़रत मूसा की माँ ने फिरौन के महल में किसी तरह दूध पिलाने वाली दाई की नौकरी हासिल करी लड़के के लिए।जिसके नतीजे में, वह अपने ही बेटे की परवरिश करने के लायक हो गई।जब वे चालीस साल के हुए, तो उन्होने सुना कि उनके रिश्तेदार हैं।वे उनके साथ रहने के लिए महल को छोड़ कर चले गए।वे अपने भाई हारून (अलैहि सलाम) से मिले, जो उनसे तीन साल छोटे थे।मूसा (अलैहि सलाम) ने फिरौन का इब्रानियों के साथ ग़ैर मुंसिफ़ाना बरताव देखकर उसके खिलाफ़ बग़ावत कर दी।मूसा (अलैहि सलाम)ने उनकी हिफ़ाज़त करने की कोशिश की।एक दिन, एक मिस्री काफ़िर (बेदीन) एक यहूदी को सता रहा था।जबकि मूसा यहूदी को बचा रहे थे, तो मिस्री (कॉप्टिक)की मौत हो गई।दरहकीकत, मूसा सिर्फ़ उस जुल्म को रोकना चाह रहे थे।इस पर,उन्हें मिस्र से रवाना होना पड़ा।वे मदीना शहर चले गए।वहाँ,उन्होने दस साल शुएब (अलैहि सलाम)की खिदमत की।उन्होने उनकी बेटी सफ़ूरा(Trippore)से शादी करली।दस साल बाद,मूसा (अलैहि सलाम)मिस्र वापस आए।मिस्र के रास्ते में, वे तूर पहाड़ पर गए।वहाँ उन्होने अल्लाह तआला का कलाम सुना।उस लम्हे, उन्हें रिसालत (नबुव्वत)मिली।साथ ही,यह हकीकत कि अल्लाह तआला एक है, यह कि फिराऔन एक ख़ुदा नही है,और बहुत सारी चीज़े उन पर नाज़िल की गई।फिर वे मिस्र में फिरौन के पास गए।उन्होने उसे एक अल्लाह में यकीन रखने की दावत दी।वे बनी इज़राइल की आज़ादी चाहते थे,लेकिन फिरौन ने इंकार कर दिया।फिरौन उनके साथ शदीद गुस्सा हो गया।उसने कहा ः "मूसा बहुत बड़ा जादूगर है।वह अपनी चालबाज़ियों से हमारे मुल्क पर कब्ज़ा करना चाहता है।" फिर उसने अपने वज़ीरों से उनकी राए पूछी।उन्होने यह कहकर उसे सलह दी कि, "सामरीयों (जादूगरों) को जमा करो।उन्हें मूसा को मारने के लिए कहो।" सामरी जमा हो गए, और मिस्र के लोग इकट्ठा हो गए यह देखने के लिए कि क्या होगा।उन सामरियों ने अपने हाथों की रास्सियों को ज़मीन पर रख दिया।सारी रस्सियाँ साँपो में बदल गई और मूसा (अलैहि सलाम)की तरफ़ बढ़ना शुरू हुई।लेकिम जब हज़रत मूसा ने अपने हाथ की असा छड़ी को ज़मीन पर फेंका तो,वह एक बड़ा साँप बन गई और दूसरों को खा गया।इस पर,सामरियों ने मूसा की तारीफ़ की और यह कहते हुए उन पर यकीन किया कि ः "यह आदमी सच बता रहा है।" यह वाक्या क़ुरआन अल करीम की

सूरह अराफ़ की **111-123** वीं आयात तक में ज़िक है। इस पर,फिरौन और ज़्यादा गुस्से में आ गया। उसने कहा, "यह तुम्हारा मास्टर था, क्या नही था? मैं तुम्हारे हाथो और पैरो को कटवा दूँगा। मैं तुम्हें खजूर के पेड़ो की शाखों पर लटकवा दूँगा।" उन्होने जवाब दिया, "हम मूसा में यकीन रखते हैं। हम उसके रब की हिफ़ाज़त में जाना चाहते हैं। हम उसकी माफ़ी चाहते हैं, और सिर्फ़ उसके ज़रिए माफ़ किया जाए।" फिरौन बनी इज़राइल को मिस्र छुड़वाना नहीं चाहता था। अगर वह ऐसा करता, वे इन लोगो को गवा देते जो उनके नौकर और गुलाम थे। फिर जो पानी काफ़िर पीने के लिए इस्तेमाल करते थे वो खुन में बदल गया। मेंढक बारिश की तरह निकलने लगे। चमड़ी की बीमारियाँ और तीन दिन तक अंधेरे ने लोगों को दबोच लिया। फिरौन ये मोअजिज़ात (चमत्कार) देख कर डर गया, और उसने उन्हें चले जाने की इजाज़त दे दी। जबकि मूसा (अलैहि सलाम) और बनी इज़राइल यरूशलेम के रास्ते पर थे तो फिरौन को बहुत पछतावा हुआ। एक बड़ी फौज के साथ, वे इस नियत के साथ कि सारे यहूदियों को कत्ल कर देगा। उनके पीछे भागा। जब यहूदी रेड सी पर पहुँचे, तो उसने उन्हे चेनक के ज़रिए रास्ता पार करने दिया,जो वहाँ इलाही तौर पर बन गया था। लेकिन जबकि फिरौन (फारोह) और उसकी फौज इस चैनल में थी, यहूदियों को पकड़ने की कोशिश में तो, समुंद्र उनके ऊपर बंद हो गया और वे सब डूब गए। इस बड़ी हिजरत के दौरान ,मूसा (अलैहि सलाम) ने तूर पहाड़ पर अल्लाह तआला से गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी,और वे चाहते थे कि अल्लाह तआला उन्हें अपनी झलक दिखाए। उनकी दुआ अल्लाह तआला के ज़रिए कुबूल नहीं की गई। लेकिन, मूसा अलैहि सलाम ने उनसे "सिनाई पहाड़" पर दोबारा कलाम किया। मूसा (अलैहि सलाम) सिनाई पहाड़ पर **40** दिनों और चालीस रातों तक रहे और उन्होने रोज़े रखे। अल्लाह तआला ने फरिश्ते जिब्राइल (अलैहि स-सलाम) के ज़रिए आप पर मुकद्दस किताब तोरह भेजी,जो तखतियों पर लिखी हुई थी। पहले उनको दस हुकूम दिए गए थे उनके मानने के ज़रिए अपनाने के लिए, ये तखतियों पर लिखे हुए थे। वे दस हुकूम (**अवामिर-ए-अशर**) यहूदी किताबों में लिखे हुए हैं। ये Deuteronomy बाइबल की पाँचवी किताब के पाँचवे चेपटर की आखिरी आयत से शुरू होते हैं और एक्सोदेस की किताब के **20** वें चेप्टर के शुरू में खत्म होते हैं। ये इस तरह मंदरजाज़ेल हैं ः

**1-** मैं तेरे खुदा का मालिक हूँ ,जिसने तुम्हें मिस्र के मुल्क, गुलामी के घर से निकाल दिया।

**2-** तुम्हारे पास मुझसे पहले कोई रब नहीं था। तू ,तुझे कोई संजीदा तसावीर, या किसी चीज़ की जो ऊपर आसमान में,या जो ज़मीन में मौजूद है, या जो पानी में ज़मीन के नीचे है।

**3-** तू अपने खुदा खुदावंद का नाम बेकार में मत लेना।

**4-** इसे मुकद्दस करने के लिए सब्त का दिन रखें।छः दिन तक तुम मेहनत करो, ओर सब काम करो लेकिन सातवें दिन खुदा तेरे रब का सब्त है।इसमें तुम कोई काम नहीं करोगे।

**5-** अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करो।

**6-** तुम कत्ल नहीं करोगे।

**7-** न ही तुम ज़िना करोगे।

**8-** न ही तुम चोरी करोगे।

**9-** न ही तुम अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूठे गवाह रहोगे।

**10-** न तो अपने पड़ोसी की बीवी की इच्छा रखो, न ही अपने पड़ोसी के घर, उसके खेत पर, या उसके आदमी नौकर,या उसकी औरत नौकरानी नौकर, उसके बैल, या उसके गधे, या किसी और चीज़ पर जो तुम्हारे पड़ोसी की हो उसका लालच।

जब मूसा(अलैहि सलाम)सिनाई पहाड़ से वापस हुए ,तो उन्होने अपनी कौम को, जिन्हें वे अपने भाई हारून(अलैहि सलाम)की रहनुमाई में छोड़ कर गए थे, वे सही रास्ते से भटक गए थे और बुत परस्ती शुरू कर दी थी जो एक बछड़े की शक्ल में थी सोने की बनी हुई।मूसा(अलैहि सलाम)का आलीशान,ऊचाँ कद था गहरी आँखो के साथ।वे जिन लोगो से मिलते थे उन पर गहरा असर छोड़ते थे।लेकिन,जब वे सिर्फ़ एक साल के थे तो, उन्होने फारोह(फिरौन) को गुस्सा दिला दिया था, उसकी दाढ़ी का बाल नोचकर,जो मोतियों के साथ सजी हुई थी।वह मूसा को कत्ल करना चाहता था, लेकिन अपनी बीवी,आसिया की मदाखलत की वजह से, उसने पहले उसका इमतिहान लिया।जब मूसा के सामने एक ट्रे सोने और आग के साथ रखी गई, तो उन्होने अपना हाथ सोने की तरफ़ बढ़ावा,लेकिन जिब्राईल(अलैहि सलाम)ने उनका हाथ आग की तरफ़ घुमा दिया।जब उन्होने आग उठाकर अपने मुंह में रखी,तो उनकी ज़बान की आगे की नोक जल गई ; इसलिए, उन्होने आग को नीचे फैंक दिया। इसी वजह से,शुरू में, उनकी बोली खराब थी, और जब उनको लोगों से बात करने की ज़रूरत होती तो वे यह काम अपने भाई हारून(अलैहिस-सलाम)को सौपंते, जो खानीसे बात कर सकते थे।लेकिन,जब वे एक पैगम्बर बन गए, तो यह खराबी गायब

हो गई। उन्हें हारून (अलैहिस-सलाम)से ज़्यादा बोलने में खानी अता की गई। जबकि वे सिनाई पहाड़ पर थे, तो हारून की अच्छी तबलीग़ भी कौम को भटकने से नहीं रोक पाई मूसा (अलैहि स-सलाम) तूर पहाड़ पर वापस गए और अल्लाह तआला से गिड़गिडा कर अपनी कौम को माफ़ करने की दुआ की। उनके लोगों ने वादा किया कि वे दोबारा ऐसा नहीं करेंगे। उनकी रहनुमाई करते हुए,वे रेगिस्तान में चले गए, अरज़-ए-मेवूद (वादा की हुई ज़मीन) की तलाश में, जिसका अल्लाह तआला ने उनसे वादा किया था। वे तिह के रेगिस्तान में चालीस सालों तक रहे। वहाँ, रेगिस्तान में,अल्लाह तआला ने उन्हें **मन्ना** ([**1**] **मन्ना**ः खाना जो अल्लाह तआला ने इस्राइलियों को रेगिस्तान में उनके चालीस सालों के दौरान मुहैया कराया। )और बटेर का गोश्त (सल्वा)खिलाया। हज़रत मूसा सिर्फ इतना ही आगे जितना अरिहा शहर के बगल में नीबो नाम की एक पहाड़ी थी जहाँ से अरज़-ए-मेवूद को देखा जा सकता था। वे वहाँ इंतेकाल फरमा गए जब वे, जैसे कि बताया जाता है, **120** साल के थे। उनके भाई हारून (अलैहिस सलाम) उनसे तीन साल पहले फौत हो गए थे। 'अरिहा' शहर में घुसने पर अरज़-ए-मेवूद कही जाने वाली ज़मीन वो इनके जानशीन,पैगम्बर यूशा को मिल गई।

[अपनी किताब "किस्सास-ए-अंबिया,अज़ीम तारीखंदा और काज़ी,अहमद जवादत पाशा ने बयान ([ लोफ़जा के जवादत पाशा **1312** (**1894**) में इसतांबुल में रहलत फरमा गए।] किया," हज़रत याक़ूब (जेकब),हज़रत इसहाक (इसाक)के बेटे थे, जोकि हज़रत अब्राहम (इब्राहिम)के बेटे थे। उनका असली नाम **"इस्राइल"** था। लोग जो उनकी नसल से आए वे "बनू इस्राइल"। युसूफ़ (जोसेफ[अलैहिस सलाम]) हज़रत याक़ूब (जेकोब) के बारह बेटों में से एक थे, और वे एक पैगम्बर भी थे। हज़रत युसूफ़ के बाद, बनू इस्राइल ने याक़ूब और युसूफ़ (अलैहि स सलाम) की शारियत (मज़हब के इलाही कवानीन)की तकलीद की,और वे मिस्र में रहे। "क़िब्त" कौम जिसे कहते हैं वे मिस्र के इबतिदाई बाशिंदे थे। वे सितारो और मूर्तियों, दूसरे लफ़्ज़ो में बुतों की इबादत करते थे। वे इस्राइलियों को क़ुदरती गुलाम समझते थे। बनू इस्राइल हमेशा अपनी जगह जिसे "कनान" (केनान)कहते थे जो उनके बुर्ज़ुगो का मुल्क था। लेकिन फिरौन उनको जाने की इजाज़त नहीं देते थे। इसलिए, वे इस्राइलियों ने भारी काम करवाते थे,जैसे कि नए शहर और इमारतें बनवाना। वे हमेशा फिरौना के मज़ालिम से भागने के सपने देखते थे। मोसेस (मूसा) इमरान के बेटे एक लकड़ी के संदूक में बंद करके अपनी ही माँ के ज़रिए दरियाए नील में डाल दिए गए थे। **"आसिया"** फिरौन की बीवी ने उन्हें उठाया और उन्हें गोद ले लिया। मूसा (अलैहि

सलाम)ज़रिए हादसाती तौर पर एक किब्त का कत्ल हो गया, तो उन्हें मिस्र से "**मदीन**" की तरफ़ हिजरत करना पड़ा। वे वहाँ दस सालों तक रहे। वे मिस्र शुएब(अलैहि सलाम) की बेटी के साथ वापस लौटे। मिस्र की तरफ़ रास्ते में, वे "**तूर पहाड़**" की तरफ़ बुलाए गए। वहाँ,उन्हें अल्लाह तआला के साथ बात करने का शर्फ़ बख्शा गया। उन्हें नबुव्वत भी दी गई। उन्हें फिरौन को मज़हब में लाने की दावत देने का हुकूम दिया गया। फिरौन ने मंजूर नही किया। मूसा(अलैहि सलाम) ने सारे इस्राइलियों को इकट्ठा किया, और वे एक साथ मिस्र छोड़ गए। **रेड सी** में से गुज़रते, वे एक जगह जिसे "अरीह" कहते हैं वहाँ पहुँचे, लेकिन इस्राइलियों ने कहा, "हम वहाँ नहीं जाएँगे। हम उन लोगों के साथ जिन्हें 'अमालिका' कहते झगड़ा नहीं करना चाहते। इसी वजह से उन्हें बददुआ दी गई। मूसा(अलैहि सलाम)यहूदियों को अपने भाई, हारून(अलैहि सलाम)की कियादत में छोड़ गए। उन्होने अल्लाह तआला से दोबारा बात की। उन्हें "**तोरह**" दी गई। उनकी कौम पछताई और एक जगह डेड सी के जुनूब की तरफ़ चले गए। वे अरीहा शहर के मुखालिफ़ में मूकीम हो गए, दूसरे लफ़्ज़ों मे शारिया नदी की तरफ़। उन्होने अपनी जगह यूशा(अलैहि सलाम)को मुर्करर किया ओर फौत हो गए।

**मिरात-ए-काएनात** किताब कहती है ः "मोसेस(मूसा अलैहि सलाम])तूर पहाड़ पर तीन बार गए। पहली बार में उन्हें रिसालत(नबुव्वत) दी गई। दूसरी बार में मुकददस किताब "तौरह" (**तौरतात-ए-शरीफ**) और "दस हुकूम"(**अवामिर-ए-अशर**) उन पर नाज़िल किए गए। तौरह चालीस हिस्सों में है। हर हिस्से में एक हज़ार चेपटर हैं। वहाँ हर बाब में एक हज़ार आयात हैं। आज की तौरह में ज़्यादा आयात नहीं है। इस वजह से कि, जैसे कुरआन अल करीम फरमाता है, "तोरह" और "बाइबल"वक्त के साथ आदमी के ज़रिए बदल दी गई और गलत सबित कर दी गई।

"तौरह",जिसे फरिश्ते जिब्राईल(अलैहि सलाम)के ज़रिए मूसा(अलैहि सलाम)को पहुँचाया गया,उसे मूसा,हारून,यूशा,उज़ेर और जिसस(ईसा) (अलैहि सलाम)के ज़रिए याद कर लिया गया। **कमूस-उल-अमाल** किताब का कहना है कि ः "जब असीरिया के राजा,बुथुननसार ने यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया तो उसने मस्जिद-ए-अक्सा को गिरा दिया, उसने तौरह की सारी कॉपियाँ जला दीं। मज़ीद ये कि,उसने सत्तर हज़ार यहूदी आलिमों को,दानियाल और उज़ैर(अलैहि सलाम)समेत बंदी बना लिया और उन्हें बेबिलोनिया भेज दिया। [यह हकीकत कि उज़ैर(अलैहि सलाम यहूदियों के ज़रिए एज़रा कहा जाता थ ये एक किताब "**मुनजीद**" में लिखा हुआ है। हालांकि, एज़रा की किताब,और कुछ दूसरी

किताबों में, जो आज की मुकददस बाइबल की ओल्ड टेस्टामेंट में शामिल हैं, उसमें उज़ैर (अलैहि सलाम) नहीं हैं। एज़रा नाम का आदमी एक हिब्रु रबी था, एक मज़हबी आदमी। ]यहूदियों ने मुकददस "तौरह" को नज़रअंदाज़ कर दिया और ग़ैर अखलाकी बन जाए। उन्होने उन पैगम्बरों पर यकीन नहीं किया जो उन्हें चेतावनी देने के लिए भेजे गए। उन्होने ज़्यादातर नबियों को शहीद कर दिया। बहमन काहुसरव, ईरान के शाह ने, असीरियन, को हटाया, और सारे बंदी यहूदियों को दानियाल (अलैहि सलाम) समेत आज़ाद कर दिया। मस्जिद-ए-अक्सा में इबादत करने वालों की तादाद में इज़ाफ़ा हो गया। जब अलेक्ज़ेंडर द ग्रेट ने यरूशलेम पर कब्ज़ा किया तो, यरूशलेम के एक यहूदी आदमी जिसका नाम "हिरोदस" था उसे यरूशलेम का गर्वनर बनाया। इस नीच गर्वनर ने याहया (जान द बैपटिस्ट (अलैहि सलाम) को शहीद कर दिया। उसने बहुत हद तक लागों पर जुल्म किया। बाद में, यरूशलेम को रोमनों के ज़रिए कब्ज़ा कर लिया गया। मसीही दौर के **135** वें साल में, यहूदियों के बग़ावत करने के बाद, एड्रियन ने यरूशलेम शहर काके तबाह कर दिया और यहूदी लोगों का कत्ले आम कर दिया। वे जो कत्ले आम से बचकर भाग गए मुख्तलिफ़ जगहों पर चले गए, लेकिन ईसाई बाशिंदों के ज़रिए उन पर बहुत जुल्म और सख्ती का बरताव किया गया। जब इस्लाम मज़हब उभरा तो उन्हें अमन और आराम हासिल हुआ। यरूशलेम को रोमन बादशाहो ने बहाल किया और उसको "इलिया" (इलया) नाम दिया। अबदुलमलिक उमय्य्द के पाँचवे खलीफ़ा ने यरूशलेम को दुबारा बनवाया। सलीबी जंग के दौरान ईसाईयों के ज़रिए इस शहर को दोबारा तबाह किया गया। सलाऊद्दीन (सलाऊद्दीन -ए -अय्यूबी) ने इसे बहाल किया। उसमानिया खलीफ़ाओं ने शहर की मरम्मत कराई ओर सवांरा।"

दूसरी यहूदी मुकद्दस किताब तौरह के बाद **तल्मूड** थी। मूसा (मोसेस[अलैहि सलाम]) ने जो कोहे तूर पर अल्लाह तआला से सुना उसे हारून, यूशा और अल-या आज़ार को सिखाया। वे कलमात आगे वाले नबियों को बताए गए, आखिर में उन्हें पाक यहूदा को सिखाए गए। मसीही दौर के दूसरी सदी के दौरान, वे कलमात पाक यहूदा के ज़रिए चालीस साल के अरसे में एक किताब में लिखे गए। इस किताब का नाम था मिशना। मसीही दौर की तीसरी और छठी सदियों के दौरान, **मिशना** के लिए दो तशरीहात बिलतरतीब यरूशलेम और बेबीलोन में लिखी गई। इन तशरीहात को **गमारा** का नाम दिया गया था। दोनो गमारा किताबों में से हर एक को **मिशना** के साथ एक सिंगल किताब में रखा गया और "**तल्मूड**" नाम दिया गया। तल्मूड यरूशलेम में लिखी गई गमारा और मिशना के साथ **यरूशलेम की**

**तल्मूड** कहलाई। दूसरी तल्मूड बेबीलोन में लिखी गई गमारा और मिशना के साथ **बेबीलोन की तल्मूड** कहलाई।ईसाई इन तिनो किताबों के दुश्मन हैं।ईसाईयों का मानना है कि उन मुर्दो में से एक जो मिशन की तालीमात की तबलीग़ करते थे वे शमून थे जो सलीब लेकर चलते थे जिससे जिसस क्रूस पर चढ़ाया गया।तलमूड में कुछ खुतबे जो इंसानियत के लिए नुकसानदायक हैं वे हमारी तुर्की किताब "**jevab vermadi**" के आखिर में लिखा है, जिसे अंग्रेज़ी में तर्जुमा किया गया और "**could not answer**" के उनवान के साथ शाय किया गया।यह हकीकत कि ऊपर ज़िक किया गया नाम "अल-या आज़ार" शुएब (अलैहि सलाम)के बेटे थे, ये मिरात-ए-काएनात किताब में लिखा है।ईसाईयों की नाम निहाद "मुकददस बाइबल" दो हिस्सों पर मुश्तमिल है ः "द ऑल्ड टेस्टामेंट" और "द न्यू टेस्टामेंट"।सिर्फ़ द ऑल्ड टेस्टामेंट को ही यहूदी मुकददस बाइबल समझते हैं और मानते हैं।उनको इस हिस्से को ऑल्ड टेस्टामेंट पुकारा जाना पसंद नहीं है।वे चाहते थे इसे "तौरह" बुलाया जाए।

वे कहते हैं कि "तौरह" तीन हिस्सों में है।पहला हिस्सा "तौरत" कहलाया जाता है।तौरत पाँच हिस्सों पर मुश्तमिल है ः

1. नसल (genesis)

2. हिजरत

3. कानून और रसूम की तफ़सील

4. अदाद

5. डयूटरोनोमी

मजमूई तौर पर इन पाँच किताबो को पेंतेचुच/मूसा की बनाई पाँच किताबें कहा जाता है।कुरआन अल करीम के इस्रा सबक के दूसरी आयत में ये वाज़ेह है ः "हमने मोसेस को किताब दी।" लेकिन पिछले कुछ सालों में आज की तौरह में बाहर की तहरीरें बहुत दाखिल कर दी गई हैं। ("कुरआन अल करीम और इंज़िले" उनवान की किताब के इस हिस्से को मजीद जानकारी के लिए देखिए।) इसलिए आज की तौरह में और जो असली तौरह मोसेस (अलैहि सलाम)पर नाज़िल की गई उसके बीच में कोई राब्ता नहीं है।

यह हकीकत कि अल्लाह तआला आखिरी नबी मुहम्मद (अलैहिससलवात वतस्लीमात) जिनका नाम हैं भेजेगा यह असली तौरह में लिखा था। जब हज़रत मूसा तूर पहाड़ पर दूसरी बार गए अपनी भटकी हुई कौम की माफ़ी के लिए तो,अल्लाह तआला ने उनसे क्या कहा ये कुरआन अल करीम के अल-अराफ़ सबक की **155-157** की आयात में लिखा है ः "**मूसा-ए मेरे रब! अगर यह तेरी मरज़ी थी,तो तू तबाह कर सकता था, बहुत पहले,उन दोनो और मुझे ः तू हमारे बीच के बेवकूफ़ों के कामों के लिए हमें तबाह कर देगा?यह तेरी अज़माईश से ज़्यादा नहीं है ः इसकी तरफ़ से जिसे तू गुमराह करना चाहता है, और जिसे तू सीधे रास्ते पर ले जाता है, तू उसकी रहनुमाई करता है। तू हमारा मुहाफ़िज़ हैः इसलिए हमें माफ़ करदे और हमें अपनी रहमत अता फरमा ; क्योंकि तू माफ़ करने वालों में सबसे अज़ीम है। और हमारे लिए हुकूम दे कि इस ज़िंदगी में और आखिरत में हमारे लिए क्या बेहतर है ः क्योंकि हम बदल चुके हैं तेरे लिए**"! अल्लाह तआला ने उनसे कहा ः " **मैं अपना अज़ाब तो उसी पर वाकेअ करता हूँ ,जिस पर चाहता हूँ। और मेरी रहमत तमाम चीज़ों पर मुहीत हो रही है। तो वह रहमत उन लोगों के नाम ज़रूर ही लिखूगाँ, जो बुराई से परे रहते हैं, ज़कात देते हैं** ( इसका इस्लाम में तकनीकी लफ़ज़ "ज़कात" है, जो साल में एक बार अदा किया जाता है, और यह एक शख्स की मिलकियत की एक-चालीसवां हिस्सा होता है। ), **और हमारी अलामात में यकीन रखते हैं,और जो लोग ऐसे रसूल-नबी उम्मी में यकीन रखते हैं-जिन्हें वे लोग अपने पास तौरते और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं।** और जिनकी सिफ़त यह भी है कि वे उनको नेक बातों का हुकूम फरमाते हैं और बुरी बातों से ममनुअ फरमाते हैं। ओर अच्छी चीज़ों (और पाक) को उनके लिए हलाल बतलाते हैं और गंदी **चीज़ों (और नापाक)को उन पर हराम फरमाते हैं। और उन लोगो पर जो बोझ और तौक थे,उनको दूर करते हैं। सो जो लोग उन नबी मोसूफ़ पर ईमान लगाते हैं, और उनकी हिमायत करते है,और उनकी मदद करते हैं, और उनके नूर का इतबअ करते हैं-जो उनके साथ भेजा गया है-ऐसे लोग पूरी तरह फलाह पाने वाले हैं।"**

इसमें कोई शक नहीं है कि यहूदी आखिरी पैगेम्बर में यकीन रखते हैं और उनके ज़ाहिर होने के लिए इंतेज़ार किया। मज़ीद ये कि,कुछ तशरीहात में यह कहा गया है कि जंग के दौरान,यहूदी यह कहते हुए, दुआ करते थे ः "ए, मेरे रब! अपने आखिरी नबी (अलैहिस्सलावातो वतसलीमात)की रज़ा के लिए जिसको भेजने का तूने वादा किया है, बराए मेहरबानी, हमारी मदद कर।" और उन्हे उन जंगो में जीत हासिल होती थी।

हज़रत दाउद और हज़रत सुलेमान, जो नबियों (अलैहिस्सलवातो वतसलीमात)के दरमियान थे हज़रत मूसा के बाद इब्रियों की तरफ़ भेजे गए ,उन्होने सच्चा मज़हब फैलाने के लिए अपना सबसे अपना सबसे अच्छा किया।हम मंदरजाज़ेल तौर पर यहूदी मज़हब के अहम नुकते मुख्तसिर तौर पर वाज़ेह करते हैं ः

**ईमान** ः वहाँ सिर्फ़ एक खुदा है।वह खुद वजूद है,वही है,उसका वजूद खुद से है।वह सबकुछ देखता और जानता है।वह पैदा नहीं हुआ और न ही वह बच्चे रखता है।माफ़ी और सज़ा उसकी ताकत के अंदर हैं।

**अखलाक** ः उनके अखलाकियत की बुनियाद दस हुकूम हैं।यानी, **अवामिर-ए-अशरा**।लोग अपने आपको बिल्कुल इन दस अहकाम में अपना लेते हैं।इंसानी मखलूक की रूह और जिस्म एक दूसरे से मुखतलिफ़ होते हैं।रूह योमुलश्हर तक नहीं मरेगी।यह ज़रूरी है कि दुसरी की रूहानी ज़िंदगी में यकीन किया जाए।

**मज़हबी बुनियादी** ः गैर यहूदी बुत परस्त समझे जाते थे।यह ज़रूरी है उनसे परे रहा जाए।जहाँ तक मुमकिन हो, यह ज़रूरी है कि उनसे राब्ता तोड़ लिया जाए।यह ज़रूरी कि खुन या बग़ैर खुन के कुरबानी की जाए।[यहूदी हर जानवर को कुरबान करने के आदी थे, कबूतरों को भी मिलाकर,लेकिन ज़्यादातर भेड़,बकरियाँ,और मवेशी।उस वक्त में, बन्स जौ बगैर नमक के आटे के बनते थे और सपाट बैड जिसे "बिना खमीर वाली रोटी" कहते थे।वे भी कुरबानी वाली समझी जाती थी।यह " बगैर खुन के कुरबानी" के दर्जाबंदी करके उन्हें पहुँचाई जाती थी।]वे ताल के कानून[बदले]के मुताबिक सज़ा दिए जाते।एक आदमी जो एक बुराई का अमल करता था।उसे उसी तरीके से, उसी चीज़ को करना पड़ता।लड़को की रबी[एक यहूदी मज़हबी आदमी]के ज़रिए खतना की जाती।जानवर जो खाए जाते उन्हें ज़िबाह करना ज़रूरी था।एक जानवर का गोश्त जो और तरीके से मारा गया हो खाया नहीं जाता था।[यहाँ तक की आज भी,अमेरिका और यूरोप में,यहूदी कसाई दुकानों में लेबल पर मुहर लगी हुई होती है "कोषेर", जिससे निशानदही होती है कि जानवरों का गोश्त जो उन दुकानों में बिक रहा है वह एक रबी के ज़रिए बताए गए खास तरीके के ज़रिए जिबाह किया गया है।यहूदी इस तरीके से तैयार किए गए गोश्त को ही खाते हैं।मुसलमान जानवरो का गोश्त सिर्फ़ वही खाते हैं जो अल्लाह तआला का नाम दोहराते हुए ज़िबाह किए जाते हैं।मुसलमान कभी भी खिंज़िर नहीं खाते।]यहूदी औरतों को अपनी शादी हो जाने के बाद

अपने सिरो को ढंकना होता है। आज, यूरोप में यहूदी औरतें ये फर्ज़ एक विग पहनकर पूरा करती हैं। यहूदियों के लिए भी खिंज़िर खाना ममनुअ है।

यहूदियों के मुखतलिफ़ इबादत के अमाल के लिए मुखतलिफ़ समारोह हैं। हफ़ता उनका पाक दिन है। वे इस दिन कोई काम नहीं करते या यहाँ तक कि आग भी नहीं जलाते। हफता उनके लिए दावत के दिन(पाक दिन)हैं, और वे जश्न मनाते हैं। वे इसे "सैवथ" कहते हैं। इसके अलावा उनके और भी पाक दिन हैं, जिनके नाम फसह,शव्वत,रोश-ह-शान,किपुर, सुकोट,प्यूरम,हनुका,इसी तरह और भी। फसह वे अपने मिस्र से जाने की सालगिरह के तौर पर मनाते हैं। शव्वत गुलाबों की दावत कहा जाता है, जो तौरह और अवामिर-ए-अशरह(दस हुकूम)के नज़ूल का जशन मनाया जाता है किपुर बड़ा रोज़े का दिन माना जाता है,जो उनके पछतावे के बाद माफ़ी दिए जाने का दिन माना जाता है। सुकोट टेबनेंकल की दावत है,जो रेगिस्तान में ज़िंदगी का यादगार माना जाता है।

एक पादरी के बरअक्स, एक रबी को इकबालिया बयान सुनने का इख़तियार नहीं होता। वे सिर्फ़ रसमी तकरीबात करा सकते हैं। अल्लाह तआला की निगाह में सारे यहूदी बराबर हैं,एक दूसरे के बीच कोई फर्क नहीं है।

हज़रत मूसा के बाद, उनकी मज़हबी तकरीबात और रबी के ज़रिए उनको करने के तरीके बढ़ाए गए ,तबदील हुए या फिर मुख्तलिफ़ नबियों(अलैहिमुस्सलवातो वतसलीमात)के ज़रिए नए उसूल उसमें इज़ाफ़ा किए गए। हज़रत दाऊद के बाद ज़बूर की पाक किताब को मौसिकी के साज़ों को मिलाकर इबादत में इज़ाफ़ा किया गया।

दाऊद(अलैहिस सलाम)ईसा अलैहि सलाम से एक हज़ार साल पैदा हुए थे। अगरचे हज़रत दाऊद की हाकमियत का दौर,कुछ यूरोपीय तारीखदानों के ज़रिए **1015-975** बी.सी कहा जाता है,लेकिन यह पक्के तौर पर पता नहीं है। हज़रत पहले एक चरवाहे थे। चुंकि उनकी आवाज़ बहुत लुभावनी थी,तो उन्हें तालुत बैनुल अकवामी सतह पर, तालुत के बजाए शाऊल नाम इस्तेमाल किया जाता है। )रियास्त के सरबराह के पास ले गए। इसके बाद,वे उसके ज़ितरा बजाने वाले बन गए। पहले,वे अच्छे दोस्त बने और तालुत ने उन्हें अपने ख़ुद के नज़दीक कर लिया। लेकिन,हज़रत दाऊद अलैहि सलाम दिन पर दिन बहुत ज़्यादा मश्हूर होते गए। तीस साल की उम्र में उन्होने गोलिअथ, एक बहुत बड़े आदमी को, अपनी गुलेल से पत्थर मार कर, कत्ल किया था,इस पर,लोगों ने उन्हें और ज़्यादा पसंद

किया था।हालांकि,तालुत को खतरा हुआ और दाऊद अलैहि सलाम को उसने अपने से अलग कर दिया।वहरहाल,तालुत के गुज़रने के वाद,अवाम की मांग पर दाऊद अलैहि सलाम को उसका जानशीन वनाया गया।यह वे थे,जिन्होने,पहली वार, यरूशलेम को एक राजधानी शहर होने का हुकूम दिया।दाऊद अलैहि सलाम की हाकमियत चालीस सालो तक रही।यह हकीकत कि उन्हें पाक किताव प्सालम(**ज़वूर**) हासिल हुई यह कुरआन अल करीम की निसा सवक की **163**वीं आयत और इसरा सवक की **55**वीं आयत में लिखा हुआ है।यह यकीनी है कि दाऊद अलैहि सलाम ने अल्लाह तआला से गिड़गिड़ाकर रहम और माफ़ी की दुआ मांगी।आज की ज़वूर में, पाक वाइवल में,वहाँ कुछ झूठी इंजील हैं जिन्हें एक वेशरम किस्म ने इज़ाफा किया था।इन इज़ाफ़ात की वजह से, इसने अपनी असलियत पूरे तौर पर खो दी।अल्लाह तआला ने दाउद अलैहि सलाम को वहुत अज़ीम काम सौंपे।चैप्टर सव की **10**वीं आयत का मआनी है ः " **हमने खुद से दाऊद पर पहले ही से हर फज़ल अता किया।ए तुम पहाड़ों! तुम उसके साथ अल्लाह की हमद सुनाओ! और परिंदो तुम(भी)!और हमने लोहा उनके लिए नरम कर दिया।**" चैप्टर सॉद की **17**वीं से **19**वीं आयात के मआनी हैं ः "**ऐ मुहम्मद! हमारे बंदे दाऊद को याद करो।क्योंकि वे हमेशा अल्लाह की सजूअ करता है।यह हम थे जिसने पहाड़ों को सुबह और शाम उनके साथ हमद करने में लगाया,और परिंदो को भी; वे सब उसके तावे थे।**" और चैप्टर साद की **25**वीं आयत का मतलव हैं ः "**हमारी नज़र में दाऊद का एक ऊँचा मकाम है और एक अच्छा मुस्तकविल है** ।" आज की तौरते और वाइविल में लिखी गई गंदी कहानी से वयान है ः "गुलाम और उसके हाकिम युरिया की वीवी जिसका नाम वाथशीवा([1] **2** सैम ः **11**)है उनके दरमियान मुहिम जोई सही नहीं है।हज़रत अली(रज़ी अल्लाहु अन्ह)चौथे खलीफ़ा ने ऐलान किया कि जो इस झूठी कहानी को सुनाएगा वे उन्हें एक छड़ी के ज़रिए **160** वार मारेंगे।चैपटर साद की **26**वीं आयत की तफ़सीर जो **मवकीव** किताव में लिखी हैः "उरिया ने एक लड़की जिसका नाम रेशमा था उसे संदेश भेजा कि वह उससे शादी करना चाहता था।अगरचे उस लड़की ने मंजूर कर लिया,लेकिन उसके रिश्तेदारों ने मंजूर नहीं किया।उनहोने उरिया के लिए उस लड़की से वुरी वातें वोली।इस दौरान दाऊद अलैहि सलाम भी रेशमा से शादी करना चाहते थे।उरिया के एक जंग में मर जाने के वाद, उस लड़की ने दाऊद अलैहि सलाम से शादी कर ली।अगरचे,अल्लाह तआला को यह वात पसंद नहीं आई क्योंकि वह एक मंगेतर लड़की थी।दाऊद अलैहि सलाम को इस वात का एहसास हुआ,कि उनसे गलती हो गई, उन्होने तौवा की और अल्लाह तआला ने उन्हें माफ़ कर दिया।" कुरआन अल करीम में इस मामले पर कोई साफ़ जानकारी नहीं है।इसके वावजूद,यह ज़ाहिर है कि हज़रत

दाऊद अल्लाह से हमेशा डरते थे; उन्हे साईंस का इल्म दिया गया और गलत में से सही के फर्क को पहचानने की कावलियत दी गई। साद के चैप्टर के **24**वीं आयत में, यह वाज़ेह किया गया है कि वे हमेशा अपने आपको अल्लाह के सामने सज्दे में गिड़गिड़ाकर दुआ मांगते थे कि एक भेड़ के मामले में उन्हें इंसाफ़ का फैसला कराए ; वे हमेशा अल्लाह तआला से माफ़ी मांगते थे, और वे बहुत इवादत करते थे। सारे इस्लामी आलिमों ने एक राए से रज़ामंदी दी इस हकीकत के साथ कि उरिया की दास्तान तौरत और वाइवल में वाद में जोड़ी गई। हालांकि इन खोज की गई कहानियों जिन्हें "इज़राइलियत" कहते हैं, कुछ लाइल्म मुसलमानों को नुकसान पहुँचाया,इस्लामी आलिमों ने ऐलान किया कि ये दास्ताने थीं।

सुलेमान[(सुलेमान अलैहि सलाम(सोलोमन)। उनकी हाकमियत का दौर **965-926** वी.सी तक माना जाता है।)[अलैहि सलाम] दाऊद (अलैहि सलाम)के वेटे ने अपने वालिद के जानशीन बने और इस्राइलियों के हाकिम और पैगम्बर वने। वे जिन्नों,जंगली जानवरों और परिंदो से बात करते थे। सुलेमान(अलैहि सलाम)का दौर इस्राइलियों के लिए सबसे अच्छा दौर था। सुलेमान(अलैहि सलाम)के दौर तक यहूदी हाकिमों को एक महल क्या होता है पता ही नहीं था। तालुत का घर,जिसका ज़िक ऊपर किया गया है, वह एक आम किसान के घर से ज़्यादा मुखतलिफ़ नहीं था। यह वे थे,जिन्होने पहली वार यरूशलेम शहर को कायम किया और वहाँ एक महल कायम किया। उन्होने बहुत सारी इमारतें,महल,बाग़ात,तालाव,जानवरो को ज़िवह करने की जगह और इवादत की जगह बनाई। उनकी सबसे शानदार मंदिर,यरूशलेम में बनाई,उसका नाम था मस्जिद-ए-अक्सा(वेतुल-ए-मुकद्दस/मुकद्दसघर)। उन्होने फिनिशियन आर्किटेक्ट इस मस्जिद को बनाने के लिए बुलाया। और मखलूक जिन्हें "जिन्न" कहा जाता है इस तामीर के काम में लगे। जो तामीर के लिए सामान इस इमारत में लगाया गया वे बहुत कीमती था। जब इसे दूर से देखा जाता तो यह ऐसा दिखता जैसे कि यह चमकदार सोने का टुकड़ा हो, और लोग जो इसे देखते तो नाकाबिले यकीन हो जाते। तामीर सात सालों तक चलती रही। बदकिस्मती से, यह खुवसूरत मस्जिद,असिरियन के दूसरे हाकिम,वुहतनसार ने, जव यरूशलेम पर कब्ज़ा किया तो उसके ज़रिए जला दी गई। अगरचे keyhusrav ने इसकी मरम्मत करादी, इसके वाद रोमनें ने इसे दोवारा जला दिया। ये **कामूस-उल अलाम** किताव में बयान है ः "उस तवाही के वाद, यरूशलेम में मरम्मतें, इमारत और तरमीहात यहूदियों के ज़रिए नहीं की गई। वाद में,वीजान्टिन राजाओं मस्जिद-ए-अक्सा की मरम्मत कराई ओर उन्होने यरूशलेम का नाम "इलिया" रखा। हमारे पैगम्वर मुहम्मद(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म) ने मस्जिद-ए-अकसा

में नमाज़ अदा की। यरूशलेम के शहर को हिजरत के **16**वें साल में, हज़रत उमर (रज़ि अल्लाहु अन्ह) के वक्त के दौरान मुसलमानो के ज़रिए फतह किया गया। मौजूदा मस्जिद अबदुलमलीक (रहिमा-हुल्लाहु) के वक्त के दौरान बनाई गई।" भकिया बुनियादी दीवारों को यहूदियों के ज़रिए "रोती हुई दिवारें" कहा जाता है, और वे इन दीवारों के सामने इबादत करते हैं।

दुनिया की सबसे अच्छी और सबसे मालदार शहर सुलेमान (अलैहि सलाम)के दौर के दौरान यरूशलेम था। बेशुमार कहानियाँ लोगों के बीच में बताई जाती थीं सुलेमान (अलैहि सलाम)के ज़रिए यरूशलेम में बनाए गए महलों,और उनके कमरों के बारे में और उनमें कीमती असबाब की। यह कहा जा सकता है कि,अब तक किसी हाकिम ने,इस तरह की शानदार ज़िंदगी नहीं गुज़ारी जितनी सुलेमान (अलैहि सलाम) ने। सुलेमान (अलैहि सलाम)की बेशुमार बिवियाँ और जारिया (औरत गुलाम)थीं। चूंकि वे तिजारत को बहुत ज़्यादा अहमियत देते थे, वे हर वक्त अमीर होते गए। वे अपने महलों को नई कीमती और खुबसूरत चीज़ों से सजाते थे और अनमोल घोड़ों परिंदो और दूसरे जानवरों की एक अनकही तादाद को खिलाया। हर सुबह,तीस गाय,एक सौ भेड़ें,दर्जनों हिरन और बारहसिघें उनके महल में ज़िबह किए जाते। सुलेमान (अलैहि सलाम) हमेशा अमन रखते थे और अपने पड़ोसियों के साथ दोस्ती और अच्छे रिश्ते बनाए रखने की कोशिश करते थे। उन्होने फिरौन की बेटी से शादी की जो उनका पड़ोसी था, मज़ीद यह कि,उन्होने शबा की रानी बिलकीस को सच्चे मज़हब की तरफ़ आने की दावत दी। उन्होने उसके साथ दोस्ती बढ़ाई, और इस्लामी तारीखदानों के मुताबिक, उन्होने उसके साथ भी शादी करली। यह हकीकत कि बिलकीस को सुलेमान (अलैहि सलाम) के ज़रिए सच्चे मज़हब की तरफ़ बुलाया गया ये कुरआन अल करीम के चैप्टर नामी के **29-32** आयात में लिखा है।

सुलैमान (अलैहि सलाम)एक बहुत ही इंसाफ़ पसंद हाकिम थे, दूसरे सारे पैगम्बर (अलैहिमुससलावातों वतसलीमात)की तरह। "सोलोमन का इंसाफ़" पुरी दुनिया में इंसाफ़ की मिसाल की तरह लिया जाता है,और इसी तरह उमर (रज़ि अल्लाहु अन्ह)का। सुलेमान (अलैहिस सलाम) दूसरे ईमान भी सहन कर लेते थे। कट्टर यहूदियों के ज़रिए मुखालफ़त के बावजूद,उन्होने और दूसरे मज़ाहिब के लिए भी मंदिर कायम किए। इसलिए ,उन्हे सारी दुनिया में एहतराम और इज़्ज़त दी जाती है और एक अच्छी मिसाल बन गए हैं। उन्होने अपने वालिद दाऊद (अलैहि सलाम)की शरीअत (मज़हबी कानून) को चलाया।

सुलेमान (अलैहि सलाम)के बारे में कुरआन अल करीम में लिखा हुआ है।चैप्टर सबा की 12वीं आयत का मआनी है : "**सुलेमान को हमने हवा, एक महीने का सफ़र सुबह और शाम वश में दे दिया।हमने पिघला हुआ उनके लिए तांबे का चश्मा बहा दिया।और वहाँ जिन्न हैं जो उसके सामने काम करते हैं, उसके रब की मरज़ी से।और अगर उनमें से कोई एक भी हमारे हुकूम से पर हटे,तो हम उसे धधकती हुई आग का मज़ा सज़ा के तौर पर चखाते हैं।**और चैप्टर सॉद की 30-39 वीं आयात के मआनी हैं : "**हमने दाऊद को सुलेमान बेटे के तौर पर दिया।वह एक अच्छा गुलाम था।चुनांचे वो किस्सा उनका याद करने के काबिल है।जबकि शाम के वक्त उनके सामने असील और उमदा घोड़े पेश** किए गए।सुलेमान ने कहा : "के अफसोस मैं इस माल की **मुहब्बत में लगकर अपने रब की याद से गाफिल हो गया। यहाँ तक कि आफ़ताब परद-ए-मग़रिब में छुप गया"।उनको बहुत अफ़सोस हुआ।फिर हशम व-खदम को खदम को हुकूम दिया कि इन घोड़ो को ज़रा फिर तो मेरे सामने लाओ।"**उन्होने कहा,**फिर उन्होने उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर तलवार से हाथ साफ़ करना शुरू कर दिया।**[उन्होने उनका गोश्त गरीबो में बांट दिया।]**फिर उन्होने खुदा की तरफ़ रूजूअ किया।उन्होने कहा : "ए मेरे रब! मुझे माफ़ करदे।और मुझे ऐसी सलतनत अता कर कि मेरे सिवा मेरे ज़माने में किसी को मयस्सर न हो।**

**आप बड़े देने वाले हैं(बग़ैर नापे)।सो हमने उनकी दुआ कुबूल की और हमने हवा को उनके ताबे कर दिया कि वह उनके हुकूम से जहाँ वह जाना चाहते नरमी से चलती; और जिन्नात को भी उनका ताबे कर दिया,यानी तामीर बनाने वालो को भी,और ग़ौताखोरो को भी,और दुसरे जिन्नात को भी जो ज़ंज़ीरो में जकड़े रहते थे।ये हमारा अतिया है।सो चाहे किसी को दो या न दो।तुम से कुछ हिसाब नहीं होगा।और उनके लिए हमारे यहाँ खास कुरब और नेक अंजाम है।**"यहूदी और ईसाई इशाअत के मुताबिक, उनके हाथों में मुकद्दस बाइबल के तीन हिस्से सोलोमन (अलैहि सलाम)की किताब से हवाला दिए गए हैं। "कहावतें", "ऐकलेसिस्टास", और "सोलोमन के गाने"।तोरह में कहा गया है कि हवा, परिंदे और दूसरे जानवर सोलोमन (अलैहिस सलाम)के काबू में थे।वे उनकी ज़बान बोल सकते थे।परिंदे और दूसरे जानवर जो उन्हें हुकूम दिया जाता वे उस पर फौरन अमल करते थे।मुख्तलिफ़ तामीरात बहुत कम अरसे में मुकम्मल हो जाती थीं रूहों की मदद से जो उनके काबू में थीं।

सुलेमान (अलैहि सलाम)के ज़माने में लोगों को दाऊद (अलैहि सलाम)के दौर से ज़्यादा शहरी हुकूक दिए गए।नए कानून के मुताबिक एक बाप के अपने बच्चों के ऊपर

बेशुमार हुकूक थे। एक बच्चा,चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, उसे अपने बाप के हुकूम पूरे करने होंगे। बड़े बच्चे का विरास्त में हिस्सा डबल था। मंगनी या शादियों के मामलात के मुतअल्लिक फैमिली के अहम लोगो को इखतियार दिया गया। उम्मीदवार को उसे कुबूल करना होता था जो उसके लिए चुना गया होता। एक तलाक शुदा औरत को कुछ पैसा जिसे "महर" कहा जाता था अदा करना होता था। एक बेवा बच्चों या बग़ैर बच्चो के साथ वाली को अपने देवर/जेठ से शादी करनी होती थी। इस शादी के बाद का पहला बच्चा मरे हुए शौहर का समझा जाता; इसलिए, बच्चे को मरे हुए शौहर का जाईज़ वारिस माना जाता। एक आदमी को एक औरत से ज़्यादा शादी करने की इजाज़त दी गई।

सुलेमान (अलैहि सलाम)के गुज़रने के बाद, इस्राएली बारह कबिलों में बंट गए,जो एक दूसरे के खिलाफ़ झगड़ने लगे। यह तकसीम सुलेमान (अलैहि सलाम)की मौत से पहले शुरू हो गई थी। लेकिन अल्लाह तआला की मदद से, सुलेमान (अलैहि सलाम)उन्हें इकट्ठा रखने में कामयाब हो पाए। रहूबियाम,सुलेमान (अलैहि सलाम)का बेटा उनका जानशीन बना। लेकिन, सिर्फ़ बारह में से दो कबिलो ने उनकी तकलीद की। इस्राइल की रियास्त दो हिस्सों में बंट गई। उनमें से एक का नाम **इज़राइल** पड़ा और दस कबीले उसमें मुकीम हो गए। बाकी के दो कबीलें ने "यहूदा" रियास्त कायम की। इस रियास्त ने यरूशलेम पर सदारत की। आखिर में, उन्होने अपनी अख़लाकियत खो दी। अल्लाह तआला उनसे नाराज़ हुआ और उन्हें सज़ा दी। वे थोड़े समय के लिए असीरियन रियास्त के कब्ज़े में रहे। बुहतननसार (नेबुकदनेसार ), असीरियन रियास्त के हाकिम ने **587** बी.सी. में यरूशलेम शहर को तबाह कर दिया और जला दिया। ताकत के ज़रिए ,उसने उन्हें यरूशलेम से बेबिलोनिया भगा दिया। लेकिन केहसरव (साइरस)ईरान के शाह के असीरियन को हटाने के बाद, उसने इस्राएलियों को यरूशलेम में आने की इजाज़त दे दी। उन्होने यरूशलेम के जले हुए शहर की मरम्मत करने की कोशिश की। पहले वे ईरान की हाकमियत में रहते थे और फिर मेसेडोनिया की। रोमन **64** बी.सी. में यरूशलेम में दाखिल हुए। उन्होने शहर को दोबारा तबाह और जला दिया। रोमनो एक बार फिर **70** ए.डी में यरूशलेम को तबाह कर दिया। यह टाइरस,रोमन बादशाह था, जिसने यरूशलेम को ज़मीन पर जला दिया।

जबकि इस्राएली रोमनो के कब्ज़े में थे,कि ईसा (अलैहि सलाम)का जन्म हुआ। उन तबाहियों के दिनो में असली तौरह की कॉपियाँ तबाह करदी गई। कुछ नई किताबे लिखी गई और उन्हें तौरह नाम दिया गया। बहुत सारे बाहरी पैराग्राफ़ और यहाँ तक की दास्तानें उसमें जोड़ी गई। इस बजह से अल्लाह तआला ने ईसा (अलैहि सलाम)एक पैगम्बर के तौर पर

भेजा इज़राएलियों को (और दूसरी इंसानी मखलूक को) वापस सही रास्ते पर लाने के लिए। इस्राएली ईसा (अलैहि सलाम)को एक पैगम्बर के तौर पर कुवूल नहीं करना चाहते थे। वे बिल्कुल ऐसे पैगम्बर का इंतेज़ार कर रहे थे जैसा तौरह में वाज़ेह किया गया था। वे सोचते थे कि पैगम्बर बहुत ज़्यादा ताकतवर,बहुत बहादुर और यह कि वह कामयाबी के साथ वे सब कर सकता है जो वे चाहता है, और यह कि वे उस पैगम्बर की मदद से रोमनों के हाथों से अपने को बचा पाएंगे। जब उन्होने देखा कि ईसा (अलैहि सलाम)बहुत नरम दिल हैं,उन्हें वे पसंद नहीं आए। उन्होने सोचा कि यह एक झूठे पैगम्बर हैं। उन्होने उनकी माँ हज़रत मरयम (द वरजन मैरी)पर तोहमत लगाई। आज **15** मिलियन लोग यहूदी के तौर पर जाने जाते हैं। उनमें से कोई एक भी सही तौरते (तोरह)की तकलीद नहीं करता। "साल की **ब्रिटानिका**" ,बेनुलअकावामी डाएरी के मुताबिक, यह काबिले एतराज़ है कि क्या वे सब एक मज़हब में यकीन रखते हैं चुंकि वहाँ पर यहूदियों के बहुत सारे फिरके हैं।

## ईसाइय्यत मज़हब

ईसा (जिज़स) [अलैहि सलाम]इस्राएलियों के मज़हब को ठीक करने के लिए भेजे गए थे। इसका मतलब है कि, सही ईसाइय्यत ही इस्राएलियों का सुधरा हुआ मज़हब है। ईसा (अलैहि सलाम)ने मेथ्यू की किताब के पाँचवे चैप्टर की सत्रहवीं आयत में कहा है, "ऐसा मत सोचो कि मैं कानून को, या पैगम्बरों को तबाह करने आया हूँ। मैं तबाह करने नहीं,बल्कि पूरा करने आया हूँ। " यह ग़ैर ज़रूरी है कि "कुरआन अल करीम और बाइबल" के सैक्शन में दी गई एक जैसी वज़ाहात को दोहराया जाए, बल्कि हम अपने प्यारे पढ़ने वालों से नरम गुज़ारिश करेंगे कि वे उस सेक्शन का हवाला दें। असली बाइबल जिसमें शुरूआती ईसाय्यत के मुकद्दस लिखा हुआ था जिसे हज़रत ईसा (अलैहि सलाम)ने पहुँचाया था वे कई बार तबदील कर दी गई और बहुत ज़्यादा अजनबी चीज़े और दास्ताने उसमें इज़ाफ़ा कर दी गई। इन खोजी हुई दास्तानों के नतीजे मे जो अल्लाह तआला के कलाम और हुकूम के साथ मिलजुल गई, बाइबल ने एक मुकददस किताब होने की खुसूसियत को खो दिया। अपनी तुर्की की किताब **इज़ाहलमेराम फ़ी कशफ़ीज़-ज़ुलाम** में अज़ीम इस्लामी आलिम अलहाज अब्दुल्लाह इब्न दास्तान मुसतफ़ा (रहिमाहुल्लाहु तआला)ने,जो **1303**[**1885**] में फ़ौत हो गए थे, वज़ाहत की जो हज़रत ईसा को किताब भेजी गई वो क्या थी और जिसका ज़िक कुरआन अल करीम में किया गया वो क्या थी। वह किताब मंदरजाज़ेल बयान करती है ः "जब हज़रत ईसा (अलैहि सलाम)को यहूदियों ने मारने की कोशिश की,उन्होने उन्हें

ज़ब्त कर लिया और जो बाइबल उनके पास थी उसे या तो उन्होने जला दिया या टुकड़ों में फाड़ दिया। उस वक्त तक, बाइबल खुद पूरी दुनिया में नहीं फैली थी, और उसका मज़हब और शरीअत (मज़हबी कानून) कायम नहीं हुआ थे। यह इस हकीकत की वजह से कि ईसा (अलैहि सलाम) ने अपना मज़हब सिर्फ़ ढाई साल या तीन साल तक तबलीग़ किया। इस वजह से भी बाइबल की दूसरी कॉपी तलाश करने का वुजूद मुमकिन नहीं हैं। उनके हवारी बहुत कम थे और उनमें से ज़्यादातर जाहिल थे; इसलिए ,उनके लिए ये नामुमकिन था कि कोई दूसरा लिखा हुआ सुबूत उनके पास हो। उस वक्त तक, बाइबल लिखी नहीं गई थी, लेकिन वह सिर्फ़ ईसा (अलैहि सलाम)के ज़रिए याद की गई थी। यह एक दूसरा इमकान हो सकता है नीका (इज़नीक) की रूहानी कॉसिल में, ईसा मसीह के **325** सालों बाद, 'झूठी, गलत या बेबुनियादी' होने की वजह से, एक बड़ी तादाद बाइबलों की जलाई गई। शायद, असली बाइबल उनके दरमियान जल गई हो।"

आज की ईसाई दुनिया मानती है कि बाइबल में बहुत सारे बाहरी लफ़्ज़ घुसेड़ दिए गए हैं जिसके नतीजे में अल्लाह तआला के असली हुकूम और उसकी इंसानी मखलूक के कलाम आपस में मिल गए हैं। कोई शक नहीं कि असल में बाइबल हिब्रु ज़बान में थी। बाद में इसे लैटिन और ग्रीक में तर्जुमा किया गया। हिब्रु बाइबल को ग्रीक में तर्जुमा करते वक्त बहुत सारी गलतियाँ की गईं। इसके अलावा,इस हकीकत की वजह से कि ग्रीक बुत परस्त "एक अल्लाह" के आइडिए के खिलाफ़ थे,उन्होने बाइबल को अपने आप प्लेटो की फलासफ़ी से अपनाया। नतीजे के तौर पर, तसलीस का अकीदा (तीन की यूनियन),जोकि मुकम्मल तौर पर बेसबब थी,वह बाइबल में शामिल करदी गई। प्लेटो की फिलासफ़ी के मुताबिक, कई बुतों की इबादत करना मख़सूस बुतों को मखसूस माबूदों के लिए बनाकर यह अच्छा नहीं है। प्लेटो की फिलासफ़ी यह भी दावा करती है कि माबूद तीन की यूनियन है। पहले वाला "बाप" है। यह सबसे बड़ा तखलिक करने वाला और बाकी दो खुदाओं का बाप है। यह पहला नज़रिया है।

दूसरा दिखाई देने वाला तखलिककार है जो बाप का विज़ीर है दिखाई नहीं देता। इस लफ़्ज़ **अलामात** और खयाल हैं। यह हकीकत कि ईसा (अलैहि सलाम) को "अलामात" मुकददस लफ़्ज़ कहा जाता है, ईसाईयों के ज़रिए, और वे उनमें "खुदा" की तरह यकीन रखते हैं यह जॉन की किताब के शुरू में लिखा है। तीसरा वाला काएनात (कुदरत)है,दिखाई देने वाला और जाना हुआ। इसलिए, रोमनो और यूनानियों ने ईसाईय्यत को एक फिलासफ़ी बनाने की कोशिश की। ईसा (अलैहि सलाम ने कहा ः "मैं सिर्फ़

एक आदमी हूँ ,तुम्हारी तरह।" इसके बावजूद,उन्होने उन्हें अल्लाह के एक बेटे की तरह कुबूल किया।इससे मज़ीद आगे चले जांए, उन्होने कुछ ऐसी चीज़ खोजी जिसे "मुकद्दस भूत" कहा जाने लगा।उन्होने दावा किया कि वहाँ तीन इल्लाही अफ़राद हैं- बाप,बेटा और मुकद्दस भूत- जिनकी एकता ईसाई गॉड को बनाती है।बहरहाल, "बाप" लफ़्ज़ जो हिब्रु बाइबिल में इस्तेमाल हुआ उसका मतलब है कि अल्लाह तआला कादिरे मुतलक़ है।और "बेटे" का लफ़्ज़ जो हज़रत ईसा के लिए इस्तेमाल हुआ उसका मतलब है कि वे "अल्लाह तआला के प्यारे बंदे" है कुछ और नहीं।मुकददस भूत नबुव्वत की ताकत है जो हज़रत ईसा को अल्लाह तआला के ज़रिए अता की गई।इस हकीकत को कुरआन अल करीम में,चैप्टर तहरीम की 12वीं आयत में इस तरह बताया गया ः " **और मरयम इमरान की बेटी,जिसने अपनी पाकी की हिफाज़त की।और हमने (उनके जिस्म)में अपनी रूह फूँक दी।और उसने गवाही दी अपने रब के अलफ़ाज़ों की और उसके खुलासे की।और वह अकीदे (गुलामों)में से एक थी।"**

पहली ईसाइयत में, "तसलीस" जैसी कोई चीज़ नहीं थी।ऊपर ज़िक्र किए गए इस्लामी आलिम दासतान मुसतफ़ा (रहिमाहुल्लाहु) ने कहा ः " तसलीस" का आइडिया,ईसा अलैहि सलाम के 200 सालो बाद, सबसे पहले एक पादरी जिसका नाम सिबेलियस था उसने सुझाया।उस वक्त तक,लोग समझते थे कि अल्लाह एक है और यह कि हज़रत ईसा (अलैहि सलाम)उसके पैगम्बर थे।सिबेलियस के ज़रिए सुझाया गया नज़रिया शदीद तौर पर कई ईसाईयों के ज़रिए नामंज़ूर कर दिया गया।चर्चो के दरमियान झगड़े बरपा हो गए और खुन खराबा हो गया।एक तारीख की किताब में, जो उस वक्त में लिखी गई और फ्रेंच से अरबी में तर्जुमा की गई, इस हकीकत को साबित करती है सिर्फ़ 200 ए.डी. साल में, 'बाप' और 'बेटे' का आइडिया सुझाया गया। 'मुकददस भूत' का आइडिया 181 सालों बाद 381 में थियोडिसियस, बीजान्टिन के बादशाह के दौर में एक मज़हबी कॉसिल ने बढ़ाया।वहाँ बहुत सारे पॉप थे, जिन्होने इस फैसले की मुखालफ़त की।पॉप Honorius ने "तसलीस" में कभी यकीन रखा।अगरचे, Honorius को बेदखल किया हुआ था, उसकी मौत के कुछ सालो बाद,नए फिरके कायम हुए जिन्होने "तसलीस" के आइडिया की मुखालफ़त की।यहाँ तक कि हज़रत ईसा की तसाविर की एजाद करना,उनके मुजस्समा बनाना, उन्हें चर्च में लगाना, सलीब को मुकदसस मानना, और दुसरे इसी तरह के मामलात बहुत ज़्यादा मुश्किलात का सबब बनें,यहाँ तक कि खूनी लड़ाईयाँ हुईं, लेकिन उन्हें 700 सालों बाद चर्च के ज़रिए मंज़ूर कर लिया गया।

उन्होने ईसाईयत की बुनियादी बातों को तबदील कर दियाः पॉप को नाकाबिले यकीन माना गया; पादरियों का इकबालिया बयान का इखतियार दिया गया; आदमी को एक गुनहगार के तौर पर पैदा होने के लिए मज़म्मत की जाती। अगरचे इंजील(बाइबल)में लिखा था कि, वे आखिरी पैगम्बर,मुहम्मद(अलैहि सलाम)पर यकीन नहीं करेंगे। यहाँ तक कि आज भी वे नाम निहाद बाइबिल में लगातार तबदिलयाँ कर रहे हैं। ये सारे हकाईक अल्लाह तआला के गुस्से को भड़काते हैं। सूरह निसा की 171वीं आयत के मुकददस मआनी हैं : "**ओह, किताब के लोगों। अपने मज़हब में मुबालग़ा अराई मत करो। कुछ नहीं बताओ सिवाए अल्लााह की सच्चाई के। ईसा,मरियम का बेटा है, वह सिर्फ अल्लाह का नबी था। और एक मखलूक उसके हुकूम से पैदा की गई "होना"! जिसे उसने मरियम के अंदर डाल दिया, और अपने में से एक रूह। अल्लाह और उसके नबी में यकीन रखो। यह मत कहोः "तीन! (इसको) रोक दो यह तुम्हारे लिए बेहतर है। अल्लाह सिर्फ वाहिद अल्लााह है। वह एक बेटा होने से परे है। जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन पर है सब उसने तखलीख किया!"**

"रूह" लफ़्ज़ का इस्तेमाल करने से मतलब है" "ईसा"(अलैहि सलाम)उस आयत(मिसरे)में जो मुखतलिफ़ मआनी क ज़रिए वाज़ेह की गई। इसका मतलब है कि जिब्राइल(अलैहि सलाम)ने मरियम के अंदर उनको डाला और जब उन्होने सांस लिया,तो वे हामला हो गई। वह सांस जो जिब्राइल(अलैहि सलाम)के ज़रिए की गई वे "रूह" से हवाला दी गई। या,यहां रूह से मुराद है कि अल्लाह तआला के ज़रिए इल्हाम। हज़रत मेरी/मरयम को इस लफ़्ज़ के मआनी के ज़रिए अच्छी खबर सुनाई गई, और जिब्राईल(अलैहि सलाम)को उन पर सांस लेने का हुकूम दिया गया, और ईसा(अलैहि सलाम)को हुकूम दिया गया था "होना"! या, "होना" एक हुकूम है! यह कहा गया कि अल्लाह तआला और इस रूह के बीच राब्ता उसी तरह है जैसे एक आदमी के बोलने के बीच और उसकी सांस में ।

जिन्होने बाइबल को तबदील किया उनके लिए ऐलान हुआ कुरआन अल करीम के चैप्टर बकराह की 79वीं आयत मेंः "उन लोगो के लिए अफसोस है जो अपने हाथों से सहीफ़े को लिखते है और फिर कहते हैं :**यह अल्लाह की तरफ से है, एक तुच्छ हासिल करने के लिए। भयंकर होगी उनकी किस्मत,इस वजह से कि उनके हाथों ने क्या लिखा, इस वजह से कि वे क्या हासिल करेंगे।**"

सूरह इखलास की **1** से **4** आयात के मुकददस मआनी हैंः "**कहो कि अल्लाह एक है सिर्फ़ एक।वह हर ज़रूरत से फ़ारिग़ है।हर चीज़ उस पर मुबनी है।उसका कोई बेटा न बाप न कोई शरीक है।उसके जैसा कोई शख्स उस पर नहीं है।**"

हॅापूत तुर्की के इज़हाक एफ़ंदी(रहिमा-हुल्लाहु तआला) के ज़रिए लिखी गई तुर्की किताव **दिया उल कुलूब** में से नीचे एक कहानी का हवाला देते हैं ः

दो जेसुइट(जेसुइट एक मिशनरी समाज है इग्नाटियस लोयोला के ज़रिए **918**[ए.डी.**1512**]में कायम किया गया। )पादरी पहली बार कैंटन शहर में चीनी लोगो को ईसाई करने की गरज़ से गए।उन्होने कैंटन के गर्वनर से ईसाई मज़हव की तवलीग़ करने के लिए इजाज़त मांगी।गर्वनर ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया।लेकिन जब जेसुइट ने रोज़ाना उसके पास आकर उसे नाराज़ किया(और इजाज़त के मिनती की), तो अखिरकार उसने कहा, "मुझे चीन के फग़फूर[बादशाह] से इजाज़त लेनी पड़ेगी इसके लिए।मैं उसे बताऊगाँ।" इस तरह उसने यह मामला चीन के बादशाह को खबर किया।जवाब यह था ः "उन्हें मेरे पास भेजो।मैं जानना चाहता हूँ वे क्या चाहते हैं।" इस पर उसने जेसुइट को चीन की राजधानी,पेकिंग भेज दिया।इस खबर ने बुद्ध पादरियों के बीच में खतरे की घंटी बजा दी।[उन्होने बाशाह से जेसुइट को अपने मुल्क से निकाल देने की मिन्नत की इस बुनियाद पर कि "ये आदमी हमारे लोगो को एक नए मज़हब से लुभाना चाहते हैं जो ईसाइय्यत के नाम ज़ाहिर हुआ है।ये आदमी पाक बुद्धा को नहीं पहचानते।ये हमारे लोगों को गुमराह करेंगे।"] बादशाह ने कहा, "हमें पहले उनकी बात सुननी चाहिए।उसके बाद हम फैसला करेंगे। " उसने मुमताज़ रियास्तदानों और मुल्क के पादरियों की एक मजलिस बनाई ।जेसुइट को बुलाने के बाद, उसने उनको मजलिस को अपने मज़हब के उसूल वाज़ेह करने के लिए कहा जो वे एलान करना चाहते थे।इस पर जेसुइट ने मंदरजाज़ेल बातचीत रखी ः

"खुदा, आसमान और ज़मीन का खालिक,एक है।ताहम एक ही वक्त में,वे तीन हैं।खुदा का वाहिद बेटा और मुकददस भूत,हर एक खुदा है।इस खुदा ने आदम और हव्वा को तखलीक किया और जन्नत में रखा।उसने उन्हें हर तरह की रहमतें दीं।सिर्फ़, उसने उन्हें एक खास पेड़ का फल न खाने का हुकूम दिया।किसी तरह से शैतान ने ईव/हव्वा को धोखा दे दिया।और बदल में,उन्होने आदम को धोखा दिया,उन्होने खुदा के हुकूम की नाफरमानी की उस पेड़ के फल को खाकर।इस पर खुदा ने उन्हें जन्नत से निकाल दिया और दुनिया में भेज दिया।यहाँ उनके बच्चे और नाती-पोते हुए।वे सब गुनहगार थे क्योंकि

उन सबको उनके दादा के गुनाह ने खराब किया हुआ था। यह हालत छः हज़ार सालों तक चली। नतीजे के तौर पर खुदा को उनपर रहम आ गया,ताहम उसे और कोई रास्ता नहीं सुझा और उसने अपना खुद का बेटा उनके गुनाहों की तलाफ़ी के लिए भेज दिया और गुनाह के पछताताप के रूप में अपने एकलौते बेटे को कुर्बान कर दिया। पैगम्बर जिस पर हम यकीन रखते हैं वे जिज़स खुदा का बेटा हैं। अरब के मग़रिब में एक इलाका है जिसे फिलिस्तीन कहते हैं उसमें एक शहर है जिसे जेरूसलम कहते हैं। जेरूसलम में एक शहर है जिसे जेलिला (गलिली) कहते हैं,जिसमें एक गाँव है जिसका नाम नासिरा (नज़रेथ) है। एक हज़ार साल पहले वहाँ गाँव में एक लड़की रहती थी जिसका नाम मरयम (मेरी) था। इस लड़की की मंगनी अपने चचेरे भाई से हुई थी,लेकिन वह अभी तक कुंवारी थी। एक दिन,जबकि वह अकेली थी,मुकददस भूत ज़ाहिर हुआ और खुदा का बेटा उसके अंदर डाल गया। यानी,लड़की हामला हो गई,वह कुंवारी थी। [फिर,जब वह उसका मंगेतर जेरूसलम की तरफ़ रास्ते में थे,तो उसे एक तबेले में बेएत-ए-लहम (बेतलेहेम) में एक बच्चा हुआ। उन्होने खुदा के बेटे को तबेले में चरनी में रख दिया। मश्रिक में जो राहिब थे,जो जानते थे कि वे पैदा हो गए जब उन्होने अचानक आसमान में एक सितारे को चमकते हुए देखा, वे अपने हाथों में तौहफे लेकर वहाँ आ गए,और आखिरकार उन्होने उन्हें यहाँ घुड़साल में पा लिया। उन्होने उनके आगे सज्दा किया। खुदा के बेटे, जिसे जिज़स कहा जाता है, जब तक वे **33** साल के हो गए तब तक उन्होने खुदा की मखलूक को पढ़ाया। वे कहते थे, 'मैं खुदा का बेटा हूँ। मुझ पर यकीन करो। मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त करने आया हूँ।' उन्होने बहुत सारे चमत्कार किए, जैसे कि मुरदे को ज़िंदा करना,अंधे को दोबारा दिखाना, लंगड़े को चलाना,कोढ़ी को ठीक करना, समुंद्री तूफ़ान को रोकना,दस हज़ार लोगों को दो मछलियों से खिलाना,पानी को शराब में बदलना एक इंजीर के पेड़ को एक (हाथ) अलामत से हटा देना क्योंकि इससे सर्दी में कोई फल नहीं मिलता, और इसी तरह और भी। ताहम,बहुत कम लोग उनमें यकीन रखते हैं। नतीजे के तौर पर,धोखेबाज़ यहूदियों ने उन्हे रोमनो को सौंप दिया,इस तरह उनको सलीब पर चढ़ाया गया। अगरचे,सलीब पर मरने के तीन दीन बाद,ईसा मसीह ज़िंदा हुए और जो उनमें यकीन रखते थे उन पर ज़ाहिर हुए। फिर वे आसमान पर उठा लिए गए और अपने बाप के सीधे हाथ की तरफ़ बिठाए गए। और उनके बाप ने इस दुनिया का सारा मामला उन पर छोड़ दिया। और वे खुद पीछे हट गया। यह इस मज़हब की बुनियाद है जो हम तबलीग़ करने जा रह हैं। वे जो इसमें यकीन करेंगे वे आखिरत में जन्नत में जाएंगे,और जो इसमें यकीन नहीं करेंगे दोज़ख में जाएंगे।"

इन अलफ़ाज़ों को सुनने के बाद चीनी बादशाह ने पादरियों से कहा, "मैं तुम से कुछ सवालात पूछुँगा। इन सवालों के जवाब दो।" फिर उसने अपने सवाल पूछने शुरू किए, "मेरे पहला सवाल यह है ः एक तरफ़ तुम कह रहे हो खुदा एक है दूसरी तरफ़ तुम कह रहे हो कि वे तीन हैं। यह उसी तरह बेतुका है जैसे यह कहना कि दो और दो पाँच होते हैं। मुझे यह नज़रिया समझाओ।" **पादरी कोई जवाब नहीं दे पाए**। उन्होने कहा, "यह एक राज़ है जो सिर्फ़ खासतौर पर खुदा का है। यह इंसान की फसाहत से परे है।" फग़फ़ूर (बादशाह) ने कहा, "मेरा दूसरा सवाल यह है कि; खुदा इस ज़मीन आसमान, और सारी काएनात का कादिरे मुतलक है, और फिर भी, एक शख्स के ज़रिए किए गए गुनाह के ऊपर, वह उसकी सभी औलाद के ऊपर इल्ज़ाम लगा देता है, जो उस काम (गुनाहगार) से पूरे तौर पर अनजान है (उनके बुजुर्गों के ज़रिए किया गया); क्या यह मुमकिन है? और क्यों वह कोई और तरीका नहीं ढूँढ पाया इसके बजाए कि अपने खुद के बेटे को उनके लिए हरजाने के तौर पर भेज दिया? क्या यह उसकी अज़मत के काबिल है? तुम इसका जवाब क्या दोगे?" पादरी एक बार भी, जवाब नहीं दे पाए। "यह, भी, एक राज़ है खुदा के लिए खास," उन्होने कहा। फ़ग़फ़ूर ने कहा, "और मेरा तीसरा सवालः जिज़स ने अंजीर के पेड़ से समय से पहले फल देने के लिए कहा, और फिर उसे उजाड़ दिया क्योंकि वह फल नहीं दे पाएगा। एक पेड़ के लिए नामुमकिन बात है कि मौसम के बग़ैर फल दे देना। इस हकीकत के बावजूद, क्या यह जिज़स के लिए जुल्म नहीं है कि एक पेड़ से गुस्सा हो जाना और उसे उजाड़ देना? क्या एक नबी ज़ालिम हो सकता है?" पादरी इस सवाल का भी **जवाब नही दे पाए**। इसके बजाए, उन्होने कहा, "ये चीज़े रूहानी हैं। ये खुदा के राज़ हैं। इंसानी दिमाग़ इन्हें समझ नहीं सकता।" इस पर, चीनी बादशाह ने कहा, "मैं तुम्हें (जो तुम चाहते हो) इजाज़त देता हूँ। जाओ और चीन के किसी भी हिस्से में अपनी तबलीग़ करो।" जब वे बादशाह के दरबार से निकल गए ,तो बादशाह उनकी तरफ़ मुड़ा जो वहाँ मौजूद थे, और कहा, " मैं नहीं समझता कि चीन में कोई भी ऐस बेवकूफ़ होगा जो ऐसी बेसिर पैर की बातों पर यकीन करेगा। इसलिए मुझे इन आदमियों को अपना तोहमपरस्ती तबलीग़ करने की इजाज़त देने में कोई बुराई नज़र नहीं आती। मुझे यकीन है कि, इन्हें सुनने के बाद, हमारे हमवतन देखेंगे कि दुनिया में ऐसे भी बेवकूफ़ कबिले हैं और अपने यकीन के बारे में और ज़्यादा ध्यान से सोचेंगे।"

जो फ़गफ़ुर ने कहा वह बिल्कुल सही था। भले ही उन दिनों के बाद **2000** साल बीत गए ,और ईसाई मिशनरियों की अज़ीम कोशिश के बावजूद, वे चीनी कौम को ईसाय्त

में नहीं बदल सके। ( हमारी अंग्रेज़ी की किताब **जवाब नहीं दे सका** को देखिए।उस किताब में,बहुत सारे अहम सवाल हैं जिनका जवाब पादरियों के ज़रिए नहीं दिया जा सका। )

जहाँ तक यह समझा गया है किताबों के ज़रिए जो हमने मुख्तलिफ़ ज़बानों में पढ़ीं, हज़रत मरयम (मेरी)बैएत-उल मुकददस(मस्जिद-ए-अकसा) के कमरों मे से एक में रहती थीं। कोई और उस कमरे में नहीं जा सकता था सिवाए ज़कारिया(ज़िकरिया[अलैहि सलाम])के।फरिश्ते जिब्राईल(अलैहि सलाम)ने हज़रत मरयम(मेरी)को यह बात ज़ाहिर की कि उनके एक बेटा होगा जो एक पैगम्बर बनेगा, अगरचे वे एक कुंवारी थी।**मिरात-ए-काएनात** किताब की अफ़सानवियों में से एक में बयान हैः "जबकि हज़रत मेरी(मरयम) अपनी चाची और ज़कारिया(अलैहि सलाम) के घर में नहा रही थीं,जिब्राइल (अलैहि सलाम)एक आदमी की शक्ल में आए और उनके ऊपर सांस ली।जिसके नतीजे में वे हामला हो गई।वे अपने चाचा के बेटे,जोसेफ़(युसुफ़) नज्जार के साथ " बेएत-उल-लहम" चली गई।ईसा(जिज़स[अलैहि सलाम]) वहीं पैदा हुए।फिर,वे मिस्र चले गए।वहाँ **12** सालो तक रहे।वे आखिर में नासरेथ चले गए और वहीं मुकीम हो गए।जब ईसा(जिज़स[अलैहि सलाम])में यकीन रखते थे वे "**नसरानी**" कहलाते थे और सारे नसरानी लोग "नसरारा" कहलाते थे।बाइबल के मुताबिक जब ईसा का जन्म हुआ,तो एक नया और चमकदार सितारा आसमान में ज़ाहिर हुआ।लेकिन, कुछ फलसफ़ियों और इश्तराकियों के मुताबिक यह पूरी कहानी एक अफसाना है।किसी ने ईसा(जिज़स ) को नामज़द नहीं किया था।अर्नेस्ट रेनन,पेरिस की यूनिवर्सीटी में एक प्रोफ़ेसर के मुताबिक, मेरी ने युसूफ़(जोसेफ़) से शादी करली।ईसा(जिज़स[अलैहि सलाम]) आम तरीके से पैदा हुए।यहाँ तक कि उनके भाई और बहन भी थे।रेनन के इस इल्ज़ाम के बाद पॉप ने उसे बेदखल कर दिया।लेकिन, उसके आइडिया बहुत जल्दी मुलहिद के ज़रिए अपना लिए गए।

कुरआन अल-करीम ने वाज़ेह तौर पर ज़ाहिर किया है कि ईसा(जिज़स[अलैहि सलाम])हज़रत मेरी(मरयम)के बेटे थे,जो कुवांरी थीं।जैसा कि हमने ऊपर बताया, अल्लाह तआला ने उन्हें रूह-उल-कुदस(मुकददस रूह) से इज़्ज़त बख्शी।यह हकीकत सूरह बकराह की **87**वीं और **253**वीं आयत में वाज़ेह हैं।इन आयात के पाक मआनी हैं ः "**हमने ईसा(जिज़स)मरयम के बेटे को वाज़ेह अलामात दीं और उन्हें पाक रूह से मज़बूत किया।**"[यह मुबारक आयत-अल-करीमा ज़ाहिर करती है कि उन्हें वाज़ेह मौअजिज़ात दिए गए।और यह साफ़ तौर पर सूरह अल-ए-इमरान की **48**वीं आयत में, और सूरह माईदा की **46**वीं और **110**वीं आयात में, और सूरह हदीद की **27**वीं आयत में ज़ाहिर है कि

इंजील (बाइबल)उन पर नाज़िल की गई]।कि वह कुंवारी/कुंआरी मेरी (मरयम) से पैदा किए गए ये **45**वीं और मंदरजाज़ेल सूरह आल-ए-इमरान में बयान किए गए ः **"फरिशते ने कहाः "ए मरयम! अल्लाह ने तुमको एक लफ़्ज़ खुशी की बशारत दी है ः उसका नाम ईसा (जिज़स) मसीहा, मरयम का बेटा होगा, इस दुनिया में और आखिरत में इज़्ज़त पाएगा, और अल्लाह के नज़दीक तरीन में होगा,और अपने पालने में वह लोगों को तबलीग़ देगा।"** हज़रत मेरी/मरयम ने पूछा ः " **ए मेरे रब! मेरी किस तरह एक लड़का होगा जबकि किसी ने मुझे छुआ नहीं है?" फरिश्ते ने कहा ः "फिर भीःअल्लाह जो चाहता है तखलीख करता है।जब वह एक बात तय करता है,वह उसे 'होना' कहता है, और यह है।"**

ईसा (जिज़स[अलैहि सलाम]) लोगों से बात करते थे जब वह बच्चे ही थे।जब वह बच्चे थे तो उनके पास ग़ैरमामूली हिकमत थी।जो सवाल उनसे पूछे जाते उनके वह बड़े तारीफ़ी जवाब देते।उनकी यह हालत हाज़िर करती थी कि वे एक गैरमामूली आदमी हैं।उन्होने यरूशलेम में तबलीग़ शुरू कर दी।अपनी नबुव्वत के दौरान,जो तीन साल रही,उन्होने बेशुमार अदा किए।जैसा कि कुरआन अल करीम में ज़िक किया गया है, वे मुरदे को ज़िंदा कर देते थे।वे कोढ़ी को ठीक कर देते थे।वे अंधे की आँखे खोल देते थे। ईसा (जिज़स[अलैहि सलाम]) इस किस्म के नबी थे जिनका कोई घर नहीं था, और जो लगातार सड़क पर रहते थे, चलते हुए।वे रात इबादत में गुज़ारते थे,जहाँ कही वे उस दिन होते जहाँ सूरज गुरूब होता।वे बहुत नरम,रहम वाले,बहुत नरम दिल,और मामूली थे।जो चमत्कार वे करते थे उसे अदा करके वे खुद शर्मिंदा हो जाते इतने कि वे उस शख्स को ठीक करने के बाद वहाँ से फौरन चले जाते कि कही वह उनका शुक्रिया न करने लग जाए।वे कभी अपने हव्वारियों के एहतिजाज के मुंह तोड़ जवाब नहीं देते थे, बल्कि जवाब भी नहीं देते थे।[मिसाल के तौर पर,वे एक साथ एक जहाज़ में सफ़र कर रहे थे, जब एक शदीद तूफ़ान आ गया।डूबने के डर से,वे सब मुखालफ़त करने लगे।" तुम यह तूफ़ान रोक क्यों नहीं देते? हम खत्म हो जाएगे; क्या तुम देखभाल नहीं कर सकते?वे खामोश बैठे रहे।] वे उन्हें फौरन उनके बुरे बरताव के लिए माफ़ कर देते थे।पीटर ने एक माली का कान काट दिया इस बिना पर कि वे उनके बारे में (ईसा अलैहि सलाम)गंदी बाते बोल रहा था।उन्हें माली के लिए इतना ज़्यादा दुख हुआ कि उन्होने माली के कान के मुताबादिल के लिए अल्लाह तआला से दुआ करने में कोई झिझक महसूस नहीं कि।

इंजील (बाइबल)में रोक[एहकामात और ममनुआत] तादाद में बहुत कम हैं। ईसा (जिज़स[अलैहि सलाम]) ने एक नया मज़हब लाने का दावा नहीं किया।वे हमेशा कहते

थे " मैं एक नए मज़हव को कायम करने की कोशिश नहीं कर रहा।मैं सच्चे मुताहिद मज़हव की वहाली के लिए भेजा गया हूँ जो इस्राएली पैगम्वरों अलैहिम-अस-सलवात व-त-तसलीमात के ज़रिए लाया गया और जिसने अपनी पाकी को खोना शुरू कर दिया है। " वे सिर्फ़ इतना चाहते थे कि सारे लोग एक अल्लाह को माने।इस वजह से,यह कुवूल नहीं किया जाएगा कि दावा करना कि ईसाइय्त एक नया मज़हब है।ईसाय्यत और दूसरे मज़ाहिव जो एक अल्लाह में ईमान लाने का दावा करते हैं और जो हज़रत इव्राहिम(अव्राहम[अलैहि सलाम]) और मूसा(मोसेस[अलैहि सलाम]) के ज़रिए लाए गए वे सव एक हैं।ईसा(जिज़स[अलैहि सलाम]) ने अपनी तालीमात को लिखा नहीं।न ही और किसी के पास असली वाइवल होने का दावा है जिसे अल्लाह तआला ने नाज़िल किया था।आज के ईसाईयों के हाथों में **मुकददस वाइवल** उन हिस्सों पर मुश्तमिल हैं जो तौरह( ऑल्ड टेस्टामेंट) से ली गई और दूसरी कितावें जो इसमें वाद में मैथ्यू ,मार्क,ल्यूक और जॉन के ज़रिए जोड़ी गई और कितावचह और शार्गिदों जिन्हें हव्वारी(नयू टेस्टामेंट)कहा जाता है के खतूत।उन्होने एक ही वाक्स के लिए मुख्तलिफ़ वज़ाहतें लिखी।[देखिए ः **कुरआन अल करीम और वाइवल**।] दूसरे हव्वारियों के ज़रिए लिखी गई वाइवलों को जमा करके और जला दिया गया।यह वाक्या मज़हवी कॉसिलो और synods में जो **381** ए.डी. में इस्तांवुल में मुंकिद की गई उनमें पेश आया, और जिसे हमे पहले से छू चुके हैं, पिछली वालियों का कोई ज़िक नहीं, जैसे कि एक **325** में और **364** में(कॉनस्टेंटाईन और थियौडोसियस के राजों में)में मुंकिद हुई थीं।

यह हकीकत कि हज़रत मुहम्मद(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म) आएंगे यह तफ़सील से वरनावस की वाइवल में वताया गया, लेकिन उसे भी दूसरियों के साथ जला दिया गया।आज, यह जाना जाता है कि इन चारों कितावों के लेखकों में से किसी एक ने भी ईसा(जिज़स[अलैहि सलाम]) को कभी नहीं देखा सिवाए जॉन के।हरपूत ,तुर्की के इसहाक एफ़ंदी(रहिमाहुल्लाहु तआला)के मुताविक,पहली,दूसरी,तीसरी और चौथी वाइवलें विलतरतीव,**65,60,55-60,** में ईसा मसीह के **98** सालों वाद लिखी गई।सिर्फ़ जॉन की किताव में हवाला है कि ः "अल्लाह इंसानी मखलूक को इतना ज़्यादा पसंद करता है कि उसने उनके पास अपना ही वेटा भेज दिया।" लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि लफ़्ज़ "अपना खुद का वेटा" से मुराद है "एक गुलाम जिसे वे वहुत चाहता है।"(जॉन हज़रत ईसा(जिज़स[अलैहि सलाम])की खाला का वेटा था। )वहरहाल,ऐसे कोई वयानात दूसरी तीनो कितावों में नहीं मिलते।लेकिन उन कितावों में,ईसा(जिज़स[अलैहिस सलाम)अल्लाह

तआला को "बाप" के तौर पर इशारा करते हैं, जो बिलशक "किसी के मुकददस और प्यारे" होने के मआनी हैं उन सहिफ़ों में। नीचे हवाला दिया गया मैथ्यू की किताब के **27**वें चैप्टर की पचासवी आयत है जो इस बात की तसदीक करती है कि कुछ (बाइबल) किताबें ईसा अलैहि सलाम की पैदाइश के कम से कम **70** सालों बाद लिखी गई "जब जिसस (अलैहि सलाम) फ़ौत हो गए, तो मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे दोहरे किराए मे गया; और ज़मीन में ज़लज़ला आया, और चट्टानों का किराया, और कब्रे खुल गई; और बहुत सारे संतो के जिस्म जो सो रहे थे वे उठ गए, और अपनी कब्रों से बाहर आ गए इस उठाए लिए जाने के बाद, और पाक शहर में चले गए, और कई पर ज़ाहिर हो गए।" यह तबाही की तस्वीर जो एक यहूदी के ज़रिए एक किताब में हवाला करदा काम था जोकि निहायत ही अफसोसनाक था जब रोमन बादशाह, टाइटस, के ज़रिए ईसा अलैहि सलाम के जन्म के **70** सालो बाद जरूसलेम को तबाह और जलाया गया। नॉर्टन एंड्रयूज़ (**1786-1853**) एक अमरीकी और मुकददस बाइबल का मुबसिर, ने कहा, "यह कहानी एक झूठ है। यह हकीकत जो नीचे बताई जा रही है वह एक भरोसे लायक सुबूत है। मस्जिद-ए-अक्सा के बारे में गैर मामूली कहानियों के दरमियान झूठों में से एक था, जो यहूदियों के ज़रिए खोजी गई और जो जरूसलेम शहर के तबाह होने के बाद बरबादी की हालत में थी। कुछ वक्त गुज़रने के बाद, किसी ने यह कहानी मैथ्यू की किताब के मार्जिन पर लिख दी यह सोचते हए कि यह उस वक्त के लिए मुनासिब है जब जिसस (अलैहि सलाम) को सूली पर चढ़ाया गया था। फिर, दूसरे लेखन मैथ्यू की किताब के टेक्सट में लिखा जबकि वह उस किताब की एक कॉपी लिख रहा था। फिर, टेक्स्ट को पूरे तौर पर तर्जुमा किया गया उस मुतरजम के ज़रिए जिसके पास यह थी।" मैथ्यू ने इस वाक्ये को अपनी किताब में ऐसे लिखा जैसे कि यह उसके वक्त में गुज़रा था और जैसे वह आँखो देखा गवाह था। दरहकीकत, वहाँ पर इखतिलाफ़ है कि आया मैथ्यू की किताब असलियत में खुद मैथ्यू के ज़रिए लिखी गई कि नहीं। कुछ यूरोपीयों का कहना है कि मैथ्यू की किताब में लिखने के दो स्टाइल हैं, और उनका दावा है कि हो सकता है कि इस किताब को दो मुखतलिफ़ आदमियों ने लिखा हो। यहाँ तक की मज़हबी ईसाई आदमी इस बात को तसलीम करते हैं कि बाइबल जो आज की ईसाई दुनिया के पास है उसे अल्लाह तआला का कलाम नहीं माना जा सकता। जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं, इसमें अल्लाह तआला का कलाम साथ ही साथ आदमियों के अलफ़ाज़ भी है। मुसलमानों के लिए सबसे ज़्यादा मुनासिब चीज़ है ः वह आयात बाइबल में जो कुरआन अल करीम की रज़ामंदी के साथ हैं उन्हें मंज़ूर कर लिया जाए ः वे आयात जो कुरआन अल करीम के बरअक्स हो उन्हें (चूंकि वे आदमियों के ज़रिए कलमात हैं) नामंज़ूर

कर देना चाहिए। लेकिन जो वे आयात जो कुरआन अल करीम के ज़रिए न तो मंजूर हुई और न ही ना मंजूर की गई वे भरोसेमंद समझी जा सकती हैं उन्हें ग़ौर से जांच करने के बाद और जिन्हें इस्लाम के अकीदे मुताबिक काबिले कुबूल समझा गया।

ईसा (जिसस[अलैहि सलाम]) को इस्राएलियों के मज़हब को सही करने के लिए भेजा गया। लेकिन,यहूदियों को वे पसंद नहीं आए। उनका कहना था कि वे झूठे पैगम्बर हैं। उन्होने रोमनो से उनकी शिकायत की यह इल्ज़ाम लगाते हुए ः "यह इस्राइल का बादशाह बनना चाहते हैं। ये लोगों को भड़का कर रोमनो के खिलाफ़ बग़ावत करना चाहते हैं। ये अपने आपको अल्लाह का बेटा मानता है। यह अल्लाह का "बाप" कहते हुए हवाला देते हैं' ईसाई अकीदे के मुताबिक, पिलेटस,रोमनो का यहूदी गर्वनर जरूसलम में रहता था उसने जिसस (अलैहि सलाम) को गिरफ़तार करा लिया और उन्हें हिरोदस के पास भेज दिया। हिरोदस बहुत खुश हुआ क्योंकि वह उनसे मिलना चाहता था। जिसस ने हिरोदस के ज़रिए पूछे गए सवालों के जवाब नहीं दिए। इस पर, हिरोदस ने उन्हें वापस पिलेटस के पास भेज दिया। (लयूक का **23**वां चैप्टर) पेशीनगोई करने वाले सरबराह और यहूदियों के बढ़ावा देने पर, पिलेटस ने उन्हें सूली चढ़ाने के लिए यहूदियों के हवाले कर दिया। ईसाई मानते हैं कि ईसा (अलौहि सलाम) को सूली पर चढ़ाया गया और वे फौत हो गए; फिर, उसके बाद वे ज़िंदा हुए और आसमान पर उठा लिए गए। लेकिन मुसलमानों का मानना है कि हज़रत ईसा (जिसस)को सूली पर नहीं चढ़ाया गया और इसके बजाए वे सीधे आसमान पर उठा लिए गए। जो शख्स उनकी जगह पर सूली चढ़ा उसका नाम जूदास (यहूदा,उनके हव्वरियों में से एक)था। पैसे के बदले में उसने लोकल हुक्काम को यह जानकारी दी कि ईसा (जिसस)को वह कहाँ ढूँढ सकते हैं। यह कुरआन अल करीम में ज़ाहिर है। सूरह निसा की **156** से **158**वीं आयत के पाक मआनी हैंः "हमने यहूदियों **पर ईसा का इंकार करने पर लानत भेजी और उनके मेरी/मरयम के खिलाफ़ इतने बुरे इल्ज़ाम लगाने पर और उनके कहने पर भी ः 'हमने अल्लाह के पैगम्बर, ईसा, मेरी/मरियम के बेटे को कत्ल कर दिया!' लेकिन उन्होने उन्हें कत्ल नहीं किया,न ही उन्हें सूली चढ़ाया। लेकिन ऐसा उन पर ज़ाहिर किया गया।** [यहूदा (जूदास) को जिसस (अलैहि सलाम) समझा गया और सूली चढ़ा दिया गया। **उन्हें उसकी असली जानकारी नहीं सिवाए इसके अनुमान के। एक ज़मानत के लिए,उन्होने उन्हें नही मारा। नाहीं, अल्लाह ने उन्हें अपने ऊपर उठाया। अल्लाह कादिरे मुतलक है, अकलमंद।**"

ईसा (अलैहि सलाम)के ऊपर उठाए लिए जाने के बाद, ईसाय्यत पूरी दुनिया में अहिस्ता से फैलनी शुरू हुई। शुरू से, रोमनो और यूनानियों ने जो बुतपरस्त थे,शदीद तौर पर इस नए मज़हब को नामंजूर किया। ईसाईयों को पकड़ा गया और कत्ल किया गया। उन्हें सर्कसों में जंगली जानवरो के सामने फिंकवा दिया गया। लेकिन,सच्चा मज़हब लगातर जाना और तारीफ़ किया गया। यह शर्म की बात है कि असली इंजील (बाइबल) वक्त के दौरान गायब हो गई। पॉल के बेतुके बहाने, जो कि एक पाखंडी था ः "ईसा (जिसस) का सूली पर चढ़ाया जाना एक इलाही सबब, इंसाफ़ और मिन्नत है। अल्लाह ने अपने ही बेटे को कत्ल करा दिया इंसानी मखलूक के गुनाहों को माफ़ करने के लिए," आज की ईसाय्यत की बुनियाद बन चुके हैं। हालांकि,ईसा (जिसस) [अलैहि सलाम] )ने कभी नहीं कहा कि कोई भी एक गुनाहगार पैदा हो सकता है,आज की ईसाय्यत इस तरह वाज़ेह की जाती है ः

**1-** आदमी इस दुनिया में एक गुनाहगार की तरह आता है। आदम,पहले इंसान,ने अल्लाह तआला का हुकूम नहीं माना;इसलिए; उन्हें जन्नत से निकाल दिया गया।

**2-** आदम के जानशीन,आज तक,वही गुनाह करते आए हैं।

**3-** ईसा (जिसस[अलैहि सलाम]) अल्लाह तआला के बेटे को इस दुनिया में इंसानियत को उस गुनाह से बचाने के लिए भेजा गया।

**4-** ईसा अल्लाह तआला ने अपने ही बेटे को सूली पर चढ़वा दिया क्योंकि वे इंसानी मखलूक के गुनाह माफ़ करना चाहते थे।

**5-** यह दुनिया तकलीफ़ की जगह है। ख़ुशी और मज़ा इस दुनिया में मना है। आदमी मुसीबत झेलने और इबादत करने के लिए तखलीक किया गया है।

**6-** आदमी का अल्लाह तआला से सीधे रिश्ता (इबादत)नहीं है। वे सीधे उससे कुछ भी नहीं मांग सकते। सिर्फ पादरी उनके लिए अल्लाह तआला से गिडगिड़ा सकता है। और सिर्फ़ पादरी ही उनके गुनाह माफ़ कर सकता है।

**7-** ईसाईयों के लीडर पॉप हैं। पॉप नाकाबिले यकीन है ः जो कुछ वह करेगा इंसाफ होगा।

**8-** रूह और जिस्म मुखतलिफ़ हैं। सिर्फ़ पादरी ही लोगों की रूहों को पाक कर सकता है। लेकिन उनके जिस्म नापाक रहेंगे; यह हमेशा गुनाहगार रहेंगे।

इन नागवार अकीदों की वजह से, सच्चा ईसाई मज़हब जिसे हज़रत ईसा(जिसस)लेकर आए थे इस्राएलियों के मज़हब को सही करने के लिए उसने अपनी बुनियादें खो दीं और एक झूठा मज़हब बन गया या नामनिहाद ईसाय्यत को वापस अपनी असली शक्ल में लाने की कोशिश की। इस मकसद को दिमाग़ में रखते हुए, एक पादरी जिसका नाम लूथर था एक फिरका कायम किया प्रोटेस्टेंटमन के नाम से, लेकिन उसने सिर्फ़ ईसाय्यत को और खराब और ज़्यादा बदतर कर दिया। इसलिए, इस्लामी मज़हब उठा ईसाय्यत में शामिल सारी गलतियों को सुधारने के लिए जो ईसा(अलैहि सलाम)के बाद इसमें शामिल हो गई थीं और इस पाक एकजुट मज़हब को वापस इसकी असली शक्ल में लाने के लिए क्योंकि यह बहुत ज़्यादा बदतरीन और खराब हो चुका था। दरहकीकत, अल्लाह तआला के ज़रिए ज़ाहिर की गई सारी पाक किताबों में यह बताया गया कि एक "आखिरी नबी(अलैहिस-सलात-वसल्लाम)आएंगे," और वे सारी आलमियत को निजात की तरफ़ सच्चे रास्ते पर रहनुमाई करेंगे। यह खबर दोनो में तौरह और, बहुत सारी छेड़छाड़ के बावजूद, बाइबल में भी देखी गई है। जॉन में **16**वें चैप्टर की **12**वीं और **13**वीं आयत में बयान है ः "मुझे तुम से अभी और भी बहुत सारी चीज़े कहनी हैं, लेकिन तुम उन्हें अभी सहन नहीं कर पाओगे। कैसे जब वे, सच्चाई की रूह,आएगी, वे तुम्हें सारी सच्चाई में रहनुमाई करेगी।" हज़रत ईसा(जिसस)के ज़रिए अपने हव्वारियों से मंदरजाज़ेल हकाईक साफ़ बताए गए, जो **72**वें,**96**वें,**136**वें,**163**वें चैप्टरों में हैं ः "एक आखिरी नबी आएगा; उनका नाम अहमद होगा, वे इंजील(बाइबल)को उसकी सही शक्ल में रखेगा,क्योंकि जब तक वे आंएगे यह खराब हो चुकी होगी; वे एक नई पाक किताब लाएंगे।"इसके अलावा, उसी किताब में यह लिखा है कि "वे, बज़ाते खुद,वे,सच्चाई की रूह आएगी, वे तुम्हें सारी सच्चाई पर रहनुमाई करेगी।" **72**वें,**96**वें,**136**वें,**163**वें चैप्टरो में मंदरजाज़ेल हकाईक हज़रत ईसा(जिसस)के ज़रिए अपने रसूलो से कहे जाएंगेः "एक आखिरी नबी आंएगे,उनका नाम अहमद होगा,वे इंजील(बाइबल)को उसकी सही शक्ल में रखेंगे,क्योंकि जब तक वे आंएगे यह खराब हो चुकी होगी; वे एक नई पाक किताब लांएगे।"इसके अलावा,उसी किताब में यह कहा गया है कि यह खुद सूली पर नहीं चढ़ाए गए; जो आदमी सूली चढ़ा वह जूदास था,जिसने हाकिमों को खबर दी थी कि वे ईसा(जिसस)को कहाँ ढूँढ सकते हैं। इस हककीत को कुरआन अल करीम की सूरह(चैप्टर)साफ़ में तसदीक किया गया। सूरह साफ़ की छठी आयत के पाक मआनी से हवाला है ः "**और याद करो, ईसा[जिसस], मरयम के बेटे को,ने कहा "ए इस्राइल के बच्चों! मैं अल्लाह का**(भेजा हुआ)**नबी हूँ तुम्हारे लिए,उस कानून[जो आया]की तसदीक करने जो मेरे पहले आया,और खुशी की बशारत देने**

**एक नबी की जो मेरे बाद आएगा,जिसका नाम**[ ([अहमद और मुहम्मद दोनो नामों के एक जैसे मआनी हैं। )**अहमद होगा।लेकिन जब वे उनके पास आएगा वाज़ेह अलामात के साथ, तो वे कहेंगे, 'यह वाज़ेह जादूगर है!"**

## इस्लाम

आला नबी अल्लाह तआला के ज़रिए चुने गए इस नए मज़हब को फैलाने के लिए हज़रत मुहम्मद (अलैहिस-सलात-व अस्सलाम) कुरआन अल करीम और बाइबल नाम के सेक्शन में बहुत सारी वज़ाहतें शामिल हैं जो बताती हैं किस तरह हज़रत मुहम्मद परवान चढ़े ,किस तरह आपने पहला इलाही हुकूम दिया, और आपने किस तरह इस्लाम फैलाया; ताहम, यहाँ उनको दोहराने की ज़रूरत नहीं है।हम सिर्फ़ यहाँ हकाईक जोड़ेंगे जो पहले ज़िक नहीं किए गए।

इस्लाम एक सच्चा मज़हब है अल्लाह तआला के ज़रिए भेजा गया और जिसे हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)ने अपने लोगो को अपनी पैदाइश **571** ए.डी. में होने के बाद **43** साल बाद तबलीग़ की।आपने ईसाय्यत और यहूदियत की पाक शक्ल पेश की जो कि इंसानी घुसपैठ की वजह से खराब और बेतुके हो चुके थे।इस मज़हब का नाम इस्लाम है।और,बेशक,यह सब कुदरती था क्योंकि जैसे कि हम बार बार इस किताब में दोहराते आए हैं कि, एकजुट मज़हब,जो आदम (अलैहि सलाम)के ज़माने से जाना जाता रहा है,अपनी आखिरी शक्ल में पहुँच गया "इस्लाम" के साथ यहूदी मज़हब और ईसाय्यत के बाद।नबियों की ज़िंदागियो और मज़ाहिब जो वे तबलीग़ करते थे,उसका एक मुहतात मुतालअ करके, जो ईसाई किताबों में लिखा है, उससे यह हकीकत ज़ाहिर होती है कि वे भी,असल में एकजुट (**तौहीद**)मज़ाहिब थे, जो अपनी बारी में,साबित करती है कि हमारे तर्क कि "तसलीस" ईसा अलैहि सलाम के मज़हब में यहूदियों और रोमनों के ज़रिए डाली गई "यह एक सीधा सच है।

इस्लामी मज़हब की पाक किताब कुरआन अल-करीम है।कुरआन अल करीम यकीनी तौर पर अल्लाह तआला का कलाम है।जबकि दूसरी पाक किताबें वक्त के साथ मदाखलत करके या तबदील करके इंसानी अल्फ़ाज़ों को उसमें घुसेड़ कर तबदील कर चुके है,कुरआन अल करीम अपने नुज़ूल के वक्त से अब तक अपनी असली शक्ल में है और कोई लफ़्ज़,या एक भी इसमें रद्दोबदल नहीं किया गया।इस्लाम में ईमान के मामले में

जानकारी वही है जो दूसरे पैगम्बरो के मज़ाहिब में थी,यानी,"तौहीद"।दूसरी तरफ़,वदकिस्मती से, दूसरे मज़ाहिब मे कुछ दास्ताने और बेतुके सहीफ़े घुसेड़ दिए गए।

आज,इस्लामी मज़हब पूरी दुनिया मे तारीफ़ के साथ ज़िक किया जाता है।निसफ़ सदी में,हालांकि, ईसाई मज़हब के आलिमों ने विना देखे इस्लाम पर हमला किया इसे यह कहते हुए कि 'मज़हब जो शैतान के ज़रिए कायम हुआ' बग़ैर पूरी जानकारी उठाए,अकेले काफ़ी इल्म दें, ऐसा करने के लिए और,जैसा कि हम पहले ज़िक कर चुके हैं,पॉप जो ईसाय्यत में आला मज़हवी मकाम रखते थे,उन्होने मुसलमानों को खत्म करने के लिए सलीबी जंग छेड़ी।सिर्फ़ **18**वीं सदी के बाद यह हुआ कि यूरोपीय तारीखदानों ने इस्लामी मज़हब को पढ़ना शुरू किया और आहिस्ता- आहिस्ता अपनी ज़वानों में कुरआन अल करीम को तर्जुमा करना शुरू किया।इस हकीकत के बावजूद कि उनमें से कुछ तर्जुमें ईसाई कट्टरपथिंयो के ज़रिए किए गए,और जिसके नतीजे में,वे असली कुरआन के मुताबिक नहीं है, वहाँ भरोसे के काविल तर्जुमात भी है जो ईमानदार तारीखदानों के ज़रिए किए गए।दूसरी तरफ़,वहाँ कुछ तर्जुमे कुरआन अल करीम के मुसलमानो के ज़रिए भी किए गए हैं।लोग जो कुरआन अल करीम के सही तर्जुमे या तफ़सीर को पढ़ लेते हैं और समझ लेते हैं,जैसे कि गोऐथे, कार्लाइल,लामाटाईन,टैगोर और वहुत सारे,जो दुनिया की मशहूर शखसियतों में शमिल हैं, वे इस्लामी मज़हब के लिए अपनी तारीफ़ को बताने में नहीं झिझकते।उनके ताअसुरात की तफ़सीली वज़ाहत हमारी कितावों में देखी जा सकती हैं।] (वराए मेहरवानी हमारी किताव **वे क्यों मुसलमान बन गए ,हकीकत किताबवी**,फातिह इस्तांवुल,तुर्की में दस्तयाव।लेकिन अव हम कुछ मज़मून यहाँ बताने जा रहे हैं जो मुखतलिफ़ statement के ज़रिए लिखे गए है जो **1266** (**1850**) के वाद तुर्की में आए,इस्लामी मज़हब और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के मुतअल्लिक।

"इस्लामी मज़हब" नाम से इस चैप्टर में जिसे **1900** में सर चार्लस, ने जो इस्तांवुल में ब्रिटिश एम्बेसी में फर्सट से सेकेटरी थे **1311-1316** (**1898**)के बीच में, अपनी किताव **तुर्की इन यूरोप** में छपवाया उनका कहना था ः "यह दुनिया जिसस(अलैहि सलाम)की जागीर नहीं थी।अगर ईसाय्यत किसी एक खास हुकूमत या किसी रियास्ती तंज़ीम से मुनसलिक हो जाती,तो यह खो जाती।हम देखते हैं कि यह हकीकत इस्लाम के मामले में मुखतलिफ़ है।मुहम्मद(अलैहि सलाम) न सिर्फ़ एक मज़हवी आदमी थे,वे एक अज़ीम लीडर भी थे।वे अपने महमानो के ज़रिए उसी तरह इज़्ज़त दिए जाते जिस तरह पॉप और ज़ार को इतिहाद का एहकाम दिखाया जाता है।वे हमेशा एक चौकस सियासतदान

रहे,अपनी गैर मामूली कामयाब सरगरमियों और मौअजिज़ात(चमत्कारो) के बावाजूद,वे कहते थे कि सिर्फ़ एक आदमी हैं।उनकी निजी ज़िंदगी में कोई नुक्स नहीं था।"

उसी किताब के दूसरे हिस्से में,यह कहा गयाः "अगर हम जिसस(अलैहि सलाम)के वक्त के दौरान लोगों का जीने का ढंग और उनके गुनाहों और खराबियों को देखे जो उन्होने किए, तो यह हमारे लिए हैरानकुन होगा कि वे अमाल बाइवल में मना नहीं किए गए थे।बाइवल ने सिर्फ़ सिफ़ारिश की कि उन गुनाहों को न किया जाए।इसका ज़िक नहीं किया गया कि जो लोग उसे करेंगे उनके साथ किया होगा।इसके बरअक्स,कुरआन अल करीम साफ़ तौर पर ज़ाहिर करता है गुनाह क्या है।मिसाल के तौर पर,बुतों की इबादत करना या नई पैदा हुई लड़की को दफ़ना देना, इसके साथ साथ आखिरत में भी इन दोनो के लिए सज़ाए दी जाएगी।इसके मुताबिक,उन दिनों के झूठे और बदनाम मज़ाहिब और रीति-रिवाज़ो का पूरी तरह से इखतिलाफ़ किया और एक अज़ीम खिदमत अरब की कौमों को फराहम की।"

सर ईलियट कहते हैं ः इस्लाम के सबसे अच्छे उसूलों में से एक यह है कि वह अपने शहरियों और ग़ैर मुल्कियों में कोई फर्क नहीं करता।अल्लाह और उसके बंदो के बीच में कोई बीच का शख्स नहीं है।बीच के शख्स,जैसे कि पादरी,इस्लाम में मना है।"

आदमी को इस्लाम में अज़ीम इज़्ज़त हासिल है।तुर्की सिपाही इसकी अच्छी मिसाल हैं।वे मुकम्मल नज़्मो ज़्वत वाले होते हैं।वे निजी तौर पर पहल करते हैं।दूसरी कौमों के पास मुश्किल से ही ऐसे सिपाही होंगे।लेकिन,उनका नज़म व ज़्वत,सख्त फरमाबरदारी अपने कमांडरो के लिए और अखलाकी साहस इस हकीकत से शुरू होता है कि वे अच्छे मुसलमान हैं।यह इस्लाम है जो इनके अंदर ये अच्छी खासियतें दाखिल करता है।मज़ीद यह कि,यह इस्लाम है जो कायम करता है, "ज़कात" की मदद से लोगो के दरमियान "मिलकियत में एकता"।यह अमीर और गरीब के बीच की खाई को खत्म करता है, जो समाजी उथल-पुथल पैदा करता है।यह शानदार मज़हब हर किसी के समझने के लिए बहुत ज़्यादा आसान है।कोई भी जो ग़ैर जाबिदारी से और तफ़सील में मुहम्मद(अलैहि सलाम)की जीवनी पढ़ेगा वे आपके लिए अज़ीम इज़्ज़त और प्यार महसूस करेगा।"

आइए, अब एक दूसरी किताब की जाँच करते हैं।फ्रेंच सियासतदान हेनरी ए.उबिसिनि असल में एक इटैलियन लेकिन फ्रांस के टौइन शहर में पैदा हुआ,उसने अपनी

किताब **La Turquie Actuelle** (आज का तुर्की) **1267** (**1851**)में शाय हुई, उसने तुर्की में कई सालों तक रहने के वाद,इस्लाम को मंदरजाज़ेल तरीके से वयान किया ः

"इस्लाम के मज़हव ने इंसानियत को रहम करने और खयाल रखने का हुकूम दिया। गरीब लोगों को यूरोप से बेदखल कर दिया गया यह यह लेबल लगाकर कि वे "वेदिन" हैं, वे तुर्कियों के मुस्लिम दुनिया में उसके बादशाह के मेहमान रहे और आज़ादी और हिफ़ाज़त के साथ रहे, जो उन्हें उनके खुद के मुल्क में नसीब नहीं हुआ। हर किस्म के मज़हब के सारे रूकन के लिए एक जैसा रहम और एक जैसा इंसाफ़ दिखाया गया। यूरोपीय,जो कहतें हैं कि तुर्क और मुसलमान वर्वर है, उन्हें उनसे इंसानियत और मेहमाननवाज़ी के सवक सीखने चाहिए। एक लेखक जो **16**वीं सदी में रहता था उसने कहा ः 'अजीव,लेकिन मैं इस्लामी मुल्कों में सफ़र किया मैंने मुसलमान शहरों में, जिन्हे हम वर्वर करते हैं, उनमें न तो जुल्म होते हुए देखा और न ही कत्ल होते हुए। वे दूसरों के हुकूक की हिफ़ाज़त करते हैं। वे अकेले लोगों की तरफ़ बहुत मददगार होते हें। यह समझ आ गया है कि बूढ़े,जवान,ईसाई,यहूदी या मुसलमान,और यहाँ तक कि बेदिन के साथ भी एक जैसा इंसाफ़ और नरमाई बरती जाती है।' मैं इनसे मुतफ़िक हूँ।

Ubicini उसी किताव में इस तरह कहता है ः

"इस्तांवुल के शहर में एक जगह जिसे फातिह कहते, जहाँ ईसाई रहते हैं उस जगह पेरा (वेयगुलु) जिसे कहते हैं वहाँ रोज़ाना चोरी, डकैती और जुर्म रोनुमा होते हैं। यहाँ,लोग एक दूसरे को कत्ल करते हैं, और ये बुराई का एक अडडा बन चुका है यूरोप के वड़े शहरों की तरह। जवकि लाखो मुसलमान इस जगह जिसे फातिह कहते हैं वहाँ अमन,ईमानदारी और सुकून से रहते हैं, वहीं पेरा में रहने वाले **30,000** ईसाई दुनिया के लिए बेईमानी,खुलापन और वेशर्मी की नुमाईश करने वाले थे। इटालियन ने पेरा के लिए एक गाना बनाया था ः 'pera, dei sulirati il nido,' (पेरा आवारों का अडडा है।)वे यह गाना लगातार गाते थे।"

अव, हम यह खबर देना चाहते हैं कि एक मुलहिद इस्लाम के नवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के बारे में क्या कहता है। अपनी किताव **मुहम्मद**,जो हाल ही शाय हुई और **25** वेरूनी ज़वानों में तर्जुमा की गई, उसने कुछ आयात के मआनी अपनी सोच के मुताबिक तवदील कर दिए, लेकिन यह काफ़िर जिसका नाम मौक्सिमा रॉडिन्सन है, एक मार्क्स

वादी,एक कम्युनिस्ट और असलियत में एक एक यहूदी उसने कोई मज़हब कुबूल नहीं किया, और सारे पैगम्बरें (अलैहिमुससलवातु वतसलीमात) को मिरगी का मरीज़ मानता है जो भूत देखते थे। अगरचे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के मुतअल्लिक वह कहता हैः "दरहकीकत, हम इस शख्सीयत के बारे में बहुत कम जानते हैं जिनकी सोचों और सरगरमियों ने पूरी दुनिया को हिला दिया। लेकिन यह मुमकिन है देखना कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) एक ज़ाती रोशनी से चमकते रहते थे जो किसी और पर नज़र नहीं आती। यह वह शानदार रोशनी है जिससे आपके चारो और लोग इकटठा होते थे। हमें इसको तसलीम करना चाहिए। मैं खुद अपनी किताब में इस रोश्नी [हाले] को जितना मैं देख सकता था उतना लिखना चाहता हूँ।"

जैसे कि देखा गया है, यहाँ तक कि यूरोपीय लेखक भी इस्लाम मज़हब के कमाल को तसलीम करते हैं, इसके नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)की तारीफ़ करते हैं और कुरआन अल करीम को एक मुकम्मल किताब के तौर पर देखते है। लेकिन,वे खुद यह सोचते हैं कि यह किताब उन को अल्लाह तआला की तरफ़ से नहीं भेजी गई। उनका मानना है ः "यह हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म)के ज़रिए लिखी गई ः यानी, यह उनकी सोचने की ताकत का नतीजा है और एक वही नहीं है। लेकिन मुहम्मद (अलैहि सलाम), जो मुकम्मल ईमानदार थे,जानते थे कि वे असल में उन्हें अल्लाह तआला के ज़रिए भेजे गए।" इन में से कुछ तारीखदान का दावा है कि मुहम्मद (अलैहि सलाम)लिखना और पढ़ना जानते थे और यह कि उन्होने मज़हवी तालीम ईसाईयों (या यहूदियों) के मज़हबी आदमियों से हासिल की है। रोडिनसन,एक कम्युनिस्ट, जिसका ज़िक ऊपर किया गया,उसने यह साबित करने की कोशिश की कि लफ़्ज़ "**उम्मी**" (जाहिल), जो कुरआन अल करीम में आखिरी नबी के लिए वही किया गया और मुसलमानो के ज़रिए इस्तेमाल किया जाने वाले का मआनी यह नही है " एक शख्स जिसे न पढ़ना आता हो और न लिखना।" उसने यह साबित करने की कोशिश की कि इसका मतलब बिल्कुल मुखतलिफ़ है। उसने उस पादरी का नाम "वहीरा" बताया जिसने हमारे नबी को पढ़ाया।

वहीरा एक ईसाई राहिब था। कुछ दूसरे ज़राए में,उसका असली नाम कहा जाता है कि जियोर्जियस या सर्जियस था। इब्रानी ज़बान में,वहीरा[या वेहीरा]का मतलब "मशहूर" है और शायद यह इस राहिब के लिए इस्तेमाल किया जाता हो।

एक दिन हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम),जब आप **12** साल के थे,तो देखा कि अबू तालिब अपने आपको एक तिजारती सफ़र के लिए तैयार कर रहे हैं। जब अबू तालिब ने आपको बताया कि वे उन्हें अपने साथ नहीं ले जा सकते,तो आपने फरमाया, "आप इस शहर में मुझे किसी की देखरेख में छोड़कर जा रहे हैं?मेरे कोई बाप नही,न ही कोई मेरे लिए हमदर्दी रखेगा?" इन लफ़्ज़ों से उन पर गहरा असर हुआ,अबू तालिब ने उन्हें **अपने साथ ले जाने का फ़ैसला कर लिया**। लंबे सफ़र के बाद, तिजारती कारवान कुछ समय के लिए एक खानक़ा के पास रूके,जो बसरा के ईसाईयों की थी। इस खानक़ा में एक पादरी,जो साबका तौर पर एक गहरा यहूदी आलिम था और बाद में ईसाय्यत में बदल गया था, उसके पास एक किताब थी जो उसके पास कई नसलों की कड़ीयों से होती हुई पहुँची थी और जिसे वह पूछे गए मुखतलिफ़ सवालों के जवाब देने के लिए किताब हवाले की किताब के तौर पर इस्तेमाल करता था। वह क़ुरैश कारावान में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं रखता था,जबकि पिछले सालों में उसने इस इलाके का कई बार सफ़र किया था। हर सुबह वह खानक़ा से लगी एक छत पर जाता था और काफ़िरो को सिमत की और देखता था जैसे कि वह कुछ ग़ैर मामूली होने की उम्मीद रखता हो। इस वक्त पादरी बहीरा को कुछ हो गया; बहुत ख़ुशी में,वह हैरान होकर खड़ा हो गया। उसने एक बादल देखा, जो ऊपर चल रहा था और क़ुरैश कारवान की तकलीद कर रहा था। यह बादल दरहकीकत हमारे नबी को सूरज की गरमी से ढक रहा था। कारवान के मकीम होने के बाद,बहीरा ने यह भी देखा कि एक पेड़ की शाखें हमारे नबी पर झुकी हैं जिसके नीचे आप बैठे हुए थें। उसकी ख़ुशी बढ़ गई। फौरन,उसने खाने की मेज़ सजाने का हुकूम दिया। फिर उसने क़ुरैश कारवान के सारे लोगों को रात के खाने के लिए दावत दी। उन सबने दावत क़ुबूल कर ली, हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म)को कारवान की देख रेख करने के लिए छोड़ आए। बहीरा ने सारे मेहमानो को ग़ौर से जाँचा और पूछा, "अज़ीज़ क़ुरैश साहिबान, क्या आपके बीच में और कोई भी है जो खाने के लिए नहीं आया?" उन्होने कहा, "हाँ,वहाँ एक है।"बादल अभी तक वहीं था, जबकि सारे क़ुरैश आ चुके थे। जब उसने यह देखा तो वह जान गया कि वहाँ कोई है जिसे कारवान की हिफ़ाज़त करने के लिए छोड़ आए हैं। बहीरा ने उसके खाने पर आने के लिए ज़ोर दिया। जैसे ही नबी आए, बहीरा ने आपको देखा और बहुत ग़ौर से आपको जांचा। इसके बाद उसने अबू तालिब से पूछा, "क्या यह बच्चा तुम्हारी नस्ल का है?" अबू तालिब ने जवाब दिया, "यह मेरा बेटा है।" बहीरा ने तबसरा किया, "खास किताबों के मुताबिक, यह लिखा है कि इस लड़के के बाप ज़िंदा नहीं हैं; यह तुम्हारा बेटा नहीं है।" इस बार अबू तालिब ने जवाब दिया, "यह मेरे भाई का बेटा है।" बहीरा ने

पूछा,इसके बाप को क्या हुआ?" उन्होने जवाब दिया, "इसके बाप जैसा कि यह पैदा हुए मर गए थे।बहीरा ने कहा ः "तुम बिल्कुल ठीक हो।इसकी माँ को क्या हुआ?" अबू तालिब ने जवाब दिया, " वे भी मर गई हैं।" इन सारे सवालात की तसदीक करने के बाद, बहीरा हमारे नबी की तरफ़ मुड़ा और उनसे कुछ बुतों के नाम पर हल्फ़ लेने को कहा।लेकिन हमाारे नबी ने बहीरा से कहा ः "मुझ से इन बुतों के नाम मे हल्फ़ लेने को मत कहो।मेरे लिए इस दुनिया में इन से ज़्यादा खराब कोई दुश्मन नहीं।मैं इन सब से नफ़रत करता हूँ।" बहीरा ने फिर अल्लाह तआला के नाम के साथ हल्फ़ लेने को कहा और पूछा ः "क्या तुम सोते हो?" आपने फरमाया, "मेरा दिल नहीं सोता, अगरचे मेरी आँखे सोती हैं।" बहीरा ने बहुत सारे सवालात लगातार किए और उन सबके जवाब उसे मिल जाए।ये जवाबात सारे बिल्कुल उन किताबों से मिलते हुए थे जो उसने पहले पढ़ी थीं।फिर, हमारे प्यारे नबी की आँखो में देखते हुए,उसने अबू तालिब से पूछा, "क्या इन मुबारक आँखो में यह लाली इसी तरह रहती है?" "हाँ," उन्होने कहा, "हमने इसे कभी गायब होते हुए नहीं देखा।" उसके बाद,बहीरा नबुव्वत की मोहर देखना चाहता था अपने दिल को इस तरह के सुबूत देखने देखने के बाद शांत करना चाहता था।अगरचे,हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)अपने अज़ीम एहसानात की वजह से अपनी कमर को दिखाना नहीं चाहते थे, "ओह मेरी आँख के सेब,जैसा यह चाहता है वैसा करो।" इस पर हमारे नबी ने अपनी कमर दिखा दी और बहीरा ने नबुव्वत की मोहर की खुबसूरती को बड़े इतमिनान के साथ देखा।उसने उसे जोश से चूमा जबकि उसके चेहरे पर आँसू बह रह थे।फिर,उसने कहा, "मैं कबूल करता हूँ कि आप अल्लाह तआला के नबी हैं।" और तेज़ आवाज़ के साथ वह हर एक से मुखातिब हुआ ः "यहाँ काएनात का आका है...यहाँ काएनात का लार्ड है...यहाँ अज़ीम नबी है जिसे अल्लाह तआला ने सारी दुनिया के लिए एक रहमत की तरह भेजा।"कारवान के रूकन सब हैरान रह जाए; उन्होने कहा, "इस पादरी की आँख मे कितनी ज़्यादा अज़ीम और ऊँची अज़मत मुहम्मद (अलैहि सलाम) को दी गई है।" बहीरा फिर अबू तालिब की तरफ़ मुड़ा और कहा, "यह सबसे आखिरी और सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाले सारे नबियों में हैं।इनका मज़हब पूरी दुनिया में फैलेगा और सारे पिछले मज़ाहिब को खारिज कर देगा।इनको दमिश्क मत ले जाना।इस्राइल (यहूदी)के बेटे इनके दुश्मन हैं।मुझे डर है कि वे इस मुबारक शख्स को नुकसान पहुँचा सकते हैं।इनकी ताज़ीम में बहुत सारे हल्फ़ और वादे किए गए हैं। "अबू तालिब ने पूछा" "इन सब हल्फ़ और वादों का मतलब किया है, "उसने जवाब दियाः" अल्लाह तआला ने सारे नबियों जिसस (अलैहि सलाम)को

मिलकर सबको हुकूम दिया था कि अपनी उम्मत (मानने वालों का) आखिरी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के बारे में आगाह करो कि कौन आने वाला है।

अबू तालिब,ने बहीरा की यह बाते सुनने के बाद, दमिश्क जाने का अपना इरादा बदल दिया। उन्होने अपना सारा समान बसरा में बेच दिया और वापस मक्का आ गए। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म)की बहीरा के साथ यह पहली और आखिरी मुलाकात थी। इसलिए,बारह साल के लड़के के लिए यह नामुमकिन है कि इतने छोटे से वक्त में मज़हब के बारे में कोई भी मआनी भरी जानकारी हासिल कर पाते।

यहाँ तक कि कुछ ईसाई तारीखदानों ने दावा किया कि आखिरी नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)एक पादरी जिसका नाम मसतूरा था उससे सबक लेते थे (लेकिन, जैसे कि उन्होने खुद कबूल किया) वहाँ इसका कोई सबूत नहीं था। शायद,यह भी छोटी सी मुलाकात रही हो।

यह किस तरह मुमकिन है कि कुरआन अल करीम,जो इतनी अज़ीम है और असल में अल्लाह तआला का कलाम है,एक आदमी से वाबस्ता कर दी जाए? जब कुरआन अल करीम की जाँच की गई,यह देखा गया कि यह अपने आप में कुदरती कानून ज़ाहिर करता है, जिसके राज़ अभी हाल में हका किए गए, और ज़िंदगी का बजाते खुद इतरिका। (मिसाल के तौर परः पहली ज़िंदगी की शक्ल पानी से आती है; इंसानियत के लिए खाना बुनियादी तौर पर अनासिर से बनता है जो आसमान से नीचे आते हैं,वग़ैरह)इसके अलावा,आज जो समाजी निज़ाम हम पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं वह बहुत ज़्यादा तर्क और काबिले एतमाद तरीके से वाज़ेह किया जा चुका है। मिलकियत रखने में इंसाफ़ “ज़कात” के नाम में एहसास किया जाता है। सबसे ज़्यादा अच्छे अखलाकी उसूल और सबसे अच्छे इबादत के तरीके सिखाए जाते हैं। चाहे अगर वह कितना ही चलाक आदमी क्यों न हो, यह समझ और इल्म एक आदमी के लिए नामुमकिन है जिसने कभी कोई एक किताब न पढ़ी हो, या फिर इस जानकारी के लिए जानना य इसे **1400** सालों पहले लिखना। जब एक आयत (मिसरा)कुरआन अल करीम का नीचे उतरता था,तो नबी को भी इसके पूरे मआनी नहीं मालूम होते थे,लेकिन वे जिब्राइल (अलैहि सलाम)से इसे सीखने की गरज़ से पूछते रहते थे। अगर यूरोपीय उनकी नबुव्वत कबूल करलें,तो इसमें कोई शक नहीं कि वे मुसलमान बन जाएँ और इस तरह अबदी खुशी हासिल करलें। हम उम्मीद करते हैं कि

मुसतकबिल में वे सच्चे मज़हब को तरजीह देंगे और इस तरह ना खत्म होने वाली खुशियाँ (आसमान)पाएँगे ।

---

## हुसैन हिल्मी इश्कि

## रहमत-अल्लाहि अलैह

हुसैन हिल्मी इश्कि,रहमत-अल्लाहि अलैह,हकीकत कितेबेवी इशाअत के इशाअतकरदह,अय्यूब सुल्तान,इस्तांबुल में **1329**(ए.डी. **1911**)में पैदा हुए।

एक सौ चवालीस किताबों में से जो उन्होने शाय की साठ अरबी में थीं, पच्चीस फारसी में, चौदह तुर्की में,और बाकी फ्रेंच,जर्मन,अंग्रेज़ी,रूसी और दूसरी ज़बानों में।

हुसैन हिल्मी इश्कि, 'रहमत-अल्लाही अलैह(सय्यैद अबदुलहकिम अरवासी,रहमत -अल्लाही अलैह की रहनुमाई में,जो एक गहरे मज़हब के आलिम और तसव्वुफ़ की फज़ीलत में कामिल और शर्गिदों को पूरी तरह से बालिग़ तरीके से रहनुमाई करने के काबिल; चमक और हिकमत के मालिक), वे एक काबिल,आला इस्लामी आलिम खुशियों की तरफ़ रहनुमाई करने वाले,**25** अक्टूबर **2001**(**8** शाबान **1422**) की रात के बीच रहलत फरमा गए।वे जहाँ पैदा हुए थे वहीं अय्यूब सुल्तान में दफना दिए गए।

### क्या इस्लाम में फलसफ़ा करने की इजाज़त है?

अब तक, हमने मुखतसिर तौर पर दूसरे मज़ाहिब के बुनियादी अकीदे और उसूलों की जाँच कीं और वाज़ेह किया कि हम उनके बारे में क्या सोचते हैं।अब,इस्लाम मज़हब के बारे में क्या? सबसे पहले, क्या इस्लाम में फलसफ़ा करने की इजाज़त है?

फ्लसफ़ा नतीजों का नाम है आदमियों के ज़रिए खोजा गया कुछ मज़मून की जाँच और रिसर्च करके अपनी अक्ल,तर्क और तर्जुबो का इस्तेमाल करते हुए।मुखतसिर में,इसका मतलब है : "हर चीज़ की इबतिदा के बारे में देखना और इसके वजूद में आने की वजूहात को ढूँढना।" फिलॉसफ़ी का मतलब है "फिलोसफिआ"(इल्म के लिए प्यार)ग्रीक ज़बान में,

और यह गहरी सोच,ढूढँना,मिलाना,और जाँच की बुनियादो पर मुबनी है।जो फिलोसफ़ी से डील करते हैं उनके लिए ज़रूरी है कि उन्हें साईस साथ ही साथ नफ़सियात की गहरी जानकारी होनी चाहिए।बहरहाल,कोई मसला नही कि एक शख्स को कितनी जानकारी है,वह अपनी सोचों में गलत हो सकता है, या तर्जुबे के खात्में पर, उसका नतीजा गलत भी हो सकता है।इस वजह से फलसफ़े के ज़रिए से निकाले गए नताईज कोई ज़मानत नहीं होती।

कुरआन अल करीम में दो किस्म की आयात(मिसरे)हैं।कुछ आयात(मिसरो)के मआनी बहुत साफ़ वाज़ेह हैं।इन्हें "**मुहकम आयात**"(मज़बूत आयात)कहा जाता है।कुछ आयात के मआनी आसानी से समझ नहीं आते।उन्हें वाज़ेह करने की ज़रूरत पड़ती है।इन आयात को "**मुतेशाबिह आयात**"(दरजानतो आयात)कहते हैं।हदीस,जो नबी(सल्लल्लाहु तआल अलैहि वसल्लम)का कलाम है,दो हिस्सो में तकसीम है,यानी,मज़बूत वाली और दरजनात वाली।इन की तफ़सीर की ज़रूरत ने एक साईसं जिसे "**इजतिहाद**" कहते हैं उसका कयाम किया इस्लाम के मज़हब में।हमारे नबी(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म)ने खुद भी, इजतिहाद का अमल किया।वे इजतिहाद हमारे नबी और आपके सहाबी(साथियों[रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन]) के ज़रिए किए गए वे इस्लामी इल्म के अहम ज़राए हैं।जब नए मुसलमान पूछते हैं उन चीज़ों के बारे में जिन्हें पहले वे पाक मानते थे और इस्लाम उनके बारे में क्या सोचता है, तो इस्लामी आलिम उनके सवालों के जबाब देते हैं।उसूली अकाईद के बारे में पूछे गए सवालो के जबाब इस्लामी इल्म की एक शाखा कायम करते हैं जिसे **कलाम** कहते हैं। "कलाम" के आलिम उन्हें तर्क के साथ साबित करते हैं कि क्यों उनके पिछले मज़ाहिब गलत थे।ये आलिम(रहिमाहुमल्लाहु तआला)इन मामलो को सुलझाने के लिए बहुत सख्त कोशिश करते हैं।बहुत सारे हकाईक साथ में कीमती इल्म "तर्क " का वजूद में आता है।दूसरी तरफ़,इन नए मुसलमानो को अल्लाह के बारे में इन हकाईक को बताना ज़रूरी हैः वह एक है, हमेशा रहने वाला; उसका कोई बाप नहीं, न ही वह किसी का बाप है।यह इस तरीके से होना चाहिए जो आसानी के साथ समझ आ जाए।कलाम के आलिम अपनी कोशिशो बहुत कामयाब होते हैं।अगरचे, इस्लामी साईसंदान उन्हें इस काम में मदद करते हैं।मिसाल के तौर पर, याकूब इब्न इस्हाक अल-किंदी,मंतिक के और फलकियात के आलिम,कई सालों तक पढ़ते रहे बुतपरस्त सबि 'ई और बसन अ, जो सितारों को मुकददस मानते थे, उनको उनके गलत अकीदे से दूर करने के लिए।आखिरकार, उन्होने साबित कर दिया कई सबूत दिखाकर कि उनके अकीदे गलत थे।यह कहते हुए अफ़सोस होता है कि, बहरहाल, वह खुद कदीमी ग्रीक फलसफ़ियों के

नज़रियों से मुतासिर थे और एक ग्रुप में शामिल हो गए जिसे "मुतअज़ला" कहा जाता था। वे **260**(**873**) बग़दाद में फ़ौत हो गए।

हारून रशीद( हारून रशीद की मौत टास में **193**(**809** ए.डी) में हुई। )पाँचवे अब्बासी खलीफ़ा के दौर में बग़दाद में एक इदारा "दारूलहिकमा" नाम से कायम किया गया। यह इदारा एक बड़ा तर्जुमाती मर्कज़ था। न सिर्फ़ बग़दाद में,बल्कि दमिश्क,हरराम, और एंटिओचिया(अंतकया)मे भी ऐसे साईंस के मर्कज़ खोले गए। इन दफ़तरों में ग्रीक और लैटिन में लिखा हुआ काम तर्जुमा किया जाता था साथ ही साथ इंडियन और फ़ारसी ज़बानों में लिखी गई किताबें भी तर्जुमा की गई। असल में,असली रेनांसा(कदीमी कीमती काम की तरफ़ वापसी) सबसे पहले बग़दाद शहर में शुरू हुआ। पहली बार,प्लेटो, porphyrios,अरस्तु के कामों को अरबी ज़बान में तर्जुमा किया गया। इन कामों को बारीकी के साथ इस्लामी आलिमों(रहिमाहुमल्लाहु तआला) के ज़रिए जाँचा जाता था। वे नतीजा निकालते कि ग्रीक और लैटिन फलसफ़ियों की कुछ राए सही थी,लेकिन उनमें से ज़्यादातर नुक्स वाली होतीं। वे "**मुहकम** आयात,हदाईस,तर्क/मंतिक और अक्ल के बरअक्स थीं।" यह खोजा गया कि ये ज़्यादातर साईंसी और मज़हबी हकाईक से लाइल्म थी,और यह कि उन्होने ज़्यादातर गलतियाँ उन महवर पर कीं जो अक्ल के ज़रिए नहीं समझी जा सकतीं। असली इस्लामी आलिमों, जैसे इमाम-ए-ग़ज़ाली और इमाम-ए-रब्बानी(रहिमाहुम्ल्लाहु तआला)ने देखा कि ये फिलॉसफ़र ईमान से मुंसलिक सबसे अहम बुनियादी बातों पर यकीन नहीं रखते; नतीजे के तौर पर,मुसलमान आलिम तफ़सील से इन गलत यकीनों के बारे में खबर देते थे जो वे रखते थे और जो उन्हें काफ़िर बनाने का सबब बनते थे। इस मामले पर इमाम-ए-गज़ाली के ज़रिए लिखी गई किताब जिसे **अल-मुनकिज़ अनिददलाल** में तफ़सीली जानकारी है। जबकि इस्लामी आलिम "मुताशाबिह" आयात (मिसरो)की और हदीसों की वज़ाहत कर रहे थे,वे मान रहे थे(मुनहसिर थे) सिर्फ़ इजतिहाद को जो नबी मुहम्मद(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) और आपके सहाबा(साथियों)के ज़रिए दिए गए। उन्होने कदीमी फॅलासफ़रों की राए को जो इस्लाम के बरअक्स थी उसे नामंजूर कर दिया; इस तरह उन्होने इस्लाम को खराब होने से बचा लिया जैसे कि ईसाय्य्त में किया गया था। लेकिन,लाइल्म मज़हबी आदमियों ने अपने आपको ऐसे फलसाफ़ियों पर छोड़ दिया यह सोचते हुए कि उनका हर लफ़्ज़ सच्चा है। इस तरह,एक खराब अकीदा इस्लाम में कायम हो गया "मुअतज़िला" कहा गया हमारे नबी(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)ने ज़ाहिर किया कि इस्लाम में **72** खराब अकीदे कायम हो जएंगे। कुछ फलसफ़ी ग्रीक,लैटिन,इंडियन ,फ़ारसी

फिलोसफियों से मुतासिर हो गए, जैसे कि इवनि सीना,फ़ारावी,इवनि तुफ़ैल,इवनि रूश्द,और इवनि वास ज़ाहिए हो गए। ये कुछ मामलों में क़ुरआन अल करीम के सच्चे रास्ते से भटक गए। इवनि ख़लदुन (इवनि ख़लदुन **808** (**1406** ए.डी.)में रहलत फरमा गए। )ने इस्लामी इल्म को दो हिस्सो जिनका नाम,"**उलूम-ए-नकलिय्या**"[तफ़सीर,किरात,हदीस,फिकह, फराइज़कलाम,तसव्वुफ़] और**उलूम-ए-अकलिया**[मंतिक,तवियात,क़ुदरत,कैमिस्ट्री,निसाव,ज्यामेट्री,माप,मुनाज़रा,फलकियात]। पहला ग्रुप "मज़हवी इल्म" कहा जाता है। दूसरे ग्रुप में कुछ शाखाँए, जो तर्जुवे के ज़रिए समझे जाते हैं, उन्हें "साईंसी इल्म" कहते हैं।

इमाम-ए मुहम्मद गज़ाली (रहिमा-हुल्लाहु तआला)दाई गुट के शित्ते फिरके के अराकीन के खिलाफ़ जद्दोजहद करते रहे, जो **72** भटके हुए फिरको में से सवसे पहले थे। दाई की फिलासफ़ी के मुताविक,क़ुरआन अल करीम के दो पहलू है,यानी,अंदरूनी पहलू (वातिनी[छुपा हुआ]) और दूसरा पहलू (ज़ाहिरी[खुला हुआ]) वे अपने आपको "वतिनी ग्रुप" कहलाते हैं। इमाम-ए-गज़ाली (रहिमा-हुल्लाहु तआला)ने आसानी से उनकी फिलासफ़ी को नामंजूर कर दिया। उनके हारने के वाद, वे इस्लाम से ज़्यादा से ज़्यादा भटक गए आयात (मिसरो)और हदीस-ए-शरीफ़ को गलत मआनी देकर जिनके मआनी उन्हें वाज़ेह नहीं थे। आखिर में, वे "**मुलहिद**" विदअती वन गए। इसके अलावा,चुंकि वे सियासी तौर पर भी अमल में थे, वे **अहल-ए-सुन्नत** मुसलमानों (सच्चे मुसलमानों) के लिए नाकाविले वरदाश्त और एक वड़ी परेशानी वन गए।

शियाओं ने इस्लामी मज़हव की एक नई फिलासफ़ी के साथ मिला दिया और खुद हज़रत अली (रज़ी अल्लाहु अन्ह) के मानने वालों का दावा करने लगे। इसके वाद शियाओं की मुख्तलिफ़ शाखाएँ ज़ाहिर होने लगीं। एक ग्रुप जिसे खवारिज कहा गया उसने अपने आपको हज़रत अली की तकलीद करने वालो के तौर पर दावा किया,लेकिन वाद में वे उनके दुश्मन वन गए। उनके फलसफ़े के मुताविक "एक मुसलमान जो एक वड़ा गुनाह करता है एक काफ़िर वन जाता है।" इस वजह से वे दावा करते हैं कि हज़रत अली और हज़रत मआविया (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा) काफ़िरून (काफ़िर) हैं। वाद में, इस नज़रिए के वरअक्स एक नया मुवनी हैं और कहते हैं, "आदमी इस दुनिया में एक मुसलमान के वारे में इंसाफ़ नहीं कर सकता जिसने एक वड़ा गुनाह किया हो। जैसे कि दूसरे मुसलमान का कत्ल करना। इनके मुतअल्लिक इंसाफ़ आखिरत में अल्लाह तआला के ज़रिए किया जाएगा। इस वजह से ये ग्रुप न तो मुसलमान हैं न ही काफ़िर (वेदीन)।" इस नई फिलासफ़ी के मानने वालों को "मुअतज़िला" कहते हैं। एक दूसरी फिलासफी जो शियाओं से निकल

कर आई है "**गालिय**" नाम से जिसका मतलव है "वढ़ा चढ़ाकर"। उन्होने दावा किया कि जन्नत और दोज़ख ज़मीन पर हैं। वे मुकम्मल तौर पर काफ़िरून (वेदीन)हैं। उनके वीच में और इस्लाम के मज़हव में कोई रिश्ता नहीं है।

दुश्मन जो इस्लाम को अंदरूनी तौर पर खत्म करना चाहते हैं उन्होने इस्लाम के नाम में अपने आपको छुपाकर नए खराव ग्रुप कायम कर लिए हैं। वहाई ,कादिआनी और तवलीग़-ए-जमाअत सवसे ज़्यादा शरारती ग्रुप हैं।

**1. बहाई** ः उनका चीफ़ एक फारसी जिसका नाम अलवाव अली है। वह अपने आपको एक शीशा कहलवाता था। वह कहा करता था कि, अल्लाह इस शीशे में नज़र आता है। जव वह मर गया, तो वहाउल्लाह और फिर वहाउल्लाह का वेटा, अव्वास उनके चीफ़ वन गए। जव अव्वास **1339** (**1921** ए.डी.)में फौत हो गया तो उसके वेटे शाकी ने उसकी जगह ले ली। वहाउल्लाह कहता था कि वह एक नवी है। उनके मुताविक **19** एक पाक नम्वर है। हर किस्म की ग़ैरअखलाकियात एक इज़्ज़त समझी जाती। उनकी मुखतलिफ़ ज़वानों में कई कितावे हैं। वे जानते थे कि लोगों को किस तरह आसानी से धोका दिया जा सकता है।

**2. कादिआनी** ः इनको अहमदी भी कहा जाता है। एम.अवू ज़ोहरा, जामि उल-अज़हर में एक प्रोफ़ेसर ने कहा, "मिर्ज़ा अहमद कादिआनिस्म का वानी **1326** (**1908** ए.डी.) में फौत हो गया। उसे लाहौर के नज़दीक कादियन शहर में दफ़नाया गया। वे कहते हैं कि, "ईसा (अलैहि सलाम)यहूदियों से वचकर कश्मीर में आए थे। वे कश्मीर में फौत हो गए।" वे अहमद कादिआनी को एक नवी कहते थे। "वे कहते थे," कि कुरआन अल करीम ज़ाहिर करता है कि यहूदी और ईसाई अच्छे लोग हैं। इसलिए अंग्रेज़ों को प्यार करना एक इवादत का काम है।" वे कहते हैं, "एहकामात जिसमें जिहाद शमिल है वे वातिल और वेकार हो चुका है। अगर हमें कोई काफ़िर नहीं वुलाता,तो हम उसे एक काफिर नहीं वुलाते।"हम अपनी वेटियों को ग़ैर कादियानियों से शादी की इजाज़त नहीं देते। लेकिन हम उनकी लड़कीयों से शादी कर सकते हैं।" वे उन मुसलमानों पर कलंक लगाते है जो उन्हें 'काफ़िर वग़ैर एक पाक किताव के' नहीं मानते।

अल्लामा हुसैन मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैह),दीर-ए-नूर मदरसे में एक मुदर्रिस थे,अपनी किताव **अर-रदद अलल-कादिआनिया** में कादियानी के लफ़्ज़ तफसील से लिखते हैं जो कुफ्र का सवव वने। काफ़िर अपने आपको कुछ नामों में छुपा लेते है और अपने

आपको मुसलमान के तौर पर तआरूफ़ कराते हैं। वे ईसाई और यहूदियों को झूठा ठहराते हैं और इस हकीकत को साबित करते हैं कि इस्लाम वाहिद सच्चा मज़हब है और ख़ुशियों के लिए वाहिद रहनुमा। यह देखकर,दूसरे लोग फौरन मुसलमान बन जाते हैं। ताहम बहाई ,कादियानी, शिया और वहाबी इन गरीब लोगों को अपने खराब ग्रुपों की तरफ़ रहनुमाई करते हैं। तब्वियात का आलिम अब्दुससलाम,जिसने नोबेल इनाम जीता, एक कादिआनी है। दीदत,जिसने **1980** में ईसाईयों के साथ बहस करके उन्हें इस्लाम की तरफ़ राग़िब किया था, वह एक सुन्नी मुसलमान भी नहीं था। ऐसे लोग इस्लाम में नए शामिल होने वालो को अहल-ए-सुन्नत के सच्चे रास्ते से और अवदी ख़ुशी हासिल करने से रोकते हैं।

सूफ़ी सच्चे मुसलमानों का एक ग्रुप है जिन्हें **अहले -सुन्नत** कहा जाता है। ये लोग फिलासफ़ी की तरफ़ नहीं झुकते। इनके मुताविक,क़ुरआन अल करीम की मुकम्मल समझ, और इस तरह एक सच्चा मुसलमान बनाने के लिए, हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मुकम्मल खिराजे तहसीन पेश करना चाहिए होता है, न सिर्फ़ उनके अहकामात और ममनुआत ,बल्कि अपने आपको मुकम्मल तौर पर आपके बरताओ और अखलाकी तरज़े अमल को अपनाकर हासिल कर सकते हैं।

**तसव्वुफ़ के लायक आदमी** ः कुछ लोग सूफ़ी कहलते हैं सच्चे मुसलमानो में ज़ाहिर होते हैं,दूसरे लफ़्ज़ों में "अहल अस-सुन्नत" मुसलमान। एक सूफ़ी कभी फिलोसफ़ी में शमिल नहीं होता। वे कहते हीं कि एक असली मुसलमान होने के लिए और क़ुरआन अल करीम को समझने के लिए, यह ज़रूरी है कि हमारे नबी(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म)न सिर्फ उनके हुकूम और ममनुआत को अंजाम दिया जाए, बल्कि उनके सारे दस्तूर साथ ही साथ उनके अखलाकी उसूलों को भी अंजाम दिया जाए। सूफ़ीइस्म की बुनियादी बातें मंदरजाज़ेल हैं ः

1) फ़कर, जिसका मतलब है, "हमेशा बाखबर रहना कि तुम्हें हमेशा अल्लाह तआला चाहिए। उनके मुताविक, "कोई नहीं बल्कि अल्लाह तआला कुछ भी तखलीक कर सकता है। लेकिन,मुखतलिफ़ चीज़े एक ज़रिया बन जाती है जिसके ज़रिए अल्लाह तआला तखलीक करता है। अल्लाह तआला सबका खालिक है।"

2) जुहद और तकवा ः "अपने आपको इस्लाम के लिए अपनाए; अपनी रोज़मर्रा ज़िंदगी में सारे इस्लाम के उसूल अपनाएँ; मददगार बने और अपने खाली वक्त में इबादत करें।" इस

वक्त, लफ़्ज़ "सुफु" "सूफ़ी" के बजाए इस्तेमाल होता है उन लोगों को हवाले के लिए जो पाक हैं।

**3**) तफ़ककुर, खामोशी और ज़िक्र ः "अल्लाह तआला और उसकी रहमतों के बारे में लगातार सोचते रहना; ग़ैर ज़रूरी बात न करना; किसी से बहस न करना; जितना मुमकिन हो उतना कम बात करना, अपने आपको बार बार अल्लाह तआला का नाम दोहराते रहना।"

**4**) हाल ओर मकाम ः "रोश्नी (इल्म) तुम्हारे पास आ रहा है, उसके ज़रिए समझना,कि कितनी हद तक तुम्हारा दिल और रूह पाक हो सकते हैं।" "अपनी हदों के बारे में आगाह रहना।"

पहले और सबसे ज़्यादा मशहूर "सूफ़ी" हसन अल बसरी (रज़ी अल्लाहु तआला अन्ह)थे **21-100 (624-727**) हसन अल बसरी इतने ज़्यादा अज़ीम इस्लामी आलिम थे कि उन्हें सारे मुसलमानो के ज़रिए इमाम (मुज़तहीद)कुबूल किया गया। वे अपने बेहतरीन किरादार साथ ही साथ नाकाबिले यकीन इल्म के लिए मशहूर थे। वे जबकि तबलीग़ कर रहे होते, तो अपने सुनने वालों के दिलो में अल्लाह तआला का खौफ़ डाल देते। वे हादईस के अज़ीम आलिम थे जिनके ज़रिए बहुत सारी हदीसे मुंतकिल हुई।

**वासिल बिन अता,** मोअतज़िल फिलोसफ़ी का बनी; इसन-ए बसरी का एक शार्गिद था। लेकिन, उसने अल-बसरी की तालीमात छोड़ दीं। **मोअतज़िल** का मतलब है अलग किया हुआ। दूसरा नाम **मोअतज़िल** के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला वो है **कदरिया**। यह इसलिए इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि वे कद्र (किस्मत को इंकार करते हें। वे दावा करते हैं ः "आदमी जो करता है उसका वह खालिक है। अल्लाह कभी बुराई तखलीख नही करता। आदमी के अंदर काबिलियत है इच्छा और तखलीख की। ताहम, अगर वह एक बुराई का काम करता है तो वह उसके लिए पूरे तौर ज़िम्मेदार है। यह नामुमकिन है कि ज़िम्मेदारी को लफ़्ज़ किस्मत या अल्लाह की मरज़ी कहकर नज़रअंदाज़ कर देना।" यह सोच, जिसे "कदरिया" कहा जाता है, वासिल बिन अता के ज़रिए इसे तजवीज़ किया गया, जो हसन अल बसरी का शार्गिद था और जो लगातार उनके सबक में हाज़िर था। इस वजह से हसन अल बसरी, जो किस्मत में यकीन रखते थे, उसे अपने शार्गिद के तौर पर नहीं मानते थे।

“ **तसव्वुफ़ के लोगो**” के मुताबिक, यानी,सूफियो, हकीकी वजूद सिर्फ़ अल्लाह तआला का है। अल्लाह तआला मुतलक वजूद है, मुतलक खूबी है, मुतलक खुबसूरती है। जबकि वह खुफ़िया खज़ाना है वह खुद को पहचानना चाहता है। इसी वजह से उसने यह दुनिया तखलीक की और उस पर चीज़ें। लेकिन अल्लाह तआला अपनी किसी तखलीक में दाखिल नहीं होता। (यानी,वह उनमें से किसी में नहीं है।)कोई अल्लाह तआला की पोज़ीशन हासिल नहीं कर सकता। वह आदमी की सिफ़ात तखलीक करता है अपनी खुद की सिफ़ात से मिलती हुई। लेकिन,यह शबाहत इतनी छोटी होती है कि अगर मान लो उसकी सिफ़ात समुंद्र है, तो आदमी की सिफ़ात उसकी सतह पर सिर्फ़ एक बुलबुले के बराबर है।

तसव्वुफ़ का मकसद “**मारिफ़ात-ए-इलाहिया**” हासिल करना है। मारिफ़ात-ए-इलाहिया का मतलब है अल्लाह तआला की सिफ़ात जानना। यह एक इंसानी मखलूक के लिए नामुमकिन है उसकी शखसियत को जानना। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)ने फरमाया : “**अल्लाह तआला की शखसियत के बारे में मत सोचो। उसकी रहमतों के बारे मे सोचो**।” यानी, हमें इस बारें में नहीं सोचना चाहिए कि अल्लाह तआला क्या है, बल्कि उसकी सिफ़ात और उसकी रहमतों के बारे में सोचना चाहिए जो उसने इंसानियत को बखशी। एक बार आपने कहा : “**जब तुम अल्लाह तआला की शखसियत के बारे में साचते हो तो, तुम्हारे दिमाग़ में जो आता है वह अल्लाह नहीं होता**।” आदमी की अक्ल की सलाहियत और काबिलियत महदुद है। वह इन हदूद से आगे की चीज़ो को नही समझ सकता। अगर वह उनके बारे में सोचेगा तो गलती करेगा। उसे सच्चाई हासिल नहीं होगी। आदमी की अक्ल और सोच मज़हबी इल्म की कशिदगी ओर राज़ को नहीं जान पाएगी। यही वजह कि लोग जो फिलोसफ़ी और मज़हबी इल्म को मिला देते हैं वे इस्लाम के बताए हुए सच्चे रास्ते से भटक जाते हैं और “**बिदअती लोग**” या “**मुंतकिब**” बन जाते हैं। बिदअती लोग काफिरून (बेदीन)नहीं हैं; वे मुसलमान हैं। लेकिन वे सही रास्ते से भटक गए हैं,और वे **72** बिदअती फिरको में से एक बन गए हैं। चूंकि फलसफ़े के ये शिकार मुसलमान हैं, उनकी कुरआन अल करीम की गलत तफ़सीर उनके काफ़िर बनने का सबब नहीं है। हम इस तरह सोच सकते हैं : “वहाँ इस्लामी फलसफ़े के नाम में कुछ भी नहीं है। वहाँ कुछ लोग हैं जिन्होने फलसफ़े को इस्लाम से मिला दिया।”अहले-सुन्नत के आलिमों के मुताबिक, इस्लामी इल्म का ज़रिया मुहकम आयात (वाज़ेह मतलब के साथ) और हदीसें हैं, न की इंसानी अक्ल य इंसानी सोच। “तसव्वुफ़” की बुनियाद है खुद को जानना (अपनी कमज़ोरियों और नाअहलियत को जानना) (तसव्वुफ़ अल्लाह के प्यार,शानदार मुहब्बत पर

मुबनी है। यह सिर्फ़ अपने आपको मुहम्मद (अलैहि सलाम) के मुताबिक ढाल कर हासिल किया जा सकता है। जब कोई तसव्वूफ़ के रास्ते की तरफ़ बढ़ता है तो बेशुमार वाक्यात उसके दिल में पैदा होते हैं। उनमें से एक है "**वहदत-ए-वुजूद**" यानी, "एक मोजूद है; तखलीक अल्लाह का ज़हूर है।" हाँ, जैसा कि कुरआन अल करीम मे ज़ाहिर है, अल्लाह तआला इंसानो के दिलों में अपने आपको ज़ाहिर करता है। लेकिन, यह ज़ाहिर सिर्फ़ उसकी सिफ़ात का ज़हूर होता है। इसका अक्ल से कोई राब्ता नहीं होता। तसव्वुफ़ के आदमियों को अपने दिलों में अल्लाह तआला का ज़हूर महसूस होता है। यही वजह है कि मौत उनके लिए एक तबाही नहीं है, बल्कि कुछ अच्छी और मीठी है। इसका मतलब है अल्लाह तआला की तरफ़ लौटना; उनके लिए यह ख़ुशी का बाइस है। मौलाना जलाल उद्दीन रूमी (जलाल ऊद्दीन-ए-रूमी कोन्या में **672** (**1273** ए.डी.) में रहलत फरमा गए।) (रहिमाहुल्लाहु तआला) एक अज़ीम मुतसबवुफ (तसव्वुफ़ के अज़ीम आदमी) मौत को "शब-ए-उरूस" कहते थे (शादी की रात)। तसव्वुफ़ के रास्ते में कोई गम या नाउम्मीदी नहीं है। वहाँ सिर्फ़ प्यार और ज़हूर है। मौलाना ने कहा ः "हमारे दरवाज़ा नाउम्मीद लोगों का दरवाज़ा नहीं है।" उनके असली लफ़्ज़ है ः "बाज़ा, बाज़ा, हर अंससे हसती, बाज़ा" (आओ, आओ, तुम जो कोई भी हो आओ, आओ चाहे अगर तुम एक दोहरी हो, एक ज़ोरास्ट्रियन हो या एक बुतपरस्त। यहाँ कोई नाउम्मीदी का दरवाज़ा नहीं है। यहाँ आओ चाहे अगर तुमने अपनी कसम सौ बार तोड़ी हो। )वहाँ तसव्वुफ़ के आदमियों में कुछ अज़ीम औलिया (संत)हैं, जैसे कि इमाम-ए-रब्बानी, जुनैद-ए-बग़दादी, अबदुलकादिर-ए-जिलानी, मौलाना जलाल ऊद्दीन रूमी और कुछ अल्लाह के चाहने वाले जैसे सुल्तान वलेद, यूनुस एमर, मौलेना खालिद बग़दाद के। "वहदत-ए-वजूद तसव्वुफ़ का मकसद या आखिरी सीढ़ी नहीं है। बल्कि, यह कशफ़ है जो असली मकसद के रास्ते पर चलने वालो के दिलों में आता है, जिसका अक्ल के साथ, सोच या मादियत के साथ कोई राब्ता नहीं होता। वे दिलों में नहीं होते, बल्कि ये दिलों में ज़ाहिर हो जाते हैं। यही वजह है कि यह कहना बेहतर है कि "वहदत-ए-शुहूद" बजाए इसके "वहदत-ए-वजूद"। जब इंसानी दिल पाक होता है तो यह शीशे की तरह हो जाता है। वे चीज़े जो दिल में ज़ाहिर होती हैं वे अल्लाह तआला की शखसियत नहीं होती। वे सिफ़त भी नहीं है। वे उसकी सिफ़ात के रंग, तसावीर हैं। अल्लाह तआला इंसानी मखलूक को अपनी खुद की असली सिफ़ात से मिलती हुई कुछ सिफ़ात देता है जैसे कि सम (सुनना), बसर (देखना), इल्म (इल्हाम)। जो उसके ज़रिए दी जाती हैं वे उसकी सिफ़ात की तरह नही होतीं। उसका देखना अबदी, हमेशा के लिए है। वे लगातार सब चीज़े देखता है। वह बग़ैर किसी ज़रिए, औज़ार क देखता है। इंसानी बसर इस तरह की नहीं है। यही

वजह है उसका देखना असली देखना है। हम कहते है कि इंसान का देखना एक तसवीर है, उस असली देखने का रंग। उसके देखने या सुनने का साया अपने आपको इंसानी आँखो के ज़रिए ज़ाहिर करना हुआ,या बिलतरतीब कान,इसी तरह, उसकी सिफ़ात के बहुत सारे रंग, जैसे कि उसका प्यार,उसका जानना इंसानी दिलों में ज़ाहिर हो जाता है। जैसे कि देखने के लिए आँखो का बीमार होना या बीमारी नहीं होनी चाहिए,यह ज़रूरी है दिल के लिए इन ज़हूर को हासिल करने के लिए बीमार न हो।

दिल की बीमारी को ठीक करने के लिए ज़रूरी दवाई तीन चीज़ों से बनती है। उनका सच्चा यकीन रखना जैसे कि अहले सुन्नत के आलिमों के ज़रिए बताया गया, इबादत,और ममनुअ बताई गई चीज़ों को नज़र अंदाज़ (गैर हाज़िर होना) करना। अफ़सोस होता है कहते हुए, वे जो नहीं जानते कि इस्लामी मज़हब या तसव्वुफ़ क्या है वे मज़हब को दुनियावी फायदे हासिल करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। तसव्वुफ़ के रास्ते को मिलाना, और यहाँ तक कि इबादत के अमाल को, मौसिकी के साथ मिलाना सुफ़याना हवा बनाने के लिए, जैसा के थे, इन धोकेबाज़ों मज़हबी रसूम को नाच में मौसिकी के आलात के बदल दिया,[मिवलेवी तकरीबात की तरह] घूमते हुए दरवेश बेलनाकार टोपियों को अपने सिर पर लगाए जो मकबरे के पत्थरों से मिलती हुई ,अपना सीधे हाथों को आसमान पर उठाए और उलटे हाथो को नीचे झुकाए ,जिसका मतलब है कि जैसा कि वे बोलते हैं कि, वे जन्नत में है और आसमानो के फलों को ज़मीन पर ला रहे हैं। बहरहाल इन अमाल का इस्लाम के साथ कोई लेना देना नहीं, और इनका किसी एक आयत या हदीस-ए-शरीफ़ में कोई ज़िक्र नही, ले लोग अपने आपको सुफ़याना और इस्लामी रसूम के नाम में पेश करते हैं। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आपके किसी साथी ( सहाबा[रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन]) ने ऐसी किसी तकरीबात को अदा नहीं किया। उनके वक्त में तसव्वुफ़ था। लेकिन, वहाँ कोई दरवेश तकरीबात नहीं थी। आज, बहुत सारे ग़ैर मुल्की लोग पुरी दुनिया से तुर्की में आते हैं इन तकरीबात को देखने के लिए। यह बिदअती फलसफ़ा सारी ग़ैर मुल्की किताबों में जो तसव्वुफ़ लिखी गई उनमें इसका ज़िक है। इमाम-ए-गज़ाली (रहिमा हुल्लाहु तआला) "कलाम" के इल्म में अज़ीम इस्लामी आलिम थे,साथ ही साथ तसव्वुफ़ के मैदान में सच्चे माहिर भी थे। यह कहा गया कि अबुसऊद एफ़ंदी (रहिमा हुल्लाहु तआला) **896-982 (1490-1574)** में एक अज़ीम इस्लामी आलिम थे, शानदार सुल्तान सुलेमान (रहिमा हुल्लाहु तआला) के लिए शैख उल-इस्लाम, तसव्वुफ़ के आदमियों को बुरी तरह पेश आते थे; उन्होने एक रसमी फैसला लिया कि इन्हें फाँसी पर लटका दिया

जाए।यह बोहतान सच नहीं है।अबुसऊद एंफ़दी ने उन भटके हुए दरवेश के साथ सख्त बरताओ किया जिन्होने अपने आपको सच्चे तसव्वुफ़ के आदमियों के साथ मिला लिया था या उनके साथ जिन्होने दावा किया ः "लोग जो तसव्वुफ़ की ऊँचाई को पहुँच चुके हैं उन्हें मज़हबी उसूलो को नहीं मानना चाहिए।उन्हें अपने आपको इस बात के लिए परेशान नहीं करना चाहिए कि क्या कोई चीज़ की इजाज़त है या ममनुअ है।उनको लिए इससे कोई फर्क नही पड़ता।"अबुसऊद एफ़ंदी ने मौत का रसमी फैसला उनके लिए दिया जिन्होने गुनाह किए और पूरे मुल्क में नाचाकी और परेशानी का सबब बने।

उन लोगो के रहनुमा जिन्होने फलसफ़े को इस्लामी मज़हब से परे रखा वे नबी मुहम्मद(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)थे।यह हदीस-ए-शरीफ बहुत मशहूर है। **"मेरी उम्मत**(सारे मानने वाले) **73 फ़िरकों में बंट जाएगी।जिनमें से 72 फिरके दोज़ख में आग में जलाए जाएंगे, और सिर्फ एक ग्रुप सेफ़ होगा वे होंगे जो मुझे और मेरे सहाबा की तकलीद करते होंगे।** "यह हदीस-ए-शरीफ़,जिसने पेशीनगोई की, एक अज़ीम मोअजिज़ा(चमत्कार)है।यह उसी तरह हुआ जिस तरह आपने पेशीनगोई की थी।सुन्नी इस्लामी आलिमों ने तफ़सील से इन बहत्तर बिदअती ग्रुपों के बारे मे बताया,जो जिन्होने फलसफ़े को इस्लामी अकीदे के साथ मिला दिया और इसे तरह अस सहाबत अल किराम के सच्चे रास्ते से भटक गए।मुहम्मद (अलैहिसलाम) की ऊपर ज़िक्र की गई रिवायत(हदीस)की रोशनी में, इस्लामी आलिमो ने उन्हें बेशुमार सबूतों के साथ झूठा ठहरा दिया।इन अज़ीम इस्लामी आलिमो में से एक सय्यैद शरीफ़ जुरजानी(सय्यैद शरीफ़ शिराज़ में **816**(**1413** ए.डी)में गुज़र गए।) (रहिमा हुल्लाहु तआला) हैं।यह गहरे इस्लामी आलिम,जो तसव्वुफ़ मे विलायत का दर्जा हासिल कर चुके थे, **816**(**1413**) में शिराज़ में फ़ौत हो गए।उनकी किताब **शेरह-ए-मवकिफ़** इस किस्म के सबूतों से भरी पड़ी है सादउद्दीन-ए-तफ़तज़ानी, (रहिमा-हुल्लाहु तआला), जिन्होने कलाम के इल्म में आला दर्जा हासिल किया उन्होने अपनी कीमती किताब **शेरह-ए-अकाईद** के साथ बिदअती फिलसफ़ी को खत्म किया।वे समरकंद में **792**(**1389**)में फौत हो गए।और मुहम्मद शेहरस्तानी(रहिमा हुल्लाहु तआला) के ज़रिए लिखी गई किताब **अल-मिलाल वन निहाल** तशखीस से भरी हुई थी।वे **548**(**1153**) बग़दाद में फौत हो गए।यह अरबी किताब और इसकी तुर्की तर्जुमा बार बार होता रहा।इसे Unesco के ज़रिए यूरोपीय ज़बानों में तर्जुमा किया गया; इसलिए, पूरी दुनिया के ज़रिए यह समझा गया कि असली इस्लाम में कोई फलसफ़ा नहीं है, और "इस्लामी फिलासफ़ी" कहना सही नहीं है।

इमाम-ए-मुहम्मद ग़ज़ाली (रहिमा-हुल्लाहु तआला ने तसव्वुफ और असतफ़ा दोनो की जाँच की और अपनी किताबों **अल-मुनकिज़** और **अत-तहाफ़त-उल फलासिफ़ा** में वाज़ेह कि के वे फिलोसफर सिर्फ अक्ल पर मुनहसिर थे,वे शदीद तौर पर गलत थे,और तसव्वुफ़ के आदमियों ने, आयात और हदीसो की तकलीद करते हुए सच्चा ईमान और लामहदूद खुशियाँ हासिल कीं। उन्होने **72** बिदअती फिरको की हर एक फिलोसफी की जाँच की, जो,जैसे कि हम पहले भी कह चुके हैं,वे मुसलमान हैं,और देखते हैं कि सारे ग्रुप ग्रीक फलसफ़ियों से मुतासिर हैं। अगर हम ईमानदार हैं तो हम साफ देखेंगे कि नाम निहाद "बिदअती ग्रुपों" की फिलोसफियाँ सच्चाई के मुकाबिल नहीं हैं, यानी कुरआन अल करीम और हदीस-ए-शरीफ़। हमारी सदी में, पेराग्राफ़ जो वे पुरानी ग्रीक फिलोसफियों से निकालते हैं उन्हें इतनी अहमियत नहीं दी जाती। अगर हम बिदअती ग्रुपों की फिलोसफियों को एक दूसरे के साथ मवाज़ना करें,तो हम देखंगे कि वे एक दूसरे के साथ राज़ी होंगे इस हकीकत में कि अल्लाह तआला एक है। कादिरे मुतलक, हर चीज़ उसी से आती है; वह मुतलकुल अनान है; इस्लाम सबसे सच्चा और नया मज़हब है; कुरआन अल करीम अल्लाह तआला का कलाम है, और मुहम्मद (अलैहि सलाम) उसके अखिरी नबी हैं। ये सारे हकाईक इन बिदअती ग्रुपो के ज़रिए बताए गए। वे इंसानी मखलूक को एक पाक तखलीक मानते हैं, न कि "गुनाहगार" जैसे ईसाई मानते हैं। इस तरह,सारे **72** बिदअती ग्रुप मोमिन और मुसलमान हैं। अगरचे,अक्ल,फलसफ़ा और मज़हब उनके नज़रिए में एक जैसे हैं। इसी वजह से उनके अकीदे मे कुछ मुखतलिफ़ है। चुंकि ये मुखतलिफ़ फलसफो पर इनहिसार करती हैं, कुछ बेतुकी तकसीम और झगड़े उनके बीच में पैदा हो गए हैं। उनमें से जो सही होता है वह अपने आपको सही जानकारी और हदीस-ए-शरीफ़ के साथ (मुहम्मद की रिवायत) जाँच करके समझ लेता है। यह नामुमकिन है कि सही ग्रुप को ताकत इस्तेमाल करके या दुश्मनी करके या एक दूसरे को खराब होने का इल्ज़ाम लगाकर देख लिया जाए।

इस्लामी मज़हब के मुताबिक, इस्लाम का मज़हब पाँच चीज़ो पर हमला करने से मना करता है। वे हैं ः

**1**) जिंदगी, **2**) जाएदाद, **3**) अकलमंदी, **4**) नस्ल परस्ती, **5**) मज़हब। अगर एक बिदअती कहे कि उसका फलसफ़ा सबमें सच्चा है और इस वजह से वह कत्ल कर सकता है और बुरे तरीके से तबाह कर सकता है और कभी किसी सलाह को न सुने,फिर उस मामले में,हम कहेंगे कि वह एक ऐसा शख्स है जिसके पास या तो मज़हब की कमी है या अकलमंदी की।

अव, हम एक बार फिर जांच करते हैं कि अल्लाह तआला एक सच्चे मुसलमान से क्या उम्मीद करता है और वह कुरआन अल करीम में आयात के ज़रिए उसे क्या हुकूम देता है इस फिलासफ़ी को पीछे छोड़ते हुए जो विदअती गुप के ज़रिए ईमान के इल्म के साथ मिलाई गई है। दरहकीकत,इस्लाम में कोई फिलासफ़ी नहीं हैं **72** विदअती गुप इस्लाम को ज़ख्मी कर रहे हैं इसमें फिलासफ़ी को मिलाकर। एक तरफ़, वे पुरानी ग्रीक फिलासफी को इस्लामी अकीदे के साथ मिला रहे हैं, और दूसरी तरफ़, वे मज़हवी अकीदे अपनी सोच और नज़रिए के मुताविक वदल रहे हैं। लेकिन, इस्लामी गुप जिसे "**अहले-सुन्नत वल जमाअत**" कहते हैं जो मुहम्मद (अलैहि सलाम) के ज़रिए वशारत दिया गया कि जन्नत में जाएगा जो मज़हवी अकाईद मुहम्मद के सथियों (अस-सवाहत अल-किराम)[रज़ी अल्लहु तआला अनहुम अजमईन]) से सुनेगा बग़ैर ग्रीक फलसफ़े को और अपने खुद

की सोच उसमें मिलाए बग़ैर। वे इस यकीन को दूसरे मज़ाहिव के अकाईद, फिलोसफियों, और अपने खुद की अक्ल से ऊपर रखते हैं। यह इस वजह से कि इस्लामी यकीन आम हिस से मेल खाता है। अगर किसी की अक्ल शक करे इस्लाम में किसी भी सच्चाई में, तो यह समझ लेना चाहिए कि उसकी अक्ल सकीम (नुक्स)वाली है, न की सलीम (समझदार)कुदरती तौर पर,कोई भी अक्ल या सोच जो यह माने कि इस्लाम अधूरा है और इसलिए उसे फलसफ़े के ज़रिए मुकम्मल करने की कोशिश करे तो उसे नुक्स वाला समझना चाहिए। अगर एक काफ़िर अपनी कोमन सेंस/ समझ की तकलीद करे, उसकी अखलाकियत और काम अल्लाह तआला के हुकूम के मुकाविल आ जाते हैं। यह तफ़सीर की किताव छठे चैप्टर के आखिर में लिखा है (एक तशरीह की किताव) रूह-उल वयान इसमाइल हक्की ( इस्माइल हक्की **1137** (**1725** ए.डी.) में गुज़र गए। )के ज़रिए, कि अल्लाह तआला ने उसे सच्चा ई मान अता किया। अहल अस-सुन्नत के आलिमो (रहिमा हुल्लाहु तआला)ग्रीक फिलासफरों का जिक अपनी किताबों में सिर्फ़ उन्हें झूठा ठहराने और तंकीद करने के लिए किया। विदअती गुप और भटके हुए गुपो ने ग्रीक फिलासफ़ी को इस्लामी अकीदे के साथ मिलाने की कोशिश की, लेकिन अहले-सुन्नत गुप ने उन्हें अलग रखने और इस्लाम मज़हब से निकालने की कोशिश की। फिर जो इस्लाम को सही तरीके से सीखना चाहता है यह समझने के लिए अल्लाह तआला का अपने कलाम से क्या मुराद है उसे अहल अस सुन्नत व जमाअत को आलिमों के ज़रिए लिखी गई किताबों को पढ़ना होगा।

सूरह युनुस **44** ः "**यकीनन अल्लाह आदमी के साथ नांसाफ़ी नहीं करता। यह आदमी है जो अपनी जान को गलती करता है।**"

सूरह राद 11 ः "यकीनन अल्लाह कभी उन लोगो की हालत नहीं बदलता जब तक कि वे खुद न बदलें।"

सूरह यूनुस 108 ः " वे जो रहनुमाई हासिल करते हैं, वे ऐसा अपनी रूहों की अच्छाई के लिए करते हैं।वे जो परे रहते हैं, वे ऐसा अपने नुकसान के लिए करते हैं।" फिर, हम किस किस्म के आदमी होने चाहिए? अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों के बारे में बयान किया जो उसमें यकीन रखते हैं।सूरह फुरकान 63- 73 ः "और अल्लाह के बंदे,सबसे ज़्यादा रहम वाले, वे हैं जो ज़मीन पर आजज़ी से चलते हैं, और जब लाइल्म उन्हें मुखातिब करते हैं,वे कहते हैं, "सलामती! "[ तुम पर हो।] ये वे हैं जो रात अपने रब की इबादत में गुज़ारते हैं सज्दे मे खड़े होकर।ये वे हैं जो कहते हैं, "हमारे रब! हम पर से दोज़ख का अज़ाब टाल दे, क्योंकि उसका अज़ाब बेशक तकलीफ़, परेशानी वाला होगा।"ये वे हैं जो, जब खर्च करते हैं तो न ही गैर मामूली और न ही कम, बल्कि उन दोनो चरम सीमाओं मे बस तवाज़न रखते हैं।ये वे हैं जो बेइंसाफ़ नहीं हैं।ये वे हैं जो, अल्लाह के सिवा,किसी दुसरे को माबूद नहीं कहते, न ही ऐसी ज़िंदगी गुज़ारते जो पाक नहीं, सिवाए एक अदल की वजह के, [ताहम, वे गनाहगारों को सज़ा देगा।] न ही ज़िना करना।और कोई जो ऐसा करता है उसे न सिर्फ़ सज़ा मिलेगी बल्कि इंसाफ़ वाले दिन उसके दुगना जुर्माना होगा,और उसे वहाँ बदनामी में रहना होगा- जब तक कि वह तौबा, यकीन और सही काम न करले।क्योंकि अल्लाह ऐसे लोगो की बुराई को अच्छाई में बदल देता है।और जो कोई पछताता है और अच्छे काम करता है वह सच में अल्लाह की तरफ़ राग़िब हो जाता है काबिले कबूल बातचीत के साथ।- ये वे हैं जो किसी झूठ के गवाह नहीं हैं।और, अगर ये गफ़लत से गुज़र जाएं ,वे इससे बाइज़्ज़त गुज़र जाएंगे[नज़रअंदाज़]।ये वे हैं जो,जब अपने रब की अलामत से तंबीह किए जात हैं, ग़ौर से उन्हें सुनते हैं और चीज़ो को उसी तरह करते हैं जिस तरह उनसे उम्मीद की गई उन आयात के तरीके के ज़रिए।"

सूरह माएदा 8 ः " तुम्हारे लिए दूसरो का हसद तुम्हे जो गलत है उसकी तरफ़ भटका देता है और इंसाफ़ से खाना कर देता है।अदल वाले रहो।"

सुरह माएदा 89 ः " अल्लाह तुम्हें तुम्हारी कसमों में क्या बातिल है उसके हिसाब के लिए नहीं बुलाएगा, बल्कि वह तुम्हारी जानबुझकर कसमों के हिसाब के लिए बुलाएगा।"

कुछ चैप्टर की तफ़सीर के मआनी हैं, जैसे नमल वकराह ः "**अल्लाह सब्र करने वालो के साथ है। तुम सब्र करो। सब्र करो। यह अल्लाह की रज़ा के लिए है।**"

सुरह वकराह **217** ः " **गुस्सा और जुल्म ज़िब्ह से ज़्यादा खराब है।**"

सुरह वकराह **262** ः " **अपने तौहफ़ो को अपनी सखावत की याददहनियों के साथ, या चोट दे के अता न करें।**"

सूरह वकराह **271** ः " **लेकिन अगर तुम अपनी**[अमाल को] **खैरात को छुपाना चाहते हो और उन तक पहुँचाना चाहते हो**[असलियत में] **जो ज़रूरत में हैं, और यह तुम्हारे लिए सब से अच्छा है।**"

सूरह अनम **151** और सूरह फुरकान,**68** ः " **ज़िंदगी न लेना।**"

सूरह अराफ़ **31** ः " पीयो और खाओ,लेकिन वरवाद मत करो,क्योंकि अल्लाह वरवाद करने वालों को प्यार नहीं करता ।"

सूरह अराफ़ **56** ः "ज़मीन पर फसाद मत फैलाओ इसके सही क्रम में लग जाने के वाद।"

सूरह तौवा **7** ः "अल्लाह उनसे प्यार करता हैं जो एक समझौता करने में सावधानी वरतते हैं।"

सूरह इव्राहिम **26** ः "**एक बुरे लफ़्ज़ की मिसाल एक बुरे पेड़ जैसे है ः इसे ज़मीन की सतह से जड़ से उखेड़ लिया जाता हे ः इसकी कोई मज़बूती नहीं है ।**"

सूरह नहल **90** ः " **अल्लाह इंसाफ़, अच्छे काम करने और अपने नातेदार के साथ आज़ादी का हुकूम देता है। वह सारे बेशर्म कामों, और नाइंसाफ़ी और बग़ावत से मन करता है।**"

सूरह अल-इसरा **23-24** और अहकाफ़, **15** ः "**अपने माँ बाप के साथ नरम रहो। चाहे एक या दोनो तुम्हारी ज़िंदगी में बुढ़ापे को पहुँच गए हों, उन्हें एक भी लफ़्ज़ नफ़रत का न बोलना ,न ही उन्हें धकेलना, बल्कि उनसे इज़्ज़त के साथ मुखातिब होना। और,रहम से, अपने आजज़ी के पंख उनसे नीचे रख लेना, और कहना ः 'मेरे रब! उनके ऊपर अपनी रहमत करदे जैसे उन्होने मुझे मेरे बच्पने में खयाल किया।**"

सूरह इसरा 26 ः " और उनके रहम करने के लिए फराहम करते हैं उनके बकाया हुकूक, जो लोग चाहते हैं और रास्ते में हैं ः लेकिन खर्च करने के तरीके में (अपनी दौलत) गंवा मत देना।"

सूरह इसरा 28 ः " और चाहे आगर तुम उनसे पलटना चाहते हो, अपने रब से रहम मांगने के लिए जो तुम उम्मीद करते हो, ताहम उनके साथ रहम का एक आसान लफ़्ज़ बोलो।"

सूरह ता-हा 131 ः " न ही तेरी आँखो की उन चीज़ो के लिए लम्हे में कशदिगी का सामना करना पड़ता है जो हमने इनकी जमाअतो को लुत्फ़अंदोज़ कर दी हैं, इस दुनिया की शान, जिसके ज़रिए हम उन्हें आज़माएँगे।लेकिन तेरे रब का हुकूम ज़्यादा बेहतर और ज़्यादा पाएदार है।"

सूरह रूम 31-32 ः " और उन लोगो में न हो जो अल्लाह के साथ माबूदों को जोड़ रहे हैं,-वे जो अपने मज़हब को तकसीम कर रहे हैं, और(सिर्फ़) फिरके बन रहे हैं- हर पार्टी जो इसके साथ है उसमें खुश है।"

सूरह शूरा 13 ः " तुम मज़हब में साबित कदम रहो।और वहाँ उसमें कोई तकसीम मत करो।"

सूरह जासिया 18-19 ः " उन की इच्छाओं की तकलीद मत करो जो नहीं जानते।वे तेरे लिए अल्लाह की निगाह में किसी फाएदे के नहीं।यह सिर्फ गलत काम करने वाले हैं [इसे ऐसे ही माना गया] एक दूसरे के मुहाफिज़।लेकिन अल्लाह सही करने वालों का मुहाफिज़ है।

सूरह फतह 29 ः " अल्लाह ने उनसे वादा किया है उनमें से जो यकीन रखते हैं और सही काम करते हैं माफ़ करने का, और एक ईनाम देने का।"

सूरह हजरात 9 ः " अगर मोमिनो के बीच दो पार्टिया झगड़े में पड़ जाएं, तुम उनके बीच अमन करओ।"

सूरह शूरा 40 ः " एक चोट का बदला एक चोट के बराबर है;(दर्जे में), लेकिन अगर एक शख्स माफ़ करदे और सुलह करले, तो उसका ईनाम अल्लाह की तरफ़ से चुकाया जाएगा।"

सूरह हजरात 6 ः " तुम जो यकीन करते हो! अगर एक बुरा शख्स तुम्हारे पास आए किसी भी खबर के साथ, सच मालूम करो, ऐसा न हो कि तुम लोगो को नापसंदीदा तरीके से नुकसान पहुँचाओ, और बाद में जो कुछ तुमने किया उसके लिए तौबा करो।"

सूरह हजरात 10 ः " मोमिन हैं लेकिन एक भाईचारा।इसलिए अपने दोनो(बहस करने वालो) भाइयो के बीच में अमन और सुलह कराओ।और अल्लाह से डरो,कि तुम्हें रहम हासिल हो जाए।"

सूरह हदीद 23 ः " अपने ऊपर गुज़रने वाले मामलात से नाउम्मीद मत हो, न ही जो तुम पर नएमते हैं उनसे फूल जाओ।क्योंकि अल्लाह किसी गुमानी घमंडी से प्यार नहीं करता ।"

सूरह अल-इसरा 35 ः " जब तुम नापो तो पूरा नापो, और तवाज़न के साथ वज़न करो जो सीधा हो।"

सूरह रहमान 9 ः "इसलिए इंसाफ़ के साथ वज़न कायम करो और वज़न में कमी न करो।"

सूरह अल- मुतफ़िफ़ीन 1-5 ः " अफसोस है जो धोखाधड़ी में सौदा करते हैं, वे जो, आदमियों से मापने के ज़रिए लें, तो पूरा मांप लें।लेकिन,जब वे माप या वज़न से आदमियों को दें, तो जितना हुआ है उससे कम दें।क्या वे नहीं सोचते कि उन्हें हिसाब के लिए एक ज़बरदस्त दिन बुलाया जाएगा?"

इसके अलावा, अगरचे उसके बंदे उसके हुकूम की तरफ़ ध्यान देंगे, वह जानता है कि वे एक इसांनी मखलूक होने के नाते, गलती में गिर जाएंगे, और उसने हमें कुरआन अल करीम के ज़रिए आगाह किया कि वह उन्हें इंसाफ़ और रहम से बरताओ करेगा।

सूरह नहल 61 ः " अगर अल्लाह को आदमियों के उनकी गलतियों के लिए सज़ा देनी होती तो, वह(ज़मीन) पर एक भी जानदार मखलूक नहीं छोड़ता।"

सूरह अंकबूत 7 ः " वे जो यकीन करते हैं और सही काम करते हैं- उनमें से हम सारी बुराई(जो भी हों) निकाल देंगे।और हम उनके अच्छे कामों के मुताबिक उन्हें इनाम देंगे।"

सूरह ज़मर 35 ः " अल्लाह उन से दूर हो जाएगा(चाहे)उन्होने अपने कामों में कितनी ही बुराईयों की हों और उन्हें उनके लिए गए कामों में सबसे उच्छे के मुताबिक इनाम दे देगा।"

सूरह शूरा **25- 26** ः “ **एक वही है जो अपने बंदो की तौबा कबूल करेगा।और उनके गुनाहो को माफ़ करेगा।और वह सब जानता है जो तुम करते हो।और वह उन्हें सुनता है जो यकीन रखते हैं और सही काम करते हैं,और अपने फज़ल से उनमें इज़ाफा कर देता है।लेकिन काफ़िरों के लिए वहाँ भयानक जुर्माना है ।**”

सूरह मुहम्मद **2** ः “ **लेकिन वे जो यकीन रखते हैं और अच्छाई के काम करते हैं, और मुहम्मद पर भेजी गई**(वही) **पर यकीन रखते हैं- क्योंकि यह उनके रब की तरफ से सच्चाई है- वह उनके पास से उनकी बीमारियों की हटा लेगा और उनकी हालत सुधार देगा।**”

सूरह नजम **32** ः “ **वह उन्हें इनाम देता है जो अच्छा करते हैं, जो सबसे अच्छा हो,वे जो बड़े गुनाहो और शर्मनाक कामों को नज़रअंदाज़ करते हैं सिर्फ**(इसमे गिर जाते हैं) **छोटी गलतियाँ- असल में तेरा रब माफ़ करने में बहुत ज़्यादा है।**”

सूरह नाज़िआत **40** ः “ और इस तरह के तौर पर अपने रब के सामने(अदालत) खड़ा होने के खौफ़ ने लुत्फ़ अंदोज़ किया और(अपनी) रूहों को नीचली इच्छाओ से रोक दिया, उनका घर बाग़ होगा।”

सूरह सब **17** ः“**और हम कभी भी ज़रूरी नहीं देते सिवाए नाजाईज़ रददे अमल करने वालो के।**”

मुखतसिर यह कि इसलाम की बुनियाद है अल्लाह तआला की इन अज़ीम हुकूम को मानना,जो दिल को आराम,रूह को पाक करता है, और हर एक के समझने के लिए आसान है।फिलासफ़ी की बुनियाद सिर्फ़ इंसानी सोचों पर मुश्तमिल है।हम उन्हें सिर्फ़ नामंज़ूर करने के लिए पढ़ते हैं,ताहम हम कुरआन अल करीम में लिखे हुए अल्लाह तआला के हुकूम को मानते हैं और कबूल करते हैं।यह सच्चा इस्लाम है।अल्लाह तआला ने मुसलमानो को मुखतलिफ यकीन रखने, मुखतलिफ़ गुपों को कायम करने,या आपस में मुखतलिफ़ यकीन रखने के लिए मनाही की है।खासतौर से, उसने मुसलमानों को खुफ़िया मजलिसें,खुफ़िया तंज़ीमे, या अपने आपको ममनुअ चीज़ों में मशगूल रखने जैसे झूठ और चुग़लखोरी करना यह सब ही मनाही है।इस मामले पर आयात मंदरजाज़ेल हैं ः

सूरह मुजादला **9-10** ः “ **तुम जो यकीन रखते हो! जब तुम खुफिया कॉंसिल करो, इसे नाइंसाफ़ी और दुश्मनी,और नबी की नाफ़रमाबरदारी**[ग़ैर मुसतकीम,मुसलमान हुकूमरानी

सरबराह] के लिए कायम मत करो। बल्कि इसे सही काम और खुद पर रोक लगाने के लिए करो। खुफिया कॉंसिले सिर्फ[हौसला अफ़ज़ा की गई] बुराई के ज़रिए होती हैं, मोमिनो में दुख फैलाने के लिए।"

सूरह जासिया 17 : " और हमने उन्हें मज़हबी मामलात में साफ़ अलामात अता करदीं। यह सिर्फ इल्म उन्हें देने के बाद हुआ कि वे फूट में पड़ गए ,अपने बीच ढीठ हादिसो की वजह से। असल में तेरा रब उनके बीच में इंसाफ़ वाले दिन फैसला करेगा उन मामलात के लिए जिन में उनके अंदर तफ़रके आ गए।"

सूरह रूम 32 : " अपने मज़हब को फ़िरको में मत बांटो,हर एक अपने यकीन मे खूश होता हुआ।"

सूरह हदीद 20 : "जान लो कि यह दुनियावी ज़िंदगी सिर्फ एक खेल और वक्त गुज़ार है [शामिल करते हुए] दुनियावी दिखावा और तुम्हारे बीच में मुकाबला,साथ ही दौलत और बच्चों में दुश्मनी। यह उन शावर से तुलना किए जा सकते हैं जो पौधो को बढ़ने मे मदद देता है और माली उनसे खुश होता है। लेकिन बाद में,तुम देखते हो वे पौधे मुरझा जाते हैं और तुम उन्हें पीला होते हुए देखते हो। बहुत जल्द वे सिर्फ ठूंठी रह जाते हैं। आखिरत में[इस तरह के दुनियावी दिमाग़ वाले आदमियो के लिए] सख्त और अबदी अज़ाब है। लेकिन जो अपने आपको दुनिया में अल्लाह तआला के हुकूम के तरीके से चला पाए ,वहाँ उनके लिए उसकी माफ़ी और मंज़ूरी है। दुनियावी ज़िंदगी का दौर गुमराही और आरज़ी है।"

क्या वहाँ कोई और दूसरा लफ़्ज़ है इससे बेहतर, यह हकीकत वाज़ेह करने के लिए कि यह दुनिया एक ज़रिया है दुसरी दुनिया को जीतने का? हम अपने आपको पूरे दिल के साथ हमारे मज़हब इस्लाम के एहकामात के साथ मुंसलिक करते हैं, बजए इसके कि दुनियावी खुशियों के ज़रिए धोखा दिए जाए और इस तरह भटक जाएं। एक मुसलमान जिसके पास सही यकीन और सही मज़हबी तालीम होगी और जिसे उनके ज़रिए धोखा नहीं दिया होगा जो सच्चे रास्ते से भटके हुए हैं तो वह एक ईमानदार आदमी माना जाएगा,एक असली आलिम, एक शहरी जो अपने मुल्क के कानून के लिए भी अच्छा होगा और साथ ही अपनी कौम के लिए भी।

इस्लाम में आदमी की इज़्ज़त है। अल्लह तआला फरमाता है ः " मैने आदमी को सबसे अच्छा तखलीक किया। " आदमी की ज़िंदगी उसकी नज़र में बहुत अहम है। अल्लाह तआला ने हुकूम दिया ः " **ज़िंदगी मत लो।** " ईसाईयों का दावा है कि आदमी एक बदनाम मखलूक है , गुनाहगार पैदा होती है, लेकिन इस इल्ज़ाम को इस्लाम के मज़हब ने नामंज़ूर कर दिया। सारी इंसान मखलूक एक फ़ितरत में मशगूल होने की वजह से मुसलमान हैं। वे पाक और साफ़ पैदा हुए। सुरह ज़मर की 14वीं आयत का पाक मआनी है ः " **असल में हमने उनके लिए सच्चाई में एक किताब ज़ाहिर की, आलमियत की**( हिदायत)**के लिए। वे,फिर, जो रहनुमाई हासिल करता है, अपनी ही रूह को फाएदा पहुँचाता। लेकिन वे जो भटक जाता है, अपनी ही रूह को ज़ख्मी करता है।** " अल्लाह तआला ने अपने प्यारे बंदे (मुहम्मद[अलैहि सलाम]) को नबी बनाकर भेजा और उनकी अज़ीम किताब (कुरआन अल करीम)को आलमियत के लिए एक रहनुमा के तौर पर भेजा। वे जो कुरआन अल करीम और आखिरी नबी मुहम्मद (अलैहि सलाम)के ज़रिए दिखाए गए रास्ते को साफ़ तौर पर तकलीद नही करते क्योंकि वे इसे पसंद नहीं करते तो उन्हे बड़ी सज़ा मिलेगी। आइए नीचे दी गई आयात (सूरह सॉद 87)पर ध्यान देते हैं ः " यह (कुरआन)**आलमियत के लिए एक चेतावनी से कम नहीं।** "

सूरह अल-इसरा 15 ः " **जो रहनुमाई हासिल करता है, इसे अपने खुद के फाएदे के लिए हासिल करता है। जो इससे भटक जाता है,वह अपने खुद का नुकसान करता है। कोई भी रूह दूसरे का बोझ नहीं उठाती। न ही हम एक कौम को सज़ा दे सकते हैं जब तक कि हम वहाँ उनकी चेतावनी के लिए एक नबी न भेज दें।** "

फिर,हमने अल्लाह तआला से दुआ की और उससे अपने आपको सही ईमान पर रहनुमाई करने की मिन्नत की। ऐसा वाक्या होने के लिए हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम पूरे दिलो जान से इस्लामी मज़हब को पकड़ें,जोकि सबसे सच्चा और आखिरी मज़हब है, और **अहल-अस सुन्नत** के आलिमों (रहिमा हुमल्लाहु तआला) के ज़रिए लिखी किताबों को पढ़े, जिन्होने इस्लामी साईंस को सही बयान किया है।

अल्लाह तआला ने इंसानी मखलूक को मुसलमान या मोमिन नहीं बनाया उसकी रहमत और जुर्माना दोनो अवदी हैं। उसका इसांफ़ भी अवदी है। अगर अल्लाह तआला चाहे तो,वह अपने किसी भी बंदे पर सच्चा ईमान अता कर सकता है,बग़ैर किसी वजह या किसी मुतालबे के उस शख्स के हिस्सो पर। यह ऊपर बताया गया है कि वह उन सच्चा और

जाईज़ ईमान अता कर देता है जो अपनी आम हिस का इस्तेमाल करते अपने कामों और अखलाकियत को अच्छा कर सकता है। यह समझ आता है कि आखिरी सांस में अगर एक आदमी ईमान के साथ गुज़र जाता है। एक आदमी अपनी पूरी ज़िंदगी ईमान में रहा लेकिन आखिरी दिनो में अपना ईमान खो दिया वह बग़ैर ईमान के मरेगा और उठाए जाने वाले दिन में वह बगैर ईमान वालों में रहेगा। हमें रोज़ाना अल्लाह तआला से गिड़गिड़ा कर दुआ मांगनी चाहिए कि हमें ईमान के साथ मौत अता करे। चूंकि अल्लाह तआला के पास अबदी रहम है,उसने अपने नबी अपने बंदो के पास भेजे आलमियत को उसकी मौजूदगी और वहदानियत के बारे में बताने के लिए और चीज़े जो वह चाहता है कि उसके बंदे उन पर यकीन करें। ईमान का मतलब है कि जो नबी(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म)बता रहे हैं उस पर ईमान लाना। कोई भी जो नबी में या उन चीज़ो को कबूल नहीं करता जिन्हे नबी ने खबर किया तो वह एक काफ़िर बन जाएगा। काफ़िरों को अबदी तौर पर दोज़ख की आग में जलाया जाएगा। एक आदमी जिसने कभी नबी (अलैहिस्सलावातु वतसलीमात) के बारे में कभी नहीं सुना लेकिन सोचता है और अपने आप यकीन करता है कि "अल्लाह मौजूद है और एक है" और सिर्फ़ यह ईमान लेकर मर जाता है,वे भी जन्नत में जाएगा। अगर वह इस तरह का कोई ईमान या सोच नहीं रखता तो वह न तो जन्नत में जाएगा न ही दोज़ख में चूंकि उसने नबी(अलैहिस्सलवात वतसलीमात) से इंकार नहीं किया। वे उठाए जाने वाले दिन में इंसाफ किए जाने पर ग़ैर मौजूद हो जाएगा। दोज़ख में अबदी तौर पर जलना नबी(अलैहिस्सलावातु वतसलीमात)से इंकार का नतीजा है अगरचे उसने उनके बारे में सुन लिया था। बहरहाल,वहाँ कुछ अज़ीम इस्लामी आलिम(रहिमाहुमल्लाहु तआला) जिनका तर्क हे कि " कोई भी जो अल्लाह तआला की मौजूदगी के बारे में न सोचता है न यकीन करता है वह दोज़ख में जाएगा।" लेकिन उनके अल्फ़ाज़ के मआनी हैं कि वह शख्स जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के बारे में सुनकर यकीन न करे। जो कोई भी चालाक होगा वह नबी(अलैहिस्सलात वतसलीमात)से इंकार नहीं करेगा। वह बग़ैर किसी हिचकिचाहट के फौरन यकीन कर लेगा। अगर वह दूसरो के ज़रिए धोखा दिया जाए, अपनी अक्ल का इस्तेमाल न करे अपनी जिंसी जज़बे की तकलीद करे, तो वह इंकार कर सकता है।

अबू तालिब, मुहम्मद अलैहि सलाम के पिदरी चाचा हर मौके पर कहते थे कि इस भतीजे के लिए उनका प्यार उससे भी ज़्यादा मज़बूत है जो वह अपने बच्चो के लिए महसूस करते हैं, इतना ज़्यादा कि उन्होने एक सना लिख डाली। यह तारीखी हकीकत है कि,बहरहाल उनके समाजी रिवाज़ो से इतना गहरा लगाओ था कि उन्होने मुहम्मद अलैहि

सलाम की सारी कोशिश के बावजूद वह इस्लामी ईमान हासिल नहीं कर पाए, जिन्होने उन्हें मौत के विस्तर पर भी अकेला नहीं छोड़ा। अपने रिती रिवाज़ो और तरज़ से गहरी वावस्तगी एक भयानक जाल है जो इंसान के नफ़्स(एक बुरी चीज़ जिसे अल्लाह तआला ने इंसानी फितरत में तखलीक किया। यह हमेशा आदमी को भड़काने की कोशिश में लगी रहती अल्लाह तआला के एहकामात की नाफरमानी करने के लिए। यह वाहिद तकलीक है जो अपनी ही इच्छाओ के खिलाफ़ रहती है। इस्लामी आलिम कहते हैं कि यह सबसे ज़्यादा बेवकूफ़ तखलीक है। बराए मेहरबानी **सआदत अबदिया I-36** को देखिए। ) के सबसे ज़्यादा नुकसान पहुँचाने वाली है। बहुत सारे लोग इसके जाल में फंस गए अपनी खुद के नफ़्स की वजह से जो बदले में उन्हें खुशियों और कमाई से महरूम रखती है। अल्लाह तआला ने एक हदीस-ए-कुदसी मैं कहा, **"अपनी नफ़्स को अपने दुश्मन के तौर पर जानो,क्योंकि यह मेरी दुश्मन है!"** यह ज़िद्दी आदत ऐसी चीज़ नहीं है जो आसानी से उतर जाए,खासतौर से एक ऐसे शख्स के लिए जो ईसाई वालेदान में पैदा हुआ और ईसाई तालीम में पढ़ा हो,[यानी,इस्लाम के लिए गहरी नापसंदीदगी के खयालात से भरे हुए। उसके दोस्त हो सकता है नफरत से उसे देखे या उसकी फैमिली उसे निकाल दे अगर वह अपना मज़हब बदले। हो सकता है जब वह एक मुसलमान बन जाए तो अपनी जॉब या पॉस्ट उसे छोड़नी पड़ जाए। बेशक,ऊपर दिया गया हर मिसाल एक वजह है, लेकिन सबसे अहम वजह है ः आज के मुसलमान अपने खुद के पाक और तर्क वाले मज़हब से बाखबर नहीं हैं ः खराब तशरीहात; दास्ताने और कहानियाँ मज़हबी कट्टरपंथियो के ज़रिए; लाइल्म; भटके हुए जो **72** फिरकों में से एक में घुस गए, दे बिदअती ग्रुप; साथ ही इल्ज़ामात,खराब मज़मून साईंसी काफ़िरो के ज़रिए साईंस के नाम पर लिखे गए; और कुछ जगह जिन्हें आलस के घर कहा जाता है और हिल्यासाज़ी इन सब ने ग़ैर मुस्लिमो पर बुरा असर डाला और इस पाक, चमत्कार,मंतकी, इंसानी और सच्चे मज़हब के लिए विपरीत महसूसात रखने का सबब बना। दूसरी तरफ़, हम जब भी इस किताब में लिखे गए मामलात के बारे में एक पढ़े लिखे ईसाई से बात करते तो हम देखते कि वह इस्लाम के लिए अज़ीम सराहना रखता है। अगर हम उन **72** बिदअती ग्रुपों के आदमियो को हिसाब में न लगाएँ,जो एक सदी पहले सच्चे मुसलमानी में शामिल हो गए थे, तो बहुत सारे अहल अस सुन्नत के आलिम(रहिमाहुल्लाहु तआला) ज़ाहिर हुए। इस्हाक एंफ़दी हरपुत तुर्की से मिसाल के तौर पर इस्लाम को ईसाय्यत से मवाज़ना किया गया पूरे तौर पर ग़ैर जानिबदारी के साथ बहुत सारे साईंसी सबूत दिखाते हुए। बदकिस्मती से,उनके कामों को बाहरी ज़बानो में तर्जुमा नहीं किया गया; नतीजे के तौर पर, दूसरे मज़ाहिब के मानने के वाले उनकी किताबें नहीं पढ़ा पाए।

इस्लाम को गलत तरीके से तआरूफ़ करवाने के मज़मून पर, इस्लामी रियास्तें जो अहल अस-सुन्नत नहीं थी वह नुकसानदायक थी। इस्लामी मुल्कों में कुछ भटके हुए मज़हबी आदमी,जिनका नम्बर इतना ज़्यादा होगा जितना कि **30**, इन्होने दुनिया में इस्लाम के बारे में गलत जानकारी और गलत असरात के असबाब बनाए। कुरआन अल करीम इस्लामी मुल्को में गलत तशरीह किया जा रहा था जो अहल अस सुन्नत नहीं थे। मज़ीद यह कि,कुछ नबियों अलैहिमुस्सलावातु वतसलीमात जैसे कि आदम (अलैहि सलाम)से इंकार किया गया कोई शक नहीं,कि वक्त के साथ, इन मुल्को के सरकारी अफसरान ने सच्चाई को पहचान लिया और उन सारी गलत तरीकों को छोड़ दिया और सही तरीका ढूँढ लिया जो अहल अस सुन्नत के आलिमो (रहिमा हुल्लाहु तआला) के ज़रिए लिखे,लेकिन हाल के लिए, क्योंकि उनके झूठे इल्ज़ामो की वजह से और जिस तरह उन पर हुकूमत की गई,जो बहुत कदीमी थी, उन्होने इस्लाम को बहुत नुकसान पहुँचाया।

हमारे पाक नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)ने खबर दी कि कोई भी जो ईमान वाला नहीं होगा। वह अबदी तौर पर दोज़ख की आग में जलेगा। यह पैग़ाम बिल्कुल सच है। यह ज़रूरी है कि इस पैग़ाम में यकीन करना जिस तरह हम यकीन करते हैं कि अल्लाह तआला मौजूद और वाहिद है। दोज़ख में अबदी जलने का क्या मतलब है? कोई भी जलने की तबाही जानता है अबदी तौर पर आग में हो सकता है इसके खौफ़ की वजह से अपना दिमाग़ खो दे। कम से कम,वह इस खतरनाक तबाही को नज़रअंदाज़ करने के लिए कोई तरीका खोजेगा। इसका इलाज बहुत आसान है। "यह मानना कि अल्लाह तआला मौजूद है और एक है; मुहम्मद (अलैहि सलाम)उसके आखिरी नबी हैं, और कुछ उन्होने खबर दी वे सब सही है", जो आदमी को उस अबदी तबाही से बचाएगा। अगर कोई यह कहता हे कि वह ऐसी किसी तबाही में जो अबदी तौर पर आग में जलने से आएगी यकीन नहीं रखता,यानी वह उस तरह की चीज़ से खौफ़ज़दा नहीं है, और यह कि उसने उससे बचने का कोई तरीका नहीं ढूँढा,हम उससे पूछेंगे : " क्या तुम्हारे पास कोई सबूत या निशानी है इसे न यकीन करने के लिए? "यकीनन, वह कोई सबूत नहीं दे पाएगा। किस तरह एक शब्द जो किसी सबूत या गवाही पर मुबनी नही इल्म या साईसं कहा जा सकता? एक लफ़्ज़ उस किस्म का माना हुआ या इमकान कहा जाता है। यह ज़रूरी नहीं है कि ऐसी भयानक तबाही " अबदी तौर पर जलना" को नज़रअंदाज़ किया जाए आग में चाहे अगर वहाँ एक मिलियन में सिर्फ़ एक हो या एक बिलियन में एक मौका हो ऐसा वाक्या होने का? क्या एक शख्स थोड़ी अक्ल के साथ इसको छोड़ना नहीं चाहेगा? क्या वह अपने

आपको इस आग में अवदी तौर पर जलाने से बचाने के लिए कोई तरीका ढूँढने की कोशिश नहीं करेगा? जैसा कि तुम देख रहे हो, हर अकलमंद आदमी के पास ईमान है। ईमान रखने के लिए ज़रूरी नहीं है कि तुम परेशानियाँ भी रखो,जैसे कि लगान देना या जाएदाद देना; इवादत का बोझ और मुश्किल उठाने के लिए,या अपने आपको मीठी और मज़े वाली चीज़ो से परे रखकर। यह काफ़ी है कि दिल से संजीदगी से यकीन करलो। तुम्हें अपना ईमान काफ़िर को बताने की ज़रूरत नहीं है। चुंकि वे इसांनी मखलूक हैं और अकलमंद तखलीक हैं, लोग जो अवदी आग में यकीन नहीं रखते, उनसे उम्मीद की जाती है कि कम से कम,इसके इमकान को तो वह कवूल करें। इस इमकान के खिलाफ़ कि आग में अवदी तौर पर जलेगा, क्या यह बेवकूफ़ी नहीं है और यहाँ तक कि बेतुकापन कि **ईमान** से गायब हो जाओ, जोकि इस तबाही का वाहिद और पक्का इलाज है?

**सनाउल्लाह पानी-पती (रहमतुल्लाहि अलैहि)** ने अपनी किताव (हुकूम उल इस्लाम) में बयान किया ः " अल्लाह तआला की मौजूदगी, उसको सिफ़ात और चीज़े जो उसके ज़रिए मंजूर की गई और तसदीक की गई वे नबी (अलैहि सलाम) के पैग़ाम के ज़रिए ही समझा जा सकता है। वे वजह के ज़रिए समझाया नहीं जा सकता। मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने इनको हमें बताया। ये सब चारो तरफ खुलफ़ा ए-राशिदीन की कोशिशो के ज़रिए फैलाया गया। असहाव-अल-किराम में से हर एक ने कुछ इल्म सीखा। उन्होने इस इल्म को जमा किया। इस सिलसिले में, असहाव-ए-किराम के हमारे ऊपर बहुत सारे हुकूक हैं। (हम बड़े पैमाने पर असहाव-ए-किराम के कर्ज़दार हो गए)। इस वजह से, हमें हुकूम है कि हम उन सबको प्यार करे, तारीफ़ करें और उन सब की फरमावरदारी करें (रिज़वानउल्लाहि तआला अजमईन)।" यह किताब फारसी में लाहौर में शाय की गई, इस्तांवुल में भी **1410**[ए.डी. **1990**] हकीकत किताबेवी के ज़रिए।

## आखिरी लफ़्ज़

हमारी किताब यहाँ खात्में पर आ गई। मैं समझता हूँ कि एक शख्स जो इस किताब को गौर से पढ़ता है वह बग़ैर हिचकिचाहट के यह फैसला करने के काबिल हो जाएगा कि इस्लाम की और ईसाय्यत की पाक किताबों में से कौन सी एक असल में अल्लाह तआला का कलाम है। यकीनन; कुरआन अल करीम, इस्लाम का मज़हव, और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पढ़ने वालों के ज़रिए बिलतरतीब,एक सच्ची मुकददस किताब, एक सच्चा मज़हव और एक सच्चे नबी कुवूल किए जाएंगे। शायद कोई ऐसी सोच रखता हो ः " यहाँ

तक कि इस्लाम एक सच्चा मज़हब है, हम देखते हैं कि बहुत सारे लोग मुसलमान नहीं हैं। क्या अल्लाह तआला उनको इस्लाम में बदलने के काबिल नहीं है?" इस सवाल का जवाब अल्लाह तआला ने कुरआन अल करीम में दिया। चैप्टर सज्दा की 13वीं आयत के मुबारक मआनी हैं ः " **अगर यह मेरी इच्छा होती तो सारी इंसानी मखलूक को इस्लाम में बदल देता। लेकिन मैने पहले से ही कहा है और मैने एक जगह बनाई है जिसे दोज़ख कहते हैं और मैं इसे जिन्नों आदमियों से भरूँगा।** " और चैप्टर माएदा की 48वीं आयत के मआनी से बयान है ः "**अगर यह अल्लाह की इच्छा होती,तो वह तुम्हे एक कौम बनााता। लेकिन वे चाहता कि फरमाबरदारी को बाग़ियों से फर्क करूँ।**" यह इसके लिए कहा गया है कि इंसानियत अल्लाह तआला के ज़रिए जांची जाती है। उसने उसे समझ, सबसे ज़्यादा ताकतवर हथियार दिया। उसने उन्हें कुरआन अल करीम,सबसे ज़्यादा मुकम्मल गाइड दिया, और आखिरी नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) अज़ीम लीडर,जो उसके एहकामात और ममनुआत बताते हैं। उसने उन्हें "इच्छा" और "चुनने" का हक दिया ताकि वे उसकी हिदायत की तकलीद के काबिल हो जाएं चैप्टर युनूस की 108वीं आयत के मुबारक मआनी से बयान है ः " **कहो ः ए ः आदमी! सच तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से आया। वह जो सही रास्ता तकलीद करता है व इसे अपनी ही रज़ा के लिए तकलीद करता है। और जो भटक जाता है वह खुद को बरबादी के लिए तैयार करता है। मैं तुम्हारा रखवाला नहीं हूँ।** "

इस तरह हमें अपना रास्ता खुद अपने आप चुनना है और हमें अपने बरताओ को अल्लाह तआला की किताब के लिए खुद अपनाना है। ऐसा करने के लिए हमें अपनी रूहों को पहले खिलाना होगा। रूह का खाना "मज़हब" है। एक आम जानवर और एक बिदअती में कोई फर्क नहीं जो अपनी रूह को नहीं खिलाता। इस किस्म का शख्स को प्यार नहीं,दया नहीं,रहम नहीं और कोई समझ नहीं। ऐसे लोगो को खराब मकासिद के लिए इस्तेमाल करना बहुत आसान है। यह इस बजह से कि उनका कोई रब नहीं जिसे वे यकीन करे और फरमाबरदारी करें और जिसके लफ़्ज़ वे तकलीद करके अपने आपको बुरी चीज़ों को करने से रोक सकें। हर कोई जो इस किस्म का शख्स हो वह एक भयानक राक्षस है। तुम यह सोच भी नहीं सकते कि कब, कहाँ किस तरह और किस पर वह नुकसान ले आए। वे सबसे बुरी बुराइयाँ करने के लायक होते हैं, जो इंसानी दुनिया में हलचल मचा देते हैं।

ऐसे लोगो को सही रास्ते पर रहनुमाई करना बहुत मुश्किल है। लेकिन यह नामुमकिन नहीं है। असली इस्लामी मज़हब की बुनियादी बातें इनमें डाली जा सकती हैं बड़े सब्र,पक्के इरादे और इस तरीके से कि वे समझ लें। अल्लाह तआला ने अपने

नवी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को मज़हब पढ़ाने का हुकूम दिया। चैप्टर नहल की **125** वीं आयत के मुवारक मआनी हैं : " **ए! मुहम्मद! आदमियों को अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ समझ और नरम हिदायत से! और बातचीत करो[चीज़ों]उनके साथ नरम तरीके से। दरहकीकत, तुम्हारा रब बेहतर जानता है जो अपने रास्ते से भटक गए हैं।** " यह मत भूलो कि दूसरो को सीखाना तुम्हारा फर्ज़ है जो तुम पहले से ही अच्छे तरीके से सीख चुके हो। इस काम को " **अमर-ए-मारूफ** " कहते हैं। यह एक इवादत का काम है। इल्म की खैरात इल्म देकर होगी उन लोगो को जो नहीं जानते। यह वहुत अच्छा काम है। इस्लाम में आलिम की सियाही (इस्लामी आलिम) शहीद के खुन से वेहतर मानी जाती है; और एक अच्छा काम करना ग़ैर फराईज़ अमाल की इवादत (नाफ़िला)से वेहतर है।

आज भी,इस्लामी मुल्को ने अपनी भारी सनअते काफ़ी नहीं लगाई हैं। इसी वजह से इस्लाम का मज़हव ईसाई दुनिया के ज़रिए पीछे की तरफ़ लोटने वाला मज़हव ईसाई दुनिया के ज़रिए पीछे की तरफ़ लोटने वाला मज़हव कहलाया जाता है न की एक तरक्की पंसद मज़हव कहलाया जाता है न की एक तरक्की पसंद मज़हव ; इसलिए वे कहते हैं कि तहज़ीव सिर्फ़ ईसाय्यत के ज़रिए हुई है। यहाँ यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि यह दावा कितना वेतुका है।

जापानी ईसाई नहीं हैं। हम ऊपर पहले ही बता चुके है कि किस तरह जापानी ज़्यादातर तरक्की याफ़ता ईसाई मुल्कों से ऊपर हैं। इस्राएलियों ने खाली ज़मीन को घने जंगलो और ज़राती फार्म में तवदील कर दिया जहाँ पहले कुछ भी नही मिलता था सिवाए घास के मैदानो के। वे लूट से ब्रोमीन खनन (डेड सी)करने में कामयाव हुए; तरल ब्रोमीन को सख्त करने मे-यहाँ तक कि जर्मन साईसंदान भी यह कह रहे हैं कि यह नामुमकिन है। वे अव इसे आसानी से ग़ैर मुल्की मल्कों में वेच रहे हैं। ताहम,उन्होने ब्रोमीन तिजारत में जर्मन को पीछे कर दिया।

इस सवका मतलव है कि तहज़ीव और ईसाय्यत के बीच में कोई रिश्ता नहीं है। इसके वरअक्स,यह इस्लाम मज़हव है जिसने हमें तहज़ीवयाफता होने का हुकूम दिया। यह साफ़ तौर पर समझा गया निसफ सदी में कि ईसाई मज़हव इंसानियत को अंधेरे में ले गया और इस्लाम के मज़हव ने उन्हें जगमगाया। उस वक्त में,यूरोप लाइल्म,गंदे,गरीव,और मुखतलिफ़ वीमारियों से परेशान थे। लोग ज़ालिम पादरियों की रहनुमाई में परेशान थे। उस वक्त,यूरोपीयों को टवालेट या गुस्लखाने के वारे में कुछ नहीं पता था। इसके वरअक्स

मुसलमानो को जिन्होने अपने आपको इस्लाम के हुकूम के मुताविक ढाल लिया था, वे साईंस,तिजारत,आर्ट,खेती,अदब और अदवियत सब में तरक्की कर चुके थे।वे उस वक्त की अज़ीम तहज़ीब की नुमाएंदगी कर रहे थे।हारून रशीद खलीफ़ा ने, एक अर्लाम घड़ी फ्रांस के राजा शारलेमेन को दी।जब अर्लाम घड़ी बजती तो राज और उसके सेवक भग खड़े होते यह सोचते हुए कि घड़ी में एक भूत है ः इसकी वजह कि क्यों मुसलमान पीछे रह गए यह कि वे अब अपने मज़हब के एहकामात की ताबेदारी नहीं करते।हम यह कई बार बता चुके हैं।बजाए इसके कि आज हम अपना खुद का ज़ाती तज़किया करें,हम कभी भी सैकड़ों सालो पहले हुई इस्लामी तहज़ीब पर फखर हासिल करते हैं।यह कुदरती है कि माज़ी में कुछ वाक्या हुआ उस पर फखर करना लाज़मी है।लेकिन यह नागवार बात है कि बार बार उसी बात को दोहराना।हमने आज भी तरक्की की है।**1225**(**1839**)में, तुर्की ने अपने आपको एक यूरोपीय मुल्क ऐलान कर दिया एक सरकारी फर्मान के ज़रिए जिसे “The Reformation Edict”कहा जाता है।(यह दस्तावेज़ रशीद पाशा के ज़रिए तैयार किए गए जो एक ब्रिटिश हिदायत किया हुआ फ्रीमेसन था Masonic lodges कई शहरो में खोले गए।)अभी तक,हम यूरोप की तकलीद करते हैं खुशी और मनोरजंन में, न की साईंस और इल्म के मैदान में।हमने अपने बुर्ज़गो की इल्म हासिल करने में तकलीद करने को नज़रअंदाज़ कर दिया,साईंस का मुतालअ करने,और अपने बच्चे को इस्लाम के अच्छे अखलाक सीखाने में।हमें इस्लाम के ज़रिए दिखाए गए तरीके और रसूलुल्लाह(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)के मुबारक अखलाकियात का हवाला लेना चाहिए “Retrogression” के तौर पर।जापानियों ने हमसे **29** सालो बाद **1284**(**1868**)में मग़रिब की तकलीद करनी शुरू की।लेकिन वे हम से ज़्यादा तरक्की कर गए।वे अपने झूठे मज़हब पर अब तक कोई नुकसान नहीं लाए।अगरचे हम तहज़ीब की दौड़ में आगे थे, हमने इल्म और तमद्दुन को छोड़ दिया,और शैतान की तकलीद की और हमारी बुरी इच्छाएँ(नफ़स) की तकलीद की उसके बाद(आईनी तरमीम जो **1839** में सुल्तान अबद-अल-मजीद खान जिसे कहा जाता था उसके दौर में हुई) “तंज़ीमात” अग्रेंज़ी ओपियम ने सियासत्दानों को सुला दिया।आज हमें बहुत ज़्यादा मजमुई कोशिश करनी है मग़रिब और अपने बीच की दूरी को पूरा करने के लिए।हमें उनसे उपर जाने के लिए कोशिश करनी चाहिए।यह मआनी रहित लंबी तकरीरों से हासिल नहीं हो सकती।हमें अपने पुर्वजो के तरीको को शुरू करना होगा।जर्मन तारीखदान और Turcologist डा.फ्रेडरिक विवहेल्म फर्नू ,जिसने एक अहम मज़मून लिखा और तुर्की के बारे में एक किताब लिखी,उसने कहा ः “तुर्की लोग अपने आपको यूरोपीय मानते हैं।दरहकीकत,

हंगेरियन और बुलगेरियन दोनो मग़रिबी हो गई।वे कहा जाता है कि एशिया से आई थी और तुर्को की रिश्तेदार थी।लेकिन तुर्की लोग अभी तक मग़रिबी नहीं हो सके।वे दूसरी किसी भी कौम से मुख़तलिफ़ हैं।आज के तौर पर,वे मग़रिबी सनअत की नकल करते हैं।वे मग़रिबी दुनिया में पूरे तौर पर नहीं घुसे हैं।" अब,हम जांच करते हैं कि **एक मुहज़्ज़ब शख्स** क्या है।एक मुहज़्ज़ब औत तालीमयाफ़ता आदमी, सब से पहले आला अखलाकियत वाला और वह अपनी लेन देन में बहुत ईमानदार है।वह आला तालीम हासिल करता है,यानी,मज़हबी ट्रेनिंग कि यह दुनिया क्या है।वे भरोसेमंद है।वह अपना काम पूरी दिल जमई से करता जब तक यह पूरी न हो जाए।अगर ज़रूरी हो तो, वह आम वक्त से ज़्यादा बग़ैर रूके भी काम करता है।उसे ऐसे काम करके ख़ुशी हासिल होती है।वह अपनी जॉब कभी नहीं छोड़ता चाहे वह बूढ़ा हो जाए।वह अपने मुल्क के कानून की तरफ़ पूरा इज़्ज़त देने वाला है।वह अपने लिडरो की ताईद करता है।वह कभी कानून नहीं तोड़ता।वह बहुत सावधानी से अपने मज़हब के हुकूम और ममनुआत की फरमाबरदारी करता है।वह कभी इबादत करनी नहीं छोड़ता।वह अपने बच्चो को सच्चा ईमान और ऊँचे अखलाक चाहता है।वह इस मामले को बहुत ज़्यादा अहमियत देता है।वह अपने बच्चों को बुरे दोस्तों और बुरी इशाअत से बचाता है।वह हमेशा अपने लफ़्ज़ो को पास रखता है।चुंकि उसे वक्त की कीमत पता है, इसलिए वह अपना काम वक्त पर करता है।वह हमेशा अपने वादे पूरे करता है।वह दुनियावी या आसमानी कोई भी टास्क किए बगैर सांस नहीं लेता।आज के काम को अकेले कल पर नहीं छोड़ता वह कल का काम भी आज कर लेता है।अगर हम सिफ़ात को बहाल करलें जो हमारे पुर्वजो के अमाल से ज़ाहिर होती थीं तो हम माददी और रूहानी दोनो में तरक्की करेंगे,हर मैदान मे कामयाब होंगे, और हमारा रब भी हमसे ख़ुश होगा।

क्या हम यह सवाल कर सकते हैं, "क्या मग़रिबी ये खासियते रखते हैं," वे नहीं, अकीदी और अखलाकी नज़रिए से नहीं।दूसरी जंगे अज़ीम के बाद, खास तौर से, वहाँ तकसीम में और नीचे लोगो में बढ़ोतरी हुई जो दूसरो को गुमराह करते थे।आज, मग़रिबी लोग अपने लोगो में यह सब खासियते देखना चाहते हैं जो हमने ऊपर ज़िक की, और वे अपने अकीदो में सुधार चाहते थे।उनकी ज़ाहिरी सफ़ाई, जो इस्लामी हुकूम के मुताबिक सफ़ाई के बारेमें वे उनके ज़रिए महारत से चल रहा है।एक गंदगी का टुकड़ा भी आपको उनकी सड़को पर गिरा हुआ नहीं नज़र आएगा।उनके पब्लिक बाग़ात फूलो के समुंद्र की तरह हैं।हर जगह,सारी दुकाने,और सारे लोग मुकम्मल होते हैं।अब, मेहरबानी करके याद किजिए इस्लाम और कुरआन अल करीम के एहकामात।क्या यह एहकामात हमें

साफ़ रहने को,जिस्मानी और अखलाकी,और सारी चीज़ो को साफ़ जिन्हे हम इस्तेमाल करते हैं को नही कहते? इसलिए,असली तहज़ीब के बुनियादी बाते हमारे मज़हब में हैं, इस्लाम में।यही वजह है कि इस्लामी तहज़ीब जिसे हमेशा तारीफ़ किया जाता है निसफ़सदी में पैदा हुई।हमारे साथ अब मसला किया है? सबसे पहले,हम आलसी हैं।हम अल्लाह तआला के हुकूम और ममनुआत पर ज़रूरी अहमियत नहीं रखते।हम आराम और मज़ों के बहुत चाहने वाले हैं।हम अपनी जॉब शुरू करने के बाद बहुत जल्दी थक जाते हैं।बुलगेरियन लोगों का कहना, "काम शरू करो तुर्को की तरह लेकिन काम पूरा करो बुलगेरियन की तरह।" हम बहुत जल्दी थक जाते हैं।हमने कहा, "कोई बात नहीं! इसके बारे में मत सोचो! आराम से लो!" हम एक घर बनाते हैं लेकिन उसे संभाल कर नहीं रख सकते।इसलिए बहुत सारी बड़ी और फनकार से भरे मकबरे/इमारते तुर्की में भरी पड़ी हैं हमारे बुर्ज़गो के ज़रिए बनाई हुई हैं, वे खस्ताहाल पड़ी हुई हैं क्योंकि उनकी देख रेख या मरम्मत नहीं हुई।हम थोड़ा काम करना चाहते हैं,लेकिन ज़्यादा कमाना।इसके नतीजे में, काम वालों को हड़ताल करने के लिए बढ़ावा मिलता है, और बहुत ज़्यादा खराब, हमारे बहुत सारे नौजवान भटक गए हैं।हमारे बिगड़े हुए जवान लोग धोखेबाज़ ग़ैर मुल्कियो के ज़रिए हिदायत देने पर दूसरे लोगो को कत्ल करते हैं और लूट मार करते हैं।हम से बहुत सारे उनके जाल में फंस चुके है और उनके ज़रिए खिलाए जाते हैं।यह गरीब लोग, जिन्हें आसानी के साथ पैसा मिल जाता है वे काम करने के बदले कत्ल करना पसंद करते हैं।दूसरी बुराई की जड़ें जो हमारे मुल्क पर हावी हैं वो हैं बलदा और ला मज़हबी लहर।वैसे, हम दोबारा लिखते हैं कि वहाँ चार सच्चे मसलक हैं इस्लाम में।ये चारो मसलक के एक जैसे यकीन और ईमान हैं, जिसे "**अहले-सुन्नत**" का ईमान कहा जाता है।वहाँ कोई फर्क नहीं है किसी भी चीज़ की तकलीद करने के लिए कुरआन अल करीम के ज़रिए हुकूम और ममनुआत या हदीस-ए-शरीफ़ उनके बीच में कोई फर्क नहीं है।वे सिर्फ़ रसूम की आयात के मआनी की तशरीह करने में मुखतलिफ़ हैं जो आसानी के साथ और साफ़ नहीं समझी जा सकती।ये छोटे फर्क इनके बीच में अल्लाह तआला की दया है मुसलमानो के लिए।एक मुसलमान चारों "फिकह" में से एक के मुताबिक इबादत करता है चारो मुखतलिफ़ मसलक की किताबों(केनन); वे अपनी सेहत और रहने के हालात के मुताबिक एक फिकह चुन लेता है।अगर वहाँ एक मसलक होता तो सारे मुसलमानो को मानना होता।ये बहुत सारे मुसलमानो के लिए बहुत मुश्किल,बल्कि नामुमकिन है।एक मुसलमान जो इन चारो मसलक में से किसी एक मसलक की तकलीद करता है तो उसे " अहले-सुन्नत" कहा जाता है।वे एक दूसरे के भाई हैं।वे इस्लाम की तारीख में कभी एक दूसरे से नहीं लड़े।उनमें कोई फर्क वारियद नहीं है उनके

बीच। वे कभी बाकी (तीनो)मसलक के लिए गलत नहीं बोलते। वे यकीन रखते हैं कि उनमें से कोई एक जन्नत का रास्ता है।

सबसे पहला,सबसे ज़्यादा अहम नुकता ये है कि सारे अहले-सुन्नत के लोग भाई हैं। मसलक के फर्क उन्हें भाई बनने से नहीं रोक सकते। अहले सुन्नत और गैर अहले सुन्नत के बीच फर्क को साईंसी तरीके से हल किया जाता है साईंसी तरीके से बातचीत करके न की बंदूक की ताकत से।

यह हमारे लिए फर्ज़ है कि अपने मुल्क के कानून को मानना और लोगो के बीच में बड़े लोगो की इज़्ज़त करना। यह सबसे ज़्यादा खराब है कानून को खत्म करने की कोशिश करना। एक मुल्क जिसमें कानून हावी नहीं होते वह एक ऐसी रियास्त होती जो दहशतगर्दी में चली जाए और जल्द ही गायब हो जाए। एक कम्यूनिस्ट दुनिया का मेम्बर होने की वजह से यह सब से बड़ी तबाही है। आज, कम्यूनिस्ट मुल्क खुद यह बात जान गए हैं कि कम्यून्स्टि अपने आप में नुकसानदायक है। नतीजे के तौर पर, वे अपने आपको इस नज़रिए से आज़ाद कराने की कोशिश कर रहे हैं और वापस आज़ाद हालात में जा रहे हैं। आज के रूसी लोग वापस अपना विरास्त के हुकूक, निजी घर की मिलकियत और यहाँ तक कि गर्मी के घर मांग कर रहे हैं। पॉलीश लोगों को हड़ताल करने के हक दिया। यहाँ तक कि, कट्टर कम्यूनिस्ट चिन भी वापस आज़ाद मुल्कों की जीवनशैली अपनाना चाहता है। इतने ज़्यादा कि उन्हें फ्रांस से माहिर बुलाने पड़े नए आर्ट के तरीको के लिए। वे "मुशतरका मआशियत" की तरफ लौट आए जैसे कि जमहूरी मुल्को में होता रहा था। जो मस्जिदो को पहले कम्यूनिस्ट के ज़रिए गिराया उन्हें अब बनाया जा रहा है।]

जैसे कि माना जाता है कि कुछ कायम करद को रियास्त के ज़रिए चलाया जा रहा था लेकिन दूसरो को निजी सेक्टर के ज़रिए एक मशरूत मआशियत में। रियास्त की तरफ़ से कुछ भारी और महंगी मनअतों मदद दी गई जैसे कि कोयला और लौहा। यह तरीका तुर्की में भी इस्तेमाल किया जा रहा था। आजकल, कम्यूनिस्ट मुल्क आहिस्ता आहिस्ता इन तरीको पर वापस जा रहे हैं, और उन्होने सनअत के कुछ हिस्से बाकाएदा लोगो के लिए खोल दिए हैं। यकीनन वे अपने यकीन और सोच में आज़ादी को मुसतकबिल में हासिल कर लेगे। इंसानी हुकूक सारी दुनिया में रज़ामंदी पा रहे है। कुछ बेवकूफ़ इसके बरअक्स सोच, समाजी इंसाफ़ का मतलब है उन लोगो की मिलकियत को जो उनके लिए काम करते हैं जो काम नहीं करते और इस तरह उन्हे अमीर बनाते हैं। कोई भी एक आलसी आदमी को एक

पैसा नहीं देगा जो दिन और रात काम नहीं करता। यहाँ तक कि कम्यूनिस्ट मुल्कों में लोग लगातार काम कर रहे हैं, उन्हे मुश्किल से पूरा खाना मिलता है। उनकी ज़्यादातर आमदनी इन खुशहाल अकलियत के ज़रिए ले ली जाती है। अपनी ज़िंदगियो को खतरे में डालते हैं, वे अपनी आज़ादी के लिए जददोजहद कर रहे हैं। जैसा कि हमने ऊपर लिखा, यह इंतेज़ामिया इस्तेहसाल पर मुवनी और ज़दकोव पर मुवनी,और ये गैर मज़हवी ज़िंदगी का स्टाइल,अपने आप खत्म हो गया। एक तरफ़,कम्यूनिस्ट रियास्ते प्रोपेगंडा कर रही हैं लोगो को गैर मज़हवी रखने के लिए, जोकि इश्तराकियो की एक वुनियाद है। दूसरी तरफ़, वे जो अहल-अस-सुन्नत के सच्चे रास्ते से भटक गए है वे सच्चे मुसलमानो को भटकाने की कोशिश कर रहे हैं। ईरान के खोमेनी एक गंभीर मिसाल हैं उन नुकसानात के खिलाफ़ जो ऐसे विदअती और कट्टर मुसलमान उनके मुल्क को पहुँचा रहे हैं। मज़ीद ये कि, वहावी अपने ईमान के आमाल की कोशिश कर रहे थे, जो सच्चे इस्लामी आलिम के ज़रिए ममनुअ थी उन कानून के साथ जो मुकमल्ल तौर पर मनमाना था। इसके नतीजे में उन्होने पूरी दुनिया मे लोगों को इस्लाम के वारे में गलतफ़हमी पैदा करने का सवव वना। इस्लाम के मुताविक, "हुकूम जो नास(एक आम टर्म एक आयत(मिसरो) या एक हदीस(रिवायत) के लिए। के ज़रिए साबित नहीं किया गया वक्त के साथ बदल सकता है।" एक ऊसूल जो एक हज़ार साल पहले मुकम्मल था हमारे वक्त में हो सकता है हालत के मुताविक मुनासिब न हो। यही वजह है कि अज़ीम आलिमों ने,यानी, मुजतहिदों(रहिमाहुमल्लाहु तआला) ने तीन अहम ताकतें जिन्हें कहा जाता है " अकल"(समझ),इल्म (जानकारी),और "तकवा" (अल्लाह का खौफ़)अल्लाह तआला के ज़रिए उनको तवदिलियाँ करने लायक वनाया जाए। ये वाद के आलिम इजतिहाद(काबिलियत समझने की कुरआन अल करीम में छुपे हुए मआनी,अलामतें इनको समझना। इस तरह नतीजे निकलते हैं और कानून कायम होते हैं। )को पढ़ते हैं जो उनसे हज़ारों साल पहले पिछले आलिमों ने उनके वक्त से पहले और कानून चुने जो वक्त की मुनासवत से थे।

हमें सवसे पहले अहले सुन्नत के आलिमो(रहिमाहुल्लाहु तआला) के ज़रिए सच्चे ईमान की खवर को सीखना है। फिर हमें उनके मुताविक यकीन करना है। एक शख्स जिसका ईमान खराव है वह अल्लाह तआला का रहम और रज़ा हासिल नहीं कर सकता। वह उसकी रहम और मदद से परे रखा जाएगा। उसे आराम और अमन नहीं मिलेगा। हमारे ईमान को ठीक करने के वाद हम अपने अखलाक को ठीक कर सकते हैं। हमें अपने इस्लामी कानून को मज़वूती से पकड़ना चाहिए। यानी,हमें अल्लाह तआला के एहकामात और ममनुआत को

मानना और हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की फरमाबरदारी करना। हमें अपने दिलो को उन चीज़ो के ज़रिए जो उसके ज़रिए हुकूम दी गई और उसके नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि के ज़रिए खबर दी गई। हमें अपने नीचले हिस्से (अना) को ममनुआत और नुकसानदह चीज़ो से परे रखना चाहिए। हमें अपनी सेहत बनाकर रखनी चाहिए। एक शख्स का दिल जो हमेशा इस तरह बरताओ करता रहता है अच्छी चीज़े करना चाहता है। वह कभी बुरे काम करने के बारे में नहीं सोचता। अगर रूह और दिल साफ़ है और जिस्म मज़बूत है तो यह मुमकिन है कि हम भाई चारे, मज़मुई तौर पर इमानदारी से काम करेगा। हमें इस्लाम के दुश्मनो के ज़रिए, हिल्यासाज़,और ग़ैर sectarians के ज़रिए लफ़्ज़ और प्रोपेगेंडा के ज़रिए हमें धोखा नहीं दे सकते। अगर हम सच्चे मुसलमान बन जाए और काम करे तो अल्लाह तआला हमारे साथ खुश होगा और हमारी मदद करेगा; जैसा कि हमने ऊपर देखा सूरह **तीन** में कुरआन अल करीम में। अगर हम अपने ईमान को सही नही करेंगे,और मज़हब की तकलीद नहीं करेंगे हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के ज़रिए सीखाए गए की, और अच्छे कामो से ग़ैर हाज़िर रहेंगे और झूठे ईमान के लिए जददोजहद करेंगे और ज़ाती मौके हासिल करने के लिए भटक जाएंगे तो, अल्लाह तआला हमे सब से नीचो में नीचा बना देगा। अगर ऐसा हो, हम पर अफसोस हो!

## सच्चे मज़हब की अलामात

सबसे पहला सलाह का हिस्सा ईमान को अहले-सुन्नत के आलिमों के ज़रिए बताए गए उनकी किताबों में अकीदो के मुताबिक ईमान रखना है। क्योंकि यह मसलक है जो सिर्फ़ दोज़ख से बचा रहेगा। अल्लाह तआला उन अज़ीम लोगो को बहुत सारा इनाम दे उनके जाल के लिए! वे आलिम जो चारो मसलक के थे जो इजतिहाद के दर्जे तक पहुँचे और अज़ीम आलिम उनके ज़रिए पढ़ाए गए वे **अहले-सुन्नत** के आलिम कहलाते है। यकीन (ईमान)को सही करने के बाद यहा ज़रूरी है कि फिकह की शाखा में बताए गए इबादत के अमाल को करना यानी, शरीअत के हुकूम को करना और जो ममनुअ बताया गया है उस से परे रहना। एक शख्स को रोज़ाना पाँच नमाज़े बग़ैर आलस किए और ढीले पड़े हुए और उसके हालात और ता दिल-ए-अरकान के मुताबिक। वह जिसके पास जिसके पास इतना पैसा है जितना निसाब उसे ज़कात अदा करनी चाहिए। ( बराएमेहरबानी **सआदत अबदिया, 5-1** देखिए **ज़कात** के लिए। ) इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा ने कहा, " यह भी, ज़रूरी है कि

सोने और चाँदी की भी ज़कात अदा की जाए जिसे औरते ज़ेवर के तौर पर इस्तेमाल करती हैं।

हमें अपनी कीमती ज़िंदगी को गैर ज़रूरी मुवाह में ज़ाया नहीं करना चाहिए। यह बिल्कुल ग़ैर ज़मानती है कि इसे हराम पर ज़ाया किया जाए। हमें अपने आपको तंग़नी,गाने,साज़,या गानों में ज़ाया नहीं करना चाहिए। हमे उनके ज़रिए दिए गए खुशी जो हमारे नफ़्स को मिलती है उससे धोखा न खाएं। यह सब ज़हर हैं शहद के साथ मिले हुए और चीनी से ढके हुए।

हमें ग़िबत नहीं करनी चाहिए। ग़िबत हराम है। (ग़िबत का मतलब है एक मुसलमान या एक ज़िम्मी के पीठ पीछे उसके राज़ को खोलना। यह ज़रूरी है मुसलमानो को हरबीस की गलतियों के बारे में बता दिया जाए , उनके गुनाह जो उन्होने पब्लिक में किए, उनकी बुराईयों के बारे में जो मुसलमानो को अज़ाब देते हैं और जो मुसलमानो को खरीद फरोख्त मे धोखा देते हैं; इस तरह मुसलमानो की मदद करना उनके नुकसान के बारे में बताकर, उनके इल्ज़ामात बताना जो बात करते है या गलत लिखते हैं इस्लाम के बारे में; ये ग़िबत नहीं है।

(रादद-उल-मुखतर ः **5 - 263**)।

हमें मुसलमानो के बीच अफ़वाह नहीं फ़ैलानी चाहिए। यह ऐलान किया है कि मुखतलिफ़ किस्म के अज़ाब उन पर नाज़िल किए जाएंगे जो इन दो किस्म के गुनाहो को करेगा। और, यह हराम है कि झूठ बोलना और तोहमत लगाना और इनसे ग़ैर हाज़िर रहें। यह दो बुराई हर मज़हब में हराम हैं। हो सकता है उनके लिए सख्त अज़ाब हो इन के लिए यह अज़ीम रहमते नाज़िल फरमाता है मुसलमानो के खुफ़िया नक्स के लिए,उनके खुफिया गुनाहो को फैलाना नहीं चाहिए और उनकी गलतियों को माफ़ कर देना चाहिए। एक शख्स को अपने से नीचे वाले पर रहम रखना चाहिए जो किसी के हुकूम में हो[जैसे बीबी, बच्चे,तालिब इल्म, सिपाही] और गरीब। एक शख्स को उनकी गलतियो के लिए जतलाना नहीं चाहिए। एक शख्स को गरीब लोगो को तुच्छ बजूहात के लिए मारना या नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। एक शख्स को किसी मिलकियत,जिंदगी, इज़्ज़त या पाकी की खिलाफ़ वर्ज़ी नहीं करनी चाहिए। कर्ज़ा हर किसी पर या हुकूमत पर अदा कर देना चाहिए। रिश्वत लेना और देना हराम हैं। अगरचे, यह रिश्वत नहीं होगी जब किसी जुल्म से बचने के

लिए या नफ़रत की हालत से निकलने के लिए अदा किया जाए। लेकिन एक शख्स जो इसे हासिल करता है वह हराम है। हर किसी को अपने खुद के नुक्स देखने चाहिए ,हर घंटे में सोचे के कि अल्लाह तआला की तरफ़ कौन सी गलती करदी। उन्हें हमेशा अपने दिमाग में रखना चाहिए कि अल्लाह तआला उन्हे सज़ा देने में जल्दी नहीं करेगा,न ही वह उनकी रोज़ी कम करेगा। हुकूम के अलवाज़ गलदेन के, या सरकार की तरफ़ से, शरीअत के मुकाबिल उसकी फरमाबरदारी की जाए, लेकिन जो शरीअत के मुकाबिल नहीं है उन्हे इतना नही उठाना चाहिए कि हम फितना का सबब बने[**123** वे खत को देखिए **मकतूबात-ए-मासूमिया** की दूसरी जिल्द में ।

यकीन को सही करने के बाद और फिकह के हुकूम को करने के बाद, हमें अपना सारा वक्त अल्लाह तआला की याद में लगाना चाहिए। हमें अल्लाह तआला को याद करते रहना चाहिए ज़िक करते हुए जिस तरह मज़हब के अज़ीम आदमियों के ज़रिए। हमें उन्हें सब चीज़ो की तरफ़ दुश्मनी रखनी चाहिए जो हमारे दिल को अल्लाह तआला की याद से रोके। शरीअत के जितने ज़्यादा करीब उतने ज़्यादा उसको याद करने में मज़ा। जैसे कि लाइल्मी,आलसी पन शरीअत को मानने में बड़े, तो आहिस्ता आहिस्ता मज़ा घटता जाता है और आखिरकार पूरा चला जाता है। मैं इससे ज़्यादा और क्या लिखू मैं पहले से लिख चुका हूँ ? मुनासिब लोगो के लिए यह काफ़ी है। हमें इस्लाम के दुश्मनो के जाल में नहीं फँसना चाहिए और हमें उनके झूठ और तोहमतो पर यकीन नहीं करना चाहिए।

# शब्दावली

तसव्वुफ़ से मुतअल्लिक इंदराज सवसे अच्छे हज़रत अहमद अल-फारूकी अस-सिरहिंदी की **मकतूबात** से सीखी जा सकती हैं।

**अज़ान** ः मुसलमानो को इवादत के लिए बुलाना।

**अदिला (अश-शरीअ)** ः ज़राए जहाँ से इस्लामी कानून लिए जाते थे किताव (यानी कुरआन अल करीम) सुन्नत, कियास अल-फुकहा और इजामा अल-उम्मा।

**अहल** ः लोग

**अहल अल- बैत** ः नवी के करीवी रिश्तेदार।

**अहले-सुन्नत (वल-जमात)** ः सच्चे पाक मुसलमान जो सहावत अल किराम की तकलीद करते।इन्हे सुन्नी मुसलमान कहा जाता है।सुन्नी मुसलमान अपने आपको चारों मसलक में से एक को अपनाते हैं।ये मसलक हनफ़ी,मालिकी,शाफ़ई और हंवली हैं।

**अहद-ए-अतीक** ः ऑल्ड टेस्टामेंट

**अहद-ए-जदीद** ः न्यू टेस्टामेंट

**अहकाम** ः कानून, नताईज

**अहकाम अश-शरिया** ः इस्लाम के कानून

**अल्लाह तआला** ः अल्लाह सबसे आला

**अमर बिल- मारूफ़ ( व 'न-नहयु' अनिल मुंकर**) ः अल्लाह तआला के अहकामात और ममनुआत को सीखाने का फर्ज़।

**अर्श** ः सात आसमानो की सीमा का छोर और कुर्सी, जो सातवें आसमान से बाहर है और अर्श के अंदर।

**असहाब-ए-किराम** ः(अस-सहाबत अल किराम)ः रसूलउल्लाह के साथी।

**औलिया** ः जमा वली की जिसका मतलब अल्लाह तआला के ज़रिए प्यार किया हुआ।

**अवामिर-ए-अशरा** ः दस अहकामात जो अल्लाह तआला ने तूर पहाड़ पर मूसा(अलैहि सलाम)को दिए।

**आयत** ः एक मिसरा **अल कुरआन अल करीम की**; अल-आयत अल-करीमा।

**अज़राईल** ः चार बड़े फरिश्तों में से एक, जो इंसानो की रूह निकालते हैं।

**बसमला** ः अरबी मुहावरा "बिस्मिल्लहि'-रहमान निर रहीम(अल्लाह के नाम से शुरू जो मेहरबान और माफ़ करने वाला है)।

**बनी इस्राइल** ः इस्राइल के बेटे ; इस्राएली ; यहूदी।

**बिद'अ** ः (जमा बिदअ की) इल्हाद, झूठ ,नापसंद अकीदा या अमल जो इस्लाम के चारो ज़राओ में मोजूद नहीं है लेकिन जो बाद में इस्लामी यकीन के तौर पर शामिल हो गया या इबादा सवाब (रहमत) हासिल करने के लिए।

**बिसात** ः वह साल जिसमें हज़रत मुहम्मद(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इतलाअ दी गई कि वे पैगम्बर हैं।

**बुराक** ः जन्नत का जानवर जो रसूलुल्लाह को मक्का से जरूसलेम ले गया मिराज के वाक्ये में।यह सफ़ेद था, बहुत तेज़, न मादा न नर, खच्चर से छोटा और गधे से बड़ा।

**दलालअ** ः अहले-सुन्नत के सच्चे रास्ते से भटकना।

**दिरहम** ः तीन ग्राम वज़न इकाई।

**एफंदी** ः उस्मानिया रियास्त के ज़रिए दिया गया लकब जो एक सियास्तदां को और खासतौर से मज़हबी आलिमो को दिया जाता; मुखातिब करने की एक शक्ल,मआनी "तुम्हारा अज़ीम शख्स"।

**एमान** ः माफी; हिफ़ाज़त; ज़मानत ।

**फर्ज़**ःएक अमल या चीज़ जो अल्लाह तआला के ज़रिए कुरआनुल करीम में हुकूम की गई।

**फर्ज़ ऐन** ः हर मुसलमान के लिए फर्ज़।

**फर्ज़ किफ़ाया** ः फर्ज़ जो एक कौम में कम से कम एक मुसलमान के ज़रिए किया जाए।

**फतवा** ः इजतिहाद (मुजतहिद का); फिकह की किताबों से नतीजा (एक मुफ़्ती के ज़रिए) कि क्या कोई चीज़ जो उनको दिखाई नहीं दी उसकी इजाज़त है कि नही; इस्लामी आलिमों के ज़रिए मज़हबी सवालो के जवाब देना; रूखसा।

**फरमान** ः हुकूम, खासतौर से उस्मानिया सलातीन के ज़रिए दिया गया।

**फिकह** ः इल्म इसके मुतअल्लिक कि मुसलमानो को क्या करना चहिए और क्या नहीं; अमाल ,इबादत।

**गज़ा** ः ग़ैर मुस्लिमो के खिलाफ़ जंग।

**हमद** ः शुकगुज़ारी और तारीफ़।

**हदीस** ः नबी (अलैहि स-सलाम) का फरमाना अल हदीस

**अस-शरीफ** ः मजमूई तौर पर सारी हदीसें।

**हज़रत** ः इज़्ज़त का लकब़ अज़ीम लोगो जैसे नबियों और इस्लामी आलिमो के नाम से पहले इस्तेमाल होना।

**हज** ः मक्का के लिए फर्ज़ ज़ियारत।

**हराम** ः इस्लाम में ममनुअ।

**हिजरा** ः नबी (अलैहि सलाम) की मक्का से मदीना की तरफ़ हिजरत।

**इल्म अल-हाल** ः इस्लामी तालीम की किताबें (एक मसलक की) मुसलमानों को उनके मज़हब सीखाने के लिए।

**इबादा** ः इबादत, रसम; अमल जिसके लिए आखिरत में सवाब हासिल होगा।

**इबादात** ः (इबादा की जमा)।

**इजतिहाद** ः (मआनी या नतीजा एक मुजतहिद के ज़रिए) एक आयात या हदीस में छुपे हुए मआनी को समझने की कोशिश करना।

**इरशाद** ः रोश्नी; रहनुमाई; मुतासरा।

**इकामत** ः रोज़ाना की पाँच औकात की फर्ज़ नमाज़ मे से एक को शुरू करने से पहले खड़े होकर लफ़्ज़ों की किरअत।

**एतिकाफ** ः पीछे होना, रमज़ान के दौरान मज़हबी अलैदहगी।

**जन्नत** ः खुल्द।

**जारिया** ः ग़ैर-मुस्लिम औरत गुलाम जंग में पकड़ी गई।

**जिहाद** ः ग़ैर-मुस्लिमो के (या नफ़्स)के खिलाफ़ जंग उसे (उन्हें)इस्लाम में लाने के लिए।

**जिज़या** ः गैर-मुस्लिमो शहरियों पर लगाया गया।लगान इस्लामी मुल्क (दार-अल-इस्लाम)में रहने वालो के लिए।

**काबा** ः **(त-अल-मोअज़्ज़मा)** ः मक्का की अज़ीम मस्जिद में।

**कलाम** ः ईमान (यकीन) की जानकारी।

**काफ़िर** ः मुलहिद ,गैर- मुस्लिम।

**करामा** ः एक वली के ज़रिए अल्लाह तआला का चमत्कारी काम।

**करामात** ः (करामा की जमा)।

**खुत्बा** ः जुमे की और इस्लामी त्योहारों की नमाज़ में इमाम के ज़रिए मिंबर पर चढ़कर तकरीर देना, जिसे पूरी दुनिया मे अरवी में पढ़ा जाता है(इसे किसी और ज़वान में पढ़ने की इजाज़त नहीं है)।

**करीम** ः रहमदिल।

**कुफ्र** ः वेयकीनी में होना। (इरादा, वात या अमल) जो कुफ्र का सवव वने।

**ला-मज़हबी** ः एक शख्स वग़ैर मज़हव के।

**मसलक** ः वे सव जो एक गहरे फ़िक्ह के (आम तौर पर चारों में से एक-हंफ़ी, शाफ़ी-ई, मालिकी,हंवली) या ईमान के आलिम के ज़रिए दो में से एक अश-अरी, मातरिदी जिसका नाम है वताया जाए।

**मदरसा** ः स्कूल जहाँ इस्लामी इल्म पढ़ाया जाता है।

**मस्जिद** ः मोस्क।

**मकरूह** ः (एक अमल) वेतरतीव, नापसंदीदा या नबी के ज़रिए ग़ैर हाज़िर।

**मकरूह-तहरीमा** ः ज़ोर के साथ मना हुआ।

**मकरूह- तंज़ीही** ः कम दर्जे का मकरूह।

**मोलिद** ः नवी की सालगिरह; तहरीरें जो वताती हैं नवी की वरतरी और अज़मतें।

**मिम्बर** ः एक मस्जिद में ऊँचा मंच सिढ़ियों से चढ़ा जाए जहाँ खुत्वा पढ़ा जाता है।

**मिराज** ः नवी का जरूसलेम से आसमान पर जाना।

**मसह** ः एक शख्स का अपने गीले हाथो से वुजू अदा करते हुए पैरो पर रगड़ना। (शख्स का अपने mests पर,नरम,वग़ैर पतावे के, पानी रोकने वाले जुते, पैरो को ढके हुए)

**मोअजिज़ा** ः चमत्कार खसूसी तौर पर नवियों से।

**मुर्शिद** ः रहनुमा, डाएरेक्टर।

**मुर्शिद -अल-कामिल** ः अज़ीम रहनुमा जिसे कामल हासिल हो और जो दूसरो की मदद कर सकें।

**मुंनाफ़िक** ः हिल्यासाज़; एक शख्स जो अपने आपको मुसलमान के तौर पर दिखाए जवकि वह किसी दूसरे मज़हव में यकीन रखता हो।

**मुस्तहब** ः(एक अमल) जिसके लिए सवाब है और अगर छोड़ दिया जाए तो गुनाह नहीं।

**मुबाह** ः  एक अमल न ही हुकूम दिया गया न ही ममनुअ किया गया।

**नाफ़िला** ः ज़ाईद, इज़ाफ़ी; शरीअत में ग़ैर फर्ज़ और ग़ैर वाजिब इवादात; सुन्नत सलात रोज़ाना की पाँच सलात या किसी भी इवादात में एक शख्स जव चाहे तव अदा कर सकता है।

**नफ़्स** ः एक मनफ़ी ताकत आदमी के अंदर उसे बुराई करने के लिए उकसाने वाली।

**नास** ः  (आम इसतलाह शक्ल) एक आयत हदीस; एक आयत या हदीस जो खुले तौर पर बताए कि कोई चीज़ हुकूम की गई हैं या ममनुअ की गई।

**निसाब** ः कम से कम खास दौलत पर एक शख्स कुछ फराईज़ को करने के काबिल।

**पाशा** ः उसमानिया सुल्तान के ज़रिए एक सियास्तदान, गर्वनर और खास तौर से उँची रेंक(अव जनरल या एडमिरल) वाले को दिया गया लकव।

**कॉज़ी** ः मुसलमान जज।

**कुरआन अल करीम** ः मुकददस कुरआन।

**रमज़ान** ः मुसलमानी कैलण्डर मे एक पाक महीना।

**रसूलुल्लाह** ः सरकारे दो आलम हज़रत मुहम्मद (अलैहि सलाम) अल्लाह तआला के नवी।

**सहाबी** ः (जमा,अस-सहावत अल किराम; एक मुसलमान जिसने नवी (अलैहि-सलाम)को कम से कम एक बार देखा हो; साथियों में से एक।

**सलफ़ (अस-सालिहीन**)ः सहावा और ताविइन और  तवा अत-ताविईन के बीच मुमताज़।

**शफ़ाअत** ः सिफ़ारिश।

**शैख** ः एक ऊँचे दर्जे का आलिम; ज़ाहिरी या वातिनी इल्म का माहिर, मास्टर, मुर्शिद, अमीर, सरवराह।

**शैख अल-इस्लाम** ः इस्लामी रियास्त में मज़हबी अमूर के दफ़तर का सरवराह।

**सुन्ना** ः अमल,चीज़, अगरचे अल्लाह तआला के ज़रिए हुकूम नहीं की गई; नवी (अलैहि सलाम) के ज़रिए की गई और पसंद की गई इवादा के तौर पर ; अगर करा जाए तो सवाव है, लेकिन छोड़ दिया जाए तो कोई गुनाह नहीं, ताहम अगर लगातार छोड़ा जाए जो एक गुनाह है और अगर नापसंद किया जो कुफ़ है।

**सहबा** ः सोहव।

**सिरात** ः आखिरत में एक पुल।

**तफ़सीर** ः साईसं की एक किताव कुरआन की तफ़सीर बताने के लिए।

**तक़वा** ः अल्लाह तआला से डरना; हराम से वचना; अज़ीमा अमल करना।

**तसव्वुफ़** ः इस्लामी सूफीवाद या सूफ़ीज़्म जैसे कि इस्लाम मे वताया; [मकतूवात किताव अहमद अल-फारूकी अस-सिंहंदी (रहमतुल्लाहि तआला अलैह)] को देखिए।

**तवक्कुल** ः भरोसा, खास तौर पर अल्लाह तआला से हर चीज़ पर उम्मीद; अल्लाह तआला से उम्मीद लगाना (सवव)के असर की सवव पर काम करके या पकड़के- जिससे पहले तवक्कुल ग़ैर मुंनज़म है।

**तौहीद** ः (यकीन रखना) अल्लाह तआला की वहदानियत, एकता में।

**टेक्के** ः (तुर्की) एक जगह, इमारत, जहाँ एक मुर्शिद अपने मुरिदों या सालिकों को सिखाते थे; दरगाह या खानगाह (फारसी), ज़ाविया (अरबी)।

**सवाब** ः सवाब (की ईकाई) जिसका अल्लाह तआला ने वादा किया और जो आखिरत में दिया जाएगा बदले के तौर पर जो उसे पसंद था वैसा करने और कहने पर।

**उम्मा** ः कौम, नबी पर, ईमान रखने वाला ग्रुप।

**उम्मा (अल-मुहम्मदिया)** ः मुसलमान उम्मा; मुहम्मद (अलैहि सलाम)के मानने वाले।

**वहाबी** ःअरब में लोग जिनका यकीन इबन तेमिया की बिदअत से हुआ। (**सआदत ए-अबदिया** और **मुसलमानों के लिए सलाह** किताब को देखिए।)

**वाजिब** ः ( एक यकीन या अमल) तकरीबन इतना ही ज़रूरी जितना के एक फर्ज़ और जो छोड़ा नहीं जा सकता; कुछ नबी (अलैहि सलाम)के ज़रिए कभी नहीं छोड़ा गया।

**वली** ः (जमा औलिया) एक शख्स जो (अल्लाह तआला)के ज़रिए चाहा गया और हिफ़ाज़त किया गया।

**वरा** ः (हराम नज़रअंदाज़ करने के बाद) मश्कूक चीज़ों (मुशतबिहात) से परे रहना।

**ज़कात** ः (सालाना की जाने वाला फर्ज़)कुछ मिकदार कुछ किस्म की मिलकियत से कुछ लोगों को दी जाए जिसके ज़रिए बाकी मिलकियत पाक और मुबारक हो जाए, और मुसलमान जो ऐसे देते हैं वह अपने आपको एक कंजूस (कहलाने) बनाने से बच जाएं।

**ज़िंदीक** ः इस्लाम का एक दुश्मन जो एक मुसलमान होने का दावा करे।